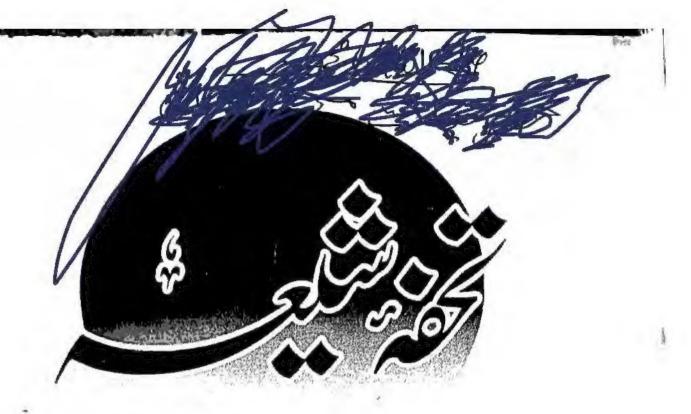


Scanned with CamScanner

| 1:4 | 24 | (gilge | 18% | المخيخ | | V. |
|----------|---------------------|--|------------|--------|--|-----|
| الوز بر | قرامت اعلام | حفرت عمرو مسعيد بدراز بد | ٧1 | 07 | الناكم الماميد المرام المام | 1 |
| 8 | Traditate a trad | עם שלשתנות וני ו בי מו | h'ha hh | 11 | حالات معينف | ۳ |
| 11 | 1 | | | 15 | معالجة | 4 |
| 15 | w! | ملب اول تراسا | 46 | 16 | معامی رسالے آسانی ومسیت نامه | ٥ |
| v | العرصان والمام | مرا مع معلم الا مراد | | | حا مُرى كافتون | 4 |
| 38 43 | 11 11 11 | حورثانی در در در در در حورثانی در در در | 40 | 17 | 145000 | V |
| 44 | U. | علامه محسوماً شي كا قو | 49 | 20 | سجره المع (العه عما عمق | 71 |
| 51 | | المسارل المست الله كاقد | pl | 22 | اسماء معاب عليهم مرام موان | 9 |
| 53 54 | | سيد دلدارعلى ما قور قابل توجه المور | 44 | | منتجر ۱۰ معات المومنين ومن النه تعالى عنهن | |
| 56 | مرت جانتے هي | سيعه فرة ك موجودكوم | ME | 23 | المجره است داء ادد الادا | 1- |
| 57 | ***** | اهل سنت ۱ عتيره | | 01 | فالمام مليه وسلم | |
| 96 | حديث قرماص | باب دوم | 40 | | معجبره نسب تماکم عرود ادا | ft |
| 98 | | اعترا الل غيرا | 20 | 29 | مساع اورعسر لا ملي | IP |
| | au . 156. | اعتراعن نمرح قول حس | MA | 7. | حفرست خالد کے خا ندران کے مسورعیس اسلام وہمابہ سے آھائٹ | |
| 111 | | جواب | 49 | 31 | النا اميره سيدخانداد السادم | 11 |
| 114 | | اعتراعل فيرد | 2. | 32 | اع رشقے | 12 |
| ,, | | جواب | 41 | | خا ندان حمرت زبير سطنور | 1'2 |
| 116 | نان من ويحركما نمان | حفرست على الله المتحاملة كحا | 21 | 33 | عليه السلام كي رشت | 10 |
| 125 | ما ينطق على موك | اعترافل فبها وجواب | 34 | 34 | ایک تابل غور شمره جلیل القدر حاسادول والی | |
| 127 | | اعترام نصرح | 10 | 36 | - | |
| 128 | | اعترافن نهر که ۰۰۰ | 24 | | حرز تواله دوهالب عدم اور | 11 |
| 134 | | جواب | £ ∪ 2 ♥ | 4. | | |
| 140 | | اعترا مل غبر ۲۰۰۰ | 0. | | عا سی خلیقہ صافیوں رشید | |
| 143 | | عَرُ أَعْنَا نَعْبِرِ 8. | 10 | 2 | حفرت الو بكروحفرت طلى سے | |
| 146 | | و عرد الله الله و . | 104 | 3 | اولا دعيرا لمطلب كرتشت | |
| 148 | | الورا بل مرا | 04 | | عيما لمطلب كاولاد | 4 |

| la | MOH A | 1 | | | |
|--------|--|--------|----------|---|-------|
| No. | | القار | المخرنبر | موجنوع | ازنار |
| 111 | 11 11 11 | | 149 | اعتزاهن نصبرها | 00 |
| | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | | 151 | جواب ٠٠٠٠٠٠٠ | 14 |
| | 1 (2) | | 158 | ا عرز امن أعبر اا | OV |
| | 0// | | 159 | اجواب ٠٠٠ | 09 |
| | | | | اعترافي فمرفا وجواب | 4. |
| | 12 00175 | I AV | 160 | اعتراهن نصروا وجواب | 91 |
| ص بخ | | | 161 | 12/4/40 | 44 |
| 12 | 1817 | 91 1 | 162 | 2015 MOINT | 44 |
| 21 | والن برام السمرا لخطر يعتعلى ال | 51 90 | 166 | اعتراهن فبر 6 اوجواب | 44 |
| 21 | العار العالم | | 167 | 111000 | 40 |
| 47 | 5 | ×1 71 | 169 | اعتراعی فراا س | 44 |
| 216 | ور مورس فقا | . 11 | | بابسوم | 40 |
| 11 | | | 170 | الأنامعية تقلعتس كربوة | |
| | بھی تحریفی عرصی تھوں میں تھے اور ان میں تھے اور ان میں تھے اور ان میں اور کی ان میں ان کے ان میں ان کے ان کے ا | 19 | | | |
| 217 | 1 T Sh. 1 | | " | र्मिन्द्राक्रिया तार् | 41 |
| 11 | | | | وعترا عان حفرت عمرز فقطره سبأكتاب إلله | 49 |
| | مرافق غر 19 و 19 و 19 و مركام | 50 | 181 | يون عما اهل بيت كوميون نهاك | |
| | المرافق مران عي المرام | A-17 | 184 | چواب | V. |
| 218 | الله الموال مدد | | 183 | اعترا فن نعر ١٠٠٠- | V |
| 229 | مرا عن قران من تعيين ه | 2) 90 | 184 | جواحب | Ur |
| 23. | | | 191 | تقرأ ك يوا مخريف كي عبرا لله من ورقا مل | VY |
| 233 | وي عنجوت ك ديكر أيت براعرًا في | | " | جواب ٠٠٠٠ | Už |
| 11 | ~~~~~\d | Lal | 192 | خراتعالى مراسك حا فظ المرابعة والمواقع | V |
| 235 | ورع بن اسرا يُل ك يُل تي يرا والوافن | | 11 | جواب ، ، ، ، ، ، ، ، | V. |
| 234 | رأك كحف اظتكا وعوفراجا فا | 5 102 | 193 | جمع مران كروة ي الى يوالي | V |
| 5.0 | ما لت هے | PA | 195 | جواب ٠٠٠٠٠ | 18 |
| // | مراجع المنافعة المناف | 103 | 198 | ٠٠٠٠ 6 جند ناو استدا | 109 |
| | آن کامین جانند کریدان انزگاالفاف جو ای | | 200 | 2 | 1 |
| 237 | | 1.1 | 203 | اعترا عن بزر ا | M |
| 238 | موری بقری کی رئیس مراکز افن بعو اس مصد | 107 | 204 | 3 . 41 45 1 | AY |
| 238 | اعمرن كوريت بير اعر اعن | | 205 | 1000 | Ar |
| 240 | اسرا يُل كوآيت بيراع الك | ١٥٩ بئ | 206 | | 12 |
| | | | 11 | الترافن لا علم في كام والكون | 10 |
| 13,241 | ייייני אַנייטיאָני טיי | | | (موار) | 14 |
| 25 | | | 208 | | |

| | | 1 00 | 1 | | |
|--------|---------------------------------|------|--------|--|--------|
| je zut | | 1 | j.j. | re sie s | المثار |
| | سنيول كر مردك كرايتون مي كريو | 142 | 245 | مسوري مر فا ن كرا يت ديواعترا الن | 111 |
| 328 | ع ا من تقلمه م | 144 | 2/1 | | 112 |
| 331 | ا يات تبليخ مِن تربين | 145 | 247 | العالب ١٠٠٠٠٠ | 113 |
| 332 | م ست دجم کو تحرید | 146 | 248 | تعسله المراجعة المعالمة المنافقة | 11/1 |
| 337 | صلوبعليه وسلعوالسليما من تحرين | 147 | 254 | اعرافن ا على سنت البياء الكرام كي آبا واجداد ك كفرك مّا كله هين | 115 |
| 338 | آ بیت ما ل کها ن فخی | | - | | 116 |
| 339 | سينوں محقرات مين الياء | 15. | 2623 | Walle Clark | |
| | علم منتس | 151 | 263 | 1 10 10 10 10 10 1 10 1 10 | |
| 353- | صفاعلت مربرس عملا في | | 266 | بو اب | 118 |
| 35800 | سينوں ك مران يوسون كا | 153 | 267 | 7 | 119 |
| | سورة نورينانكال دنامخ | 154 | 735270 | 7.97 | 121 |
| 36. | جو اس ۲۰۰۰ | 155 | | | 122 |
| 361 6 | مكر سور تو ل من عدتي اليات بالك | 156 | 275 | نشیعو لاک قراک موجو دسیمتفتع نهونے محت و چہ | |
| 262 | ا جواب ٠٠٠ | 157 | 279 | لفظ تحريف محرس محرار تم ين | 123 |
| 34346 | دعوى ، شيعه عمر بيت ك قائل | 158 | 281 | جواب ٠٠٠٠٠ | 124 |
| 368 - | الحرالميون | 154 | 283 | ا عتر اجن وجواب | 125 |
| | | | 285 | فقي كتب بيرا عترا بن ١٠٠٠ | 126 |
| | | 9 | 286 | جواب ، ۰۰۰۰۰۰ | 127 |
| | | | 296 | اعلسنت ك حراك نا تقعل ه | 128 |
| + | | | 297 | جوانب ٠٠٠٠ | 129 |
| | | 1 | 3.8 | ا علسنت ك حرا ن عيما زيادتاه | 13. |
| | | - | 1 | جواب ٠٠٠٠٠٠ | 131 |
| 2. | j | | 1 | 000 17 77.10 007.00 00 | 132 |
| | | | 11 | جواب ٠٠٠٠ | 133 |
| | | | 312 | امکی ، عمر این وجود ب سیبون که تنواها کاسورتو نامین لقصال | |
| | | | 314 | حواسب | 136 |
| | | | | سوریا توب میں کی ہے۔ ہواب | 137 |
| | 8 | | 219 | سنيون يحران كحرون مرقري | |
| | | | 3211 | بواب | 124 |
| | 1 | 1. | 323 | سنیوں کے تم ہ تا کے لفظوں کرتتی ہوا | 14. |
| | | | 325 | جواسب ۶۰۰۰۰۰ | 141 |
| | | | 272 | بوائب | |



جلداول

تَصَنِيْتِ لَطِيْت

علامه بروسير محد نورخ ف المجالي ومناعليه



Michael Britaning Colonial Col

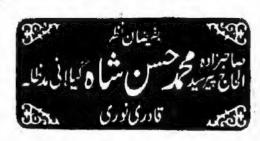
ته وشعبهٔ فارسی . جامعه نظامیه رضویه کاهود

تدوينوتهذيب

علامه محبوب احمد چنتی

مدرس جامعه نعميه لاهور

الورى كندف فانع مرجد نؤرى بالمقابل رباوط شيش لابؤ





جمله حقوق بذوين وكمپوزنگ بحق ناشر محفوظ ہيں

باراول راجب المرجب ١٣٢٢ ه باا هتمامدارالاشاعت دارالعلوم المجمن نعمانيه لا مور باردوم سراجب المرجب ١٣٢٥ه بمر2004ء ناشر السيسينوري كتب خانه.لأبور قيمت550 رويے ممل سيٺ

وربار ماركيث مخيج بخش رود ، لا مور (ن: 7112917-042



معموم شاورود بالقائل ريلو عاشيش الا مور (ن: 042-6366385

فروری گارش

الله كالا كه لا كه شكر ہے كہ ادارہ فور كُلْتَ خَالْنَى كليں لا مور نے حتى الا مكان آپ كی خدمت میں جو كتب پیش كیں ان میں جد يد طرز طباعت اور معيار كو برقر الركھنے كی كوشش كى۔ اس میں جم كس حد تک كامياب رہے آپ جمیں اس سے آگاہ فرمائیں ۔

ہرکتاب کی پروف ریڈیگ بار ہاکئی علمائے دین سے کروائی گئی ہے۔ مگراس کے باوجوداگرکوئی غلطی رہ گئی ہوتو ہمیں نشاندہی کر کے ممنون فرمایئے تا کہاس آئندہ ایڈیشن میں درست کیاجا سکے۔

خیراندیش پېرزارد استرن انوری کا باز انوری کا اندور الاهور الاهور الاهور الاهور

نشانِ مِٰتُزَلِّ ً

محمد منشا تابش قصوری جامعه نظامیه رضویه لا هور

شاتمان صحابه كرام كاانجام

اہل بیت اور اصحاب مصطفیٰ علیہ کی محیت عین حب رسول اکرم علیہ ہواور ان سے وشمی رسول اکرم علیہ سے اور ان سے وشمی رسول اکرم علیہ سے بیٹرائے میں حب اہل بیت کے بردہ میں اہل بیت سے بیٹری افقیار کئے ہوئے کیونکہ وہ معرومین اہل بیت سحابہ کرام کی شان اقدس میں غلیظ الفاظ استعمال کرتے رہتے ہیں۔ زبان وقلم سے ان کا بیہ وظیفہ شعار بن چکا ہے امت مصطفیٰ میں اہل بیت کی جتنی تعریف صحابہ کرام نے فرمائی اس کی مثال نامکن ہے اور اسحاب رسول کے جو اوصاف اہل بیت نے ارشاد فرمائے ان کی تمثیل بھی محال ہے اور میں وجہے کہ ایمان و اسلام کے لئے ان کا وجود جرو ایمان اور معیار قرار پایا۔ یہاں عبرت کے لئے شاتمان صحابہ کی شرع تھم کے ساتھ حکایات درج کی جاتی ہیں۔ ممکن ہے کہ بعض لوگ سبق حاصل کریں۔ ایمان و اسلام کے لئے ان کا وجود جرو ایمان اور معیار قرار پایا۔ یہاں عبرت کے لئے شاتمان میں۔ محابہ کی شرع تھم کے ساتھ حکایات درج کی جاتی ہیں۔ ممکن ہے کہ بعض لوگ سبق حاصل کریں۔ محابہ کی شرع تھم کے ساتھ حکایات درج کی جاتی ہیں۔ ممکن ہے کہ بعض لوگ سبق حاصل کریں۔ کتب تاریخ و سر پُر ہیں۔ حضور سیدو عالم سیالتہ کے اہل بیت ازواج مطبرات رہائی اور صحابہ کرام معنی خصوصا سیدنا ابویکر صدیت ہو ایما کرے وہ معلون ومفتری ہے اور کران تو بین و تنقیص کا نشانہ بنایا جرام و کفر ہے جو ایما کرے وہ معلون ومفتری ہے اور کران او بین و تنقیص کی نشانہ بنایا جرام و کفر ہے جو ایما کرے وہ معلون ومفتری ہے اور کران اور ہی المرتفی کی ایمان میں معاوریہ کی سیدنا عمر و بن العاص کے کہ کہ یہ کھر و منال کر جے وہ کو اور ہے اور اس کی سرافل ہے۔ (شفاء قاضی عیاض)

معرت سہیل بن عبداللہ تستری فرماتے ہیں کہ جو اصحاب رسول کی عزت نہ کرے وہ مجویا کہ فی کریم اللہ ہے۔ نی کریم اللہ کے پر ایمان ہی نہیں رکھتا۔ (النارالحامیہ مولانا نی بخش حلوائی)

حضرت مولائے کا تنات سیدنا علی ﷺ فرماتے ہیں کہ میری محبت اور سیدنا ابو بکر صدیق وعمر رضی اللہ عنہم سے بغض و دشمنی ایما ندار کے دل میں جمع نہیں ہو سکتے۔

تضرت امام ابوزرعد رازی فرماتے ہیں کہ جو اصحاب رسول کی شان میں گتا خانہ الفاظ بولے

وہ زئدیق ہے کیونکہ خدا او رسول ادر قرآن و احکام شریعت حق ہیں لیکن ہم تک سب چیزیں محابہ كرام كے بغير نيس بينجيں بي جوان پر جرح كرنائے اس كا مقصد كتاب وسنت كے منانے كے سوا ہے۔ پھینیں پس در حقیقت شائم صحابہ کرام ہی زندیق مکراہ کاذب اور معاند ہے۔ (كمتوب امام رياني)

نی كريم عليات نے حضرت على عليه سے فرمايا عنقريب ايك اليي قوم فكلے كى جے لوگ رافضى كبيل ع_م تنيل جال ياد ان سے دور رہنا آپ نے عرض كيا يا رسول الله! (عليه) ان ك كيا علامت هيد فرمايا وه حضرت ابوبكر صديق فظيه حضرت عمر فاروق فظيه كو كاليال دين موكى-

(الصارم المسلول ص٥٨٣) (ابن تيميه)

نی کریم علی نے ارشاد فرمایا میرے صحابہ کو گالیاں دے کر جھے ایڈا نہ پہنچاؤ۔ جس نے میرے صابہ سے محبت رکھی اس نے مجھ سے محبت رکھی جس نے انہیں ایڈا پہنچائی اس نے مجھے ایڈا دی۔ اور جس نے مجھے ایڈا دی اس نے خدا تعالیٰ کو ناراض کیا۔ پس جس نے اللہ تعالیٰ کو ناراض کیا قریب ہے کہ وہ اے گرفار عذاب فرمائے۔ (ترندی شریف شفاءشریف)

محمد بن عبدالله فرمات بين كه ايك رات مين خواب مين في كريم عليه و حضرت ابوبكر حكايت اور حفزت عرفاروق الله كا زيادت من مشرف موا كيا و يكما مول كه حفرت عر نی کر یم الله سے عرض کررہے ہیں کہ وہ مخض مجھے اور ابو بکر صدیق الله کو گالیاں دیتا ہے آپ نے فرمایا جاد ابوحفص (بیحضرت عرص كاكنيت م) اس ميرے باس لاو ألب كے اورحضور مالله كي خدمت اقدس ميں لے آئے اس كانام عمانی تھا۔ آپ نے ارشاد فرمايا اے زمين برلٹادو اور قل كردو (يادر ب كه يتخف شيخين كوكاليال دين مين ابني مثال آپتھا) حضرت عمر عظم نے عمانی کی سر پرتلوار ماری اور سرقکم کردیا۔

محمد بن عبدالله كہتے ہيں كہ مجھ عمانى كى چيوں نے بيدار كرديا ميں نے خواب سے المصتے ہى اس کے گھر کا راستہ لیا تا کہ اس کوعبر تناک اور سبق آموز واقعہ سے آگاہ کردول کہ تائب ہوکرائی آخرت سنوار کے۔ جب میں اس کے گھر کے قریب پہنچا تو رونے کی آواز سنائی دی۔ وریافت کیا .. الواك كے كر والول نے كہا آج رات جب وہ اسے بستر يرسور با تھا، كسى نے آ كرفتل كرديا ميں

آ کے برخا اس کی گرون کو دیکھا تو خون آلود تھی۔ (کتاب الروح این قیم ص ۳۲۸)

إحضرت شيخ عبدالحق محدث دبلوى الني شره آفاق كتاب "جذب القلوب" ص ١٨٦ مين حكايت افقل فرمائتے ہيں كر رافضوں كا ايك كروہ امير مديند كے پاس آيا۔ بہت سامال اور ہدیہ الماغرض سے اس کے ہاں لایا کہ روضہ مبارک کو کھود کر اجساد مطہر سیدنا ابو بکر صدیق وسیدنا عمر فارور فی کونکال لیں۔ امیر مدینہ نے بھی بوجہ بدندہی اور لا لیج اس مقبوح فعل کی اجازت دے دی اور ساتھ ہی دربان حرم شریف سے کہا کہ جس وقت بدلوگ آئیں ان کے لئے حرم کھول دیں ا پہ جہ بھی دہاں کریں منع نہ کرنا۔

وربان روضة النبی کا بیان ہے کہ جب لوگ نماز عشاء پڑھ چکے دروازہ بند کرنے کا وقت ہوا تو چالیں آ دی بھاوڑے کدالیں اور شمعیں ہاتھوں میں لئے باب السلام پر موجود تھے انہوں نے دروازہ کھنکھٹایا میں نے امیر کی تھم کے بیش نظر دروازہ کھول دیا اور خود ایک کوشہ میں دب کر گربیہ و زاری کرنے لگا۔ بار بار سوچتا نہ معلوم کیا تیا مت گزرنے والی ہے۔ ابھی وہ منبر شریف تک بھی کا زول ہوا۔ سب کے سب بمع سازوسامان اور جو آلات وغیرہ میراہ لائے تھے کہ عذا ب الی کا زول ہوا۔ سب کے سب بمع سازوسامان اور جو آلات وغیرہ میراہ لائے تھے اس ستون کے باس جو زیادت عثان میں ہے نہیں میں دھنس گئے۔

ادهرامیر مدیندان کا منتظر تھا۔ جب کافی وقت گزرگیا امیر نے مجھے بلا کران کا حال معلوم کیا ا میں جو کچھ دیکھا سنا دیا اسے یقین نہ آیا۔ میں نے کہا کہ آپ خود جاکر دیکھے ابھی حسف لیعنی زمین کے کھٹنے کا نشان موجود ہے۔

طبری نے اس حکایت کو ثقات کی طرف منسوب کیا ہے جو صدق و دیانت میں معروف ہیں اور بعض مور خین مدینہ نے بھی ای طرح لکھا ہے چنانچہ تاریخ سہوی میں بھی ندکور ہے۔

(تاريخ مدينه جذب القلوب ص ١٨٨)

مولوی امیر علی مرحوم حضرت شخ عبدالحق محدث وبلوی علیه الرحمه کی مشہورعالم تصنیف حکایت اشعیه المبعات ج مع ص ۲۵۳ کے حاشیہ پر لکھتے ہیں کہ دس سال قبل عظیم آباد میں ایک رافضی اور ایک من کے آپی میں تعلقات سے سُنی جب ج کے لئے روانہ ہونے لگا تو وہ رافضی بھی اے الوداع کرنے آیا اور اس سے کہنے لگا 'میری ایک آرزو ہے جے کہنے کی طاقت نہیں' سی نے کہا بٹاؤ تو سہی اس نے کہا تم مجھ سے وعدہ کرد کہ میرا پیغام جناب رسالت ما بسطیف کی خدمت اقدی میں عرض کر دو گے۔ سی نے کہا عرض کردوں گا۔ رافضی نے کہا ''بوقت زیارت گوئی کہ ما عضرت شوق دارم و لے ازیں جہت آ مدن نتوانم کہ مرد ودیمن مزد شا مدفون اند' (بوقت زیارت عرض کرنا کہ حضور مجھے حاضری کا شوق ہے مگر اس وجہ سے قاصر ہوں کہ آپ کے دو دیمن (معاذ اللہ) آپ کی پہلو میں مدفون ہیں۔

سی نہایت ولگیر ہوا اور کہنے لگا مجھے اس پیام کے عرض کرنے کی طاقت نہیں القصہ جب سی زیارت سے مستفیض ہوا تو اس رافضی کا پیام یادآ یا لیکن اتنا وقت نہ تھا کہ عرض کرتا۔

دوسرے دن جب قافلہ روائہ ہونے لگا رات کو روضتہ النبی کی زیارت کے لئے دوبارہ حاضر ہوا۔ زاروقطار آ تھول سے آ نسو جاری تھے اور اس حالت میں گر پڑا۔ اوٹکھ طاری ہوگئ۔حضور نبی کریم علیہ کی زیارت ہوئی ساتھ ہی حضرت سیدنا ابو بکر صدیق محضرت سیدنا عمر فاروق کھیں

المورے ہیں سید صدیق اکبر طاق کردن میں قرآن حمائل کئے ہوئے ہیں اور بائیں آرف میں میں قرآن حمائل کئے ہوئے ہیں اور بائیں آرف میں میں قرآن حمائل کئے ہوئے ہیں۔ سید فاروق اعظم طاق کا میں اور اس کا مرف ارشاد فرماتے ہیں کہ اس کی گردن اڑا دو حضرت فاروق اعظم ملوار چلاتے ہیں اور اس کا مرفام کردیتے ہیں۔

رسی بیان کرتا ہے کہ جب میں عظیم آباد میں والی آیا ہے تمام واقعہ مولوی خدا بخش خان سا بیاں کرتا ہے کہ جب میں عظیم آباد میں والی آیا ہے اہل وعیال کو روتا ہوا پایا۔ صاحب سے ذکر کیا تین جار روز بعد اس کے گاؤں گیا تو رافضی کے اہل وعیال کو روتا ہوا پایا۔ انہوں نے کہا کہ تمہارا دوست چند دن ہوئے تضائے حاجت کے لئے رات کو یاہر لکلا تو کسی نے اس کا سرتن سے جدا کردیا اور کلڑے گڑھے میں چھینک دیا مسج کو یہ معاملہ ظاہر ہوا گر

سی بہ داستان من کر اتنا رویا کہ اپنے آنسوؤں پر قابو نہ رکھ سکا۔ رافضی کے اہل وعیال نے بیال کیا کہ بیدائے دوست کے فراق میں رور ہا ہے حالانکہ معاملہ اس کے برعکس تھا۔

فَاعْتِبُرُوا يا ولي الابصار ٥ .

شروشكر معتدمورخ "محقق بلند پایئه نساب اور بهترین مصنف تصے مزار پر انوار رته پیران منازادیب از بارگ می علیه الرحمه این وقت کے جید عالم ممتازادیب اسیر وشكر اندار بهترین مصنف تصے مزار پر انوار رته پیران (نارنگ) میں مرجع انام ہے۔ شیر وشكر آپ كی بچاس سے زائد تصانیف میں ایک تاریخ و تحقیق تصنیف ہے جو آپ كی مقدس زندگی میں متعدد بارشائع ہوئی۔

15 شعبان المعظم 1405 ھ شب برأت كے مبارك موقعہ پر راقم السطور تابش تصورى كو جديد انداز بين شاكع كرنے كى سعاوت حاصل ہوئى تھى اب است تھہ شيعہ اليى بلند پاية اور والاًل و براھين سے مرصع تاريخى كتاب كے ساتھ لبلور تقذيم شامل كيا جا رہا ہے تا كہ علم و تحقيق كر شائقين الى سے پورا پورا استفادہ كريں۔مصف تخه شيعہ كے مخصر حالات بھى شامل بيں۔حضرت مصف عليہ الرحت كى بدائيك اليى شاہكار تھنيف ہے جس كا جواب تك نہيں،مسلمانوں ميں بكثرت فرق عليہ الرحت كى بدائي اليى شاہكار تھنيف ہے جس كا جواب تك نہيں،مسلمانوں ميں بكثرت فرق محقمت و رفعت كا برى شدو مدسے انكاركيا۔ صحاب كرام رضوان اللہ تعالى عليم الجعين كى صحابيت كے مظمت و رفعت كا برى شدو مدسے انكاركيا۔ صحاب كرام رضوان اللہ تعالى عليم الجعين كى صحابيت كے مشروع ہوت الم الى بيت مصطفی علیہ مسلم اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ ان بي مرضى كے چند مضرات كو برنو ايمان بنايا بہت سے اجماعى مسائل سے نہ صرف اعراض كيا بلكہ ان ميں انكاركو اپنا مائو بنايا اور خوابشات نفسانيہ كولى طور پر ايمان قرار ديا۔ اليے فلا نظريات كى ترويد ميں نہايت تحقيقى، عدہ اور متين اعداز ميں مصرت نے تحد شيعہ قامبند فر ماا۔

نارش اہل سنت حضرت مولانا علامہ پروفیسر محد نور بخش تو کلی قدس سرہ ایم اے علیگ

مولانا محمد نور بخش تو کلی 1205ھ 1877ء میں کو چک قاضیاں ضلع لدھیانہ میں پیدا ہوئے ابتدائی تعلیم اپنے علاقے کے علاء سے حاصل کی اور سلم یو نیورٹی علی گڑھ سے ایم اے عربی کا احتفان پاس کیا۔علوم دینیہ سے والہانہ محبت کا عالم یہ تھا کہ میونیل بورڈ کالج کے پروفیسر ہونے کے باد جود مولانا غلام رسول قاکی امرتسری کے پاس حاضر ہوتے اور طلباء کے ساتھ چٹائی پر بیٹھ کرتفسیر و مدیث اور فقہ کا درس لیتے۔

جن دنوں آپ محد ن سکول انبالہ کے ہیڈ ماسٹر تھے حضرت خواجہ تو کل شاہ انبالوی رہ انسلہ امر تھے حضرت خواجہ تو کل شاہ انبالوی رہ انسلہ (م 1215ھ/ 1897ء) کے دست الدس پر بیعت ہوئے اور خلافت اجازت سے سرفراز ہوئے۔مولانا مرحوم سرور دو عالم النہ کی مجت سے سرشار تھے۔آپ ہی کی مسامی جیلہ سے متحدہ ہندو پاک میں بارہ وفات کی بجائے عید میلاد النبی النہ کے نام سے تعطیل ہونا قرار پائی تھی۔

آپ ایک عرصہ تک جامعہ نعمانیہ لاہور کے ناظم تعلیمات رہے اور اس کے ساتھ ساتھ ساتھ کورنمنٹ کالج کے شعبہ عربی کے پروفیسر بھی رہے کچھ مدت کے بعد کالج سے متعفی ہوگئے۔ حصرت توکلی صاحب نے تصانیف کا قابل قدر ذخیرہ یادگار چھوڑا ہے۔ تصانیف مندرجہ ذیل ہیں۔

- 1- الاقوال الصحيحه في جواب الجرح على الى صنيفه (امام اعظم الوصنيفه رميشيك بر روافض اور غير مقلدين كے اعتراضات كا جواب)
 - 2- سيرت رسول عربي
 - 3- تخدشيعه دوجلد
 - 4- سيرت سيدناغوث أعظم (طبع شده نورى كتب غانه لا مور)
 - 5- شرح قصيده برده عربي
 - 6- بشرح تصيده برده (اردو) (طبع شده لوري كتب غانه لا بور)
 - 7- تذكره مشائخ نقشبندىيه (طبع شده نورى كتب خانه لا مور)
 - 8- اعجاز القرآن 9- رساله النور
- 10- عيدميلادالنبي 11- البرزخ (طبع شده نوري كتب خاندلامور)
 - 12-. معجزات النبي
 - 13- عقائد الل سنت (طبع شده نوري كتب فانه لا بور)

14- غزوات الني

15- تغییر سورہ فاتحبہ و بقرہ (ام الکتاب) (نوری کتب خانہ کے زیرا ہتمام پہلی مرتبہ شائع ہوئی)

18- سرگزشته این تیمیه

17- امام بخاری شافتی

زندگی کے آخری ایام میں کھی طرصہ بیار رہے اور 13 جمادی الاولی، 24 مارچ (1367ھ/ 1948ء) کوسفر آخرت فرمایا۔ فیصل آباد (تذکرہ اکابر اہل سنت از قلم علامہ شرف قادری مرظلہ) کے جزل بس اسٹینڈ کے قریب حضرت نور شاہ ولی رہتہ شملیہ کے مزار کے بیاس وفن ہوئے۔ مزار پر گئید تقییر ہو چکا ہے۔

حضرت علامہ مولانا محمد نور بخش تو کلی رمظ علیہ نے جب اپنی شہرہ آفاق تصنیف ''سیرت رسول عربی شہرہ آفاق تصنیف ''سیرت رسول عربی '' قلمبند فرمائی نو اسے مجر صادق نبی مکرم رسول اعظم جناب احمد مجتبی علی نے اس شان سے منظور کیا کہ بطور خصوصی انعام اپنی زیارت سے بہرہ مند فرمایا چنانچہ اس زیارت کی تفصیل کا واقعہ تاج کمپنی لا مور نے جب سیرت رسول عربی کا تیسرا ایڈیشن شائع کیا تو یوں عنوان دیا۔

ديباچه طبع سوئم (سيرت رسول عربي (تاج تمپني)

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمدونصلي على رسوله الكريم

مرشدی وسیدی حضرت علامہ محمد نور بخش صاحب تو کلی رواشی خلفہ مصنف سیرت رسول عربی کے وصال (بتاریخ 12 بھادی الاول 1367ھ مطابق 24 مارچ 1948ء یہ مبارک و مقبول کتاب تیسری مرتبہ زیر اہتمام تاج کمپنی لمیٹڈ کرا پی علی بلاکوں کے ساتھ چھپ رہی ہے۔ اس کی مقبولیت کا جُبوت کئی نوع سے مل چکا ہے۔ ان بیس سے ایک تو نہایت شاندار ہے۔ محر می مفتی عبدالحمید صاحب نقشبندی مجددی لودھیانوی جو ایک عابد، صالح، بزرگ ہتی ہیں۔ سال 1948ء میں ملتان شریف رہائش رکھتے تھے نے بندہ کو ایک چھٹی بدیں مضمون تحریر فرمائی جب کہ حضرت ماحب تو کلی کے انتقال کو تقریباً ایک ماہ گزر چکا تھا۔ ''ایک رات خواب میں میں نے دیکھا کہ حضرت مولانا ایک خوبصورت معطر باغ میں سنہری تخت پر جلوہ افروز ہیں۔'' میں فی نے دریافت کیا کہ مولانا صاحب یہ سرفرازی کیے فیب ہوئی؟'' فرمائے گے ''مفتی صاحب یہ انعام سیرت کہ مولانا صاحب یہ انعام سیرت رسول عربی کی وجہ سے نصیب ہوا ہے۔'' حضور پرنور کی خواہش کے مطابق نقشہ عرب وٹو ٹو کہ معظمہ رسول عربی کی وجہ سے نصیب ہوا ہے۔'' حضور پرنور کی خواہش کے مطابق نقشہ عرب وٹو ٹو کہ معظمہ و مدینہ منورہ منضم کے جارہے ہیں۔'

عاصی چودهری محمه سلیمان نوری تو کلی تجاده نشین آستانه نوری_د سر محمہ مواشات ہوئی۔ اب بالکل نایاب می دعفرت الحان ہرزادہ اسے جدید دور کے تقاضہ کے مطابق نہایت خوبصورت طباعت سے شائع کرنے کی سعادت حاصل کر رہے ہیں۔ آپ کی سر بہتی میں بے شار وین، اصلاحی، تاریخی اور سیرت طیبہ مشمل کتا ہیں نوری کتب خانہ سے مسلسل جھپ رہی ہیں۔ وین، اصلاحی، تاریخی اور سیرت طیبہ مشمل کتا ہیں نوری کتب خانہ سے مسلسل جھپ رہی ہیں۔ اس کتاب کو نہایت باریک بنی اور محنت سے از سر نو حضرت مولانا علامہ محبوب احمد صاحب چشتی فاضل جامعہ نظامیہ رضویہ لا ہور۔ مدرس جامعہ نعیمہ گڑھی شاہو لا ہور نے مرتب فرمایا۔ بیری گرائی اور گیرائی سے بنانے سنواد نے کی مسائی جیلہ فرمائیں۔

وعا ہے اللہ تعالی پیرزادہ سید محر عثان نوری مرظلہ اور صاحبزادہ والا شان مکرم جناب سید محمہ فصیل عثان نوری زید مجدہ اور ویگر صاحبزادگان کی ان خدمات گرال مایہ کوشرف قبول سے نوازت موسط عثان نوری کتب خانہ کو دن دوگئی اور رات چوگئی ترتی مرحت فرمائے۔ اور مولا نامحبوب احمہ چشتی کی سعی جمیل کوشرف قبولیت عطا فرمائے جنہوں نے نہایت عرق ریزی محنت اور محبت سے نہ صرف اس کی تھیج فرمائی بلکہ نظر ثانی کا حق اوا کیا۔

امين ثم امين - بجاه رحمته اللعالمين عليه المين عليه المين عليه المين المين عليه المين المين المين الدول المين الم

مرم: مولانا پر غلام دهمرنای مرده

عرض حال میری نشوونما اس محلّه (چله بیمیان لا مور) میں مولی ہے جہاں اہل تشیع کے بھی چند عرض حال کھر ہیں اور باوجود اختلاف عقائد ان کے ظاہری میل ملاپ مین بھی کوئی فرق تهین آیا- میرے والد بیر حامد شاہ مرحوم کی نشست و برخاست مولانا جمر بخش صاحب ملبل برادر مولانا غلام وسلير صاحب مغفور تصور كے ساتھ تھى جو ملال مجيدكى مسيد كے اللم ستے أنہيں كے درس قرآن شريف مين مجھ نومبر ١٨٩٠ء مين داخل كيايا اور اى مبيني مين السكا يوال ختم قرآن مجيد ير آمین کرائی۔

والدمرحوم بھی بھی محیدر شاہ کے پاس بھی جاتے جونرم مزاج شیعہ تھ اور محرم من شربت برختم بھی ولاتے تھے۔ مین نے ١٩٠٣ء مین اسلامیه سکول شیرانوالا دروازے سے فرسٹ ڈویژن

میں امتحان انٹرنیس ماس کیا۔

اس وقت تک مجھے حضرات شیعہ کے عقائد کی خبر نہ تھی صرف اتنا جانتا تھا کہ ہم عاشورہ میں نیاز دیتے ہیں اور وہ ماتم کرتے ہیں۔جلوس ذوالجناح مارے گھرے یے سے گزرتا تھا اور مجد ملاں مجید میں اس وقت منقبت پڑھتے تھے جس کا ایک شعریاد ہے۔

> حق ہے ہی خلفہ جار یار ہیں عاروں تی کے یار ہیں فخر کبار ہیں

اور سیمنقبت ان کے لئے اور ماتم خیز ہوتی تھی حضرت بلبل فوت ہوگئے اور پھر جو منتظمین یے انہوں نے نوابوں کی کاسدلیسی اختیار کرلی اور مجد کی رونق میں فرق آ گیا اب نی بود نے انظام سنجالا ہے اور بزرگان وین کی تقریب پرمجالس پندونفیحت گرم ہونے لگی ہیں۔

اس معجد کے پاس بی خواجگان نارووالی کا امام باڑہ ہے جس کے اوپر معجد اب بی ہے ماتم کے نواب میں جو کسر رہ گئ ہو وہ نماز پڑھ کر پوری کرلیں۔ یہ قوم بڑی دھیی روش پر چلتی ہے کسی ے ناحق جھڑا مول نہیں لیتی۔ اہل سنت بھی امن بیند ہیں اور آ رام و آشتی سے بسر ہور ہی ہے۔ محلے میں شعبوں کا ایک گھر تفرقہ انداز ہو چلا تھا' وہ خود ہی مکان ﷺ کر چلا گیا ہے۔

ٱللُّهُمَّ اكْفِنَا شَرِّهُمْ بِمَاشِئَتَ ہاں مجھے جب علم ہوا کہ تفرقہ انداز شیعہ (گروہ) بمفلوں کی ذریعے رسول انام کے صحابہ سرام علیم الرضوان پر جھوٹی بہتان باندھ رہا ہے اور بدگوئی سے کام لے رہا ہے تو میں ان دوستوں سے ہم آ ہنگ ہوگیا جوان کی افتراء پر دازیوں سے تنگ آئے ہوئے تنے۔ میرے شخ حسن الدین بی اے ایڈووکیٹ اور سید مظہر حسین صاحب مشی فاصل بی اے کے سپر داس شیعہ کے مطاع ن کا تخریری جواب دینا سپر دہوا جنانچہ ہم نے ان کے ہرطعن کے جواب میں ایک ایک رسالہ لکھا اور چھوا کر مقت تقیم کرنا شروع کیا۔

مسلمانوں کو بزرگان دین کی عظمت کا احساس پیدا ہوا اور انہوں نے ۱۳۳۹ھ کے محرم میں تعزیے اور مہندیاں نکالنا اور بدگوؤں کے جلوس اور مجلسوں میں شریک ہونا ترک کردیا اور بیطریقہ تعزیے اور مہندیاں نکالنا اور بدگوؤں کے جلوس اور مجلسوں میں شریک ہونا ترک کردیا اور بیطریق تصادم کو رو کئے کی لئے بڑا پہندیدہ ہے چنا نچہ اس طریق عمل سے لا ہور میں بھی شیعہ کی قدار نہیں ہوا کہ ہوا ہندوستان سے نکلے ہوئے بعض فسادی شیعہ کے آنے سے صورت مجرفی شروع ہوئی جب وہ جابجا ماتی جلوس گزارتے ہول وہ کا نیس بند کر کے الگ ہوجا تیں اس پر اہل جلوس جھلائے اور انہوں نے چند جگہ لوٹ کھسوٹ مجا دی اور الٹا سنیوں کو بدنام کیا۔

اب اراکین وائرة الاصلاح نے تقسیم رسائل کا جدید دور شروع کیا ہے اور اس میں پیغام اتحاد ویکر نو رسالوں کا قائد ہے اور ''شیعہ سنی میں مصالحت' نادر شاہ کا شاہکار شائع کردہ دارالاشاعت علوم اسلامیہ حسین آگاہی ملتان مضمون کا مؤید مصالحت پیند مسلمانوں کا نقاضا تھا کہ رسالہ شیر و شکر و و بارہ شائع کیا جائے تا کہ فابت ہوکہ قرونِ اولی میں سب مسلمان شروشکر سے ان میں رشتہ شکر کو دوبارہ شائع کیا جائے تا کہ فابت ہوکہ قرونِ اولی میں سب مسلمان شروشکر سے ان میں رشتہ داریاں ہوتی تھیں جو ان کی زہبی اور دینی بیجبتی کا نشان ہے۔شیعہ سنی کا جھڑا نہ تھا' یہ نام بعد ہی داریاں ہوتی تھیں جو ان کی زہبی اور دینی حقیفہ خدا کے مقرر کردہ نام پر مسلم کہلاتے سے عبداللہ بن سبا میں رکھے گئے وہ تمام پرستار دین حقیفہ خدا کے مقرر کردہ نام پر مسلم کہلاتے سے عبداللہ بن سبا میں دیں جو دھوکا دیئے کے کے مسلمان بنا تھا۔ حضرت علی مظافی کے حق خلافت غضب ہونے کا فتنہ ایجاد کیا اور رفض و بدعت کی بنیادر کھی جوجہم اسلامی پر رستا ہوا ناسور بن گئی۔

آسانی وصیت نامه کیا گیا اور اس نے باوجود خدائی طاقت کا مالک ہونے کے اس کی بازیابی کے لئے کوئی کوشش کی؟

شیعی روایتی بھی یہی بتاتی ہیں کہ نہیں کی بلکہ صبر کیا اور وہ بھی اس صد تک کہ ان کی زوجہ.

مطہرہ پر معاذاللہ اس قدر تشدد کیا گیا کہ حمل محن ساقط ہو گیا اور بیٹی ام کلثوم (ام کلثوم بنت فاطمہ)
کو فاروق اعظم ﷺ بہ جر نکاح میں لے آئے جیسا کہ فروغ کافی کے باب فی ترویج ام کلثوم ﷺ میں نہایت گندے الفاظ میں اور کتاب الصافی شرح اصول کافی کی کتاب الحجہ جزوسوم کے الاویں باب میں بالفاظ جنگ حرمت (یردہ دری) ڈرکور ہے۔

بياتو دنيوي معاملات ميس مانوق الفطرت صبر كي كهاني ہے۔

اور دین معاملہ میں قرآنی احکام کے یارہ یارہ ہونے پر صبر

الم كعبد ك فراب مون يرمير

الارسول عظر يقول كمعطل موت يرمير

اجن خلافت کے چلے جانے پڑ

کے ایک میں کے عصب ہونے رمبر

الغرض بے انتہا صبروں کی تلقین بذریعہ آسانی وصیت نامہ اختراع کی محق صرف بیہ بات بتانے کے لئے کہ حضرت علی مظاف میں جو کئے کہ حضرت علی مظاف نے اصحاب ثلاثہ (حضرت ابوبکر عمر عثمان مظاف کے حمد خلافت میں جو کسی فتم کا جھگڑا نہیں کیا وہ اس لئے تھا کہ انہیں صبر کی وصیت آسان سے نازل ہوئی تھی اور وہ کتاب وسنت کو معطل پاکر چپ رہے اللہ کی پناہ! یہ کس قدر بہتان ہے۔حضرت علی شیر خدا کرم اللہ وجہہ کی ذات پر حالانکہ ان کا کلام نیج البلاغہ میں صاف ہے کہ

نعرہ حیدری ان سب سے زیادہ قوی ہواور فرق کے جواس پر ان سب سے زیادہ قوی ہواور فعرہ حیدری خدا کا تھم جو اس بارے میں ہے اسے سب سے زیادہ میں جانتا ہو۔'' نیز فرماہا کہ

" بین دو شخصوں سے مقابلہ کروں گا' ایک تو وہ شخص جو مدی خلافت ہے حالانکہ وہ اس کامستی نہیں اور دوسراشخص جو اس چیز سے اپنے نفس کومنع کرے جو اس پر واجب ہے۔ " (صفحہ ۲۲۹ ٹیرنگ قصاحت ترجمہ نیج البلاغہ)

اس ارشاد سے خابت ہوا کہ حضرات ثلاثہ رضی اللہ تعالی عنہم اپنے اپنے عہد خلافت میں سب سے زیادہ تو ی اور احکام النی کے بہترین عالم سے لہذا مستحق خلافت۔ اگر ان اوصاف کے مالک نہ ہوتے تو اسداللہ النالب ان کو غیر مستحق سمجھ کر ضرور مقاتلہ کرتے 'پس آسانی وصیت نامہ بالکل جعلی خابت ہوا اور حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کی ہتک حرمت احکام خدا اور رسول کے تعطل عصب حقوق وغیرہ کے قصے کلام امام نے جھوٹے خابت کردیئے۔

ال تمہیر کے بعدہم اصل موضوع پر آتے ہیں۔ حضرات شیعہ کے علامہ حائری کا ایک رسالہ انظر جو اب بھی خیعی کتب فروش کی دکان پر بکتا ہے اس میں بیفتوی درج ہے:

موال: شیعه عورت کا لکاح غیر شیعه مرد کے ہمراہ جائز ہے یا نہیں؟ اگر ایسا واقع ،وا ہوتو اس میں طلاق اور عدت کی ضرورت ہے یا نہیں؟ ایسے نکاح سے جو اولا د پیرا ہوگی وہ نمہب حق میں طال زادی قرار دی جائے گی یا حرام زادی؟ بہت جلد فتوے کی ضرورت ہے۔ جواب: اصل بات بين كم بالاتفاق فكاح مين كفايت شرط بي كفايت كم معن مين اختلاف ہے کفایت سے اسلام مراد ہونے سے تو کسی کو بھی انکار نہیں مگر اکثر نقباء کے نزدیک اسلام کے علاوہ بمفاء المؤمنون بعضهم اکفاء بعض زوجین کا مومن ہونا مجی شرائط ضروریہ میں سے ہے ہی فقہ حقہ شبعہ کے نز دیک شبعہ عورت کا نکاح کسی غیر شبعہ ا ٹناعشری کے ہمراہ اس کئے ناجائز ہے کہ غیر اثناعشری کو وہ مومن نہیں سیجھتے جومسلمان غیر اثنا عشری عقیدہ رکھتا ہو شیعوں کے نزدیک وہ مومن نہیں مسلمان ہے الیم صورت میں باوجود عالم بمسئلہ ہونے کے اگر ایسا نکاح واقع ہوا تو وہ نکاح باطل ہے ان کی اولاو بھی شرعاً دلدائرنا ہوگی اگر جابل بہ مسئلہ ہونے کی وجہ سے ایسا نکاح ہوا ہوتو اولا دولدِ شبہ طلال زادی ہے لیکن نکاح دولوں صورتوں میں ناجائز ہوگا۔ بعض فقہاء تو ناجائز تکاح میں طلاق کی ضرورت نہیں سمجھتے لیکن اگر دخول واقع ہوچکا ہوتو عورت کو عدت رکھنا ضروری موكا وموالعالم (من مبارك حويلي لامورعلي الحائري)

اس حقیقت کے اعتراف میں تو کسی کو انکارنہیں ہوسکتا کہ مفتی جو نتوے دیتا ہے وہ رسول ، ادلی الامر کے طرزعمل کو پیش نظر رکھ کر بی دیتا ہے ورنداس کا فتوی نا قابل سلیم ہے اگر آج شیعہ عورت کا نکاح غیر شیعہ سے ناجائز ہے تو بن وعلی اور آئمہ کے مبارک عہد میں تو بدرجہ اولی ناجائز ہونا چاہے کونکہ شیعہ دوست جس نہب کا پابندائے آپ کو ظاہر کرتے ہیں وہ ان کے نزدیک عين في وائمه كا غرب ب اور وه اصحاب جن كو الل السنت والجماعت مقتدا و واجب الاحترام جانة بي اورجن كوشيعه مومن نبيل مانة وه يقينا غير شيعه تق للبذا ازروئ فتوى مندرجه بالإان کے ساتھ تعلقات نکاح قائم کرنا تاجائز تھا مگر چونکہ ان کی نبی وعلی و اولادِ علی نے اپنی لڑ کیاں ویں اورخود ان الركيول سے نكاح كے تو البت مواكدوه سيح مومن، مسلمان اور كي ويندار سمجے محكے اور ان میں کوئی دینی مغامرت ندھی درند میہ مھی ممکن ندھا کدوہ غیر اور مقدس متعیاں جو ایمان پر جان قربان کردینامعمولی بات مجھی تھیں ان لوگول سے رہ ورسم قائم رکھیں جن کو آج خارج از ایمان اور منافق وغیرہ کہا جاتا ہے اور ان میں سے یہاں تک وشنی اور بنفش روا رکھا جاتا ہے کہ ان کے ناموں پر اپنی اولاد کے نام بھی نہیں رکھ جاتے ورحالیہ بدمسلک ائمہ کرام کے بالکل خلاف ہے كيونكدانبول في اصحاب ك اسائ مباركه برائي اولادكوموسوم كرنا باعث فخر وسعادت جانا اور ان کی تعریف میں رطب اللمان رہے۔ دعوت اسلام کو قریش نے بہ طیب خاطر قبول نہیں کیا بلکہ جہاں تک ان کے بس میں تھا انہوں نے اس کی مخالفت کی اور بڑے زور سے کی بھائی بھائی کا ' چھا جھٹنچ کا اموں بھانچ کا اور بیٹا بھائی کا ' چھا جھٹنچ کا ماموں بھانچ کا اور بیٹا باپ کا وشمن جانی بن گیا شوہر پر ضلع کرا لیا ' کیوں؟ باپ کا وشمن جانی بن گیا ' شوہر پر ضلع کرا لیا ' کیوں؟ کس وجہ سے؟ کیا کسی دنیاوی جھڑ ہے کی خاطر؟ نہیں بلکہ محض اختیارات دین کے باعث جیسا کہ مفصلہ ذیل کی مثالوں سے ثابت ہوگا۔

من عبد الدار العامر دارعبد الداركا بروتا طلح جس كے ساتھ اس كا تمام قبيلہ دشمن خدا و اسول تھا۔ اس ميدان ميں جہال علمبر دارعبد الداركا بروتا طلح جس كے ساتھ اس كا تمام قبيلہ دشمن خدا و رسول تھا۔ اس ميدان ميں جہال علمبر دار نبى دارشجاعت دے كر داخل خلد بريں ہوئے و جي ان ك دو سكے بھائى بچے اور ان كى اولا دكل دس آ دى ايك غلام سميت حضرت حمزه سعد بن الى وقاص عبد الرحن عوف اور حضرت على من الى وقادوں سے جہنم واصل ہوئے۔

ابولہب اللہ حضور کا بچاتھا مگر جتنی اسے اپنے بھتیج سے دشنی تھی اور کسی کو نہ تھی اور اس عداوت البولہب اللہ میں سوائے اختلاف دین کچھ نہ تھا۔

غروہ بدر میں جب حضرت عمر ﷺ نے ویکھا کہ ان کا ماموں عاص بن ہشام پرستاران اسلام کے مقابل شمشیر بدست ہے تو آپ نے جھیٹ کرخود ننج فاروقی سے اس کا سرتن سے جدا کرویا اور دین کی خاطر قریبی رشتہ کی وقعت نہ بھی۔ اس میدان میں عبدالرحلٰ بن ابو بکر رہے۔ قریش مکہ کے ماتھ سے بعد میں مسلمان ہوگئے اور پدر بزرگوار سے بیان کیا کہ میں نے آپ کو ہنگام رزم ویکھا مگرصرف باپ بھی کرحملہ نہ کیا آپ نے س کر فرمایا کہ بخدا اگر میں تمہیں ویکھ لیٹا تو قبل کے بغیر مرحملہ نہ کیا آپ نے س کر فرمایا کہ بخدا اگر میں تمہیں ویکھ لیٹا تو قبل کے بغیر نہ چھوڑتا۔

حضرت فاروق اعظم ﷺ جب مشرف براسلام ہوئے تو صلح صدیبیہ کے بعد اپنی دو بیویوں (قریبہ بن الهید الخو وی جو ام المونین حضرت ام سلمہ ﷺ کی بہن تھیں اور ملکیہ بنت جرول خواعی) کو تبلیخ اسلام کی مگر چونکہ وہ اسلام نہ لا کیں اس لئے ان کو طلاق وے دی کیونکہ ازروئے شریعت ان کو فکاح میں رکھنا جائز نہ تھا' ای طرح رسول خدا علیہ کی بیٹیوں حضرت رقیہ رہائیں کو عتبیہ ابنان ابولہب سے طلاق لینی پٹی کیونکہ وہ ایمان نہیں لائے تھے اور پھر جبی دو صاحبر ادیاں کے بعد دیگر حضرت عثمان ﷺ کی دو صاحبر ادیاں کے بعد ویگر حضرت عثمان ﷺ کی دو صاحبر ادیاں کے بعد ویگر حضرت عثمان ﷺ کی دو صاحبر ادیاں کے بعد ویگر حضرت عثمان شائد کے نکاح میں آئیں اور وہ ذوالنورین کہلائے۔ اگر مسلم و مشرکہ یا مشرکہ و مسلمہ کا فکاح جائز ہوتا تو حضرت عمرے ان کی فاق میں اللہ ہوتیں اور نہ حضرت نبی کریم علیہ کی ہر دو بنات کا ابولہب کے بیٹوں نے قطع تعلق ہوتا۔

رشتہ زوجیت کو قطع کردیے سے بھی زیادہ اہم معاملہ محابہ کرام عظمہ کا این رشتہ داروں کو



برست خود فل كرنا ہے۔ جب انہوں نے دين كے لئے ہرسم كى قربانى سے درائى نه فرمايا اوران بر سوا اور تمام علائق کو چی جانا تو کسی کا کیا منہ ہے کہ ان کی ذات ستووہ صفات کی عیب جونی کرے اور ان کی باہمی رشتہ داریوں کوغیر و تبع سمجھ کر ان کو برا کہتا ہے۔

ہم حضرات عشرہ مبشرہ وغیرہم کل اصحاب رسول علیہ کو اول درجہ کے غیرت مند اور بالمل ، مٹاتے والے یقین رکھتے ہیں اور جارا ایمان ہے کہ انہوں نے بھی منافقت سے کام نہیں لیا' جس کے ساتھ ان کی محبت تھی وہ علامیہ تھی اور للد تھی او جن کے ساتھ ان کو بغض تھا وہ علامیہ تھا اور للہ تما جوغیرمسلم انہیں نظر آتا اس کو انہوں نے نہیں چھوڑ گرمسلمان کرکے یا جزیہ لے کر اور جس نے ان ہر دو امور میں سے کسی کوئیس مانا اس کو انہوں نے اس دنیا میں نہیں رہنے دیا۔ ایسے غیور اور شچاعوں پر بد بہتان باندھنا کہ انہوں نے باجمی میل ملاپ میں منافقت یا ریاء سے کام لیا کی

جو شجرے ہم آئندہ اوراق میں درج کریں گئ ان سے ثابت ہو جائے گا کہ قریش میں جو ایمان نہیں لائے اُن کوانہی کے سلمان بھائیوں نے کاٹ کر ڈال دیا خواہ ایسا کرنے میں ان میں ے اکثر خود بھی واصل بحق ہو گئے اور جو حلقہ بگوش اسلام ہوئے وہ خواہ کیے ہی دور کے رشتہ دار نے سکے بھائیوں سے زیادہ ایک دوسرے کے ممدومعاون بن گئے اور باہمی ناطول رشتول نے انہیں اور بھی متحد وشفق کردیا۔ اصحاب ثلاثہ کے بعد اگر ان میں پچھ شکر رفجی پیدا ہوئی تو وہ ای تتم كى تقى جيسى كە حقیقى بھائيوں میں ہواكرتی ہے اليے لڑائى جھگڑوں سے ان كے دين و ايمان بر مجھ حرف نہیں آتا جیسا کے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کے اتوال مندرجہ نج البلاغہ سے ثابت ہوتا ہے۔ اس رسالہ کی تحربہ سے ان نسبی و صهری تعلقات کو (جو آئندہ اوراق بر مندرجہ عرض خاص فروں سے واضح ہوں گے) ظاہر کرنا ہے جو اس کثرت سے تی پاک و

اصحاب رسول کے مابین ہیں کہ ایک قرابت کو دوسری سے ممیز کرنا مشکل معلوم ہوتا ہے۔ بعض

اس میں کھھ کلام نہیں کہ باوجود ان رشتہ دار یوں کے خاندان بن فاطمہ پر بعض لوگوں نے تشدد كيا مر يمخصوص به خاندان نبوت نهيس تفا كيونكه خود نبي كريم علين كي ذات بإك اور صحابه كوان کے نہایت قریبی رشتہ داروں نے ایذا رسانی میں کوئی وقیقہ فروگز اشت نہ کیا مگر جب آنخضرت ایک كوان يرغلبه حاصل مواتو آپ نے لاتثویب عليكم اليوم فرماتے موسے ثابت كرديا كه

ورعفو لذتے ست کہ در انتقام تیست

ای طرح علاوہ اولاد نی السلے کے دوسرے سحاب کی اولا دکو بھی سخت ترین اذبیتیں پہنچائی میں جن کی یاد ہرمسلمان کو اندوہناک کئے بغیر نہیں رہ سکتی مگر ریقرین انصاف نہیں کہ ہم غصہ میں خبر خواہوں کو بھی بدخواہوں کے ساتھ لے ڈالیں۔مسلمان وہی ہے جو رخ و عصد کی حالت میں

ٹاانسانی اورظل کرنے سے بچے اور ایسے اصحاب کو ہرا کہنے سے باز رہے جن کے نبی تالیہ کے ساتھ گونا گوں نسبی اور وین تعلقات متے یہ تعلقات نہ صرف رشتہ نالمہ ظاہر کرتے ہیں بلکہ ایسے وقت میں جبکہ صاحب ایمان ہونا ازروے اسمام جوار نکاح کے لئے مہلی شرط ہوتو نبی کریم علیہ اور دوسرے انکہ کا خود الیمی رشتہ وار بال کرنا و کی ایمنا اور دینا صریح اس امرکی دلیل ہے کہ ناکے ومنکوحہ ہر دوصاحب ایمان سے اور بطریق اولی وہ لوگ جن کوذات پاک نبی کریم علیہ نے خود لوگاں دیں اور جن سے خود کوکیاں لیس۔

صحیح بخاری میں ہے کہ حفزت حمال فی نے مشرکین کی ہجو کرنے کے متعلق حضور علیہ السلام سے اجازت مانگی تو آپ نے صرف اس صورت میں اجازت دی کہ ہجاء میں مشرکین کے آبا دَاجِداد کوشامل نہ کیا جائے کیونکہ حضور علیہ کے سلسلہ نسب بھی انہیں سے ملتا تھا۔

پس کیسے افسوں کا مقام ہے کہ نبی کی امت کہلانے والے فاص مسلمانوں اور ان بزرگوں کو ہدف تبرا بنا کیں جن کے اور حضور کے باپ دادا ایک ہی شجر کے شمر ہیں۔ باوجود اس قتم کی قریب ترین اور گوناں گوں رشتہ دار یوں کے جو نبی ایسی مسلمانوں الوبکر وضرت عمر حضرت عمان محضرت عمان محضرت الم مسین رضی اللہ عنہم اور ان کی اولا دہیں علی حضرت ذبیر محضرت طلحہ حضرت امام حسن حضرت امام حسن محضرت امام حسن کون گمان کرسکتا ہے کہ یہ سب ظاہرداری برجنی تھیں اور حقیقت میں وہ ایک دوسرے کے دشمن شے۔ معاذ اللہ من ذالک

ناظرین کرام الم حین رضی الله عنهم نے خصوصاً اپنی اولاد کے نام ابوبکر عمر وعثان رکھے بیں اور ان ناموں کی اولاد کر بلا میں حضرت سیدالشہد اء حضرت امام حین طاق شہد بھی ہوئی کی اولاد کر بلا میں حضرت سیدالشہد اء حضرت امام حین طاق کے ساتھ شہید بھی ہوئی کیا ابوبکر بن علی و ابوبکر بن حسن جنہوں نے میدان کر بلا میں حضرت سید ہوئی کیا ابوبکر بن علی و ابوبکر بن حسن جنہوں نے میدان کر بلا میں حضرت سید الشہداء کے ساتھ جان دے کرحق رفاقت اوا کیا اس کے مستحق نہیں کہ ان کا ذکر بھی مجلس عزا میں کیا جائے کین کون کہ سکتا ہے کہ ان کا نام تک بھی کسی نے آج تک سنا ہو۔

سے ایک ایک عدادت ہے کہ جس کا کوئی جواب نہیں ہوسکتا اور اس قتم کی عدادت کے برخلاف می مدائے احتجاج بلند کرنا چاہتے ہیں کیونکہ یہی ایک ہے سود عدادت ہے جس کی وجہ سے اسلام کے دو بڑے گروہوں میں نااتفاق بیدا ہوگئ ہے اور ایسے زمانہ میں جس میں ہم آج کل رہتے ہیں جب افغاق و اتحاد ہماری دین و دنیوی ترقی کے لئے نہایت ضروری ہے۔ ہمارے توی امور میں جب افغاق و اتحاد ہماری دین و دنیوی ترقی کے لئے نہایت ضروری ہے۔ ہمارے توی امور میں

حائل ہوکر ذات و رسوائی کا باعث ہورہی ہے لہذا نہایت اوب سے التماس ہے لہ جو ساحب اس رسالہ کو پڑھیں وہ اس بات کو اپنا فرض بجھیں کہ اس بیہودہ عداوت کو بخ و بن سے اکھاڑ دینا ہے تاکہ تمام مسلمان مجتمع ہوکر خدا کی ری کو بکڑیں اور دین و دنیا میں فائز الرام ہول اور فحوائے کنتہم اعداء فالف بین قلوبکہ دوست بننے کے احد پھر دشنی بیدا کرکے ہلاک نہ ہول۔ اعداء فالف بین قلوبکہ دوست بننے کے احد پھر دشنی بیدا کرکے ہلاک نہ ہول۔ مشجرہ اولاد انم مطابی اسمار می المرائی

عيمِناف (الرطالب) بع الطلب بن عمرو (إلشم) الم زن لعامرين

اوف: بیتهام نام حفرات شیعه کی معتبر کتاب تاریخ الائمه سے ماخوذ ہیں حفرت کی اہم حس اور امام حسین حقیقہ کے اسحاب مصطفی عیف کے ہم نام فرزند کر بلا ہیں شہید بھی ہو گئے گر جمیں ہی نہیں بلکہ والا نا مظہر تلی اظہر کو بھی شکایت ہے کہ کوئی جمید کوئی شیعه ذاکر مرفیوں میں ان کی جان شاریوں کا ذکر نہیں کرتا۔ کہتے ہیں یزید نام برا گر امام حسین حقیقہ نے یہ نام رکھا اور کی بزرگ بیوں کے نام دکھ کرا این ید شہور ہوئے۔

حنرت علَّى كرم الله وجبه كى سيره فاطمه رضي كا كله عن المال النظر على الرغم مولف رساله النظر عبر باشمية تعين ال طرح امان (حسنين) كى بعى -

ابن تحبیہ نے کتاب المعارف میں لکھا ہے کہ اہام اصغر (زین العابدین) کی والدہ سے (جو کنیز تعین) حسین دیا ہے انقال کے بعد ان کے آزاد کردہ غلام زبید نے عقد کیا تھا' اس سے عبداللہ ایک لڑکا پیدا اوا جوعلی اصغر کا مال کی طرف سے سوتیلا بھائی تھا۔

حسرت امام اعظم رمظ الله والده اور بیوی کے نام جو شجرہ میں دیے ہیں وہ تاریخ کے مطابق بیں اور نکاح کا شوت تواریخ آ کینہ تصوف میں ہے جو مرکزی حزب الاحتاف لاہور کے وفتر میں موجود ہے۔ سیدہ زینب بنت حضرت علی کا نکاح عبداللہ بن جعفر طیارے سے ہوا تھا' ان سے کئی دولادیں ہوئیں۔ ام کلثوم کبریٰ کا عقد عمر بن خطاب کھیا سے ہوا تھا' ان سے ایک لڑکا ہوا (زید) بعد شہادت عمر ان کا عقد محمد بن جعفر سے ہوا' پھر ان کے مرنے کے بعد عون بن جعفر نے نکاح کیا بعد شہادت عمر ان کا عقد محمد بن جعفر سے ہوا' پھر ان کے مرنے کے بعد عون بن جعفر نے نکاح کیا اور انہی کے عقد میں فوت ہوئیں۔ (کتاب المعارف ص ۱۳۰ جس کے مصنف ابن قتیبہ حسب اور انہی مولانا محمود احمد صاحب بہاولیوری' شیعہ ہے)

سیدہ سینہ بنت امام حسین عظیفہ سے مصعب بن زبیر کا عقد ہوا ان کے انقال کے بعد عبداللہ بن عثمان بن عبداللہ بن علیم نے نکاح کیا تھا۔ ان سے ایک لوکا قرین ہوا اور اس کی اولاد باتی ہے۔ ان کے بعد حب ان کے بعد زید بن عمر و بن عثمان نے نکاح کیا تاہوں نے سلیمان بن عبدالملک کے کہنے دی۔ اس کے بعد زید بن عمر و بن عثمان نے نکاح کیا انہوں نے سلیمان بن عبدالملک کے کہنے سے طلاق وے دی۔ ان کا انقال خلیفہ ہشام کے زمانے میں مدینہ میں ہوا۔

سیدہ فاطمہ بنت امام حسین کا نکاح حسن بن شی بن امام حسن رضی اللہ عنہا ہے ہوا تھا' ان کے العد عبداللہ بن عمر بن عمان صفحہ کے نکاح میں رہیں۔

تحفه شيعه انصاف اورغور سے دیکھیں تو یہ ٹابت ہوتا ہے کہ یہ نکاح باہمی محبت مضاوص و سیجتی اور یک دین کے مظہر ہیں وشمنوں سے کون رشتے قائم کرتا ہے اور بالخصوص ان سے جو مذہباً مختلف اور غیر ہوں جیسا کہ علامہ حائری نے فتوی صادر کیا ہے کہ تمام صحابہ کرام اور ان کی اولاد میں کوئی دین اختلاف نہیں تھا بالخصوص عشرہ مبشرہ میں۔ (رضی الله عنہم الجمعین) موازن بن مصور فالدبن وليد بني الوحيد مبن

نوٹ: ابل بیت کے منی ہیں گر کے لوگ بن میں بیوی ہے شامل ہوتے ہیں مکر محاور آقرآن مجید میں ابل بیت زونہ کے منی میں استوال ہوا ہے، دیکھوآ میہ

قَالُوٓا اَتَعْجِبِيْنَ مِنَ آمْرِاللَّهِ رَحْمَهُ اللَّهِ وَ بُرَكَالُهُ عَلَيْكُمْ

آ کال الکبیت "(فرشتوں نے) کہا (سارہ ذوبہ منظرت ابراجیم علیہ السلام) سے آیا تو تعجب کرتی ہے ضرائی کام سے (اس میں تعجب کی کوئسی بات ہے کہ وہ سمانہ تعالی صنع ہے آلہ اور نظل بے علت سے دو بوڑ موں سے فرز عمد پیدا کر لے) غدا کی ہنشش اور برکمتیں تم یر ہوں اے ابراجیم کے اہل بیت۔"

(وتيموص ٢٥١ تفيير في الله صاحب)

نوٹ: علاوہ ازیں منفرت بؤریریہ (بنن کے زکاح کی برکت سے سوسے زیادہ ان کی قوم کے اسیر رہا اور مسلمان ہوئے) اور منفرت صفیہ بن میں از اولا د مفررت ہارون ' بھی ازواج نبی تھیں جوغزوہ بنی مصطلق و خیبر میں ہاتھ آئی تھیں اور منضور نے انہیں لونڈی نہیں بلکہ بیوی بنالیا۔

شیعہ جُرَبَد صاحب کے نقے سے ظاہر ہے کہ صرف اٹا عشری شیعہ مومن ہیں (اور دوسرے بیسیوں شیعہ فرتے غیر مومن؟) اور موسہ عورت کا ذکاح غیر مومن مرد سے ناجاز ہے اب سوال سے کہ کہ پیروانِ جُربَد صاحب رسول عَرَبَّ کَ کُو مومن اور قرآنی تھے السطیتیات لِلطیبین والسطیتین پر عامل جے ہیں کہ نہیں؟ اگر بھتے ہیں تو پھر حضور عَربَ الله بیوں سے ذکاح کیا وہ طیب ہو کی کہ نہیں؟ جُربی این ما کیس سجھ کر اوب و تعظیم کرنا واجب ہوا کہ نہیں؟ ان حضرات شیعہ مومن کہلانے کے جبی مستق ہوسکتے ہیں جب از واح رسول الله عَربَ کو این ما کیس شیم کرنا اور سوء ظن رکھنا مومنوں کا کام نہیں۔

علامہ حائری کے نتوے کے موید اور شائع کنندہ مؤلف رسالہ النظر نے رشتوں کے متعلق ایک کڑی خاندانی قید کی اور لگادی ہے کہ'' بیٹیبر اور ایمہ معصوبین نے اپنی اولاد کے لئے ایک قانون یا ندھ دیا کہ غیر خاندان سے ندلڑکی لی جائے اور نہلڑکی دی جائے۔''

اب بھر ایک دفعہ شجر اکر رہ پر نظر کریں تو معلوم ہوگا کہ رسول اللہ علیہ نے جن عائدانوں کی عورتوں سے نکاح کے ان میں سے ایک بھی ہاشی نہ تھی لہذا مان لیس کہ وہ ایک ہی (اسلامی) خاندان کی مستورات ادر مومزات تھیں جن کی عزت و تو قیر فرض ہے۔

اس كے لئے مندرجہ ذيل شجرہ (دامادان رسول) پرغور فرمائيں كے تو ثابت موكا كه حضور عليہ

نے جاریس سے تین بیٹیاں اپنے بردادا (ہاشم) کے بھائی (عبدالشمس) کے بروتوں سے بیابی ے چوریں کے میں ایک میں ہے۔ اور مشرف بداسلام ہوکر انہوں نے دین اللہ کی امداد میں جانیں اور کیونکہ وہ ہم کفو اور مسلمان تھے اور مشرف بداسلام ہوکر انہوں نے دین اللہ کی امداد میں جانیں اور مال وقف كرديج رسول الشعلية نے مخلف قبائل قريش كے رشتے مربوط كر كے ايك زيروس اسلامی برادری قائم کردی اور ای برادری کے افراد نے جو بنی تیم بنی عدی بنی امیہ بنی مخروم بی زبره ادر بن اسد وغيره بين اسلام كا جاردانك عالم سربلند كرديا-

افسوس ہے ان عربی النسل کہلانے والے لوگوں میں جو اپنے میک جدی دیندار بزرگول سے بعض رکھنے میں عجمیوں کے جمعوا ہیں ان کا مرکز آبائی و اسلامی (حجاز عرب) سے انحراف کرنا

نہایت معیوب ہے۔

ثبوت بنات نبي كريم عليسة

قُلْ لِأَزْوَاجِ وَبِنَاتِكَ مِم مِر جَلِهِ مومنات ہے جبوت اس کا نبی کی دو سے زائد تھیں بنات ہیں سگی مہنیں یہ جاروں سیرات خوش صفات سب رسول الله کے پیارے نیک بخت و نیک ذات

ے خاطب ہوں نی ے خالق کل کا تات جح کا صیفہ نی کی بیٹیوں کے واسطے ام کلثوم و رقیه زینب فاطمه شوہروں کے نام ابوالعاص و علی و عثان

سب داما دان رسول ملى نترعه والمره زمنيب ه رقتیه و سسید یجه لبدر منگر سے اہل بربیت الجهيت صزت الواله الم إن ربي سيدعثان حنرست ملی

قرآن و لعادیث شیعے وسی ۔ طامحہ باقر علی کی کتب ''حیات القلوب'' اور'' جا الجون'' وغیرہ اسے کے مسل ہونے کی مہتر کتابوں سے وائر الاصلاح کے رسالہ بنات النبی و دختر ان بی وغیرہ سے خابت کیا جا چکا ہے کہ مندرجہ شجرہ سیدات خاص رسول اللہ علی کی بیٹیاں تھیں مگر تعصب کا برا ہو کہ آن کل کے دکا ندارشیعی علیاء کیے جاتے ہیں کہ بیہ صاحبر ادبیال سیدہ فدیج یا سیدہ ام سلمہ کے پہلے شوہروں سے پچھلک بیٹیال تھیں۔ حالانکہ قرآن شریف میں ایسی اولاد کے لئے ربائب کا لفظ وارد ہے۔ بیٹک زینب اور ام کلؤم سیدہ ام سلمہ کی بیٹیوں کے نام بھی تھے جو حصرت ربائب کا لفظ وارد ہے۔ بیٹک زینب اور ام کلؤم سیدہ ام سلمہ کی بیٹیوں کے نام بھی تھے جو حصرت ابوسلمہ مخرومی (فرزند برہ بنت عبد المطلب بن ہاشم کی صلب سے تھیں مگر ان لؤکول کو رہائب النبی الاور کا خرام میں آتا ہے جبکہ غرو و ابد میں انہوں نے شوہر (ابوالعاص) کی رہائی سے لئے بطور فدید کا ذکر اسے میں آتا ہے جبکہ غرو و ابد میں انہوں نے شوہر (ابوالعاص) کی رہائی سے لئے بطور فدید فاسرانہ افعال میں آتا ہے بھر ان ہر سہ وخر ان نبی کا انقال حیاست نبوی میں ہوا مگر ندگورہ بالا خاسرانہ افعال میں آتا ہے بھر ان ہر سہ وخر ان نبی کا انقال حیاست نبوی میں ہوا مگر ندگورہ بالا ربائب ارتفال نبی عالی ان کی علام کی موال نبی کا انقال حیاست نبوی میں ہوا مگر ندگورہ بالا سے ماتی ہے۔

علاوہ ازیں قرآن شریف کا صریحاً تھم ہے کہ اولا دکوان کے باپوں کے نبیت سے پکارو۔ اُک عُوْ کھی پلانِ آؤہی (رحمتہ اللعالمین جلد دوم)

ای کتاب میں لکھا ہے کہ زینب بنت ام سلمہ رہنی تنہا کا نکاح عبداللہ بن زمعہ سے ہوا تھا اور زینب بنت النبی کا حضرت ابوالعاص سے افسوس ہے کہ دشمنان صحابہ کو اولاد نبی کو دوسروں کی اولا و بتاتے کیوں خدا کا خوف نہیں آتا؟

علامہ مجلسی حیات القلوب باب 51 دربیان احوال اولادِ امجادا ن حضرت محمد علی فرماتے ہیں کہ حضرت صادق سے پوچھا گیا کہ آیا ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ایک عضرت علی اللہ عنان علیہ کودی؟

آپ نے فرمایا کہ ہاں! حق تعالی نے ای واقعہ پر آیت

لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ أَنَّهَا نُهْلِئَ لَهُمْ الآية لِينْ ' جُولُوگ كافر ہوگئے ہیں وہ گمان نہ كریں كہ جوہم انہیں مہلت وے رہے ہیں وہ ان كے لئے بہتر ہے بلكہ ہم تو ان كواس لئے مہلت دے رہے ہیں كہ وہ اور گناہ کریں اور ان کے لئے ذلیل کن عذاب ہے۔

آه! ملا باقر مجلسی کا کس قدر افتراء حضرت جعفر صادق بر امام محمد باقر نے تو بروایت ابن ادریس فرمایا کہ

" حضرت رسول وختر بدوهمنافق داد و برائے تقید نام نبرو

لینی ابوالعاص پر رہے اور حصرت عثمان وامادان رسول کا تقیہ سے نام ندلیا مگر اس امام کے فرزند (امام جعفر)نے تقیہ توڑ کر ذوالنورین کو کافر اور مستوجب عداب بنا دیا مالکھم کیف قنح کھُون۔

حضرت مجلس نے دودھ تو دیا گر مینگنیاں ڈال کر۔حضرت عثمان کھند کاور ابوالعاص کھند کی دایادی تو تسلیم کر کی لیکن ازراہ بغض انہیں کافر و منافق بنا دیا۔ کیا کوئی ایما ندار گوارا کرسکتا ہے کہ بیٹیوں کا فکاح کافروں اور منافقوں سے کردے چہ جائیکہ نبی کریم علی جو کفر وشرک مٹانے کے لئے مبدوث ہوئے ہے۔

شجرهٔ نسب نبی کریم علی اور حضرات عشره مبشر فهردنقك ركس اللبلة قرس يحب تباوعي م مربعمري والده ، حسر فالد حسرت عكرمه معدمناف أمم مغيرًا اولاوسيبي كهلاتي سيسا وركلي رببار فالأكعب حنرت عثمان بن عفان مصنرت الوالعاص بن رميع والماد رسول ورسيره المرجيبيام المؤمنين بنت صرت الوسفيان بن حرب كي مرّاً

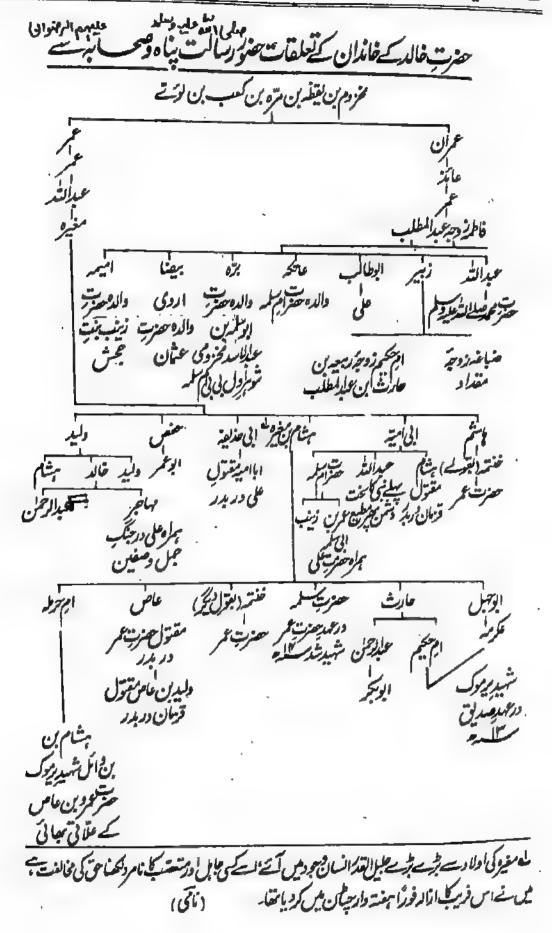
شجرة ندكوره برغور كروكه حفرات عشره مبشره فظيه جنهول في اسلام كوا قصاع عالم تك يهنيا برہ مدورہ پر در رو سے اس رسول اللہ علیہ کے سک جدی اور رشتہ دار قریش سے قرید میں تن من دھن کی بازی لگا دی مب رسول اللہ علیہ کے سک جدی اور رشتہ دار قریش سے قرید ے ن ن ر ن ن اور کا ہوں ۔ اور کا میں اس کے مجاور اور کلید بردار تھے میہ جگہ بت خانہ کا وقار خانہ کعبہ کی دجہ سے خانہ ین کررہ گئی تھی متام عرب ان کا برستار تھا اس سلسلہ میں تمام بڑے بڑے محکمے اور منصب قائر ن کررہ ک ک اور ایک اور ایک منتقم سے عمان بن طلحہ کے ہاتھ بھی کعبہ کی (کلیر ہوگئے سے جو مختلف قریش خاندانوں میں منقسم سے عمان بن طلحہ کے ہاتھ بھی کعبہ کی (کلیر برداری) کنجی تھی جو حضور نے (وقت فنح مکہ) انہی کوعطا کی۔حضرت عباس کے سپروائز روں کو مانی پلانے کا منصب (سقامیہ) تھا۔ غریب حجاج کی خبر گیری خاندان نوفل کے فرد حارث بن عامر کے دے تھی۔ خاندان اسد سے بزید بن رہید الاسود مشیر کارتھا۔ خاندان تیم کے بزرگ حضرت ابوبر میں تھا۔ خیمہ وخرگاہ کا انتظام اور سواروں کی افسری (قنیبہ) حضرت خالد ﷺ کے والد ولیدین مغیرہ کے حوالے تھے۔سفارت و منافرت (سفیر ہوکر جانا اور قبیلوں کے نزاع کے متعلق شرافت کا فیصلہ) حضرت عمر عظام کے سپرد تھا۔ مہتم خزانہ (اموال) حارث بن قیس از خاندان سہم تھا کا ندان جمع مے صفوان بن امیہ کے ذمہ محکمہ عال (ازلام والسار) تھا۔

چونکہ رسول اللہ علی کے تبلیغ توحید اور بت برستی کے خاتم کے خیال سے قریش کو اپنے اپنے مناصب چھوٹ جانے اور آمدنی مارے جانے کا خطرہ نظر آربا تھا اس لئے وہ اسلام کے وشن بن ا محت اور منفق ہوکر حضور علی کے کا لفت میں اٹھ کھرے ہوئے ،حضور کے چیے اور ان کی اولاد بھی مخالفوں ہی کے گروہ میں تھی۔ جاروں بچوں میں دو حضرت حمزہ اور حضرت عباس تو ایمان لے آئے اور دو (ابولہب) ایمان نہ لائے منکر رہے باقی خاندانوں میں جن کی قسمت دولت ایمان تھی وہ تو مشرف بہ اسلام ہو گئے مثلاً ابو بکر صدیق ایمان لانے والوں کے قائد بے حضرت عمرفاروق حضرت عثان حضرت على حضرت عبدالرحمٰنَ ابوعبيده بن جراح معد بن ابي وقاص طلحهُ زبير اور سعد بن زيدرضى الله عنهم _تعليم اسلام في حضرت خالد بن وليد اورعمرو بن عاص جيسے سيد سالاران في نثان كواين طرف تفينج ليا_

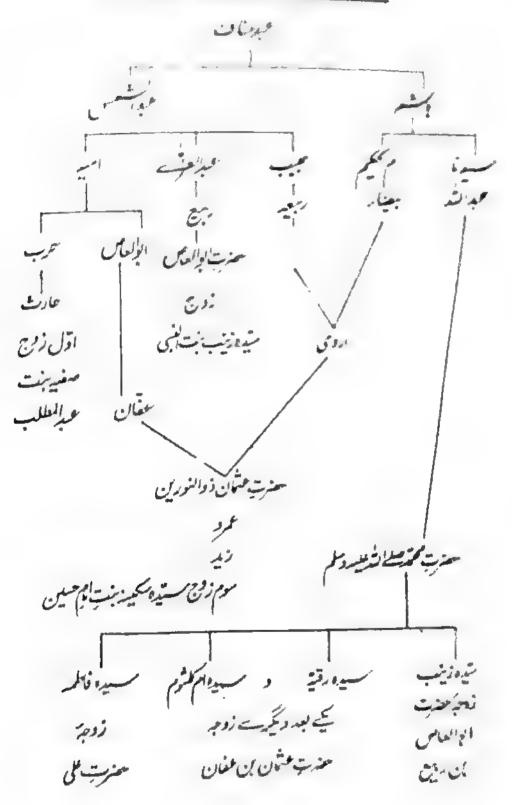
فرنگی مبصرین کے خیال میں ان دو ماہران حرب کا مشرف بداسلام ہونا کئی مما لک فتح کرنے سے زیادہ وزنی تھا کیونکہ ایک نے شام وعراق فتح کرے اسلامی سلطنت میں شامل کردیتے اور دوسرے نے مصروفلطین وغیرہ۔

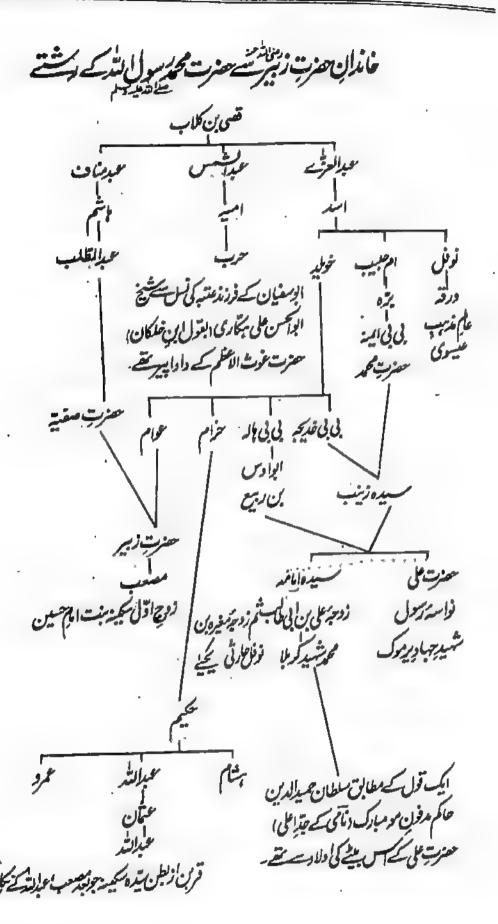
ان دو کو خالق نے ایسا جو ہر قابلیت عطا کیا تھا کہ جہاں گئے فتح وظفر نے ان کے قدم چوہے اور میمی ناکای کا داغ البین تبین نگا۔

ذٰلِكَ فَضُلُ اللَّهِ يُؤْتِيْهِ مَن يِّشَاءُ وَاللَّهُ ذُوَالفَّصُّلِ الْعَظِيْم



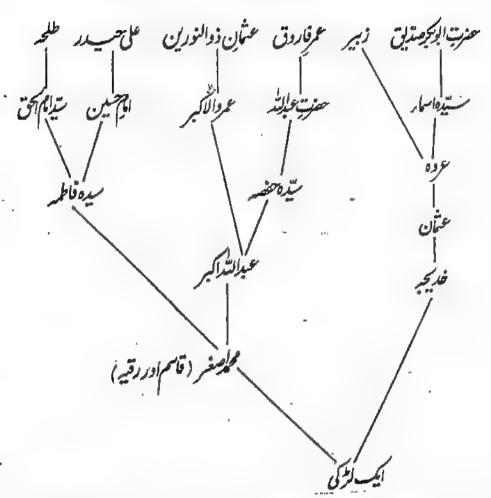
بى لىنىت ما دان سائت كى يىنى





یہ خجرے کتاب المعارف رحمتہ للعالمین اور صحابیات وغیرہ کے دقیق مطالعہ کے بعد مرتب ہوئے ہیں۔ ان سے یہ خابت کرنا مراد ہے کہ حضور عیائی کی پھوپھیاں بیٹیاں اور ان کی اولاد کے رفتے انہی خاندانوں میں ہوئے جنہیں شیعی حضرات رسول خداعی ہے سے مخرف اور اپنے اماموں با وثمن سجھے ہیں انھاف کریں کہ کیا کوئی غیرت مند انسان اپنے خمہ کی مخالف آور وشمنوں کو بھی بیٹیاں دیتا ہے۔

وَمَالَكُمْ كَيْفَ دَحْكُمُوْنَ ٥ اصحابِ رُول مِن لِنَّهُ عَلِيدٍ لِم مِر مِنْ مَدَّ كَالِيكِ فَي لِنَ عُورِ سَجِرِهِ اصحابِ رُول مِن لِنَّهُ عَلَيْهِ وَلَم مِر مِنْ مَدَّ كَالِيكِ فَي لِنِ عُورِ سَجِرِهِ



ابن تنیبہ کتاب المعارف ص ۱۲ پر لکھتے ہیں کہ محمد بن عبدالله بن عمر والاصغر (اکبر کی اولاد میں الین لڑی تھی جس کا سلسلہ نسب رسول اللہ علی حضرت ابوبکر عمر عثمان علی زبیر اور طلحہ رضوان اللہ علیم اجمعین سموں سے ملتا ہے (جیسا کہ شجرہ سے واضح ہے نامی) کاش بہ شجرہ و کیمہ رضوان اللہ علیم اجمعین سموں سے ملتا ہے (جیسا کہ شجرہ سے واضح ہے نامی) کاش بہ شجرہ و کیمہ



کر بی شیعی دوست اس نیتیج پر بہنی جا کیں کہ صحابہ کرام میں دین منافرت نہیں تھی اس وجہ سے وہ آپس میں رشتے کر کے میل محبت بردھاتے تھے۔ سیدہ فاطمہ بنت حسین کا حضرت عثان ذوالنورین کے بوتے سے نکاح ٹائی حضرت حسن شخ بن امام حسن کے بعد ہوا۔عبداللہ محسن انہی کے اللہ عن امام زین العابدین محمد باقر ادر اپنے بھائی زید اور عمر سمیت نے کر یزید کے بال وشق پہنچے تھے مطلب یہ کہ جومیدان میں نہ لکلے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ لیکے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ نیکے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ نیکے معلوں کے اللہ کے بال وشق پہنچے تھے مطلب یہ کہ جومیدان میں نہ لیکے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ نیکے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ نیکے محفوظ رہے اور پھر بحفاظتِ تمام میں نہ نیکے موردہ پہنچا دیے گئے۔

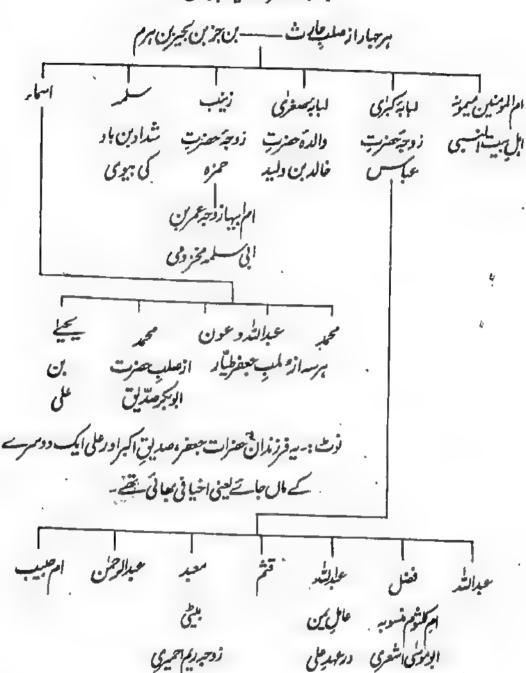
کناب المعارف میں لکھا ہے کہ عبداللہ محض اپنی کنیت ابو محد کیا کرتے ہے بہت بزرگ تھے۔
ایک دن لوگوں نے ان کوموزہ پرمس کرتے ہوئے دیکھا تو کہا کہ آپ مس کرتے ہیں؟ انہوں نے کہا ہاں ہم نے عمر بن خطاب رہے کو کرتے ہوئے دیکھا ہے جو شخص اپنے اور اللہ تعالیٰ کے درمیان عمر کو بتا تا ہے وہ لیکا مسلمان ہے۔ اس طرح اہام محمد با قرنے ایک شیعہ کے سوال کے جواب پر جو تکوار کے قضہ پر چاندی چڑھانے کے متعلق تھا فرمایا کہ ہاں جائز ہے کیونکہ ابو برصدیت میں اور جو تکوار کے قبطہ کے جواب کے ایک شام اپنی جگہ سے نے ایسا کیا تھا مائل نے ہوچھا کہ آپ بھی ابو برکو صدیت کہتے ہیں تو یہ سنتے ہی امام اپنی جگہ سے انہوں بڑے اور کہنے گئے کہ:

" ہاں وہ صدیق ہیں ہاں وہ صدیق ہیں جو کوئی انہیں صدیق نہ کیے خدا اس کی دنیا و آخرت میں تقیدیق نہ کرے ''

یہ دا تعد علی بن عیسیٰ اردیلی امامی اثنا عشری کی کتاب کشف النمه فی معرفت الائمہ میں ہے اور آیات بینات ص ۱۲۵ جو بار دوم چھی ہے اور ہر اہل سنت کے پاس ہوئی چاہئے نقل کیا گیا ہے (منکرین فضائل صحابہ اولاد حسین کے جواب با ندھنے کے سوا اور کیا کہہ سکتے ہیں خداعقل و ہدایت وے نامی)

جليل القدر وا ما دو^{ل ا}لى بزرگـــعجوز

مبذمنت عمرواز قبيلة حرشس



نوٹ: لبابہ کبریٰ کے ان تینوں بیٹوں کی قبریں ایک دوسرے سے بڑے فاصلے پر بنیں۔فضل شام میں فوت ہوئے عبداللہ نے طائف میں انقال کیا عبیداللہ نے مدینے میں وفات پائی قیم سرقد کی خاک میں مدنون ہوئے اور معبد افریقہ میں شہید کئے گئے۔

 حفرت عباس بن عبرالمطلب وليد بن مغيره سيد الشهد او مخزه مدين اكبر جعفر طيار اور حفرت على جوايك دوسرے بهم زلف اور يك جدى قريش سيخ الهي رشته داريوں كے سبب وه آپس ميں مربوط اور اسلام كى سربلندى كا موجب بوت _ رسول الشعلائية نے ان كوان رشته داريوں ميں يك جان كيا اور ان سے دين تن كے ارتقاع كا كام ليا حضرت صديق اكبراور حفرت على كا دينى رشته اور كيا اور ان سے دين تو كے ارتقاع كا كام ليا حضرت صديق اكبراور حفرت على كا دينى رشته اور يكركو كود ميں لے كر پرورش كرنا اور مصركى كورنرى پر فائز كرنا كمن قدر با بهى محبت كا شوت ہے اگر ان ميں دينى اشحاد شہوتا تو على هذا كي مشخص كي وارا كرتے كہ اپنے بمائى جعفركى بيده خوان ميں وشنى كے قصرت الوبكر الله على جدالت ميں وشنى كے قصرت الوبكر الله كام ہے ۔ الله ميں آئے ۔ ان ميں وشنى كے قصرت الوبكر الله قام ہے ۔ الله ميات و سے ۔ (نوٹ اختام پذر بروا)

سے تمام نام حفرات شیعہ کی معتبر کتاب تاریخ الائمہ سے ماخوذ ہیں۔حفرت علی امام حسن اور امام حسین رضی اللہ عنہم کے فرزند جو اصحاب رسول اللیقیے کے ہمنام نے کربلا میں شہید ہوگئے گر ہمیں ہی نہیں بلکہ مولانا مظہر علی اظہر کو بھی (المحظہ ہو کتاب تحریک ممدول صحاب شکایت ہے کہ کوئی جہدکوئی شیعہ ذاکر مرشوں میں ان جانتاروں کا ذکر نہیں کرتا۔ کہتے ہین کہ بزید کا نام برا ہے گر امام حسین نے اپنے ایک فرزند کا نام بزید رکھا جو ۸ دیمبر کو دومعتر شیعوں کو روبروئے افتخار حسین صاحب ہمشیرو زادہ شخص میں بن علی بی اے نے دکھا دیا گیا۔ نیز حیات القلوب سے رسول اللہ کی صاحب ہمشیرو زادہ شخص مقبل میں خدا ہدایت دے۔

حضرت علی ﷺ کی سیدہ فاطمہ کے سواتمام ہویاں علی الزم مؤلف رسالہ النظر غیر ہاشمیہ تھیں اس طرح حسین کی بھی ابن قتیبہ نے کتاب المعارف میں لکھا ہے کہ امام علی اصغر زین العابدین المجن کی گنیت بحوالہ "بحارالانوار" ج اا صف "سا" ابو بکر تھی جیسا کہ شجرہ مودت مولفہ فالد صاحب صدیقی پروفیسر میں منقول ہے) کی والدہ سے جومثل والدہ امام محمد حنفیہ ابن حضرت علی کنیز تھیں جیسا کہ کتاب المعارف میں مسطور ہے امام حسین کے انتقال کے بعد ان کے آزاد غلام زبید جیسا کہ کتاب المعارف میں مسطور ہے امام حسین کے انتقال کے بعد ان کے آزاد غلام زبید جیسا کہ کتاب المعارف میں مسطور ہے امام حسین کے انتقال کے بعد ان کے آزاد غلام زبید جیسا کہ کتاب المعارف میں مسطور ہے امام حسین کی امغر کا ماں کی طرف سے سونیلا (اخیافی) بھائی تھا۔۔۔۔ان

ال سے ٹابت ہوا کہ شیعوں میں جیبا کہ جامع جعفری ترجمہ شرائع الاسلام میں ۵۹۸ میں مرقوم ہے کہ آزاد عورت کا غلام کے نکاح میں آٹا اور عربیہ عورت کو عجمی مردسے نکاح کرنا جائز ہے اور اس کے ماروب اور عام بین صاحبان علم و ورع اور علی بیشہ کے لوگ جیسے کہ خاکروب اور حجام بین صاحبان علم و ورع اور دنیا کے بیش کے اور اولی سے منا کت کرسکتے ہیں۔ مگر ندہب حنیہ میں غیر کفو سے دنیا کے اغذیاء اور ملک والے لوگوں سے منا کت کرسکتے ہیں۔ مگر ندہب حنیہ میں غیر کفو سے

عورتوں کا تکاح کرنا جائز نہیں۔

ر تفصیل دائرة الاصلاح کے رسالہ قد مکرر میں سید مظہر حسین صاحب بخاری بی اے نے دی نے) حضرت امام اعظم رمة شمليه كي والده اور بيوى كا نام جو شجره بين ديت بين وه تاريخ الائمه ي مطابق ہیں اور نکاح کا فہوت آئینہ تصوف میں ہے جو مرکزی الجمن حزب الاحناف لا مور کے رفت

میں موجود ہے۔

سیدہ زینب بنت حضرت علی رہی نہا کا لکاح عبداللہ بن جعفر سے ہوا تھا ان سے کی اولادیں ہوئیں۔ ام کلوم کبریٰ کا عقد عمر بن خطاب سے ہوا تھا' ان سے ایک لڑکا ہوا (زید) بعد شہادت عران کا عقد محمد بن جعفر سے ہوا کھر ان کے وصال کے بعد عون بن جعفر نے نکاح کیا اور انہیں کے عقد میں فوت ہوئیں۔

(كمّاب المعارف ص ١٣٠ جس كے مصنف ابن قتيبہ حسب محقيق مولانا محمد احمر صاحب براوليوري شيعه تھ)

سیدہ سکینہ بنت امام حسین سے مصعب بن زبیر رضی الله عنهم کا عقد ہوا' ان کے انتقال کے بعد عبدالله بن عثان بن عبدالله بن عليم نے نكاح كيا تھا ان سے ايك لؤكا قرين موا اور اس كى اولاد باتی ہے۔ ان کے بعد اصبح بن عبدالعزیز بن مروان نے نکاح کیا تھا' اس نے زفاف کے قبل طلاق دے دی اس کے بعد زید بن عمرو بن عمان نے نکاح کیا ان کا انتقال خلیفہ بشام کے زمائے میں مدینہ میں ہوا۔

(كتاب لمعارف ص ١٣٢ و تاريخ امير على شيعه ص ٣٠٣)

سید فاطمہ بنت امام حسن کا تکاح حسن من بن امام حسین سے ہوا تھا' ان کے بعد عبدالله بن عمرو بن عثان کے نکاح میں رہیں (ایضاً) حضرت ذوالنورین کی بیٹی عائشہ کا نکاح حضرت امام حسن ہے ہوا تھا۔

(بحارالانوارج ١١ص ٢٣٠ بحواله تتجرؤ مودت غالد صديقي)

انصاف اورغور سے دیکھیں تو یہ ثابت ہوتا ہے کہ بیہ نکاح باہمی محبت و خلوص و پیجبتی اور میک دین کے مظہر ہیں و شمنوں سے کون رہتے قائم کرتا ہے اور بالحضوص ان سے جو تدہیا مختلف اور غیر مول جیسا کہ علامہ حائری نے فتوی صادر کیا ہے کہ تمام صحابہ کرام اور ان کی اولاد میں کوئی وین اختلا نسنبين تما بالخصوص عشره مبشره ميں -

تھیعی رسالہ النظر میں مندرجہ فق ہے علاف لا ہور کے شیعے مالدارسنیوں کے ساتھ بیٹیوں کی شادی کررہے ہیں۔ نام کی سنی برادری پاکستان میں آباد ہے اس کے دو شادی شدہ صاحب اولا و افراد سے لاہور کے شیعہ سادات نے لڑکیاں بیاہ دی ہیں ادر علادہ ازیں اور سنیوں سے بھی یہ افراد سے لاہور کے شیعہ سادات نے لڑکیاں بیاہ دی ہیں ادر علادہ ازیں اور شیعہ ٹی ہی مرح ایک ہو مرشح تفرقہ انداز شیعی مجتمدوں کے مونہوں پر شاید مہر فاموثی لگادیں اور شیعہ ٹی ای طرح ایک ہو جا کیں جس طرح حضرت علی مختلف اور دیگر محابہ رسول باہمی ازواج تعلقات اور دیلی سجبتی میں ایک سے اور ان میں کوئی نم بھی افتال ف نہیں تھا سب قرآن وسنت کے تنبع سے۔

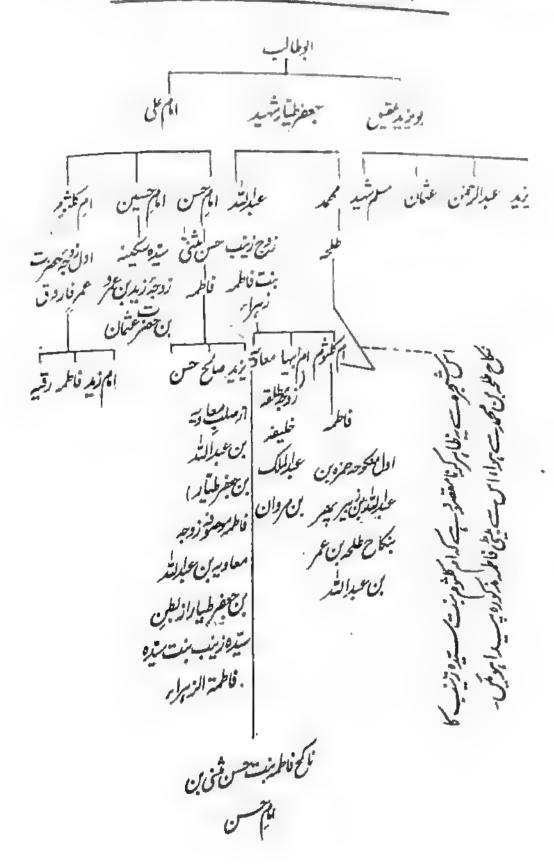
ملاباقر مجلس کی کتاب حیات القلوب ج ۲ ص ۵۸۸ میں بحوالہ تعیجة الشیعہ ص ۱۲۵ لکھا ہے کہ بارہ ہزار اصحاب رسول میں نہ کوئی قدری تھا نہ مروجی حروری تھا نہ معتزی سب محتب اہل بیت اور خالص تخلص سے۔ اگر حصرت علی کی اصحاب شاشہ سے مخالفت ہوتی تو اتنی تعداد کے ساتھ بخوبی معرکہ آرا ہوسکتے سے مگر جب اختلاف ہی نہیں تھا تو کیوں ہوتے وہ باہم شیر وشکر سے ان میں نفاق کی بائیں وشمنانِ اسلام کی افترا پردازی ہے خدا ہدایت دے۔

قرابت داران نبي كريم عليسته

خدا کے نفل سے وہ شیر وشکر تھے
رفیق و ہمدم خیرالبشر تھے
قرین ہر دو کے اک اعظم عمر تھے
ہم زلفی قریب کیدگر تھے
جو تھی اک اور دوج اس کے عمر تھے

ابوبکر و عمر عثمان و حیدر خسر دو ان میں اور داماد بھی دو ان میں اور داماد جیدر انجان کے شخصے خسر داماد حیدر ابوالعاص و علی عثمانِ ذیشان علی کے گھر نواک اک نبی کی

فرز مذان ابرالي السباب عن المطابع مم اوراوالاوك رست



امام حسن ﷺ کی ازواج (جو ملا باقر مجلس نے ڈھائی تین سولکھی ہیں) کی تعداد ۲۵ علاوہ کنیزاں بنائی ہے اور ۱۲ بیٹوں کے اساء میں زید عبدالرحمٰن ابوبکر عمر اسلیل مجھی گئے ہیں اور صاحبزاد یوں کی تعداد سات رقم کی ہے۔

امام حسین فظی کی بیوبوں کی تعداد ۵ کسی ہے اور گیارہ بیوں میں چار کے نام الوبکر عمر زید اور بید بیا میں خار کے بین بیٹیاں صرف چار ہی کسی ہیں (فاطمہ کبری مغری رقیہ اور سکینہ) بزید نام مرکنا امام حسین پر مخصر نہیں بلکہ ان کے چاوی کی اولاد میں بھی بزید کے علاوہ معاویہ بھی نام پائے جاتے ہیں یہ بزرگ دوسرے صحابہ کرام اور ان کی اولاد سے لڑکوں لڑکیوں کے دشتے کرنا مائر سبجھتے ہیں۔

علامہ ابن قتیبہ دینوری نے کتاب المعارف میں بنی ابی طالب کے فرزندوں کی صاحبزادیوں کے متعدد نکاح حضرت عمرت عمان اللہ عمرت عمان اللہ وطلحہ وعبدالرحل بن عوف وغیرہم سے بیان کئے ہیں کیونکہ وہ غیر کفو اور نامسلم تو ہے نہیں کہ از دواج ممنوع ہوتا تعصب تو زمانہ حال کے شیعی دکا ندار ملاؤں نے دلوں میں ڈالا ہے اور جابل لوگ صحابہ کرام اور آل علی کو باہم وشمن سیجھنے گئے ہیں حالانکہ یہ رشحت ان کی باہمی محتب ومودت کے مظہر ہیں۔

سیدہ کا قدم کا نکاح حضرت عمر اللہ سے ہوا اور ضرور ہوا۔ اس کے متعلق سید مظہر حسین صاحب بی اے کا لاجواب رسالہ منکروں کی زبان بند کر چکا ہے۔ اسی مسئلہ پر آیات بینات مصنفہ تواب محسن الملک مرحوم طبع جدید کا صفحہ ۱۹۲ تا ۲۲۰ مسکت ہے (ادارہ الکتاب چوک بیرون لوہاری وروازہ لاہور سے طلب کریں)

الطیقیہ ایدا شین اولا و کے نام بیان کئے بین مردخوں نے ان کی اولاد کے برجگہ متقل نکاحوں اور ان سے الطیقیہ ایدا شین اولاد کے بان کئے بین مگر جس مسئلے (متعہ) پر وہ سنیوں سے جھڑتے اور فرماتے بین کہ متعہ خدا اور رسول نے حلال کیا تھا لیکن عمر فاروق اعظم ھی نے حرام قرار دے دیا مگر ریہ نہیں بتاتے کہ فلاں امام معصوم نے متعہ کیا تھا اور اس سے فلاں امام زادے تولد ہوئے تھے جو وراثت سے محروم رہے کیونکہ متعہ میں طلاق نہیں متعہ کرانے والی عورت کا نان فقہ مرد کے ذے نہیں ترکہ میں حصہ نہیں پابند ہوکر رہنے کی قید نہیں ہاں تواب اتنا ہے کہ ایک دفعہ متعہ کرنے سے امام حسین کا درجہ مل جاتا ہے اور متحی مرد وعورت کے فرضی عشل کے قطروں سے فرشعے پیدا ہوتے امام حسین کا درجہ مل جاتا ہے اور متحی مرد وعورت کے فرضی عشل کے قطروں سے فرشعے پیدا ہوتے امام حسین کا درجہ مل جاتا ہے اور متحی مرد وعورت کے فرضی عشل کے قطروں سے فرشعے پیدا ہوتے ایں جو ان دونوں کو شیخ پڑھ پڑھ کر تواب قیات تک پہنچاتے رہیں گے جیسا کہ مولا نا حائری کے والدگی کما میہ مصنفہ کماب بر ہان المحد میں فدکور ہے۔

مورضین کرام صرف اتنا بتاتے ہیں کہ امام باقر نے فرمایا تھا کہ خدا اور رسول نے متعہ حلال کیا ہے اور جب سائل (ابن عمر لیٹی) نے عرض کیا کہ کیا آپ پبند کریں گے کہ آپ کی لڑکیاں متعہ

کریں تو امام نے منہ پھینرلیا تھا' ہمارے خیال میں سیبھی امام پر افترواء ہے کیونکہ نہ متعد جائز تھا نہ سمى المام نے كيا حى كر خدائى طاقتوں كے مالك اسدالله الغالب على بن ابى طالب نے بھى اين عہد خلافت میں جبکہ آپ کے زیر علم ہزاروں جانباز لڑنے مرنے کو تیار منے متعدرانج ندفر مایا ندخود اس کے مرتکب ہوئے نداین اولاد کو اس کا تھم دیا اس وقت تو حضرت عمر منظین موجود ندیتے کہ کچھ

شیعوں کی تازہ شائع شدہ کتاب اصل و اصول شیعیہ میں مسئلہ متعہ پر بھی بحث کی مئی ہے جس

کے چند فقرے نہایت ول آزار ہیں گر اس میں بھی اس نعل کو اپنے ائمہ کے عمل سے ٹابت نہیں کیا تا کہ شیعوں کے لئے سند ہوتا اور وہ میر اعلان کرنے کی جرأت کرتے کہ ہم عمل متعد کا متیجہ ہیں اور ہارے والدین نے فاروق اعظم ﷺ کے تھم کوتوڑنے کے لئے میکار تواب کیا تھا۔ مسلم متعہ پر اللہ حسن بن على في اے وكيل كى لاجواب كماب كا مطالعه كريں جو ١٠ الاشاعت جماعت تورى بازار واتا

صاحب لاہور سے بارسوم شائع ہور بی ہے۔

عیاسی خلیفه مامون رشید کی متعه سے تو ب

درالمصنفین کی تاریخ اسلام متعلق خلافت عباسیه جلد اول مطبوعه ۱۹۴۹ء سے صفحه ۱۸۸ میں لکھا ہے کہ مامون رشید نے (جو ایک ارانی لونڈی کے شکم سے تھا اور جس کی بیوی اس کے شیعی وزیراعظم نضل بن سہل بر کمی کی بیتیجی تھی اس لئے اس پر شیعیت کا اثر غالب تھا) متعد کے جواز کی منادی کردی تھی جو اہل سنت پر بہت شاق گزری اور لیجیٰ بن شم قاضی نے ماموں کے ماس جاکر دلیرانہ کہا کہ امیر المونین! اسلام میں ایک رخنہ پڑ گیا ہے۔

مامون: "وه كيا؟"

قاصى: زناكى ملت كا اعلان!

مامون : تمس طرح ؟

قاضى: كتاب الله اور حديث رسول المنظم عد اور كلام الله كى آيت

إِلَّا عَلَّى أَزْوَاجِهِمْ أَوْمًا مَلَكُتْ أَيْمَانُهُمْ

لین تمتع صرف دو طرح کی عورتوں سے جائز ہے بیوی یا لونڈی ہے) کیا ممنوہ

عورت لونڈی ہے؟

مامون : دونهیں '

قاضی: کیا بیوی ہے اور اس کوشو ہر کی وراشت اور شو ہرکو اس کی وراشت ملتی ہے اور اس کے اور بیوی کے شرائط مکساں ہیں؟

مامون: خبيس-

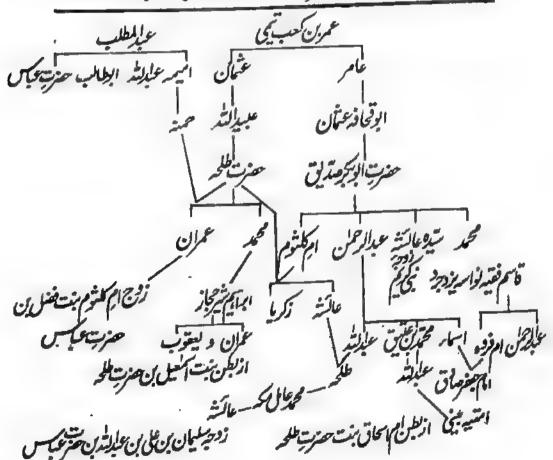
قاضی: جب ممنوعدان دونوں میں سے کسی میں داخل نہیں ہے تو پھر قرآن کی مقرر کردہ حدود سے باہر ہے پھر حضرت علی فیٹند کی روایت ہے کہ مجھ کو رسول الله علیہ نے تھے کہ میں متعد کی حرمت کی جس کی پہلے آپ نے اجازت نہیں دی تھی منادی کرادو۔

اس پر گفتگو کے بعد جو مامول اور قاضی یجیٰ کے درمیان ہوئی۔ ماموں نے اپ تعل پر استغفار کیا اور متعہ کے ناجائز ہوئے کی منادی کرائی۔

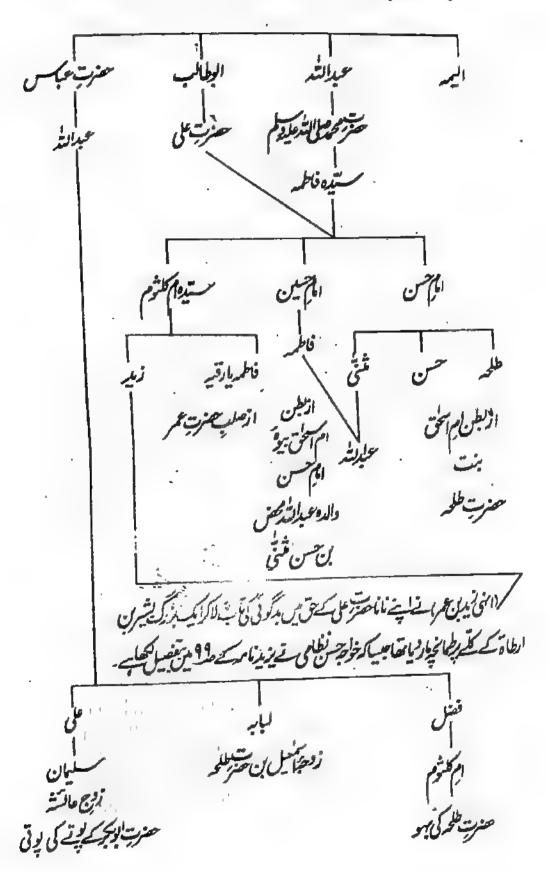
(تاریخ خطیب جسائص ۱۹۹ تا ۲۰۰)

ال مسئلہ کے اور ویگرشیعی بہتانات کے جواب میں جوٹرجمہ مقبول شیعہ میں اٹھائے گئے ہیں ۔ تفسیر فکبھت الّذی کفو جو علامہ محمد سراج الحق صاحب فاضل مچھلی شہر نے لکھی ہے اور جو عالبًا مدیر رسالہ النجم لکھنؤ ٹھوئی ٹولہ میں طبع ہوئی تھی جن کو یہ کتاب نہ مل سکے وہ شیخ حسن بن علی فی اے کی کتاب متعلق متعہ 'جس کا ذکر پہلے گزر چکا ہے مطالعہ کر کے معلوم کر کے کہ متعہ کیا چیز ہے۔

مصنرت الديج صديق ورصرت طلى مسط ولادع المطلب كريشت



عبدالمطلب (جوبن الميد ع عيداعلى عبدالشس ع بمأكى يتني)



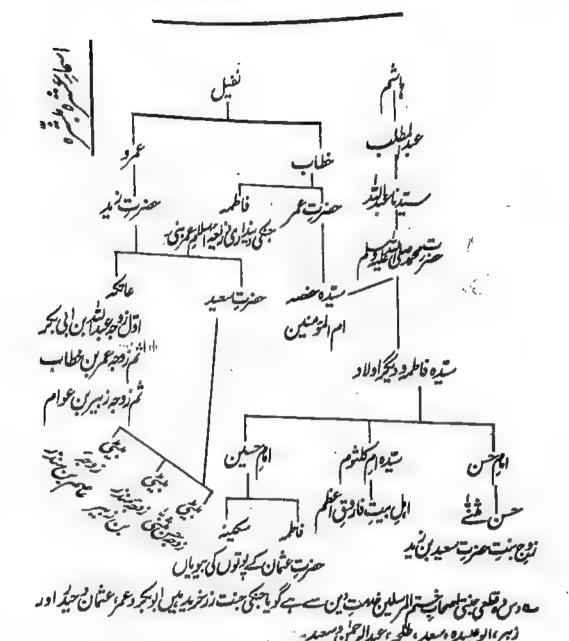
حفرت طلحہ اور حفرت صدیق اکبر ظاہر قربی کی جدی اور قربیبین مشہور ہیں۔ دونوں کا شار وی قطعی جنتیوں میں ہے حفرت صدیق اکبر حضر کا اللہ علیہ حضور کی چی حضرت عباس کی پوتی لبابہ اور ام کلثوم آپ کی بہوئیں جس طرح حضرت مدیق اکبر حضوت علی حظیم اور حضرت علی طاق جنت عمیس سے حصرت علی طاق جنت عمیس سے شادی کرلی تھی جس سے محمد بن ابی بکر پیدا ہوئے (ملاحظہ ہو مجالس الموشین مطبوعہ ایران عی ۱۱۱ مثادی کرلی تھی جس سے محمد بن ابی بکر پیدا ہوئے (ملاحظہ ہو مجالس الموشین مطبوعہ ایران عی ۱۱۱ کی حصرت عثمان کے چھلک بیٹے (ربیب) ہے اور ان کی طرف سے بعد شہادت حضرت عثمان کی مصرکے والی مقرر اور پاداش خون ذوالنور بن میں قبل ہوئے۔ ام فروہ ای محمد کی پوتی والدہ کام جسم کے والی مقرر اور پاداش خون ذوالنور بن میں قبل ہوئے۔ ام فروہ ای محمد کی بوتی والدہ امام جسم کی وفات کے بعد ان کی زوجہ ام اسحاق سے نکاح کرلیا تھا لابڈا طلحہ بن امام شبر اور فاطمہ بن حسین حس شنی کی وفات بنت شبیر (رضاعی بھائی بہن) حضرت طلح کی بیٹی کی اولاد سے۔ فاطمہ بن حسین حس شنی کی وفات کے بعد خضرت ذوالنور بن کے بوتے عبداللہ بن عمرہ کی زینت خانہ بنیں۔

میہ تمام دشتے اور قرابتیں علی الرغم شیعی مدیر رسالہ النظر ثابت کرتی ہیں کہ اولاد ابی طالب اور رسول اللہ علیہ کے صحابہ کرام میں کوئی نہ ہی اور دنیوی غیریت نہیں اور سب باہم شیروشکر تھے۔ حضرت طلحۂ رسول اللہ علیہ کہ جاں شار صحابی سے احد ہی میں حضور کی حفاظت کرتے ہوئے ان کا ایک ہا کی رسول اللہ علیہ ہوگیا تھا 'خون عثان کے مطالبہ قصاص میں شریک ام المومنین عاکشہ تھے اور اس کا ایک ہا تھ بریار ہوگیا تھا 'خون عثان کے مطالبہ قصاص میں شریک ام المومنین عاکشہ تھے اور اس سے اس شہید ہوئے۔ مزار بھرہ میں مشہور ہے۔ پہلے مزار دوسری جگہ تھا جونم آلود ہوگیا 'اس سے اپنی صاحبرادی عاکشہ کو مطلع فر مایا اور انہوں نے مقام موجود میں تمیں برس بعد نکلوا کر ون کیا۔ اپنی صاحبرادی عاکشہ کو مطلع فر مایا اور انہوں نے مقام موجود میں تمیں برس بعد نکلوا کر ون کیا۔ (معارف ص ۱۳۲)

حضرت طلحه كي جانثاري

خندق میں کیا نبی پہ سایہ کس نے؟ محبوب کو کاندھے پہ اٹھایا کس نے؟ ہاں تیروں کی بوچھاڑ میں پنجبر کو ہاتھ اپنا سپر کرکے بچایا کس نے؟ (اٹر لکھنوی)

صنرب عمراوره فرب معيدان زييس قرابت بني واست



حضرت عمر فاروق اعظم اور حضرت سعید رضی الله تعالی عنما ان دس صحابه کرام میں سے بیل جن کوحضور علی نے بار ہا جنت کی بشارت دی ہے حضور علی نے خاص دعا سے فاروق اعظم کو اسلام کی شوکت کے لئے مشرف بہ اسلام فرمایا اور جس قدر ترقی ان کے وجود مبارک سے دین مشین کو ہوئی وہ تاریخ میں بحرف جلی مسطور ہے اور شیعی ناظم کی مثنوی جملہ حیدری کو بھی اس کا مات اور جس قدر ترقی ان میں بحرف جلی مسطور ہے اور شیعی ناظم کی مثنوی جملہ حیدری کو بھی اس کا

اعتراف ہے۔ جو برتصرف قلیل ہیہ ہے۔ بس است از نعوت و صفاتش ہمیں کہ گرویدہ مقبول سلطان

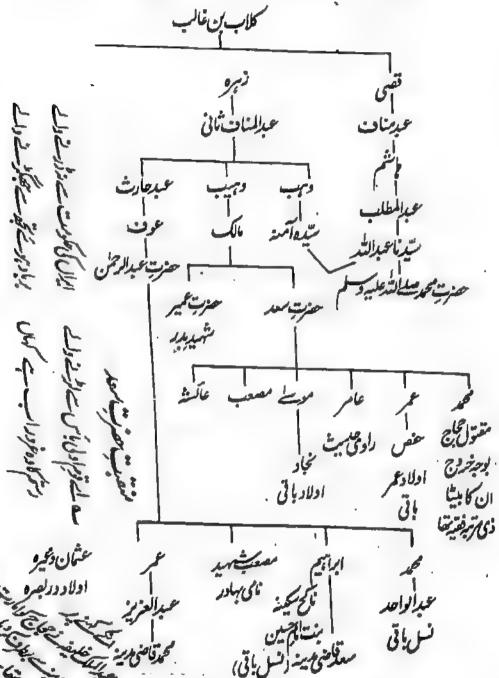
من است از تعوت و صفاحل بین که کرویده مقبول سلطان دین فرازندهٔ رایت اجتهاد زخن ججت و آییج برعباد طریق شریعت مؤید ازو ست که نام و نشان محمد ازو ست دل دشمنان داغ دار است زو بسر خاک هم سبر دار است زو حضرت عمر کی مناقب میں کتاب "مناقب خلفاء راشدین" مطبوعه دین محمد ایند سنز تاجران کتب لا بور میں فتوحات کا ذکر رسالہ بانیان دولتِ اسلامیہ میں کرچکا بول اس لئے عدم مخبائش کی وجہ سے یہاں اور کچھ لکھنے سے معدور بول۔

حضرت سعید بن زید بردے دیندار مجاہد سے احد میں ثابت قدم رہے اور ۱۱ھ کے جہاد خلاف سیلہ کذاب میں شہید ہوگئ ''کماب المعارف' میں ان کی اولاد کی تفصیل دی ہے ان کے بیٹے عبد الرحمٰن (فاروق اعظم کے نواہے) حضرت عمر بن عبدالعزیز خلیفہ کے عہد میں ایک ملک کے عال سے اور دوسرے بیٹے عبدالحمید کے بوتے اسحاق ابراہیم الملقب بہ خطابی کی اولاد بھرہ وغیرہ میں بمنصب گورنری ممتاز رہی۔

خاص مقريان رحمته للعالمين فليسته

وہی صحبتیں وہی قربتیں انہیں ہیں نصیب رسول کی ابوبکر ہے جو قریب تر تو عمر بھی آپ کے پر میں ہے کوئی اہلیت سے آپ کو جو نکال دے تو محال ہے کہ عمر کی تربت یاک بھی تو رسول پاک کے گھر مین ہے ختن علی جو عمر ہوئے کوئی ان کے جان لے مرتبے کوئی پھر بھی ان کو برا کے تو مقام اس کا ستر میں ہے کوئی پھر بھی ان کو برا کے تو مقام اس کا ستر میں ہے کوئی پھر بھی ان کو برا کے تو مقام اس کا ستر میں ہے

حضرت سعد بن ابي وقاص رغيطينه سيده آمنه رضي تعنها اور حضرت سعد بن ابي وقاص رغيطينه سيده آمنه رضي تعنها اور



برقام قادسہ وغیرہ ایرانیوں کو تکست انہی کی سیسالاری میں ہوئی کوف کے بائی آپ ہی بین آپ آپ ہی بین آپ ہی ہے نے بہت رسالہ اسلامی کو وجلہ کے پارا تار اور ٹوشیروال کے سفید کل میں نماز جعہ جا پڑھائی تھی آپ جہد علی میں جمام مرکار عالم المنظیظ لڑائی ہے الگ رہے کہ مسلمانوں کے خون سے تلوار رنگین نہ ہو ای طرح حضرت اسامہ بن زید حضرت عبداللہ بن عمر اور محمد بن مسلم نے حضرت علی کے ساتھ ہوکر مسلمانوں پر تیج زئی سے انکار کرویا۔حضرت سعید کا بیٹا عمر جوامام حسین کا رشحتے میں نانا رعباس علمدار عثان اور جعفر) کے مامول شمر نے ابن زیاد کو بہکا دیا (زیادہ حضرت علی کا بڑا معتمد (عباس علمدار عثان اور جعفر) کے مامول شمر نے ابن زیاد کو بہکا دیا (زیادہ حضرت علی کا بڑا معتمد اور ان کی طرف سے گورٹر قارس تھا ، افسوس! اس کا بیٹا آل علی کا چائی دخمن ہوا) آ خر لڑائی ہوئی جس میں امام موصوف اور ان کے چند بیٹے اور بھائی بھتے شہید ہوئے۔ مختار تقفی نے انتقام لینے کہمانے اوروں کو ساتھ ملا کر خروج کیا اور خطاکاروں کے ساتھ گئی ہے گناہوں کو بھی نشانہ بھا بنا انہی مقتولوں میں عمرو بن سعد شمر اور ابن زیاد بھی تھے آخر بلی تھیے سے باہر آئی اور مختار نے بہا نہی مقتولوں میں عمرو بن سعد شمر اور ابن زیاد بھی تھے آخر بلی تھیے ہے باہر آئی اور مختار نے بہت کی جیسا کہ شیعی معتبر کتاب جلاء العیون عبر سے بھر حضرت زبیر کے فرزند مصعب نے اسے شکست دے کرفل کیا۔

عیر شیاع البعض غیر ذمہ دار شیع 9 رئیج الادل کو فاروق اعظم میں کو شہید کرنے والے کافر
البحث عیر شیاع البحث کی عیر شیاع کرتے ہیں۔ اس سال ۱۳۷۵ھ میں وہ موضع حسوبلیل میں اپنے
البعسب میں نگے ہو گئے اور جب ہر طرف سے مسلمانوں نے صدائے احتجاج بلند کی کھسیانی بلی کھمیا
نویج کے مصداق کہنے گئے کہ بیعید عمرو بن سعد کے روزتن کی خوشی میں منائی جاتی ہے حالانکہ ملا
باقر مجلسی کی کتاب زادالمعاد اور تحفۃ العلوم سے ثابت ہے کہ 9 رئیج الاول والی عید (شیاع) سیدنا
فاروق اعظم (عزیز شیر خدا) رسی اللہ عنہما کے سلسلہ تل کی خوشی مین ہے یونہی عمرو (بن سعد) کے
متعلق بیدلوگ کیسے جابل و متعصب ہیں خدا ہدایت وے مقدمہ عدالت میں ہے گواہیوں سے
حقیقت حال واضح ہوجائے گی۔

حضرت عبدالرنمن کو خدا نے بڑی دولت دی تھی آپ دولت خدا داد سے امہات المومنین کی بہ خدمت کرتے رہے آپ کا ترکہ مولہ جھے ہوکر تقتیم ہوا اور ہرلؤگ کے جھے سولہ ہزار درہم آئے۔
آپ فاروق اعظم کے مقرر کردہ تبلس شور کی کے رکن ہے۔ آپ ہی نے بعد اظمینان خلافت میں حضرت عثان کو حضرت علی پر مقدم رکھا اور خلیفہ مقرر فرمایا اور حضرت اسداللہ الغالب نے بھی بیعت کرلی جیسا کہ بیشتر ازیں حضرت صدیق اکبر اور حضرت عمر فاروق اعظم سے بلا جبر و اکراہ دسہت ہونے ہے اور کیول نہ ہوتے جبکہ ان میں کی دین و دنیوی معاملہ میں اختلاف نہ تھا اور وہ آپس میں شیروشکر ہے۔

مولانا غلام رستگیرنامی (مرحوم) رنه بیرال نارنگ ضلع شیخو بوره

لِسُمِ اللّٰبِ الرَّظٰنِ الرَّظِيْ

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعُلَمِيْنَ وَالصَّلُوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ الْأَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلَى الْحَاتِمِ الْأَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلَى الْحَمْدِينَ وَعَلَى اللَّهِ وَأَصْحَابِهِ وَٱتْبَاعِهِ ٱجْمَعِيْنَ ٥

ا ما بعد فقیر تو کلی براد ران اسلام کی خدمت میں گزارش پر دا ذہے۔ کہ ایک ووست کی وساطت سے شیعہ کی ایک صخیم کتاب انجمن لعمانیہ ہند لاہور کے دفتر میں پہنچی۔ جس کا نام مصباح الظلم و الیناح اہلم ہے۔ اس کے مصنف مٹس العلما نواب سید الداد امام ہیں۔ یہ کتاب بعد تھیج مولوی سید مجم الحن صاحب مجتلد اور بعد نظر ثاني مولوي عليم مقبول احمد صاحب والوي مصاحب خاص فرمازوائ رياست رامپور مطبع ریاست میں بحکم جناب نواب صاحب موصوف چیسی ہے۔ اگرچہ اس تھنیف سے غرض حسب تصریح مصنف فقط تفتیش و تلاش اسباب واقعه با کله کریلا ہے۔ مگر اس پر دے میں ان ہفوات کا اعادہ ہے۔ جو تصانیف شیعہ میں پائے جاتے ہیں۔ لنذا حسب ایمائے اراکین مجلس شوریٰ بالخصوص مکری مولوی مفتی حکیم سلیم الله خان صدر المجمن اور محتری مولوی حاجی خلیفه تاج الدین احمد دبیر المجمن اس فقیرب بضاعت نے جواب میں کتاب محفد شیعہ لکھنی شروع کی جس کے انشاء اللہ تعالی کی جعے ہوں گے۔ ہر جے میں ایک خاص مضمون پر بحث ہوگی- اور مصباح الظلم کے علاوہ امرزیر بحث کے متعلق ویگر کتب شیعہ کی تزدید مجی چین نظررے گ- چونکہ معنف نے ای کتاب کے شروع میں اس امریر برا زور دیا ہے کہ حضرت فاروق اعظم بڑاتھ کے قول حسنا کتب اللہ نے عملی طور پر حدیث فقلین کو یاطل کر دیا۔ سقیفہ بی ساعدہ کا ہنگامہ اور اہل بیت کے تمام معمائب ای قول کے نتائج ہیں۔ لنذا پہلے وو حصول میں صدعث مُقْلِين اور حديث قرطاس كو معرض بحث مِن لايا جانا ہے وَاللَّهُ هُوَ الْمُسْتَعَانُ وَ عَلَيْهِ التكلان - اس ویار میں سے ظاہر کر دینا مزاسب معلوم ہو تا ہے کہ مصنف نے جو تحقیق اسباب واقعہ کریاا کے پردے میں مسکلہ امامعت و خلافت اور دیگر اسمرار و احادیث ند بہب شیعہ کے رخ سے پردہ اٹھا دیا ہے۔ وہ خود اس کے فرب كى تعليم كے ظلاف م جيساك الم جعفر صادق كے ول ديل سے ظاہر -

(۱) عن أابت بن سعيد قال قال لى ابو عبدالله عليه السلام يا ثابت مالكم وللناس كفوا عن الناس ولا تدعوا احدا الى بمركم فو الله لو ان اهل اسماء واهل الارض اجتمعوا ان يضلوا عبد ايريد الله هداه ما استطاعوا كفوا عن الناس ولا يقوب

4

احدكم اخى و ابن عمى و جارى فان الله عزو جل اذا اراد بعبد خيرا طيب لروس فلا يسمع بمعروف الاعرفه ولا بمنكر الا انكره ثم يقذف الله في قلبه كلمة يجمع بها امر ٥ (اصول كاني مطبوعات مستول)

وابت بن سعيد كابيان ہے كه الم جعفر صادق عليه السلام في محمد سے فرمايا- اے ابت تهي المراس سے اور لوگوں کو تم سے کیا کام- اپنے شین لوگوں سے روکو- اور کسی کو اپنے دین ک وعوت نه دو- کیونکه الله کی قتم اگر ایل آسان اور ایل زمین اس بات پرانفاق کرلیس که کمی بدے کو محراہ کریں جے اللہ تعالی ہدایت دینے کا ارادہ کرتا ہے۔ تو وہ اسے محراہ نہیں کر کتے۔ نر ایے تیں لوگوں سے روکو-اور تم میں سے کوئی یہ نہ کے کہ (فلال مخالف) میرا بھائی ہے یا میرا مجیرا بھائی ہے یا میرا ہسایہ ہے۔ کیونکہ جب اللہ تعالی سمی بندے سے بھلائی کا ارادہ کرتا ہے۔ اس کی روح کو پاکیزہ بنا دیتا ہے۔ پس وہ موافق شرع امر کو نہیں سنتا مگریہ کہ اسے اچھا جانا ہے۔ اور نہ خلاف شرع امرکو سنتا ہے۔ مربیر کہ اسے برا جاتا ہے۔ پس اللہ تعالی اس کے ول میں ایا كلمه ۋال ديتا ہے كه جس سے اس كے (پراگندہ) كام كو جمع كر ديتا ہے۔ انتمى-

(r) عن معلى بن خنيس قال قال ابو عبدالله عليه السلام يا معلى اكتم امرنا و لم يذعه اعزه الله به في الدنيا و جعله نورا بين عينيه في الاخرة يقوده الى الجنة يا معلى من اذاء امرنا ولم يكتمه اذله الله به في الدنيا و نزع النور من بين عينيه في الاخرة و جعله ظلمة تقوده الى الناريا معلى ان التقية من ديني و دين ابائي ولادين لمن لا تقية له يا معلى أن الله يحب أن يعبد في السر كما يحب أن يعبد في العلانية يا معلى أن المذيع لامرنا كالجاحدله- (اصول كافي ص٢٨٦)

ترجمہ: عطے بن فنیس کا قول ہے کہ امام جعفر صادق علیہ السلام نے فرمایا: اے عطے جارے دین کو پوشیدہ رکھ اور اسے فاش نہ کر۔ کیونکہ جس محض نے ہمارے وین کو بوشیدہ رکھا اور فاش نہ کیا۔ الله تعالی اس کو پوشیدہ رکھنے کے سبب دنیا میں صاحب عونت کر دے گا۔ اور ہمارے وین کو آ نزرت میں اس کی دولوں آ تھوں کے درمیان لور بنا دے گاجو اس کو بعشت کی طرف کے جائے گا۔ اے معلی جس نے جارے دین کو فاش کیا اور بوشیدہ نہ رکھا اللہ تعالی اس کو اس فاش كرتے كے سبب دنیا ميں خوار كرے گا- اور آخرت ميں اس كى دونوں آئكموں كے ورميان سے لور کو برطرف کر دیے گا۔ اور ہمارے دین کو تاری بنا دے گا۔جو اسے دوزخ کی طرف لے جائے گ- ارم عط تقیہ (زمب کا چمپانا) میرے دین اور میرے آباء کے دین سے ہے۔ جس میں تقیہ

نسين- اس كاكوئى وين نسين- اے مطلے الله دوست ركھتا ہے كہ اس كى پوشيدہ عبادت كى جائے-جيسا كه دوست ركھتا ہے كہ اس كى علائية عبادت كى جائے- اے مطلے ہمارے فد بہب كافاش كرنے والا كويا اس كامكر ہے- انتقى-

یمال اس امر کا اظهار بھی ضروری ہے۔ کہ اس کتاب ہیں یہ الترام کیا گیا ہے۔ کہ شیعہ کی کتب معتبرہ کی سند پیش کی جائے حتی کہ آیات قرآن کا اردو ترجمہ بھی بعنو ان ترجمہ شیعہ مولوی تحکیم سید مغبول احمد صاحب بلوی کے مغبول ترجمہ سے لیا گیا ہے۔

جے موافق و مطابق روایات اہل بیت علیم السلام بیان کیا جاتا ہے۔ یہ ترجمہ دو مجتدول لیعن مولوی سید بنم الحن صاحب اور مولوی سید ظهور حبین صاحب کی تھیج و ملاحظہ کے بعد ہنرہائنس کرنیل نواب سرسيد محد حامد على خال صاحب بمادر والتربيات راميوركي سريرستي ميس مقبول يريس وبلي ميس جهيا ہے۔ جیسا کہ لوح سے ظاہرہے - مینچر جو ہراینڈ کمپنی مقبول پریس نے اس ترجمہ کے اشتمار میں سے الفاظ ورج کئے ہیں "مقولیت عام اے عاصل کیوں نہ ہو- جبکہ اس کے مترجم عالی جناب مولانا مولوی علیم البيد مغبول احمد صاحب قبله وہلوی مرظلہ العانی نے خالعتہ بوجہ اللہ اس خدمت کو انجام دیا ہے۔ اور ترجمہ كرنے من اپني ذاتى قابليت و استعداد و شرو آفاق ملكه خاص كے باوجود محض عند الله برى الذمه مونے كى خاطر علمائ اعلام ومجتدين عظام على الخضوص جناب عجم الملته والدين حضرت عجم العلماء مجهتد العصروالزمن مولانا البيد عجم الحن صاحب قبله مدظله العالى واستاذ الكل في الكل حضرت مولانا ظهور حسين صاحب قبله مجتمد العصر والزمن دامت بركاتم كو اس كاايك ايك لفظ سالياتب شائع كيا "مصباح الظلم" اخير صفحه-اي ترجمه كى بابت سيد محمد اساعيل اله آبادي نے يول لكھاہے- "ايك خاص بات اس قرآن مترجم ميں يہ ہے كه ال كى اشاعت مين بروردگار عالم كے حكم محكم لا يَمَشُهُ إلا الْمُطَهَّرُونَ كا بدرجه الم لحاظ ركماكيا ہے۔ لینی سوائے مسلمین مومنین کے تابعین منافقین کا ہاتھ تک لکنے نہیں پایا۔ جس مطبع سے یہ شائع ہونا ہے اس میں خارجی ہوا کا گزر تک نہیں ہوا۔ لنذا اس کے بدید لینے میں ایک نفع یہ بھی ہے کہ ہمارا پیر الری جیب میں رمیگا- اور اجرو تواب جو ملے گا- وہ کھاتےمیں- یہ قرآن مترجم اسلام کے لیے بے حد نفع بخش ہوگا لیکن جو لوگ کہ قائل حسبنا کتاب الله کی امت میں ہیں- ان سے پچھ بعید نہیں کہ اس قرآن مترجم کو دیکھنے کے بعد محض اس ضد سے کہ اس میں اب بھی فضائل اہل بیت رسول اور منقمت منافقین موجود ہے کہاب اللہ کو بھی چھوڑ بیٹھیں۔ اور محض حسبنا دسنة العركى رث لگاتے دنیا میں چلتے پھرتے نظر آئیں (رسالہ شیعد نمبر اجلد) بابت ماہ فروری ۱۹۱۰ء مطبع انیس ہندہ سمجوہ ضلع سارن ص ۱۲)-ای ایک مثال سے ناظرین اندازہ لگا سکتے ہیں۔ کہ اہلسنت و جماعت کو کتب شیعہ کا دستیاب ہونا کیسا دشوار ہے- اور صحابہ کرام و اہلتت کی نبت بیویں صدی عیسوی کے شیعوں کے کیا خیالات ہیں- اللہ تعالٰ ان کو ہدایت دے- بِجاہِ حَبِیْبِهِ سَیّدِنَا مُحَمَّد صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَ اَصْحَابِهِ وَسَلَّمَ

حدیث ثقلین کی بحث

یه صدیث کتب نی وشیعه برووی موجود به اصول کالی کا یک طویل صدیث یم به وقال انی تارک فیکم امرین ان اخذتم بهمالن تضلوا کتاب الله عزو جل واهل بیتی عترتی ایها الناس اسمعوا وقد بلغت انکم ستردون علی الحوض فاسئلکم عما فعلتم فی الثقلین والثقلان کتاب الله جل ذکره و اهل بیتی فلا تسبقوهم فتهلکو او لا تعلموهم فانهم اعلم منکم (اصول کافی کتاب الحجة باب الاشارة والنص علی امیر المومنین علیه السلام ص ۱۸۱)

ترجمہ: اور فرمایا آنخضرت ملی کے لیمیں تم میں دو امر چھوڑ چلا ہوں۔ اگر تم ان دونوں کو پکڑے رہو گے۔ نو ہرگز گراہ نہ ہوگے۔ لین اللہ عزو جل کی کتاب اور میرے اہلیت جو میری عترت بیں۔ اے لوگو سنو۔ اور جھے بذریعہ وحی خبردی گئی ہے کہ تم حوض کو ٹر پر میرے پاس آؤ گے۔ میں تم سے پوچھوں گا۔ کہ تم نے ان دو نفیس چیزوں سے کیا سلوک کیا۔ اور وہ دو نفیس چیزیں اللہ جل ذکرہ کی کتاب اور میرے اہلیت ہیں۔ تم ان سے پیش وسی نہ کرنا۔ ورنہ ہلاک ہو جاؤ گے۔ اور تم ان کو تعلیم نہ دینا۔ کیونکہ وہ تم سے زیادہ عالم ہیں۔ انتھی۔

اس مدیث کو مدیث تقلین کتے ہیں۔ کو نکہ اس میں دو اقل لینی دو نفیس چیزوں کی نسبت و میت درج ہے۔

باج اول

ثقل اكبريعني قرآن كابيان

منی اور شیعہ میں ہے ہرایک فراق تمک بالتقلین کا دی ہے۔ البذا یہاں ہے دیکھنا ہے کہ اس وعیدہ وعیدہ علی ہے۔ بیس سیاکون ہے۔ بدیں فرض پہلے قفل اکبر اینی قرآن کا ذکر کیا جاتا ہے۔ الجسنت و جماعت کا عقیدہ ہے۔ کہ یہ قرآن جو ہمارے پاس موجود ہے وہی ہے جو حضور رسول اکرم مٹیج پر ٹازل ہوا تھا اور ای قدر ہے جتنا کہ حضور انور مٹیج اس دار فانی ہے تشریف لے جانے کے وقت چھوڑ گئے تئے۔ یہ وہی قرآن کی جننا کہ حضور انور مٹیج اس دار فانی ہے تشریف لے جانے کے وقت چھوڑ گئے تئے۔ یہ وہی قرآن کی جس کی قرآنیت بطریق تواتر ثابت ہے۔ یہ وہی قرآن ہے جس پر شرفا غرا ہمارا عمل رہا ہے۔ یہ وہی قرآن ہے جو عرضہ اخیرہ کے مطابق اور کی بیش ہے محفوظ ہے جیسا کہ وعدہ اللی ہے۔ اِنَّا اَنْحُنُ نُوَلِّنَا اللَّهِ کُوْ وَ اِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ (جم - ع) یہ وہی قرآن ہے۔ جس کی تر تیب موافق اس قرآن کے ہے جو لوح محفوظ ہی ہے۔ ای ترتیب سے اے آخضرت مٹیج اور آپ کے اصحاب تلاوت فرمایا کرتے تھے۔ المبنت کا بیشہ یمی عقیدہ رہا ہے۔ کی عہد میں اس عقیدے میں سرموفرق تمیں آیا۔ مگر قرآن موجود کی البست شیعہ صاحبان کا البنا عقیدہ تمیں۔ بغرض قوضے ذیل میں انہی کے ائمہ محصومین اور علائے جمتدین است شیعہ صاحبان کا البنا عقیدہ تمیں۔ اور ثابت کیا جاتا ہے کہ اس مسلہ میں قدمائے شیعہ کا کیا عقیدہ تھا۔ پھر اس میں کیا تبدیل وقوع میں آئی۔ اور بعد اذاں کیا طال ہوا۔

(۱) عن سلم بن سلمة قال قرء رجل على ابى عبدالله عليه السلام و انا اسمع حروف من القران ليس على ما يقراه الناس فقال ابو عبدالله عليه السلام كف عن هذه القراة اقرء كما يقر الناس حتى يقوم القائم فاذا قام القائم قرء كتاب الله عزو جل على حده و اخرج المصحف الذى كتبه على عليه السلام و قال اخرجه على عليه السلام الى الناس حين فرغ منه و كتبه فقال لهم هذا كتاب الله عزو و جل عليه السلام الى الناس حين فرغ منه و كتبه فقال لهم هذا كتاب الله عزو و جل

كما انزله الله على محمد صلى الله عليه وسلم قد جمعته من اللوحين فقالها هوذا عندنا مصحف جامع فيه القران لا حاجة لنافيه فقال اما والله لا ترونه بعد يومكم هذا ابدا انماكان على ان اخبركم حين جمعته لتقرؤه (امول كاني ص ١٦١) ترجمہ: سالم بن سلمہ كابيان ہے كہ ايك مخص فے امام جعفرصادق عليه السلام كے سامنے قرآن کے کئی حدوف اس طرح پڑھے کہ لوگ ویبا شیس پڑھتے۔ حالانکہ میں سن رہا تھا۔ بس امام علیہ السلام نے فرمایا۔ کہ اس قرات سے باز آ اور پڑھ کہ جس طرح لوگ پڑھتے ہیں یمال تک کہ الم قائم عليه السلام ظاہر ہوں جب وہ ظاہر ہوں کے تو اس خرآن کو ٹھیک طور پر پڑھیں گے-اور اس قرآن کو ظاہر کریں گے جیسے حضرت علی علیہ السلام نے لکھا تھا۔ اور امام جعفر صادق علیہ السلام نے فرمایا۔ کہ حضرت علی علیہ السلام نے وہ قرآن لوگوں کو دکھایا۔ جس وقت آپ اس کے جمع كرنے اور لكھنے سے فارغ ہوئے- اور ان سے كماكہ يہ الله عرو و جل كى كتاب ہے جيساكہ اس نے اس کو حضرت محمد النظیم بر نازل کیا۔ میں نے اسے وو تختیوں مصبے جمع کیا ہے۔ مید سن کرلوگوں نے کما۔ کتاب اللہ یہ ہے جو ہمارے یاس ہے۔ یہ مفحف ہے جس میں قرآن جمع ہے۔ ہمیں تمهارے جمع کئے ہوئے قرآن کی ضرورت نہیں۔ پس حضرت علی نے فرایا۔ آگاہ رہو۔ خدا کی تم تم آج کے بعد اس کو مجھی نہ دیکھو گے۔ جھے ہر تو میں واجب تھا کہ جمع کرکے تمہیں خردوں۔ تاکہ تم اسے بر حو- انتی - اس رویت میں دو تختیول سے جمع کرنے کا ذکر ہے- مگر دو سری روایت میں کول ہے۔

روى على بن ابراهيم القمى في تفسيره باسناده عن ابى عبدالله عليه السلام قال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لعلى عليه السلام يا على ان القران خلف فراشى في الصحف والحرير والقراطيس فخذوه واجمعوه ولا تضيعوه كما ضيعت اليهود التوراة فانطلق على عليه السلام فجمعه في ثوب اصغر ثم ختم عليه في بيته وقال لا ارتدى حتى اجمعه قال كان الرجل لياتيه فيخرج اليه بغير رداه حتى جمعه (تغير صاق)

ترجمہ: علی بن ابراہیم لمی نے اپنی تقبیر میں بالاسناد امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے۔
کہ رسول اللہ سائی اللہ علی فرمایا۔اے علی قرآن میرے بستر کے پیچھے صحیفوں اور رہم اور کاغذوں
میں ہے۔ اس کو لو اور جمع کرو۔ اور ضائع نہ کرو جیسا کہ یہود نے تورات کو ضائع کر دیا۔ پس حضرت علی علیہ السلام نے قرآن کو ایک زرد کیڑے میں جمع کیا۔ پھراس پر اپنے گھریس مرلگادی۔ اور قرمایا کہ میں چادر نہ او ڑھوں گا یمال تک کہ اسے جمع کرلوں۔ رادی کا بیان ہے کہ لوگ حضرت علی کے پاس آئے تھے۔ اور آپ چادر او ڑھے بغیران کی طرف نطقے۔ یمال تک کہ آپ نے قرآن جمع کرلیا۔ انتھی۔

(r) خطبة لامير المومنين عليه السلام وهي خطبة الوسيلة محمد بن على بن معمر عن محمد بن على بن عكاية التميمي عن الحسين بن النظر الفهدى عن ابي عمر والاوزاعي عن عمرو بن شبر عن جابر بن زيد قال دخلت على ابي جعفر فقلت يا ابن رسول الله قد ارمضني اختلاف الشيعة في مذاهبها فقال يا جابر الم اقفك على معنى اختلافهم من اين اختلفوا و من اي جهة تفرقوا قلت بلي يا ابن رسول الله قال فلا تختلف اذا اختلفوا يا جابر ان الجاحد لصاحب الزمان كالجاحد لرسول الله صلى الله عليه وسلم في ايامه يا جابر اسمع وع قلت اذا شئت قال اسمع وع و بلغ حيث انتهت بك راحلتك ان امير المومنين عليه السلام خطب الناس بالمدينة بعد سبعة ايام من وفاة رسول الله صلى الله عليه وسلم و اله وذلك حين فرغ من جمع القران و تاليفه فقال الحمد لله (الي ان قال) و في مناقب لو ذكرتها لعظم بهاالا رتفاع و طال لها الاستمع ولئن تقمصها دوني الاشقيان و نازعا في فيما اليس لهما بحق و ركباها ضلالة واعتقداها جهالة فلبئس ما عليه رودا ولبئس مالا تقسهم مهدا يتلا عنان في زور هما و يبرا اكل و احدمنهما من صاحبه يقول اقرينه اذا القتا ياليت بيني و بينك بعدالمشرقين فبئس القرين فيجيبه الإشقى على رثوثه باليتني لم اتحذ فلانا خليلا ٥ لقد اضلني عن الذكر بعد اذ جاء ني وكان الشيطان للانسان خذولا ٥ فان الذكر الذي عنه ضل والسبيل الذي عنه مال و الايمان الذي به كفر و القران الذي اياه هجر و الدين الذي به كذب (كتاب الووضية من الكافي ص ١١١١١١١)

ترجمہ: (جذف اساد) امیر المومنین علیہ السلام کا خطبہ وسیلہ - جابر بن زید نے کما کہ میں محمد باقر کی خدمت میں حاضر ہوا۔ ایس میں نے عرض کی۔ اے رسول اللہ کے بیٹے۔ شیعہ کے غداجب کے اختلاف کے مضمون سے اختلاف کے مضمون سے اختلاف کے مضمون سے اختلاف کے مضمون سے آگاہ نہیں کیا کہ کمال سے الن بی اختلاف پیدا ہوا۔ اور کس وجہ سے وہ جدا جدا ہوگئے۔ میں نے مضمون کے مشمون سے اللہ کے رسول اللہ کے نہیں اختلاف بیدا ہوا۔ اور کس وجہ سے وہ جدا جدا ہوگئے۔ میں نے مضمون کے ایس کے اختلاف نہ کر۔ جس وقت وہ اختلاف

کریں۔ اے جابر صاحب زمان کا منکر ایسا ہے کہ رسول اللہ ملی کا منکر آپ کے زمانے میں۔ اے جابر تو سن اور یاد رکھ جابر تو سن اور یاد رکھ اور یاد رکھ اور بینے اور یاد رکھ اور بینے اوے۔

کہ امیرالمومنین علیہ السلام نے بریئے ہیں رسول اللہ طائے کا وفات شریف سے سات روز بعر لوگوں سے خطاب کیا۔ جبکہ آپ قرآن کے جمع و تالیف کرنے سے فارغ ہوئے اور یوں فرمایا۔ سب ستایش اللہ کے لیے ہے۔ (یمال تک کہ فرمایا) اور جھ ہیں خوبیاں ہیں۔ اگر میں ان کا ذکر کروں تو ان کا ختم کنا وشوار ہوگا۔ اور لوگوں کو ان کے سننے کے لیے زیادہ وقت ورکار ہوگا۔ گو جھے چھوڑ کر وو بد بختوں لیے ان خوبیوں کا تحیی پہن لیا اور جھ سے اس بات میں جھڑے جس میں ان کا کوئی حق نہ تھا۔ اور گراہی سے ان خوبیوں کا تحیی پہن لیا اور جمالت سے ان کو اپنی خیال کیا۔ برا ہے وہ جس کا انہوں نے ارتکاب کیا اور برا ہے وہ جو انہوں نے اپنے نفوں کے لیے افقیار کیا۔ وہ اپنی جموث میں ایک وو سرے پر لعنت کریں گے۔ وہ جو انہوں نے اپنی نفوں کے لیے افقیار کیا۔ وہ اپنی جموث میں ایک وو سرے پر لعنت کریں گے۔ میرے اور جراک سے باتھی سے بڑار ہوگا۔ اور اس سے کے گاجب ووٹوں (قیامت کے دن) ملیں گے۔ کاش میرے اور تیرے ورمیان مشرق و مغرب کا فاصلہ ہو گا۔ سوبرا ہے وہ ساتھی۔ بڑا بہ بخت اس کو اپنی تکلیف میں جواب دے گاکاش میں قال کو دوست نہ بڑائا۔ اس نے جھے ذکر سے جب وہ میرے پاس آیا گراہ کر میں۔ اور شیطان انسان کو معیست میں تنما چھوڑ دیے والا ہے۔ کیونکہ ذکر وہ ہے جس سے وہ گھرگیا۔ اور ایمان وہ ہے جس سے وہ انکار کر گیا۔ اور قرآن وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ الے۔ اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ الے۔ اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ ہے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ بے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ بے جے اس نے جھوڑ دیا۔ اس نے جھوڑ دیا۔ اور دین وہ بے جو اس کے دین کیا۔ اس کو دین کی کو دین کیا۔ اس کو دین کی کی کی کیا کو دین

اس مدیث اور مدیث سابق سے طاہر ہے کہ حضرت امیر علیہ السلام نے آخضرت المخالِم کے اس مدیث اور مدیث سابق سے سات روز میں قرآن جمع کرلیا تھا۔ وہ قرآن جمید اصلی تھا۔ گر حضرت شیخین اور دیگر صحابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین نے اسے قبول نہ کیا۔ بلکہ اپنا جمع کیا ہوا قرآن دکھایا۔ اس پر حضرت امیر علیہ السلام نے فرمایا کہ آج کے بعد تم اسے ہرگز نہ ویکھو گے۔ چنانچہ اس وقت سے آج تک وہ اصلی قرآن مخالفین امیر علیہ السلام کے علاوہ بیچارے شیعہ علی نظروں سے بھی غائب ہے۔ اگر چہ شیعہ کے زدیک حضرات شیخین بڑا تھ کے کروہ قرآن محرف اور نادرست ہے۔ مگر کی نظروں سے بھی غائب ہے۔ اگر چہ شیعہ کے زدیک حضرات شیخین بڑا تھ کروہ قرآن محرف اور نادرست ہے۔ مگر

(س) کتاب احتجاج تنظیری میں ایک طویل روایت (ص ۱۱۹ تا ص ۱۳۲۱) بدیں مضمون منقول ہے۔ کہ ایک زیراق حضرت امیرعلیہ السلام کی ضدمت میں آیا۔

اس نے کی اعتراض کیے- اور آیات قرآنی سے استدلال کیا- چنانچہ اس کا ایک سوال یہ ہے کیا وجہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں انبیائے کرام کے مفوات کو بد تصریح نام ذکر کیا ہے- اور گمراہوں

اور مراہ کنندگان کے نام بطریق توریہ و کنایہ بیان کیے ہیں حضرت امیرعلیہ السلام اس کا جواب دیتے ہوئے فرمائے ہیں-

ولم يكن عن اسماء الانبياء تجبرا و تعززا بل تعريفا لاهل الاستبصار ان الكناية عن اسماع اصحاب الجرائر العظيمة من المنافقين في القران ليست من فعله تعالى وانها من فعل المغيرين والمبدلين الذين جعلوا القران عضين واعتاضو الدنيامن الدين و قد بين الله تعالى قصص المغيرين بقوله الذين يكتبون الكتب بايديهم ثم يقولون هذا من عندالله ليشتروا به ثمنا قليلا و بقوله وان منهم لفريقا يلون السنتهم بالكتب وبقوله اذيبيتون مالا يرضى من القول بعد فقد الرسول مما يقيمون به او باطلهم حسب ما فعلته اليهود والنصاري بعد فقد موسى وعيسي من تغيير التورة والانجيل و تحريف الكلم عن مواضعه و بقوله يريدون ان يطفئوا نورا الله بافواهم و يابي الله الا أن يتم نوره - يعني انهم البتوا في الكتب مالم يقله الله ليلبسوا على الخليفة فاعمى الله قلوبهم حتى تركوا فيه مادل على ما اجدثوه فيه و حرفوا فيه و بين أن افكهم و تلبيسهم و كتمان ما علموه منه ولذلك قال لهم لم تلبسون الحق بالباطل وضرب مثلهم بقوله فاما الذبد فيذهب جفاء واماما ينفع الناس فيمكث في الارض فالزبد في هذا الموضع كلام الملحدين الذين اثبتوه في القران فهو يضمحل و يبطل و يتلا شي عند التحصيل والذي ينفع الناس منه فالتنزيل الحقيقي الذي لا ياتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه والقلوب تقبله و الارض في هذا الموضع هي محل العلم و قراره وليس البيوع مع عموم التقية التصريح باسماء المبدلين ولا الزيادة في اياته على ما اثبتوه من تلقائهم في الكتاب لما في ذلك من تقوية حجج اهل التعطيل والملل المنحرفة عن قبلتنا.

ترجمہ: اللہ تعالیٰ نے تجبرہ تعزز کے لیے نبیوں کے نام سے کنامہ ضیں کیا۔ بلکہ اہل بصیرت کو میہ بتانے کے لیے کہ قرآن میں برے گنگار منافقوں کے ناموں سے کنامہ اللہ تعالیٰ کا فعل نہیں۔ بلکہ تغیرہ تبدل کرنے والوں کا فعل ہے جنہوں نے قرآن کو پارہ پاڑہ کر دیا۔ اور دین کے عوض دنیا کو لیا۔
لیا۔

اور الله تعالى نے تغیر كرنے والوں كے طالت ان آينوں ميں بيان فرمائے ميں اللَّذِيْنَ يلكم عُبُونَ



الْکِفْ بِالْمِدِیْهِمْ فَمْ یَقُوْلُوْنَ هٰلَا مِنْ عِنْدِ اللّهِ لِیَشْتَرُوْا بِهِ فَمَنّا قَلِیْلا (رکوع ۹ - بِنَره) وَ إِنَّ مَنْهُمْ الْکَوْیِهُمْ بِالْکِتْ بِ (ال عمران: ع۹) اِذْ یُبَیّتُنُونَ کما لاَ یَرْضَی مِنَ الْفَوْلِ (سَاء ع۱) یعنی بیر فات رسول الله کے وہ ایسی بات کا مشورہ کریں گے جس سے وہ این باطل کی بی کو قائم کریں گے جی کہ یہود و نصاری نے بعد وفات مول اور عیلی کے تورات اور انجیل پی تغیرات کے اور کمات کو ان کی مگہ ہے مدل والا۔

فَامَّا الزَّبْدُ فَيَذْهَبْ جُفَآءً وَ أَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ (رعد - ع ٣)

اس آیت میں جھاگ ہے مراو طحدوں کا وہ کلام ہے جے انہوں نے قرآن میں ورج کر دیا۔ یہ کلام بخصیل و تحقیق کے وقت مصحل وباطل و لاشے ہو جاتا ہے جو کلام لوگوں کو نفع دیتا ہے وہ تنزیل حقیق ہے جس میں باطل کو آگے ہے اور نہ بیجھے ہے داخل ہوتا ہے اور جس کو دل قبول کر لیتے ہیں۔ اور اس مقام پر زمین ہے مراد محل علم اور قرار گاہ علم ہے۔ اور عموم تقیہ کے سبب ان لوگوں کے ناموں کی تقریح جائز ہے۔ جو انہوں جائز نہیں۔ جنہوں نے قرآن کو بدل ڈالا۔ اور نہ آیات قرآن میں اس زیادتی کی تقریح جائز ہے۔ جو انہوں نے اپنی طرف سے قرآن میں ورج کر دی۔ کیونکہ تصریح میں فرقہ معطلہ و کفار کی حجتوں اور ایسے اہل فراہب کی تقویت ہوتی ہے جو امارے قبلہ ہے مخرف ہیں۔ انتھی۔ پھراسی زندیق کا ایک سوال یہ بھی ہے۔ کہ میں ویکتا ہوں کہ اللہ تعالی فراتا ہے۔ فیان کی تقیم میں انساف کرنے اور عورتوں سے نکاح کرنے میں کوئی دیا جس اور نہ تمام عورتیں بیتم ہوتی ہیں۔ پس اس آیت کے کیا معنی ہیں۔ اس کے جواب میں کوئی دیا۔ اسمام یوں فراتے ہیں۔

واما ظهورك على تناكر قوله فان خفتم الاتقسطوا في اليتامي فانكحوا ماطاب لكم من النساء وليس يشبه القسط في اليتامي نكاح النساء ولا كل النساء ايتاما فهو مما قدمت ذكره من اسقاط المنافقين من القران و بين القول في اليتامي و بين نكاح النساء من الخطاب والقصص الكثر من ثلث القران و هذا وما اشبهه مما ظهرت حوادث المنافقين فيه الاهل النظر والتامل ووجد المعطلون واهل الملل المخالفة للاسلام ساغا الى القدح في القران ولو شرحت لك كل ما اسقط وحوف و بدل مما يجرى هذا المجرى لطال وظهر ما تعظر التقية اظهاره من مناقب الاولياء و مثالب الاعداء.

ترجمہ: گرتیرا واقف ہو جاتا فان خفتم اللہ کے خلاف فصاحت ہونے پر طالا نکہ بیموں کے حق میں انساف کرنے اور عورتوں سے نکاح کرتے میں کوئی ربط نہیں اور نہ سب عور تیں بیتیم ہوتی ہیں۔ سواس کی وجہ وہی ہے جو میں پہلے بیان کرچکا ہوں کہ منافقوں نے قرآن میں سے بہت پکھ نکال ڈالا ہے۔ اور الفاظ فی الیتای اور فاذکحوا کے در میان ایک تمائی قرآن سے زیادہ خطاب اور قصے ہیں۔ اور جو اس کے مشابہ ہیں ایسے مقام ہیں۔ جن میں غورو فکر کرنیوالوں کو منافقوں کی بین ظاہو ہو جاتی ہیں۔ اور فرقہ معطلہ اور نخالف اسلام خداہب والے قرآن میں قدر کرنے کا برعتیں ظاہو ہو جاتی ہیں۔ اور فرقہ معطلہ اور نخالف اسلام خداہب والے قرآن میں قدر کرنے کا موقع پاتے ہیں۔ اور اگر میں تجھ سے بیان کروں اس فتم کی تمام ایسی چیزوں کو جو نکال ڈائی گئیں اور تحریف و تبدیل کر دی گئیں۔ تو کلام طویل ہو جائے گا۔ اور دوستوں کی خوبیاں اور دشمنوں کی برائیاں جن کے ظاہر کرنے سے تقیہ منع کرتا ہے وہ سب ظاہر ہو جائیں گی۔ انتقی اسی زندین کا ایک اور اعتراض یہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں اپنے رسول ملائیل کو باقی سب نہیوں پر ایک اور اعتراض یہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں اپنے رسول ملائیل کو باقی سب نہیوں پر ایک اور اعتراض یہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں اپنے سول ملائیل کو باقی سب نہیوں پر ایک اور نی سے نہیں کیا۔ چنانچہ فرمایا

وَلُوْ شُآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجُهِلِيْنَ (انعام - ع») وَلَوْ لاَ أَنْ ثَبَنَاكَ لَقَدُ كِلاتَّ تَوْكُنُ النَّهِمْ شَيْنًا قَلِيْلاً 0 إِذًا لاَّذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيُوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لاَ تَجِدُلُكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا (ابنى اسرائيل - عه) وَ تُخْفِيْ فِي نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ أَمَاتُ ثُمَ اللّٰهُ مُنْدِيْهِ وَ تَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ آحَتُّ أَنْ تَخْشُهُ (احزاب - عه) وَ مَا أَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلاَ مُنْدِيْهِ وَ تَخْشَى النَّاسَ وَاللّهُ آحَتُّ أَنْ تَخْشُهُ (احزاب - عه) وَمَا أَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلاَ بِكُمُ (احقاف - ع) حالانكه فرمايا بِي مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتْبِ مِنْ شَيْءٍ (انعام - ع») وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنُهُ فِيْ إِمَامٍ مُّبِيْن (يس - ع)

پن جب اشیاء امام من جو نی کا وسی ہو تا ہے۔ محفوظ ہوں۔ تو نی کو بطریق اولے الی صفت سے پاک ہونا چاہیے جو و ماادری مایفعل ہی و لابکم سے مفہوم ہوتی ہے۔ اس کاجواب حضرت

واما ما ذكرله من الخطاب الدال على تهجين النبي صلى الله عليه واله وسلم ولا زراء به والتانيب له مع اظهره الله تعالى من تفضيله اياه على سائر انبياء ه فان الله جل و عز جعل لكل نبي عدوا من المشركين كما قال في كتابه و بحسب جلالة منزلة نبينا صلى الله عليه واله وسلم عند ربه كذلك عظم محنته بعد وه الذي عادمنه اليه في شقاقه ولفاقه كل اذي و مشقة لدفع نبوته و تكذيبه اياه وسعيه في مكارهه وقصده لنقض كل ما ابرمه واجتهاده و من الاه على كفره و عناده و نفاقه والحاده في ابطال دعواه و تغيير ملته و مخالفة سنته ولم يرشيئا ابلغ في تمام كيده من تنفيرهم عن موالاة و صيه و ايحاشهم منه و صدهم عنه و اغرائهم بعد اوته والقصد لتغير الكتب الذي جاء به و اسقاط فيه من فضل ذوى الفضل و كفر ذوى الكفر منه و ممن وافقه على ظلمه و بغير و شركه ولقد علم الله ذلك منهم فقال ان الذين يلحدون في ايتنا لا يخفون علينا و قال يريدون ان يبدلوا كلام الله ولقد احضروا الكتب كملا مشتملا على التاويل و التنزيل والمحكم والمتشابه والناسخ والمنسوخ لم يسقط منه حرف الف ولا لام فلما وفعوا على مابينه الله من اسماء اهل الحق والباطل و ان ذلك ان يظهر نقض ما عقدوه قالوا لا حاجة لنافيه نحن مستغنون عنه بماعندنا وكذلك قال فنبذوه وراء ظهورهم واشتروابه ثمنا قليلا فبنس ما يشترون ثم دفعهم الا ضطرار لورود السائل عليهم مما لايعلمون تاويله الى جمعه و تاليفه و تضمينه من تلقائهم ما يقيمون به دعائم كفرهم فصرخ مناديهم من كان عنده شي من القران فلياتنا به ووكلوا تاليفه و نظمه الى بعض من وافقهم على معاداة اولياء الله عليهم السلام فالفه على اختيارهم و ما يدل المتامل على اختلال تميز هم و افترائهم انهم تركوا منه ما قدروا انه لهم وهو عليهم و زادوا فيه ما ظهر تناكره و تنافره و علم الله ان ذلك يظهرو يبين فقال ذلك مبلغهم من العلم و انكشف لاهل الاستبصار عوالدهم وافتراهم والذي بدافي الكتب من الازراء على النبي صلى الله عله واله وسلم من فرية الملحدين ولذلك قال يقولون منكرا من القول و زورا ٥

41.45

زلت اور مرزنش پر دلالت کرتا ہے۔ باوجود یکہ آپ کی فضیلت تمام جبوں پر ظاہر کردی ہے۔ سو اللہ عزد جل نے مشرکین میں سے ہر نبی کا دشمن بنا دیا ہے۔ جسیا کہ اپنی کتاب میں فرمایا ہے اور جس قدر ہمارے نبی ماٹینیا کا مرتبہ اللہ کے نزدیک بڑا ہے اسی قدر آپ کو اپنے دشمن سے اہتلاء بھی زیادہ ہوا۔ جس کی دشمنی اور نفاق کے سبب آپ کو ہر طرح کی اذبت اور تکلیف بہنی۔ کیونکہ اس نے آپ کی نبوت سے انکار کیا۔ اور آپ کو جھٹلایا۔ اور آپ کو تکالیف دینے میں کوشش کی۔ اور جس چیز کو آپ نے استوار کیا اس نے اس کو تو ژٹے کا قصد کیا۔ اور خود اس نے اور نیز کفرو عزاد و نفاق والحاد میں اس کے مددگار نے جدوجہد کی کہ آپ کے دعوی کو باطل کر دیں۔ اور آپ کے وین کو بدل ڈائیں۔ اور آپ کی سنت کی مخالفت کریں۔

اس وشمن نے اپنی تمام بدخواہی میں کوئی چیز اس سے بڑھ کرنہ دیکھی کہ لوگوں کو اس نبی کے وصی کی دوستی سے نفرت دلائے اور اس سے وحشت پیدا کر دے۔ اور لوگوں کو اس سے روکے۔ اور الن کو اس کی عداوت بر برانگیختہ کرے۔ اور اس بات بر آمادہ کر دے کہ وہ اس کتاب کو بدل دیں جو وہ لایا۔ اور اس میں سے وہ حصہ نکال ڈالیں جس میں اہل فضیلت کی فضیلت اور اہل کفر (لینی اس وشمن اور ظلم بخاوت و شمرک میں اس کے معاون) کا کفر درج ہے۔ بے شک اللہ کو ان کی بیر روش معلوم ہے اسی واسطے باورت و شمرک میں اس کے معاون) کا کفر درج ہے۔ بے شک اللہ کو ان کی بیر روش معلوم ہے اس واسطے بہ فرایا

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُونَ فِي الْنِتِنَا لاَ يَخْفُونَ عَلَيْنَا (حم سجده عه) (يُرِيْدُون) أَنْ يُبَدِّلُوا كَلاَمَ اللهِ (حَ: ١٥)

حالانکہ ان کو ایسا کال قرآن وکھا دیا گیا۔ جو تاویل تنزیل اور محکم و متنابہ اور ناتخ و منسوخ پر مشمل تھا۔ اور جس میں ہے ایک الف یا لام تک ساقط نہ تھا۔ پس جب وہ اہل من و اہل باطل کے ناموں ہے جو اللہ تعالیٰ نے اس میں بیان فرمائے تھے۔ وائف ہوئے اور سمجھ گئے اگر یہ ظاہر ہوگیا۔ تو ہمارا منصوبہ خاک میں مل جائے گا۔ تب کنے لگے کہ جمیں اس کی پچھ ضرورت نہیں ہمارے پاس جو ہے اس کی موجودگی میں جمیں اس کی پرواہ نہیں۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا فَنَبَدُوْہُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرُوْا بِهِ ثُمَنّا قَلِيلاً فَبِنْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ (آل عران - عا) پھروہ منافقین ایسے ممائل کے چش آنے ہے جن کی تاویل وہ نہ جانے تھے۔ قرآن کے جمح کرنے اور منافقین ایسے ممائل کے چش آنے ہے جن کی تاویل وہ نہ جانے تھے۔ قرآن کے جمح کرنے اور اس میں اپنی طرف ہے وہ باتیں بڑھانے پر مجبور ہوگئے جن سے وہ اپنے کفر کے ستونوں کو قائم میں۔ چنانچہ ان مک مناوی کرنے والے نے چلا کر کما۔ جس کے پاس قرآن کا کوئی حصہ ہو وہ مکس۔ چنانچہ ان مک مناوی کرنے والے نے چلا کر کما۔ جس کے پاس قرآن کا کوئی حصہ ہو وہ مارے باس لے آئے۔ ان منافقوں نے قرآن کو جمح و ترتیب کا کام اس مخص کے پرد کیا جو

روایت بالا سے طاہر ہے کہ حضرت صدیق اکبر بنات کے عمد میں جو قرآن جمع کیا گیا اس میں صحابہ کرام نے کی بیشی کرے تحریف کی ہوئی ہے۔ اور یہ بھی طاہر ہے کہ صحابہ کرام نے معنرت امیر علیہ السلام کے جمع کردہ قرآن کو قبول نہ کیا۔ بلکہ اس کے بعد اپنے اغراض کے مطابق لنخیرو تبدل کرتے جمع کیا

(٣) عن هشام بن سالم عن ابي عبدالله عليه السلام قال ان القران الذي جاء به جبريل عليه السلام الى محمد صلى الله عليه وسلم سبعة عشر الف اية (اص كان كتاب قتل الترآن ص ١٤١)

ترجمہ: ہشام بن سالم امام جعفر صادق سے روایت کرتے ہیں کہ امام موصوف نے فرمایا کہ قرآن جو جرائیل علیہ السلام حضرت محد ملتی ہیا ہے پاس لائے سترہ ہزار آیتیں تھیں۔ انتی علامہ ابو علی جو جرائیل علیہ السلام حضرت محد ملتی ہیا ہے پاس لائے سترہ ہزار آیتیں تھیں۔ انتی علامہ ابو علی طبری نے مجمع البیان میں سورہ و ہرکی تفسیریں قرآن کی کل آیتوں کی تعداد جھے ہزار دو سو چھتیں کھی ہے اس حساب سے دو تمائی قرآن ساقط کرویا گیا۔

(۵) عن احمد بن محمد بن ابى نصر قال دفع إلَّى ابو الحسن عليه السلام مصحفا و قال لا ينظر فيه ففتحته و قرات فيه لم يكن الذين كفروا فو جدت فيها اسم سبعين رجالا من قريش باسمائهم و اسماء ابائهم قال فبعث الى ابعث بالمصحف (اصول كان كاب فنل الرّان م ١٤٠)

ترجمہ: احمد بن محمد بن ابی نفرے روایت ہے کہ امام رضاعلیہ السلام نے مجمعے ایک قرآن ویا اور فرمایا کہ اس میں سے نقل نہ کرتا۔ پس میں نے جو اسے کھولا اور سورہ لم یکن الذین کفروا پڑھی تو اس میں قریش میں سے ستر مخصول کے نام بقید والدیت پائے روای نے کہا کہ امام نے مجمعے کملا ہمیجا کہ وہ قرآن میرے پاس بھیج دو۔ انہی اس حدیث کے تحت میں صافی شرح کانی میں ہے۔ مراد

سمانے است کہ سعی ور غصب حق امامت اہل بیت علیم السلام کروند انی۔ اصول کانی مل ۱۹۲ میں ہے کہ امیر المومنین علیہ السلام نے فرمایا کہ ایک تمائی قرآن ہمارے فضائل اور ہماری وشمنوں کے مثالب میں نازل ہوا۔ اور تمائی میں سنن و امثال اور تمائی میں احکام ہیں۔ اور دو سمری روایت میں ہے کہ امام محمد باقر علیہ السلام نے فرمایا کہ ایک چوتھائی قرآن میں ہمارے فضائل ہیں اور چوتھائی قرآن میں ہمارے فضائل ہیں اور چوتھائی میں سنن و امثال اور چوتھائی میں اور چوتھائی میں سنن و امثال اور چوتھائی میں فرائف و احکام ہیں ملا باقر مجلسی لکھتے ہیں کہ در احادیث وارد شدہ کہ شکث قرآن در فضائل ایش ایشان ایشان (اہل بیت) است شاشے در مثالب دشمنان ایشان ودر بعضے از روایات رائع و ارد شدہ (حیات انتخاب مطبوء تو کشور جلد موم میں)

(۲) عن جابر عن ابى جعفر عليه السلام قال قلت له لم سمى على ابن ابى طالب امير المومنين قال الله سماه وهكذا انزل فى كتابه و اذا اخذ ربك من بنى ادم من ظهورهم ذريتهم و اشهدهم عل انفسهم الست بربكم و ان محمدا رسولى و ان عليه السلام (امول كاني كتاب الحرب المومنين عليه المومنين المومنين عليه المومنين ا

ترجمہ: جابر کا بیان ہے کہ میں نے امام محمد باقر علیہ السلام سے پوچا کہ حضرت علی بن ابی طالب کو امیر المومنین کما ہے۔ اور امیر المومنین کما ہے۔ اور ابی کتاب میں یوں نازل کیا ہے۔

واذاخذ ربک من بنی ادم من ظهورهم ذریتهم و اشهدهم علی انقسهم الست بربکم و ان محمدا رسولی و ان علیا امیر المومنین علیه السلام (۱۶۱۰ - ۱۲۲۰) اب قرآن می و ان محمدا رسولی و ان علیا امیرالمومنین علیه السلام شین ہے۔

ترجمہ: ابو بصیرانام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کرتے ہیں کہ آیت یوں تازل ہوئی ہے۔ ومن یطع الله و رسوله فی و لایة علی و الائمة من بعده فقد فاز فوزًا عظیما (احزاب - سا) اب قرآن میں فی و لایة علی و لائمة من بعده نیں ہے۔

(^) عن عبدالله بن سنان عن ابي عبدالله عليه السلام في قوله ولقد عهدنا الى ادم من قبل كلمات في محمد و على و فاطمة والحسن والحسنين والائمة من

ذريتهم فنسى هكذا والله الزلت على محمد صلى الله عليه واله وسلم المول كافي - باب فيه نكت و لتف من التنزيل في الولاية ص ١٢٣)

کالمی - ہاب فیہ احت و معلق المران میں معرت امام صادق نے فرمایا کہ اللہ کی تئم حفرت ترجمہ: عبداللہ بن سنان روایت کرتے ہیں کہ حضرت امام صادق نے فرمایا کہ اللہ کی تئم حفرت میں مائی ہم سائی میں ایس کا اللہ کی گئی میں مائی ہم سائی ہم سائی ہم سائی ہم سائی ہم مائی ہم سائی ہم

مراجار المادم من قبل كلمات في محمد و على و فاطمه والحسن والحسن والحسن والاتمه من ذريتهم فنسى - دان؟)

ورو مد المن المات في محمد و على و فاطمة و الحسن و الحسين و الائمة الغ نير

(٩) عن جابر عن ابي جعفر عليه السلام قال نزل جريل عليه السلام هذه الله على محمد صلى الله عليه والله وسلم لبئس ما اشتروابه القسم ان يكفروا بما انزل في على بغيا (اصول كافى ص ٢٦٣) ترجمه : جابر حضرت امام محمد باقر عليه السلام سه روايت كرت بين كه امام في فرمايا كه حفرت جرئيل عليه السلام بيه آيت لى كر حضرت محمد التي ينازل بوسة بينس ها الشّقة و ايه انفسه به أن يَكُفُرُوا بِمَا آفرُل الله في على بغيًا نهي مه على بغيًا نهي مه واله وسلم ان عن جابر قال نزل جبرئيل بهذه الاية على محمد صلى الله عليه واله وسلم هكذا ان كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا في على فاتوا بسورة من مثله (اسول كان مسلم)

ترجمہ: جاہر روایت کرتے ہیں کہ امام محر باقر نے فرمایا کہ حضرت جر تیل علیہ السلام یہ آیت لے کر حضرت محر سائی کے بازل ہوئے ان کنتم فی ریب مما نزلنا علی عبد نافی علی فاتوا بسورة من مثله اب قرآن میں فی علی نہیں ہے۔ اس روایت سے معلوم ہوا کہ اعجاز صرف ان آنہوں میں تھا۔ جو حضرت علی السلام کے بارے میں نازل ہوئی تھیں۔

(۱۱) عن منخل عن ابى عبدالله عليه السلام قال نزل جبرئيل عليه السلام على محمد صلى الله عليه واله وسلم بهذه الاية هكذا- يايها الذين او توا الكتب امنوا بما نزلنا فى على تورا مبينا (اصول كافى ص ٢٦٢)

رجہ: معل سے روایت ہے کہ امام جعفر صادق علیہ السلام نے فرمایا کہ حضرت جرائیل علیہ السلام یہ آیت کے دوایت محمد التا کیا پر نازل ہوئے یابھا الله بن او تو الکتب امنوا بما

بزرانا في على نور المبيدا قرآن من شين --

(۱۲) عن ابى بصير عن ابى عبدالله عليه السلام فى قوله تعالى سال سائل بعداب واقع الكفرين بولاية على ليس له دافع ثم قال هكذا والله نزل بها جبريل على محمد صلى الله عليه واله وسلم (اصول كافى ص٢٦٢)

ترجمہ: الو بعير روايت كرتے بيں كه امام جعفر صادق نے يہ آيت پڑھى- سال سائل بعذاب واقع للكفوين بولاية على ليس له دافع كر قرمايا كه الله كى فتم اى طرح اس آيت كو لے كر حضرت جرائيل عليه السلام حضرت محمد ملتي ليم بر نازل ہوئے اب قرآن ميں بولايت على نميں كر حضرت جرائيل عليه السلام حضرت محمد ملتي ليم بازل ہوئے اب قرآن ميں بولايت على نميں كے۔

(٣) عن ابى حمزة عن ابى جعفر عليه السلام قال نزل جبرئيل بهذه الاية هكذا ان الذين كفروا و اظلموا ال محمد حقهم لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم طريقا الاطريق جهنم خلدين فيها ابدا و كان ذلك على الله يسيرا ثم قال يايها الناس قد جاء كم الرسول بالحق من ربكم في ولاية على فامنوا خيرالكم و ان تكفر وابولاية على فان الله مافى السموت والارض (اصول كافي ص ٢٦٤)

ترجم ابو حزه روایت کرتے ہیں کہ امام محم یا قرعلیہ السلام نے قربایا کہ حضرت جرئیل یہ آیت اس طرح لے کر نازل ہوئے۔ ان الذین کفروا وظلموا ال محمد حقهم لم یکن الله لیغفرلهم ولا لیهدیهم طریقا الا طریق جهنم خلدین فیها ابدا و کان ذلک علی الله یسیوا پر الله تعالی نے قربایا یابها الناس قد جاء کم الرسول بالحق من ربکم فی و لایة علی فامنوا خیرالکم و ان تکفر وابو لایة علی فان الله ما فی السموات و الارض اب علی فامنوا خیرالکم و ان تکفر وابو لایة علی فان الله ما فی السموات و الارض اب قرائ میں ال محمد حقهم فی و لایته علی و بو لایته علی نیں ہے۔

(٣) عن ابى حمزة عن ابى جعفر عليه السلام قال نزل جبرئيل بهذه الاية على محمد صلى الله عليه واله وسلم هكذا فبدل الذين ظلموا ال محمد حقهم قولا غير الذي قيل لهم فانزلنا على الذين ظلموا ال محمد حقهم رجزا من السماء بما كانوا يفسقون (اصول كافي ص ٢٦٤)

ترجم: الو حزه روایت كرتے بیں كه المام محمد باقر عليه السلام نے فربایا كه حضرت جركيل به آیت اس طرح لے كر حضرت محمد سلائيم پر نازل بوئے - فبدل الذين ظلموا ال محمد حقهم قولا غير الذي قيل لهم فانزلنا على الذين ظلموا ال محمد حقهم رجزا من السماء

بما كانوا يفسقون اب قرآن من ظلمواك بعد دولوں جگد آل محمد حقم نيں ہے۔ (۵) عن جابر عن ابى جعفر عليه السلام قال هكذا انزلت هذه الآية ولو انهم فعلوا ما يوعظون به فى على لكان خير الهم (اصول كافى ص ٢٦٨)

ترجمه: بابرے روایت ہے کہ اہام محمر باقر علیہ السلام نے قربایا کہ یہ آیت اس طرح نازل ہوئی ولو انہم فعلوا مایوعظون به فی علی لکان خیرا لہم اب قرآن میں فی علی شیں ہے۔

(۲) عن حمزة مِمَّنُ اخبرہ قال قرأ رجل عند ابی عبدالله علیه السلام قل اعملوا فسیری الله عملکم و رسوله والمومنون فقال لیس هکذا هی انما هی والمامونون فنحن المامونون (اصول کافی ۲۱۵)

ترجمہ: حزو نے روایت کی اس سے جس نے اسے خردی۔ کما اس خردیے والے نے ایک فخص نے امام جعفر صادق علیہ الله عملکم و رسوله والمومنون امام صاحب نے فرایا یوں نہیں بلکہ اس طرح ہے والمامونون اور مامونون جم جیں۔

(۱۷) عن ابى حمزة عن ابى جعفر عليه السلام قال نزل جبرئيل عليه السلام بهذه الاية هكذا الاية هكذا فابى اكثر الناس بولاية على الاكفورا و نزل جبرئيل بهذه الاية هكذا وقل الحق من ربكم فى ولاية على فمن شاء فليومن ومن شاء فليكفر انا اعتدنا للظلمين بال محمد نارا (اصول كافي ص١٢٠٨)

ترجمہ: ابو حمزہ روایت کرتے ہیں کہ امام محمد یاقرنے فرمایا کہ حضرت جبرا نیل علیہ السلام یہ آیت اس طرح لے کرنازل ہوئے فابی اکثر الناس بولایة علی الاکفورا اور جبر نیل یہ آیت اس طرح لے کرنازل ہوئے وقل الحق من ریکم فی ولایة علی فمن شاء فلیومن و من شاء فلیکفرانا اعتدنا للظلمین بال محمد نازا اب قرآن میں بولایة علی - فی ولایة علی - بال محمد نیں ہے-

(۱۸) عن معلى رفعه في قول الله عزوجل فباي الاء ربكما تكذبن ابالنبي ام بالوصى نزلت في الرحمن (اصول كافي-ص ۱۳۲)

ترجمہ: معلی نے اس صدیث کو رفع کیا (صاحب زبان تک بوساطت سفریا کسی ووسرے امام تک تبوسط روایان) اللہ عزو جل کے قول بیں فبای الاء ربکما تکذبن ابالبنی ام بالوصی سے آیت سورہ رحمان بیں نازل ہوئی۔ اب قرآن بیں ابالنی ام بالوصی نہیں ہے۔

(۹) علم بن غنیبہ ایک روز امام علی بن الحسین کی خدمت میں حاضر ہوئے امام نے فرایا علم اکیا کھے اور آبت معلوم ہے جس کی رو سے حضرت علی بن ابی طالب علیہ السلام اپ قائل کو پچانے تھے۔ اور ان امور بزرگ سے واقف تھے جن کو لوگوں کے آگے بیان فرماتے تھے تھم نے عرض کی نہیں۔ پھر تھم کے دریافت کرنے پر امام نے فرمایا وہ اللہ تعالی کا یہ قول ہے۔ و ما ارسلنا قبلک من رسول و لا نبی و لا محدث اور علی محدث تھے۔ (امول کانی من رسول و لا نبی و لا محدث اور علی محدث تھے۔ (امول کانی من ۱۲۱) اب قرآن میں ولا محدث نہیں ہے محدث کے معنی وہ جس سے فرشتے کام کریں۔

(۲۰) عن ابى يصير قال قال ابو عبدالله عليه السلام التقية من دين الله قلت من دين الله قال من دين الله قال الله قال الله قال الله قال الله قال الله قال العير الكم لسارقون والله ما كانو اسرقوا شيئا (اصول كافي ص ۲۸۳)

ترجمہ: ابو بصیر روایت کرتے ہیں کہ امام جعفر صادق علیہ السلام نے فرمایا کہ تقید اللہ کے وین ے ہے۔ یس نے عرض کی کیا اللہ کے ون سے ہے۔ امام نے قرمایا ہاں اللہ کی فتم اللہ کے وین ے ہے۔ شخقیق یوسف علیہ السلام نے کہا تھا اے قافلہ والوتم چور ہو-اللہ کی قتم انہول نے کچھ چرایاند تھا۔ انتی - قرآن پی ایھا العیرانکم لسارقون کا قائل کی منادی کو قرار دیا گیا ہے۔ نہ كديوسف كوجيها كداس راويت مي ب-اس روايت سے يه بھى معلوم ہواكد تقيد اور جھوث ایک بی چیزہے۔ کیونکہ امام معصوم نے بتا دیا کہ جس نے پچھ چرایا نہ تھا اس کو چور کمنا تقیہ ہے۔ (٢١) عن ابي بصير عن ابي عبد الله عليه السلام قال قلت له قول الله عزو جل هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق قال فقال ان الكتاب لم ينطق ولن ينطق ولكن رسول الله الله الناطق بالكتاب قال الله جل ذكره هذا كتابناً ينطق عليكم بالحق قال قلت جعلت فداك انا لا نقراها هكذا فقال هكذا والله نزل به جبرئيل على محمد صلى الله عليه واله والكنه فيما حرف من كتاب عزو جل أكاب الردن الليني ص ٢٥) ترجمہ: ابو بھیرے روایت ہے کہ میں نے امام جعفر صادق علیہ السلام سے کما کہ اللہ عرو وجل کا ي قول إلى الله الكِتَابْنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ (يه مارا نوشت تمارك برظاف تعيك تعيك كواى تا ب (ترجمه شیعه) امام نے فرمایا که نوشتہ تو بولا نہیں- اور ند مجھی بولے گا- بال رسول الله سال الله ى لوشتك مائ كويا بين- الله جل ذكره في فرمايا ب هلذًا كِتَابُنَا يُنْطَقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ (اس المار اوشت سے تمارے برخلاف ٹھیک ٹھیک کملوایا جائے گا) ابوبصیر کا بیان ہے کہ میں نے موض کیا۔ میں آپ پر قرمان جاؤں ہم تو اس آیت کو اس طرح نہیں بڑھتے۔ اس پر امام۔ نہ فرمایا اللہ کی قتم اس طرح حضرت جرائیل اس کو لے کر حضرت محمد النظائی ہے نازل ہوئے تھ گریہ کیا ہا اللہ عزو جل کے ان مقامات سے ہے جن میں تحریف کر دی گئی ہے۔ انہی حاشیہ ترجمہ شیعہ میں یوں ہے۔ کانی اور تغییر فئی میں ہے۔ کہ جناب امام جعفر صادق سے اس آیت کا مطلب دریافت کیا گیا تھا تو حضرت علیہ السلام نے فرمایا کہ نوشتہ نہ بھی بولا ہے اور نہ ہولے گا۔ ہاں جناب رسول خدا نوشتہ کو دیکھ کر نطق فرمائیں گے۔ جیسا کہ خدا تعالی نے فرمایا ہے۔ ھلڈا کِتَالْبُنَا يُنْظَاقُ عَلَيْکُم بِالْحَقِّ (یعنی منطق کو بھیغہ مجمول قراء ت فرمایا معنی ہے کہ اس جارے نوشتہ سے علینگ کم بالہ خوا س جارے نوشتہ سے متمارے برطاف ٹھیک ٹھیک کملوایا جائے گا) کس نے عرض کی کہ جم توا س طرح قراء ته نہیں کرتے فرمایا کہ جبرئیل ایمن نے تو تھم خدا سے جناب رسول خدا پر اسی طرح نازل کیا تھا۔ مگر یہ کرنے فرمایا کہ جبرئیل ایمن نے تو تھم خدا سے جناب رسول خدا پر اسی طرح نازل کیا تھا۔ مگر یہ کاب خدا کے ان مقامات نے ہے جن میں تحریف کردی گئی ہے۔ انہی

30

ال (۲۲) علی بن سوید نے حضرت ابوالحن موی علیہ السلام کو ایک خط لکھا جبکہ وہ قید میں تھے۔ال خطر میں علی بن سوید نے جو نسخہ جواب میں خطر میں علی بن سوید نے امام کا حال وریافت کیا اور چند مسائل پوچھے امام موصوف نے جو نسخہ جواب میں کھھا ہے اس میں علی بن سوید کو یوں نفیحت کرتے ہیں۔

ولا تلتمس دين من ليس من شيعتك ولا تحبن دينهم فانهم الخائنون الذي خانوا الله و رسوله و خانوا اماناتهم وتدرى ما خانوا امانا تهم تتمنوا على كتاب الله فحرفوه و بدلوه (آلب الروئم للكيني ص ١١)

ترجمہ اور تو ان کا دین تلاش نہ کرجو تیرے شیعہ بی ہے نہیں ہیں۔ اور نہ تو ان کے دین سے مجبت رکھ۔ کیونکہ وہ خیانت کرنے والے ہیں جنہوں نے خدا اور رسول سے خیانت کی۔ اور اپنی انہوں نے کس طرح امائتوں میں خیانت کی وہ کانتوں میں خیانت کی وہ کانتوں میں خیانت کی وہ کانتوں میں خیانت کی وہ کان خدا پر اجمن بنائے گئے تھے ہی انہوں نے اس کو تحریف کردیا اور اسے بدل ڈالا۔ انہیں۔ (۲۳) حدثنا علی بن محمد عن القسم بن محمد عن سلیمان بن داؤد عن یحیی بن ادیم عن شریک عن جابر قال قال ابو جعفر دعا رسول الله اصحابه بمنی فقال ادیم عن شریک عن جابر قال قال ابو جعفر دعا رسول الله اصحابه بمنی فقال یابھا الناس انی تارک فیکم حرمات الله و عترتی والکعبة البیت الحرام ٹم قال ابو جعفر اما کتاب لله فحر فوا واما الکعبة فهد موا واما العترة فقتلوا و کل و دایع الله فقد تبروا (یسائز الدرجات مطوع ایران ۱۲۵ الحرام باس مائع میں۔

ترجمہ: (بحذف اسناد) امام محمد باقر علیہ السلام نے بیان کیا کہ رسول اللہ نے منی میں اپنے اصحاب کو بلایا اور فرمایا کہ میں تم میں دو نفیس چزیں چھوڑ چلا ہوں اگر تم ان سے تمسک کرو کے تو مجھی

سراہ نہ ہو گے۔ وہ اللہ کی کتاب اور میری حترت لینی میرے اہل بیت ہیں۔ پس تخفیق وہ ایک دوسرے سے جدا نہ ہوں گے۔ یہاں تک کہ حوض کو تر پر میرے پاس آئیں گے۔ چررسول اللہ کے فرمایا اے لوگو میں تم میں اللہ کی حربتیں چھوڑ چلا ہوں۔ لینی کتاب خدا اور میری حترت اور کعبہ ہیت الحرام - پھرامام محمد ہا قرنے بیان کیا کہ کتاب خدا کو انہوں نے تحریف کر دیا۔ اور کعبہ کو سرا دیا اور عترت کو قتل کر ڈالا اور اللہ کی تمام ودیعتوں کو ہلاک کر ڈالا۔ انہیں

(rm) قال (على بن ابراهيم في تفسيره واما ما كان خلاف ما انزل الله فهو قوله تعالى كنتم خير امة اخرجت للناس تامرون بالمعروف و تنهون عن المنكر و تومنون بالله فقال ابو عبدالله عليه السلام لقاري هذه الاية خير امة تقتلون امير المومنين والحسين بن على فقيل له فكيف نزلت يابن رسول الله فقال انما نزلت انتم خير المة اخرجت للناس الاترى مدح الله لهم في اخر الاية تامرون بالمعروف و تنهون عن المنكر و تومنون باالله و مثله انه قرى على ابي عبدالله اللين يقولون ربنا هب لنا من ازواجنا و ذرياتنا قرة اعين واجعلنا للمتقين اماما فقال ابو عبدالله عليه السلام لقد سالوا الله عظيما ان يجعلهم المتقين اماما فقيل له يابن وسول الله كيف نزلت فقال انما نزلت واجعل لنا من المتقين اماما و قوله له معقبات من بين يديه ومن يحفظونه من امر اللَّه فقال ابوعبداللَّه كيف يحفظ الشئى من امر الله و كيف يكون المعقب من بين يديه فقيل له و كيف ذلك يا بن رسول الله فقال انما انزلت له معقبات من خلفه و رقيب من بين يديه يحفظونه بامر الله و مثله كثير - قال و اماما هو محذوف عنه فهو قوله لكن الله يشهد بما انزل اليك في على كذا نزلت انزله بعلمه والملائكة يشهدون - وقوله يايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك في على فان لم تفعل فما بلغت رسالته - وقوله ان الذين كفروا و ظلموا ال محمد حقهم لم يكن الله ليغفرلهم وقوله سيعلم الذين ال محمد حقهم اي منقلب ينقلبون و قوله ترى الذين ظلموا ال محمد مقهم في عمرات الموت و مثله كثير النيرمان من ١١٠

ترجمہ: علی بن ابراہیم (جو اہام حسن عسری کے شاگرد اور مخرین ایتقوب کلینی کے استاد ہیں) نے اپنی تغییر اللہ تعدید اللہ تغییر کما اور جو چیز قرآن میں خلاف ما انزل اللہ ہے وہ اللہ تعالی کا یہ قول ہے کہ تعدید لاحق الحد المناس لایة امام جعفر صاوق نے اس آیت کے پڑھنے والے سے کہا کہ ۔ امن

سب امتوں سے المجی ہے جس نے معزت امیر المومنین اور حسین بن علی کو قتل کر دیا۔ ان امام ے یوجھا کیا اے فرزند رسول یہ آہت کس طرح نازل ہوئی۔ امام نے فرمایا یوں نازل ہوئی ند انتم خير ائمة اخرجت للناس جو الم لوكول كے ليے پيدا كيے محتے تم ان سب ت اتح ، كيا تو سيس ويكتاك الله تعالى في اس آيت ك آخر يس ان كي يول مرح كي ب تاموون بالمعروف و تنهون عن المنكر و تومنون بالله (تم نيكي كرف كا تحم دية بوادرين سے منع کرتے ہو۔ اور اللہ یر ایمان لاتے ہو اور اس کی مثل یہ ہے کہ امام جعفرصادق کے سائن يه آيت يرهي گئ- والذين يقولون ربنا هب لنا من از واجنا و ذرياتنا قرة اعين واجعلنا للمتقین اهاها (فرقان - ٥ ع) امام نے فرمایا کہ بے شک انہول نے الله تعالی سے بری چز کا سوال كيا ہے كه ان كو يربيز گاروں كا امام بنا وے پس آپ سے يوجيما كيا كه اے فرزند رسول بير آيت سمس طرح نازل ہوئی تھی امام نے فرمایا کہ یوں نازل ہوئی تھی و اجعل لنا من المتقین اماما اور ہمارے واسطے یر بیز گاروں میں سے امام بنا) اس طرح جعفر صادق کے سامنے یہ آیت یودهی حَيِّ له معقبات من بين يديه و من خلفه يحفظونه من امر الله (رعد ع٢) الم ني فرمایا خدا کے امرو قضا سے کوئی چیز کیو نکر بچائی جاستی ہے۔ اور معقبات (پیچھے کی طرف سے آنے والے) كيونكه هن بين يديه (اس كے آمے كى طرف سے) موسئے- پس امام سے يوچھا كياك اے فرزند رسول بي آيت س طرح ب امام نے فرمايا يوں نازل موكى تھى له معقبات مكن خلفه و رقیب من بین یدیه یحفظونه بامر الله اس طرح کی اور مثالیس بست میں اور جن آ یوں سے کھ مذف کیا گیا ہے وہ یہ ای لکن الله یشهد بما انزل الیک فی علی انزله بعلمه والملائكة يشهدون انساء ع٢٣) يايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك في على و ان لم تفعل فما بلغت رسالته (مائده - ع٠١) ان الذين كفروا و ظلموا ال محمد حقهم لم يكن الله ليغفر لهم إنساء - ع ٢٣) و سيعلم الذين ظلمو اال محمد حقهم اى منقلب ينقلبون (شعر اخير آيه) ترى الذين ظلمو ١ ال محمد حقهم في غمرات الموت- اس طرح كى اور مثاليس بهت بي انتى- اس كے بعد تغيرتى مي آيات میں تقدیم و تاخیر کی مثالیں دے کر لکھا ہے۔ و مثله کثیرا پھران آیات کی مثالیں دی ہیں جن کا کھے حصہ ایک سورت میں ہے اور باتی دومری سورت میں اور لکھا ہے و مثله کثیر اتنبرمانی - ا

رانزد حضرت صادق خواندم حضرت فرمود كه این امت بمترین امتها اند كه حصرت امیرالمومنین

اور وہ یہ عرض کرتے ہیں کہ اے ہمارے پروردگار ہم کو ہماری ازواج کی طرف اور ہماری اولاد کی طرف سے آنکھوں کی ٹھنڈک عنایت کراور ہم کو پر ہیزگاروں کا پیشوا بنا دے (ترجمہ شیعہ)

(ان میں سے) ہرایک کے لیے پرے والے (مقرر) ہیں جو خدا کے تھم سے آگے کی طرف سے اور پیچیے کی طرف سے دور ہے کی طرف سے اور پیچیے کی طرف سے حفاظت کرتے ہیں (ترجمہ شیعہ)

اس کے لیے پسرے وار پیچھے کی طرف مقرر ہیں اور تکہبان آگے کی طرف سے جو تھم خدا کے بموجب حفاظت کرتے رہتے ہیں - (ترجمہ شیعہ)

قرآن موجود میں تو یوں ہے وَلَوْ تَزی إِذَا الظّلِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ (انعام - ع) (٢٥) وَ إِذًا اَخَذَ اللّهُ مِيْفَاقَ النّبِيّنِ الآية (ال عران - ع) پر ترجمه شيعه كے حاشيه ميں يوں لكھا ہے "تفير عياشي ميں جناب امام محمد باقر عليه السلام ہے اس آيت كے ميسوط معني لكھنے كے بعد ان حضرت كا يہ قول ورج ہے كہ تنزيل خدا اس طرح تنى - وَ إِذْ أَخَذَ اللّهُ مِيْفَاقَ أَمَمِ النّبِيّنَ مُر بعد ميں لفظ الم كرا ديا كيا - (ترجم هيد: من ١٥)

(٢٦) اَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِهِ وَ يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَ مِنْ قَبْلِهِ كِنْبُ مُوْسَى اِمَامًا وَّ رَحْمَةُ (١٠٠-٣٠)

کے حاشیہ میں ترجمہ شیعہ میں لکھا ہے "تغییر لتی میں الم جعفر صادق علیہ السلام سے منقول ہے کہ اصل آیت یوں نازل ہوئی تھی۔

اَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيِنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ وَ يَتَلُوهُ شَاهِدٌ مِنْهُ إِمَامًا وَ رَحْمَةً وَ مِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَى اور جناب امام محمد باقرعليه السلام سے منقول ہے کہ اصل آیت یوں نازل ہوئی تھی۔ اَفَمَنْ كَانَ عَلَى بَيْنَةٍ مِّنْ رَبِّهِ (يَعْنُ رسول الله طَلْهِمِ) وَ يَتْلُوهُ شَاهِدٌ إِمَامًا وَ رَحْمَةً وَ مِنْ قَبْلِهِ كِتُبُ مَعْمُونَ يَبِهِ لِوَلُول نَ بَحْ كرتے وقت آگے بیچے کر دیا۔ (ترجمہ شیعہ ص ۳۵۵) معمون تغیرصافی بین بھی موجود ہے۔

(٢٤) أَمُونَا مُنْوَفِيْهَا (فَ الرائل - ٣٥) پر حاشيه ميں ہے۔ تفير عياشي ميں جناب امام محمد باقر سے منقول ہے كه بيد لفظ اصل ميں ہے۔ اَمَوْنَا (ميم مشدد) جس كے معنى بين ہم في ويا اُمَوْنَا نميں جي بيد اُمَوْنَا نميں جيساك اس زمانہ كے لوگ پڑئے ہيں۔ ترجمہ شيعہ ص ٢٥٢ تقير صافى ميں بھى بيد

روایت موجود ہے۔

(۲۸) قال لقد علمت ما آنزل ها لآء إلا رب السلطوت والارض بصائر الناسائل على المرائل على المرائل على المرائل الم

(٢٩) وَقَالٌ الظُّلِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلاً هَّسْحُورًا (فرتان: ١٥)

پر مترجم نے عاشیہ لکھا ہے " تغیر لتی میں جناب امام محد باقر علیہ السلام سے منقول ہے کہ جرائیل المن نے جناب رسول خدا کو یہ آیت اس طرح پہنچائی تھی و قال الطلیفون لآل محتقلہ حققہ نے ان تقیعوں الا رجلا مشیحورا (اور آل محد کا حق خصب کرنے والے نے یہ کما کہ لوگ صرف ایک جادو کر کے مارے ہوئے مخص کو ویروی کرتے ہیں) ترجمہ شیعہ ص ۱۵۵ یہ روایت تغیر صافی میں بھی پائی جاتی ہے۔

(۳۰) تقیر صافی وَالْهُ كَذِینِنَ أُولِی النَّعْمَةِ (مزل) ك تحت من به فی الكافی عن الكاظم والمكذبین بوصیک قال ان هذا تنزیل قال نعم یعنی كافی من امام موی كاظم سے بول منقول ہے۔ والمكذبین بوصیک (نیخی جمالانے والا تیرے وصی كو) جب بوچھا گیا كیا آیت ای طرح نازل ہوئی ہے تو امام نے قرال ہال۔ انتی۔

(٣١) تغير روح المعائى (٤٦ اول ص ٢١ ش ٢- ذكر ابن شهر اشب المازندرانى فى كتاب المثالب له ان سورة الولاية اسقطت بتما مها و كذا اكثر سورة الاحزاب فانها كانت مثل سورة الانعام فاسقطو منها فضائل اهل البيت و كذا اسقطو الفظ و يلك من قبل لا تحزن ان الله معنا و عن ولاية على من بعد وقفوهم انهم مسئولون و بعلى بن ابى طالب من بعد وكفى الله المومنين القتال وال محمد من بعد وسبعلم الذين ظلمو الى غير ذلك.

ترجمہ: این شہر آشوب مازندانی (متوفی ۵۸۸ھ) نے کتاب المثالب میں ذکر کیا ہے کہ سورہ ولایت تمام (قرآن ہے) نکال دی گئی ای طرح سورہ احزاب کا اکثر حصہ نکال دیا گیا۔ کیونکہ وہ سورہ انعام کی مثل لمی سی سے اس میں سے اہلیت کے قضائل نکال وسے گئے۔ ای طرح لا تَحْوَنْ إِنَّ اللَّهُ مَعَنَا سے پہلے وسلک حدف کر ویا گیا ہے۔ اور وقونهم انهم مسئولون کے بعد عن و ولایت علی اور کفی الله المومنین القتال کے بعد معلی این ابی طالب اور وسیعلم الذین المموا کے بعد اللہ محد ساقط کرویا گیا ہے وغیر ذلک ائتی۔

(٣٢) ان الله اصطفى ادم و نوحا و ال ابراهيم و ال عمران على العلمين ذرية بعضها من بعض والله سميع عليم

شخ طبری گفتد است که در قراء ت ایل بیت چنین است و ال محد علی العلمین علی بن ابرا بیم در تفیر گفتد که امام موکی کاظم فرمود که به آیت چنین نازل شده است و ال ابراهیم و ال عمران و ال محد علی العلمین (حیات القلوب جلد سوم عن ۱۹۳) اس آیت کے تحت میں تفیر صافی میں ب والعیاشی عن الصادق قال و ال محمد کانت فیمحوها و فی دوایة اخوی قال هو و ال ابراهیم و ال محمد علی العلمین فوضعوا اسما مکان اسم ترجمه تفیر عیاشی می ال ابراهیم و ال محمد علی العلمین فوضعوا اسما مکان اسم ترجمه تفیر عیاشی می امام جعفر صادق سے منقول ہے کہ لفظ آل محمد اس آیت میں موجود تقالوگوں نے مناویا اور ایک اور روایت میں ہے کہ آپ نے فرمایا کہ اصل آیت یوں تھی۔ ال اِبْوَاهِیْمَ وَ الَ مُحَمَّدِ عَلٰی الْفَلُمِیْنَ الوگوں نے محمد علی علی الفلکمیْنَ الوگوں نے محمد علی علی الفلکمیْنَ الوگوں نے محمد علی علی الفلکمیْنَ الوگوں نے محمد علی علی میں ایک آیت ایوں تھی۔ اللّ اِبْوَاهِیْمَ وَ اللّ مُحَمَّدِ عَلٰی الْفَلُمِیْنَ الوگوں نے محمد عمران بنا دیا۔ انتی۔

(۳۳) في تفسير العياشي عن ابي جعفر قال لولا انه زيد في كتاب الله و نقص ما خفي حقنا على ذي حجى ولو قد قام قائمنا صدقه القران و فيه عن ابي عبدالله عليه السلام لو قرى القران كما انزل الفينا فيه مسمين (تنيرمان س ۱۱)

ترجمہ: تغیر عیاشی میں ہے کہ امام محمہ باقر نے فرمایا اگر قرآن میں زیادتی اور کی نہ کی ہوتی۔ تو امارا حق کسی عظند پر پوشیدہ نہ رہتا۔ اور اگر امام قائم علیہ السلام ظاہر ہو کربولیں تو قرآن آپ کی تقدیق کرے اور تغیر تدکور میں ہے کہ امام جعفر صادق نے فرمایا اگر قرآن پڑھا جائے جیسا کہ مازل ہوا تو یقینا تو ہم کو اس میں نام بنام یائے گا۔

(٣٣) علامه محن كاثى لكمة من المستفاد من مجموع هذه الاخبار و غيرها من الروايات من طريق اهل البيت عليهم السلام ان القران الذى بين اظهرناليس بتمامه كمّا انزل على محمد صلى الله عليه والهبل منه ما هو خلاف ما انزل الله و منه ما هو مغير محرف و انه قد حذف عنه اشياء كثيرة منها اسم على عليه السلام في كثير من المواضع و منها لفظة ال محمد غير مدة و منها اسماء المنافقين في

مواضعها و منها غير ذلك و انه ليس ايضا على الترتيب المرضى عند الله و عند رسوله و به قال على بن ابراهيم (تنيرماني نبرسا)

ترجمہ: ان تمام حدیثوں سے اور ان کے علاوہ اور جس قدر روایتیں اہل بیت علیم الملام سے مروی ہیں۔ ان سے بی پایا جاتا ہے کہ جو قرآن ہمارے درمیان ہیں ہے وہ پورا جیسا کہ حضرت می مروی ہیں۔ ان سے بی پایا جاتا ہے کہ جو قرآن ہمارے درمیان ہیں ہے وہ پورا جیسا کہ حضرت می میں ہے کچھ ظاف ما انزل اللہ ہے اور کچھ تغیرہ تریف میں ہے بی ہی خالف ما انزل اللہ ہے اور کچھ تغیرہ تریف کیا ہوا ہے اور اس ہیں سے بہت می چیزیں نکال ڈائی گئیں۔ مثلاً علی علیہ السلام کا نام بہت مقالت کیا ہوا ہے اور اس میں سے بہت می چیزیں نکال ڈائی جگہوں سے اور ان کے علاوہ اور چیزیں نکال دی جگہوں سے اور ان کے علاوہ اور چیزیں نکال دی جگہوں سے اور ان کے علاوہ اور چیزی نکال دی گئیں اور نیز اس قرآن کی تر تیب خدا اور رسول کے نزد یک پندیدہ نہیں ہے ای کے قائل میں علی بن ابراہیم ۔ انتی۔

(۳۵) تغیر مائی ص ۱۱ ش ب اما اعتقاد مشائخنا رحمهم الله فی ذلک فالظاهر من (۳۵) تغیر مائی ص ۱۱ ش ب اما اعتقاد مشائخنا رحمهم الله فی ذلک فالظاهر من ثقة الاسلام محمد بن یعقوب الکلینی طاب ثراه انه کان یعتقد الحریف و النقصان فی القران لانه روی روایات فی هذا المعنی فی کتابه الکافی و لم یتعرض لقد ح فیها مع انه ذکر فی اول الکتاب انه یثق بمارواه فیه و گذلک استاده علی ابن ابراهیم القمی فان تفسیره مملو منه وله غلوفیه و گذلک الشیخ احمد بن ابی طالب الطبر سی قدس سره ایضًا نسج علی منوالهما فی کتاب الاحتجاج

ترجمہ: رہا ہمارے مشائغ رحمہ اللہ کا اعتقاد اس بارے میں سو نقته الاسلام محملہ بن یعقوب کلینی طاب ڈاہ کی لبت طاہریہ ہے کہ وہ قرآن میں تحریف و نقصان کے متقلہ نظے کیونکہ انہوں نے اپی کاب کائی میں اس مضمون کی روائیس نقل کی ہیں اور ان پر کوئی اعتراض وارد نہیں کیا۔ اور معدا اپنی کاب کے شروع میں لکھتے ہیں کہ جو حدیثیں ہم اس کتاب میں نقل کریں گے۔ ہمیں ان پر وثوق ہے ای طرح ان کے استاد علی بن ابراہیم کی بھی تحریف کے متقلہ کریں گے۔ ہمیں ان پر وثوق ہے ای طرح ان کے استاد علی بن ابراہیم کی بھی تحریف کے متقلہ سے۔ کیونکہ ان کی تغیرالی روائیوں سے پر ہے اور ان کو اس عقید سے میں غلو ہے ای طرح ان اور ان کو اس عقید سے میں غلو ہے ای طرح ان وائی احتیاج میں ان طرح ان کے احد بن ابی طالب طبری قدس سرو بھی تحریف کے متقلہ سے کے متعقد سے کیونکہ وہ بھی کتاب الاحتیاج میں ان ووٹوں کے طرف پر سے ہیں۔ انہی

(٣٦) فصل الخطاب فى اثبات تحريف كماب رب الارباب العلامه حسين بن محد نقى النورى اللبرك (١٣٦) فصل الخطاب فى البوري اللبرك

قال السيد المحدث الجزائري في الانوار ما معناه ان الاصحاب قد اطبقوا على

اصحة الاخيار المستفيضة بل المتواترة الدالة بصريحها على وقوع التحريف في القران

ترجمہ: سید محدث جزائری نے کتاب انوار میں فرمایا ہے جس کے معنی یہ ہیں کہ اصحاب امامیہ نے اس بات پر اتفاق کیا ہے کہ وہ روائیتیں سیح بلکہ مستفیض بلکہ متواتر ہیں جو صراحتہ تحریف قرآن پر ولالت کر رہی ہے۔ اندی۔ اس کتاب کے ص ۲۲۷ میں ہے

وهى كثيرة جد احتى قال السيد نعمة الله الجزائرى في بعض مولفاته كما حكى عنه ان الاخبار الدالة على ذلك تزيد على الفي حديث وادعى استفاضتها جماعة كالمفيد والعمحقق الداما دو العلامة المجلسي و غيرهم بل الشيخ ايضا صرح في التبيان بكثر تها بل ادعى تو اترها جماعة ياتي ذكرهم -

بريفاصله چند سطور لكست بي-

واعلم ان تلك الاخبار منقولة من الكتب المعتبرة التي عليها معول اصحابنا في اثبات الاحكام الشرعية والاثار النبوية

ترجمہ: روایات تحریف قرآن یقینا بہت ہیں حتی کہ سید نعت اللہ جزائری نے اپنی بعض تفنیفات میں لکھا ہے جیہا کہ ان سے نقل کیا گیا ہے کہ جو روائیس تحریف قرآن پر دلالت کرتی ہیں وہ وہ بڑار حدیث سے ذیاوہ ہیں۔ اور ایک جماعت نے ان روایتوں کے متنفیض ہونے کا دعویٰ کیا ہے جی بڑار حدیث سے ذیاوہ ہیں۔ اور ایک جماعت نے ان روایتوں کے متنفیض ہونے کا دعویٰ کیا ہے۔ اس بہت ہونے کی تقریح کی متواتر ہونے کا دعویٰ کیا ہے۔ اس بہت ہونے کی تقریح کی ہے۔ بلکہ ایک جماعت نے ان کے متواتر ہونے کا دعویٰ کیا ہے۔ اس جماعت کا ذکر آگے آئے گا۔ جاننا چاہیے کہ یہ روایتیں کتب معتبرہ سے منقول ہیں جن پر ہمارے معامل کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل المحاب کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل المحاب کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل المحاب کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل المحاب کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل المحاب کا اعتاد ہے احکام شرعیہ اور آئار نبویہ کے قابت کرنے میں بنتی ۔ پھر صاحب نصل کی کا نام بھی ہے۔ اور ان کی عبارت کا نیام بھی ہے۔ اور ان کی عبارت کا ایک جملہ قابل دید ہے

وهي هذه عندي أن الاخبار في هذا الباب متواترة معنى و طرح جميعها يوجب رفع الاعتماد عن الاخبار راسابل ظني أن الاخبار في هذا الباب لا يقصر عن اخبار

الامامة فكيف يشبتونها بالنحبو-ترجمه: ميرے نزديك تحريف قرآن كى روائتيں متواتر ہيں اور ان سب روايتوں كو ترك كرديخ ے ہمارے تمام فن حدیث کا اعتبار جاتا رہے گا۔ بلکہ میرا علم یہ ہے کہ تحریف قرآن کی روایتی مسئلہ امامت کی روایتوں سے کم نہیں ہیں۔ للذا اگر تحریف قرآن کی روایتوں کا انکار کیا جائے تو مسئلہ امامت بھی روایات سے ثابت نہ ہو سکے گا۔ (مالائکہ اس کا مدار روایات ہی ہے)

ظامہ کلام یہ کہ تمام متقدین شیعہ قرآن میں تحریف باتسامہ کے قائل تھے وہ روایات جن سے تحریف قرآن ثابت ہوتی ہے۔ ان معتبر کتابول میں ہیں جن پر فدہب شیعہ کا مدار ہے۔ وہ روایات حسب اقرار علائے شیعہ معتبرہ و کثیرہ دو ہزار سے زائد مستقیض بلکہ متواتر ہیں۔ اور وہ صراحہ تحریف قرآن پر ولالت کرتی ہیں۔

دور شھائی ہے۔ قدمائے شیعہ نے خلافت بلا فصل کی دھن میں قرآن کریم کو محرف قرار دیا اور اس عقیدے کی تائید میں دو ہزار ہے زائد روایتی وضع کرکے خاندان نبوت کی طرف منسوب کر دیں پہلی تمین صدیوں میں تمام شیعہ بلا احتیٰاء اس عقیدہ تحریف کے پابند ہے۔ گرجب چو تھی صدی آدھ ہے کچھ زیادہ گزرگی تو اس عقیدے نے پلٹا کھایا۔ اور بعض مجتدین عدم تحریف کے قائل ہوگئے۔ ان میں سب نیادہ گزرگی تو اس عقیدے نے پلٹا کھایا۔ اور بعض مجتدین عدم تحریف کے قائل ہوگئے۔ ان میں سب سے اول شیخ صدوق مؤلف من لا یحصرہ الفقید ہیں۔ چنانچہ ان کے رسالہ فی الاعتقادات مطبوعہ ایران ۱۲۲۳ھ میں یہ عبارت درج ہے باب الاعتقاد فی مبلغ القرآن:

قال الشيخ اعتقادنا ان القران الذي انزله الله تعالى على نبيه محمد هوما بين الدفتين وهو ما في ايدي الناس ليس باكثر من ذلك و مبلغ سوره عند الناس مائة واربعة عشر سورة و عند نا ان الضحى والم نشرح سورة واحدة ولا يلف و الم تركيف سورة واحدة و من نسب الينا انا نقول انه اكثر من ذلك فهو كاذب و ماروى من ثواب قراءة كل سورة من القران و ثواب من ختم القران كله و جواز قراءة سورتين في ركعة فريضة تصديق قراءة سورتين في ركعة و النبي عن القران بين سورتين في ركعة فريضة تصديق لما قلناه في امر القران و ان مبلغه ما في ايدى الناس و كذلك ماروى من النبي عن قراءة القران كله في ليلة واحدة و انه لا يجوز انيختم القران في اقل من ثلثة ايام تصديق لما قلنا ايضًا

ترجمہ: قرآن کی مقدار میں احتقاد کا باب شیخ رہ نے کما کہ ہمارا احتقادیہ ہے کہ قرآن جو اللہ تعالیٰ نے اپنے اپنی محمر پر نازل کیا وہ مابین الدفتین ہے اور وہ وہی ہے جو لوگوں کے ہاتھوں میں ہے اور اس کے اور عد ایک سوچو وہ ہے مگر ہمارے اس کی سورتوں کی تعداد لوگوں کے نزدیک ایک سوچو وہ ہے مگر ہمارے نزدیک منی اور الم نشرح ایک سورت ہے۔ اور لا ملف اور الم ترکیف ایک سورت ہے جو مختص نزدیک منی اور الم ترکیف ایک سورت ہے جو مختص

ہاری طرف اس قول کو منسوب کرتا ہے کہ قرآن اس سے ذیادہ ہے وہ جموعا ہے۔ اور یہ روایت ہے کہ قرآن کی جرسورت پڑھنے کا انتا ثواب ہے اور جو سارے قرآن کو ختم کرے اس کو انتا ثواب ہے اور جو سارے قرآن کو ختم کرے اس کو انتا ثواب ہا ہا ہے اور فرض کی رکعت میں دو سور توں کا پڑھنا جائز ہے اور فرض کی رکعت میں دو سور توں کا قرآن منع ہے اس تمام سے قرآن کے بارے میں ہمارے عقیدے کی تصدیق ہوتی ہے۔ اور اس بات کی تصدیق ہوتی ہے کہ قرآن انتا ہی ہے جو لوگوں کے باتھوں میں ہے۔ اس طرح مدیث میں جو آیا ہے کہ ایک رات میں سارا قرآن نہ پڑھنا چاہیے اور تین دن سے کم میں قرآن کا ختم کرنا جائز نہیں اس سے بھی ہمارے قول کی تصدیق ہوتی ہے۔ استی

دوسرے علم الدی مرتفلی (متونی ١٩١٦هـ) بن چنانچه شخ ابوعلی طبری این تغییر می المعت بین-ومن ذلك الكلام في زيادة القران و نقصانه فانه لا يليق بالتفسير واما الزيادة فيه تجمع على بطلانه واما النقصان منه فقد روى جماعة من اصحابنا و قوم من حشوية العامة ان في القران تغييرا و نقصانا والصحيح من مذهب اصحابنا خلافه وهو الذي نصره المرتضى تكس الله روحه واستوفى الكلام فيه غاية الاستيفاء في جواب المسائل الطرابلسيات و ذكر في مواضع ان العلم بصحة نقل القران كالعلم بالبلدان والحوادث الكبار والوقاتع العظام والكتب المشهورة واشعار العرب المسطورة فان العناية اشتدت والدواعي توفرت على نقله و حراسته و بلغت الى حدلم يبلغه فيما ذكر ناه لان القران معجزة النبوة و ماخذالعلوم الشرعية والاحكام الدينية والعلماء المسلمين قد بلغوا في حفظه و حماية الغاية حتى عرفوا كل شئى اختلف فيه من اعرابه و قرائته و حروفه و اياته فكيف يجوزا ان يكُون مغيرا او منقوصا مع العناية الصادقة والضبط الشديد وقال ايضا قدس الله روحه ان العلم بتفصيل القران و ابعاضه في صحة نقله كالعلم بجملته و جرى ذلك مجرى ما علم ضرورة من الكتب المصنفة كتاب سيبويه و المزني فان اهل العناية بهذا الشان يعلمون من تفصيلها ما يعلمونه من جملتها حتى لو ان مدخلا النحل في كتاب سيبويه بايا في النحوليس من الكتاب لعرف و ميزو علم انه ملحق وليس من اصل الكتاب و كذلك القول في كتاب المزنى و معلوم ان العناية بنقل القران و ضبطه اضبط من العناية بضبط كتاب سيبويه و دواوين الشعراء و ذكر ايضا رضى الله عنه ان القران كان على عهد رسول الله مجموعا مولفا على ما هو عليه الان و استدل على ذلك بان القران كان يدرس و يحفظ جميعه في ذلك الزمان حتى عين على جماعة من الصحابة مى حفظهما وانه كان يعرض على النبى ويتلى عليه وان جماعة من الصحابة مثل عبدالله بن مسعود وابى بن كعب وغيره اختموا القران على النبى عدة ختمات و كل ذلك يدل باد في تامل على انه كان مجموعا مربنا غير مبتور ولا مبثوث و ذكر ان من خالف في ذلك من الامامية والحشوية لا يعتد بخلافهم فان الخلاف في ذلك مضاف الى قوم من اصحاب الحديث نقلوا اخبارا ضعيفة ظنوا صحتها لا يرجع بمثلها من العلوم المقطوع على صحته (بح الهين مطوع ابران ١٨٠ه مد ادل ص

ترجمہ: از انجملہ قرآن میں کی بیشی کی بحث ہے۔ کیونکہ یہ تغییر کے لاکق نہیں۔ قرآن میں زیادتی کے بطلان پر تو اجماع ہے۔ رہا قرآن میں کی - سو ہمارے اصحاب کی ایک جماعت اور حثوبہ عامہ کے ایک گروہ نے روایت کی ہے۔ کہ قرآن میں تغیرہ تبدل اور نقصان ہے۔ مگر ہمارے امحاب کا صیح نہ ہب اس کے خلاف ہے او مرتفنی قدس اللہ روحہ نے ای بذہب کی تائید کی ہے اور مسائل طرابلسیات کے جواب میں اس بارے میں غایت درجہ کی مفصل بحث کی ہے۔ اور کئی جگہ ذكر كيا ہے كه نقل قرآن كے صبح مونے كاعلم اليا ہے جيساكه شهروں اور برے برے حواد ثات و و قائع اور مشہور کتابوں اور عرب کے اشعار ٹوشنہ کا علم ہے کیونکہ اس کی طرف توجہ بہت رہی ہے۔ اور اس کی نقل و حفاظت کے اسباب زیادہ ہیں اور اس صد تک پہوٹیے ہوئے ہیں کہ کوئی اور چیزاے نہیں پہو چیتی- اس لیے کہ قرآن نبوت کا مجزہ اور علوم شرعیہ و احکام ویبنیہ کا مافذ ہے۔ اور علمائے اسلام اس کی حفاظت و حمایت کو پہنچ گئے ہیں حتی کہ اعراب و قراء ت و حروف و آیات میں جو اختلافات میں ان سب کو وہ جائتے ہیں اس ایسے شدید ضبط اور عنایت صادفہ کے باوجود كيونكم موسكتا ب كه قرآن ميس تغيريا نقصان أكيا مو مرتضى قدس الله روحه في بي مجى كما ہے کہ قرآن کی تفصیل اور اس کے اجزاء کا علم اس کی نقل کے صبح ہونے میں ایسا ہے جیسا جملہ قرآن کاعلم ہے اور بیہ بمنزلہ ان کتب مصنفہ کے ہے جن کاعلم ضروری ہے مثلاً کماب سیویہ اور کتاب مزنی۔ کیونکہ جو لوگ اس فن کے واقف ہیں ان کو ان دونوں کتابوں سمیاجزاء کا ایبانی علم ہے جیسا کہ ان کے کل کا حتی کہ اگر کوئی مخص سیوریہ کی کتاب میں نجو کا ایک باب واخل كردے جواس كماب ميں سے نہ ہو تو وہ يجإنا جائے كا اور تميز كيا جائے كا اور معلوم ہو جائے كاك وہ الحاق ہے اور اصل كتاب ميں سے نہيں ہے۔ يہ طال كتاب مزنى كا ہے۔ اور معلوم ہے ك

قرآن کی نقل و ضبط کی طرف جیسی توجہ ہوئی ہے۔ وہ کتاب سیویہ اور شاعروں کے دیوانوں کی طرف جیس ہوئی۔ اور مرتفعٰی بناٹھ نے یہ بھی ذکر کیا ہے کہ رسول اللہ مٹی پیلے کہ اس زمانے میں استدائل کیا ہے کہ اس زمانے میں استدائل کیا ہے کہ اس زمانے میں قرآن کا درس ویا جاتا تھا۔ جیسا کہ اب ہے اور اس پر پوں استدائل کیا ہے کہ اس زمانے میں قرآن کا درس ویا جاتا تھا۔ اور تمام حفظ کیا جاتا تھا۔ اور آپ پر تلاوت کیا جاتا تھا اور صحابہ کی ایک محامت اس کے حفظ کیا جاتا تھا۔ اور آپ پر تلاوت کیا جاتا تھا اور صحابہ کی ایک مرتب بھی عبدائلہ بن مسعود اور ائی بن کعب وغیرہ نے نبی کے حضور جس کی ختم قرآن کئے۔ یہ سب امور ذرا سے تائل پر ولالت کرتے ہیں کہ قرآن مجموع مرتب تھا نہ کہ ناقص و پراگندہ۔ اور مرتب تھا نہ کہ ناقص و پراگندہ۔ اور مرتب تھا نہ کہ ناقص و پراگندہ۔ اور مرتب تھا نہ کہ ناقف قابل اعتبار مرتب کی ختم فرائل کے ایک ضعیف مرتب کی کہ المامیہ اور حثوبہ میں جو اس قول کے مخالف ہیں ان کا خلاف قابل اعتبار نہیں کیونکہ اس میں اختلاف محد ثمین کے ایک گروہ سے منسوب ہے۔ جنہوں نے ایکی ضعیف دواییتیں صحیح سمجھ کر گفل کی ہیں جن کے سبب اس امرسے رجوع نہیں کیا جاسکتا جس کی صحت معلوم و مقطور ع ہے۔ انہی۔

تيسرے مين الطائف ابوجعفر طوس ميں- جنائح تف صافى ص ١٥ مي ہے-

وقال شيخ الطائفة محمد بن الحسن الطبوسي وحمة الله عليه في تبيانه و اما الكلام في زيادته و نقصانه فيمما لا يليق به لان الزيادة فيه مجمع على بطلانه والنقصان منه فالظاهر من مذهب المسلمين خلافه وهو الاليق بالصحيح من مذهبنا وهو الذي نصره المرتضى وهو الظاهر في الروايات غيرانه رويت روايات كثيرة من جهة الخاصة والعامة بنقصان كثير من اى القران و نقل شتى منه من موضع الى موضع طريقها الاهاد التي لا ترتيب عليها قالا ولى الاعراض عنها و ترك النشاغل بها لانه يمكن تاويلها ولو صحلما كان ذلك طعنا على ماهو موجود بين المدفتين فان ذلك معلوم صحته لا يعترضه احدمن الامة ولا يدفعه و رواياتنا متنا صرة بالحث على قرائته والتمسك بما فيه وره ما يرد من اختلاف الاخبار في الفروع و عرضها عليه فما وافقه عمل عليه وما خالفه يجنب ولم يلتفت اليه و قد ورد عن العبي رواية لا يدفعها احدانه قال اني مخلف فيكم النقلين ما اتمسكهم لهما لن نصلوا كتاب الله و عترتي اهل بيتي و انهما لن المقلين ما اتمسكهم لهما لن نصلوا كتاب الله و عترتي اهل بيتي و انهما لن يجوزا ان يا مرناا بالتمسك بمالا نقدر على التمسك به كما ان اهل البيت و من

یجب اتباع قوله حاصل فی کل وقت واذا کان الموجود بیننا مجمعاعلی صعته فینبغی ان پتشاغل بتفسیره و بیان معانیه و ترک ما سواه

ترجمہ: اور چیخ الطاکفہ محدین حسن طوی رائٹھ نے تبیان میں کہا ہے کہ قرآن میں کی بیشی کی بحث اس کے شایان نہیں کیونکہ اس میں زیادتی کے بطلان پر تو اجماع ہے۔ رہا اس میں کی س مسلمانوں کا ظاہر زہب اس کے خلاف ہے اور میں ہارے میج غربب کے زیادہ لائق ہے ادرای ک مرتقنی نے تائد کی ہے اور میں روایات میں ظاہرے مر خاصہ و عامہ کی جت ہے بہت روایتی قرآن کی کثیر آینوں کے نقصان اور اس کی ایک شیئے کے ایک جگہ سے دوسری جگہ ر خمل ہونے کے بارے میں مروی ہیں۔ جن کا طریق آصاد ہے جو موجب علم نیس الندا ان سے اعتراض كرنا اور ان ميں مشغول نه ہونا افضل ہے۔ كيونكه ان كى تاويل ممكن ہے۔ اور اگر وہ ميح مول توب امر قرآن میں جو بین الدفتین موجود ہے طعن نہیں کیونکہ اس کی صحت معلوم ہے امت میں کوئی اس پر اعتراض نہیں کرتا۔ اور نہ اس کا انکار کرتا ہے اور ہماری روائتیں ایک دوسرے كى مويدين-بديس مضمون كه قرآن بين الدفتين كويرهنا چاسيے- اور جو اس ميں ہے اس كااتباع كرنا چاہيے۔ اور فروع ميں روايتوں كے اختلاف كو اس كى طرف روكرنا اور ان كو اس ير پيش كرنا چاہیے پس جو قرآن کے موافق ہو اس پر عمل کرنا چاہیے اور جو اس کے خلاف ہو اس سے پر ہیز کیا جائے اور اس کی طرف التفات نہ کی جائے اور نبی ماٹی کیا سے یہ روایت واردہ جس سے کوئی انکار نمیں کریا۔ کہ آپ نے فرمایا کہ میں تم میں دو نفیس چیزیں چھوڑ چلا ہوں۔ اگر تم ان ے تمسک کرو کے تو ہر کر ممراہ نہ ہو گے۔ لینی کتاب اللہ اور میری عترت جو میرے اہل بیت جیں- اور سے کہ وہ دونوں ایک دوسرے سے جدا نہ ہوں سے یمال تک کہ حوض کوڑ پر میرے پاس آجائیں سے۔ یہ روایت ولالت کرتی ہے کہ قرآن ہر زمانے میں موجود رہا ہے کیونکہ جائز نہیں کہ آنخضرت ہم کو ایسی شئے ہے تمسک کرنے کا تھم دیں جس سے تمسک پر ہم قادر نہ ہول جیسا کہ اہلیت اور وہ جس کے قول کا اتباع کرنا واجب ہے ہروقت موجود ہے۔ اور جب قرآن موجود کی صحت پر اجماع ہے تو چاہیے کہ ای کی تغییرای کے معانی بیا تکرنے اور اس کے ماسوائ ترك كرفي ميس مشغول ريين- ائتى-

چوتھے ابوعلی طبری (متونی ۸۳۸ھ) ہیں جن کا قول اوپر نقل ہو چکا ہے۔ مختصریہ کہ چوتھی مدی ہجری سے چھی صدی تک ان چار مجتلدوں کے سواکوئی اور جہتد معلوم نہیں۔ جس نے مسئلہ تحریف قرآن میں قدمائے شیعہ کی مخالفت کی ہو قدمائے شیعہ تحریف ہاتسامہ سے چک اور یہ چاروں بر مم کی تحریف کے سکر نے چانچہ فعل الخطاب می ۳۳ میں ہے۔ الثانی عدم وقوع التیغیر والنقصان فیہ و ان جمیع ما ترک علی رسول الله صلی الله علیه واله هو المموجود بایدی الناس فیما بین الدفتین و الیه ذهب الصدوق فی عقائدہ والسبد المرتضی و شیخ الطائفة فی التبیان ولم یعرف من القد ماء موافق لهم پر آگے چل کر تمن عوالی طبقته لم یعرف المخلاف صریحاالا من هذه المشائخ الاربعة

رور مالث سے ویلے جاتے ہیں وہ محاج بیان نہیں۔ محاح اربعہ میں سے جن پر فدہب شیعہ میں جس وقعت کی نظر سے ویلے جاتے ہیں وہ محاج بیان نہیں۔ محاح اربعہ میں سے جن پر فدہب شیعہ کا مدار ہے۔ ایک کے مولف معدوق اردو کے مولف میں شیخ الطائفہ ہیں۔ اور علم المدی شیخ الطائفہ کے استاد ہیں جب انہوں نے قرآن کی تحریف سے انکار کر ویا تو فدہب شیعہ کی عمارت متزلزل ہو گئے۔ لندا جہتدین شیعہ مسئلہ تحریف پر بحربور غور کرنے لگے اور عجب عالم جرت میں شیعہ ایک طرف ان منکرین تحریف کا احترام اور وسمری طرف بصورت نشلیم این فدہب کی جابی بوجوہ ذیل۔

- (۱) روایات تحریف کے انکار کر دینے سے مسئلہ امامت کی روایات بھی غیر معتبر ہو گئیں۔ کیو ملکہ وہ روایات تحریف سے زیادہ نہیں۔
- (۲) علم المدى نے عدم تحریف کی بڑی ولیل بیہ پیش کی ہے کہ قرن محابہ میں قرآن کریم کی حفاظت و منبط میں بے نظیر توجہ مبذول ہوئی۔ للندا بیہ محرف نہ ہو سکتا تھا۔ اس سے محابہ کرام بڑاتھ کے فضائل کا اعتراف پایا گیا۔ جس سے خلافت بلا فصل کا افسانہ باطل ہو گیا۔
- (۳) جب قرآن ہر قتم کی تحریف سے پاک سمجھاگیا تو حضرت امیر علیہ السلام کا قرآن کا جمع کرنا اور اسے چیش کرنا اور قرآن موجود کو دیکھ کرناراض ہونا یہ سب لغو ٹھہرا۔
 - (م) شیعہ کا قول کہ قرآن اصلی امام غائب علیہ السلام کے پاس ہے قلط ہوگیا ہے۔
- ۵) حضرت عمان غنی برات مصاحف کا طعن بے سود ہو گیا۔ جبکہ بغرض سلیم اس سے قرآن موجود میں کچھ فرق نہ آیا۔

اس عالم جیرت میں مجتدین شیعہ کرتے تو کیا اور کہتے تو کس ہے۔ من از بیگانگاں ہرگز نے نالم کہ ہامن ہرچہ کروآں آشنا کرو

، آخر طوعا و كرما انهول في منكرين تحريف كے ليے تاويل يا ترديدى راه اختيارى چانج

علامہ محسن کاشی نے علم المدى کے ولائل کو نقل کرے يوں لکھا ہے۔

اقول لقائل ان يقول كما ان الدواعى كانت متوفره على نقل القران و حراسته من المومنين كذلك كانت متوفره على تغييره من المنافقين المبدئين للوصية المغيرين للخلافة لتضمنه ما يضاد رائيهم وهو اهم والتغيير فيه ان وقع فانه ما وقع الا قبل انتشاره في البلدان واستقراره على ما هو عليه الان والضبط الشديد انماكان بعد ذلك فلا تنافى بينهما بل لقائل ان يقول انه ما يتغير في نفسه و انما التغيير في كتابهم اياه و تلفظهم به فانهم ما حرقوا الا عند نسخهم من الاصل و بقى على ما هو عليه عند العلماء به فيس بمحرف بقى على ما هو عليه عند اهله وهم العلماء به فما هو عند العلماء به ليس بمحرف و انما المحرف ما اظهروه لا تباعهم و اماكونه مجموعا في عهد النبي على ماهو عليه الان فلم يثبت و كيف كان مجموعا و انماكان ينزل نجو ما و كان لا يتم الا بتمام عمره و اما درسه و ختمه فانماكانوا يدرسون و يختمون ماكان عندهم منه لا تمامه الترماني من ٣٠)

ترجمہ: بیں کہا ہوں کہ کینے والا کہ سکتا ہے کہ جیسے مومنین کی طرف سے قرآن کی نقل و حفاظت کے اسباب زیادہ تھے۔ ویسے ان منافقین کی طرف سے اس کے تبدیل کرنے کے اسباب کمی زیادہ تھے۔ جنہوں نے رسول اللہ کی وصیت کو تبدیل کر دیا اور خلافت کو بدل ڈالا۔ کیونکہ قرآن بیں ان کی رائے اور خواہش کے مخالف باتیں تھیں اور تغیراس میں اگر ہوا تو شہوں بیک شائع ہونے اور صالت موجودہ پر قرار پذیر ہونے سے پہلے ہوا۔ اور صبط شدید اس کے بعد ہوا۔ لئذا قرآن کے صبط اور اس کے متغیر ہونے میں کچھ منافات نہیں۔ بلکہ کمنے والا یہ کمہ سکتا ہے کہ قرآن فی نف متغیر نہیں تغیر تو صرف ان کے اس کو لکھنے اور تلفظ کرتے میں ہوا کیونکہ انہوں نے تو ترآن فی نف متغیر نہیں تغیر تو صرف ان کے اس کو لکھنے اور تلفظ کرتے میں ہوا کیونکہ انہوں اس کے جانے والوں کے پاس سے محرف نہیں اس کے جانے والوں کے پاس ہے محرف نہیں اس کے جانے والوں کے پاس ہے محرف نہیں اور محرف تو وہ ہے جو منافقوں نے اپنے تابعین کو دکھایا۔ دہا قرآن کا عمد نبی میں مجموع ہونا جیسا اور محرف تو وہ ہے جو منافقوں نے اپنے تابعین کو دکھایا۔ دہا قرآن کا عمد نبی میں مجموع ہونا جیسا اور محرف تو وہ ہے جو منافقوں نے اپنے تابعین کو دکھایا۔ دہا قرآن کا عمد نبی میں مجموع ہونا جیسا

کہ اب ہے سویہ ہابت نہیں اور مجموع ہوتا کیے۔ طال کلہ یہ تو کلوے کلوے اڑا کرتا تھا
آخضرت کی عمر شریف کے پورا ہونے کے سوا تمام نہ ہو سکتا تھا۔ ہاتی رہا اس کا ورس ویٹا اور
اے فتم کرنا سووہ ای قدر کی تدریس کرتے اور فتم کرتے جو ان کے پاس تھانہ کہ تمام کی۔
ای طرح شیخ الطائفہ طوی کی عبارت تبیان سے نقل کرنے کے بعد صاحب تغیر صنی
نے یوں لکھا ہے۔

اقول یکفی فی وجوده فی کل عصر و جوده جمیعا کما انزل الله محفوظا عند اهله ووجودها احتجنا الیه من عندنا و ان لم نقدر علی الباقی کما ان الامام کذلک فان الثقلین سیان فی ذلک و لعل هذا هو المراد من کلام الشیخ و اما قوله و من یجب اتباع قوله فالمراد به البصیر بکلامهم فانه فی زمان غیبته قائم مقامه لقوله علیه السلام انظروا الی من کان منکم قد روی حدیثنا و نظر فی حلالنا و حرامنا و عرف احکا منا فاجعلوه بینکم حاکما فانی قد جعلته علیکم حاکما الحدیث (تزیر مان می ۱۵)

ترجمہ: میں کتا ہوں کہ قرآن کے ہر زائے میں موجود ہونے کے لیے یہ کافی ہے کہ جمع قرآن جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے نازل کیا موجود اور اس کے اہل کے پاس محفوظ ہو۔ اور بقدر حاجت ہمارے پاس ہو۔ اگرچہ ہم باقی پر قاور نہ ہول جیسا کہ امام کا حال ہے کیونکہ ہر دو ٹقل اس امریس برابر ہیں شاید شخ کے کلام ہے ہی مراد ہے۔ رہا شخ کا قول اور وہ جس کے قول کا انتاع واجب ہو اس سے مراد وہ جمہتد ہے جو ائمہ کے کلام ہے واقف ہو۔ کیونکہ امام کی غیبت کے زمانے میں وہ اس کا قائم مقام ہے اس کے قال ہو۔ کیونکہ امام کی غیبت کے زمانے میں وہ اس کا قائم مقام ہے اس لیے کہ ان حضرات علیہ السلام کا قول ہے کہ تم میں جو ہماری صدیف روایت کرے اور ہمارے ادکام بتائے اس کو اپنے درمیان حاکم بتائے اس کو اپنے درمیان حاکم بتائے اس کو اپنے درمیان حاکم بناؤ۔ الحدیث۔

ترجمہ: ہم نے الزام کیا ہے کہ اس کتاب میں ہم وہی ذکر کریں جو ہم نے آئمہ معمومین طاہرین علیم السلام سے لیے انتخام کیا ہے جو ہمارے نزدیک ناقلین کی کتابوں سے میچ ہے کیونکہ قواریخ کی اکثر کتابوں کو جمہور نے یہودیوں کی تاریخوں سے نقل کیا ہے اس واسطے جو قواریخ میں ہے وہ اکثر کتابوں کو جمہور نے یہودیوں کی تاریخوں سے نقل کیا ہے اس واسطے جو قواریخ میں ہے وہ اکثر کانتیب کاذکر کرتے ہوئے یوں تحریر کیا ہے۔

وقد بقى من وظائف القراة امران الأول ما قاله فقهائنا من وجوب القراءة بواحدة من القراءة واحدة من القرائة السبع المتواترة وفي تواتر تمام العشرة باضافة ابي جعفر و يعقوب و

خلف خلاف ذهب الشهيدان قدس الله روحيهما الى ثبوت تواترة والى جواز القراءة به قال الشهيد الثاني في شرح المرسالة واعا اتباع قراءة الواحد مر العشرة في جميع الصور فغيروا جب قطعابل ولا مستحب فان الكل من عند الله نزل به الروح الامين على قلب سيد المرسلين تخفيفا على الامة وتهوينا على اهار هذه الملة انتهى - وهو مصرح بان قرات السبع بل العشر متواتر النقل من الوحي الالهي وكذلك كلام اكثر الاصحاب وقد تكلمنا معهم في شرحنا على تهذيب الحديث و لنذكر هنا نبذة منه فنقول ان في هذه الدعاوي السابقة نظرا من وجوه الاول القدح في تواترها عن القراء و ذلك ان القراء نقلوا انه قد كان لكل قارراويان يرويان عنه القراءة وربما اختلفوا في الرواية عنه كثيرا نعم قداشتهرت رواية الراويين في الاحصار المستقبلة و بلغت حد التواتر مع ان من شروطه استواء الطبقات كلها في وجود التواتر الثاني سلمنا تواترها عن اربابها لكنه لا يجدى نفعا و ذلك انهم احادمن مخالفينا قد استبدوا بهذه القراءة وتصرفوا فيها و جعلوها فنالهم كما جعل سيبويه والخليل النحو فنا لهم و تصرفوا فيه على مقتضى عقولهم و فرقوا في مسائل المذاهب و من هذا ترى القراء لم يستندوا قرائتهم الى اهل البيت عليهم السلام و ربما اسند وها في بعض الاوقات اليهم لكن يكون من باب ان جاءكم فاسق بنبا الاية الثالث ان تسليم تو اترها عن الوحى الالهي وكون الكل قد نزل به الروح الامين يفضي الى طرح الاخبار المستفيضة بل المتواترة الدالة بصريحا على وقوع التحريف في القران كلاما ومادة و اعرابا مع ان اصحابنا قد اطبقوا على صحتها والتصديق بها نعم قد خالف فيها المرتضى والصدوق والشيخ الطبرسي وحكموا بان مابين و فتى هذا المصحف هوا القران المنزل لا غير ولم يقع فيه تحريف ولا تبديل و من هنا ضبط شيخنا الطبرسي ايات القران واجزاءه فروى عن النبي ان جميع سور القران مائة و اربعة عشر سورة و جميع ايات القران ستة الاف اية وماثنا اية وسننة و ثلثون اية و جميع حروف القران ثلث مائة الف حرف واحدے و عشرون الف حرف و مائتان و خمسون حرفا والظاهر ان هذا القول انما صدر منهم لا جل مصالح كثيرة منها سد باب الطعن عليه بانه اذا جاز هذا في القران فكيف جاز العمل بقواعده و احكامه مع

جواز الحوق التحريف له و سياق الجواب عن هذا كيف و هو لاء الاعلام رووافي مه لفاتهم اخبارا كثيرة تشتمل على وقوع تلك الامور في القران و ان الاية هكذا ثم غيرت الى هذا الرابع انه قد حكى شيخنا الشهيد طاب ثراه عن جماعة عن القراء انهم قالوا ليس للراد بتواتر السبع اوالعشران كل ماورد من هذه القرات متواتر بالمراد انحصار المتواتر الان فيمانقل من هذه القراءة فان بعض مانقل عن السبعة شاذ فضلاعن غيرهم فاذا اعترف القراء بمثل هذا فكيف ساع لنا الحكم على هذه القراء ة كلها بالتواتر كما قاله العلامة طاب ثراه في كتاب المنتهي و كيف ظهرت لنا القراء ة المتواترة حتى نقرأ بها في الصلوة و كيف حكمنا بان الكل قد نزل به الروح الامين فان هذا القول منهم رجوع عن التواتر الخامس انه قد استغاض في الاخبار ان القران كما انزل لم يولفه الا امير المومنين بوصية من النبي فبقي بعد موته ستة اشهر مشتغلا بجمعه فلما جمعه كما انزل اتى به الى المتخلفين بعد رسول الله فقال لهم هذا كتب الله كما انزل فقال له عمر بن الخطاب لاحاجة لنااليك ولاالى قرائتك عندنا قران جمعه وكتبه عمثان فقال لن تروه بعد هذا اليوم ولا يراه احد حتى يظهر ولدى المهدى و في ذلك القران زيادات كثيرة وهو خال عن التحريف و ذلك ان عثمان قد كان من كتاب الوحي المصلحة راها وهي ان لا يكذبوه في امرالقران بان يقولوا انه مفتري اوانه لم ينزل به الروح الامين كما قاله اسلافهم بل قالوه هم ايضا و كذلك جعل معاوية من الكتاب قبل موته ستة اشهر لمتل هذه المصلحة ايضا و عثمان واضرابه ما كانوا يحضرون الافي المسجدمع جماعة الناس فماكانوا يكتبون الامانزل بهجبرئيل بين الملاء و اما الذي كان ياتي به داخل بيته فلم يكن يكتبه الا امير المومنين لان له المحرمية دخولا و خروجا فكان يتفرد بكتابه مثل هذا و هذا القران الموجود الان في ايدي الناس هو خط عثمان و سموه الامام و امترقوا ما سواء واخفوه و بعثوابه زمن تخلفهم الى الافطار والامصار ومن ثم ترى قواعد العربية مثل كتابة الالف يعد الواوالمفردة وعدمها بعدواو الجمع وغير ذلك وسموه رسم الحط القراني و لم يعلموا انه من عدم اطلاع عثمان على قواعد العربية والخط و قد ارسل عمر بن الخطاب زمن تخلفه الى على بان يبعث له القران الاصلى الذى هو الله و كان يعلم اله الما طلبه لا جل ان يحرفه كقران ابن مسعود او يخفيه عنده حتى يقول الناس ان القران هو هذا الذي كتبه عثمان لاغبر فلم يبعث به اليه وهو الان موجود عنده مولانا المهدى مع الكتب السماوية و مواريث الانبياء و لما جلس امير المومنين على سرير الخلافة لم يتمكن من اظهار ذلك القران واخفاه هذا المافيه من اظهار الشنعة على من سبقه كما لم يقدر على النهى عن صلوة الضحى و كما لم يقدر على النهى عن صلوة الضحى و كما لم يقدر على اجراء متعة النساء حتى قال لولا سبقنى ابن الخطاب مازلى الاشقاء يعنى الاجماعة قليلة لا باحة المتعة و كما لم يقدر على عزل شريح عن القضاء و معاوية عن الامارة و قد بقى القران الذى كتبه عثمان حتى وقع الى ايدى القراء فتصرفوا فيه بالمدو الادغام والتقاء الساكنين مثل ما تصرف فيه عثمان و اصحابه و قد تصرفوا في بعض الايات تصرفا فانفرت الطباع منه و حكم و العقل بانه ما نزل هكذا و فى قريب هذه الاعصار ظهر رجل اسمه سجاوند او نسبة الى بلده فكتب هذه الرموز على كلمات القران و علمه بعلامات اكثرها لا يوافق تفاسير الخاصة و لا تفاسير العامة والظاهران هذا ايضا اذا مضت عليه مدة الغارة اذا وقعت اشترك فيه العدو والولى-

احکام قراء ت میں ہو دو امر باتی جی - اول وہ جو جمارے فقہاء نے قربایا ہے کہ سات متواز قرانوں میں ہے کی ایک کا پڑھنا واجب ہے اور ابو جعفرو لیقوب و خلف کی قراء توں کو ملا کرجو وی قراء تیں ہو کیں - ان تمام کے متواز ہونے میں اختلاف ہے دونوں شہید قدس الله رو میما اس طرف سے ہیں - کہ اس دسویں کا تواز ثابت ہے - اور ان سے قراء ت جائز ہے - شہید ٹائی روائتی نے شرح الرسالہ میں فرمایا ہے - کہ "تمام صورتوں میں وس قراء توں میں سے ایک ہی کا بڑھنا قطعا واجب نہیں بلکہ مستحب بھی نہیں - کیو نکہ سب اللہ کے ہال سے ہے جے جرائیل نے جناب سید الرسلین کے قلب پر نازل کیا ہے تاکہ امت کے لیے تخفیف اور اس قرجب والوں کے لیے آسانی ہو - "شہید ٹائی کا بیہ قول اس امر کی تصریح کرتا ہے کہ ساتوں بلکہ وسوں قراء تمی متواز النقل اللہ کی وتی ہے ہیں ہمارے اصحاب میں اکثر کا کلام ای طرح ہے - ہم نے جو تہذیب الدیث کی شرح کسی ہے اس میں ان کے ساتھ تکلم کیا ہے ہم یماں اس میں سے تھوڑا ساذکر الدی شرح کسی ہے اس میں ان کے ساتھ تکلم کیا ہے ہم یماں اس میں سے تھوڑا ساذکر کرتے ہیں۔ للقا ہم کتے ہیں کہ ذکورہ بالا وعووں میں کی طرح سے کلام ہے - پہلے قو قاریوں سے کرتے ہیں۔ للقا ہم کتے ہیں کہ ذکورہ بالا وعووں میں کی طرح سے کلام ہے - پہلے قو قاریوں سے کرتے ہیں۔ للقا ہم کتے ہیں کہ ذکورہ بالا وعووں میں کی طرح سے کلام ہے - پہلے قو قاریوں سے کرتے ہیں۔ للقا ہم کتے ہیں کہ ذکورہ بالا وعووں میں کی طرح سے کلام ہے - پہلے قو قاریوں سے کسے ہیں۔ للقا ہم کتے ہیں کہ ذکورہ بالا وعووں میں کی طرح سے کلام ہے - پہلے قو قاریوں سے

ان کے متوار ہونے میں احتراض ہے اور وہ یہ ہے کہ قراء نے نقل کیا ہے کہ ہر قاری کے لیے دو رادی میں جو اس سے قراء ت کو روایت کرتے میں اور بعض وقت اس سے روایت شر بحت اختلاف نقل کرتے ہیں بال آئندہ زمانوں میں دو راوبوں کی روایت مشہور ہو ہی۔ اور مد تواتر کو مینوسی پاوجودیک تواتر کے وجود کے لیے شرط ہے کہ تمام طبقات مساوی موں دو مرے یہ کہ بم تنلیم کرلیتے ہیں کہ وہ قراء تیں امحاب قرآت سے متواتر ہیں محرب مفید سیس کیونک وہ الارے خالفین میں سے احاد ہیں جو ان قراء توں کے ساتھ متفرد ہیں اور انہول نے ان قراء توں میں تصرف کیا ہے اور ان کو اینا ایک فن بنالیا ہے جیسا کہ یہ سیوید اور ظلیل نے نحو کو اینا فن بنالیا ہے اور اپنی عقلوں کے موافق اس میں تصرف کیا ہے اور غداہب کے مسائل میں اختلاف کیا ہے ای وجہ سے قاربوں نے اپن قراء ت کو اہل بیت علیم السلام کی طرف مفوب نہیں کیا بعض وقت ان کی طرف بھی منسوب کیا ہے۔ مروہ از قبیل ان جاء کم فاسق بنباء الا یہ ہے تیسرے ید کد سلیم کرلینا کہ یہ قراء تیں وحی الی سے متواتر ہیں اور سب کو حضرت جرکل لائے ہیں-ان حدیثوں کے رو کرنے کا موجب ہے جو مستغیض بلکہ متواتر ہیں اور صراحتہ ولالت کرتی ہیں کہ قرآن میں بلحاظ کلام و مضمون و اعراب تحریف واقع ہوئی ہے۔ معمدا ہمارے اصحاب ان حدیثوں ک محت و تصدیق بر متنق یں- ہاں مرتفئی اور صدوق اور شیخ طبری نے ان میں مخلفت کی ہے اور تھم لگایا ہے کہ اس مصحف کے وقین کے درمیان جو ہے وہی قرآن منزل ہے اور اس کے سوا اور نسیس اور اس میس تحریف و تبدیل واقع نسیس ہوئی ای واسطے شیخ طبری نے قرآن کی آیوں اور اجزاء کو صبط کیا ہے۔ چنانچہ بالا سناد نی صلی الله علیہ وسلم سے روایت کیا ہے کہ قرآن کی تمام سور تیں ایک سوچودہ ہیں اور اس کی تمام آیتیں جھ ہزار دو سوچھتیں ہیں۔ اور اس کے تمام حروف تین لاکھ اکیس بزار دوسو بھاس ہیں اور ظاہریہ ہے کہ یہ قول ان سے بہت مصلحوں کے لیے صادر ہوا ہے۔ ازال جملہ قرآن ہر اس طعن کا سد باب ہے کہ جب قرآن ہیں تحریف جائز ہوئی تو باوجود محرف ہونے کے اس کے قواعد و احکام پر عمل کرنا کیو تکر جائز ہوا۔ اس کا جواب منقریب آمے آئے گا۔ قرآن غیر محرف کیے ہوسکتا ہے حالانکہ ان مشاہیر نے اپنی تالیفات میں بست روائتیں لقل کی ہیں جو قرآن میں ان امور کے وقوع پر مشمل ہیں-

اور یہ کہ فلال آیت اس طرح نازل ہوئی۔ پھر تبدیل کرکے ہوں بنادی کی چوتے یہ کہ شخ شہید طلب ثراہ نے ایک جماعت سے روایت کی کہ قاریوں نے کہا کہ سات یا دس قراء نوں کو متواتر ہوئے سے یہ مراد نہیں کہ ان قراء نول میں سے ہرایک متواتر ہے بلکہ مرادیہ ہے کہ متواتر اب ان قرآت

منقولہ میں منحصرے۔ کیونکہ بعض جو سات قاربوں سے راوروں کا توکیا ذکر) منقول ہے شاذ ہے۔ ہین :م قراء اس امر كا اعتراف كرتے بين تو جارے واسطے كيوں كر جائز ہوسكتا ہے- كه ال تمام قراء توں م متواتر ہونے کا تھم لگائیں جیسا کہ علامہ طاب شاہ نے مشمی میں کہا ہے۔ اور قراءت متواترہ امارے ل س طرح ظاہر ہو سکتی ہے تاکہ اسے نماز میں پڑھیں اور ہم کو کیو نکر تھم لگائیں کہ سب کو حضرت جرئیل لائے ہیں۔ کیونکہ قراء کا بیہ قول تواتر سے رجوع ہے پانچویں بیہ کہ روایات میں بیہ امر مستفین ہے۔ کہ قرآن کو جیسا کہ نازل کیا گیا ہے۔ کسی نے جمع نہیں کیا۔ گر امیر المومنین نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم ک وصیت سے پس نی مان کیا کی وفات شریف کے بعد حضرت امیر چھ مینے قرآن کے جمع کرنے میں مشغول رے جب اے جمع کر چکے جیسا کہ نازل کیا گیا تھا تو اے رسول اللہ کے بعد خلیفہ بننے والوں کے پاس لاے۔ اور ان سے کمایہ اللہ کی کتاب ہے جیساکہ نازل کی گئی ہے عمر بن خطاب نے آپ سے کماکہ ہمیں تیری کوئی ضرورت نہیں۔ اور نہ تیری قراءت کی ضرورت ہے ہمارے پاس قرآن ہے جے عثان نے جمع كياب اور لكھاب حضرت اميرنے كماكہ آج كے بعد تم اسے ہرگزنہ ويكھو كے اور نہ كوئى اسے ديكھے گا۔ يمان تک كه ميرا بينا مهدى ظاہر موگا- اور اس قرآن ميں بهت كچھ زيادہ ہے اور وہ تحريف سے پاك ہے-اس کی وجہ بیر ہے کہ حضرت عثمان بڑاتھ ایک مصلحت کے لیے جو آنخضرت نے خیال کی وحی کے کاتبول میں ہے تھے۔ اور وہ مصلحت میہ تھی کہ لوگ قرآن کے بارے میں آپ کی تکذیب نہ کریں بایں طور کہ کمہ دیں کہ بیر گھڑ لیا گیا ہے یا حضرت جبرئیل اس کو نہیں لائے۔ جیسا کہ ان کے اسلاف نے بلکہ خود انہوں نے بھی کما۔ اس طرح حضرت نے معاویہ کو الی بی مصلحت کے لیے اپنی وفات سے چھ ماہ پہلے وقی کے کا تبوں میں مقرر کیا اور حضرت عثان اور ان کی مثل اور اشخاص بجزمسجد کے لوگوں کی جماعت کے ساتھ اور کمیں حاضر نہ ہوتے تھے۔ اس لیے وہ وہی آئتیں لکھتے تھے۔ جن کو حضرت جرئیل لوگوں کی جماعت کے درمیان لاتے۔ مگر جو آیتیں وہ حضور کے دولت خانے کے اندر لاتے ان کو ، بجز حضرت امیر المومنين كوئي نه لكعتا- كيونكه حضرت اميربوجه محرميت وولت خانه مين آمد و رفت ركعت تنه اس ليه اليل آیتیں وہی لکھا کرتے تھے یہ قرآن جو اب لوگوں کے ہاتھوں میں موجود ہے حضرت عثان کا خط ہے انہوں نے اس کا نام امام رکھا۔ اور اس کے سوا اور قرآنوں کو جلا دیا اور چھیا دیا۔ اور اس کو اپنی خلافت کے زمانہ میں اطراف و امصار میں بھیج دیا۔ اس سب سے تو دیکھتا ہے کہ خط عثانی کے قواعد مخالف ہیں قواعد عربیت ے ۔ مثلاً واو مفرد کے بعد الف کا لکھنا اور واو جمع کے بعد نہ لکھنا وغیرہ اور اس کا نام انہوں نے رسم کط قرآنی رکھا ہے۔ اور ان کو معلوم نہیں کہ اس کا سبب یہ ہے کہ حضرت عثمان کو عربیت و خط کے قواعد سے وا تغیت نہ منمی۔ حضرت عمر بن الخطاب نے اپنی خلافت کے زمانے میں حضرت علی کو کملا بھیجا کہ قرآن

املی ہو آپ نے بح کیا ہے۔ میرے پاس بھیج دیں۔ حضرت علی کو معلوم تھا کہ حضرت عمراس واسطے میرا قرآن طلب كرتے بيں كه حضرت ابن مسعود كے قرآن كى طرح اس كو جلا ديں يا اپنے إس جميالير- ،كه رگ كىيں كە قرآن تو وى بے جے عمان نے لكھا۔ اور ووسرا اور كوئى قرآن نسيں۔ اس ليے آپ نے اپنا قرآن حضرت عمر کے پاس نہ بھیجا۔ اور قرآن اب مع دیگر کتب سلوب مواریث انبیاء کے مولانا ممدی کے ہاں موجود ہے۔ جب حضرت امیر المومنین تخت خلافت پر بیٹے تو اپنے قرآن کو ظاہرتہ کر سکے۔ اور اسے جمیا رہا۔ کیونکہ اس میں پہلے ظیفول کی برائی درج تھی۔ ای طرح حضرت علی صلوة النعی سے منع نہ كرسكے۔ اور عورتوں كامتعہ جارى ند كرسكے۔ يمان تك كه فرمايا كه اگر ابن اخطاب محد سے يسے ند ہوتے لا منعد کے جاز ہونے کے سبب بجز جماعت قلیلہ کوئی زنانہ کرتا ای طرح حضرت علی شریح کو عمدہ قضا ے اور معاویہ کو امارت سے برطرف کرنے پر قادر نہ ہوئے۔ اور وہ قرآن جو حضرت عثمان نے لکھا تھا باقی رہا یماں تک کہ وہ قاربوں کے ہاتھ لگا۔ پس انہوں نے اس میں مداور ادعام اور التعاف سا کتین کے ماتھ تفرف کیا اس لیے طبیعتیں اس سے متنفر ہو گئیں اور عمل نے تھم لگا دیا کہ اس طرح تازل نہیں ہوا۔ اور ان زمانوں کے قریب ایک محض ظاہر ہوا جس کا نام سجاوند ہے۔ یا اس کے شمر کی طرف نسبت ہے۔ اس نے کلمات قرآن پر بید رموز لکھے۔ اور اس پر علامتیں لکھیں جن میں سے اکثر خاصہ اشیعہ) کی تغیروں کے موافق نمیں اور نہ عامہ (اہل سنت) کی تغییروں کے موافق میں اور ظاہر سے کہ اس پر مجمی جب عرصہ دراز گزر جائے گاتو اس کے تواتر کا دعوی کیا جائے گا۔ اور کما جائے گاکہ سے قرآن کا جز ہے اس لي ات لكمنا اور استعال كرنا جاسي حاصل كلام يدكه جب عارت واقع موتى ب تو وسمن و دوست اس میں شریک ہو جاتے ہیں۔ استی۔

سيد نعمت الله كتاب الانوارين دوسري جگه لكھتے ہيں-

و كونه يدخل في كل وقت هواحد الاسباب في كون القران الذي كتبه على قد كان اكثر القرانات التي كتبتها كتاب الوحي لأن جبرئيل قد كان ياتي الى النبي في اكثر الخلوات ولا كان يدو رمعه فيها الاعلى ولذا قال على كان النبي يديرني معه كيف دار ـ

حفرت علی کا ہروقت نی ماہی کے خدمت میں حاضر رہنا بہت سے اسباب میں سے ایک سبب ہے اس بات کا کہ حضرت علی بڑتھ نے جو قرآن لکھا تھا۔ وہ ان قرآنوں سے جو وہی کے کا ہوں نے لکھے زیادہ تھا۔ کیونکہ حضرت جرئیل نبی ماہی کے اکثر خلوق میں آیا کرتے تھے۔ اور علی کے سوا اور کوئی ان میں آخضرت ماہی کے ساتھ نہ ہوا کرتا تھا اس واسطے حضرت علی کا قول ہے کہ نبی اور کوئی ان میں آخضرت ماہی کے ساتھ نہ ہوا کرتا تھا اس واسطے حضرت علی کا قول ہے کہ نبی

. مَنْ يَهِمُ مِنْ اللهِ عَمَالَة مُعَرَاتِ جِيماك آبِ مُعَرِيِّ-انتي

لما خلیل قروری (متونی ۱۹۸۹) شارح اصول کانی نے اس حدیث کی شرح یل انجار است کی شرح یل انجار کیس میں ندگور ہے کہ قرآن جو حضرت جبر کیل لے کر حضرت مجمد انجاز پر نازل ہوئے سرہ ہزار آئیس تھی ہیں کھا ہے۔ مراد ایں است کہ بسیارے ازال قرآن ساقط شدہ و در مصاحف مشہورہ نیست زیرا کہ بجئ قرآنے کہ در مصاحف مشہورہ است عدو آیات آن نزد قراء اہل کوفہ چنانچہ موافق نقل صاحب مجم البین است عدد آیات ہر سورہ داور اول آن سورہ شش ہزار و سے صد و بنجاہ و شش آیت است و ور تغیر سو الله اگر قد ہب ویگراں را اعتبار کئے۔ ایم اللی گفتہ شش ہزار و وولیت وی وشش آیت است و بالجملہ اگر قد ہب ویگراں را اعتبار کئے۔ ایم یہ بیشتر یا کمترے شود و ہمر نقذیر ہفدہ ہزار است میگفت ان عدد الایات التی جاء به جبونیل المصاحف مشہورہ است ور قراء ت ہفدہ ہزار است میگفت ان عدد الایات التی جاء به جبونیل المحمد مصاحف مشہورہ است و در طریق عامہ کہ وال است براسقاط بسیارے از قرآن در کشت محد دیسے دو امریت عامہ کہ دال است براسقاط بسیارے از قرآن در کشت محد دیسے دوازہ ہم ویز محد اللہ بین کعب و معن دوازہ ہم ویز بحد انہ بین کعب و معن دہم ایں باب وعوی اینکہ قرآن ہمیں است کہ در مصاحف مشہورہ است خالی از اشکال نیست و استدلال دیم ایس باب وعوی اینکہ قرآن ہمیں است کہ در مصاحف مشہورہ است خالی از اطلاع - (بر عل اب بمرد عرمان میں باہتمام اصحاب و اہل اسلام بعضب ہط قرآن بغایت رکیک است بعد از اطلاع - (بر عل اب بمرد عرمان میں باہتمام اصحاب و اہل اسلام بعضب علی از آن بوجہ میں دیا

اس سے مراد سے ہے کہ اس قرآن میں سے بہت کچھ ساقط ہوگیا۔ اور مصاحف مشہورہ شل شہیں ہے۔ کیونکہ سارا قرآن جو مصاحف مشہورہ میں ہے اس کی آخوں کی تعداد اہل کوفہ کے قاریوں کے خرد کیے چھ بڑار تین سو چھین ہے صاحب مجمع البیان نے ہر سورت کے شروع میں جو اس کی آخوں کی تعداد دی ہے۔ ان سب کا مجموعہ بھی اتنا ہی ہے مگر سورہ ہلاتی کی تغییر میں علامہ طبری نے کہا ہے کہ کل تعداد دی ہے۔ ان سب کا مجموعہ بھی اتنا ہی ہے مگر سورہ ہلاتی کی تغییر میں علامہ طبری نے کہا ہے کہ کل تعداد وی ہے۔ ان سب کا مجموعہ بھی اتنا ہی ہے۔ فلاصہ سے کہ اگر ہم دو سروں کے فد بب کا اعتبار کریں۔ او کل تعداد اس سے پچھ نرار دو سو چھتیں ہے۔ فلاصہ سے کہ اگر ہم دو سروں کے فد بب کا اعتبار کریں۔ او کل تعداد اس سے پچھ نراز دو سو چھتیں ہو گئی ہیں۔ اس کی آخوں کی تعداد دھرت جر کیل کی قراء ت میں سترہ بڑار ہے۔ او آپ یوں فراتے ہیں۔ ان عدد الایات التی جاء بہ جبر ئیل (ان آخوں کی تعداد ہو صاحت جراکیل لائے اور خاصہ (شیعہ) و عامہ (اہل سنت) کے طریقہ میں صحاح کی مدیثیں جو قرآن ہی صحرت جراکیل لائے اور خاصہ (شیعہ) و عامہ (اہل سنت) کے طریقہ میں صحاح کی مدیثیں جو قرآن ہی سے حصہ کیرکے ضائع ہوئے پر دلالت کرتی ہیں۔ کشرت میں اس ورجہ کو پہنچ گئی ہیں کہ ان سب کا جھٹانا ہے دور سے حصہ کیرکے ضائع ہوئے پر دلالت کرتی ہیں۔ کشرت میں اس ورجہ کو پہنچ گئی ہیں کہ ان سب کا جھٹانا جراء ت ہے۔ اور سے حکامت تو مشہور ہے کہ حضرت حثمان نے ابی بن کعب کے مصحف اور عبداللہ بن حصہ سے۔ اور سے حکامت تو مشہور ہے کہ حضرت حثمان نے ابی بن کعب کے مصحف اور عبداللہ بن

سعور کے معض کو جلا دیا۔

ہوجود ان باتوں کے اور اختلاف قراء ت کے جو اس باب کی حدیث نمبر ا اور سائمی نہ کور ہوا۔
یہ دعویٰ کہ قرآن انتا ہی ہے جو مصاحف مشہورہ میں ہے۔ اشکال سے خالی نہیں۔ جو یکھ ابو بکرو عمرو عمان کے کرف ہونے پر یہ دلیل لانا کہ صحابہ کرام اور اہل اسلام نے کیا اس سے واقف ہو جانے کے بعد قرآن کے محرف ہونے پر یہ دلیل لانا کہ صحابہ کرام اور اہل اسلام نے ضبط قرآن کا بڑا اجتمام رکھا ہے نمایت ضعیف ہے۔ انتی

1, 5

سید ولدار علی مجتد عماد الاسلام میں اختلاف قراء ت کے متعلق کتاب شاقی کی عبارت لقل کرے یوں لکھتے ہیں-

اقول و ینقدح من هها ان مال قول السید الموتضی بعدم تطرق التغیر والتحریف فی القران اصلاً هو ما یکون بحسب الایة او الایتین فما زاو لاما یشتمل التغیر بحسب مفردات الالفاظ ایضا و الافکلامه صویح هنافی ان القران کان فی زمان وسول الله مختلفة النسخ بحسب اختلاف القرأت (مربت حیدید جلد دوم م م ۵۷) ترجمد شیل کمتا بول که یمال سے متفاد ہوتا ہے کہ سید مرتشیٰ کمتے ہیں کہ قرآن میں تغیر مرجمد شیل کمتا بول کہ یمال سے متفاد ہوتا ہے کہ سید مرتشیٰ کمتے ہیں کہ قرآن میں تغیر مرتشیٰ کمتے ہیں کہ قرآن میں تغیر میں مرتب ان کا مال سے ہے کہ بقرر ایک آیت یا دویا زیادہ کم تخیف شیل ہوئی۔ ورنہ ان کا کلام یمال اس امریس مرتب کم دول اللہ کے زمانے میں حسب اختلاف قرأت قرآن کے مختلف شخ ہیں۔ مرول رول اللہ کے زمانے میں حسب اختلاف قرأت قرآن کے مختلف شخ ہیں۔ مرول رول میں این ایس مرتب کے قدم بقدم چلے ہیں۔ مرول رول میں این بارے میں این باپ کے قدم بقدم چلے ہیں۔ مرول روس مرتشیٰ غیرلازم

فان الحق احق بالا تباع ولم يكن السيد علم الهدى معصومًا حتى يحجب ان يطاع فلوثبت انه يقول بعدم النقيصة مطلقالم يلزمنا اتباعه ولا ضير فيه (مربت المدوم م ١٨)

ترجمہ۔ "لیں ہمارے استاد مدظلہ کا کلام ان کے اپنے مسلک مختار پر بہنی ہے اور سید مرتفے کی تقید لازم نہیں کیونکہ اتباع کا زیادہ سزاوار ہے اور سید علم المدی معصوم نہ تھے۔ کہ ان کی اطاعت کی جائے۔ پس اگر خابت ہو جائے کہ وہ قرآن میں مطلق عیب و تقصان نہ ہو ۔ نے کہ وہ قرآن میں مطلق عیب و تقصان نہ ہو ۔ نے قائل ایس۔ تو ہم پر ان کا اتباع لازم نہیں اور اس میں کئی ہرج نہیں۔ "انتی عادل کا اتباع لازم نہیں اور اس میں کئی ہرج نہیں۔ "انتی عادل منکرین تحریف کے اقوال اور ان اقوال کی تردید یا تاویل سے نا تعرین اندازہ لگا سکتے ہیں جادوں منکرین تحریف کے اقوال اور ان اقوال کی تردید یا تاویل سے نا تعرین اندازہ لگا سکتے ہیں

کہ تحریف قرآن کا عقیدہ قربب شیعہ میں کیا پایہ رکھتا ہے علم المدی اور بیخ الطائفہ کی مبارق میں جو اور نعتل مورق میں جو اور نعتل مورق اللہ میں اور نعتل ہو کیں کئی امور قائل توجہ ہیں۔ مثلاً:

1.4

ا۔ مین الطائفہ کا قول کہ قرآن میں تحریف بالزیادہ کے بطلان پر اجماع ہے بالکل ملط ہے بلکہ دی

۲۔ علم المدی اور ابوعلی طبری کا عقیدہ تحریف بالنقمان کو متقد مین شیعہ کی صرف ایک جماعت کی طرف منسوب کرنا بالکل غلط ہے۔ کیونکہ تمام قدمائے شیعہ کا یمی عقیدہ تھا۔

اد عقبیرہ تحریف بانتمان کو حشوبہ کی ایک جماعت سے منسوب کرنا بھی غلط ہے کیونکہ علم الدی اور ابوعلی طبری کی مراد حشوبہ سے المسنّت و جماعت ہیں جن میں سے کوئی بھی کسی متم کی تحریف کا قائل نہیں۔

س علم المدى كا قول كه زمان نبوى مين قرآن مجموع مؤلف تقاد جيساكه آج ہے بحث طلب ہے اگر اس سے يه مراد ہے كه عمد نبوى مين قرآن مرتب الايات والسور تقاد جيساكه آج ہے اور حفاظ اسے حفظ پڑھاكرتے ہے مگراس كے كلام اسے حفظ پڑھاكرتے ہے مگراس كے كلام كے فلامرسياق و سباق كے خلاف ہے۔ اور اگر يه مراد ہے كه عمد نبوى مين پڑھا جا تا تقا جيساكه آج اور ايك مصحف مين مرتب و مجموع تقا اور شاخ خرما اور سكريزوں پر متقرق نه تقاتو يه مسلم شيس۔

2. مين الطائف كا تحريف بالنقمان كے خلاف كو ميح ندبب شيعه كمنا اور ظاہر في الروايات بتانا بالكل غلط ب-

۲- علم المدے كاشيعه كى روايات تحريف كو ضعيف كمنا اور شيخ الطا كفه كا ان كو آحاد بتانا بهى غلط ؟
كيونكه وه روايات حسب تفريح شيعه مستغيض بلكه متواتر بين اور صراحته تحريف بر ولالت كرتى ...
بين-

2۔ فیخ الطاکفہ کا المسنّت کی روایات نقصان اور شیعہ کی روایات تحریف بالنقصان کو ایک بتانا تجابل الم جمالت ہے۔ جیسا کہ عنقریب معلوم ہوگا۔

۸۔ منگرین تحریف نے عدم تحریف کے ثبوت میں معقدین تحریف کی طرح کوئی سندائمہ معمومین
 ۸۔ کے قول سے پیش نہیں کی جو صراحہ عدم تحریف پر ولالت کرتی ہو۔

9۔ علامہ نعمت اللہ جزائری کی یہ تاویل کہ مظرین تحریف کا قول بہت مصلحوں پر بنی ہے، احوال شیعہ کے زیادہ مطابق ہے۔ سید دلدار علی جہتد کا بیہ کمنا کہ علم المدی کے قول کا مال بیہ نمیں کہ مفرد اختا میں بھی تحیف نیں ہوئی۔ محض تحکم ہے۔

ماروں مکرین تخریف میں سے می لے ائمہ معمومین کا زمانہ نمیں بایا۔ مرقدائے شیعہ جو ، تحریف کے قائل تھے ان کو آئمہ کی صحبت سے فیض یاب ہونے کا دعویٰ ہے۔ جیسے علی بن

ايراقيم لتي-

جن کتابوں میں تحریف قرآن کی روائیش ورج ہیں ان میں سے بعض ائمہ کی نظرے گزر بھی ہں۔ مثلاً كتاب كافی جے امام غائب عليه السلام نے بقول شيعه بنظر استحسان و كما ہے۔ الله الى رواینوں کے جھوٹ ہونے کا اختال شیعہ کے اصول موضوعہ برکس طرح جاری نہیں ہوسکت۔ وور ثالث کے شیعہ تحریف بالزیادہ کے سوا باتی اقسام تحریف کے بالعموم قائل ہیں- مزید توضیح کے لیے چند قول اور نقل کئے جاتے ہیں۔

سید محمد باقربن سید موسوی این کتاب بحر الجوابر (۳۴۷ و ۳۴۸) میں جو فتح علی شاہ قاجار کے عمد میں تصنیف ہوئی مطاعن عثان بڑاتھ کا ذکر کرتے ہوئے لکھتے ہیں۔ چہارم آتک ابن مسعود قاری قرآن را که از اکابر صحابه بود و ایل سنت زیاده از عثمان احادیث در فضائل او نقل کرده ایمه زوماً بسبب آل ضرب بعد از سه روز بحواله رحمت اللي پيوست و سبب زون او آن بود - ك قرآن اور اطلید که با مفحف خود که تحریفات و تغیرات داده بود موافق گرداند تا معحف درست در میان نباشد - او بانموداز دادن پس بخانه او رفت و مصحف اورانجبر گرفت و نسخه ازال برداشت و آنرا مثل سائر مصحف بسوخت و بعضے نقل کردہ اند کر بعد از تصرفات و تغیرات و برداشن نسخه ازال جهيع مصاحف رادر ظرفي مشت وبعد درآتش انداخته وسوخت-انتي سید علی اکبرین علی اصغرنے ناصر الدین شاہ قاچار کے عمد میں بعض مومنین کی درخواست پر عقايد شيعه مين ايك رساله لكها جس مين يه عبارت موجود ب واجب است اعتقاد نمودن باين كه قرآن اصلى تغيرو تبديل در او واقع نشده أكرچه از قر آنمائ ديكر بيض از از متافقين المافتن يا تغيرو ادند و آن قرآن اصلى ترد امام عصر عبل الله فرجه ميباشد - (حقاكم الشيعه في فواكم

الشريعه مطبوعه امريان ص ٢٤) ميد علد حسين صاحب يول لكهت بن واكر بيجاره شيعي مقتضائ احاديث كثيره الل بيت طامرين معرصه بوقوع نقصان در قرآن حرف تحریف و نقصان بر زبان آرد مدف سهام طعن و ملام ومایی استزاء و تشتيع كروو (استعائ الاقام واسيفا (الانتقام - جلد ادل ١٠)

م سید ناصر حسین صاحب ہوں رقطراز ہیں۔ دامن عثمان کا کیو تکر نقصان قرآن سے پاک ہو سکا ہے۔ ہو سکا ہے۔ ہم نے تمہماری تقریر کو ابیا اٹھا دیا۔ کہ کسی طرح تم بل شیس سکتے۔ اور جو دمبہ دامن میں صاحب حیا کے اس احراق نے لگایا ہے۔ کسی گاذر کے دھونے سے دور نہیں ہوسکا۔ (رش انبال ماری مطبع مجع الحرین ۱۸ اللہ ۲۵)

سید محمد اسلیمل صاحب الد آبادی یوں لکھتے ہیں۔ کتاب اللہ کا بہت ساحصہ ایسا تھا۔ جس سے

یاروں کی قلعی کھلتی تھی۔ اور ان کے ہر مقاصد کی کامیابی ہیں روڑا ا نکتا تھا۔ لنذا بجواس
صورت کے دو مرا راستہ ہی نہ تھا۔ کہ کتاب اللہ کو اپنے قبضہ ہیں لے کر حسب مطلب ترتیب
دیں۔ چنانچے ہر فلیقہ صاحب نے اپنے اپنے زمانہ ہیں جہاں اور کام کیے وہاں کتاب کی ترتیب
میں بھی خوب کتر ہونت سے کام لیا یمال کی آیات وہاں اور وہاں کی یمال ٹھونی کئیں (رملا
میں بھی خوب کتر ہونت سے کام لیا یمال کی آیات وہاں اور وہاں کی یمال ٹھونی کئیں (رملا
میدہ نبر ۲ جلدے بابت او فردری ۱۹۱۰ء مطوعہ انہیں بھ بھوہ شلع مارن ۱۵-۱۱)

خلاصہ کلام ہیں کہ شیعہ قرآن موجودہ کو محرف جانتے ہیں۔ ان کے فدہب کی روے اس کی کوئی آیت بھی الی نہیں جس میں تحریف کا اختال نہ ہو وہ سحابہ کرام کی تعداد حد تواتر کو پہنچی ہوئی تھی۔ اور جو راویان و ناقلان قرآن کریم ہیں کاذب اور جھوٹ پر متنق ہو جانے والے جانتے ہیں۔ باقی رہے جھڑت امیر علیہ السلام اور ان کے چار پانچ ساتھی سو ان کو وہ عامل تقیہ بتاتے ہیں جو کذب کا دو سرا نام ہے۔ اگر فرق ہے تو انتا کہ گروہ صحابہ کرام جھوٹ کو عبادت نہ سجھتا تھا۔ اور باقی پانچ چھ بزرگوار تقیہ یعنی جھوٹ ہوئے کو عبادت جانے سے طے وہ کیسے قابل اعتبار ہو سحق ہوئے ہیں۔

جب شیعہ تحریف قرآن کی بحث میں سینوں کے آگے عابر آجاتے ہیں تو کہنے لگتے ہیں کہ سی تو آب سی نقصان کے متعلق انقان اور در منشور سے روایات نقل کرتے ہیں جیسا کہ سید ولار علی نے عماد الاسلام اور صوارم الهیات میں اور سید جامد حسین نے استعماء الاقحام میں نقل کی ہیں۔ مثلاً حدیث عمر براہور میں آب الشیخ اذا زنیا فار جمو هما البتة اور حدیث ان الاقحام میں نقل کی ہیں۔ مثلاً حدیث عمر براہور میں آب الشیخ اذا زنیا فار جمو هما البتة اور حدیث ان رفتی ہوئے ان کے متعلق یہ آبت نازل ہوئی بلغوا عنا وقتی بدیں مضمون کہ قراء جو بر معونہ میں شہید ہوئے ان کے متعلق یہ آبت نازل ہوئی بلغوا عنا مور سیا ان قلد لقینا رینا وغیرہ اس کا مختمر جواب ہماری طرف سے یہ ہے کہ تحریف پالنقصان سے شیعہ کا خراد یہ ہے کہ قرآن کریم جیسا کہ حضور رسول اکرم مائی جا اس دار فائی سے تشریف لے جانے پر عرف اخیرہ کے مطابق چموڑ گئے ہے۔ اس میں آپ کے وصال شریف کے بعد صحابہ کرام نے اپنی اغراض نفسانی اور طبع وغوی کے لیے کی کر دی محر حاشا و کلا اہل سنت و جماعت ایس کی کے قائل نہیں۔ روایات نہی اور طبع وغوی کے لیے کی کر دی محر حاشا و کلا اہل سنت و جماعت ایس کی کے قائل نہیں۔ روایات نہی بیت اول تو احاد ہیں جو مفید یقین نہیں بعد تسلیم صحت ہمارا عقیدہ سے کہ وہ آیات جن کا ذکر ان روایات

میں ہے حنور ماڑی کی حیات شریف میں بھکم الئی منسوخ التلاوۃ ہو گئی تھیں۔ اور عرضہ اخرہ میں نہ تھیں اہل سنت میں سے کوئی عالم اس بات کا قائل شیس کہ ان روایات سے قرآن مجید میں ای طرح کی تحریف فابت ہوتی ہے جس کے شیعہ قائل ہیں اگر کوئی شیعی جواب میں قلم اٹھائے تو اے ہماری سب معتبرہ سے امور ڈیل فابت کرنے چاہیں۔ جیسا کہ ہم نے معتبر کمایوں سے فابت کرد کھائے ہیں۔

اول بیر کہ اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ محابہ کرام نے نعوذ باللہ قرآن پاک میں جیسا کہ عرضہ اخیرہ میں قاحضور اقدس سائیل کے وصال شریف کے بعد اپنے اغراض و فاسدہ کے لیے کمی کروی اور باوجود بکہ ان کی تعداد حد تواتر کو پینی ہوئی تھی وہ اس کذب پر متفق ہوگئے۔

وقتم یہ کہ وہ روایات نقصان جن پر اس عقیدہ کا مدار ہے ہمارے علیائے کرام کے نزدیک متواتر

ט-

سوم یہ کہ وہ روایات ہمارے عالموں کے نزدیک صراحتہ تحریف قرآن پر ولالت کرتی ہیں۔
ہم وعوے سے کہتے ہیں کہ دنیا میں کوئی شیعی ان امور ثلاثہ کو ہماری کتب معتبرہ سے ثابت نہیں کرسکتا۔ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں اور پھراعادہ کرتے ہیں کہ اہل سنت و جماعت کا عقیدہ ہے کہ جو قرآن اب ہمارے پاس موجود ہے بلحاظ تر تیب و مقد روہی ہے جو حضور اقدس مالی ہیا اس دنیا سے تشریف فرآن اب ہمارے واسطے چھوڈ گئے تھے اگر اس میں کوئی مخص کی بیشی کر دیتا تو یہ تحریف ہوتی۔ حضور الور کی حیات شریف میں اثنائے نزول قرآن میں اگر بعض آیتیں نازل ہو کر بھکم اللی مفسوخ تلاوت ہوگئی تو اسے تحریف بالنقصان کے قائل ہیں موقی میں انتقصان کے قائل ہیں موقی میں مناطلہ ہے۔

ائمہ شیعہ نے شیعہ کو بلاوجہ اپ قرآن سے تو محروم کیا تی تھا مردیگر صحائف سے یمی جو ان علاول کے آڑے وقت کام آئے ان کو محروم رکھا ہے۔ ان میں سے بعض کا ذکر احادث ذیل میں آیا ہے۔ (۱) عن ابی بصیر قال دخلت علی ابی عبدالله علیه السلام فقلت جعلت فداک انی اسالک عن مسئلة اههنا احد یسمع کلامی قال فرفع ابو عبدالله سترا بینه و بین بیت اخرفا طلع فیه ثم قال یا با محمد سل عما بدالک قال قلت جعلت فداک ان شیعتک یتحدثون ان رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم علم علیا بابا یفتح له مندالف باب قال فقال علم رسول الله صلی الله علیه و سلم علیا علیه السلام الف مندالف باب قال فقال علم رسول الله صلی الله علیه وسلم علیا علیه السلام الف الله علیه وسلم علیا علیه السلام الف الارض ثم قال الله لعلم و ما هو بداک قال ثم قال بابا محمد و ان عندنا الجامعة و ما الارض ثم قال الله لعلم و ما هو بداک قال ثم قال بابا محمد و ان عندنا الجامعة و ما

يدريهم ما البامعة قال قلت جعلت فداك وما الجامعة قال صحيفة طولها سبعون ذراعا بذراع رسول الله صلى الله عليه واله وسلم او املائه من فلق فيه و خط على بيمينه فيها كل حلال و حرام و كل شي يحتاج اليه الناس حتى الارش في الخدش و ضرب بيده الى فقال لى تاذن بابا محمد قلت جعلت فداك انما انا لك فاصنع ما شئت قال فغمزني بيده وقال حتى ارش هذا كانه مغضب قال قلت هذا والله العلم قال انه لعلم وليس بذاك ثم سكت ساعة ثم قال و ان عندنا الجفر وما يدريهم ماالجفر قال قلت وما الجفر قال دعاء من ادم فيه علم النبيين والوصيين و علم العلماء الذين مضوا من بني اسرائيل قال قلت ان هذا هو العلم قال انه لعلم و ليس بذاك ثم سكت ساعة ثم قال و ان عندنا لمصحف فاطمة عليها السلام وما يدريهم ما مصحف فاطمة قال قلت وما مصحف فاطمة قال مصحف فيه مثل قرانكم هذا ثلاث مرات والله ما فيه من قرانكم حرف واحدقال قلت هذا والله هو العلم قال انه لعلم وما هو بذاك ثم سكت ساعة ثم قال و ان عندنا علم ماكان و علم ما هو كائن الى ان تقوم الساعة قال قلت جعلت فداك هذا والله هو العلم قال انه لعلم و ليس بذاك قال قلت جعلت فداك فاي شئي العلم قال يحدث بالليل والنهار الامر بعد الامر والشئي الى يوم القيامة (اصول كافي كتاب الحجه باب ذكر الصحيفة والجفره والجامعة ومصحفه ماطئمة ص ١٣٦)

ابوبصیرے رویت ہے کہ اس نے کہا میں جعفر صادق علیہ السلام کے پاس گیا پس میں نے کہا میں آپ بہ قربان ہو جاؤل میں آپ ہے ایک مسئلہ دریافت کرتا ہوں کیا یمال کوئی ہے جو میری بات سے ابو بصیر نے کہا۔ پس انام جعفر صادق نے وہ پردہ اٹھا دیا جو اس کے اور دو سرے گر کے درمیان تھا۔ پس اس میں دیکھا۔ پھر فرمایا اے بو محمد لوچھ جو تیرے دل میں آیا ہے۔ راوی نے کہا کہ میں آپ پر قربان ہو جاؤں۔ آپ کے شیعہ آپس میں گفتگو کرتے ہیں۔ کہ رسول اللہ مائی نے حضرت علی کو ایک دروازے کی تعلیم دی۔ کہ جس سے ہزار وروازے آپ کے مطبع حاوی نے کہا۔ پس انام نے فرمایا کہ رسول اللہ مائی ان حضرت علی کو ایک دروازے کی تعلیم دی۔ کہ جس سے ہزار وروازے کی تعلیم دی۔ کہ جس سے ہزار وروازے کی جزار دروازے آپ پر کھلتے تھے۔ راوی نے کہا میں دروازے کی تعلم دی جن میں سے جرایک سے ہزار دروازے آپ پر کھلتے تھے۔ راوی نے کہا میں دروازے کی ایک ساعت ہاتھ سے دروی نے کہا میں کھر فرمایا نے تک سے علم ہے۔ اور وہ اس قدر نہیں (جتنا تو نے خیال کیا) راوی نے کہا۔ پھر امام نے کہ فرمایا ہے تک یہ علم ہے۔ اور وہ اس قدر نہیں (جتنا تو نے خیال کیا) راوی نے کہا۔ پھر امام نے کہ فرمایا ہے تک یہ علم ہے۔ اور وہ اس قدر نہیں (جتنا تو نے خیال کیا) راوی نے کہا۔ پھر امام نے کہ فرمایا ہے تک یہ علم ہے۔ اور وہ اس قدر نہیں (جتنا تو نے خیال کیا) راوی نے کہا۔ پھر امام نے

فرمایا-اے ابو محمد ہمارے پاس جامعہ ہے- اور مخالفین کو کیا خبرہے کہ جامعہ کیا ہے- راوی نے کہا-میں نے عرض کی۔ میں آپ پر قربان ہو جاؤل- جامعہ کیا ہے۔ امام نے فرمایا وہ ایک محیفہ ہے جس كاطول رسول الله ملى الله ملى الله على الله عن مر باته به اور آب اى ك دبان مبارك ك شكاف كا فرمودہ اور حضرت علی کے وائیں ہاتھ کا لکھا ہوا ہے۔ اس جامعہ میں ہر حلال و حرام ہے اور ہر ایک چیز ہے جس کی لوگوں کو ضرورت ہوتی ہے۔ حتی کہ خراش بدن کی دیت بھی اس میں ہے اور امام نے اپنا ہاتھ میری طرف مارا پس مجھ سے فرمایا اے ابو محر کیا تو مجھے اجازت دیتا ہے۔ راوی نے کما میں عرض کی میں آپ یر قربان ہو جاؤں۔ میں تو آپ کے لیے ہوں آپ کریں جو جابیں راوی نے کما پس امام نے اپنے ہاتھ سے مجھے ٹولا اور فرمایا یمال تک کہ اس کی دیت گویا کہ آپ غضبناک ہیں۔ راوی نے کما میں نے عرض کی۔ اللہ کی قشم سے علم ہے۔ امام نے فرمایا پہنے شک میہ علم ہے اور اس قدر نہیں جتنا تونے خیال کیا پھرامام ایک ساعت خاموش رہے۔ پھر فرمایا حارے یاس جفرہے۔ اور مخالفین کو کیا خبرہے کہ جفر کیا ہے راوی نے کہا میں نے یوچھا کہ جفر کیا ہے- امام نے فرمایا صندوق ہے چڑے کا جس میں علم ہے نبیوں اور وصیوں کا علم ہے ان علماء کا جو بن اسرائیل میں گزرے ہیں- روای نے کہا میں نے عرض کی بے شک یہ علم ہے- امام نے فرمایا ب شک میہ علم ہے- اور اس قدر نہیں جتنا تونے خیال کیا پھرامام ایک ساعت خاموش رہے۔ پھر فرمایا کہ ہمارے پاس مصحف فاطمہ ملیما السلام ہے اور مخالفین کیا جانیں کہ مصحف فاطمہ کیا ہے۔ رادی نے کما میں نے عرض کی کہ مصحف فاطمہ کیا ہے امام نے فرمایا وہ ایک مصحف ہے۔ جس میں تمهارے اس قرآن کی مثل تین گنا ہے۔ اللہ کی قتم اس میں تمهارے قرآن کا ایک حرف مجى نہیں- رادى نے كما ميں نے عرض كى الله كى فتم يہ علم ب امام نے فرمايا بے شك يہ علم ب اور اس قدر نہیں (جتنا تو نے خیال کیا) پھرامام ایک ساعت خاموش رہے پھر فرمایا ہمارے پاس علم ہے اس کاجو ہو چکا اور اس کا جو روز قیامت تک ہونے والا ہے۔ راوی نے کما میں نے عرض کی مل آپ پر قرمان ہو جاؤں خدا کی قتم یہ علم ہے امام نے قرمایا بے شک یہ علم ہے اور اس قدر میں جتنا تونے خیال کیا راوی نے کہا میں نے عرض کی میں آپ پر قربان جاؤں علم کیا چیز ہے۔ الم نے فرمایا جو حادث ہو تا ہے شب و روز ایک امر بعد دو سرے امرے اور ایک چیز بعد دو سری چیزے قیامت کے دن تک۔ انتلی

(۲) عن حماد بن عثمان قال سمعت ابا عبدالله يقول تظهر الزنادقة في سنة ثمان و عشرين و مائة و ذلك اني نظرت في مصحف فاطمة عليها السلام قال قلت وما

مصحف فاطمة قال ان الله لماقبض نبيه عليه السلام دخل على فاطمة من وفته من الحزن ما لا يعلم الا الله عزوجل فارسل اليها ملكا يسلي غمها و يحدثها فئكت ذلك الى امير المومنين عليها السلام فقال لها اذا احسست بذلك ممعت الصوت قولي لي فاعلمته بذلك فجعل امير المومنين عليه السلام يكتب كلما سمع حتى اثبت من ذلك مصحفا قال ثم قال اما انه ليس فيه شني من الحلال والحرام ولكن فيه علم ما يكون امول كل - تنب الجر- بب ذرام من وافراع الم حماد بن عمان نے کما کہ میں نے امام جعفر صادق سے ساکہ فرماتے سے کہ ١٢٨ ميں زاوق (قلاسفه) ظاہر ہون سے اور بیاک اس لیے کہ میں نے معجف فاطمہ علیما السلام میں تظری ہے۔ راوی نے کما میں نے عرض کی کہ مصحف فاطمہ کیا ہے۔ امام نے فرملیا کہ جب اللہ تعلق نے اینے نی علیہ السلام کو اس دنیا سے لیا تو آپ کی وفات سے حضرت فاطمہ بر انتاغم ہوا کہ جے الله عزوجل کے سواکوئی نہیں جائے۔ اِس الله تعلل نے حضرت فاطمہ کی طرف غم دور کرنے اور آپ سے گفتگو کرنے کے لیے ایک فرشتہ بھیجا۔ کس حضرت فاطمہ نے حضرت امیر علیہ السلام سے یہ بتا دیا۔ حضرت نے فرمایا جب تو فرشتہ کے آئے سے خبردار ہو اور اس کی آواز سے تو مجھ سے كمه وينالي حضرت زہراء نے حضرت اميركو فرشتہ كے آنے سے آگاء كر دیا۔ الذا حضرت امير لکھے لگے جو آپ سنتے تھے۔ يمال تك كم آپ نے اس سے ايك كتب لكھ لى راوى كا قول ب كه فجرامام نے فرملا آگاه رمو- اس من طال وحرام سے كچھ نسيس بلك آئنده حوادث كاذكر --انتخم ب

(٣) عن الحسين بن ابى العلاء قال سمعت ابا عبدالله عليه السلام يقول ان عنلى الجفر الابيض قال قلت فاى شئى فيه قال زبور دائو دعليه السلام و توراة موسى و انجيل عيسى و صحف ابراهيم و الحلال والحرام و مصحف فاطمة عليها السلام ما ازعم ان فيه قرانا و فيه ما يحتاج به الناس الينا ولا نحتاج الى احدحتى فيه الجلدة و نصف الجلدة و ربع الجلدة وارش الخدش و عند بے الجفر الاحمر قال قلت و اى شئى فى الجفر الاحمر قال السلاح و ذلك انما يفتح للدم يفتحه صاحب السيف للقتل فقال له عبد الله بن ابى يعفور اصلحك الله افيعرف بنو صاحب السيف للقتل فقال له عبد الله بن ابى يعفور اصلحك الله افيعرف بنو الحسن فقال اى والله كما يعرفون الليل انه ليل والنهار انه نهارا ولكنهم يحملهم الحسن وطلب الدنيا على الجحود والانكار ولو طلبوا الحق بالحق لكان خيرا

(اصول كان كآب الحبر- باب ذكر العيد الخ يهما)

حین بن ابی العلاے روایت ہے کہ اس نے کہا میں نے کہا م جعفر صادق کو سنا کہ فرائے تھے کہ میرے پاس جفرابیش (سفید صندوق) ہے راوی نے کہا میں نے پوچھا کہ اس میں کیا شئے ہے۔ امام نے فرایا اس میں زبور واؤو۔ تورات موی انجیل عینی ۔ صحف ابراہیم ۔ طال و حرام و مصحف فاطمہ عین قرآن ہے اور جفر مصحف فاطمہ عین قرآن ہے اور جفر ابیش میں وہ ہے جس کے سبب لوگ المارے مختاج ہیں۔ اور ہم کی کے مختاج نہیں ہے۔ یمال ابیش میں وہ ہے جس کے سبب لوگ المارے مختاج ہیں۔ اور ہم کی کے مختاج نہیں ہے۔ یمال کہ اس میں تازیانہ نصف تازیانہ چوتھائی تازیانہ اور خراش بدن کی دیت ہے۔ اور میرے پائی جفراحر (سرخ صندوق) ہے۔ راوی نے کہا میں نے پوچھا کہ جفراحر میں کیا ہے امام نے قرایا رسول اللہ مطابع کا جمار۔ اور وہ صندوق خونریزی کے لیے کھولا جائے گا اور اسے صاحب سیف رام قائم علیہ السلام) قبل کے لیے کھولیں گے۔ اس عبداللہ بن ابی ۔ معفور نے امام سے کہا۔ اللہ آپ کو صلاح دے۔ کیا فرز ثران امام حسن علیہ السلام اس بات کو جائے ہیں۔ امام نے قرایا ہاں اللہ کی حتم وہ اس بات کو بول جائے ہیں عبد اور دن کو جائے ہیں کہ وہ رات ہے اور دن کو جائے ہیں کہ وہ دن ہے کہ حس وہ اس کی نئی اور انکار پر امادہ کرتی ہے۔ اگر وہ حق کو جی کہ وہ دن ہے کہ حسد اور طلب دنیا ان کو اس کی نئی اور انکار پر امادہ کرتی ہے۔ اگر وہ حق کو بیا طور پر طلب کرتے تو اجمام ہوتا۔ اسی

قرآن کے علاوہ دیگر کتب مساویہ اور مواریث انبیاء کا امام عائب علیہ السلام کے پاس ہونا بجوالہ الزار نعمانیہ پہلے ندکور ہو چکا ہے۔ مصحف فاطمہ کے بارے بین علامہ مجلسی یوں لکھتے ہیں ہرگاہ کہ جرئیل ے آمد جناب فاطمہ حضرت امیر المومنین سے نوشت تا اللہ جناب فاطمہ حضرت امیر المومنین سے نوشت تا آنکہ کتابہ جمع شدد آنست مصحف فاطمہ و آن مشمل است ہر جمع احوال آئندہ تا روز قیامت و آن کہ کتابہ اکنوں نزد قائم است (حیات القلوب مطبوعہ نو کشور - جلد دوم - باب شصت و پنجم - حالات بعد از رُن جناب رمالت ماہ علیہ الوف التحیتہ والعملوۃ ص ۸۵۲)

جس وقت جرائیل آتے۔ جناب فاطمہ حضرت امیر المومنین کو خبر دیتیں۔ جو کچے جرائیل کتے امیر المومنین لکھ لیتے یمال تک کہ ایک کتاب بن می وہی مصحف فاطمہ ہے۔ اور اس میں قیامت تک تمام آئندہ حالات ورج بیں۔ اور وہ کتاب اب امام قائم کے پاس ہے۔ انتھی رہی کتاب باسم آئم کے پاس ہے۔ انتھی رہی کتاب باسم کو اس کی نسبت ملا خلیل قروی نے یوں لکھا ہے۔ کتاب جامعہ کہ نزد امام زمان علیہ السلام است دیم میں اسلام است دیم میں اس

جب الم زمان ظاہر موں مے تو یہ مصاحف و مواریث سب ان کے پاس موں مے چنانچہ الم

ابوالحن على بن موى رضاعليه السلام امام قائم عليه السلام كى علامات بيان كرتے بوئے قرائے بير.
و يكون عنده سلاح رسول الله و سيفه ذو الفقار و تكون عنده صحيفة فيها اسماء اعدائه الى يوم القيامة و يكون عنده الجامعة و هى صحيفة طولها سبعون ذرعا فيها جميع ما يحتاج اليه ولدادم يكون عنده الجامعة و هى صحيفة طولها سبعون ذرعا فيها جميع ما يحتاج اليه ولدادم يكون عنده الجفر الاكبر والاصغر وهو اهاب كبش فيها جميع العلوم حتى ارش الخدش و حتى الجلدة و نصف الجلدة و ثلث الجلدة و يكون عنده بمصحف فاطمة عليها السلام آئاب الاحجاج للبرى م ٢٢٣)

اور المام زمان کے پاس رسول اللہ کا صلاح اور تکوار اور ذوالفقار ہوگئی۔ اور ان کے پاس ایک صحیفہ ہوگا۔ جس میں روز قیامت تک ان کے شیعہ کے نام ہو نگے اور ایک اور صحیفہ ہوگا۔ جس میں روز قیامت تک ان کے دشمنوں کے نام ہول گے۔ اور ان کے پاس کتاب جامعہ ہوگا۔ جو میں روز قیامت تک ان کے دشمنوں کے نام ہول گے۔ اور ان کے پاس کتاب جامعہ ہوگا۔ جو ایک صحیفہ ہے۔ جس کا طول ستر ہاتھ ہے اس میں وہ سب پچھ ہے جس کی بنی آدم کو ضرورت ہے اور ان کے پاس جفر اکبر اور جفر اصغر ہوگا۔ اور وہ مینڈھے کی کھال ہے جس میں تمام علوم ہیں حق اور ان کے پاس جفر اکبر اور جنم اصغر ہوگا۔ اور وہ مینڈھے کی کھال ہے جس میں تمام علوم ہیں حق کہ خراش بدن کی دیت اور حتی کہ ایک تازیانہ۔ نصف تازیانہ اور تمائی تازیانہ اس میں ہے۔ اور ان کے اس مصف قاطمہ ملیما السلام ہوگا۔ انتی ۔

شیعہ کی اس بیکسی کا علاج ان کے ایک امام نے گریہ و زاری بتایا ہے چنانچہ حاشیہ ترجمہ شعبہ می ۱۳۹۵ پر یوں لکھا ہے۔ تغییر عیافی میں جناب امام جفعر صادق علیہ السلام سے منقول ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ۱۳۹۵ ایرا بیم علیہ السلام کو وی فرائی کہ تمہارے ہاں بیٹا پیدا ہوگا اور حضرت نے حضرت سارہ سے ذکر کیا اور انہوں نے یہ کما ء اللہ و ان عجو ز فدا تعالیٰ نے وی فرائی کہ عنقریب اس سے بچہ پیدا ہوگا۔ اور چو تکہ اس نے میرے کلام پر تعجب ظاہر کیا ہے۔ اس لیے چار سو برس اس کی اولاد کو عذاب پنچیں گا امام فرائی جب کہ بیس کہ جب بی اسرائیل پر عذاب زیادہ ہوا تو چالیس دن تک انہوں نے فدا کے حضور میں بہت گریہ اور ان کی دور ان تعلیٰ نے موئی اور ہارون کو وی فرمائی کہ ہم ان کو فرعون کے ہاتھ سے نجات دیں گھر دار ان چار سو برس میں سے ایک سو ستر برس کم کر دیتے۔ روای کتا ہے کہ پھر حضرت نے یہ فرمایا کہ اکا طرح ہمارے شیعہ اگر گریہ زاری کریں تو فدا تعالیٰ قائم آل مجہ کاظہور جلد فرما دے گا۔ ورنہ وقت معود میں سامور پورا ہوگا۔" اس خیال سے شیعہ شب و روز غار سامرہ کے آگے گریہ و زاری کرتے رہتے ہیں سلامو سے انگا ہو اس بیدا ہو اس بیل میں بیتلا ہیں اس کی دجہ کیا ہے؟ اس کاجواب شیعہ بی سے اسے اندا اب ہم اصل مضمون کی طرف رجوع کرتے ہیں۔

جب شید کا مقیرہ تحریف قرآن اس طرح پایہ جوت کو پہنچ کیا کہ اس میں کی کو چون و چاک کو بین کئی نہ رہی۔ تو اب ہم اس سے پوچھے ہیں اے شیعہ صاحبان اگر قرآن موجود وہ قرآن نہیں جو سدنا کو مصطفیٰ سٹھیل چھوڑ گئے بتھ بلکہ اس میں آپ کے بعد بہت کھے کی بیٹی اور تغیرہ تبدل ہوگیا ہے تو پھر تسارے پاس رسول اللہ مٹھیل کی شریعت میں سے ایسی قطعی چیز کون می ہس سے تم یقین کر سکو کہ تسارا کہ بب وہی فرب ہے جے حضور انور نے رائح فرمایا تھا۔ تمہارا طریقہ وہی طریقہ ہے جس کی حضور اقد س سٹھیلانے تھا مربات کے باس سے طاتھا۔ قدس سٹھیلانے نسلیم فرمائی تھی۔ تم ای دین پر ہو۔ جو حضور نبی آخر انزمان کو اللہ تعالیٰ کے باس سے طاتھا۔ قرآن کے بعد تمہارے پاس وہ کون می قطعی شدے جس کی رو سے تم ایٹ آپ کو مسلمان اور تائع قرآن کے بعد تمہارے پاس الصلوۃ والسلام بقین کرسکو۔ اگر تم جواب ہیں اوادیث آئمہ سے تمک کرو تو شریعت مصطفوئ علی صاحبا الصلوۃ والسلام بقین کرسکو۔ اگر تم جواب ہیں اوادیث آئمہ سے تمک کرو تو اگر سم کی میں گے ۔ کہ ان حد یقوں سے بقین حاصل نہیں ہو سکا۔ حد یقوں کا مدار راویوں پر ہوتا ہے احادیث ائمہ کے راوی علاوہ معقدات فاسدہ کے جھوٹ بولنے والے شے۔ اور ائمہ کرام پر جھوٹ تھو ہے والے شے۔ حتی کہ خود ائمہ اہل بیت ان کے شاک ہیں۔ اس کی تفصیل کے لیے علیمہ کتاب درکار ہے یماں صرب گنہائش چیم مثالیس صرف ایک کتاب سے پیش کی جاتی ہیں۔

مخار بن ابی عبیدہ کی نبست الم جعفر صادق باللہ فرائے ہیں۔ زواوہ شوھن الیہود والنصاری (ربال کئی م ۱۵) ترجمہ: زرارہ یہود و نصاری سے زیادہ شریح ہے۔ ترجمہ اللہ زرارہ پر لات کسی کے (ربال کئی م ۱۵۱) کان المحتار یکذب علی علی بن المحسین علیسما المسلام (ربال کئی م ۱۸۱) یکی نالمحتار یکذب علی بن المحسین علیسما المسلام (ربال کئی م ۱۸۱) یکی فار بن ابی عبیدہ الم ذین العابرین علی بن المحسین علیما المام پر جموث بائد حاکر تا تھا۔ فیض الم جعفر صادق سے دریافت کرتا ہے ما ھذہ الاختلاف الذی بین شیعتکم (آپ کے شیعوں میں یہ کیما افران ہو ہو) الم جواب میں فرماتے ہیں یا فیض ان الناس از لعوا بالکذب علینا یعن اے فیض لوگ آم المل بیت پر جموث بائد حف کے حریص ہیں ' ذرارہ بن اعین جس کا نام اہل جنت کے ناموں میں ہے۔ (ربال کئی م ۱۸۷) اس کی نبست الم جعفر صادق فرماتے ہیں۔ اولا زرادہ لفائنت ان احادیث ابی علیه المسلام مستذھب (ربال کئی م ۱۸۸) اگر ذرارہ نہ ہوتا کہ فرمارے والد الم محمد باقر کی حدیثیں مث جائمیں۔ ذرارہ نے امام جعفر صادق سے کہ انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے م انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے کہ انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے کہ انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے کہ کہ انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے کہ کہ انہوں نے فرمایا کہ نماز مغرب مزدلفہ سے درے علی ابیه علیہ المسلام (ربال کئی ص ۱۳۷) یعنی میرے والد نے یہ ہرگز نہیں فرمایا تھی بن عتیب کی علیہ المسلام (ربال کئی ص ۱۳۷) یعنی میرے والد نے یہ ہرگز نہیں فرمایا تھی بن عتیب کے کہ دوران سے یہ کئے لگا ما ادی الحکم کذب علی ابیہ کرے والد کے یہ ہرگز نہیں فرمایا تھی کذب علی ابیہ کمرے والد کے یہ ہرگز نہیں فرمایا تھی کذب علی ابیہ کرے والد کے یہ ہرگز نہیں فرمایا تھی کا بیہ کرے والد کے یہ ہرگز نہیں فرمایا کئی ورماں کئی میں درارہ وہاں سے برکتے لگا ما ادی الحکم کذب علی ابیہ کرے کیں والد کے یہ ہرگز نہیں فرمایا کہ کذب علی ابیہ کرے کئی درارہ کیا درارہ وہاں سے کئی کا کمیٹ کیا کہ کوری کے کہ انہوں کے کہ کوری کیا کے کوری کیا کیا کہ کوری کیا کے کہ کار کروی کیا کی کوری کی کوری کیا کروی کیا کے کہ کوری کیا کیا کیا کروی کیا کروی کیا کروی کیا کروی کی کے کہ کروی کیا کروی کیا کروی کروی کیا کروی کروی کی کروی کروی کے کروی کروی کروی کروی کروی کروی کے کروی کروی کروی کروی کروی

(میرے خیال میں تھم نے امام صادق کے والد پر جھوٹ نہیں باندھا) بونس کا بیان ہے۔

و افيت العرق فوجدت بها قطعة من اصحاب ابى جعفر عليه السلام ووجدت اصحاب ابى عبدالله عليه السلام متوافرين فسمعت منهم و اخذت كتبهم فعرضتها من بعد على ابى الحسن الرضا عليه السلام فانكر منها احاديث كثيرة ان تكون من احاديث ابى عبدالله عليه السلام و قال لى ان ابا الخطاب كذب على ابى عبدالله عليه السلام لعن الله ابا الخطاب و كذلك اصحاب ابى الخطاب يدسون هذه الاحاديث الى يومنا فى كتب اصحاب ابى عبدالله عليه السلام فلا تقبلوا علينا خلاف القران (ربال من م ١٣١١)

میں عراق میں پہونچا۔ وہاں میں نے اہام محمہ باقر علیہ السلام کے پہرے اصحاب پائے۔ اور امام جعفر مادق کے اصحاب کثرت سے پائے ہیں میں نے ان سے حدیثیں سنیں۔ اور ان کی کتابیں لیں۔ پس اس کے بعد میں نے ان کو امام ابو الحن رضاعلیہ السلام پر پیش کیا۔ آپ نے ان میں سے احادیث کثیرو کی نسبت فرمایا کہ یہ امام جعفر صادق علیہ السلام کی حدیثیں نہیں ہیں۔ اور مجھ سے فرمایا۔ کہ ابوالخطاب نے امام جعفر صادق پر جھوٹ باندھا ہے۔ اللہ ابوالخطاب پر لعنت کرے اور اس طرح ابوالخطاب کے اصحاب کی طرح ابوالخطاب کے اصحاب کی کتابوں میں واغل کرتے رہے ہیں۔ پس خلاف قرآن ہم پر پچھ قبول نہ کرو۔ انتی۔

امام صادق فرماتے ہیں

كان للحسن عليه السلام كذاب يكذب عليه و كان للحسين عليه السلام كذاب يكذب عليه و كان للحسين عليها السلام و كان يكذب عليه و كان المختار يكذب على على بن الحسين عليها السلام و كان المغيرة بن سعيد يكذب على ابى (رجال من م ١٣٨)

لین امام حسن کے لیے ایک گذاب تھا جو ان پر جھوٹ باندھا کرتا تھا اور امام حیون کے لیے ایک گذاب تھا جو ان پر جھوٹ باندھا کرتا تھا اور عثار علی بن الحسین ملیما السلام پر جھوٹ باندھا کرتا تھا۔ اور مغیرہ بن سعید میرے تھا۔ اور مغیرہ بن سعید میرے والد امام محمد باندھا کرتا تھا۔ اور مغیرہ بن سعید میرے والد امام محمد باقر پر جھوٹ باندھا کرتا تھا۔ امام جعفر صادق کیرالتواء اور سالم بن ابی حقمہ اور ابو الجارود کی نسبت قراتے ہیں کہ یکذبون مکذبون کفار علیهم لعنت الله (رجال می ص ۱۹۰۰) جھوٹ باندھے والے کافر اللہ کی ان پر لعنت ہو امام جعفر صادق کا قول ہے کہ ھل انبئکم علی من تنزل الشیاطین تنزال علی کل افاک اثیم کے مصداق یہ سات ہیں مغیرہ بن سعید۔

بنان - صائد مهدى - حرث شاى - عبدالله بن الحرث - حزه بن عمارة الزيدى - ابو الخطاب (رجال معى من المام ابو الحسن رضاعليه السلام كذابين كى تفصيل بيان كرتے موسے قرماتے بين :

كان بنان يكذب على على بن الحسين عليهما السلام فاذاقه الله حر الحديد و كان مغيرة بن سعيد يكذب على ابى الحسن عليها السلام فاذاقه الله حر الحديد و كان محمد بن بشير يكذب على ابى الحسن موسى عليه السلام فاذاقه الله حرالحديد و كان ابو الخطاب يكذب على ابى عبدالله عليه السلام فاذاقه الله حرالحديد و الذى يكذب على محمد بن فرات (رجال كشى ص ١٩٥)

الین بان امام علی بن الحسین ملیما السلام پر جموت باندها کرتا تھا اللہ اسے گرم لوہ کا عذاب کی بیان امام علی بن الحسین ملیما السلام پر جموث باندها کرتا تھا۔ اللہ اسے گرم لوہ کا عذاب چکھائے اور ابو الحن موکی علیہ السلام پر جموث باندها کرتا تھا۔ اللہ اسے گرم لوہ کا عذاب چکھائے اور ابو الخطاب امام جعفرصادق پر جموث باندها کرتا تھا اور جو جمع پر جموث باندها کرتا تھا اور جو جمع پر جموث باندها کرتا تھا اور جو جمع پر جموث باندهتا ہے۔ اس المام جعفرصادق نے کی فرمایا ہے۔ انا اہل بیت صادقون لا تخلوا من کذاب یکذب علینا قیسقط صدقنا بکذبه علینا عند الناس ارحال کئی ص ۱۹۵) بینی ہم اہل بیت سے جی بی گر ایسے گذاب سے خالی نہیں جو ہم پر جموث باندهتا نہ باندهتا ہو جم پر جموث باندهتا ہے ہو گو بن ہم اس پر اس کے جموث باندھت ہو لوگوں کے نزدیک ہماری راسبازی گر جاتی اللہ کان یکذب علی ابی الحسن علی بن محمد الرضا علیه السلام و علی ابی اللہ کان یکذب علی ابی الحسن علی بن محمد الرضا علیه السلام و علی ابی محمد الحسن بن علی علیها السلام بعدہ (رجال کئی ص ۱۳۵۳) بینی عودہ بن کی ابی الحد اللہ کان یکذب علی المام اور اس کے بعد ابو الحدی علی بن محمد الرضا علیه السلام اور اس کی بعد ابو محمد الدوس کے اور اساب ہیں۔ بعد ابو محمد الدوس کی کمائی خود جمتدین شیعہ بن صادت انکہ بیس جرت انگیز اختلاف پا جاتا ہے۔ اس اختلاف کی کمائی خود جمتدین شیعہ کی نہائی سند سے خط اطاک تف رکیس المحد ثین شیعہ بی حدی بن سن می طوی تمذیب الاحکام کے دباچ کی نہائی سند سے خل اور الکھ جس سے ساور کی کھی ہیں۔

ذاكرنى بعض الاصدقاء ايده الله ممن اوجب حقه علينا باحاديث اصحابنا ايدهم الله ورحم السلف منهم وما وقع فيها من الاختلاف والمتباين والمنافاة والتضاد حتى لا يكاد يتفق خبر الاوبازائه ما يضاده ولا يسلم حديث الاوفى مقابلته ما نيا

Scanned with CamScanne

فيه حتى جعل مخالفونا ذلك من اعظم الطعون على مذهبنا و تطرقوا بذلك الر ابطال معتقدنا و ذكروا نه لم يزل شيوخكم السلف والخلف يطعنون على مخالفيهم بالاختلاف الذي يدينون الله به و يشنعون عليهم بافتراق كلمتهم في الفروغ و يذكرون ان هذا مما لا يجوزان يتعبد به الحكيم ولا ان ببيح العمل به العليم و قد و جدناكم اشد اختلافا من مخالفكم و اكثر تبائنا من مبائنيكم ووجود هذا الاختلاف منكم مع اعتقادكم بطلان ذلك دليل على فساد الاصل حتى دخل جماعة ممن ليس لهم قوة في العلم ولا بصيرة بوجوه النظر و معاني الا لفاظ شبهة وكثير منهم رحع عن اعتقاد الحق لما اشتبه عليه الوجه في ذلك و عجز عن حل الشبهة فيه سمعت شيخنا ابا عبدالله ايد الله يذكران ابا الحسين الهاروني العلوى كان يعتقد الحق ويلين بالامامة فرجع عنها لما التبس عليه الامر في اختلاف الاحاديث و ترك المذهب و دان بغيره لما لا يتبين له وجوه المعافي فيها وهذا بدل على انه دخل فيه على غير بصيرة واعتقد المذهب من جهة التقليد لان الاختلاف في الفروع لا يوجب ترك ما ثبت بالادلة من الاصول- انتبي بلفظه ا یک دوست (الله اس کی تائید کرے) نے جس نے اپنا حق ہم یر واجب کر دیا مجھ سے تذکرہ کیا جارے امحاب (اللہ ان کی تائیر کرے اور ان کے سلف پر رحم کرے) کی حدیثوں کے بارے میں اس اختلاف و تائن و منافات و تضاد کے بارے میں جو ان حدیثوں میں ہے۔ حتی کہ قریب نہیں کہ کوئی خبر طے مگراس کے مقابلہ میں اس کی ضد موجود ہے اور کوئی حدیث باقی نہیں مگراس کے مقالعے میں اس کے خلاف حدیث موجود ہے۔ یہاں تک کہ جمارے مخالفوں نے اس بات کو برے ے برا غین قرار دیا ہے۔ اور اس کے سبب وہ ہمارے عقیدہ کے باطل کرنے کے دریے ہیں اور بیان کرتے ہیں کہ تمہارے مشائخ سلف و خلف اینے مخالفوں کو اس اختلاف کا طعن دیتے رہے۔ جس کے ساتھ وہ اللہ کی اطاعت و عبادت کرتے تھے۔ اور ان مخالفوں کو فروع میں اختلاف کے سبب برا کتے رہے۔ اور ذکر کرتے رہے۔ کہ جائز نہیں کہ اس اختلاف کے ساتھ فدائے علیم کی عباوت کی جائے اور میہ جائز شیں کہ خدائے علیم اس پر عمل کرنے کی اجازت دے حالانکہ ہم و کھیتے ہیں کہ تم اپنے مخالفوں کی نسبت زیادہ اختلاف و تبائن رکھتے ہو اور تم میں اس اختلاف کا پایا جانا ہے اور اعتقاد ہے۔ کہ سے باطل ہے اصل کے فساد کی دلیل ہے یمال تک کہ ایک جماعت کو جن میں علمی قوت اور وجوہ نظرومعانی الفاظ کی بصیرت نہیں۔ شبہ پیدا ہو گیا۔ اور ان میں ہے

بت نے احتقاد حق سے ربوع کیا۔ ببکہ اس احتقاد میں وجہ ان پر مشتبہ ہوگئی اور وہ اس میں شبہ کے حل کرنے سے عاجز آگے۔ میں نے اپنے استاد ابو عبداللہ (اللہ اس کی تائید لرب) کو سناکہ بیان فرماتے سے کہ ابوالحسین ہارونی علوی حق کا معقد تھا۔ اور امامت کا قائل تھا۔ وہ امامت سے پر گیا۔ بب اختکاف احادیث میں اس پر وجہ مشتبہ ہوگئی۔ اور اس نے نہ بب کو چموڑ دیا اور غیر زبب اختیار کیا کیو نکہ احادیث امامت میں وجہ معانی اس پر ظاہر نہ ہوئے۔ اس سے پایا جاتا ہے کہ ابوالحسین بصیرت کے بغیر قد بس ما فاللہ ہوا تھا اور تقلید کی جست سے فد بہ کا معقد ہوگیا گئا کہ ابوالحسین بصیرت کے بغیر قد بس میں واضل ہوا تھا اور تقلید کی جست سے فد بہ کا معقد ہوگیا گئا۔ کو نکہ فروع میں اختکاف ان اصولوں کے چھوڑ دینے کا موجب نہیں جو دلیلوں سے فابت

مولوی سید ولدار علی صاحب مجتمدین کو سید حامد حسین صاحب نے استقصاء الافحام میں آیت اللہ فی العلمین لکھاہے اساس الاصول میں یوں رقرطراز ہیں۔

الاحاديث الماثورة من الائمة مختلفة جد الا يكاد يوجد حديث الا و في مقابلته ما ينافيه ولا يتفق خبر الا بازائه ما يضاده حتى صار ذلك سببا لرجوع بعض الناقصين عن اعتقاد الحق كما صرح به شيخ الطائفه في اوائل التهذيب والاستبصار و مناشى هذه الاختلاف كثيرة جدا من التقيه والوضع و اشتباه السامع و النسح والتخصيص والتقليد و غير تلك المذكور انه من الامور الكثيرة كما وقع التصريح على اكثرها في الاخبار الماثورة عنهم و امتياز المناشى بعضها عن بعض في باب كل حديثين مختلفين بحيث يحصل العلم واليقين بتعين المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النهى بلفظه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النه المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النه المنشاء عليا المنشاء عسير جدا فوق الطاقة كما لا يخفى النه عليا المنشاء عليا المنشاء عليا المنشاء عليا لا يخفى النه المنساء عليا المنساء عليا له عليا المنساء عليا المنساء

صیفیں جو آئے ہے منقول ہیں نمایت مختلف ہیں۔ قریب نہیں کہ کوئی صدیث پائی جائے گراس کے مقابلہ ہیں اس کے مقابلہ ہیں اس کے خلاف صدیث موجود ہے اور کوئی خبر نہیں ملتی گراس کے مقابلہ ہیں اس کی ضد موجود ہے یمال تک کہ یہ اختلاف بعض ناقص لوگوں کے اعتقاد حق ہے پھر جانے کا سبب ہوگیا جیسا کہ شیخ الطائفہ نے کتاب تمذیب اور استبصار کے شروع میں اس کی تصریح کی ہے اور ان اختلاف کے اسباب بہت ہیں۔ مثلاً تقیہ اور حدیثوں کا موضوع ہوتا اور سننے والے کا مشتبہ بو جانا اور تخصیص اور تقیید اور علاوہ ان ندکورات کے بہت امور ہیں جیسا کہ بو جانا اور تخصیص اور تقیید اور علاوہ ان ندکورات کے بہت امور ہیں جیسا کہ اگر کی حدیثوں میں ان میں سے اکثر کی تضریح کی گئی ہے۔اور ہر دو مختلف حدیثوں میں اسباب ان میں سے اکثر کی تصریح کی گئی ہے۔اور ہر دو مختلف حدیثوں میں اسباب اختلاف کو ایک دو سرے سے اس طرح انتمیاز کر لینا کہ سبب کے معین ہو جانے کا علم و یقین

م مل ہو جے نمازے مشکل بعکہ طاقت انسانی سے ہاہر ہے بعیریا کہ ہے شیرہ نہیں ہے۔ انھی مسل ہو جب شیعہ کی حدیثوں کے انسان کا امران اور اسباب المسان کا امراز طاقت بشران ع خدرج ہو۔ تو بید سوال پیدا ہو تا ہے کہ ان حالت میں صحت عدیث کا معیار کیا ہے فور کے بعد شیعہ قال کتاب اصول میں لکھتے ہیں۔ مسل اسلوں میں لکھتے ہیں۔

و منه الرواية المستقيضة المتواترة المعنى فانها منفاوت يسير ما الورة في اكر كتب الاصول فقى الكتاب الكفى بسند مو الوق عن ابى عبدالله قال قال رسول أمّة ان عنى كن حق حقيقته وعلى كل صواب نورا فماوافق كتاب الله فعلوه وما خلف كتاب الله فعلوه وما الامالى و ايضا في الكافي والمحاسن عن يوب عن الحرث قبل سمعت ابا عبدالله يقول كل شئى مودود الى الكتاب والسنة وكن حديث لا يو افق كتاب الله عن اختلاف الحديث يرويه من نشق به والسنة وكن حديث لا يو افق كتاب الله عن اختلاف الحديث يرويه من نشق به والمعاس الله عزو جن او من قول رصول الله و الا قالذى جاء كم به اولى به و هكذا اوردت بالمستند المتر معايضول ذكره

اور مجمد ان کے ایک روایت مستین بلکہ متوائر المعنی ہے کو تکہ وہ صدیث بتفاوت قلبل اکثر اسول کئی نو کشوری۔ کتب العلم ص ٣١) شی استہ معنی معتول ہے۔ چہ نچہ کتب کئی (اصول کئی نو کشوری۔ کتاب العلم ص ٣١) شی استہ معتبر صترت المام جعنر صدق علیہ السام ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا۔ رسول اللہ اللہ نے قرین کہ ہر حق پر حقیقت ہوتی ہے اور ہر صواب پر نور ہوتا ہے۔ پس جو صدیث کتاب اللہ کے موافق ہو اس کو چھوڑ دو۔ اور ایبا ہی کتاب اللہ سے موافق ہو اس کو چھوڑ دو۔ اور ایبا ہی کتاب الله شی موافق ہو اس ہے اور نیز کئی شی اور محان میں ایوب بن صارت ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا۔ شی شی ہے۔ اور نیز کئی شی اور محان میں ایوب بن صارت ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا۔ شی جنت اور جو صدیث کتب اللہ کے موافق نہ ہو جھوٹی ہیں۔ اور نیز ان دونوں کتابوں ہی این ابی جنت اور جو صدیث کتب اللہ کے موافق نہ ہو جھوٹی ہیں۔ اور نیز ان دونوں کتابوں ہی این ابی بعضر صلوق علیہ السام ہے اس صدیف کی مدیث کی بین دادی است ہوت جن پر ہم اختاد میں اور اس کے بیض دادی اسے ہوت جن پر ہم اختاد میں دادی سے ہوت جن پر ہم اختاد میں دادی سے ہوت جن پر ہم اختاد شی سے ہوت جن پر ہم اختاد شی سے ہوت کی دریاں اللہ ہے ہوت جن پر ہم اختاد شی سے ہوت کی سے ہوت کی سے ہوت کو بی سے جس کوئی صدیف کو شیارے پاک

کرتے میں طول ہوگا انتی۔ پس بنا ہر روایت بالا بطریق تواتر ثابت ہے کہ صحت حدیث کا معیار قرآن کریم ہے مگر شیعہ کا اصلی قرآن ان کے پاس موجود نہیں تو اب حدیث کی صحت یا عدم صحت کس طرح معلوم کی جائے۔ اور جب صحت یا عدم صحت معلوم نہ ہوئی تو ان ہر عمل کس طرح ہو۔ اور کس منہ سے اتباع رسول اور اتباع اہل بیت کا دعویٰ کیا جائے۔

شیعہ کے عقیدہ تحریف قرآن کے باعث جو الزام حضرت امیر علیہ السلام پر عاکمہ ہوتا ہے وہ انشاء اللہ تعالی آئندہ مناسب موقع پر نہ کور ہوگاء عقیدہ تحریف کی الی بی خرابیوں نے صدوق و علم المدی و فیخ الطاکفہ و ابو علی طبری کو عدم تحریف کے قابل ہونے پر مجبور کیا تھا۔ کیونکہ جب قرآن موجود کو محرف مانا جائے۔ تو اس کے احکام و قواعد پر عمل کیونکر ہو سکتا ہے۔ سید نعمت اللہ محدث جزائری سے یک سوال انفاا ہے۔ اور پھر خود بی اس کا جواب دیا ہے۔ چنانچہ کتاب الانوار میں ہے۔

فان قلت كيف جاز القراء ة في هذا القران مع مالحقه من التغيير قلت قدورد في الاخبار انهم امرواشيعتهم بقراء ة هذا الموجود من القران في الصلوة و غيرها والعمل باحكامه حتى يظهر مولانا صاحب الزمان فير تفع هذا القران من ايدى الناس الى السماء و يخرج القران الذى الفه امير المومنين فيقرء و يعمل باحكامه روى الكليني باسناده الى سالم بن سلة قال قرأ رجل على ابى عبدالله و انا استمع حروفامن القران ليس على ما يقرأها الناس فقال ابو عبدالله مه كف عن هذه القراء قواقرأ كما يقراء الناس حتى يقوم القائم فاذا قام قراء كتاب الله على حده واخرج المصحف الذي كتبه على و في هذا الحديث ان عليا لما فرغ من ذلك القران قال الهم هذا كتاب الله تعالى كما انزله الله على محمد و قد جمعته بين اللوحين فقالوا هوذا عندنا مصحف جامع فيه القران لا حاجة لنا فيه فقال اما والله ما ترونه بعد يومكم هذا ابدا انما كان على ان اخبر كم حين جمعته لتقرؤه والاخبار الواردة بهذا المضمون كئيرة جدا-

اگر تو اعتراض کرے کہ قرآن موجود میں باوجود اس کے محرف ہونے کے قراءت کیے جائز ہو۔
تو میں جواب دیتا ہوں کہ اخبار ائمہ میں وارو ہے کہ انہوں نے اپنے شیعوں کو نماذ وغیرہ میں اس قرآن کے پڑھنے اور اس کے احکام پر عمل کرنے کا تھم دیا ہے۔ یماں تک کہ امام المومنین نے بھم کیا تھا۔ اس وہ پڑھا جائے گا۔ اور اس کے اعمال پر عمل کیا جائے گا۔ کلینی نے بالاسناد روایت کی سے۔ کہ سالم بن سلمہ نے کما کہ ایک فخص نے امام جعفرصادق کے سامنے قرآن کے کئی حوف

اس طرح پڑھے کہ لوگ ویا نہیں پڑھتے۔ حالا تکہ میں من رہا تھا۔ پس امام نے فرمایا۔ بس اس قراء ت سے باز آ۔ اور پڑھ جس طرح لوگ پڑھتے ہیں۔ یمال تک کہ امام قائم علیہ السلام فلاہر ہوں۔ جب وہ ظاہر ہوں گے۔ تو قرآن کو ٹھیک طور سے پڑھیں گے۔ اور اس قرآن کو ظاہر کریں گے جے حضرت علی علیہ السلام نے لکھا تھا۔ اور ای حدیث میں ہے کہ جب حضرت علی ہی قرآن سے قارغ ہوئے۔ تو لوگوں سے کما کہ یہ اللہ کی کتاب ہے۔ جیسا کہ اس نے اسے حضرت علی ہی گھر پر نازل کیا ہے اور اس کو دو وقتیوں کے درمیان جمع کیا ہے۔ یہ من کر انہوں نے کما۔ گلب اللہ یہ جو ہمارے پاس یہ مصحف ہے۔ جس میں قرآن جمع ہے۔ ہمیں تممارے جمع کیے ہوئے قرآن کی ضرورت نہیں۔ پس حضرت علی نے فرمایا آگاہ رہو۔ خداکی قتم تم آج کے بعد اس کونہ و کھو گے۔ جمع پر تو یکی واجب تھا کہ جمع کرکے خمیس خبر دوں تاکہ تم اسے پڑھو۔ ویگر اخبار جو ویکھو گے۔ جمع پر تو یکی واجب تھا کہ جمع کرکے خمیس خبر دوں تاکہ تم اسے پڑھو۔ ویگر اخبار جو اس بارے میں منقول ہیں۔ بہت زیادہ ہیں۔ انتی

ای طرح مولوی سید محر مجتد بن سید ولدار علی مجتد ہیں۔ ترتیب آیات موجودة الآن؟
ظلور حفرت صاحب العصر فزد فرقد المامیہ قابل تمسک و احتجاج است از جمت اینکہ انکمہ انام شعیان فود دا
ور ذمان غیبت بنا بر ضرورت و اضطرار و عدم امکان و صول شال بترتیب واقعی فزولی اجازت عمل برآل داده
اند نه اینکه آل ترتیب فی نفسه مطابقت بواقع وارد و واجب العل از حیثیت واقعیت است پس در حقیقت
تمسک بترتیب کذائی تمسک بقول الم باشد نه بنفس ترتیب فذکور و ایس تمسک نیز برسیل عموم و کلیت
شست بل مالم یثبت خلافه بنص منهم علیهم السلام اولم یود الی ها یخالف نصوصهم و
الا لوجب المصیر الے خلافه (مربت دیرہ - جلد دوم م ۱۸)

اب جو آیات قرآنی کی ترتیب موجود ہے۔ وہ فرقہ امامیہ کے نزدیک حضرت امام کے ظہور بک قابل تمسک و احتجاج ہے اس لیے کہ اثمہ انام نے ضرورت و اضطرار کے باعث اور اصلی نزولی ترتیب کے حصول کے ناممکن ہونے کے سبب ترتیب موجودہ پر عمل کرنے کی اجازت وی ہے۔ نہ یہ کہ ترتیب فی نف مطابق واقع اور بلحاظ واقعیت واجب العل ہے۔ پس ترتیب موجودہ سے تمسک کرنا حقیقت بی تول امام سے تمسک ہے۔ نہ لفس ترتیب فدکورہ سے۔ اور یہ تمسک بھی عموم و کلیت کے طور بم نمیں بلکہ اس وقت تک ہے کہ نفس اتمہ سے اس کا خلاف خابت نہ ہو۔ یا یہ تمسک نصوص اتمہ کا خلاف کا موجب نہ ہو۔ ورنہ اس کے خلاف کی طرف واجب ہے۔ استی مولوی سیدنا ناصر حسین صاحب کا موجب نہ ہو۔ ورنہ اس کے خلاف کی طرف واجب ہے۔ استی مولوی سیدنا ناصر حسین صاحب نے یوں لکھا ہے۔ امامیہ کے حقیدے میں تا خلمور قائم آل مجم علیم السلام اس قرآن پر عمل اور اس سے استدلال واجب ہے بغیراس کی قراء ت کے نماز باطل ہے (رشق النبال علی اصحاب الفیال ص ۱۳۳)

عدت جزائری نے جو حدیث کلینی نقل کی ہے۔ اس میں قرآن موجود کی صرف قراءت کا تھم ہے۔ اور ادکام کا کچھ ذکر نہیں۔ وہ اخبار ائمہ میری نظرے نہیں گزرے۔ جن میں یہ تھم ہو کہ اگرچہ قرآن موجود محرف ہے گر تاظہور امام زمان اس کے ادکام پر عمل کرد اور اس سے تمک و استدلال کرد۔ برطال ایسے اخبار کی صحت میں کلام ہے۔ مولوی سید محمد مجتد نے صرف تر تیب موجودہ کا ذکر کیا ہے۔ مالانکہ وہ اور قتم کی تحریف کے بھی قائل ہیں۔ چنانچہ چار مشرین تحریف کی تروید میں لکھتے ہیں۔ اما عدم تحریف بالمرة ولو ببعض الالفاظ او بحدف بعض من الاحوف السبعة پی قول بال نمایت منتقرب و مشیعد است انہت دیرہ ، جددد م میں ا

رہا تحریف کا بالکل نہ پایا جانا خواہ بعض الفاظ کے ساتھ ہو۔ یا احرف سبعہ میں سے بعض کے مذف کرنے سے ہو۔ سو اس کا قائل ہونا نمایت غریب و بحید سمجھا جاتا ہے۔ اسی۔ علاوہ اذیں سید موصوف نے جو احتیٰاء قائم کیا ہے وہ اسمٰی کی گھڑنت ہے جس کی وجہ ظاہر ہے قرآن موجود کو بلحاظ تر تیب و بادہ و الفاظ و اعراب محرف جاننا اور پھر اس کو واجب العل بتانا کسی صاحب عقل و ہوش کا کام نہیں اور الی تعلیم کو ائمہ عظام کی طرف منسوب کرنا از قبیل عذر گناہ یہ تر از گناہ ہے کیا قرآن کسی کے چھپالے ایک تعلیم کو ائمہ عظام کی طرف منسوب کرنا از قبیل عذر گناہ یہ تر از گناہ ہے کیا قرآن کسی کے چھپالے سے چھپ سکتا تھا۔ یا کسی کی تحریف سے وہ محرف ہوسکتا تھا؟ ائمہ عظام جو خود قرآن پر عامل رہے۔ اور دو مردن کو اس پر عمل کرنے کی ہدایت کرتے رہے۔ کیا وہ اسے محرف سمجھ کر ایسا کرتے تھے؟ ان سوالوں کے جواب کے بواب کے لیے امور ڈیل پر غور کیجے۔

(۱) الله تعالیٰ نے قرآن کی نبست بردی تاکید سے فرما دیا ہے کہ ہم اس کے تکسیان ہیں۔ پھر کسی بشر کی کیا مجال ہے۔ اسے گم کر دے یا اس میں تحریف کر دے۔ انشاء الله سے بحث مفصل طور پر آئندہ نہ کور ہوگی۔

(۲) حدیث معنوی کے درجہ کو پنچی ہوئی ہے جا کہ مستفیض اور توائر معنوی کے درجہ کو پنچی ہوئی ہے چنانچہ مولوی سید دلدار علی مجتمد اسناس الاصول میں لکھتے ہیں۔

الرابع منها ماصح عن النبي بروايته العام والخاص انه قال اني تارك فيكم ما ان تمسكتم به لن تضلوا كتاب الله و عترتي فانهما لن يفترقاحتي يرواعلى الحوض الكوثر

ترجمہ۔ "چہارم ان میں سے یہ ہے کہ سی اور شیعہ کی روایت سے معت مروی ہے کہ نبی الرجمہ۔ المجہارم ان میں مے یہ ہے کہ سی اور شیعہ کی روایت سے مسک کرو کے تو ہرگز مراہ نہ الرجم اس سے تمسک کرو کے تو ہرگز مراہ نہ الرجم اس سے تمسک کرو کے تو ہرگز مراہ نہ الرجمہ اللہ میں عرب اہلیت ہیں اس ختیق یہ دونوں ایک اور میری عرب البیت ہیں اس ختیق یہ دونوں ایک

دو سرے سے علیحدہ نہ ہو تھے۔ یمال تک کہ حوض کو ٹر پر میرے پاس آئیں گے۔" انتمیٰ مولوی سید محمد مجتمد بن سید ولدار علی مجتمد نے یوں لکھا ہے۔

مخفى نماند كه حديث انى تارك فيكم الثقلين ان تمسكتم بسمالن تضلو بعدى كتاب الله وعترتى ابل بيتى لن يفوقا حتى يروا على الحوض بحد استفاضه و اشتمار بلك بدرجه تواتر معتوى رسيده (لمن الراح ، عبور علمان الطالح ص ١٤٨)

ترجمہ: "بوشیدہ نہ رہے کہ انی تارک فیکم الثقلین الحدیث استفاضہ و شرت کی حد کو بلکہ لوائر معنوی کے درجہ کو پہنچی ہوئی ہے۔" انتی

تاظرین کو یاد ہوگا کہ شخ الطائفہ طوی نے حدیث تقلین کو عدم تحریف قرآن کی ایک دلیل قرار ویا ہے۔ وہ کتے ہیں کہ یہ حدیث والات کرتی ہے۔ اس امریز کہ قرآن ہر زمانے ہیں موجود ہوتا کہ اس سے تمک ہو سکے۔ ورنہ حضور اقدس سٹنج کا یہ ارشاد لغو ٹھرتا ہے۔ علامہ محسن کاشی صاحب تغیر صافی نے اس کا ہواب یہ ویا ہے کہ قرآن کے ہر زمانے میں موجود ہوئے کے لیے کافی ہے کہ جمع قرآن توائم کے پاس محفوظ و موجود ہو۔ اور حسب ضرورت اس کا ایک حصہ ہمارے پاس ہو۔ اس جواب میں گی امور کا فیان خور ہیں۔ (ا) آنخضرت سٹن کے اس کا ایک حصہ ہمارے پاس ہو۔ اس جواب میں گی امور کا فیان خور ہیں۔ (ا) آنخضرت سٹن کے اس کا اس مقفل کر ایس اور امت گرائی میں رہے۔ اگر وہ ہاات کو جمع قرآن تو کیا اس کا ایک حصہ ہمی شیعہ کے پاس موجود نہیں۔ کو خمیع قرآن تو کیا اس کا ایک حصہ ہمی شیعہ کے پاس موجود نہیں۔ کو نکہ جو موجود ہے وہ اصلی قرآن کا ایک حصہ نہیں بن سکا۔ اس حصہ بمی شیعہ کے پاس موجود نہیں۔ کو نکہ جو موجود ہے وہ اصلی قرآن موجود کو غیر محرف نہ الجمہ اللہ کہ اہل سنت و جماعت ثمل اکبر سے متمک ہونے کا وعوے نہیں کر سکتے۔

(٣) اصول كافي ص ٢٦٠ ميس ي-

عن ليث بن ابى سليم رفعه قال قال النبى صلى الله عليه واله وسلم نوروا بيوتكم بتلاوة القرآن ولا تتخذوها قبورًا.

ترجمہ۔ "لیٹ بن الی سلیم سے مرفوعاً روایت ہے کہ نی طائع الے فرمایا۔ کہ تم اپنے گھروں کو قرآن کی تلاوت سے روشن کرو۔ اور ان کو قبریں نہ بناؤ۔" انتی



حضور اقدس سلطین کابید ارشاد بھی دلالت کرتا ہے۔ کہ قرآن ہر زمانے میں موجود ہو۔ آکہ امت اس کی تلاوت سے اپنے گھروں کو روش کرتی رہے۔ پس اگر قرآن موجود کو محرف مانا جائے تو حضور اقدس بانی ہو و ای کابید ارشاد لغو تھمر تا ہے۔ و نعو فر بالله من ذلک

(٣) حضرت على كرم الله وجهه ايك خطبه قرآن كي نسبت يون فرمات بين-

ثم انزل علیه الکتاب نورا لا تطفا مصابیحه و سراجا لایخبو توقده و بحرا لا یدرک قعره و منها جالایضل نهجه و شعاعا لایظلم ضوئه و فرقانالایخمد برهانه و تبیانا لا تهدم ارکانه و شفاء لا تخشی اسقامه و عزا لا تهزم انصاره و حقا لا تخلل اعوانه فهو معلن الایمان و بجوبته و ینابیع العلم و بحوره و ریاض العدل و علارانه و اثانی الاسلام و بنیانه - (نسج البلاغه مطبوعه بیروت و جزو اول ص ۱۳۲ پر الله تعالی نے آخضرت میں تا پر کتاب نازل کی وه کتب نور ہے کہ جس کے چراغ بجمائے نہیں پائی جا جائے اور چراغ بجمائے نہیں بائی جا حق اور چراغ ہجس کی دہ نہیں پائی جا حق اور راست و کشادہ رہا ہے کہ جس پر چنے ہے کوئی عمراہ نہیں ہو سکا۔ اور شعاع ہے کہ جس کی دوشق ہیں کی دوشق ہیں کا دوشقا ہے کہ جس کی بان گل نہیں کی جائے اور شقا ہے کہ جس کی ادا کان گرائے نہیں جائے۔ اور شقا ہے کہ جس کی ادا کان گرائے نہیں جائے۔ اور شقا ہے کہ جس کی ادا کان گرائے نہیں جائے۔ اور شقا ہے کہ جس کی ادا کان گرائے نہیں وی جائے اور شقا ہے کہ جس کے ادا کان گرائے نہیں وی جائے اور شقا ہے کہ جس کے ادا کان گرائے نہیں وی جائے اور شقا ہے کہ جس کے ادا کان گرائے نہیں وی جائے اور شائی اور جس کے مددگاروں کو خوار نہیں کیا جائے۔ پس وہ ایجان کا معدن اور اس کا وسط ہے۔ حق ہے کہ جس کے مددگاروں کو خوار نہیں کیا جائیاں کا معدن اور اس کا وسط ہے۔ در طائے کر خس کے مددگاروں کو خوار نہیں کیا جائیاں کا معدن اور اس کا وسط ہے۔ در طائے کر خس کے مرجھے اور اس کے سمزد ہیں۔

اور عدالت کے حوض اور اس کے تالاب ہیں۔ اور ای پر اسلام اور اس کی ممارت قائم ہے۔
اختی۔ حضرت امیر علیہ السلام کے اس ارشاد کے موافق قرآن کریم کو کوئی نہیں چھپا سکا۔ اور نہ اب گرف کرسکتا ہے۔ وجوہ مندرجہ بالا سے ظاہر ہے کہ قرآن ہر ذمانے میں اپنی اصلی حالت پر رہا ہے۔ اس میں کی طرح کی تحریف نہیں ہوئی۔ اور ان سے یہ بھی پایا جاتا ہے کہ ائمہ عظام جس قرآن کو پڑھے میں کی طرح کی تحریف نہیں ہوئی۔ اور ان سے یہ بھی پایا جاتا ہے کہ ائمہ عظام جس قرآن کو پڑھے رہے۔ اور جس سے اور وہ سرول کو اس پر عمل کرنے کی ترغیب دیتے رہے وہ ان سے۔ اور جس سے استدلال کرتے رہے اور وہ سرول کو اس پر عمل کرنے کی ترغیب دیتے رہے وہ ان کے نزدیک قرآن اصلی تھا۔ اور وہ باعتراف شیعہ میں قرآن ہے۔ جواب ہمارے پاس ہے۔ مزید توضیح کے سے چند اور او باعتراف شیعہ میں قرآن ہے۔ جواب ہمارے پاس ہے۔ مزید توضیح کے سے چند اور اور چیش کے جاتے ہیں۔

(۱) حضرت اميرعليه السلام لوكول سے يول خطاب فرمائے بيں- الم اعمل فيكم بالثقل الاكبر و اترك فيكم بالثقل الاحبر و اترك فيكم الثقل الاصغو (شج البلاغ - جزؤ اول نمبر ٩٣)

کیا میں نے تم میں ثقل اکبر (قرآن) پر عمل نہیں کیا- اور کیا میں نے تم میں ثقل امغر (حسنین) کو نہیں چھوڑا- انتی- اس سے ظاہر ہے کہ حضرت امیر علیہ السلام نے جس قرآن پر عمل کیا وہ ثقل اکبر یعنی اصلی قرآن تھا- اور وہی آج ہمارے پاس ہے-

(۲) حضرت اميرعليه السلام ائے صاحبزادوں لعن حسين بنات کو وصیت کرتے ہوئے فراتے ہیں۔ او صيکما و جميع ولدی و اهلی و من بلغه کتابی بتقوی الله (الی ان قال) والله الله فی القران لا يسبقكم بالعمل به غير كم (نيج البلاغه جزو ثانی ص ٢٣)

میں تم دونوں کو اور اپنی تمام اولاد کو اور جے میری بیہ وصیت پنچ۔ اس کو وصیت کرتا ہوں کہ اللہ عند دُرو۔ (یمان تک کہ آپ نے فرمایا) اور قرآن کے بارے میں اللہ سے ڈرو قرآن پر عمل کرنے میں کوئی اور تم سے سبقت نہ لے جائے اسی۔ اس سے ظاہر ہے کہ حضرت امیر علیہ السلام نے ائمہ وغیرہ ائمہ کو ایک ہی قرآن پر عمل کرنے کی وصیت کی۔ اور وہ قرآن بجر تعل المبر السلام نے ائمہ وغیرہ ائمہ کو ایک ہی قرآن پر عمل کرنے کی وصیت کی۔ اور وہ قرآن بجر تعل المبر مسلما کہ جس پر آپ خود عمل کرتے رہے۔

(١٣) حفرت مولى على مرتضى بناته ابل بعره سے خطاب كرتے ہوئے فرماتے ہيں۔

و عليكم بكتاب الله فانه الحبل المتين والنور المبين والشفاء والنافع والصرى النافع والعصمة للتمسك والنجاة للمتعلق لا يعوج فيقام ولا يزيغ و يشستعتب و لا تخلقه كثرة الردو ولوج السمع من قال به صدق و من عمل به سبق- (نج ابرائد- 2 ادل ص ۱۹۲)

تم كتاب خداكو لازم پكڑو كيونك قرآن مضبوط رى اور ظاہر نور اور شفائ نافع اور بياس بجائے والى سيراني اور تمك كرنے والے كے ليے عصمت اور عامل كے ليے نجات ہے۔ قرآن شيرها نميں كہ سيدهاكيا جائے اور حق سے دور نہيں كہ حق كی طرف واپس لايا جائے تلاوت كی كثرت اور اس كا بكثرت سننا اسے پرانا نہيں بنا تاجو اس كا قائل ہے وہ سچا ہے۔ اور جو اس پر عامل ہوہ كو سبقت لے كيا۔ انتى يمال حفرت اميرعليه السلام نے قرآن كے اوصاف بيان فرماكر اہلى بعرہ كو اس پر عمل كرنے كى ترقب دى ہو اوصاف بيان فرماكر اہلى بعرہ كو اس پر عمل كرنے كى ترغيب دى ہے اور وہ اوصاف يہ بيں۔ اول يہ كہ قرآن ايك مضبوط رى سبين اس پر عمل كرنے كى ترغيب دى ہے اور وہ اوصاف يہ بيں۔ اول يہ كہ قرآن موش جمالت سے جو اسے پكڑے رہے گا وہ دو ذرخ بيں گرنے سے في رہے گا۔ دو سرے يہ كہ قرآن فور سبين ہو اس كى روشنى بيں انسان منزل مقصود پر پہنچ سكتا ہے۔ تيسرے يہ كہ قرآن ان كو سيراب كرديتا ہے جس كى روشنى بيں انسان منزل مقصود پر پہنچ سكتا ہے۔ تيسرے يہ كہ قرآن ان كو سيراب كرديتا ہے۔ پانچویں يہ كہ جو لوگ حيات ابدى كے پائى كے پياسے ہيں يہ قرآن ان كو سيراب كرديتا ہے۔ پانچویں يہ كہ جو قرآن سے تمك كرتا ہے اور اس پر عمل كرتا ہے وہ نجات پاتا ہے۔ پوشا یہ سے۔ پانچویں يہ كہ جو قرآن سے تمك كرتا ہے اور اس پر عمل كرتا ہے وہ نجات پاتا ہے۔ پوشا یہ سے۔ پانچویں يہ كہ جو قرآن سے تمك كرتا ہے اور اس پر عمل كرتا ہے وہ نجات پاتا ہے۔ پوشا یہ سے۔ پانچویں یہ كہ جو قرآن سے تمك كرتا ہے اور اس پر عمل كرتا ہے وہ نجات پاتا ہے۔ پوشا یہ كہ جو قرآن سے تمك كرتا ہے اور اس پر عمل كرتا ہے وہ نجات پاتا ہے۔ پوشا یہ

نہ کہ راہ حق سے متجاوز ہے کہ حق کی طرف لایا جائے لینی اس میں کوئی تریف و تبدیل نہیں ہوئی۔ سانویں یہ کہ قرآن کلام انسانی سے بالکل مختلف ہے کلام انسانی کو اگر بار بار پڑھا جائے تو ول اکتا جاتا ہے اور کان کو اچھا معلوم نہیں ہوتا۔ گر قرآن کا یہ فاصا ہے کہ اسے کئی ہی بار پڑھا یا سنا جائے اس کے لطف و حس میں سر موفرق نہیں آتا۔ بلکہ وہ سرا سراس مصرع کا مصداق ہے۔ ھو المسک ھاکور ته یتضوع یہ غیر محرف قرآن جس کے اوصاف بیان ہوئے وہی۔ جس پر حضرت علی کرم اللہ وجہ نے فود عمل کیا اور دو سروں کو عمل کرنے کی ہدایت فرمائی۔ اور جس پر حضرت علی کرم اللہ وجہ نے فود عمل کیا اور دو سروں کو عمل کرنے کی ہدایت فرمائی۔ اور قرآن نہیں جس کی نبست یقول شیعہ امیر نے فرما دیا تھا کہ اللہ کی قتم تم آج کے بعد اسے ہرگز نہ دیکھو گے۔ ورنہ کلام امیر لغو تھمرے گا۔

(٣) سلیم بن قیس نے روایت کی ہے کہ حضرت عثان کی خلافت میں میں نے حضرت علی کو معجد رسول اللہ طاق کی میں دیکھا۔ مهاجرین و انصار کی ایک جماعت اپنی اپنی فضیلت کا ذکر کرتی تھی۔ اس مجمع میں خضرت علی سے استحقاق خلافت پر ولا کل پیش کئے ہیں۔ یہ طویل روایت ہے (دیکھو کتاب الاحتجاج للفری من ۲۰ تا ۲۷) اس میں یوں ہے

ثم قال طلحة لا اراك يا ابا الحسن اجبتنى عما سالتك عنه من امر القران لا تظهره للناس قال يا طلحة عمدا كففت عن جو ابك فاخبرونى عما كتب عمرو عثمان أقران كله ام فيه ما ليس بقران قال طلحة بل قران كله قال ان اخذتم بما فيه نجو تم من النار و دخلتم الجنة

پھر طلحہ نے کہا اے ابو الحن (یعنی حضرت امیر علیہ السلام میں دیکھتا ہوں کہ آپ نے میرے سوال ، کاجواب نہیں دیا۔ اور وہ سوال اس قرآن کے متعلق ہے جے آپ لوگوں کو نہیں دکھاتے حضرت علی نے جواب دیا اے طلحہ میں تیرے سوال کا جواب سے عمدا رک گیا۔ تم جھے بتاؤ کہ جو کچھ عمرو عثمان بڑائٹر نے لکھا۔ کیا وہ سب قرآن ہے یا اس میں ایسا بھی ہے جو قرآن نہیں۔ طلحہ نے جواب ویا۔ بلکہ وہ سب قرآن ہے۔ حضرت علی نے فرمایا کہ اگر تم اس پر عمل کرو گے تو دوزخ سے نوا۔ بلکہ وہ سب قرآن ہے۔ حضرت علی سے خواب کا جم اس پر عمل کرو گے تو دوزخ سے نوا۔ بلکہ وہ سب قرآن ہے۔ اسمی مال ہوگے۔ اسمی اس سے ظاہر ہے کہ حضرت عمرو عثمان کا جمع کمدہ قرآن خالص کلام اللی تھا۔

(٥) حضرت امام حسن بن على بن ابي طالب فرمات بي

ان هذا القران فيه مصابيح النور و شفاء الصدور فليجل جال بضوء ه و ليلج الصفة قلبه فان التفكير حيوة القلب البصير كما يمشى المستنير في الظلمات بالنور

(كشف الغمد في معرفة الائمه مصنف على بن عيسلي اربلي - مطبوعه ١٢٩٣ه ص ايدا)

یہ قرآن ہے جس میں نور کے چراغ اور سینوں ہیں شفا ہے کہ جلا دینے والا اس کی روشنی کے ساتھ جلا دیے۔ اور اس کا دل بیان اللی میں محو ہو جائے کیونکہ فکر ول بینا کی زنرگی ہے۔ جسیا کہ مشعل والا تاریکیوں میں اس مشعل کے ذریعے چلتا ہے انتی۔ حضرت الم حن براش فرا دیا۔ جس پر اس وقت عمل کیا جاتا تھا۔ اور وہ کی قرآن ہے جو ہمارے یاس موجود ہے۔

(٢) اصول كافي ص ١١٥٣ يس ٢٠-

عن سعد الخفاف عن ابى جفع عليه السلام قال يا سعد تعلموا القران ياتى يوم القيمة في احسن صورة (الى ان قال) فيخر تحت العرش فينا ديه تبارك و تعالى يا حجتى في الارض و كلامى الصادق الناطق ارفع راسك و سل تعط واشفع الحديث.

سعد خفاف سے روایت ہے کہ امام محر باقر علیہ السلام نے بچھ سے فرمایا اے سعد تم قرآن سیموں کیونکہ قرآن قیامت کے ون نمایت ہی انجی صورت میں آئے گا۔ یمال تک کہ فرمایا امام نے)
پس عرش کے بینچ سجدے میں گر پڑے گا۔ اللہ تبارک و تعالی اسے پکارے گا۔ اے میری جت ونیا میں اور اسے میرے صادق و ناطق کلام تو اپنا سمراٹھا اور مانگ تجھے ویا جائے گا۔ اور شفاعت کر تیری شفاعت مائی جائے گا۔ اور شفاعت کر الدیث اس سے ظاہر ہے کہ امام محمد باقر علیہ السلام کے وقت میں اصلی قرآن موجود تھا۔ جو قیامت کے ون شفاعت کرے گا۔ اور اسی پر عمل کیا جاتا تھا اور یہ مسلم ہے کہ وہ میری قرآن تھا جو ہمارے یاس ہے۔

(2) اصول كافى من 100 يس ب

عن ابى عبدالله عليه السلام قال ان هذا القران فيه منا رالهدى و مصابيح الدجى فليجل جال بصره و يفتح للضياء نظره فان التفكر حياة قلب البصير كما يمشى المستير في الظلمات

بے شک اس قرآن میں ہواہت کا چراغدان اور تاریکیوں کے چراغ ہیں۔ بس چاہیے کہ جلادی والا اپنی آنکھ کو جلا دے۔ اور اپنی آنکھ کی روشتی کے لیے کھولے۔ کیونکہ قلر مرد بینا کے ول کا دعری ہے جیسا کہ مشعل والا تاریکیوں میں چاتا ہے۔ انتی۔ (۸) الم موی کاظم علیہ السلام کی نسبت کشف الغمہ میں ہے ہیں ہے

كان افقه اهل زمانه كما قد مناو احفظهم لكتاب الله عزو جل و احسنهم صوتا بالقران وكان اذا قراء يحزن و يبكي و يبكي السامعين "

امام موی کاظم اپنے زمانے کے لوگوں میں سب سے بڑھ کر فقیہ تھے۔ بور آن پڑھنے میں زیادہ خوش ہے اور اللہ عزو جل کی کہاب کے سب سے بڑے حافظ تھے۔ اور قرآن پڑھنے میں زیادہ خوش آواذ تھے۔ بب آپ قرآن پڑھا کرتے تو شمگین ہوتے اور روتے اور سننے والوں کو رلا دیتے ابتی ۔ آواذ تھے۔ بب آپ قرآن پڑھا کرتے تو شمگین ہوتے اور ردانے اور تنظیم اس کے امام مولی کاظم جس قرآن کو پڑھ کرسایا کرتے تھے وہ کتاب اللہ تھی۔ فلاصہ کلام یہ کہ جو قرآن ہمارے پاس موجود ہے اس پر آئمہ عظام اور دیگر اہل اسلام ہر زمانے میں عمل کرتے رہے۔ اور آئمہ عظام اسے غیر محرف کائل قرآن سی محتے تھے انہوں نے جو قرآن کے فضائل میں میان کے بیں وہ کسی محرف قرآن پر عاکد نہیں ہو سکتے۔ بلکہ وہ اصلی قرآن کے فضائل ہیں۔ چانچہ تفیرامام حس عمری مطبوعہ مطبع جعفری اسادھ ۲۲۳س میں ہے۔

قال رسول الله ان هذا القران هو النور المبين والحبل المتين والعروة الوثقى والدرجة العليا والشفاء الاشفى والفضيلة الكبرى والسعادة العظمى من استضاء به رزه و من عقد به اموره عصمه و من تمسك به انقذه ولم يفارق احكامه رفعه الله و من استشفى به شفاه الله من اثره على ما سواه هذاه الله و من طلب الهدى في غيره اضله الله و من جعله شعاره و دثاره اسعده الله ومن جعله امامه الذى يقتدى به و معوله الذى ينتمى اليه اداه الله الى جنت النعيم.

 لا تحصى عجائبه ولا تبلى غرالبه فيه مصابيح الهاي و منا والحكمة و دليا المعرفة عن عرف الصغه فليحل حال بصره وليبلغ الصفة نظره يسج من عطل و ينخلص من نشب فان التفكر حيوة قلب البصير كما بعشى المستير في الظلمات بالنور

1 {

قرآن کے عائب گار میں نہیں آئے اور اس کے فوا بی الے نہیں اور اس نے اور اس کے فوا بی الے نہیں اور اس نے اور اس نے اور اس نی مونی کا جاند کی الله اور اس نے اس نے اور اس کی کراغ اور صفت کا منا رہ اور اس کی کہا ہے اور اس کی کو آن سے بیان اللی کو بہت وہ ہاا است نے بیات پائے کا اور دام شرمات سے جموث بات کا اور دام شرمات سے جموث بات کا کور کہ مار مرورینا کے ول کی زندگی ہے بیریا کہ مقبل کا اور دام شرمات سے جموث بات کو کر مورینا کے ول کی زندگی ہے بیریا کہ مقبل والا تاریل ول میں اس مشمل کے لور کے ورقع پہنا ہے۔ اس بی بال والا تاریل ول مقبل قرآن بالکل قلط ہے اس مقبل کے ورقع پہنا ہے۔ اس فرق منوب کردی گل مقبل سے خام پر محض افتراء ہے شاید کوئی ہوتم یہاں یہ موال لرے کہ اس قدر احادیث میں وہ آئمہ مظام پر محض افتراء ہے شاید کوئی ہوتم یہاں یہ موال لرے کہ اس قدر احادیث مشکلہ امامت شیعہ کے ہاں اصل اصول احتفادیات ہے جینا کہ احادیث ویل سے ظاہر ہے۔ مشکلہ امامت شیعہ کے ہاں اصل اصول احتفادیات ہے جینا کہ احادیث ویل سے ظاہر ہے۔ مشکلہ امامت شیعہ کے ہاں اصل اصول احتفادیات ہے جینا کہ احادیث ویل سے ظاہر ہے۔ (ا) عن الفضیل عن ابی جعفر علیہ السلام قال بنی الاسلام علی خدمس الصلوق والن کو قو الصوم و الدحج و الولایة و لم پناد بشنی ما لودی بالولایة یوم الفدیر داس

فضیل سے روایت ہے کہ امام محمد باقر علیہ السلام نے فرمایا کہ اسلام بانچ چیزوں پر بنایا سیا ہے ممازہ زسرہ قام نج ۔ روزہ اور ولایت اور کس چیز لی الیم مناوی نہیں کی کئی جیا کہ ندر کے دن ولایت کی مناوی کی گئی۔ انسی

(۲) عن زرارة عن ابى جعفر عليه السلام قال بنى الاسلام على خسسة اشياء على الصلوة والزكوة والحج والصوم والولاية قال زرارة فقلت و اى شنى من ذلك افضل فقال الولاية افضل السلام المصل المسلم المسلم

زبارہ سے روایت ہے کہ امام محمد باقرطیہ السلام نے فرمایا کہ اسلام بائج چیزوں پر بنایا کمیا ہے۔ نماذ - زکوۃ - ج - روزہ اور ولایت پر ذرارہ کا بیان ہے کہ میں نے بع چماکہ ان میں سے افضل کون ک چیزہ اس پر امام نے جواب ویا کہ ولایت سب سے افضل ہے۔ انتی (٢) عن الصادق عليه السلام قال اثاثي الاسلام ثلثة الصلوة والزكوة والولاية لا تصح واحدة منهن الابصاحبتها (اسول كاني س ٢٦٨)

ام صادق عن فرمایا که اسلام تین چیزوں پر قائم ہے نماز و زکوۃ ولایت ان میں سے کوئی ووسرے کے بغیر صحیح نہیں - (انتی)

(م) الاختاج بن جناب الم جعفر صادق سے معقول ہے کہ جب اللہ تعالی نے چاند کو پیدا کیا تو اس پر لا الله الا الله محمد رسول الله علی اهیر المو هنین لکھ دیا۔ جو تم چاند پر سیابی دیکھتے ہو یہ وہی تحریر ہے (عاشیہ ترجمہ شیعہ ص ۱۰۹) اس مقام پر مترجم شیعی یوں لکھتا ہے۔ حقیر کے خیال میں کال کلمہ طیبہ کی ٹورائیت نے چاند کو ماند کر دیا۔ اس سے ظاہر ہو تا ہے کہ شیعہ کے نزدیک کلمہ طیبہ کال نمیں ہوتا جب کہ شیعہ کے نزدیک کلمہ طیبہ کال نمیں ہوتا جب تک کہ علی امیرالمومنین ماتھ نہ بڑھا جائے۔

(۵) حدثنا سلمة بن الخطاب عن على بن سيف ابن عميرة عن العباس بن عامر بن احمد بن زرق الغمشانى عن محمد بن عبد الرحمٰن عن ابى عبد الله انه قال ولا يتنا ولاية الله التى لم يبعث نبياقط الابها - (بماز الدربات المناطور ايران ١٢٨٥ يز فافي باسم) تجمد (كذف اساد) امام جعفر صادق عليه السلام في قرمايا كه جمارى ولايت الله كى ولايت مه كد مراكى اور شے كے ساتھ خدا نے كھى كوئى پنيمبر نہيں بھيجا - انتى -

(۱) حدثنا العباس بن معروف عن سعد ان بن مسلم عن صباح المزنى عن الحرث بن حضيره عن حبة العرفى قال قال المومنين ان الله عرض ولا يتى على اهل السموت و على اهل الارض اقربها من اقروانكرها من انكرانكرها يونس فحبسه الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرات عن الله في بطن الحوت حتى اقربها السائر الدرايات عن الله في بطن الله بطن ال

(مخذف اسناد) امير المومنين عليه السلام في فرمايا كه الله في ميرى ولايت آسان والول اور زمين والول إور زمين عليه والول بيش كى- اس كا اقرار كياجس في كيا اور اس كا انكار كياجس في كيا- حضرت يونس عليه الملام في انكار كيا للذا الله في السيد في بيث مين قيد كر ديا- يمال حك كه ميرى ولايت كان في المنا الله في السيد في بيث مين قيد كر ديا- يمال حك كه ميرى ولايت كان في اقرار كرليا- انتى،

(4) حدثنا الحسن بن على بن النعمان عن يحيى بن ابى زكريا بن عمر والزيات قال سمعت من ابى و محمد بن سماعه يرويه عن فيض بن ابى شيبة عن محمد بن مسلم قال سمعت ابا جعفر يقول ان الله تعالى تبارك و تعالى اخذ ميثاق النبيين على ولاية على واخذ عهد النبيين بولاية على واجد على واجد على واجد عهد النبيين بولاية على واجد على واجد على واجد على واجد عهد النبيين بولاية على واجد على واجد على واجد عهد النبيين بولاية على واجد على

(محذف اسناد) امام محد با قرعلیه السلام فرماتے تھے۔ که الله تبارک و تعالی نے علی کی ولاعت کا محدو میثاق سب جمیوں سے لیا ہے۔ انتی۔

(A) حدثنا احمد بن محمد عن الحسين بن على بن فضال عن محمد بن الفضيا عن ابى الصبح الكنائى عن ابى جعفر قال قال والله ان فى السماء لسبعين صنفا من الملائكة لواجتمع اهل الارض ان يعدوا عدد صنف منهم ما عدوهم و انهم ليدينون بولايتنا- (بسار الدرجات - 2/ الأل - بابر الدرجات)

(محذف اسناد) امام محمد باقرعلید السلام نے فرمایا کہ اللہ کی فتم آسان میں فرشتوں کی سترفتمیں ہیں اگر تمام اہل زمین مل کران میں سے ایک فتم کا شار کریں تو شار نہ کرسکیں سے۔ ان سب فرشتوں کا دین ہماری ولایت ہے۔ انتی۔

اب ناظرین غور فرمائیں کہ اللہ عزوجل نے قرآن کریم میں نماز و روزہ و ج و زکوۃ کا توزر در استفادات کو تو بھکہ جگہ صراحت و وضاحت کے ساتھ ادنے اور نے فروعی مسائل کو بھی بیان فرمایا ہے۔ اور اعتقادات کو تو بھکہ جگہ صراحت و وضاحت کے ساتھ بیان فرمایا ہے کیونکہ احتقادات اصول شرائع اور اساس قدجب ہیں۔ دیکھئے توحید کو کس کس پراتیہ جما بیان کیا ہے کہیں احدیت کا اثبات ہے۔ کمیں نفی شریک ہے کمیں نمی عن الاشراک ہے اس طرح نبوت د

رسات کو فتلف مقامت پر بیان فرایا ہے۔ کمیں ایمان باللہ کے ساتھ ایمان بالرسول کا ذکر ہے کمیں اپنے میں میشر فی الانجیل بتایا ہے اور سے مسلم امر ہے ہیں۔ پاک ساتھ ایم وصف رسالت کے ساتھ یاد فرایا ہے۔ کمیں میشر فی الانجیل بتایا ہے اور سے مسلم امر ہے کہ اعقادیات کے جوت کے لیے دلائل تطعیہ ورکار ہیں۔ پس نظر براہیت مسئلہ امامت ضرور تھا کہ قرآن میں کئی جگہ ظلافت یا فضل کا ذکر بھراحت تمام بایا جاتا ہے۔ کیونکہ قرآن سے بڑھ کر دلیل قطمی اور کیا ہو سکتی ہے۔ شیعہ امامیہ نے جب ویکھا کہ قرآن موجود میں ان کے اصل اعتقادیات یعنی مسئلہ امامت کا ذکر بھر سے بلکہ اس کے برعکس فافائے ٹواٹھ کی فلافت راشدہ کا جوت اس میں ملتا ہے۔ تو انہوں کے برجوں کے برقس کہ میں وہ کہتے ہیں کہ میال سے الفاظ فی والیت علی ساقط کر دیئے گئے ہیں۔ بھی کہتے ہیں کہ فلال جگہ سے الفاظ ال مجمد گرا دیئے گئے ہیں۔ فلال جگہ سے الفاظ ال مجمد گرا دیئے گئے ہیں۔ فلافت بلافصل کا تصور ان کے ذبمن میں ایا نیا قرآن بنانے کی کوشش کرتے ہیں۔ چنانچہ مولوی سید بیا بنی علی امیر المومنین لکھا نظر آتا ہے با اینہمہ جب وہ دیکھتے ہیں کہ بات بنائے بنی نیاں ماحب جمیعی شکار پوری نے اپنے رسالہ منبح تیم المطبوعہ مطبع یوسنی واقع کوچہ فولاو خال دبلی میں الفات حسین صاحب جمیعی شکار پوری نے اپنے رسالہ منبع تیم المطبوعہ مطبع یوسنی واقع کوچہ فولاو خال دبلی میں بول لکھا ہے۔

وکیاسورہ علی دسورہ ولایت و سورہ فاطی بعض مطبوع و بعض قلمی خالی شیعوں اور کازبوں کے مگھر میں نہیں۔ کیا لکھنؤ میں حاتی حسن علی نے میہ سورتیں نہیں چھاپیں۔ مگر ایک ہی دوسورتیں چھپنے پائیں تھیں کہ تنہیںہ کی گئے۔ باتی غیر مطبوع رہیں۔ مرجوع و مطرود باتوں کو رواج دینا یعنی چہ۔"

لیتے ہیں شیعہ اپ عقیدے کے ثبوت میں روایات ذ^{مل} پیش کرتے ہیں۔

(۱) عن ابى عبدالله عليه السلام فى قول الله عزوجل ان الذين امنوا ثم كفروا ثم امنوا ثم كفروا ثم امنوا ثم كفرو اثم كفرو اثم ازدادوا كفرا لن تقبل توبنهم قال نزلت فى فلان و فلان امنوا بالنبى صلى الله عليه وسلم فى اول الامر و كفروا حيث عرضت عليهم الولاية حين قال النبى صلى الله عليه وإله وسلم من كنت مولاه فعلى مولاه ثم امنوا بالبيعة لامير المومنين عليه السلام ثم كفروا حيث مضى رسول الله صلى الله عليه و اله وسلم فلم يقروا بالبيعة ثم ازداد واكفرا باخذهم من بايعه بالبيعة لهم فهولاء لم يبق فيهم من الايمان شئى المس كافى . كتب الج - بب في كت و تن كن اترال في المديدة الم

امام جعفر صادق علیہ السلام ہے ان الذین اهنوا ٹم کفر وا ٹم اهنوا ٹم کفر و اٹم از داد واکفر الن تقبل توبتھم کی تقبیر میں منقول ہے کہ یہ آیت ابوبکرو عمرہ عثمان (دیکمو صافی شرح کافی) کے بارے میں نازل ہوئی جو پہلے نبی طرح کے برائیان لائے اور کافر ہوگئے جب ان پر ولایت امیر المومنین پیش کی گئی جس وقت نبی طرح کے فرایا کہ جس کا آقا میں ہوں پس علی اس کے آقا بیں۔ بعد ازاں امیر المومنین کے بیعت پر ایمان لائے۔ بعد ازاں کافر ہوگئے جبکہ رسول اللہ طرح بین سے میں۔ بعد ازاں امیر المومنین کے بیعت کی ایمان لائے۔ بعد ازاں وہ کفر میں زیادہ ہوگئے۔ اس لیے کہ انہوں نے بیعت کا اقرار نہ کیا۔ بعد ازاں وہ کفر میں زیادہ ہوگئے۔ اس لیے کہ انہوں نے بیعت کی بیعت کر چکے تھے اپنے لیے بیعت کی بس ان میں انہوں کے بیعت کی بیعت کر بیعت کی جس ان میں ان میں انہوں کے دونات امیر کی بیعت کر چکے تھے اپنے لیے بیعت کی بس ان میں انہوں کے دونات امیر کی بیعت کر چکے تھے اپنے لیے بیعت کی بیعت ک

(۲) عن أبى عبدالله عليه السلام في قول الله تعالى ان الذين ارتدوا على ادبارهم من بعد ماتبين لهم الهدى فلان و فلان و فلان ارتدوا عن الايمان في ترك ولاية امير المومنين عليه السلام الحديث (اصول كافي كتاب الحجه باب فيه نكت و نتف من التنزيل في الولاية ص ٢٦٥)

روایت است از امام جعفر صادق علیه السلام در تول الله تعالی در سوره محمد بدرستی که جمع که مرتدشد ندبر عقبمائ خود بعد ازال که ظاہر شد ایشال را راستی که ولایت امیر الموسنین باشد امام کفت - مراد عثمان و ابو سفیان و معاویه است - بر سمستند از ایمان ور مجلس منافقال - سبب ترک ولایت امیر الموسنین - الحدیث (سانی شرح اسول کان)

الم جعفرصاوق عليه السلام سے يه آيت ان الذين ارتددا على ادبارهم من بعد ما تبين

لهم الهدى (سوره محمد - عسم) كى تغيير من منقول ب كه مراد عثمان اور ابوسفيان اور معنويه بي جو منافقول كى مجلس من ايمان سے كر محك - كيونك انهول في امير المومنين كى ولايت كو ترك كر وا-انتى-

(۳) عن حمران بن اعين قال قلت لابى جعفر عليه السلام جعلت فداك ما اقلنا لو اجتمعنا على شاة ما افنيناها فقال الا احدثك با عجب من ذلك المهاجرون و الانصار ذهبوا الا و اشاربيده ثلاثة قال حمران فقلت جعلت فداك ما حال عمارة قال رحم الله عما را ابا اليقضان بايع و قتل شهيد افقلت في نفسي ما شئى افضل من الشهادة فنظر الى فقال لعلك ترى انه مثل الثلاثة ايهات ايهات المس كان - تاب

مران بن اعین کا بیان ہے کہ میں نے انام بچر باقرے عرض کیا۔ کہ میں آپ بر قربان جاؤں۔ ہم
کیے قلیل جیں اگر ہم وستر خوان پر بحری کھانے کے لئے جع ہوں۔ تو ہم وہ ساری نمیں کھا کے امام نے فربایا کیا میں تجے اس ہے بھی جیب بات نہ ساؤں۔ مماجرین و انسار (رسول علیہ السلام کی وفات شریف کے بعد) ایمان ہے نکل گئے سوائے وست مبارک کے ساتھ ارشاد فرما کر، تین اسلمان نہ ابوذر۔ و مقداو) کے راوی کا بیان ہے کہ میں نے عرض کی میں آپ پر قربان جاؤں۔ عمار کا کیا صال ہے امام نے فرمایا اللہ ابو الیقظان عمار پر رحم کرے اس نے امیر المومنین کی بیعت کی کاکیا صال ہے امام نے فرمایا اللہ ابو الیقظان عمار پر رحم کرے اس نے امیر المومنین کی بیعت کی اور شہید ہوا ہی میں ان مینوں کی مثل ہوگا۔ (بی خیال اور شہید ہوا ہی میں ان مینوں کی مثل ہوگا۔ (بی خیال فرف دیکھا اور فرمایا۔ شاید تیرا خیال ہے کہ عمار (فضیلت میں) ان مینوں کی مثل ہوگا۔ (بی خیال فرف دیکھا اور فرمایا۔ شاید تیرا خیال ہے کہ عمار (فضیلت میں) ان مینوں کی مثل ہوگا۔ (بی خیال کی دور ہے۔ انتی

(٣) في كثى بالاسناد نقل كرت مين-

عنسلير عن ابى جعفر عليه السلام قال كان الناس اهل الردة بعد النبى صلى الله عليه واله لاثلاثة فقلت من الثلاثة فقال المقداد بن الاسود و ابوذر الغفارى وسلمان الفارسى ثم عرف الناس بعد يسير وقال هولاء الذين دارت عليم الرحا وابوا ان يبايعوا لابى بكر حتى جاؤا با مير المومنين عليه السلام مكرها فبايع و ذلك قول الله عزوجل وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل افان مات المقتل انقلبتم على اعقابكم الاية (معرفة اخبار الرجال) القلبتم على اعقابكم الاية (معرفة اخبار الرجال)

کے بعد سوائے تین کے سب لوگ مرتہ ہو گئے ہیں نے عرض کی وہ تین کون سے ہیں- اہام نے فرہایا مقداد بن اسود اور ابوذر غفاری اور سلمان فاری پھر تھوڑی دیر کے بعد لوگوں کو (امیر المومنین کا حق) معلوم کرایا۔ اور فرہایا یہ وہ اشخاص ہیں جن پر ایمان کی چکی چلی۔ اور انہوں نے ابو بکر کی بیعت سے انکار کر دیا۔ یہاں تک کہ امیر المومنین جرا لائے گئے پس معرت امیر نے ابو بکر کی بیعت کی۔ اور اس مضمون کی تصدیق آیت ذیل سے ہوتی ہے۔ و ما محمد الا رسول الو بکر) کی بیعت کی۔ اور اس مضمون کی تصدیق آیت ذیل سے ہوتی ہے۔ و ما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل افان مات او قتل انقلیتم علی اعقاب کم الایته انتھی روایات فرورہ بالا اور اس فتم کی اور روایتی جو کتب شیعہ میں بھڑت ملتی ہیں۔ سب موضوع ہیں۔ کو تکہ قرآن مجید کے مخالف ہیں۔ و کیصے اللہ تعالی اینے کلام پاک میں صحابہ کرام کی شان میں کیا فرا رہا

والسابقون الاولون من المهاجرين والانصار والذين اتبعوهم باحسان رضي الله عنهم ورضواعنه واعدلهم جنت تجرى تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ذلك الفوز العظيم ومن حولكم من الاعراب منافقون ومن اهل المدينة مردو اعلى النفاق لا تعلهم نحن تعلمهم سنعذبهم مرتين ثم يردون الى عذاب عظيم إتب - ٢١١) اور مهاجرین اور انصار میں سے سب سے پہلے سبقت کرنے والے اور وہ لوگ جنہوں نے نیکی ش ان کی پیروی کی- خدا تعالی ان سے راضی ہوگیا- اور وہ خدا تعالی سے راضی ہوگئے اور ان کے لیے ایسے باغ تیار کئے ہیں جن کے نیچ ندیاں بہتی ہیں۔ وہ ان میں ہیشہ رہیں گے ہی سب سے بدی کامیابی ہے اور تمہارے آس پاس کے بدوؤں میں سے بعض منافق ہیں اور بعض اہل مدینہ میں سے نفاق پر اڑے ہوئے ہیں۔ تم ان کو نہیں جائے۔ ہم ان کو خوب جانتے ہیں عنقریب ہم ان کو دو ہرا عذاب دیں محے پھروہ بڑے عذاب کی طرف لوٹائے جائیں محے (ترجمہ شیعہ) میہ دو آیتی ہیں جن پر ہم بالترتیب بحث کرتے ہیں پہلی آیت میں سابقون سے مراد ہجرت ونفرت کی طرف سبقت كرنے والے بين- وجه بيد كه الله تعالى نے يسلے ان كاسابق مونا ذكر كيا اور بير نه فرمايا کہ وہ کس بات میں سابق ہیں پس بیہ لفظ مجمل رہا۔ مگر جب ان کا ہجرت و نفرت سے متصف ہونا بیان فرمایا تو وہ اجمال جاتا رہا اور معلوم ہوگیا کہ سبقت سے مراد ہجرت و نفرت میں سبقت ہے-ہجرت میں سبقت بڑی اطاعت ہے کیونکہ نفس پرشاق اور طبیعت کے مخالف ہے جنہوں نے اس پر پہلے اقدام کیا وہ روسروں کے مقداء بن گئے۔ ای طرح نفرت میں سبقت بھی بری فضیلت ہے کیونکہ انسار نے حضور اقدس می اور مہاجرین کو وشمنوں سے اپنے ہاں پناہ دی اور ایار سے

کام لیا۔ غرض مراد ہجرت و نصرت میں سبقت ہے آور ان سابقین کے متابعت کرنے والے باتی مہاجرین و انصار ہیں۔ جنہوں نے ان کے بعد ہجرت و نصرت کی۔ پس اس آیت ہے صاف ظاہر ہے کہ تمام مہاجرین و انصار سابقین ولا حقین بیشتی ہیں۔ اور اس میں شک نہیں کہ حضرت ابو بکر صدیق ہزائر مہاجرین ما انقین میں ہے۔ بلکہ رکیس المہاجرین ہیں۔ کیونکہ ہجرت میں جناب سرور کا نئات علیہ الوف التحت والعلوة کی خدمت میں رہے۔اور حضرات عمرو عثمان و علی اور ویکر بہت سے سحابہ کرام بھی مہاجرین سابقین میں سے ہیں۔ جو شخص حضرت سیدنا ابو بکر صدیق کو مہاجرین اولین میں سے میں۔ جو شخص حضرت سیدنا ابو بکر صدیق کو مہاجرین اولین میں سے میں۔ جو شخص حضرت سیدنا ابو بکر صدیق کو مہاجرین اولین میں سے میں۔ اذ اخوجه اللّٰ این کفروا ثانی الله معنا (وَب ۱۰)

جب كد ان لوگول في جو كافر مو كئے تھے۔ اے ايے وقت ميں نكالا تھا كد وہ دو ميں كا دوسرا تھا جب كد ان لوگول في جو كافر مو كئے تھے۔ اس وقت مارا رسول اپنے اس ساتھى ہے كمد رہا تھا كد جس وقت كد وہ دونول كار ميں تھے۔ اس وقت مارا رسول اپنے اس ساتھى ہے كمد رہا تھا كد افسوس نہ كر بے شك اللہ مم دونول كے ساتھ ہے۔ (ترجمہ شيعہ)

جب آیت زیر بحث سے مهاجرین و انسار کا بیشی ہونا ثابت ہے تو اس کے ضمن بیس ان لغز شوں کی معافی کی بشارت بھی آگئ جو بتقاضائے بشریت ان سے سرزد ہوں بلکہ اللہ عزو جل نے مراحت کے ساتھ فراویا۔

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْ وَ هَاجَرُوْا وَ جَاهَدُوْا فِي سَبِيْلِ اللَّهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَ نَصَرُوْا اُوْلَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقَّالَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيْمٌ

باكرناعيث تمرتاب تعالى الله عن ذلك علوا كبيراالركوكي نادان آيد زيل على وسوسد والله على الدين امنوا من يرتد منكم عن دينه فسوف ياتى الله بقوم يحبهم و يحبونه اذلة على المومنين اعزة على الكفرين يجاهدون في سبيل الله بقوم يحبهم و يحبونه ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم (المه في سبيل الله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع عليم (المه والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فصل الله يؤتيه من يشاء والله ولا يخافون لو مة لائم ذلك فصل الله يؤتيه المناس الله يؤتيه الله ي

(A

اے ایمان لانے والو جو تم میں ہے اپنے دین سے پھر جائے گا (تو خدا کا کچھ نقصان نمیں) خدا عنقریب ایسے لوگوں کو اینے گاجن کو وہ دوست رکھتا ہے۔ اور اس کو وہ دوست رکھتے۔ مومنوں کے لیے وہ رحم ول بیں (اور) کافروں کے لیے سخت- راہ خدا میں جہاد کرتے ہیں اور کس اہمت كرنے والے كى ملامت سے نہيں ڈرتے۔ يہ فضل خدا ہے جس كو چاہے عطا فرمائے۔ اور خدا تعالی صاحب سعت و علم ہے (ترجمہ شیعه) تو ہم جواب دیتے ہیں کہ اس سے تو فدہب المهيه كا بطلان پایا جاتا ہے۔ جو کہتے ہیں کہ آنخضرت ملتی ہے وفات شریف کے بعد سوائے تین کے س محابہ کرام مرتد ہوگئے کیونکہ اگر الیا ہو تا جیسا کہ شیعہ کہتے ہیں تو بھکم اس آیت کے اللہ تعالی ایک ایسی قوم لاتا۔ جو حضرت ابو بکروغیرہ صحابہ سے جنگ کرتی۔ اور انہیں مغلوب کرلیتی اور ان کے دین کو باطل کر دیتی۔ چو نکہ بیہ امور وقوع میں نہ آئے للڈا معلوم ہوا کہ حضرت صدیق اکبر وغيره صحابه كرام كامل الايمان من اس آيت من اخبار بالغيب ہے۔ كيونك حضرت ابو بكر صديق والتي کے عمد خلافت میں اعراب کے سات فرقے (فزارہ - غطفان - بنو سلیم - بنوبریوع - بنو تتیم - کندہ - ہنو بکروائل - مرتذ ہوگئے اور انہوں نے ذکوۃ دینے سے انکار کر دیا پس حضرت صدیں اکبر وغیرہ محلبہ کرام نے ان سے جماد کیا۔ اور انہیں مغلوب کیا۔ اور ان میں سے بہت سے پھرایمان لائے- الله اس آیت سے ابو بکر صدیق وغیرہ صحابہ کرام کی بردی فضیلت ثابت ہوتی ہے اور محابہ كرام ير ارتداد كى تهمت بالكل باطل مو جاتى ہے- كيونكه أكر ان ميں سے كوئى معاذ الله مرتد موتا تو دوسرے کامل الایمان مؤمنین اس کے ساتھ جماد کرکے اس کو ہلاک کر دیتے۔ اور اس میں شک نسیں کہ خلفائے ملا سے کسی ایسے کامل الایمان نے جنگ نہیں کی- یلکہ حضرت علی اور ابوذر مومنان کائل الایمان نے ان کی متابعت و موافقت کی۔ پس واضح ہوگیا کہ وہ کائل الایمان مومن

خلاصہ کلام ہے کہ مهاجرین و انصار تمام بحکم آیت و انسابقون الاولون بہتی ہیں۔ اب آیت الاحقہ کے ساتھ اس کے ربط پر غور کیجئے۔ خدائے عالم الغیب کے علم میں تھا۔ کہ ایک فرقہ ایسا بھی ہوگاجو مهاجرین و انصار کو منافق کے گا۔ لہذا جہاں صحابہ کرام کا بہتی ہونا بیان فرایا وہاں ساتھ ہی اس فرقہ کی تردید بھی کردی بدیں طور کہ بے شک منافقین تھے۔ گروہ تو مدینہ کے گرد سکے کچھ قبائل یاد یہ نشین اور کچھ ساکنان مدینہ تھے۔ اہل مکہ یعنی مهاجرین میں اور انصار میں جن کا ایمان و تھرت منصوص ہے کوئی منافق نہ تھا۔ شیعہ کی معتبر تغییر خلاصة المنبی میں آیت لاجقہ کا فاری ترجمہ یوں فہ کور ہے۔ و از آناکہ گردا

گرد شرشا انداز اتل بادید منافقائند چول اسلم واشیح و غفار وقوم آواز جهینه و مزینه و امثال ایثال کلمه شهاوت میگویند و بروزه و نماز قیام سے نمایند- و از اتل شرشا نیز قوے اند که خوکرده اند بروجه رسوخ اقامت کرده اند برنفاق تاور منافق بمرتبه مهارت وارند که تو که محمدی باوجود کمال فطنت و صدق فراست خود نمیدانی ایشانرا لیمی کفررادر سویدا سے دل خود پنهال دارند و آثار ایمان و احسان بنهور سے آرند پس تو ایشا نرا باعیان نمی شناسی ما میدانیم ایشانرا که بر مردل ایشال مطعیم - زود باشد که عذاب کنیم ایشانر ادو مرتب نرا باعیان نمی شناسی ما میدانیم ایشانرا که بر مردل ایشال مطعیم - زود باشد که عذاب کنیم ایشانر ادو مرتب کید . منفیحت و قتل درد نیا یکی آن که رسول روز جمعه بر منبر خطیه خواند و بعد از ال اشاره کرد- بانل نفاق و گفت فلال از مسجد بیرول روید - که از بل نفاقید و چول جمع رانام بردد بنفاق ایشال گوای داد رسواشد شد خواند و بیرول رفتد - دارس نفتیت و رسوائی یک عذا بست دویم عذاب قبر بعد از ال بازگردانید شوند در قیامت . عذاب قبر بعد از ال بازگردانید شوند در قیامت . عذاب قبر بعد از ال بازگردانید شوند در قیامت . منافقات به بردگ که آتش دوزخ است - انتم .

بسرطال منافقين آخركار متميّز بوگئ چنانچ الله تعالى فرانا هم- ماكان الله ليذر المومنين على ما انتم على على الغيب ولكن على ما انتم عليه حتى يميز الخبيث من الطبيب وماكان الله ليطلعكم على الغيب ولكن الله يجتبى من رسله من يشاء (آن مران - ١٨)

ترجمہ: خدا کی یہ شان نہیں ہے کہ مومنوں کو ای حالت پر رہنے دے۔ کہ جس حالت پرتم ہو یماں تک کہ ناپاک کو پاک سے جدا نہ کر دے۔ اور خدا کی بیہ شان نہیں ہے کہ وہ تم کو غیب کی باتوں سے آگاہ کر دے۔ لیکن خدا تعالی اپنے رسولوں میں سے جس کو چاہتا ہے۔ (اس بات کے لیا نتخب کرلیتا ہے۔ (ترجمہ شیعہ) اس آیت سے ظاہر ہے کہ اللہ تعالی نے اپنے حبیب پاک ماٹھیا کو من نقین سے مطلع فرما دیا۔ ظلامتہ المنج میں ہے منقول است کہ حضرت رسالت فرمود کہ انجیا نکہ ذریعتہ آوم را بر آوم عرض کریم۔ امت مرالمبصورت و خلقت میں نمودند و مرا آگاہ کروانیہ ند کہ کدام ازیشاں قبول اسلام کند و کدام دربار صلالت سرگرداں بما نرز۔ منافقاں بابکہ کروانیہ ند کہ کدام ازیشاں قبول اسلام کند و کدام دربار صلالت سرگرداں بما نرز۔ منافقاں بابکہ کروانیہ در عدم است۔ میدانم کہ کدام از تخلص کر سخت کہ کدام از تخلص موسند و کدام منافق چوں ایس بخن سمع شریف حضرت رسالت رسید منبر برآمہ و خلیہ بلنے بخواند است و کدام منافق چوں ایس بخن سمع شریف حضرت رسالت رسید منبر برآمہ و خلیہ بلنے بخواند و است و کدام منافق حوں ایس بخن سمع شریف حضرت رسالت رسید منبر برآمہ و خلیہ بلنے بخواند موران تا قیامت کہ خواہد واقع بھیا۔ ایشاں اگر فرود کہ جداد ایشاں اگر فرود کہ جداد ایشاں اگر فرد انہ ایشاں منافق حورہ کہ ایورہ کہ خواہد واقع بھیا۔ ایشاں اگر فرد کہ وقوع خواہد یافت۔ عبداللہ بن امروز تا قیامت کہ خواہد واقع بھیا۔ ایشاں اگر فرد کہ وقوع خواہد یافت۔ عبداللہ بن امروز تا قیامت کہ خواہد واقع بھیا۔ ایشاں اگر نین سے تن ابا میکند۔ فرمود کہ حذافہ پس اذ

منبر فرود آید وایں آبیہ نازل شد ماکان اللہ لیڈ را المومنین ہر کز نباشد که خدا بگذار د مومناں راعلی ما انتم علیه برآن چیزیکه شا اے منافقال بر آنید از طعن برایشال درنمال و استهزاء در آشکارا بلکه مراف حكت التي نقد عال شار برابر كك المتحال زند حتى يميز الخبيث من الطيب ، وتتكر بهدا كند يليد راكه آلوده نفاق است ازياك يعني از مومن مخلص - وايس تميز ايثال بإظهار خبث بإطن اليتك است كه بطريق وحي سيد عالم را معلوم كشة و اصحاب برآل اطلاع يافته اندويا بماد كافرال يا تلفل تعلف نموده با اعدائ دين حرب مكتد- و از جمله علامات منافق آنست كه بغض حفرت امیرالمومنین رادارد چنانکه بنقل صحح از بینبر مرویست که فرمودائے علی ترادوست ندار د مرمون يرييزگار و ترا دشمن ندار د محرمنافق تيره روز كار و ها كان الله ليطلعكم و چتال نيست كه خدا مطلع گروائد شمارا اے مردمان علی الغیب بر مربوشیدہ که کدام ایمان آور دوکدام کا فرمائد ولکن الله يجتبي من رسله من يشاء ليكن خدا بركزيد برائ اطلاع برآل از فرستاد كال برك دا خوابد لیس معلوم وے کند ایشال رابہ بعضے عیشا- استی- چونکہ رسول الله مان کی بزراجہ وی وافظ عليهم اتوبه ناع ١١ ترجمه اع بن كفار اور منافقين س جماد كرد- ادر ان ير سخى كرد- (ترجمه شيعه) منج الصادقين مي ب يايها النبي الع يبغمبر جاهد الكفار جمادكن باكفاران شمشير والمنافقين وبامنافقان بالزام حجت و اقامت صدور برایشال و یا بوعظ و تخویف - این عباس فرموره که جهاد کن با منافقال بانواع ثلاثة بحسب امكان ليتى اول تنيغ واكر ميسرنه شود بزبان بعد ازال بدل مبغض ايشال باش واملط عليهم و درشت باش برائشل دروئ ترش كن درجهاد و محايا كمن - استى-

اس آیت سے بھی محلبہ کرام سے نفاق طعن باطل ہوگیا۔ کیونکہ اگر سحابہ کرام نعوذ باللہ منافق ہوتے تو آل حضرت میں تبیل ان سے جماد کرتے اور ان پر بختی کرتے۔ گرایا وقوع میں نہیں آیا۔ لاذا ثابت ہوا کہ سحلبہ کرام منافق نہ تھے۔ بلکہ صادق الایمان تھے۔

الله عزو جل منافقین کے بارے میں دوسری جگه فرماتا ہے۔

فان يتوبوايك خير الهم و ان يتولوا يعذبهم الله عذابا اليما في الدنيا والاخرة ومالهم في الارض من ولي ولا نصير اتبري)

ترجمہ: پس اگر وہ توبہ کرلیں کے تو ان کے لیے بہتر ہوگا۔ اور اگر وہ روگرداں ہول کے تو اللہ ان کی دنیا اور آخرت میں درو ناک عذاب سے معذب کرے گا۔ اور زمین میں نہ ان کا کوئی حامی ہوگا اور نمین میں نہ ان کا کوئی حامی ہوگا اور نمین میں نہ ان کا کوئی حامی ہوگا اور نہ مددگار (ترجمہ شیعہ) خلامت المنبح میں اس کا فارس ترجمہ یوں ہے۔ پس اگر توبہ کشد از نفاق باشد آن بازگشت بہتر مرابشانرا۔ واکر برگر دیمداز توبہ و مصریاشتد برنفاق - عذاب کند خدا ایشا نرا

عذابے ورو تاک در وئیا بکشن و ور آخرت بسونفنن۔ و نمیست ایشانرا ور زیمن دو سے و موالی امرے و نہ یارے و مددگارے کہ عذاب ازیشال باز دارو۔ انتی اب منافقین کے مقابلہ میں مهاجرین کے اوصاف سفتے۔

اذن للذين يقاتلون بانهم ظلموا و ان الله على نصرهم لقدير O الذين اخرجوا من ديارهم بغير حق الا ان يقولوا ربنا الله ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لهدمت صوامع وبيع و صلوات و مساجد يذكر فيها اسم الله كثيرا و لينصرن الله من ينصره ان الله لقوى عزيز O الذين ان مكناهم في الاوض اقاموا الصلوة واتو الزكوة وامروا بالمعروف و نهوا عن المنكر ولله عاقبة الامور O

ترجمہ: ان لوگوں کو جن سے جنگ کی جاتی ہے۔ اس لیے اجازت دی گئی ہے کہ ان بر ظلم کیا گیا تھا اور بے شک اللہ ان کو مدو وینے پر بوری بوری قدرت رکھنے والا ہے جو اپنے ملک سے تاحق صرف اتنی می بات کنے پر نکالے گئے تھے۔ کہ ہمارا پروردگار اللہ ہے۔ اور اگر خدا آدمیوں کو ایک کے زریعہ سے دوسرے کودفع نہ کر؟ رہتا تو عبادت خانے اور گرجا اور کلیے یا کینے اور محدیں جن میں خدا کا نام زیادہ لیا جاتا ہے سب گرا دیئے جاتے اور اللہ اس کی مدد ضرور کر گا اور خود اللہ كى مدد كريا ہے۔ بے شك الله قدرت والا (اور) زيروست ہے وہ وہ لوگ بيں جن كو اگر ہم زين میں تسکین دیں گے۔ تو وہ (باقاعدہ) نماز برهیں گے۔ اور زسموۃ دیں گے اور نیک کاموں کا حکم كريں كے اور بدى سے مانع ہوں كے برائى سے روكيس كے اور تمام كاموں كا انجام اللہ عى كے باتھ ہے (ترجمہ شیعہ) خلامت المنج میں ان آیوں کے متعلق یوں لکھا ہے۔ آوردہ اند کہ کفار مکہ برست و زبان در آزار مومنال مكه ے كوشيد ند - و برساعت زا اصحاب بعض سرشكت و جمع وست بستہ بنزو حضرت نیوت آمدہ شکایت ے کردند- و حضرت میفر مودند کہ صبر کنید کہ صبر كنيد كه من عمتال البيال مامور ليستم- وجول الجرت بمدينه واقع شد اذن قمال در رسيد- و اول آیے که ورباب جهاد نازل شد این بود که دستوری داده شد کار زار کردن مرآنا نرا که خوابند کار زار كنند يا جماعه كفار سبب آنكه ستم رسيده شده اند - و جفا با بيشار از دشمنال كشيده و حفص مفتح تا میخواند یعنی انا نراکه کافران با ایشال مقاتله میکنند وستوری دادیم که قال کنند و بدرستیکه خدا بریاری واون مظلومان که مومنا نند بر آئیته توانا ست- پس مرخص شدند ور قال آنا نکه بیرول کرده شد نداز مرابائے خود که ور مکه داشتد بناحق و نار واکه اصلامتنوجب اخراج نبودند- و چیزے از ایشال صادر نشدہ بود- کہ سبب بیروں کردن ایشال بود- مر آنکہ سے سمنتد - بروردگار ما خدائے لگانہ

است واگر ند وقع کردن فدا بودے مردے مانرا برنے ازیشاں را معضے تبسلیط مومنال برمٹر کال بر آئینہ ویران کردہ شدے باستیلائے کافرال مشرک برابل ملل مختلفہ صومعہائے ربابتال ور زبان هیں و کلیسیائے ترسایال در آنزمال در صحرابا و مرکو بھا از اطراف و کشتمائے یہودال در زبان موی و مبعد بائے مسلمانان در زبان پیٹیر آخر الزبان کہ بھیشہ یاد کردہ میشدے درال مبحد یا جمع بقاع نہ کورہ نام خدا بسیار۔ دہر آینہ یاری دہد خدا کے راکہ دین اور ایاری دہد و مرد مانرا بطاعت اور ترغیب نماید بدرستیکہ خدا توانا اناست برشمہ کل و برہمہ چزد ہم کرا خواہد غلبہ دہد۔ دریں آیت وعدہ داد والا مطلمان را بنصرت دو فانمود بوعدہ آل۔ چہ تسلیط مهاجر انصار نمودہ برمنا دید قریش و اکابر و اکابرہ عجم و قیاصرہ ایشل ۔ و ذبین و دیار ایشال را مسلمانان تنویش نمود۔ پس آیت اخبار است از غیب چہ ایں نصرت بعد ازیں ، نمور رسید۔ و دیگر درصفت تنویش نمود۔ پس آیت اخبار است از غیب چہ ایں نصرت بعد ازیں ، نمور رسید۔ و دیگر درصفت تنویش نمود بین آئید مادر دائی رادہ دیار ایشال ماد بند زکوۃ ایشال مادر ذشن۔ و زبام حکومت بحث ایشال دادر ذشن۔ و زبام حکومت بحث ایشال دیم بیا دارند نماز راجب تعظیم ما و بد بند زکوۃ راجب یاری دادن بندگان ماد بفرمانید به تیکوئی یعن آنچہ در شرع و عقل تیکوباشد ۔ و باز دارند مرد راجب یاری دادن بندگان ماد بفرمانید به تیکوئی یعن آنچہ در شرع و عقل تیکوباشد ۔ و باز دارند مرد ماد داست و ایس تاکیہ وعدہ نصرت است است انتی۔

اس بیان سے کئی ہاتیں معلوم ہو کیں۔ اول ہید کہ تمام مہاجرین کی بجرت فدا کے واسطے تھی نہ کہ دنیوی طع کے لیے دوم ہید کہ اللہ تعالی نے مہاجرین سے وعدہ نفرت فرمایا اور اسے پورا کر دیا۔ چنانچہ حق تعالی نے معابہ کرام کو جو حضور اقدس معلیم کی وفات شریف کے بعد زندہ رہے۔ ہالخصوص حضرات طفائے راشدین کو ایس نفریا۔ اور ملک کسرے وقیصر کو تعزیر کیا۔ اور ملک کسرے وقیصر کو تعزیر کیا۔ اور تمام صحابہ کرام نے ظفائے راشدین کو مدد کی۔ پس معلوم ہوا کہ ظفائے راشدین معاجرین فی مبیل اللہ میں سے تھے کہ وعدہ نفریت جو مهاجرین سے ہوا تھا۔ وہ ان کے حق میں بوجہ اتم پور معاجرین فی مبیل اللہ میں سے تھے کہ وعدہ نفریت جو مهاجرین سے ہوا تھا۔ وہ ان کے حق میں بوجہ اتم پور معاجرین کی نبست اللہ عزوج اتم پور معلی کی معاجرین کی نبست اللہ عزوج ان کیا رویاور نہ ہوتا۔ سوم ہید کہ مهاجرین کی نبست اللہ عزوج ان کو ہو اور اسم مجل فرادیا کہ آگر ہم اقدار حکومت کی ہاگ ان کے ہاتھ میں دیں گے تو وہ اقامت صلوۃ ایتاء زکوۃ اور اسم ہالمروف اور منی عن المنکر بچالاتے رہیں گے۔ اور یہ خابہ سے کہ اللہ تعالی نے ظفائے اربعہ کو حکومت ہالمروف اور منی عن المنکر بچالاتے رہیں گے۔ اور یہ خابہ سے کہ اللہ تعالی نے ظفائے اربعہ کو حکومت طرف ظفر وقت کی نبست کرتا ہے۔ وہ اس آیت کا منکر ہے۔ صحابہ کرام جنول نے اہل مکہ اور دیگر

قائل عرب کو مغلوب کیا اور جنهوں نے ملک کسرے و قیصر کو فتح کیا۔

ان سب کا مومن و مجاہد فی سبیل اللہ ہونا حدیث ابو عمیر زبیری سے ثابت ہے جو کافی تمذیب الدیکام میں ذکور ہے۔ یہ طویل حدیث انشاء اللہ متاسب مقام پر نقل کی جائے گی۔

منافقین کے بارے میں ووسری جگہ بوں وارو ہے

لئن لم ينته المنفقون والذين في قلوبهم مرض ولمرجفون في المدينة لنغرينك بهم ثم لا يجاو رونك فيها الا قليلا ٥ ملعونين اينما ثقفعو الخذوا وقتلوا تقتيلا

٥ سنة الله في الذين خلوا من قبل ولن تجدلسنة الله تبديلا (١٦١٠ - ١٨٥)

اگر منافق اور وہ لوگ جن کے ولوں میں روگ ہے اور مدینہ میں جھوٹی خبریں اڑانے والے بازنہ آئے تو ہم ضرور تم کو ان کے ورپے کر ویں گے۔ پھروہ اس شرمیں تمہارے بڑوس میں نہ رہیں گے۔ گر بہت ہی کم۔ اور ہر طرف ہے ان پر لعنت ہوتی رہے گی۔ وہ جہاں کہیں پائے جائیں گے پیڑے جائیں گے پیڑے جائیں گے بیائی گے وار ایسے قتل کیے جائیں گے جیسا کہ قتل کئے جانے کا حق ہے۔ اللہ کا قاعدہ ان لوگوں میں جو پہلے گزر گئے (یمی تھا) اور تم اللہ کے قاعدہ میں ہرگز تبدیلی نہ پاؤ گے۔ (ترجمہ شیعہ) ان آجوں سے صاف ظاہر ہے کہ جن منافقوں نے نفاق سے توبہ نہ کی۔ ان میں سے کوئی مدینہ میں نہ رہا۔ اور وہ ہلاک و تباہ ہو گئے۔ جیسا کہ گزشتہ امتوں میں ہو تا چلا آیا ہے۔ اللہ تعالی نے منافقین کے بر عکس مہاجر س کا وصف یوں بیان فرمایا ہے۔

والذين هاجروا في الله من بعد ما ظلموا لنبوئنهم في الدنيا حسنة والاجرالاخرة اكبر الله عن الدنيا حسنة والاجرالاخرة

اور وہ لوگ جنہوں نے بعد اس کے کہ ان پر ظلم کیا گیا۔ خدا کی خوشنوری کے لیے ہجرت کی۔ ہم ضرور بالضرور ان کو دنیا میں رہنے کی اچھی جگہ دیں گے۔ اور آخرت کا اجر تو بست ہی بڑا ہوگا (ترجمہ شیعہ) اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے مہاجرین فی سبیل اللہ سے دو وعدے کیے ہیں۔ ایک دنیا میں دو مرا آخرت میں۔ اس میں شک نہیں کہ دنیا میں وعدہ تو پورا ہوگیا۔ اور تمام مهاجرین مین منورہ میں قیام پذیر ہوئے۔ بالخصوص خلفائے ثلاثہ بڑائی جو حیات میں وہیں رہے۔ حتی کہ وفات کے بعد بھی وہیں مدفون ہے۔ چنانچہ حضرات شینیں بڑائی تو حضور اقدس سائی کیا کے روضہ مبارک میں جاگرین ہوئے۔ اور حضرت عثمان بھی نزدیک ہی رونق افروز ہیں۔ اگر مهاجرین معاذ مبارک میں جاگرین ہوئے۔ اور حضرت عثمان بھی نزدیک ہی رونق افروز ہیں۔ اگر مهاجرین معاذ الله منافق ہوئے۔ تو بچکم آیات سابقہ حق تعالیٰ آنخضرت سائی کے ان پر مسلط کرتا۔ اور وہ مدیث منورہ سے نکل جاتے یا وہیں ہلاک و تباہ ہو جاتے اور کوئی ان کی بات تک نہ سنتا۔ چہ جائیکہ ان کو

امامت و خلافت کا منصب عالی عطا ہو تا۔ پس ظاہر ہوا کہ وہ مهاجرین فی سبیل اللہ تھے جن کو دنیا میں رہنے کے لیے اچھی جگہ ملی۔ آخرت میں ان کا اجر و ثواب بحکم وعدہ اللی اس سے بھی ذیادہ میں رہنے کے لیے اچھی جگہ ملی۔ آخرت میں ان کا اجر و ثواب بحکم وعدہ اللی اس سے بھی ذیادہ ہوگا۔ ای طرح دو سرے سحابہ کرام سب کے سب دین اللی کے ناصر ومددگار اور کامل الایمان میں حضور اقدس مالی بھی وفات شریف کے بعد جس بات پر انہوں نے اتفاق کیا وہ میں صواب تھی۔

شیعد جب و یکھتے ہیں کہ حضرات شیخین رصی اللہ عنما بعد ممات بھی اپنے آقائے ٹادار ہے کے پہلوئے مبارک ہیں جاگزین ہیں۔ تو ان کے غیظ و غضب کی انتما نہیں رہتی۔ وہ متمنی رہتے ہیں کہ کسی طرح ان کو وہاں سے نکال دیں۔ ان کی اس تمنائے بعض وقت عملی شکل بھی اختیار کی ہے۔ چنانچہ حمد اللہ مستوفی قروبی شیعی نے جو اپنے شیئی حرریا می کی نسل سے بتاتا ہے اپنی کتاب زبتہ القلوب مطبوعہ ہالینڈ اساسات سے ساتا ہے۔ در کتاب استمار الافبار المعلوم ہالینڈ اساسات سے ان کی محمل الافبار الفبار المعلوم ہالینڈ اساسات میں او جمع آفار الملوک قاضی رکن الدین جو بی آمد و است کہ حاکم اسمعیل کہ ششم خلیفہ بی فاظمہ مغرب بود از مدینہ علوی را تادر شب از خانہ او نقب بروضہ رسول اللہ مالی میں میزوند۔ تاہیم الموسنین ابو بگر صدیق و عمر خطاب بزائش را ازال روضہ بیروں آو ردید۔ ہرچہ خواہند یا ایشاں کنند و درال رونہ بادر مدینہ کردہ و صاعقہ و تاریکی عظیم پیداشد۔ مردماں ہتر سیدند دور انابت کو شید ند و در حرم رسول اللہ مالی کنند و درال رائد و میں مالی نمیشہ۔ تا آل علوی اظہار آل قضیہ کرد۔ حاکم مدینہ نقابال را بگرفت و سیاست کرد ہمال روز ہو خوش شد۔ دایس حال درسہ احدی عشروار معمائے بود۔ و از کرامت ابو بکرو عربی خو بعد از دفات شان بقرت چہار صد سال چنیں ظہوریافت۔ حاکم اسمیلی آل سال بر نبرد۔

قاضی احمہ و امخانی کی کتاب استعمار الاخبار میں اور قاضی رکن الدین جوینی کی کتاب مجمع آثار الملوک میں فدکور ہے کہ حاکم اساعیلی نے جو مغرب کے بنی فاطمہ کا چھٹا خلیفہ تھا مدینہ کے ایک علوی کو فریب دیا پس وہ رات کے وقت اس علوی کے گھر میں سے رسول اللہ میں خیا ہے روضہ کی طرف سرنگ کھووا کرتے ہے۔ تاکہ امیر المومنین البو بکر صدیق بڑا تی اور عمر بن خطاب بڑا تی کو روضہ مورف مراک سے نکال لاکس اور ان کے ساتھ جو جاہیں کریں۔ ان ونوں میں مدینہ میں بھولے اور بحل اور بیلی اور بن کی بیدا ہوئی۔ لوگ ڈر کے۔ اور اپ گناہوں سے توبہ کرتے گئے۔ اور رسول اللہ میں فاریف میں مدانہ معالم اللہ میں اور بنا کی بیدا ہوئی۔ لوگ ڈر کے۔ اور اپ گناہوں سے توبہ کرتے گئے۔ اور رسول اللہ میں مان میں مان ہوگیا ہے معالمہ فالم کردیا۔ امیرمدینہ نے نقب لگانے والوں کو پکڑ کر قتل کر ڈالا۔ ای دن کر ہوائی صاف ہوگیا ہے حال اللہ میں وقوع میں آیا۔ اور ابو یکرو عمر بڑائٹو کی کرامات میں سے تھا۔ جو ان کی وقات سے تربا

جار سو برس کے بعد ظہور میں آیا۔ حاکم اساعیلی بھی اس سال مرکبا۔ انتی۔

ور المراب المستعما المقاضى السمناني نقل كيا ہے-سادب تخف التا عشريد نے بھى اس واقعہ كو بحوالہ كتاب الاستعما للقاضى السمناني نقل كيا ہے-(ريجو تحف مطبوعہ نو كشور ص ١٠١) بعض وقت شيعہ بطور اعتراض بير آيت پيش كرتے ہيں-

يايها الذين امنوا اذ القيتم الذين كفروا زحفا فلا تولوهم الادبار و من يولهم يومئذ دبره الامتحرفا لقتال او متحيزا الى فئة فقد باء بضب من الله و ما وه جهنم و بئس المصير (انال-٢٥)

اے ایمان والوجس وقت کافروں سے جنگ میں آمنا سامنا کرو۔ تو ان کو پیٹھ نہ و کھاؤ اور اس ون جو پیٹھ دکھائے گا۔ سوائے اس کے کہ لڑائی کے لیے کٹرا کے جاتا ہویا وو سرے گروہ کے پاس جگہ پکڑنا مقصور ہو وہ یقینا غضب خدا میں گرفتا ہوگا اور اس کا ٹھکانا جنم ہے اور وہ بہت ہی بری جگہ ہے (ترجمہ شیعہ) اور کتے ہیں کہ صحابہ کرام نے غزوات میں فرار کیا ہے۔ اس کے جواب میں گزارش ہے کہ بدر جو اس آیت کے نزول کا مقام ہے۔ اس میں کوئی صحابی نہیں بھاگا۔ بلکہ سب فاہت قدم رہے۔ چنانچہ اللہ تعالی فراتا ہے۔

ولقد نصر كم الله ببدروا نتم اذلة (آل مران - ع)

ب شك الله في بدر من تمهاري مدوى على جبكه تم حقير سف ازجه شيد)

اذيوحي ربك الى الملئكة انى معكم فثبتوا الذين امنوا (انال-٤)

(ال وقت کو یاد کرو) جب که تمهارا پروردگار فرشتوں کو وجی فرما رہا تھا۔ که میں تمهارے ساتھ مول پس تم ان لوگوں کو جو ایمان لائے ہیں۔ ثابت قدم رکھو (ترجمہ شیعہ) آیت زیر بحث گریز کے مول پس تم ان لوگوں کو جو ایمان لائے ہیں۔ ثابت قدم رکھو (ترجمہ شیعہ) آیت زیر بحث گریز کے کفر ہونے پر دلالت نہیں کرتی بلکہ اس امریر وال ہے کہ جنگ سے گریز حرام ہے۔ حق تعالی جانب تو بخش دے اور چاہے تو عذاب دے۔ اس واسطے جب جنگ احد میں فرار واقع ہوا تو اللہ تعالی سے معاف فرما دیا اور بول ارشاد ہوا۔

ولقد عفا الله عنهم (آل عران- ٤)

اور الله في ان كے تصور سے در كرر كى (ترجمه شيعه)

لقدنصركم الله في مواطن كثيرة ويوم حنين (ته-٣٥)

بے شک اللہ سکینة علی رسولہ و علی المومنین و انزل جنود الم تروها (ترب ع) فعم انزل الله سکینة علی رسولہ و علی المومنین و انزل جنود الم تروها (ترب ع) مجر اللہ نے اپنی تسکین اپنے رسول اور مومنین پر نازل کی- اور ایسے لشکر اثارے جن کوتم نے رسمی نہ ویکھا تھا۔ (تر: مہ شیعہ) جائے غور سے کہ کس قدر رحمت اللی صحابہ کرام کے شال طال محتی نہ ویکھا تھا۔ (تر: مہ شیعہ) جائے غور سے کہ کس قدر رحمت اللی صحابہ کرام کے شال طال محتی ہوئی۔ در شیخ ان کی مدو کو آئے۔ سکینہ جو کھی۔ کہ جنال عقد مراب کا خاصہ ہے ان پر نازل ہوئی۔ کیا نزول سکینہ اور نصرت اللی منافقین کے لیے مومنین کامل الایمان کا خاصہ ہے ان پر نازل ہوئی۔ کیا نزول سکینہ اور نصرت اللی منافقین کے لیے مومنین کامل الایمان کا خاصہ ہے ان پر نازل ہوئی۔ کیا نزول سکینہ اور نصرت اللی منافقین کے لیے مومنین کامل الایمان کا خاصہ ہے ان پر نازل ہوئی۔ کیا نزول سکینہ اور نصرت اللی منافقین کے لیے جرگز شیں۔

فلاصہ کلام ہے کہ صحابہ کرام مهاجرین و انسار از روے قرآن کریم قطعی بیشتی ہیں۔
واعدلہم جنت تجری تحتها الانهار خالدین فیها ابدا رتب کا ان کی شان ہیں ہے۔
والزمهم کلمة التقوی و کانوا احق با و اهلها رفتح عصر ان کی شان ہیں ہے ولکن
اللہ حبب الیکم الایمان و زینه فی قلوبکم و کرہ الیکم الکفر و الفسوق و العصیان
اللہ حبب الیکم الایمان و زینه فی قلوبکم و کرہ الیکم الکفر و الفسوق و العصیان
رحجرات عن ان کے شان میں ہے والذین معه اشداء علی الکفار الایة رق عس ان کی شان میں ہے۔ لقد رضی الله علی المومنین اذیبایعو نک تحت الشجرة الایه رق میں
شان میں ہے۔ لقد رضی الله علی المومنین اذیبایعو نک تحت الشجرة الایه رق میں
ان کی شان میں ہے ای طرح اور صدا آیات ان کے اوصافہ جمیدہ میں وارد ہوئی ہیں۔ پی نتیج
یہ نکلا کہ جمیع صحابہ کرام کمال ایمان ہوایت پر شے۔ جس امریز ان کا اجماع و انقاق ہوا وہ متبول
یہ تق میں وعائے مغفرت کرنا مسلمانوں کا وظیفہ ہے۔ اس کے برعکس جو محض ان پر طعن
کے حق میں وعائے مغفرت کرنا مسلمانوں کا وظیفہ ہے۔ اس کے برعکس جو محض ان پر طعن
کرے۔ اور ان سے کینہ رکھ وہ مسلمان کملائے کا مستحق شمیں۔ اللہ تعالی نے قرآن کریم میں
مسلمانوں کو تین قتم پر منقسم فرمایا ہے۔ جیسا کہ آیات ذیل سے ظاہرہے۔

للفقراء المهاجرين الذين اخرجوا من ديارهم و اموالهم يبتغون فضلا من الله و رضوانا و ينصرون الله و رسوله اولئك هم الصادقون ٥ والذين تبوؤ الدار والايمان من قبلهم يحبون من هاجر اليهم ولا يجدون في صدورهم حاجة مما اوتوا و يؤثرون على انفسهم ولو كان بهم خصاصة ومن يوق شح نفسه فاولئك هم المفلحون ٥ والذين جاء و من بعدهم يقولون ربنا اغفرلنا ولا خواننا الذين سبقونا بالايمان ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين امنوا ربنا انكرؤف رحيم وشراك ميمان ولا تجعل في قلوبنا غلا للذين امنوا ربنا انكرؤف رحيم وشراك الذين المنوا ربنا انكرؤ والول من عدالها الله المنافرة الم

نکالے گئے۔ اور اپنے مالوں سے بھی (الگ کیے گئے تاہم) خدا تعالیٰ کے فعنل اور اس کی خوشنودی کے خواستگار ہیں اور اللہ اور اس کے رسول کی نفرت کئے جاتے ہیں وہی تو سیح ہیں- اور (ان کا حق بھی ہے) جو ہجرت کرنے والول کے پہلے سے وار ہجرت میں مقیم اور ایمان پر قائم ہیں اور جو ان کی طرف اجرت کرے آئے ان سے محبت رکھتے ہیں- اور جو کھے ان اجرت کرنے والوں کو ویا جائے۔ اس کی اپنے ولول میں خواہش نہیں پاتے۔ اور کو انہیں خود ضرورت محسوس ہو ہا ہم دو مرول کو اپنی ذات پر ترجیح دیتے ہیں اور جو شخص اپنے نفس کی حرص سے بچالیا جائے۔ تو ایسے ى لوگ تو (بورى بورى) فلاح بائے والے ہیں- اور (ان كاحق بھى ہے) جو ان مماجرين و انصار كے بعد يہ عرض كرتے ہوئے آئے كہ اے مارے يروردگار تو مارے كنابول اور مارے جائوں کے گناہوں کو جنہوں نے ایمان میں ہم پر سبقت کی ہے۔ بخش وے اور ہمارے ولول میں ایمان والوں کی طرف سے کوئی کینہ نہ رہنے دے۔ اے ہمارے بروردگار بے شک تو بڑا مرمانی كرف والا برا رحم كرف والا ب (ترجمه شيعه) ان آيوں من يملے مهاجرين كى مرح ب اور صاف ينا ريا كيا ہے۔ كه ان كى جرت محض خدا و رسول كے ليے اور دين حل كى مدد كے ليے تقى- وه اليا اقوال و انعال ميں راستباز تھے۔ پھراللہ تعالی نے انصار کی مدح فرمائی ہے کہ وہ کس طرح مهاجرین سے محبت سے پیش آئے۔ اور ان کی خدمت گزاری میں کیے ایٹار سے کام لیا۔ ای واسطے فلاح کو ان کی ذات ہے وابستہ فرمایا۔ پس جس شخص کو اپنی نجات و فلاح مطلوب ہو۔ اسے چاہیے کہ انصار کی طرح مهاجرین کی محبت کو اپنا شیوہ بنائے۔ اور صحابہ کرام پر طعن و تشنیع سے دور رہ كرشب و روز أن كے حق ميں وعائے خير كرے تأكه فتم سوم كے مسلمانوں كے زمرہ ميں -97,1928

بیان بالا سے واضح ہوگیا کہ صحابہ کرام کے ایمان کی نبست اہل سنت و جماعت کے مفہ کرہ کی بنا قرآن کریم کی ان آیات محکمات پر ہے۔ جن میں تاویل کی مخبائش نہیں۔ اگر شیعہ اسپنے دعوے میں سے بیل آیات محکمات پیش کریں۔ جن میں سے الیک آیات محکمات پیش کریں۔ جن میں تاویل کو وضل نہ ہو۔ ورنہ ہم ایسی روایات کے سننے کے لیے تیار نہیں جو نصوص قرآن کے کافس بیل۔ اگرچہ شیعہ روایات مناقب صحابہ سے بہت احتراز کرتے ہیں محربایں ہمہ ان کی معتبر کی معتبر کی مقام پر نقل کریں ہے۔ کی انشاء اللہ مناسب مقام پر نقل کریں گے۔

باب دوم

صدیث قرطاس کی بخشے ہیں اندا صدیث قرطاس میں حسنا کتاب اللہ کو دیکھ کروہ غلط فنی کے سیب قرآن موجود کے سخت مخالف ہیں اندا صدیث قرطاس میں حسنا کتاب اللہ کو دیکھ کروہ غلط فنی کے سبب عجیب چہ میگوئیاں کرتے ہیں۔ ہم ذیل میں اس صدیث کے متعلق ان کے اعتراضات کو مع جوابات پیش کرتے ہیں۔

فال السيد امداد امام 🖘 عهد رسول الله مين پيروان اسلام کے عيادات و معاملات كا وي طريقه موگاجو خود رسول خدا کا ہوگا۔ مثلاً اگر آپ ہاتھ باندھ کر نماز پڑھتے ہوں کے تو سب مسلمان بھی ہاتھ باندھ کر نماز پڑھتے ہوں گے۔ ای پر حج و زکوۃ وغیرہ کو بھی قیاس کرنا چاہیے۔ کہ تمام ارکان دین ک تبعیت آنخضرت کے ساتھ ہوتی ہوگی- بیج و شریٰ اور دیگر معاملات کا بھی نہی طور ہوگا۔ کہ آپ کو جس طور پر مسلمان عامل ہوئے ویکھتے ہوں کے دیبائی کرتے ہوں گے۔ کوئی شک نہیں کہ می طور آپ کے ساتھ آپ کی امت کا آپ کی وفات کے قریب تک رہا مگر جب آپ مرض الموت میں جلا ہوئے ال وقت آپ سے اور آپ کے بعض اکابر امت سے ظاہر طور پر دو بھاری اختلاف ظہور میں آئے۔ایک ا قصہ قرطاس کہتے ہیں اور دوسرا تعلق جیش اسامہ کملاتا ہے۔ اول کی سرگزشت یہ ہے کہ حب بان صاحب شرح مواقف (جو اکابر علائے اہل سنت ہے ہے) رسول الله ملتی پیلم کی رصلت کا وقت قریب ہوال آخضرت الله الم الم عنار مجلس سے ایتونی بقرطاس اکتب لکم کتابا لن تضلوا بعدی الله ميرے پاس كاغذ لاؤ- تاكہ ہم چھ ايس تحرير حوالہ قلم كريں كہ جس سے بعد جارے تم مراہ نہ ہو جا (و یکھو صحیح مسلم کتاب الوصایا و بخاری کتاب العلم کا باب العلم ص ۱۸ و مشکوة شریف بعد باب الکرالك حضرت عمراس پر راضی نه جوئے اور قرمایا ان الرجل غلبه الوجع و عندنا کتاب الله حسبنا الله اس مخص پر بیاری کا غلبہ آیا ہے درحالیکہ جمارے پاس کتاب خدا کی ہے۔ اور وہ ہم لوگوں کے لیے کا ہے۔ صبح مسلم اور صبح بخاری میں یہ عدیث اس طرح پر ہے۔ ان النبی علیه السلام قد غلبه الوجا حسبنا كتاب الله اس جھڑے میں آوازیں بلندہوگئیں جس سے رسول خدانے بیزار ہو كرب وليا قوموا عنی لا ینبغی عندی التنازع اینی میرے پاس سے تم لوگ اٹھ جاؤ۔ میرے نزویک اڑائی جگزا

مزا دار نہیں مخضر بیہ ہے کہ رسول اللہ کوئی آخری تحریری تھم نہیں چھوڑ سکے اس قصہ پر نظر غور ڈالنے ہے صاف معلوم ہوتا ہے کہ آپ اس وقت بورے طور ہوش و حواس میں تھے۔ اور موجود کی ہوش و واس میں کچھ تحریر کرنا چاہتے تھے۔ ہر گز ایسا نہ تھا کہ مغلوب مرض ہو کر نعوذ باللہ بریان فرمانے یا کہنے گلے نتے۔ اس وقت بھی آپ ایسے پورے ہوش وجواس میں تتے۔ کہ اپنے کو ٹبی سیجھتے تتے۔ اور سمجھے کے ماتھ اپنے رتبہ نبوت کا اس قدر امتیاز رکھتے تھے کہ اپنے سامنے شور و غل کا ہونا اپنی عظمت کے خلاف وانتے تھے۔ نہیں معلوم کہ آپ کیا لکھ جانے کو تھے۔ مگر کوئی ایسی ہی ضروری بات تھی۔ کہ جس کو حوالہ قلم كرنا چاہتے تھے۔ يہ بات ضرور دين كے ساتھ تعلق ركھتى تھى۔ اور نمايت اہم اندازكى تھى تھى اليى اہم صورت تھی۔ کہ امت کو ممرابی سے بچانے کی حیثیت رکھتی تھی۔ جیسا کہ آپ کے فرمورہ بالا سے میاں ہو تا ہے۔ شیعہ کہتے ہیں کہ رسول خدا علی کو تحریری طور پر اپنا جانشین بنانا چاہتے تھے۔ اہل سنت فراتے ہیں کہ حضرت ابو بحر کو تحریز کی رو سے اپنا خلیفہ گرواننے کو تنے۔ مگر صدحیف کہ جب کوئی تحریر وقوع میں نہ آسکی تو قیاس کے سوا کوئی دو سرا تھم نہیں لگایا جاسکتا ہے۔ اگر اہل سنت کا قیاس عقیدہ یا بیان درست ہے تو حضرت عمرفے حضرت ابو بكر بلكه تمام مسلمانوں پر براستم كيا-كس واسطے كه اگر حضرت ابوبكر رسول خدا کی کسی تحریر کے مطابق خلیفہ قرار یا جانے تو کسی مسلمان کو حضرت ابو بکر کی خلافت سے انکار نیں ہوسکا تھا۔ ایس صورت میں خلافت کا کوئی جھڑا اسلامی دنیا میں پیدا نہیں ہوسکی تھا۔ جس سے تمام مسلمان ایک ہی ندہب کے پابند رہتے۔ شیعہ جو کہتے ہیں کہ رسول خدا کو تحریری وسیلہ ہے علی کو اپنا ضلیفہ بنانا منظور تھا۔ وہ اس رو سے کہ چند مینے بیشتر آنخضرت علی کو زبانی اور عملی طور برخم غدر میں اپنا جائشین بنا چکے متھے۔ (دیکھو تاریخ کی کتابیں) راقم آئیندہ قصہ غدیر درج کتاب ہذا کرنے کو ہے جس سے ظاہر ہوگا کہ شیعوں کا دعوی بے بنیاد نہیں معلوم ہو تا ہے۔ خبر۔ حقیقت حال جو کچھ ہو ظاہر ایسا نہیں معلوم ہو یا ہے کہ حضرت عمر نے حضرت ابو بکر کی تحریری خلافت کے خلاف میں کوئی مخالفانہ کاروائی اختیار کی ہوگ۔ اگر حفرت عمر کو اس کا لیقین ہو تا۔ کہ رسول خدا حضرت ابو بکر کو تحریر طور پر اپنا خلیفہ بنانے کو ہیں تو حفرت عمر آنخضرت کو الیمی تحریر سے روکنے کے عوض اور بھی الیمی تحریر کے اتمام پر امادہ فرماتے- اس سلی کہ الی تحریر کا انجام وہی ہوتا جو حضرت کی تائید سے سقیفہ بنی ساعدہ میں صورت پذیر ہوا۔ بلکہ حقیقت ۔۔۔۔ طال بیہ ہے کہ حضرت عمر کو اس کا یقین تھا کہ حضرت رسول خدا علی کو ہی تحریری طور پر می اپنا خلیفہ بنانا چاہتے ہیں جیسا کہ احمد بن ابی طاہر نے تاریخ بغداد میں حضرت این عباس سے ایک روایت نقل کی ہے جس میں خود حضرت عمر کی زبانی فدکور ہے کہ رسول الله اللی الله عالت مرض میں علی کے نام كل مراحت كرنا جائة تنه ليكن مي مانع موا- اس كي فرموده رسول سي آپ كو مخالفت كى ضرورت

ری - یہ امر کہ علی ظافت سے دور پڑ جائیں - اس کی کوششیں حضرت عمر کو بیشہ ملحوظ رہیں جیما کہ اس ظاہر ہوگا۔ یہ امر پوشیدہ نہیں ہے۔ کہ اپنی حیات میں حضرت عمر نے علی کو خلافت سے پوری کامیابی کے مائھ دور رکھا اور اپنے بعد بھی اپنی لاجواب پولٹیکل قابلیت سے اپنا جائشین ہونے نہ دیا۔ کیا شک ہے کہ حضرت رسول اللہ کی ہدایت کا عمل میں نہ لایا جانا اسلام کی بدی یہ نصیبی سے خبر دیتا ہے۔ حیف پر اسلام اٹل اسلام اِنَّا لِلْهُ وَ اِنَّا اِلَيْهِ وَاجِعُونَ اگر ایس تحریر عمل میں لائی علی ہوتی۔ تو اسلام ہزاروں مفدوں سے مامول رہتا۔ اور آج تک جن نکبتوں میں بتلا ہے ان سے اسے پوری نجات ملی رہتی۔ (مصباح الله والیناح البم ۔ ص ۵ - ۲)

ا قول 🗢 مصنف کی عبارت کا خلاصہ مطلب یہ ہے۔

مرض موت میں آنخصرت ملی کے کاغذ طلب کیا۔ تاکہ کوئی آخری تحریری تھم چھوڑ سکیں۔ جو بات آپ تحریر فرمانا چاہتے تھے وہ ضرور دین کے ساتھ تعلق رکھتی تھی اور اہم الی تھی کہ امت کو گمرابی سے بچاتی الی تحریر کو روکنا کیما ظلم ہے۔

ا کاغذ طلب کرتے وقت آنخضرت ملی کی موش و حواس میں تھے ایسا ہر گزنہ تھا کہ مغلوب مرض ہو کر نعوذ باللہ بڑیان فرمانے یا کہنے لگے تھے۔

حضرت عمر صبنا کتاب اللہ کمہ کر اس تحریر کے وقوع میں آنے کے مانع ہوئے جس سے الیا اختلاف اور شور وغل برپا ہوا کہ حضور اقدس مٹھالیم نے بیڑار ہو کر فرمایا کہ میرے پاس سے اٹھ ا جاؤ۔

شیعہ کتے ہیں کہ آنخضرت مالی کے حضرت علی کو تحریری طور پر اپنا خلیفہ بنانا چاہتے تھے۔ شیعوں کا سے دعویٰ بے بنیاد نہیں کیونکہ اس واقعہ سے چند مینے پیشر آنخضرت مالی کے حضرت علی کو خم غدیر میں زبانی اور عملی طور پر اپنا خلیفہ بنا چکے تھے۔ اب اس کی تائید بذریعہ تحریر فرمانے گئے تھے۔ پونکہ حضرت عمر کو یقین تھا کہ حضور اقدس مالی کیا حضرت علی کو خلیفہ بنانے گئے ہیں اس لیے انہوں نے یہ وستاویز کلھنے نہ دی۔ اس موقع پر کیا مخصر ہے حضرت عمر او بھی حضرت علی کو خلافت بنا فصل سے محروم کیا۔ اور خلاف بی دور رکھا۔ اور اپنے بعد بھی اپنی لاجواب پولٹیکل اپنی حیات میں محرق مرتفی کو خلافت سے دور رکھا۔ اور اپنے بعد بھی اپنی لاجواب پولٹیکل قالمیت سے خلیفہ نہ بنے دیا۔

اہل سنت کتے ہیں کہ آنخضرت سال کے ابو بکر کو بذریعہ تحریر اپنا جانشین ظاہر فرمانے لکے تھے۔ ممرجہ ان کا قیاس ہی قیاس ہے ان کے باس اس کی کوئی دلیل نہیں،۔

جواب سے پیشر قصہ قرطاس کے متعلق ہم وو روا سیس نقل کرتے ہیں۔ جن سے ناکمرن کو اصل قصہ کاعلم ہو جائے گا۔ اور وہ ہمارے جواب کو کما حقہ کیجئے کے قائل ہو جائیں گے۔ (۱) حدثنی عبدالله بن محمد حدثنا عبدالرزاق اخبرنا معمو عن الزهری عن عبید الله بن عبدالله عن ابن عباس رضی الله عنهما قال لما حضر رسول الله صلی الله علیه وسلم و فی البیت رجال فیهم عمر بن الخطاب قال النبی صلی الله علیه وسلم اکتب لکم کتابا لا تضلوا بعدہ فقال عمر ان النبی صلی الله علیه وسلم قد غلب علیه الوجع و عند کم القران حسبنا کتاب الله فاختلف اهل البیت فاختصموا منهم من یقول قربوا یکتب لکم النبی صلی الله علیه وسلم کتابالن منافوا بعدہ و منهم من یقول ما قال عمر فلما اکثر وا اللغوا و الاختلاف عند النبی صلی الله علیه وسلم کتابالن عملی الله علیه وسلم قال رسول الله قوموا قال عبید الله فکان ابن عباس یقول ان الزریة کل الزریة ما حال بین رسول الله قوموا قال عبید الله علیه وسلم و بین ان یکتب لم الزریة کل الزریة ما حال بین رسول الله صلی الله علیه وسلم و بین ان یکتب لم ذلک الکتاب من اختلافهم ولغطهم (کی بخاری مطور مرح 20 رائی - کتاب الف ب باب قرل الزین

 (۲) حدثنا قتيبة حدثنا سفيان عن سليمان الاحول عن سعيد بن جبير قال قال ابن عباس يوم الخميس وما يوم الخميس اشتد برسول الله صلى الله عليه وسلم وجعه فقال التولى اكتب لكم كتاب بالن تضلوا بعده ابدا فتنازعوا ولا ينبغي عند لبي تنازع فقالوا ماشانه اهجر استفموه فلهبوا يردون عليه فقال دعوني فالذي انا فيه خير مما تدعولي اليه و اوصاهم بثلاث قال اخرجو اليبود والمشركين من جزيرة العرب واجيزوا الوقد بنحو ما كنت اجيزهم و سكت عن الثالثة او قال فنسيتها - (مي بخارى - برا الرا الوقد بنحو ما كنت اجيزهم و سكت عن الثالثة او قال فنسيتها - (مي بخارى - برا الله و المرا الله و المنافذة او قال النبود والمشركين من الثالثة او قال المديدة العرب واجيزوا الوقد بنحو ما كنت اجيزهم و سكت عن الثالثة او قال فنسيتها - (مي بخارى - برا الله و المنافذة المن

حدے کی ہم کو قتیہ نے کہ حدیث کی ہم کو سفیان نے سلیمان احول ہے اور سلیمان نے سعید بن جہیرے کہ ابن عباس نے فرمایا پہنجشنبہ کا دن اور کیما بخت و ججیب پہنجشنبہ کا دن رسول اللہ سلیمین جرید کے دان رسول اللہ سلیمین جرید کے دور زیادہ ہوگیا۔ پس آپ نے فرمایا (سامان کتب) میرے پاس لاؤ۔ بس تہمارے واسطے ایک تحریر لکھ دول کہ جس کے بعد تم گراہ نہ ہوگے۔ پس حاضرین نے جھڑا اور اختلاف کیا۔ اور کسی چغیر کے پاس جھڑا اور اختلاف متاسب نہیں۔ پس بعضوں نے کما کہ رسول اللہ شاہا کی شان کیا ہے۔ کیا آپ کی زبان مبارک سے پریشان و مختلط کلام یا بدیان لکلا ہے۔ آپ سے دریافت شان کیا ہے۔ کیا آپ کی زبان مبارک سے پریشان و مختلط کلام یا بدیان لکلا ہے۔ آپ سے دریافت کرلو۔ پس وہ محاملہ کتابت کو آپ پر دوبارہ پیش کرنے گے۔ اس پر آپ نے فرمایا۔ جھے بھوڑ دو۔ کیو تک میں حالت (مراقبہ حق) میں ہوں۔ وہ اس سے بمتر ہے جس کی طرف تم جھے بلا رہ ہو۔ اور آپ نے ان کو نتین باتوں کی وصیت فرمائی۔ کہ مشرکین و بمود کو جزیمہ عرب سے نکال دو۔ اور آپ نے ان کو نتین باتوں کی وصیت فرمائی۔ کہ مشرکین و بمود کو جزیمہ عرب سے نکال دو۔ اور آپ نے ان کو نتین باتوں کی وصیت فرمائی۔ کہ مشرکین و بمود کو جزیم و عرب سے نکال دو۔ اور آپ نے ایان کر دیا۔ مگریش اسے بمول گیا۔

ابن بير عبون مروي سور المسال المسلم المسلم

میں ماضر ہو جائے۔ اگر یہ بھی تشاہم کر لیا جائے کہ حضرت علی ایسے بزول تھے کہ حضرت عمری موجودگی میں ایسانہ کرسکتے تھے۔ تو ہم پوچھتے ہیں کہ یہ واقعہ تو ہنجشنبہ کا ہے۔ اور حضور اقدس تازیم کا وصل شریف روشنبہ کو ہوا۔ اس ورمیانی عرصہ میں حضرت علی یا بنو ہاشم میں سے کوئی اور حضرت عمری فیر ماضری میں ارشاد نبوی کی تقییل کرسکتے تھے۔ ماضرین میں سے کسی کا بھی تقییل نہ کرنا صاف بتا رہا ہے کہ کتابت ذیر بحث ضروری نہ تھی۔ ورنہ حضور اقدس شائیم پر دومری وفعہ چیش کیا گیا۔ تو فرمایا کہ میرے لیے اس تحریر سے مشاہدہ حق بمتر ہے۔ مالانکہ یہ معلوم ہے کہ انبیائے کرام کے حق میں تبلیخ احکام سے ہندہ کرکوئی عبارت نہیں۔

امردوم كاجواب ﴿ قصه زير بحث كى بردو ردايات مذكوره بالاير نظرة النے عملوم بوتا ب کہ جب حضرت عشرے وقدت نظرے معلوم کرنیا کہ یہ امروجوب کے لیے نہیں اور یہ ویکھ لیا کہ اس وت آخضرت النيام كو درد شديد ب توسب س بيلے حسناكتاب الله فرماكر آپ كو كتابت كى تكليف سے بيانا جال اور بنا دياكه اس حالت مين ترك كتابت انسب و اوفق ب- اس ير حاضرين دو كروه مي منقتم مو مئے۔ بعض تو حضرت عمر کی طرف تھے۔ اور بعض وقوع کتابت پر مصر ہوئے۔ مجوزین کتابت نے اپنے قول کی تائمدیس متو تفین سے کہا۔ کہ تم جو انتثال امر نبوی میں توقف کر رہے ہو۔ کیا حضور اقدس مانجیج کا مید ارشاد بزیان ہے؟ لینی بریان چونکہ آپ کی زبان مبارک سے صادر نمیں ہوسکا اس لیے جو کچے آپ نے فرالا ہے۔ اس کا اجتمام کرنا جاسیے۔ اور جس بات کے لکھنے کا آپ نے ارشاد فرمایا وہ آپ سے بوچھ لیمی المسي- اس مسكله مين آمخضرت مان كيام في حضرت فاروق اعظم بنافتد كي رائع كي تصويب فرمائي كيونكه جب ووبارہ بیہ معاملہ آپ پر چیش کیا گیا۔ تو آپ نے صاف فرما دیا کہ جس جس حالت جس ہوں۔ وہ اس کتابت ت بمترب- ای واسطے باتی ایام حیات یعنی بقید چنجشنبه جعد شنبه یکشنبه اور اول روز دو شنبه آپ نے باوجود پوری قدرت اور ہوش و حواس کے ووبارہ ارشاد کتابت نہ فرمایا۔ اس تقریرے صاف ظاہرے کہ حضرت عمريا كونى اور اصحابي حضور اقدس الفيليم كي شان ميس نعوذ بالله بديان كا قا بنل نهيس موا- بلكه مجوزين كابت في وائ رائ كى تائد من بطريق استفهام انكار متو تقين سے بوچھا تھا۔ كه تم جو سامان كتابت كے فامر كرفي من توقف كررب مو- تم بى مناؤكيا آخضرت النيام كابد ارشاد بريان ب؟ يعني آپ كاارشاد بليان نيس مو سكتا- لنذا جو يجمه آپ فرماتے بين اس كى لفيل كرنى جاہيے- جن رويايوں مين حرف استفهام مذكور نهيل- بلكه فقط البحريا بتجرب وبال استفهام مقدر سجهنا جابي- چنانچه فيخ عبدالتي محدث والوى اشعته اللمعاف (جلد جهارم ص ١٢٣) من فرماتے ہيں- واكر در بعضے روايات حرف استفهام مذكور نباشد مقدار است فاقم انتى- علامه شاب نفأ جى نتيم الرياض (جز رائع ص ١٠٠٨) من تحرير فرمات بيل-

والروایات محلها تدل علی الله استفهام ملفوظا و مقدد . لین آم روایتی ولالت کرتی تی آن که استفهام سیم ملفوظ او مقدد

امرسوم كا بواب مرمزت عمر بالله كا سبنا الله فرمان بعا تما آب وه جليل القدر من ہے۔ کہ علم و صل میں سوائے ابو بکر بڑاللہ کے اور کوئی محالی آپ کے برابر نہیں۔ یہ وہی بزرگ ہیں جر ي تبست الخضرت الله إلى الله جعل الحق على لسان عمر و قلبه (الله تعالى ل حر) حضرت عمر کی زبان اور ول پر پیدا کیا ہے۔ ترزی) ہید وہی بزرگ ہیں جن کے علم کی زیادتی کی حضور اقد علی است میں دور کی شکل میں ویکھا (مفاری و مسلم) ہید وہی بزرگ ہیں جن کی نسبت ہمارے آقائ تارار الله المراح في القدكان فيما قبلكم من الامم محدثون فان يك ني احتى احدفانه عمو (ب شک تم سے پہلی امتوں میں ملهم ہوا کرتے ہتے۔ اگر میری امت میں کوئی ملهم ہے تو وہ عمریں۔ بخاری و مسلم) اسی واسطه متعدد مقامات مثلاً مقام ابراجیم ستر حصرات امهات المومنین بنانخه اور اسیران بدر میں وسی اللی آب کی رائے کے موافق نازل ہوئی۔ قصہ زیر بحث میں آپ کا حسبنا کتاب الله فرمانا آپ کے کال وقت نظرم ولالت کرتا ہے۔ آپ حضور اقدس سلی لیا کے ارشاد لا تصلوا بعدہ (جس سے بعد تم مراد نہ ہوگے) سے سمجھ کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ تم مراہی پر جمع نہ ہو سے۔ لیعنی مراہی پر تہمارا اجماع نہ ہوگا۔ال معن کے افادہ کے لیے مثلال کو عمیر جع کی طرف منسوب کیا گیا ہے (دیکھو حاشیتہ السندی عل البھاری) اس کے ب معن نہیں کہ اس تحریر کے بعد تم میں سے کوئی بھی مراہ نہ ہوگا۔ کیونکہ بیا تو ان احادث میجد کے خلاف ہے جن میں صنور اقدس مل کیا نے بحالت صحت خبروی کہ میری امت کے تہتر فرقے ہوں ہے۔ جو ایک کے سواسب روزخ میں ہول مے۔ اور عنفریب فتے بہا ہوں مے۔ اس جب سیدنا عمر بن تند سے معنی مجھے۔ اور آپ کو آبات ترآن (وعد الله الذين امنوا منكم و عملوا الصلحت ليستخلفنهم في الارض - كنتم خير امة لتكونو الشهداء على الناس) سے معلوم ہوا كہ يہ مقصود تو اس امت كے ليے تحرير زير بحث ك بغير بمي ماصل ہے۔ كيونك جن بزركول سے مغانب الله خلافت كا وعده موجكا تفا۔ اور جنبيس الله تعالی فير امت کے بیارے لقب سے خطاب فرما چکا تھا۔ اور جن کے عادل ہونے کی خبرائے کلام پاک میں دے پا تھا۔ وہ کمی امریس ممرابی پر متفق کیو کر ہو سکتے تھے۔ اور آپ نے امر نبوی میں اس بات کی طرف اشار پایا که اس رحمته للعلمین کا الیی مالت میں تکلیف کتابت کو گوارا فرمانا محض کمال احتیاط اور است؟ شفقت و راحسد کی وجہ سے ہے- تو ان حالات میں معزت فاروق اعظم نے اپنے جواب یا صواب سے ووسرول کو الکا کرویا کہ ایسی شدت مرض میں امت کے لیے سزاوار تر ہے کہ اینے آقائے نادار اللہ شفتت کو طوط رکھے۔ اور بنا دیا کہ حضور اقدس مان کیا کا مقصود اس سے حاصل جس کا دعدہ قرآن پاک جما

ہو چکا ہے حسبنا کتاب اللّه کے ہی معنی یعنی مقصود ذیر بحث کے حصول میں وہ کانی ہے۔ جس کا وعدہ اللہ تعالیٰ نے اپنی کتاب میں کیا ہوا ہے۔ الی رعایت شفقت کی ایک نظر جنگ بدر میں بھی ملتی ہے۔ بدر کے دن حضور اقدس سائیجا میدان جنگ میں عراش (کجور کی شاخوں کا سائبان) میں تشریف رکھتے ہیں۔ اور اس میں بجویار عار کوئی آپ کے ساتھ نہیں۔ اگرچہ حضور اقدس سائیجا کو ہجرت ہے بھی پہلے بدر میں کلت کفار کی خریدریعہ وتی مل چکی ہے۔ (سَیُهُوْرَهُ الْجَمْعُ وَیُوَلُوْنَ اللّهُ بُولَ اور اهرت و ظفر کا وعدہ بھی آپکا ہے۔ و اذیعد کم اللہ احد سے الطائفتین الایة و کان حقا علینا نصو المومنین الایه بلکہ اس رات جس کی شن کو لڑائی ہوئی خود حضور اثور سائیجا معرکہ کی جگہ پر تشریف نے جاکر دست مبارک اس رات جس کی شن کو لڑائی ہوئی خود حضور اثور سائیجا معرکہ کی جگہ پر تشریف نے جاکر دست مبارک سے اشارہ کرتے ہیں کہ یہ فلال کافر کے مارا جانے کی جگہ ہ اور یہ فلال کافر کے قبل ہوتے ہیں۔ "یا اللہ تو نے جو جھے وعدہ کیا ہے اے پوراکر۔ یا اللہ تو نے جو جھے وعدہ کیا ہے اے پوراکر۔ یا اللہ تو نے جو جھے وعدہ کیا ہے اے پوراکر۔ یا دفتہ تو مسلم اور عالمی اتنا الحال کر دے گا۔ تو روئے نظری جو جھے دعدہ کیا ہے۔ وہ عطاکر۔ یا اللہ اگر تو مسلمانوں کا یہ گروہ ہلاک کر دے گا۔ تو روئے نظری پر تیری عبادت نہ کی جائے گی۔ (صحیح مسلم) اور وعامیں اتنا الحال کیا جو راک کیا تہ مبارک ہو کے مارا کیا ہی تروہ میں بہتے الحال کیا جو راک ہور کے ایار کیا ہی اللہ ایس کیا الحال کیا ہوگی ہور کیا ہو تھوں کیا ہے۔ دھرت صدیتی آ کبر نے چاور الحاک کی دو اس تی ای درخواست آپ کو کافی ہے اس نے آب ہو وعدہ کیا ہورا کرے گا۔" (صحیح مسلم)

ہاری تقریر بالا سے ظاہر ہے کہ حضورا اقدس ملی ایک ارشاد کا جو مطلب حضرت عمر بناتھ سمجھے وی درست تھا۔ اور آپ کا دو سمرے صحابہ کرام سے حسبنا کتاب الله فرمانا بھی بجا تھا۔

اس فتم کی رعایت شفقت کو اگر رد قول پنجبرعلیه السلام کما جائے تو جعرت علی کرم اللہ وجه سنے کی جگه اس سے بڑھ کر کیا۔ اور صاف قول پنجبرعلیه العلوة والسلام کی مخالفت کی۔ چنانچہ صبح بخاری میں ہے۔

حدثنا ابو اليمان اخبرنا شعيب عن الزهرى حدثنى محمد بن سلام اخبرنا عتاب بن بشير عن اسحاق عن الزهرى اخبرنى على بن الحسين ان الحسين بن على رضى الله عنه قال ان رسول الله وضى الله عنه قال ان رسول الله ملى الله عليه وسلم طرقه و فاطمة عليها السلام بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لهم الاتصلون فقال على فقلت يا رسول الله انما انفسنا بيد الله فاذا شاءان يبعثنا بعثنا بعثنا فانصر ف رسول الله صلى الله عليه وسلم حين قال له ذلك و لم

يرجع اليه شيئا لم سمعه وهو مدبر يضرب فخذه وهو يقول وكان الانسان اكثر

صدیث کی ہم کو ابو الیمان نے کہ خروی ہم کو شعیب نے زہری سے (طریق دیگر) مدیث کی جو ک محد بن سلام نے کہ خبردی ہم کو عماب بن بشیرنے اسحاق سے اور اسحاق نے زہری ہے کہ خبردی ہم کو علی بن الحسین نے کہ معرت حسین بن علی بناتھ نے اسے خبروی کہ معرت علی بن ال طالب نے بیان کیا کہ رات کے وقت رسول اللہ ملٹی کیا میرے پاس اور حضرت فاطمہ ملیماا لسلام بنت رسول الله ملی کیا سے ایس تشریف لائے۔ اور ہم سے فرمایا کیا تم نماز (تہجد) نہیں پڑھتے۔ حعرت على كابيان ہے كد ميں نے كما- يا رسول الله طري مارى روحيس الله كے باتھ مي جي و جب بمیں اٹھانا چاہتا ہے تو ہم اٹھائے جاتے ہیں۔ جس وقت حضرت علی نے رسول الله مان کا ا يه كما توآب والى بوئے- اور حضرت على كو كچھ جواب نه ديا- پھر على عليه السلام نے آب كوسنا طالاتك آپ واپس ہو رہے تھے۔ اور ائن ران پر ہاتھ مار رہے تھے۔ اور فرما رہے تھے وكان الانسان اكثر شئى جدلا (اور انسان سب چزے زیادہ جھڑنے والا ہے) اس قصے میں حفرت علی کا رسول اللہ ملی کیا ہے جھرنا اور شہر جریہ سے متمک ہونا ظاہر ہے اس طرح صحح بخاری میں ذرکور ہے کہ جب صلح نامہ حدیبیہ لکھا جا رہا تھا تو حضرت علی نے آخضرت النظام کے نام کے ساتھ رسول اللہ لکھ دیا۔ اس پر روسائے کفار نے اعتراض کیا۔ اور کما کہ آگر ہم اس لفظ کومسلم رکھتے تو جنگ کیوں کرتے حضور اقدس مانی لیا نے ہرچند فرمایا کہ اس لقب کو مٹا دو۔ مرحضرت علی نے تقیل نہ کی- یمال تک کہ خود حضور اقدس ملی الے اے صلح نامہ اینے ہاتھ مبارک میں لے کر لفظ رسول الله كومثا ديا-

میں سرف انٹا کمہ دینا کافی ہے کہ حدیث ٹم غدیر کی روے حضرت موٹی مرتضٰی کو نہ زبانی خلیفہ بنایا کما او نه عملی طور بر- اگر صدیث فم غدیر خلافت علی میں نص عمی جیسا که شیعه کا قول ہے- تو اور تحریر کی کیا من من من کیونکہ وہ نص تو آنخضرت ملی ایکا نے بقول شیعہ ستر ہزار آدمیوں کے سامنے ارشاد فرمائی تی ۔ ایک نص مشہور کی موجودگی میں کتابت کی کیا حاجت تھی۔ اگر کما جائے کہ امت اس نص سے مکر ہو تی تھی۔ قو ہم پوچھتے ہیں کہ وہ تحریر جو طائفہ قلیلہ کے سامنے وقوع میں آئے کیا ایسی امت اس کو نہ جماعتی می حقیقت بہ ہے کہ حدیث فم غدر کو حضرت مولی مرتفعی کی خلافت سے پچھ تعلق نہ تھا۔ اور نه محابه کرام و اہل بیت عظام میں ہے کسی نے اسے الیا خیال کیا۔ خود حضرت عباس و حضرت علی مجمی وہ نه سمجے تنے جو یہ شیعہ کہتے ہیں اس مطلب پر احادیث ذیل شاہد ہیں-

(۱) حدثنا اسحق اخبرنا بشربن شعيب حدثني ابي عن الزهري قال اخبرني عبدالله بن كعب ان عبدالله بن عباس اخبره ان عليا يعنى ابن ابي طالب خرج من عند النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثنا احمدبن صالح حدثنا عنبسة حدثنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عبدالله بن كعب بن مالك ان عبدالله بن عباس اخبره ان على ابن ابي طالب خرج من عند النبي صلى الله عليه وسلم في وجعه الذي توفي فيه فقال الناس يا اباحسن كيف اصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اصبح بحمد الله بارئا فاخذ بيده العباس فقال الا تراه انت والله بعد الثلاث عبدالعصا والله اني لاري رسول الله صلى الله عليه وسلم سيتوفى في وجعه و اني لاعرف في وجوه بني عبدالمطلب الموت فاذهب بنا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فنساله فيمن يكون الامرفان كان فينا علمنا ذلك و ان كان في غيرنا امرناه فاوصى بنا قال على والله لئن سالناها رسول الله صلى الله عليه وسلم فيمنعنا لا يعطيناها الناس ابدا وإني لا اسالها رسول الله صلى الله عليه وسلم ابدا (مح يخارى يزء رائع - باب المعانقة وقول الرجل كيف احجنا)

مدیث کی ہم کو اسحاق نے کہ خبری وی ہم کو بشرین شعیب نے کہ حدیث کی مجھ کو میرے باب نے زہری سے کہ کما زہری نے جھے کو عبداللہ بن کعب نے کہ عبداللہ بن عباس نے اس کو خبر وی کہ علی لین ابن ابی طالب ہی ساتھ الے پاس سے نکلے۔ (طریق دیکر) اور حدیث کی ہم کو احمد بن مالح نے کہ مدیث کی ہم کو عنبہ نے کہ مدیث کی ہم کو یوٹس نے این شاب سے- کما ابن مماب نے کہ خردی جھے کو عیداللہ بن کعب مالک نے کہ عیداللہ بن عباس نے اس کو خبردی کہ

علی ابن ابی طالب نی مین این کے پاس سے نکاے۔ اس ورو میں کہ جس میں حضور نے وفات پار پی لوگوں نے پوچھا اے ابو الحسن رسول الله مین کیا کس حال میں مبح کی؟ حفرت علی نے میں کی الله مین کی کا باتھ پارا اور کر بھر الله آپ نے الله آپ کے الله کی حضرت علی کا باتھ پارا اور کر کیا تو نہیں ویکھا کہ رسول الله مین کی الله مین کے جیں۔ الله کی حتم تو تین ون کے بعد فیر کے بی ہوگا۔ میرا تو گمان ہے کہ رسول الله مین کی اس ورو میں وفات پائیں گے میں عبدالمطلب کی اوادو کے چروں میں موت (کے نشان) بچانا ہوں۔ تو جمیں رسول الله مین کی اس لے چل بم آپ سے وریافت کرلیں کے کہ خلافت کن میں ہوگا۔ اگر ہم میں ہوئی تو یہ جمیں معلوم ہو جائے گا۔ اور اگر ہمارے سواکسی اور میں ہوئی تو یہ جمیں معلوم ہو جائے گا۔ اور اگر ہمارے واسطے وصیت فرائیں گے۔ حضرت علی نے کہا۔ الله کی قشم اگر ہم رسول الله مین ہوئی تو نہ میں حضور ہارے واسطے وصیت فرائیں گے۔ حضرت علی نے کہا۔ الله کی قشم اگر ہم رسول الله مین ہوئی تو رسول الله مین ہوئی خلافت نہ دیں مین تو رسول الله مین ہوئی خلافت نہ دیں گارے واسط کریں اور آپ ہم سے انکار کر دیں۔ تو لوگ ہم کو بھی خلافت نہ دیں گے۔ میں تو رسول الله میں ہوئی خلافت نہ دیں گارے میں تو رسول الله مین ہوئی اور آپ ہم سے انکار کر دیں۔ تو لوگ ہم کو بھی خلافت نہ دیں گے۔ میں تو رسول الله مین ہوئی اور آپ ہم سے انکار کر دیں۔ تو لوگ ہم کو بھی خلافت نہ دیں گے۔ میں تو رسول الله میں ہوئی خلافت طلب نہ کروں گا۔ انتی۔

(۲) اخبرنا منحمد بن عمر حدثنى هشام بن سعد عن زيد بن اسلم قال جاء العباس على النبى صلى الله عليه وسلم فى وجعه الذى توفى فيه فقال على ابن ابى طالب ما تريد فقال العباس اريدان اسال رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يستخلف مناخليفة فقال على لا تفعل قال ولم قال اخشى أن يقول لا فاذا ابتغينا ذلك من الناس قالوا اليس قد ابى رسول الله صلى الله عليه وسلم- (طبقات ابن سعد مطبوعه جرمنى - الجزء الثانى من القسم الثانى ص٣٩)

خبروی ہم کو محر بن عمر نے کہ حدیث کی مجھ کو ہشام بن سعد نے زید بن اسلم ہے۔ کما زید نے کہ حضرت عباس نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں آئے اس ورو میں کہ جس میں آپ نے وفات پائی۔ پس حضرت عباس نے کما۔ میں وفات پائی۔ پس حضرت عباس نے کما۔ میں عفرت بائی۔ پس حضرت عباس نے کما۔ میں عبام کہ رسول اللہ ساڑی اس ورخواست کروں کہ ہم میں سے فلیفہ بناویں۔ حضرت علی نے کما۔ ایسا نہ سیجین حضرت عباس نے پوچھا کیوں؟ حضرت علی نے جواب ویا کہ میں ڈر؟ ہوں کہ آپ انکار قرما دیں تو پھر جب ہم لوگوں سے طلب کریں کے تو وہ کمہ ویں سے۔ کیا رسول اللہ مٹری کیا؟ انتی۔

ہروو روایت بالا سے معلوم ہوا کہ معزرت علی کی خلافت پر نص تو در کنار کوئی اشارہ تک موجود نہ تھا۔ اگر موٹی مرتفئی کرم اللہ وجد کو ذرا سا سمارا بھی نظر آیا۔ تو معزرت عباس کے کہنے پر مجھی انگارن

فهاتے- اور خود حضور اقدس ملی الله کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کرتے- للذاب کمنا کہ معزت عمر کو ر ایش مناکہ رسول الله مالی مالت مرض میں بذریعہ تحریر حصرت علی کی خلافت کی تصریح قرمانے کے تھے۔ مالک بے بنیاد ہے۔ شیعہ نادر الوجود کتب تاریخ کا حوالہ گھڑنے میں بڑے مشاق ہیں- احمد بن انی طاہر کی اریخ بغداد کا حوالہ بھی انشاء اللہ اس تبیل سے لکلے گا۔ اگر بالفرض ایس شاذ روایت اس میں موجود بھی ہو۔ و کتب مندداولہ کی روایت میحد کے مقابلہ میں اسے چیش نہ کرسکتے۔ سیدنا عمر کی نسبت جو پچھ مصنف نے لکھا ہے محض افتراء ہے۔ مقیفہ بنی ساعدہ میں جو فیصلہ موا- اس پر حضرت علی نے اپنی رضا مندی کا اظهار فرمایا- جیسا که عنقریب بیان ہوگا۔ حضرت عمراور حضرت علیؓ کے باہمی تعلقات نمایت خوشکوار تھے۔ حی کہ مولی مرتقعیٰ نے اپنی بیٹی ام کلثوم بنت فاطمہ الزہرا کا نکاح حضرت فاروق اعظم سے کر دیا۔ اور معرت فاروق اعظم مهمات امور میں حضرت مولی مرتضی سے مشورہ لیا کرتے تھے۔ چنانچہ غزوہ روم میں آپ سے مشورہ لیا تھا جیسا کہ نبج البلاغہ میں فدکور ہے۔

امر پنجم کا جواہے 🐷 اہل سنت و جماعت کا یہ وعویٰ کہ آنخضرت ملی پیا بذریعہ تحریر حضرت صدیق ا کبر کی خلافت کی صراحت فرمانے گئے تھے۔ بے بنیاد معلوم نہیں ہو تا۔ ان کے دعویٰ کے تائید ولا کل ذیل ہے ہوتی ہے۔

(۱) عن عائشة قالت قال لى رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه ادعى لى ابابكر اباك و اخاك حتى اكتب كتابا فاني اخاف ان يتمنى متمن و يقول قائل انا ولا و يابي الله والمومنون الا ابا بكر رواه مسلم في كتاب الحميدي انا اولى بدل الما ولا (مكلوة - إب في مناقب الي بكر العديق)

حفرت عائشہ سے روایت ہے کما حفرت عائشہ بنا تھ لے کہ رسول اللہ مان کے مرض موت میں فرمایا- که تو این باپ ابو بکر اور این بھائی (عبدالرحن) کو میرے پاس بلاتا که میں ایک تحریر لکھ دول- کیونکہ میں ڈر یا ہول کہ آرزو کرنے والا آرزو کرے اور کہنے والا کے کہ خلافت کا مستحق مول- اور میرے سوا کوئی مستحق نہیں اور اللہ تعالی اور مومنوں کو ابو بکر کے سوا کوئی منظور نہ ہوگا۔ اس حدیث کو مسلم نے روایت کیا ہے۔ اور حمیدی (متوفی ۱۸۸ھ) کی کتاب الجع بین المیحین) میں انا ولا کی جگه انا اولی (میں سزا وار تر ہوں) ہے۔انتی۔

(۲) عن ابى هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول بينا انا نائم رالبتني على قليب عليها ودلو فنزعت ماشاء الله ثم اخذها ابن ابي قحافة فنزع منها ذنوبا او ذنوبين و في نزعه ضعف والله يغفرله ضعفه ثم استحالت غربا

فاعدها ابن الخطاب فلم ارعبقریا من الناس ینزع نزع عمر حتی ضرب الناس بعطن و فی روایة ابن عمر ثم اخذها ابن الخطاب من ید ابی بکر فاستحالت فی یده غربا فلم ارعبقریا یفری فریة حتی روی الناس و ضربوا بعطن متفق علیه احرة. ماتب من

ابو ہررہ کا بیان ہے کہ میں نے رسول اللہ مٹھ کے اس اٹنا میں سے اس اٹنا میں میں سویا ہوا تھا۔
میں نے اپنے شیں ایک کوئیں پر دیکھا کہ جس پر ایک ڈول تھا۔ پس میں نے اس کوئیں میں سے پانی نکالا۔ جس قدر اللہ نے چاہا۔ پھر اس ڈول کو ابو تحافہ کے بیٹے (ابو بکر) نے لیا۔ اور اس کوئیں میں سے ایک یا دو ڈول نکالے۔ اور ابو بکر کے نکالئے میں سستی تھی۔ اللہ تحالی اس کی سستی کو معاف فرمائے۔ پھر وہ ڈول پڑ سابن گیا۔ پس اسے ابن الخطاب (عمر) نے لیا۔ میں نے لوگوں میں سے کی ایسے توی مخص کو نہیں دیکھا۔ جو پانی اس طرح نکالے جس طرح عمر نکالتے تھے۔ یمل شک کی ایسے توی مخص کو نہیں دیکھا۔ جو پانی اس طرح نکالے جس طرح عمر نکالتے تھے۔ یمل تک کہ لوگوں نے (اپنے اونٹ سیراب کرکے) ان کی نشست گاہ میں بٹھا دیئے۔ اور ابن عمر کی مرح باتھ میں چرسا روایت میں یوں ہے۔ پھر ڈول کو عمر نے ابو بکر کے باتھ سے لیا۔ پس وہ عمر کے باتھ میں چرسا ہوگیا۔ سو میں نے کسی قوی مخض کو نمیں دیکھا کہ عمر کی طرح پڑا قطع کرتا ہو (یعنی عمل کرتا ہو) ہماں تک کہ لوگ سیراب ہو گئے اور انہوں نے اپنے اونٹ سیراب کرکے ان کی جائے شست کا میں بٹھا دیئے۔ یہ حدیث بخاری و مسلم دونوں میں ہے۔ استی۔ استی۔

(٣) عن حليفة قال قال رسول الله من الله من الدرى ما بقاتى فيكم فاقتدوا بالذين من بعدى ابوبكر و عمر رواه الترمذي (مكاوة مناقب الى يكرد عم)

حضرت حذیفہ روایت کرتے ہیں کہ رسول الله طال کے فرمایا کہ مجھے معلوم نہیں کہ میری ذیرگا تہمارے درمیان کس قدر ہے۔ پس پیروی کرو ان دو مخصوں کی جو میرے بعد خلیفہ ہوں گے۔ اور وہ ابو بکرو عمر ہیں اس حدیث کو ترقری نے روایت کیا ہے۔ انتی۔

(٣) عن جبیر بن مطعم قال اتت النبی صلی الله علیه وسلم امراة فکلمته فی شنی فامرها ان ترجع الیه قالت رسول الله ارایت ان جنت ولم اجدک کانها توبه الموت قل فان لم تجدینی فاتی ابابکر متفق علیه (مکوة پاپ فی مناقب انی برالمدین) معرت جیرین مطعم کا بیان ہے کہ ایک مورت نبی الله الله اور اس نے کی امرک بارے شن آپ سے کلام کیا اس آپ نے قربایا کہ میرے پاس پھر آتا۔ وہ یول ۔ یا رسول الله مجھ تا ہے۔ کہ اگر میں آؤل اور آپ کو نہ پاؤل۔ کویا اس مورت کی مراو آپ کو نہ پانے سے آپ کا تا ہے۔ کہ اگر میں آؤل اور آپ کو نہ پانے سے آپ کا

موت تھی۔ آپ نے فرمایا۔ اگر تو مجھے نہ پائے تو ابو بکر کے پاس جانا۔ اس صدیث کو بخاری و مسلم دونوں نے روایت کیا ہے۔ انتی۔

(۵) عن ابى موسى قال مرض النبى صلى الله عليه وسلم فاشتد مرضه فقال مروا ابابكر فليصل بالناس قالت عائشة انه رجل رقيق اذا قام مقامك لم يستطع ان يصلى بالناس قال مروا ابابكر فليصل بالناس فعادت فقال مرى ابابكر فليصل بالناس فانكن صواحب يوسف فاتاه الرسول فصلى بالناس فى حياة النبى صلى الله عليه وسلم (مح بخارى 2 وادل - باب ال العلم د القنل الآل بالناس)

ابو موی سے روایت ہے کہ نی النظام بیار ہوئے۔ پس آپ کی بیاری سخت ہوگئ۔ آپ نے فرایا کہ ابو بکر کو کہ دو کہ لوگوں کو نماز پڑھائیں۔ حضرت عائشہ نے عرض کی کہ وہ نرم دل فخص ہیں۔ جب آپ کی جگہ کھڑے ہوں کے تو لوگوں کو نماز نہ پڑھا سکیں گے۔ آپ نے فرمایا کہ ابو بکر کو تھم دو کہ لوگوں کو نماز پڑھائیں۔ پس حضرت عائشہ نے بھروہی عذر کیا۔ پس آپ نے فرمایا کہ ابو بکر سے کہ دو کہ لوگوں کو نماز پڑھائیں۔ البتہ تم صواحب یوسف ہو۔ پس قاصد حضرت ابو بکر کے پاس آیا۔ اور آپ نے نبی مان پڑھائی حیات شریف میں لوگوں کو نماز پڑھائی۔ انتی۔

(۱) اخبرنا و كيع بن الجراح عن ابى بكر الهذلى عن الحسن قال قال على لما قبض النبى صلى الله عليه وسلم قد النبى صلى الله عليه وسلم قد قدم ابابكر في الصلاة فرضينا لدنياناهن رضى رسول الله صلى الله عليه وسلم لديننا فقد منا ابابكو (طبّات ابن سد - بزء الله شم اول - ترجم الل بحرالمدين من ١٣٠)

خردی ہم کو وکیج بن الجراح نے ابو بکر ہل سے ابو بکر نے حسن سے کہا۔ حسن نے کہ حضرت علی سے فرائی کہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے وفات پائی تو ہم نے اپنے معالمہ میں نظری۔ پس ہم نے ویکھا کہ بی مارہ ایام بنایا تھا۔ اس کیے ہم نے اپنی ویک کو تماز میں ہمارا ایام بنایا تھا۔ اس کیے ہم نے اپنی ونیا کے لیے اپنی کو پیند فرمایا تھا۔ پس دنیا کے لیے پیند فرمایا تھا۔ پس

مم في حفرت الويكر مدان كو خليف بناليا- انتق-

ال مقام پر ہم نے آیات متعلقہ ظافت کو عمدا ذکر شیں کیا۔ کیونکہ ان کی بحث مناسب مقام پر اس مجل کو اور احادیث میں معلی اس مجل کو استفاق میں اس مجمل کو استفاق مادی۔ اور اخروقت میں اس مجمل کو دکھارے بھر خود آنخفرت ملی ہے اشارہ بلکہ نص سے خلافت شیخین کی تفصیل فرمادی۔ اور اخروقت میں دکھا دیا۔ بھر خود آنخفرت ملی ہے اشارہ بلکہ نص سے خلافت شیخین کی تفصیل فرمادی۔ اور اخروقت میں

حضرت صدیق اکبر کو نماز میں امام بناکراس تفصیل قولی کو عملی رنگ میں چیش کر دیا۔ یمال ہم بالخموص مع نبر(۱) کی طرف ناظریں کو توجہ ولانا چاہتے ہیں۔ کیونکہ اس سے حسنا کتاب اللہ کے معنی پر زائد روشی نبریق ہے۔ اس صدیدہ سے فاہر ہے کہ حضور اقدس من خیلے نے مرض موت میں حضرت الدیکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خلافت کی سند تحریر فرمانے کا ارادہ کیا گر بھراسے اس وجہ سے ترک فرمایا کہ آپ کو علم تو کہ تعالیٰ عنہ کی خلافت کی سند تحریر فرمانے کا ارادہ کیا گر بھراسے اس وجہ سے ترک فرمایا کہ آپ کو علم تو کی آپ کے بعد موسنین کا اجماع حضرت صدیق اکبر کی خلافت پر ہو جائے گا۔ بقول اہل سنت و جماعت کو اللہ تعالیٰ سوا دہم میں سند تھی جے آنخضرت ماٹھ جانے امت پر کمال شفقت و رحمت کی وجہ سے محض بناپر اللہ تعالیٰ سوا دہم میں سند تھی جے آنخضرت ماٹھ جی امت پر کمال شفقت و رحمت کی وجہ سے محض بناپر احتیاط دوبارہ لکھنے کے لیے کاغذ طلب فرمایا۔ عند التحقیق اہل سنت ہی کا قول حق معلوم ہو تا ہے۔ تولمن می بحث اسامہ کی بحث آئندہ آئے گی۔

قال السيد امداد امام

قول حسنا كاع الله ير نظر واضح ہو کہ یوں تو عملی طور پر توہین آل محرکی ابتدا امر خلافت سے ظہور میں آئی۔ مگر دراصل اس کی ابتدا کی صورت حضرت عمر بن الخطاب کے قول معروف یعنی حسنا کتاب اللہ سے ہوگی یہ قولی ابتداء الی ہے کہ جس سے انواع واقسام کے ایسے امور اسلام کو پیش آگئے کہ جو پینمبرخدا کے عمد کے مسلمانوں کے وہم و مگان میں بھی نہ آئے ہوں گے۔ ہر چند رسول اللہ نے اپنی رصلت کے قریب ب فرمایا کہ ہم تم میں وو امر بزرگ چھوڑے جاتے ہیں یہ ایسے ہیں کہ اگر تم ان سے متمک رہو عے تو میرے بعد ہرگز تم مگراہ نہ ہوگے۔ اور وہ دونوں امر بزرگ "قرآن اور میرے اہل بیت ہیں" مگرشان كريائي سے حضرت عمر بن الخطاب كے تول حسناكتاب الله كے عشر عشير كے برابر بھى يہقول نبوى على تاثیر نمیں پیدا کر سکا۔ یہ قول نیوی جو فریقین کے نزدیک متند ہے۔ صدیث انبی تارک فیکم الثقلین ما ان تمسكتم بمالن تضلوا بعدى كتاب الله و عترتى اهل بيتى (ديكمو تخف الما عثري ثله عبدالعزيز صاحب تتمه الباب باب چهارم - ص ۲۰۱) لاريب بيه اس ذات پاک کا قول ہے- جس کی نبت خدا تعالی فرماتا ہے۔ کہ ما ينطق عن الهوى ان هو الا وحى يوحى ليني حضرت محمد مائيّے جرموناً تقاضائے نفسانیت سے باتیں نہیں کرتے ہیں۔ آپ مورد وی ہیں۔ وی خداوندی بی کے مطابق آپ کے ارشادات ہوتے ہیں- اہل وا تفیت سے پوشیدہ نہیں ہے- کہ یہ الی بی صدیث ہے کہ جس کی نبیت الي تحفه مين جناب شاه عبد العزيز صاحب قدس مره العزيز فرمات بين- كه "ورمقامات دين و احكام شرعي آ پینمبر حوالہ ب این دو چیز عظیم القدر فرمودہ است پس ذہبے کہ مخالف این دو باشد درامور شرعیہ

عقيدة وعملاً بإطل و تامعتبراست و جركه الكاراي دو بزرگ نمايد ممراه نو خارج از دين باشد-"

(دیکھو تخفہ شاہ صاحب چہارم ۲۰۱) لاریب حکم نبوی ایسا ہی تھا کہ امت محمدی ضرور قرآن اور عرّت نبوی کی متمک ہو۔ مگرامت محمری کس قدر اس حکم کی متمسک ہوئی راقم اس کو دکھلانے کو ہے۔ یں اس جگہ اس سے کوئی بحث نہیں رکھتا ہوں۔ کہ حضرت عمر بن الخطاب کا قول حسبنا کتاب اللہ اچھا تھا یا برا- مراس کی تاثیر بر نظر والنااس كتاب كے احاطہ مقاصد سے ب- ظاہرا ایبابی معلوم ہو تا ہے كه اكر حب قول نبوی تمک بالقرآن کے ساتھ تمک بالعترت بھی ایک ضروری امرسمجھا جایا۔ تو اس وقت کی اسلام کی تاریخ نے واقعات فدہی و ملکی کے اعتبار سے ایک دوسرا رنگ پیدا کیا ہو ہا۔ مرحضرت عمر کے مرف ان تمن چار نفظوں نے ایک الیی نی اسلامی دنیا قائم کردی ہے کہ آج تک بوے زوروں کے ساتھ قائم ہے۔ ہرچند رسولؓ کا قول بڑی تاکیدے خبر دیتا ہے۔ گر حضرت عمر کے قول بالائے نے قول نیوی کو عملی پرایہ حاصل نہ ہونے دیا۔ جس کے باعث ارشاد نیوی ایک قولی حیثیت تک محدود رہ گیا۔ اگر قول نبوی کو کامیابی نصیب ہوتی- تو یہ سقیفہ بن ساعدہ کا اجماع ظہور میں آتا۔ نہ بنی ہاشم کو طرح طرح کی مفیجنیں پیش آتیں۔ نہ بنی ہاشم کی عظمت میں کسی قتم کا فقور پڑتا۔ نہ بنی ہاشم کے عقائد کے خلاف نداہب ایجاد موتے اور نه وه واقعات عظیمه ظهور میں آتے جو شمادت علی و شمادت حسن و شمادت حسین و دیگر آل محمد و دوستداران محمد ير مشمل ديكه جاتے بين- ظاہرا تو اليابي معلوم بوتا ہے كه قول حسبنا كتاب الله نے عامد مسلمانال كو تمسك عترت نبوى سے آزاد كرديا- اور كو صديث فقلين يقول صاحب تحنه فریقین کی ایک مقبولہ حدیث ہے مگر اس جدیث بر عامه مسلمانان لینی مسلمانان غیرامامید کا نہ مجھی مابق مین عملدرآمد رہا ہے اور نہ آج ہے یہ مدیث نبوی ڈیڈلیٹر (Dadeter) یعنی آیک قول مردہ کی طرح كربوں میں حوالہ علم پائی جاتی ہے۔ اور اس سے زیادہ حیثیت اس كو تمجی حاصل نہیں رہی ہے چنانچہ الم ك سوا عامد عسلمانال ب كوئى بهي عرت محركا متمك نبيل موا- عرت محد عد مراد فاطمه - على -و اور حیون ہیں - ان جرار تن کے ساتھ عامہ مسلمانان نے بیفیر مان کیا کی رحلت کے بعد کیا تمسک کی الروائي كي كي كتاب سنة بي ية تبيس لكنا- (مصباح الظلم واليناح البهم ص ١٠٠٩) اقرام المستف كابية وعوى (كه مسلمانان غيراماميه كالمهي حديث تقلين پر عمل درآمد نهيس ريااور نر آن ہے- بالکل غلط ہے بلکہ معاملہ اس کے بر عکس ہے اہل سنت و جماعت کے پاس جو قرآن ہے وہ اسے کال وغیر محرف کلام اللی جائے رہے اور شرفاغریا ان کا اس پر عمل رہا ہے۔ اس وہ حسب عقیدہ خود دوسرے مصے میں آئے گی۔ وہاں ہم و کھائیں مے کہ اہل سنت ہی ہیں جو اہل بیت سے متمک ہیں۔ گر امامیہ ثقل اکبر کو دخرت امامیہ ثقل اکبر کو دخرت امامیہ ثقل اکبر کو دخرت امیر علیہ السلام نے قائب کر دیا تھا۔ اور تبیری صدی ہجری سے امام غائب علیہ السلام کے پاس قار سرمن امیر علیہ السلام نے قائب کر دیا تھا۔ اور تبیری صدی ہجری سے امام غائب علیہ السلام کے پاس قار سرمن دای میں بتایا جاتا ہے پس شیعہ کے لیے ثقل اکبر سے تھسک ممکن شیس ہوا۔ اور نہ آئ ہے۔ ثقل امنر کے ساتھ جو سلوک شیعہ نے کیا وہ بحوالہ کتب شیعہ حصہ دوم میں و بھنا چاہیے۔ غرض شیعہ کی طرف سے تعمل بالثقلین کا دعوی بالکل غلط و باطل ہے۔

معنف کا یہ کمنا ہے کہ تو بین آل محرکی قولی ابتداء حضرت فاروق اعظم رفاقد کے قول حبنا کلب اللہ ہے ہوئی اس کی ناوائی پر ولالت کرتا ہے۔ اس قول کا مطلب ہم پہلے بیان کر آئے ہیں۔ اس کے اعلا کی یمال ضرورت نہیں۔ شیعہ جو غلط فنی کے سبب حبنا اللہ پر اعتراض کرتے ہیں۔ انہیں و کھنا چاہے کی یمال ضرورت نہیں۔ شیعہ جو غلط فنی کے سبب حبنا اللہ پر اعتراض کرتے ہیں۔ انہیں و کھنا چاہے کہ حضرت امیر علیہ السلام قرآن کی نبعت کیا قرما رہے ہیں۔ و اعلمو انہ لیس علی احدبعد القران کے حضرت امیر علیہ السلام قرآن کی نبعت کیا قرما رہے ہیں۔ و اعلمو انہ لیس علی احدبعد القران من فاقة (نج ابلائه مطبوعہ بروت - جزاول من ۱۸۲۷)

اور جان لو کہ قرآن کے بعد کسی کو کوئی حاجت نہیں - انتی۔ عظیم بحرائی شیعی نے اس قول امیر کی شرح میں یوں لکھا ہے-

ثم نبههم على انه ليس بعده على احد فقراى ليس بعد نزوله للناس و بيانه الواضح حاجة بالناس الى بيان حكم في اصلاح معاشهم و معادهم

اى فقرو حاجة الى هاد سواه يرشده الى مكارم الاخلاق و فضائل الاعمال وسائق الى شرف المنازل و غايات المجدوالرفعة

المجنی فقرو حاجت نہیں قرآن کے سواکسی اور ہادی کی جو اسے مکارم اخلاق اور فضائل اعمال کی بینی فقرو حاجت نہیں قرآن کے سواکسی اور ہادی کی جو شرف منازل اور غایات مجدو رفعت کی طرف رہنمائی کرے۔ اور حاجت نہیں کسی مختص کی جو شرف منازل اور غایات مجدو رفعت کی طرف لے جائے۔ اہتی حضرت امیر کا یہ قول نمایت کار آمد ہے کیونکہ اس سے فیصلہ ہو جاتا ہے کے حدیث فقلین میں تمسک بالعزت سے کیا مراد ہے۔

مصنف کا قول بھی عملی طور پر توہین آل تھ کی ابتدائے امر خلافت سے ظہور میں آئی ایک

دیوانہ کی بڑے زیادہ وقعت نہیں رکھتا۔ خلافت راشدہ میں ترتیب جس طرح وقوع میں آئی وہی حق ہے اور قرآن مجید سے ای کی تقدیق ہوتی ہے۔ جیسا کہ آئندہ بیان ہوگا۔ اس ترتیب میں ایک نکتہ قابل غور سے جے حضرت ابوطالب کمی رطافیہ نے یوں بیان فرمایا ہے۔

و انما جاء الترتيب في التفضيل والخلافة مخالفا للقياس والمعقول توكيدا للنبوة واليبدا للرسالة لئلا تلتبس النبوة بالملك ولا ينحوا النبي صلى الله عليه وسلم في الخلافة نحو الاكا سرة والقياصرة في المملكة - لما كانت النبوة مخالفة للملك جاء ت الخلافة على غير اميرة الملوك من استخلاف ابنائهم و اهل بيتهم ولوكان للمعقول والقياس مدخل في التفضيل لكان افضل الناس بعدرسول الله صلى الله عليه وسلم الحسن ابنه في البنوة والعباس عمه اذفيه الابوة و قد اجمعوا على خلاف ذلك (قت انقلب مطره مرد يرد الله على خلاف ذلك (قت انقلب مطره مرد يرد الله على خلاف ذلك)

نوت کی تاکید اور رسالت کی تائید کے لیے فضیلت اور ظافت میں تر تیب قیاس و معقول کے ظاف واقع ہوئی ہے تاکہ نبوت کا التباس ملک کے ساتھ نہ ہو جائے۔ اور پیغیبر ملٹی ہے فلافت میں اللہ کو افقیار نہ کریں جو اکا سرہ قیاصرہ کے مملکت میں افقیار کیا۔ چونکہ نبوت ملک کے کانف ہے۔ اس لیے فلافت بادشاہوں کے طریق پر نہ ہوئی۔ جو اپنے بیٹوں اور گھر والوں کو اپنا جائیں بناتے ہیں۔ اگر معقول قیاس کو فضیلت میں وخل ہوتا۔ تو رسول اللہ ملٹی ہے بعد آپ جائیں بناتے ہیں۔ اگر معقول قیاس کو فضیلت میں وخل ہوتا۔ تو رسول اللہ ملٹی ہے بعد آپ کے بیٹے حسن بنوت کے سبب سب لوگوں سے افضل کے بیٹے حسن بنوت کے سبب سب لوگوں سے افضل ہوتے طال نکہ اس کے ظاف پر اجماع ہے۔ انتھی۔

انمتاه سال گزشتہ میں لاہور کے شیعی مولوی سید علی حائری نے جن کو مجمتد العصروالزمان متایا جاتا ہے۔ ایک طویل تقریر کے اثناء میں منجلہ ویگر مضامین حدیث قرطاس کے متعلق بھی بہت پہلے کہ کہا۔ اس کمل تقریر کو مٹس الدین حسن جزل سیرٹری پنجاب شیعہ مثن لاہور نے ایک کتاب کی شکل میں تر تیب دیا ہے۔ اور موحد حنہ اس کا نام رکھا ہے۔ موحد حنہ مولوی حائری کی تمام عمر کا اندو ختہ ہے۔ گر اس میں کوئی نئی بات نہیں پائی جاتی۔ وہی پرانے اعتراضات ہیں۔ کن تمام عمر کا اندو ختہ ہے۔ گر اس میں کوئی نئی بات نہیں پائی جاتی۔ وہی پرانے اعتراضات ہیں۔ بن کے جوابات بارہا دیے جاچے ہیں۔ چو نکہ لاہور کے شیعہ حائری کی تقریر کو لاجواب سیجھتے ہیں۔ اس لیے ہم یمال ازالہ اوہام کے لیے موحد حنہ میں سے مقالہ ششم کو معرض بحث میں لاتے ہیں۔ جس کا عنوان میہ ہے۔ حدیث قرطاس لینی حضرت عمر کا حسبنا کتاب اللہ کمہ کر وصیت توفیر اسلام سے مائع ہونا۔"

قال الحائري ، حسمزو دوستو؟ مسئلہ قرطاس سب سے زیادہ معرکتہ الآراء مسئلہ ہے بلکہ ہوں کما والمست کے اسلامی دنیا میں سید سب سے پہلی خالفت تھی جس نے زمین اسلام میں تخم مخالفت کو کاشت کا جس يربيه تمام كالفتيل آج تك متقرع موتى جلى مئيس-بيد ي ي كداس وقت بحى جبكه رسول الله اليكال تعاد لوگوں نے اس لیے اس کو رسول مانے سے انکار کر دیا کہ جاری طرح کیوں کما ، پیٹا سو ؟ جاگا ہتارو؟ ہے- اور انہوں نے اپنا خیال ایک حد تک ظاہر بھی کر دیا تھا لقولہ تعالی - حکایت منم ما ٹھذا الوسول با ے مدہ کل الطعام و یمشنی فی الاسواق بہ خیال اس لیے پیدا ہوا تھا۔ کہ انہوں نے درامل حقیقت نور کو پہانا ہی سیس تھا۔ طاہری لباس بشری کے مشاہدہ تے ان بر حقیقت امرمشتبہ ہوگئی تھی ان کاخیال تھا كه رسول فرشته بوكر آنا علميه و فقال الملوا الذين كفروا من قومه ما هذا الابشر مثلكم مريدان منفغل مليم ولوشاء الله لا نزل بلاك ما تمعنا عدًا في المائا الاولين " (پ١٨- ٢٥) قوم كفار كے جو سردار تنے آپس ميں كئے کے کہ بیہ انجی) بس حمہیں جیسا آدمی ہے۔ اور تم پر افضل بننا چاہتا ہے۔ اور اگر خدا کو وقیمبری بھیجنا منظور ہوتا تو فرشتوں کو اتار ہا۔ ہم نے تو ایس بات باپ وادوں میں ہوتی سی تہیں۔ تب اس مظرالیت و مظراصت كو حكم بواكد كه دو- ولو جعلناه ملكا لجعلناه رجلا و للبسنا عليهم مايلبسون تمارے خیال کے مطابق اگر ہم فرشتے کو بھی رسول بنا کر بھیجتے تو پھر ضرور اس کو بھی ہم آدمی بی بنادیتے۔ اور وی لباس پساتے۔ جو کہ میہ خود پسا کرتے ہیں۔ ورنہ غیر جنس کی طرف میہ کیو نکر مائل ہوتے۔ اس کیے وہ آئینہ حق نما رسول مصطفیٰ سائی کم رہے ہیں۔ انما انا بشر مثلکم یوحی الی انما الهکم اله واحد اس کے سوا نہیں کہ میں بھی (بظاہر) تماری بی طرح بشر ہوں۔ مرجعے یہ وی نازل ہوتی ہے۔ کہ تمارا خدا ایک ہے۔ اس پر بھی اسلام لانے کے بعد بعض لوگ ای خیال پر ڈٹے رہے۔ کہ آخر ہے توب مخص (تغییراسلام) بشری - پھرکیا وجہ ہے کہ وہ لوا زمات بشری ان میں نہ موجود ہوں۔ یکی ایک شبہ تعلا کہ جس کی بنا پر وہ سب کچھ کر گزرے۔ جو ان کے حق میں بحیثیت منصب نبوت قوم کو ند کرنا جاہیے تھااور یہ نتیجہ تھا ای بات کا کہ ایسے لوگوں نے حقیقت نبویہ کو پہچانا نہیں تھا۔ ورنہ جب قرآن قانون کل کے طور پر بی تعلیم دے چکا تھا کہ ما اتاکم الرسول فخلوہ و مانھکم عنه فانتھوا کہ توثیر قدا جو کھ بھی جہیں کے (بغیرچون و چرا) اس پر عمل کرو- اور جس بات سے جہیں روکیس اس سے رک جاؤ-کوتکہ اس کی اطاعت تو عین غدا کی اطاعت ہے اور اس کی نافرمانی مینا خدا کی نافرمانی ہے القوله تعالى ومن يطع الوصول فقد اطاع الله كه جس نے رسول كى اطاحت اس كے ہر بھم بيس كى اى نے خدا کی اطاعت کی ہے تو معلوم ہوا کہ جس نے تغیر کی کسی امریس بھی نافرمانی کی ہو اس نے ورحقیقت خدا کی نافرمانی کی ہے (موحد حد - ١٤ - ١٨)

اقول و اس ش شک نیس که حضور اقد س شخای که ارشاد افتونی اکتب لکم به ماخرین مجلس می اختیار که بیسا که به بیل می اختیاف و تازع بود تفاد محراس میس کی محالی نے آپ کے تخم کی دافرانی نمیس کی جیسا کہ بم بیلے بیان کرآئے ہیں۔ مصنف کا اس اختیاف پر تمام مخالف پر متغرع بیا؟ پر رافعنیہ کے باہمی اختیاف المسلوة والسلام کے تمتر فرقے جو اصوااً مختلف ہیں ای اختیاف پر متغرع ہیں؟ پر رافعنیہ کے باہمی اختیاف کو دیکھیے۔ دافعنیہ کے بہ چار اصناف ہیں۔ امامیہ - زیدیہ - کیمافیہ - فلات - پر مرصنف کے تحت میں کی فرقے ہیں۔ مثلا امامیہ کے بہ پندرہ فرقے ہیں۔ کالمیہ - محدیہ - باقریہ - موسویہ - نادویہ - شمیلیہ - مماریہ - اسامیلیہ - اثنا مشریہ - مبارکیہ - تعلیم - بشامیہ - زراریہ - یولیہ - شیطانیہ - (دیکھو کماب الفرق بین الفرق - اسامیلیہ - اثنا مشریہ - مبارکیہ - تعلیم بین محدید اوریہ - مولیم معرم ۱۳۲۸ھ) کیا یہ سب اس اختیاف پر متفود عبدالقابر بن طاہر بن محدید ادی - مطبوعہ معرم ۱۳۲۸ھ) کیا یہ سب اس اختیاف پر متفرع ہیں؟

مولوی حائری صاحب نے جو یہ لکھا ہے کہ کفار نے حقیقت نبویہ کو نمیں پہچانا تھا۔ بالکل درست ہے۔ مگر ہمیں نمایت افسوس سے کمنا پڑتا ہے کہ شیعہ بھی امامت کی دھن میں حقیقت نبویہ کو نہیں سمجے۔اس داسطے دہ کہتے ہیں کہ حضرت امیرعلیہ السلام اور باتی ائمہ سوائے آنخضرت میں جائے کے سب جبوں سے افسال ہیں۔ چنانچہ سید لحمت اللہ جزائری نے انوار تعمانیہ میں یوں لکھا ہے۔

اعلم انه لا خلاف بين اصحابنا رضوان الله عليه في اشرفيه نبينا اعلى سائر الانبياء للاخبار المتواترة و انما الخلاف بينهم في افضلية امير المومنين والائمة الطاهرين على الا النبياء ما عدا جدهم فلهب جماعة الى انهم افضل باقى الانبياء ما خلا اولى العزم فهم افضل من الائمة و بعضهم الى مساواتهم واكثر المتاخرين الى افضلية الائمة على اولى العزم و غيرهم وهو الصواب

جان کے کہ ہمارے اصحاب رضوان اللہ علیم کے درمیان اس بارے میں کوئی اختلاف نہیں۔ کہ ہمارے پیٹیر مان کے سب عبول سے اشرف ہیں۔ جیسا کہ احادث متواترہ سے ٹابت ہے۔ ہاں ان سے درمیان اس امریس اختلاف ہے کہ آیا امیر المومنین اور آئمہ طاہرین سوائے معرت محمد معطف المین اس امریس اختلاف ہے کہ آیا امیر المومنین اور آئمہ طاہرین سوائے معرت محمد معطف المین اس امریس اختلاب ہیں؟ ایک گروہ کا ند جب بیہ کہ بے شک وہ سوائے اولو العزم جین کہ وہ ان کے برابر ہیں۔ اور العزم جین کہ وہ ان کے برابر ہیں۔ اور متاثرین میں سے اکثر کا ند جب بیہ کہ اٹمہ اولو العزم اور غیراولو العزم سب عبول سے افضل متاثرین میں سے اکثر کا ند جب بیہ ہے کہ اٹمہ اولو العزم اور غیراولو العزم سب عبول سے افضل متاثرین میں سے اکثر کا ند جب بیہ ہے کہ اٹمہ اولو العزم اور غیراولو العزم سب عبول سے افضل میں۔ اور میں اور غیراولو العزم سب عبول سے افضل میں۔ اور میں میں میں میں میں۔

سيد دلدار على معاحب مجتمد نے تحفہ اٹنا عشريد كے باب ششم كاجواب ديتے ہوئے اس مسلے كى

نبت یوں لکھا ہے کہ بدا تک تہ ہب منصور دریں مسئلہ آنست کہ جناب امیرو اولاد طبیعن آخض افکل انداز جمع انبیائے سابقہ ۔ گونا صبی اشعار بایں قول کردہ - و چون روئے گفتگو ناصی دریں عقیدہ از فرتہ ناجیہ بطرف کسانے کہ قائل بتنفیل جناب علی بن ابی طالب و باتی اتحہ دین برکافہ انبیاء و رسل اورائے خاتم المرسین شدہ اند بطریق اولی است و معدا مخار متاخرین علائے امامیہ نیز جمیں است بلکہ میتوال گنت کہ دریں زمان ایں عقیدہ از جملہ ضروریات ندہب امامیہ شدہ بنا بریں عنان قلم را باستیصال کلام نافرہ معموف ساختہ در نصرت ایں عقیدہ بجولان درے آرد (حسام الاسلام و سمام الملام فی صدور قوم لام علی معطوف ساختہ در نصرت ایں عقیدہ بجولان درے آرد (حسام الاسلام و سمام الملام فی صدور قوم لام علی معلوف ساختہ در نصرت ایں عقیدہ بجولان درے آرد (حسام الاسلام و سمام الملام فی صدور قوم لام علی معلوف ساختہ در نصرت ایں عقیدہ بجولان درے آرد (حسام الاسلام و سمام الملام فی صدور قوم لام

جان کے کہ اس مسلے میں ذہب منصوریہ ہے۔ کہ جناب امیر اور ان کی اولاد فیسن تمام انبیائے مابقہ سے افضل ہے۔ اگرچہ ناصب اہل بیت نے یہ قول نہیں بتایا۔ چو تکہ ناصب اہل بیت کا روئے بخن اس عقیدہ میں فرقہ ناجیہ میں سے ان لوگوں کی طرف جو خاتم المرسلین علیم السلام کے موا تمام انبیاء و رسل پر جناب علی بن ابی طالب اور باتی آئمہ دین کی نفیلت کے قائل ہیں اولی ہے۔ اور بایں ہمہ متاخرین علمائے امامیہ کی ضروریات میں سے ہے۔ اس لیے قلم کی باگ کو ناصب اہل بیت کے کلام نافر جام کی بنا کی طرف بھیر کراہے اس عقیدہ کی تائید میں جو لان میں لاتا میں۔ اس حقیدہ کی تائید میں جو لان میں لاتا میں۔ اس حقیدہ کی تائید میں جو لان میں لاتا ہوں۔ انہیں

کتب شیعہ میں الی روایتیں مبھی ملتی ہیں جن سے پایا جاتا ہے کہ حضرت علی مرتبہ میں آنخضرت ملتی کیا کے مساوی بلکہ آپ سے بڑھ کر ہیں اس کے ثبوت میں کتاب شادت جلد پنجم سے دو تمان کمانیاں نقل کی جاتی ہیں-

ساتویں کہانی

معراج حضرت علی کو رسول اللہ کے سلاتھ سلاتھ ہوئی ہوئی ہے۔ بریدہ اسلی رسول اللہ مائی مرخ سے نقل کرتے ہیں کہ رسول اللہ نے حضرت علی سے قربایا۔ اے علی حمیس اللہ نے ہرمقام پر میرے ساتھ ساتھ رکھا ہے۔ پھر آپ نے ہرمقام کی تشریح فربائی۔ معراج کا واقعہ پھربیان کیا اور کھا۔ کہ میرے پاس جرکیل آئے اور رات کو جھے آسان پر لے گئے۔ جب میں جریل کے ساتھ آسان پر پہنچا۔ تو جرل نے کھا۔ یا رسول اللہ آپ کے بھائی کھال ہیں۔ میں نے کھا میں انہیں چھے چھوڑ آیا ہوں۔ جرکیل نے کھا آپ اللہ سے وعاکریں وہ انہیں یمال بہنچا وے کھوٹکہ بغیر علی کے آسان میں گھستا نہیں ملنے کا) میں نے سے سنتے می اللہ سے وعاکریں وہ انہیں یمال بہنچا وے گا۔ کیونکہ بغیر علی کے آسان میں گھستا نہیں ملنے کا) میں اور سے سنتے می اللہ سے وعاکریں وہ انہیں ای وقت تم میرے پاس آگئے۔ پھر فورا ہم دونوں کے آگے سانوں زمینیں اور

ساؤں آسان کھول دیتے گئے۔ بیماں تک کہ بین ۔ ان کے رہنے وانوں کو ان کی ممارتوں کو اور ہر ہر فرشتہ کے مکان کو دیکھے لیا۔ اور ان میں جتنی چزیں میں نے ویکھی تھیں سب جوں کی توں تم نے بھی ویکھے لیں۔ از بھار الانوار جلد ۹ میں ۱۳۳۳ (کتاب شادت جلد پنجم می ۲۵)

آٹھویں کہانی

محد اور علی ایک مرتبہ رکھتے ہیں ابن عماس کتے ہیں۔ یس نے رسال اللہ سے سا ہے آپ فراتے تھے۔ کہ جس طرح اللہ تعالی نے باغ چیزیں جھے عطاک ہیں ای طرح باغ ی چیزی مل کو ہی ملا موئى بين- جمع جو امع الكلم عطاك بين لوعلى كوجو امع الكلم عطاك بين جمع في منايا لو السين وصى منايا ب مجمع کو را عطاکیا ہے تو انہیں سلیبل دی گئی ہے جمعے وقی عطاکی ہے تو انہیں المام (جو مِنزلہ وی کے ہے) دیا گیاہے۔ جمعے اللہ نے اگر اپنے پاس بلایا تھا۔ تو ان کے لیے سب آسانوں اور دروازوں کے بردے کول ویتے۔ کہ انہوں نے (شب معراج میں) جملے ریکھ لیا۔ اور میں نے انہیں دیکھ لیا۔ اس کینے کے بعد رسول الله روف مل من يوچمايا رسول الله ميرے مال ياب آپ ير قربان بول آپ روت كول إي فرايا اے این عباس اللہ نے جمعہ سے کما تھا اے جمد تو بیچے نگاہ کریس نے پردوں پر نگاہ کی تووہ پہٹ کے تھے۔ اور آسمان کے دروازوں کو دیکھاتو وہ کھل کئے تھے۔ اس وقت میں نے علی کو دیکھا تووہ اپنا سرمیری طرف الفائے ہوئے تھے۔ میں نے ان سے مفتلو کی اور میرے بروردگار نے مجمعے سے مفتلو کی۔ علی نے اس وقت جمدے ہو چھا بھائی اللہ نے تم سے کیا گفتگو کی اس نے کمااے علی اللہ نے جمد سے کما۔ کہ علی کو یں نے تہمارا وصی تہمارا وزیر اور تہمارا جائشین بنا دیا ہے تم ان سے کمد وینا میں نے اللہ کے آمے یہ باتلی ان سے کمہ دیں علی نے جھے سے کما اچھا جھے یہ سب باتیں منظور ہیں جول تی علی کی زبان سے منظوری ك الفاظ لكل فلك ير خوشى ك شاديان بجن سك الله تعالى في فرشتول كو عم دياك وه سب ملك اس ك غ شی کریں۔ (چنانچہ فرشتوں میں جش اڑنے لگے) آسان کے دورے میں فرشتوں کی جس جماعت کے یاں سے گزرااس نے جمعے مبار کہاد دی ای اٹنا میں میں نے عرش کے اٹھانے والے فرشتوں کو دیکھا کہ وہ ا بنا سر ذین کی طرف جھکائے ہوئے سے میں نے متبعب ہو کے دریافت کیا کہ یہ حاملین عرش اپنے سرول كوينج كيوں جمكائے موسے ہيں جريل في جواب ديا- سوائ ان حاملين كے اور كل فرشتوں نے وفررا انبسلا سے علی کی طرف دیکھا جب ان حاملین نے اجازت ماگل تو انہیں بھی علی کے منہ کی طرف منظی باندھنے کی اجازت مل گئے۔ چنانچہ وہ بھی ای طرح علی کا مند تکلنے لگے۔ اس کے بعد رسول الله فرمانے لگے۔ جب میں پنچے اڑا تو میں نے یہ خریں علی کو دیں۔ علی نے کماجھے سب پکھے معلوم ہے۔ لو تم جھ سے ى بن لو- اس وقت ين سمماكه جمال كيس بن كيا بون- على سائقه سائقه في روي روي كي وجه يكا تحی- کے میری یزرگی علی پر نہیں وہی (اد فارالافوار جلد 6 ص 443) کاب شادی جلد جم 88)

آثھار ہوس کہانی

علی رسول اللہ سے ہر طرح سے افضل ہیں ایک راوی ہی صلی اللہ علیہ والہ وسلم ہے لقل مرح ہیں کہ ان کرنے ہیں کہ اکتفرت نے (صفرت علی سے) فرمایا۔ اے علی تبمارے لیے بہت ی چزیں ہیں کہ ان بیسی میرے واسطے میں میرے لیے بھی نہیں ہیں۔ اول بیہ کہ فاطمہ جیسی تبماری ہوی ہے۔ حالا نکہ اس جیسی میرے واسط نبیں ہے۔ اور تبمارے نطقہ سے تبمارے وو جیٹے ہیں کہ ان جیسے میرے نطقہ سے تبین ہیں اور فدیجہ جیسی تبماری سال کوئی ساس نبیں ہے اور جمع جیسا تبمارا سرے۔ حالا نکہ میرا ایا کوئی سر نبیں ہے۔ اور جمع جیسی تبمارے نبی بھائی ہیں حالا نکہ اس جیسا تبمارا سرے۔ اور جمع جیسی تبماری والدہ ہیں ان جیسی میری والدہ نبیں ہیں۔ (از بھار الازار می ان ایک اللہ اس جیسا میرا کوئی نبی بھائی نبیں ہے۔ اور قطمہ بنت ہاتھے مماجرہ جیسی تبماری والدہ ہیں ان جیسی میری والدہ نبیں ہیں۔ (از بھار الازار می اند) اکتاب فرے جاد ہیں ہیں۔ (از بھار الازار می اند) اکتاب خورے جاد ہیں ہیں۔ (از بھار الازار می اند) اکتاب خورے جاد ہی میری

يجيبوس كهاني

شیعہ اگرچہ ذبانی کہتے ہیں کہ سیدنا جمد مصطفے صلی اللہ علیہ والہ وسلم خاتم النبین ہیں محر حقیقت میں وہ ختم نبوت کے محر میں کیونکہ وہ اپنے ائمہ کو آنخضرت طائع کیا کی طرح معصوم جانتے ہیں۔ اور ان پر زول وی کے قائل ہیں دیکمو احادیث ذبل

(۱) عدة من اصحابنا عن احمد بن محمد بن ابی نصر عن ثعلبة بن میمون عن زوادة قال سالت ابا جعفر عن قول الله عزوجل و کان رسولا نبیاً ما الرسول و ما النبی قال النبی الذی یوی فی منامه و یسمع الصوت و لا یعاین الملک والرسول الذی یسمع الصوت ویوی فی المنام و یعاین الملک قلت الامام مامنزلته قال یسمع الصوت ویوی فی المنام و لا یعاین الملک قلت الامام مامنزلته قال یسمع الصوت ولا یون فی المنام و لا یعاین الملک ثم تلا هذه الا یة و ما ارسلنا من المک شم تلا هذه الا یة و ما ارسلنا من قبلک من دسول و لا نبی و لا محدث (اصل کانی کلب الج می ۱۰۰)

 قرشتہ کو خواب میں ویکھا ہے اور بیداری میں فرشتہ کی آواز سنتا ہے مگر فرشتے کو بیداری میں آفکارا نہیں ویکھتا اور رسول وہ ہے جو بیداری میں فرشتہ کی آواز سنتا ہے۔ اور خواب میں فرشتہ کو دیکھتا ہے۔ اور خواب میں فرشتہ کو دیکھتا ہے۔ اور بیداری میں بھی فرشتہ کو آشکار دیکھتا ہے۔ میں نے بوچھا کہ امام کاکیا مرتبہ ہوتا ہے۔ امام محمہ باقر نے جواب بیداری میں فرشتہ کی آواز سنتا ہے اور فرشتہ کو خواب میں نہیں دیکھتا۔ اور نہ آشکارا بیداری میں فرشتہ کی ویکھتا ہے بھرامام نے اپنے قول کی تائید میں بیہ آیت پڑھی

وماارسلنامن قبلک من رسول ولانبی ولا محدث (انتمی) اب قرآن میں ولا محدث نہیں ہے۔

(2) على بن ابواهيم عن ابيه عن اسمعيل بن مواد قال كتب الحسن بن العباس المعروفي الى الرضيا جعلت فداك اخبرني ماالفرق بين الرسول والنبي والامام قال فكتب او قال الفرق بين الرسول والنبي والامام قال فكتب او قال الفرق بين الرسول الذي ينزل عليه جبرئيل فيراه ويسمع كلامه الرسول والنبي والا مام ان الرسول الذي ينزل عليه جبرئيل فيراه ويسمع كلامه وينزل عليه الوحي وربماراي في منامه نحو دؤيا ابراهيم والنبي ربما سمع الكلام وربماراي الشخص ولم يسمع والا مام هوالذي يسمع الكلام ولا يرى الشخص وربماراي الشخص ولم يسمع والا مام هوالذي يسمع الكلام ولا يرى الشخص

ترجمہ: (بحد ف اسناد) حسن بن عباس معروفی نے امام رضا کو لکھا کہ میں آپ پر قربان ہو جاؤں بھے بتائے کہ رسول اور نی اور امام کے در میان کیا فرق ہے راوی کا قول ہے کہ امام رضا نے لکھایا فرایا کہ رسول اور نی اور امام کے در میان سے فرق ہے کہ رسول وہ ہے جس پر جبر کیل نازل ہو۔ اور وہ اس کا کلام ہے۔ اور جبر کیل اس پر وحی نازل کرے اور بسا او قات وہ جبر کیل کو خواب میں دیکھے جسما کہ ایرائیم نے ویکھا اور نی بسا او قات فرشتہ کا گلام سنتا ہے۔ اور اس کا کلام سنتا ہے۔ اور اس کا کلام میں سنتا اور امام وہ ہے جو بیداری میں فرشتہ کا کلام سنتا ہے۔ اور اس کی شکل میں ویکھا۔ انہی کلام میں سنتا اور امام وہ ہے جو بیداری میں فرشتہ کا کلام سنتا ہے۔ اور اس کی شکل میں ویکھا۔ انہی دورہ سمعان عن یزید بن استحاق بلقب شعو عن ابن ابی حمز قبال سمعت اباعبدالله یقول ان منا لمن است فی اذنه وان منالمن یؤتی فی منا مہ وان منالمن یسمع الصوت مثل صوت السلسلة یقع فی الطست وان منالمن یاتیہ صورۃ اعظم من جبرنیل و میکائیل استرالدہ باس بان

ترجمه: (بحد ف اسناد) ابن ابى حمزه كابيان ب كه يس في امام جعفر مسادق كوسناك فرمات من م

میں ہے ایسے ہیں کہ ان کے کان میں پھونکا جاتا ہے۔ اور ہم میں سے ایسے ہیں کہ فرشتہ ان کے خواب میں آتا ہے اور ہم میں سے ایسے ہیں جو آواز نتے ہیں۔ مثل زنجیر کی آواز کے جو طشت میں گرے اور ہم میں ہیں۔ کہ ان کے پاس جرئیل و میکا کیل سے بردی صورت آتی ہے (انتی)

(4) حدثنا على بن محمد قال حدثنى حمد ان بن سليمان النيشا بورى قال حدثنا عبدالله بن محمد اليمانى عن منبع عن يونس عن على بن اعين عن ابى رافع قال لما دعا رسول الله عليا يوم خيبر فتضل في عينيه قال له اذاانت فتحتها فقف بين الناس فان الله امرنى بذلك قال ابورافع فمضى على وانا معه فلما اصبح افتح خيبر ووقف بين الناس واطال الوقوف فقال الناس ان عليا يناجى ربه فلما مكث ساعة امربا نتهاب المدينة التى فتحها قال ابورافع فاتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت ان عليا وقف بين الناس كما امرته قال قوم منهم من يقول ان الله ناجاه فقال نعم يا ابا رافع ان الله ناجاه يوم الطائف ويوم عقبة تبوك ويوم حتين ناجاه فقال نعم يا ابا رافع ان الله ناجاه يوم الطائف ويوم عقبة تبوك ويوم حتين

ترجمہ: (بحدف اسناد) ابورافع کتے ہیں کہ جب جیبر کے دن رسول اللہ نے علی کو بلایا تو ان کی آنکھوں میں اپنالعاب مبارک ڈالدیا۔ اور فرمایا کہ جب تم خیبرفخ کر لو تو لوگوں کے ورمیان کھڑے ہو جانا۔
کو نکہ اللہ تعالی نے مجھے سے تھم دیا ہے۔ ابورافع کا بیان ہے کہ سے سنتے ہی علی روانہ ہو گئے۔ اور میں ان کے ماتھ تھا۔ جب صبح ہوئی خیبرفتح ہوگیا۔ اور علی لوگوں کے درمیان جا کھڑے ہوئے۔ اور دیر تک کھڑے دہ اس پر لوگوں نے کما کہ علی اپنے پروردگار ہے سرگوشی کر رہے ہیں۔ جب ایک ماعت گزریکی تو اس ان شرکے لوٹنے کا تھم دیتے جے فئے کیا تھا۔ ابورافع کتے ہیں۔ کہ پھر میں رسول اللہ کی خدمت میں آیا۔ اور علی لوگوں کے درمیان کھڑے ہوگئے۔ جس طرح آپ نے تھم دیا تھا۔ بعض لوگوں نے کما آئد تعالی کے علی اللہ تعالی علی اللہ تعالی نے علی اللہ تعالی اللہ تعالی نے علی مائنسے دن اور عقبہ تبوک کے دن اور حنین کے دن مرگوشی کی تھی۔ انہی تھی۔ انہی دن اور عقبہ تبوک کے دن اور حنین کے دن مرگوشی کی تھی۔ انہی

(5) حدثنا محمد بن الحسين عن منبع عن يونس عن على بن اعين عن ابى عبدالله قال قال رسول الله لاهل الطائف لا بعثن اليكم رجلا كنفسى يفتح الله به الخيبر سيفه سوطه فيشرف الناس له فلما اصبح ودعا عليا فقال اذهب بالطائف ثم امر الله النبى ان يرحل اليها بعد ان رحل على فلما صار اليها كان على على راس البمال فقال له رسول الله اثبت فسمعناه صرير الزجل فقال يا رسول الله ما هذا

قال ان الله ناجاه عليا (بمار الدرجات بزء المن إب مادس مشرا

ترجہ: (بحذف اساد) امام جعفر کا بیان ہے کہ رسول اللہ نے الل طاکف سے کما کہ میں تہماری طرف ایک فخص مثال اپنی ذات کے بھیجوں گا جس کے ہاتھ پر اللہ تعالی خیبر فئے کرے گا۔ اس کی گرار اس کا کو ڈا ہے پس لوگ اس کی تمنا کرنے گے۔ جب صبح ہوئی اور رسول اللہ نے علی کو بلایا تو قربای ہر طاکف کو جاؤ۔ پھر اللہ تعالی ہے اپنے تیفیر کو تھم دیا کہ علی کے جانے کے بعد آپ بھی طاکف جائیں ہی طاکف جائیں ہی جب طاکف پنچ تو علی بہاڑی چوٹی پر نے۔ رسول اللہ نے اس سے کما خابت رہ پس اصحاب نے رور کی جب طاکف پنچ تو علی بہاڑی چوٹی پر نے۔ رسول اللہ نے اس سے کما خابت رہ پس اصحاب نے رور کی کر دہا ہے۔ کی کر کر اب کی کر کر اب کی کر کر اب کے اب کے مرکو ٹی کر دہا ہے۔ اب کے قربایا کہ اللہ تعالی علی سے مرکو ٹی کر دہا ہے۔ اب نے قربایا کہ اللہ تعالی علی سے مرکو ٹی کر دہا ہے۔ اب نے قربایا کہ اللہ تعالی علی سے مرکو ٹی کر دہا ہے۔ اب نے قربایا کہ اللہ تعالی علی سے مرکو ٹی کر دہا ہے۔

(6) محمہ بن مسلم کتے ہیں ہیں نے ابو عبداللہ سے بوچھا کہ سلمہ ابن سمیل نے حضرت علی کے بارے ہیں جمعہ سے ایک بات کی تھی۔ انہوں نے وریافت کیا وہ کوئی بات تھی۔ ہیں کے کما جمع سے بیان کیا تھا کہ جب رسول اللہ نے اہل طائف کو گھیرلیا تھا۔ تو اسی زمانہ ہیں ایک ون رسول اللہ اور حضرت علی تھا تھا۔ اس پر آپ کے اصحابہ ہیں ہے بعض نے کما تھی تھی تھی ایک مقام میں ہیٹھے ہوئے تھے تیسرا اور کوئی نہ تھا۔ اس پر آپ کے اصحابہ میں سیٹھ ہو اس سے بعض نے کما سخت تنجب کی بات ہے کہ ہم تو یمال سخت میں جالا ہول۔ اور وہال رسول اللہ اس لوکے سے مرکوئی کریں۔ اس وقت رسول اللہ نے ارشاد کیا۔ میں علی سے سرکوشی نہیں کررہا ہوں۔ علی سے تو ان کا پروروگار سرکوشی نہیں کررہا ہوں۔ علی سے تو ان کا پروروگار سرکوشی کررہا ہوں۔ علی سے تو ان کا پروروگار سرکوشی کررہا ہوں۔ علی سے تو ان کا

ظامه کلام پی شیعه ائمه کو آنخضرت کی طرح معموم و مفترض الطاعة جائے ہیں اور ان بردی کے نزول کے قائل ہیں۔ معترت شاہ ولی الله رحمہ الله تحالی وصیت نامه بیس تحریر فرماتے ہیں این فقبران روح پر فتوح آنخضرت صلی الله علیه وسلم سوال کرد که معترت چه مینفر مابند ورباب شیعه که مدی مجت الل بیت اند و صحابہ رابد میگویند آنخضرت صلی الله علیه وسلم اصحابہ وسلم بنوی از کلام روحانی القافر مود که فد جب ایشان باطل است و بطلان ترب ایشان از لقط امام معلوم میشود چون ازان حالت افاقت وست واد- در لفظ امام تامل کر وم معلوم شد که امام باصطلاح ایشان معموم مفترض الطاعة منصوب للحاق بست ووق یاطنی ورحق امام تجویز سے نمایند پس در حقیقت شتم نبوت را منکر اند کویز بان آنخضرت صلی الله علی وسلم راحاتم الانجیاء سے گفتہ باشند (انتی)

ترجمہ: اس فقیرنے آنخفرت ملی اللہ علیہ وسلم کی روح پر فتور سے موال کیا کہ حنور الب کے بارے میں کیا فرائے ہیں۔ اور محلیہ کرام کو ما کیتے ہیں۔ اور محلیہ کرام کو ما کیتے ہیں۔ اور محلیہ کرام کو ما کیتے ہیں۔ اور معلیہ کرام کے روحانی کلام سے میرے ول میں یہ ڈال ویا۔ کہ ان کا 4 ہم

الله به اور ان کے قرب کا بطلان لفظ الم سے معلوم ہو تا ہے جب ججے اس طالت سے افاقہ ہوا تو میں فر کے لفظ المام میں فور کیا معلوم ہوا کہ شیعہ کی اصطلاح میں الم معموم مفترض الطاعة خلقت کے لیے مندب ہوتا ہے اور وہ المام کے لیے وحی باطنی جائز قرار دیتے ہیں۔ حقیقت میں وہ ختم نبوت کے محر ہیں۔ مارچہ زبان سے آنخضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو خاتم النبین کہتے رہتے ہیں (انتی)

ال میں شک نہیں کہ شیعہ ائمہ کی مرح میں الیا غلو کرنے سے انبیاب کرام کی تحقیرو تذلیل کرتے ہیں۔ صاحب تخفہ اثنا عشریہ نے کیا خوب لکھا ہے ہم چنال در شراط امامت کہ بالا جماع نیابت نبوت و فرع آنست ودر مناقب و مدائح ائمہ آنفذرا فراط نمودہ اند کہ منصب نبوت راحقیرو ذلیل ماختہ اند و در منائش جناب امیرو ڈرین طاہرہ کہ شعبہ ایست از شعب ایمان و شریعت آنفذر غلو کروند کہ ایمان بانبیاء از دست ایثال رفت و تحقیرو تذلیل انبیاء برایشال لازم آمد (تحذ انا عشریہ من مدد)

ترجمہ: اس طرح شیعہ نے الممت کی شرطوں میں جو بالا تفاق نبوت کی نیابت اور اس کی فرع ادائمہ کے مناقب و مدائح میں اس قدر افراط کیا ہے کہ انہوں نے منصب نبوت کو حقیر و ذلیل کر ریا اور ان کی ذریت طاہرہ کی تعریف میں جو کہ ایمان و شریعت کے ریاب اور جناب امیر علی نبینا و علیہ السلام اور ان کی ذریت طاہرہ کی تعریف میں جو کہ ایمان و شریعت کے معبول میں سے ایک شعبہ ہے شیعہ نے اس قدر غلو کیا ہے کہ ایمان بالا نبیاء ہاتھ سے دے بیٹے ہیں اور بیال کی تحقیرہ تذلیل ان پر لازم آئی (انتی)

بیان بالا سے ناظرین اندازہ لگا کے ہیں کہ شیعہ حقیقت نبویہ سے کمیل تک واقف ہیں مزید و افغہ ہیں مزید افغہ ہیں کہ شیعہ حقیقت نبویہ سے کمیل تک واقف ہیں مزید و افغہ ہیں کہ البور کے مومنین سلے ہم خود مولوی حائری صاحب کی مثال پیش کرتے ہیں چند سال ہوئے کہ لاہور کے مومنین سلے مولوی مادب موصوف کے اجتماد و لیافت پر ایک رسالہ بربان حق نام شائع کیا تھا اس رسالہ کے اخیر شل مورد موجہ مورد از خردار امر زیر بحث کے متعلق دو تین مقام اس رسالہ سے لفظ بلغظ لقل کو درج ہیں۔ ہم بطور مشتے نمونہ از خردار امر زیر بحث کے متعلق دو تین مقام اس رسالہ سے لفظ بلغظ لقل کرتے ہیں۔

ہم ملاات و مومنین فرقہ انتا عشریہ لاہور حضرات مومنین کی خدمت میں عرض کرتے ہیں۔ کہ قوم کی شامت اعمال اور علوم کی طرف ان کی عدم توجی اور امور دین میں عموما تسکل اور کم رفتی کی حدیث کی وجہ سے مولوی سید علی لاہوری باوجود اپنی بے سوادی اور کم علمی کے اجتماد ہیں دفیع رفیع الثان عمدے کا دعوی کر جیٹھے ہیں۔ اور میدان خالی دکھ کرکوئی القلب اور خطاب خواہ شلیان الثان عمدے کا دعوی کر جیٹھے ہیں۔ اور میدان خالی دکھ کرکوئی القلب اور خطاب خواہ شلیان شان ہو یا نہ ہو۔ ایسا نہیں چھوڑا جس کو اپنے اشتمارات تحریرات تالیفات میں خود لکھا۔ یا دو سرے ناحق شناسول اور ونیا طلبول سے لکھوایا نہ ہو۔ ایو تراب کنیت ہروقت نام کے ساتھ موجود ہے۔ جمتہ السلام آیت انڈ ٹی العالمین نائب امام زمان وغیرہ معمولی القلب میں واخل ہیں۔

ای پر کفایت نہیں کی۔ گور نمنٹی خطاب عمس العلماء کا استعمال بھی ایک مدت تک ہو چاہے۔ جو غالبا کسی مشفق و مہوان کی دوستانہ فہمائش سے ترک کر دیا گیا ای پر بس نمیں ہوئی التلب خطابات میں روز افزوں ترقی ہوتی رہی یہاں تک کہ اپنے آپ کو خیر الا نام لکھوایا جو جنہ رسالتماب صلی الله تعالی علیه وسلم کے سوا اور کسی شخص کے لیے جائز نہیں- (برمان حق من ا عجیب و غریب لطیفه مفسرلا ہوری اپنی مؤلفه تفسیر میں حضرت یعقوب کے حضرت یوسف کو بریہ (4)دوست رکھنے کی کیا خوب وجہ بیان فرماتے ہیں۔ اور اس کی تمثیل میں ان پیغیران عالی مقام کو (معاذ الله) بندریا اور اس کے بیے سے مشابہت دیتے ہیں جس سے آپ کی مراتب شای یر کان روشنی بر سکتی ہے۔ جب بینمبروں کی جناب میں آپ ایسے دریدہ دہن اور ولیر ہیں تو اوروں کو ان کی سخت کلامی اور دشنام کی کیا شکایت ہو سکتی ہے مومنین کی آگاہی اور ان کے عالمانہ افلان جمّانے کے لیے تفیری عبارت بحن نقل کرتے ہیں جلد سیزوہم تفیر لوامع ص ۱۲- ۱۳ سوال چرا حضرت بعقوب کرید (به پااسفی علی بوسف) کرد- و برد و پسر دیگر بنیا مین و شمعون یا رو نمل نه كرد و حالا مكه اين دو فخص جم ازا ولا داو او مفارنت كرده بودند جواب درين دو سبب اند مج يوسف احسن الوجه نظيف و لطيف الهيكل و الشاكل از اصغر اولادش بود واصغر اولاد بسروالد خصوصا بایں اوصاف جسمانی محمودہ پندیدہ خصال اعزوجب از ہمیہ مقتضائے طبع بشری مباشرہ بنی از اولا بوزینه تبو مشهور خواهد شاشه که عزیز ترمین جمه بچه مائی خود اصغر جمه را بیم كرفت ياه ميردو للندا مفارقت اوكربيد واندوه اضطراب عد كرد يا حلاقي باجم-

ترجمہ: مخضریہ ہے سوال: حضرت ایتقوب حضرت یوسف کی جدائی میں تویا اسنی علی یوسف کم روئے باتی دو جب کر روئے باتی دو فرزند خیاجین و شمعون یا روئیل کی جدائی میں کیوں گریہ نہ فرمایا؟ جواب: اس کے دو جب بیں ایک تو یہ کہ حضرت یوسف علیہ السلام نمایت خوش شکل اور سیرت اور صورت میں نمایت لطف افلیف اور سب سے چھوٹے تنے اور چھوٹی اولاد مقتضائے بشری کی وجہ سے باپ کو بہت عزیز اور محبب نظیف اور سب سے جھوٹے تنے اور چھوٹی اولاد مقتضائے بشری کی وجہ سے باپ کو بہت عزیز اور محبب نوتی ہوتی ہوئی مثال برکر اور محبب نوتی ہے۔ خصوصا جو بچہ ان جسمائی اوصاف محمودہ اور پہندیدہ خصائل سے متصف ہو اس کی مثال برکر اولاد میں دیکھی جا سکتی ہے۔ کہ وہ اپنے سب سے چھوٹے نیچ کو پیٹ سے لگائے چاتا پھر تا ہے ہی سبب نوسف کی مفارقت میں برابر روتے اور خمکین اور مضرب سے بھی معلوم ہوا کہ پنیمبر خدا آپ کی طرح صورت پرست بھی تھے۔ معاذ الله ایران ش کا مضطراب رہے یہ بھی معلوم ہوا کہ پنیمبر خدا آپ کی طرح صورت پرست بھی تھے۔ معاذ الله ایران ش

(3) مولوی صاحب موصوف کو خیرالانام ہونے کا وعوے ہے۔ (دیکھوں غایت المغمود جلد میں المباہ

ذکی فاضل بابی وای علی الحائری خیر الانام

اس پر آپ نے مرکی ہوئی ہے۔ گویا اپنا خیر الانام ہونا تصدیق کیا ہے - (برہان حق ص ۲۲) مولوی حاری صاحب نے آیت بول نقل کی ہے۔

ولوجعلناه ملكالجعلناه رجلا وللبسنا عليهم ماكانوا يلبسون

تہارے خیال کے مطابق اگر ہم فرشتے کو بھی رسول بنا کر بھیجے الخ طالانکہ یوں ہے

والجعلناه رجلا وللبسنا عليهم ما يلبسون (انعام الخ) آيت: ٩)

اور ترجمہ یوں چاہیے تھا۔ اور اگر ہم رسول کو فرشتہ بناتے اس طرح مولوی صاحب کے

مااتاكم الرسول

الاية كے شروع سے واؤ كو بلا وجہ چھوڑ ديا ہے- يول جاہيے تھا

وما اتاكم الرسول (الايته حشرع)

قال الحائري عزيزہ! اب تم آسانی کے ساتھ سجھ کے ہو کہ پنجبر اسلام نے قیامت تک امت کے مرض الموت میں ایک ضروری تھم دیا۔ گراس کو ہمیان کمہ کر ٹال دیا گیا غور کرد کہ۔ جب قرآن نے مااتا کہ الموسول فیخذوہ رسول جو کھے بھی کے اس پر عمل کرد۔ ایک کلیہ قرار دے رکھا تھا۔ تو اب تم فردی انسان کرد کو رسول کو ہمیان کمنے والے کا بیہ روبیہ اس قرآنی تعلیم اور تھم سے کمال تک مطابق ہو سکتا ہے اور خدا اور رسول کا ایسا نا فرمان انسان کی سرا کا بھی مستحق ہو سکتا ہے۔ یا نہیں کیا بیہ نتیجہ نہیں ہو سکتا ہے۔ یا نہیں کیا بیہ نتیجہ نہیں ہو سکتا ہے۔ یا نہیں کیا بیہ نتیجہ نہیں کہون تھا ور نہ وہ بھی اس قدر گتائی سے منبور نبوی میں بیش نہ ہوئے۔ اور و ما ینطق عن المهوی ان ہوالا و حبی یو حبی بیسے صاحب وہی کے منبور نبوی میں ہیں اس کا دربار رسالت میں بیہ کلمہ کس نے کہنے کی جات کی اس کے متعلق پہلے ہیں بیہ کموں گا۔ کہ اس واقعہ ہاکلہ کا نام صدیث قرطاس مشہور ہے۔ اور معلی میں اس کا ذکر کم یا زیادہ موجود ہے۔ ان کے سی معنین کی اپنی عبارتوں سے جن کو ہیں آپ کے سامنے چیش کرنا چاہتا ہوں۔ پیغیراسلام کے کلام کوہوان کے سند معنین کی اپنی عبارتوں سے جن کو ہیں آپ کے سامنے چیش کرنا چاہتا ہوں۔ پیغیراسلام کے کلام کوہوان کے سند معنین کی اپنی عبارتوں سے جن کو ہیں آپ کے سامنے چیش کرنا چاہتا ہوں۔ پیغیراسلام کے کلام کوہوان کے سامنے کی میں اس کا ذکر کم یا زیادہ موجود ہے۔ ان کے سند معنین کی اپنی عبارتوں سے جن کو ہیں آپ کے سامنے چیش کرنا چاہتا ہوں۔ پیغیراسلام کے کلام کوہوان کی معنوم ہو جائے گا۔ اموحد حد م ۲۰۰۸)

اقرال آنخفرت سلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد مبارک کو کسی سحانی نے بدیان نہیں کما یہ محض افتراء مسلم کے ارشاد مبارک کو کسی سحانی نے بدیان نہیں کما یہ محض افتراء مسلم کے بروں کو سکتے ہیں؟ بال شیعہ حقیقت نبویہ کو نہر سمجھ مولوی حائری صاحب شیعہ میں غالبا اول نمبر تکلیں ہے۔ جنہوں نے اپنے فیرالا نام ہونے ک

بذريعه مرتقدين كردى ب نعوذ بالله من ذلك

آیت و ما ینطق عن الهوی سے یہ سجمنا کہ پنجبرعلیہ العلوة والسلام کے نمام اقوال ولی اللہ درست نہیں کو نکہ یہ آیت قرآن کے ساتھ خاص ہے اور اس کی ولیل آیت لاحقہ لینی علمه شلید القوى (اس كو تعليم كيا بدى قوتوں والے في) ہے اگر آنخضرت صلى الله عليه وسلم كے تمام اقوال وي موتے تو آپ کی جکہ مور و عماب نہ ہوتے ۔ مثال آیات ذیل میں عفا الله عنک لم اذیت لم (الله نے آپ کو معاف کردیا ہے۔ آپ نے ان کو اجازت وے کیوں دی- (تب: ع) والا تکن للخالیہ خصيما واستغفر الله ان الله كان غفور رحيما ٥ ولا تجادل عن الذين يختانون انفسم اور تم خیانت کرنے والوں کے طرف دار نہ بنو- اور اللہ سے بخش مانکو بیک اللہ بنا بھل كرف والا اور رحم كرف والا ب اور جو لوك ائي ذات ے خيات كرتے ہيں تم ان كى طرف ے جمل نہ كرو- (شاء: ع ١١) اور اسيران بدر سے فديہ لينے ير يول تشدد كيول موتا- لولا كتب من الله سبق لمسكم فيما اخذتم عذاب عظيم أكر تحري فدا بلك ، به موكئ موتى - وجو يحم تم إلى إلى کے بارے میں تم پر برا سخت عذاب واقع ہوتا (انفال ع 9) اور اس صورت میں آتخضرت ملی الله علیہ وسلم نے جو معرت علی سے تنجد کے بارے میں فرمایا تھا۔ اس میں معرت علی کا چون و چرا کرنا رووثی تمراً اور نیز اس صورت ش و شا و ز هم فی الامو اور ان ے معالمات ش مشورہ کرلیا کرہ- (آل عمران ع ۱۷) کے کیا معنی ہوئتے۔ اور آنخضرت صلی اللہ علیہ والہ وسلم کا بعض امور ہیں بعض صحابہ کرام کا كما مانا كيها موكا- لو يطيعكم في كثير من الامو لعنتم اكر وه بهت ى ياتول بي تهمارا كمنا مان وتم ضرور بلاکت میں ریع جاؤ کے۔ (جمرات ع ۱) اور نیز خزوہ تبوک میں معفرت علی کا آنحضرت صلی الله تعللٰ ⁹ عليه وسلم ے كما اتخلفنى فى النساء والصبيان كيا آب جمع عورتون اور الركون من يجمع جمورة جیں- رووی تھرے گا۔ تنعیل کے لیے دیمو تخف اٹا عشرص ٢٨٤) اگر ہم تنلیم كرليس ك آتخفرت ملى الله عليه واله وسلم حتى طور پر بذرايد وى اس كتابت كے ليے مامور تنے تو اس صورت ميں بادجود قدرت ملت کے آپ کا ترک کتابت فرمانا آپ کی عصمت کے منافی ہے۔ شیعہ جو تکہ حقیقت نبویہ سے بلا محض ہیں۔ قدا وہ اس پہلو کو بالکل نظرانداز کرے عدم تغیل ارشاد نبوی کا الزام حضرت مررضی الله تعالى عند ير ركين كى كوشش كرتے جي- اور يہ نيس سجمتے كه تبلغ وي ميس حضور اقدس باني مو و اى كى ك ردك ي رك نيس كت في علاوه ازي حضورايو توفي جمع كامينه ارشاد فرمايا تماجس ك اللب نه فقط معرت مخريق بلك معرت على اور ديكر حاضرين بهي النذاعدم تغيل كاالزام معرت على يربهي عائبه الد گا- والانک شیعد حفرت امیراور دیگر ائمه کومعموم جانتے ہیں پس معلوم ہوا کہ آنخفرت صلی الله علی

والدوسلم كا تكليف كتابت كوكوارا فرمانا وحى الني سے نہ تھا۔ بلكہ امت ير محض شفقت كے سبب سے تعلد قال الحارى معج بخارى مطبوعہ بمبئ جلد پنجم باب مرض النبي (ص ٢٠٠ سطرا)

قال ابن عباس يوم الخميس وما يوم الخميس اشتد برسول الله صلى الله عليه وسلم وجعه فقال ائتو نى اكتب لكم كتابا لن تضلوا بعده ابد افتنا زعوا ولا ينبغى عند بنى تنازع فقالوا ماشا نه اهجر استفهموه فله هبوا يردون عنه فقال دعونى فالذى انا فيه خير مما تدعونى اليه واو صاهم بثلث قال اخر جوا المشركين من جزيرة العرب واجيزوا الوفد بنحو ماكنت اجيز هم وسكت عن الثالثة اوقال فنسيتها (ائتى باند)

لین ابن عباس نے کما بیخشبہ کا روز عجیب بد روز تھا کہ اس شدت مرض میں فرمایا پیغیر سی پی نے کہ لاؤ کاغذ تاکہ میں ایک وصیت نامہ لکھ دول کہ اس پر عمل کرنے کے بعد تم لوگ گرای میں نہ پڑو گے۔ لی حاضرین میں نزاع واقع ہوا اور پیغیر کے حضور میں بحرار اور نزاع کی طرح مناسب نہ تھا پس کے۔ لی حاضرین میں نزاع واقع ہوا اور پیغیر کے حضور میں بحرار اور نزاع کی طرح مناسب نہ تھا پس کماامحاب نے کہ پیغیر صلی اللہ علیہ وسلم (محاذ اللہ) بڑیان بول رہے ہیں۔ فرمایا توغیر نے چھوڑ دو جھے جمل حالت میں میں ہول لینی شور نہ کرو۔ اس کے بعد پیغیر نے تین وصیتیں کیں۔ اول یہ کہ نکال دینا مرکبین کو جزیرہ عرب سے دوم وفود کو جائزہ دینا جس طرح میں دیا کرتا تھا۔ سوم وصیت کے وقت توغیر فاموش ہوگئے یا ہے کہ داوی اس کو بھول گیا۔

بخاری کی اس روایت کے مطابق اس قدر ثابت ہوا کہ پیڈیبر سے کے کوہریان کی نسبت وی عمی ۔ مگر اس مطابی کا بیا ہے مگر۔ اس مطابی کا یمان نام چمیایا کیا ہے مگر۔

نماں کے مائد آل، رازے کر وسازند مخلیا

برحال بقول اصحاب نبوی اگر معاذ الله پنجبر اسلام بھی ایک عام آدمی کی طرح بد حواس ہو گئے۔

می کو پر الی محذوش حالت میں جو اور نین وصیتیں پنجبر صلی الله علیہ وسلم نے کیں ہیں دہ کیوں نہ بالن مجھ ف کئیں۔ اور آج کیوں اگر میزوں کو جزیرہ عرب سے نکل دینے کے لیے ٹم شحوک کراس وصیت کی میل کی جا رہی ہی کا حمل کی جا رہی ہی حالت تھی۔ تو پجریہ وصیت اخور جو المیہو دھن جزیو ق العرب بھی کا احماد و ممل سینوں کے نزدیک نہ ہوئی چاہیے اور آبندہ اس حدیث اور وصیت پر عمل کرنا سینوں کو نظار کرکنا چاہیہ و دوس می مثل ہوگ۔ " میشا میشھا ہڑپ اور کردوا کروا کروا تھو۔

منازی کی آس دوایت سے یہ بھی خابت ہوتا کہ بینجبر صلی الله تعالی علیہ و سلم دو سری وصیت پر اللہ نظار کی آس دوای بھول کی وصیت پر اللہ نظار کی آس دوایت سے یہ بھی خابت ہوتا کہ بینجبر صلی الله تعالی علیہ و سلم دو سری وصیت پر اللہ بینی نویا درہ جس سے سارے مطلب پر پائی نوسکے۔ یا دوای بھول گیا ہے مطلب کی وصیتیں تو یاد رہ شمیں۔ اور جس سے سارے مطلب پر پائی

پر جاتا تفاوہ بھول گئے۔ ورنہ ان کو آن ہو چھتا ہی کون ای بات کے لیے تو ساری جدوجد ہو رہی تی ۔

ید وصیت نافذ نہ ہونے پائے۔ مر خدا بھلا کرے امام غزالی کا جس نے بد رازطشت از بام کر دیا۔ ولد مات رسول الله صلی الله علیه و سلم قال قبل و فاته ایتونی بدوات و بیاض لا زیل عکم اشکال الا مو واذ کر لکم من المستحق بعدی قال عمر دعوا الرجل فانه لیهجرونی بھزو (ائنی بند سرتماالا این مطبور بنی من م عرما) لیعنی جب پنیمراسلام کا انتقال ہوا تو مرنے سے پہلے آب یہ وائن مائند سرتماالا کا انتقال ہوا تو مرنے سے پہلے آب نے فرمایا۔ دوات اور کاغذ لاؤ کہ تمارے لیے امارت اور ظافت کی مشکلات کو دور کردوں۔ اور بتادوں تر کممیرے بعد امارت اور ظافت کا کون مستحق ہے۔ مر حضرت عمر نے اس وقت کمہ دیا کہ جموڑ دوائ محض نے پنیمر شاخ کو کہ یہ (معاذ اللہ) فریان لیمن بحواس کر دیا ہے۔ کتاب الشفاء مطبوعہ صدیق پریل م

وذكر ان الذي طلب كتابته اهر الخلافة بعده و تعيين الخلافة (التي يند)

یعنی میں ذکر کیا گیاہے کہ رسول اللہ طاق کیا کا مقصود اس وقت وصیت لکھنے سے امر خلافت کا فیملہ اور خاص خلیفہ کو معین و مقرر کرنا اپنے بعد کے لیے تھا۔

روستو! اب تو امام غزالی اور قاضی عیاض جیسے مسلم سنی اماموں نے اس کو صاف کر ریاکہ حضرت عمر ہی وہ محابی تھے۔ جس نے پنجمبر صلی اللہ علیہ والہ وسلم کی وصیت لکھے جانے کی رکادٹ کا اور ہنیان کی نبیت زات معلی کو دیتے ہوئے فیصلہ امر خلافت اور تعین خلیفہ کے متعلق وصیت کے متعلق وصیت کے متعلق وصیت نیفبر اسلام میں حائل ہو گئے مسئلہ خلافت میں مسلمانوں کا اسلامی شیرازہ بکھر گیا ہے آگر اسوقن وصیت سے پنجبر اسلام کو خلافت کا فیصلہ کر لینے ویتے تو آج بھی وہی ایک ہی ملت اسلامیہ ہوتی اور ب

اقول یمال مصنف نے اپنے ذعم میں سی مصنفین کی تین عبار تیں پیش کی ہیں جن سے تاظرین کو پینیر اسلام کے کلام کو ہدیان کہنے والے کا نام معلوم ہو جائے گا۔ ہم ان تینوں کی نسبت الگ الگ عرض کرئے۔ ہیں۔

(۱) حدیث بخاری جو نقل کی گئی ہے۔ اس کا اردو ترجمہ اور مطلب پہلے بیان ہو چکا ہے۔ معنف کے ترجمہ بی نہاں کے ترجمہ کرنے میں ویا نتہ اری سے کام نہیں لیا۔ هاشانه اهجو ستفهموه کا ترجمہ بی نہاں کیا۔ صرف اهجو کا ترجمہ کیا ہے مملہ کی خلط کیونکہ اهجو بسمکون ہائے مملہ کی روایت میں نہیں۔ بلکہ اهجو کیا آنخضرت صلی اللہ تعالی ہمیان بول رہے ہیں؟ انتہا اللہ اللہ تعالی ہمیان بول رہے ہیں؟ انتہا الکاری ہے اور یہ جوزین کتابت کا قول ہے جو انہوں نے متو تغین فی الکتابت سے اٹی رائے کا انکاری ہے اور یہ جوزین کتابت کا قول ہے جو انہوں نے متو تغین فی الکتابت سے اٹی رائے کا انکاری ہے اور یہ جوزین کتابت کا قول ہے جو انہوں نے متو تغین فی الکتابت سے اٹی رائے کا

آئید میں کما ان کا مطلب یہ تھا کہ ہریان چو نکہ آنخضرت ملی اللہ علیہ وسلم کی زبان مبارک ے صادر نہیں ہو سکنا۔ للقرا آپ کے ارشاد کی تغیل کرنی چاہیے۔ اس کے بعد استفدموہ کا آنا بھی بتا رہا ہے۔ کہ یہ استفدام انکاری ہے درنہ استفہوہ کی جگہ اعر ضوا عنہ چاہیے تھا۔

کونکہ جو محض ہریان کے اس سے پوچھنا کیا اس سے تو اعراض کرنا چاہیے بین اس روایت کونکہ جو محض ہریان کی والے کے نام کی تقریح تو کیا آپ کی طرف ہریان کی طرف ہریان کی اس کے پرعس آپ کے حق میں نبست ہریان کا انکار پایا جا آ

مصنف نے دعونی فالڈی انافیہ خیر مماتد عونی الیہ کا ترجمہ (چھوڑ دو جھے جس حالت بل ہوں۔ لینی شور نہ کرد) بھی غلط کیا ہے۔ اس کا صبح ترجمہ یول ہے چھوڑ دو جھے کیونکہ بیل جس حالت بل ہوں وہ اس سے بمتر ہے جس کی طرف تم جھے بلا رہے ہو۔" اس سے علی رغم انف المصنف ظاہر ہے کہ آنخفرت صلی اللہ علیہ وسلم کابت زیر بحث کے لیے منجاب اللہ عامور نہ تھے کیونکہ پیجبر کے لیے تناوی سے بڑھ کرکوئی عبادت نہیں۔

معنف نے ذسکت عن الثالثة او قال فنسیت کا ترجمہ بھی غلط کیا ہے صبیح ترجمہ یوں ہے اور مید بن جیر نے اسے بیان کیا گرمیں اسے بھول کیا اس کی دلیل بخاری شریف کی روایت ذیل ہے

حدثنا محمد حدثنا ابن عيينة عن سليمان بن ابي مسلم الاحول سمع سعيد بن جبر سمع ابن عباس رضى الله عنهما يقول يوم الخميس وما يوم الخميس ثم بكي حتى بل دمعه الحصى قلت يا ابن عباس ما يوم الخميس قال اشتد برسول الله صلى الله عليه واله وسلم وجعه فقال ائتوني بكتف اكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده ابدا فتنا زعوا ولا ينبغي عند بني تنازع فقالوا ماله اهجر استفموه فقال ذر ولى فالذي انا فيه خير مما تد عوني اليه فامر هم بثلاث قال اخر جو اليهود من جزيرة العرب واجيزوا الوفد بنحو ماكنت اجيز هم والثالثة اماان سكت عنها واما أن قالها فنسيتها قال سفيان هذا من قول سليمان (كح عاري)

جرم طانی باب اخراج الیمود من جزیرة العرب) اس رویات کے الفاظ والثالثة الخ کا ترجمہ یہ ہے الفاظ والثالثة الخ کا ترجمہ یہ ہے الا تیم کی ومیت سے یا تو سعید بن جبیر خاموش ہو گئے یا ابن جبیر نے اہبے بیان کیا مگر میں اسے بھول میا مغیان بن مینیہ نے کہا کہ یہ سلیمان کا قول ہے۔ مصنف نے وصیتوں کی نسبت جو خامہ فرم ائی کی ہے وہ الفواد بنائے خلط پر غلط ہے اس ایک ہی حدیث کے ترجمہ سے ناظرین مجتد لاہوری کی لیافت کا اندازہ لگا

سکتے ہیں۔

مرالعالمین کاجو حوالہ مصنف نے نقل کیا ہے وہ اسے مفید نہیں۔ کیونکہ یہ کتاب الم غزالی کے طرف مفید نہیں بلکہ کی رافعی نے لکھ کرامام غزالی کی طرف مفیوب کردی ہے چانچ مائی تحفہ اثنا عشریہ یوں تحریر فرماتے ہیں۔ لید بست و کیم آ کلہ کتابے را نسب کند یہ کیے از کہاں المستت و در آن مطاعن محابہ وبطلان غربب المستت درج نمایند ودر اول آل کتاب ذا بویسند کہ وروے وصیت باشد بمکمان سرحفظ المائت و آ نکہ آنچہ دریں کتاب نہ کورشور عنی نیانی ماست و آنچہ در کتب ویگر نوشتہ ایم محض پروہ واری و ذمانہ سازی است مثل کتاب مالیان کہ العالمین کہ آزا امام محمد غزالی انسبت کند و علی بدالتیاس کتب بسیار تصنیف کردہ اندو ہرک العالمین کہ آزا امام محمد غزالی انسبت کند و علی بدالتیاس کتب بسیار تصنیف کردہ اندو ہرک معتبرین المستت نمودہ و کے کہ باکلام آل بزرگ آشنا باشد و ندات سخن اورا از ندال تی مراسیم، غیراو المیاز و تفرقہ نماید کمیاب ہے باشد ناچار عوام طلبہ دریں کرغوطہ خور ندو خیلے سمراسیم، خیران شوند (خند انا عشریہ منہ)

ترجمہ: رافضیوں کا ایسواں فریب ہے کہ کمی ایک کتاب کو بزرگان اہلت ہیں ہے گان طرف منسوب کرتے ہیں اور اس ہیں صحابہ پر طعن اور قد بہب اہلت کا باطل ہونا درج کرتے ہیں اور کتاب کے شروع ہیں ایک دیباچہ لکھتے ہیں۔ جس میں ہے وصیت ہوتی ہے کہ اس راز کو پوشید اور کتاب کے شروع ہیں ایک دیباچہ لکھتے ہیں۔ جس میں ہے وصیت ہوتی ہے کہ اس راز کو پوشید افلا جائے اور اس امانت کی حفاظت کی جائے۔ اور ہے کہ اس کتاب ہیں قد کور ہے وہ ہمارا پوشیدہ علیا ہے اور جو پچھ ہم نے وو مری کتابوں میں لکھا ہے۔ وہ محض پردہ داری اور زمانہ ماذی ہے مطال کہا مرالعالمین جس کو وہ امام محمد غزالی ہے منسوب کرتے ہیں اور علی بدالقیاس رافشیوں نے بہت کی گائی میں اور علی بدالقیاس رافشیوں نے بہت کی گائی ہو اس بزرگ کے کلام سے آشا ہو اور اس کے قداق تخن کو غیر کے قداق تخن سے امتیاز و فرق کرتے ہیں اور بہت جیران و پریشان ہوتے ہیں ا^{اشی} بہت کم ہو تا ہے۔ ناچار عام طلبہ اس کریش غوطہ کھا جاتے ہیں اور بہت جیران و پریشان ہوتے ہیں ا^{اشی} بہت کم ہو تا ہے۔ ناچار عام طلبہ اس کریش غوطہ کھا جاتے ہیں اور بہت جیران و پریشان ہوتے ہیں ا^{اشی} مصاحب تخفہ نے جو پچھ تحریر فرمایا ہے بالکل ورست ہے ستر العالمین امام غزائی کی تفیفات اگل سے نہیں بیٹ السلام تاج الدین سکی نے طبقات الشافیت اکبری (جزر دالح ص ۱۱۱۱) میں امام غزائی کی تفیفات المائے۔ نہیں بلکہ ایک کتاب بیان فضائے المائے و المائے دین کی کمل فہرست دی ہے اس میں سرالعالمین درج نہیں بلکہ ایک کتاب بیان فضائے المائے۔ دسی تعلید کی کمل فہرست دی ہے اس میں سرالعالمین درج نہیں بلکہ ایک کتاب بیان فضائے المائے۔

۔ (3) تاب الثفاء کی حبارت جو نقل کی گئی ہے اس میں پیٹیبراسلام کے کلام کو ہڈیان کہنے والے ہے۔ نام تو ورکنار ہدیان کا کوئی ذکر تک نہیں اور نہ اس میں حضرت عمر رمنی اللہ تعالی عنہ کا ذکر ج کہ جن پر توجیهات باطلہ سے کوئی بہتان اختراع کیا جاسکے۔

مجتد لاہوری نے عبارت شفاء کے سیاق وسباق پر غور نسیس کیا اس واسطے الذی طلب کتابته كا ترجمه ورست نهيس كيا جب آنخضرت صلى الله تعالى عليه وسلم في سامان كتابت طلب فرمايا تو اس کی تغیل کے بارے میں اختلاف ہوا علائے کرام نے اس اختلاف کی مختلف توجیهات کی ہں۔ جن کو قاضی عماض نے بالتفسیل ذکر کیا ہے چنانچہ بعض علما کتے ہیں کہ حضار مجلس میں ے بیضے قرآئن قوید سے سمجھ کئے تھے۔ کہ آنخضرت صلی اللہ علیہ والہ وسلم کا ارشاد بطریق ا يجاب نهيں- للذا ان كا دو مرول سے اختلاف ہوا جو يد نه سمجھے تھے- اور بعض كتے ہيں كه يہ ارشاد بطریق مشوره امتحان تھا۔ کہ دیکھیں حاضرین اس میں اتفاق کرتے ہیں۔ یا اختلاف جب اختلاف ہوا تو حضور اقدس بابی ہو وامی نے ترک کتابت فرمایا۔ اور ایک گروہ قائل ہے کہ حاضرين مجلس ميس سے بعض نے آتخضرت صلى الله عليه واله وسلم سے ورخواست كى تھى كه آب ہمیں کھ لکھ کردیتے جائیں۔ مگردوسرول نے آپ پر شفقت کو ملحظ رکھ کراسے اچھانہ سمجما لنذا اختلاف بدا ہوا اس کے بعد قاضی عیاض نے وہ عبارت نقل کی ہے جے مجتمد لاہوری نے اپ مفید طلب سمجھ کر پیش کیا ہے اس عبارت کا صبح ترجمہ بیہ ہے۔ اور ذکر کیا گیا ہے کہ وہ بات جس کی کتابت کے لیے بعض حاضرین نے آتخضرت صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے ورخواست کی تھی۔ آپ کے بعد خلافت کا معاملہ اور اس کی تعیین تھی۔ یہ عبارت مصنف کو مفید نمیں کیونکہ اس سے یہ نمیں پایا جاتا کہ آتخضرت صلی اللہ علیہ وسلم اینے بعد حضرت علی كرم الله وجهد كو خليفه مقرر كرنے لگے تھے بلكه اس كے برعكس جارے پاس ولاكل قويد موجود ہیں کہ میہ وی خلافت صدیق اکبر کی سند تھی جس کی تحریر کا آپ نے اس سے پہلے بھی ارادہ کیا تھا۔ جیسا کہ پہلے آچکاہے۔ مصنفہ کا میہ کمنا آج بھی وہی ایک ہی ملت اسلامیہ ہوتی غلط ہے كونك أتخضرت صلى الله عليه وملم اس سے پيشتر حالت صحت ميں فرما چكے تھے كه ميرى امت ك تمتر فرقع موسكم - جو سوائ ايك ك سب دوزخ مين جائين ك اور وه فرقه المسنّت و جماعت ہے چانچ کتاب المحمال (مطبوعہ ایران ۱۳۰۲ھ مجلد الی من ۱۳۱۱) میں ہے-

حدثنا ابو احمد محمد بن جعفر البيدار الشافعي بفرغانه قال حدثنا مجاهد بن اعين بن دائود قال حدثنا محمد بن الفضل قال حدثنا ابن لهيعه عن سعيد بن ابي الملال عن انس بن مالك قال قال رسول الله ان بني اسرائيل تفرقت على احدى وسبعين فرقة يهلك سبعون فرقة و تتخلص فرقة وان امتى ستفرق اثنتين وسبعين

فرقة بهلك احدے وسبعوں ولنخلص فرقة قالوا يا رسول الله من للك الدين فرقة الحماعة الحماعة الحماعة

ر جد، عذف اسلو) اللى كا بيان به كدر سول الله فر المياك بنواسما كل مدر و الله الله فر المياك بنواسما كل مدر و قرق بورك الله بنتي بوگا اور ميرى الله كا بورك بنتي بوگا اور ميرى الله كا بحث به بوگا و الله بنتي بوگا اور ميرى الله وه فرقه كون به آپ منابي استر دوزنى اور ايك بنشي بوگا و ما ضرين في عرض كى يا رسول الله وه فرقه كون به آپ منابي بنامت بر حت بر حت

حدثنا احمد بن محمد بن الهيشم العجلى قال حدثنا ابو العباس احمد بن يحيى بن ذكر يا القطان قال حدثنا بكر بن عبدالله بن حبيب قال حدثنا تعيم بن بهلول قال حدثنا ابو معاوية عن سليمان بن عن جعفر بن محمد عن ابيه جده عن ابيه الحسين بن على ابن ابى طالب قال سمعت رسول الله صلى الله عليه واله وسلم يقول ان امة موسى افتر قت بعده على احدى وسبعين فرقة فرقة منها نا جية وسبعون في النار وافترقت امة عيسى عليه السلام بعده على اثنتين و سبعين فرقة فرقة منها نا جية واحدى وسبعون في النار وافترقت امة عيسى عليه السلام بعده على اثنتين و سبعين فرقة فرقة منها نا جية واحدى وسبعون في النار وان امتى ستفترق بعدى على ثلث وسبعين فرقة فرقة فاجية واثنتان وسبعون في النار.

ترجمہ: (کا ف اسان) حضرت حسین بن علی بن ابی طالب کا بیان ہے کہ بیل نے رسول اللہ علی کے درسول اللہ علی کے درسول اللہ علی کے درسول اللہ علی کے درسول اللہ علی اللہ فرما رہے تھے۔ کہ حضرت موی علیہ السلام کے بعد ان کی امت کے اکمتر فرقے ہو تھے بن میں ہے ایک عالی اور ستر دوزخی ہیں۔ اور حضرت عیلی کے بعد ان کی امت کے بہتر فرقے ہو تھے بن میں ہیں ہے ایک عالی اور اکمتر دوزخی ہیں۔ اور میرے بعد میری امت کے تمتر فرقے ہو تھے جن میں ایک عالی اور بہتر دوزخی ہو تھے جن میں۔

والنائري عاري مطبوم بمني جلد بجم ص ١٠٥ سطره مي مرقوم ٢٠٠

عن ابن عباس قال لما حضرت رسول الله تعالى صلى الله عليه وسلم وفي البت عن ابن عباس قال لما حضرت رسول الله تعللوا بعده فقال بعضهم وان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد غلبه الوجع و عند كم القران حسبنا كتاب الله فاختلف اهل البيت واختصمو الهمنسم من يقول قربوا يكتب لكم كتاب لا تضاوا بعده ومنسم من يقول غير ذلك فلما اكثر وا اللغو والا ختلاف قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قومو عبهد الله فكان ابن عباس يقول ان المرزية كل

المرزنة ما حال بين رسول الله و بين ان يكتب لهم ذلك الكتاب لا ختلافهم ولفطهم التم يالله الكتاب الم الله و المعلهم التم يالله المعلهم التم يالله المعلهم التم يالله المعلهم التم يالله المعلم التم يالله الت

بخاری کی اس رویات کے مطابق حضرت عمر نے یہ وحوی کیا ہے کہ تسارے پاس قرآن موجود ہے۔ بس کتاب خدا ہمارے واسطے کانی ہے وصیت پیڈیمر کی ضرورت نہیں اس میں فک نہیں کہ قرآن کانی ہے اور ضرور کانی ہے مگر کس کے لیے جس کے پاس کتاب کا علم موجود ہے و من عندہ علم الکتاب جس کے حق میں آیت انزی ہے عام لوگوں کے لیے جو تفقہ فی الدین رکھتے ہی نہیں ان کے لیے قرآن کیو نگر کائی ہو سکتا ہے۔ قرآن کے کائی ہونے کے دعی خود حضرت عرفے کے لیے قرقن شما کائی ان کے نہیں ہوا چروو سرول کے لیے وہ کیا کائی ہوتا۔ ورنہ بار بار کیوں مسائل دین میں وہ علی کی طرف محکی نہیں ہوا چر دو سرول کے لیے وہ کیا کائی ہوتا۔ ورنہ بار بار کیوں مسائل دین میں وہ علی کی طرف محکی ہوتے اور علی ہر مرتبہ ان کو ہلاکت سے بچاتے جیسا کہ محد ثمین المسنت نے لکھا ہے قال عمر بن الحفظاب فی عدہ مواطن لو لا علی لھلک عمر بنابیع المودہ شیخ سلیمان قدوزی حتی مطبوعہ قطنطنیہ و سے سلام کی مربن خطاب نے متعدد موقبوں پر اقرار کیا ہے کہ اگر علی قرآن ناطق نہ ہوتے تو عمر ہاک ہو گیا تھا۔

دوستو! اس سے اب صاف ثابت ہوا کہ قرآن کے کافی ہونے کا دعوی حضرت عمر کا یقیناً غلط ہے ورنہ وہ خود احکام دین میں صامت قرآن کافی کو چھوڑ کرکیوں علی قرآن ناطق کی طرف متعدد موقعول پر مختاج ہوئے ان کو قرآن کے ہوتے جب وصیت رسول کی ضرورت نہ تھی تو پھر رسول اللہ کے شاگرد رشید جناب علی کی طرف رجوع کرنے اور خود کوہلاکت سے بچانے کی کیوں ضرورت محسوس ہوئی۔ اس لیے کہ ہاتھی کے وانت کھانے اور دکھانے کے اور

قرآن مجید ان بیشار علوم پر شامل ہونے کے باوجود اگر تنا بغیر مجد و آل محد کے عام لوگوں کے لیے کانی ہو سکا۔ تو مجروہ تنا ایک مکمل کتاب کی صورت میں بہلے ہی کیوں نہ نازل کیا گیا۔ ای لیے کہ خدا فران کے و ما انزلنا علیک الکتاب الا لتبین للناس ما نزل الیہم کہ اے محمہ ساتیا پر نازل نہیں کیا گیا۔ یہ قرآن مگراس لیے کہ تم بیان کرو ان لوگوں پر جو پچھ کہ ان کی طرف نازل کیا گیا ہے دو سری آیت مگرا کے لئیون کر اس کو تم کھول کربیان کر میں ہے لوگ اختلاف کریں اس کو تم کھول کربیان کر اس کے فرایا ہے قد جاء کم من اللہ نور و کتاب مبین کہ غدا کی طرف سے دو چیزی تمارے لیے بیجی گئی ہیں۔ ایک توریعی محمد من اللہ نور و کتاب مبین کہ غدا کی طرف سے دو چیزی تمارے لیے بیجی گئی ہیں۔ ایک توریعی محمد میں اللہ علیہ و سلم کتاب لینی قرآن مگرافسوس کہ حضرت عمر نے نہ تو اس کم فدا کی پرواہ کی اور نہ امت مرحومہ کی آیندہ بمتری کا پچھ اندیشہ کیا۔

اس محم فدا کی پرواہ کی اور نہ امت مرحومہ کی آیندہ بمتری کا پچھ اندیشہ کیا۔

لیے کانی ثابت ہوا اگر کانی ہو تا تو آج اس منوس اختلاف کی صورت میں اسلام کی متحدہ قوت کیں منتم دکھائی دی ہے۔ ایک طحت اسلامیہ آج کیوں عکڑے عکڑے ہزاروں کی تعداد میں نظر آتی۔ ای لیے کہ حضرت عمرنے اس وقت رسول کی وصیت لکھے جانے میں رکاوٹ پیدا کی اور سے روز آج مسلمانوں کو دیکنا پڑا جس کے لیے حضرت این عباس روتے رہے۔ اور اس قدر روئے کہ اس کے آنسوؤں نے عگر پڑوں کو ترکر دیا۔ (موجد حدم ان ہے۔ ان عباس روتے رہے۔ اور اس قدر روئے کہ اس کے آنسوؤں نے عگر پڑوں کو ترکر دیا۔ (موجد حدم ان ۔ ان ا

ا قول مجتد لاہوری نے اس حدیث کا اردو ترجمہ نہیں کیا۔ اگر کرتے تو خدا جانے حدیث اول کے ترجمہ كى طرح اس من كتنى جك محوكري كوت بان عند كم القوان حسبنا كتاب الله كاترجم واب كر اس میں انفاظ (وصیت پیغیر کی ضرورت نہیں) انی طرف سے بردھا دیے ہیں متن حدیث میں عفر کی جگہ حفرت لکے دیا ہے شاید مجتد ماحب و سمجد من حفرے منی نہ آئے اس لیے یہ تصرف کردیا نامرن ک سولت کے لیے ہم اس کا اردو ترجمہ کھے دیتے ہیں۔ این عباس سے روایت ہے کہ جب رسول الله مالیا کی وفات شریف کا وقت آیا اور دو اتخانہ میں ہوگ جمع ستے تو نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم نے فرمایا آؤیں حميس ايك الى تحرير لكه دور جس كے بعد تم مراه نه بوك- اس ير ان يس سے بعش نے كماكه رسول الله يروروعالب ب اور تمارے ياس قرآن ب- الله كى كتب مارے ملے كاتى ب چر كروالول في اختلاف كيا اور آپس ميں جمئزنے لئے۔ جض كتے تھے كه ملان كتابت) نزديك ركدو تاكه آب تهارك واسطے الی تحریر لکھدیں۔ کہ جس کے بعد تم مراہ نہ ہوگے۔ اور بعض اس کے سوا کہتے تھے۔ جب انہول نے شور و اختلاف زیادہ کیا تو رسول انتد نے فرملیا اٹھ جاؤ عبیداللہ کا بیان ہے کہ حضرت این عباس کمہ رے تھے۔ کہ معیبت بدی معیبت وہ چزے جو ان کے اختلاف اور شور کے سبب ماکل ہوگئ۔ درمیان رسول الله كے اور ورمیان اس كے كہ آپ ان كے ليے وہ تحرير لكھديں۔ اس مديث من ترفيراسلام ك كام كو بريان كنے والے كا يام ذكور نميں- بلك بريان كا ذكر تك نميس الداب صديث بعى مائے مصنف کے ثبوت میں کار آمد نہیں بل قول بعض عمر فاروق حسنا کیک الله موجود ہے جس مر مجتد صاحب کے حسب علوت ظمہ فرمائی ک ب ہم اس سے چھڑاس قول کے مطلب و معانی پر کانی روشنی ڈال کھے ہیں جس کے اعامہ کی یمنل ضرورت نمیں۔ حسبنا کتاب الله کے قائل کی دقت نظراور اصابت رائے ؟ آفرین و صد آفرین کے معرت امیر کو بھی جو حاضر واقعہ تھے بچو تشکیم و سکوت جارہ نہ ہوا اور ہو اکیے جب كه اس قائل كن مائ كن تصويب خود آتخفرت ما يج الى جوسيد المعمومين بن اس موقع برائخ عمل یعنی ترک سبت ے قرادی محتد صحب صبتاً سنب اللہ کامطلب سمجے نہیں۔ اور ایوں ی مند آتے ہیں اندا مند کی مُعلتے ہیں۔ رہا قرآن کے کافی یا ناکافی ہونے کی بحث سو

جی قرآن پر ہمارا ایمان ہے وہ واقعی ہمارے واسطے کافی ہے اس کا بیان صدیث رسول مقبول معلی اللہ تعالی س برات ہے۔ اس کی تبست قرآن ہی کا تھم ہے۔ و ما اتکم الرسول فخذوہ و ما نھکم عنه فانتوا عبر المرعلية السلام يول فرائة بين- واعلمو انه ليس على احد بعد القران اي قرآن كي نبت مفرت امير عليه السلام يول فرائة بين- واعلمو انه ليس على احد بعد القران من فاقة (نيج البلاق مطبوع بيروت ير اول ص ١٨٨١)

ترجمہ : اور جان لو کہ کسی کے لیے قرآن کے بعد کوئی عاجت نہیں انتھی وہ قرآن جس کو معنف فظ اپنے خیالی اتمہ معصومین کے لیے کافی بتا رہا ہے وہی ہے جو حسب عقیدہ شیعہ سیری صدی جرى سے غار مرمن راى بيس امام غائب عليه السلام كے پاس ہے-

مجتد لاہوری نے جو حضرت عمر رضی اللہ تعالی عند کی نبت دریدہ دہن کی ہے اسے چاہیے کہ ں مائل بروایت بھات بیان کرے جن میں حضرت فاروق اعظم نے خلاف قرآن و صدیث کیا ہو تھن ہرزہ مرائی ننے کے لیے ہم تیار نہیں۔ کسی موقع پر حضرت عمر کاب کمٹا (او لا علی لھلک عمر) اس بات كو ظاہر نيس كرتاكم ان كو مسائل شرعيه سے وا تغيت نه تھى۔ اس قول كا ايك موقع يه بيان كيا جاتا ہے کہ حضرت عمرفے ایک زانیہ عورت کے حق میں سنگار کیے جانے کا تھم دیدیا تھا۔ مگر آپ کو یہ معلوم نہ قاکہ وہ عورت حاملہ ہے حضرت علی کو اس عورت کا حاملہ ہونا معلوم تھا۔ لنڈا جب انہوں نے حضرت فاردق اعظم کو اس کے حمل سے آگاہ کیا تو اس وقت بطور ادائے شکریہ یہ فقرہ حضرت فاروق اعظم کی زبان سے لکلا جس سے آپ کا مطلب سے تھا۔ اگر صدے وقوع اور اس عورت اور اس کے بچہ کے ہلاک اولے کے بور مجمعے معلوم ہو تا کہ وہ عورت حاملہ تھی تو نا دانستہ اس بچہ کی ہلاکت پر مجمعے اتنا افسوس ہو تا كر بنزله ميرى بلاكت كے موتا- أكريد قصد ورست ہے تواس سے حضرت عمرير كوئى الزام عائد شيس اوا کونکہ جج کا کام شمادت پر عظم لگا دینا ہے۔ اس پر بیہ واجب نہیں کہ دریافت کرے کہ تو حالمہ ہے یا المسلم ا مادر ہول اس سے یہ نتیجہ نہیں لکا کہ قاضی کو وہ سئلہ معلوم نہ تھا۔ اس طرح کی بے اطلاعی سے قاضی تردر کنار کی پغیرر بھی حرف نہیں آسکا۔ و سیسے حضرت موی علی نبینا وعلیہ والعلوة والسلام نے حقیقت سے بے اطلاع میں اپنے بوے بھائی حضرت ہارون علیہ السلام کی ڈاڑ بی پکڑلی تھی۔ حالانکہ حضرت موی منا ت مر تعظیم براور کلال سے نا واقف نہ سے۔ اس طرح کی اور مثالیں بھی ملتی ہیں۔ جن میں سے ایک وہ ایک عورت این مراف میں بروایت وائل کندی منقول ہے کہ آنخضرت کے زمانے میں ایک عورت اپنے میں ایک عورت اپنے کا این م مرے بھامت نماز میں شامل ہونے کے لیے نکلی کوچہ میں ایک فخص نے اس سے زنا بالجبر کیا۔ اس است من عن من من من من موسے نے سے سی توجہ میں ایک سے ای نے بھے سے زنا بالجبر اللہ اللہ اس نے بھے سے زنا بالجبر اللہ عنور و قرماد کی زانی بھاک کیا ایک مخض کزر رہا تھا عورت نے کہا کہ ای نے بھے سے زنا بالجبر

کیا ہے المذااس مخص کو پکو کر آنخفرت صلی اللہ علیہ وسلم کے حضور میں لائے آپ لے اس کے سلم کے حضور میں لائے آپ لے اس کے سلم کر خوار کیا کہ یا رسول اللہ مان کیا ہیں لے کا حکم دیا ہول اللہ مان کیا ہیں لے کا حکم دیا ہول اللہ مان کیا ہیں کے حفرت ٹالو کیا ہے اس روایت کو نقل کرکے حفرت ٹالو کیا ہے اس پر آپ نے ذائی کے لیے سلکار کیے جانے کا حکم دیا۔ اس روایت کو نقل کرکے حفرت ٹالو وئی اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلم من اللہ یوں تحریر فرماتے ہیں پس وفلتیکہ مثل ایس امر کمل عصمت آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم خلل نہ کردہ باشد افضیلت فاروق راچہ خلل رساند بلکہ غلط از حضرت مرتفئی واقع شد وآل غلط در نقر مسئلہ نقہ بود ورقصہ احراق مرتد و عبداللہ بن عباس برال متنبہ ساخت

عن عكرمة ان عليا حرق قوما ارتد واعن الاسلام فبلغ ذلك ابن عباس فقال لوكنت انا لقتلتم لقول رسول الله صلى الله عليه وسلم قال رسول الله صلى عليه وسلم من يدل دينه فاقتلوه ولم اكن لا حرقم لان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تعذبوا بعذاب النار فبلغ ذلك عليا فقال صدق ابن عباس اخرجه التومذي (رقر اليين مارم منع مجبل ومل من ١٨١)

ترجمہ: جب ایما امر آنخضرت صلی اللہ کے کمال عصمت میں خلل انداز نہ ہوا تو فضیلت فاردن میں کیا تفصان پنچائے گا۔ بلکہ غلطی تو حضرت مرتضیٰ سے وقوع میں آئی اور وہ غلطی بھی قصہ احراق مرتم میں نفس مسئلہ فقہ میں تھی اور حضرت عمداللہ بن عباس نے اس پر آگاہ کیا چنانچہ حضرت عکرمہ سے روایت ہے کہ حضرت علی نے ایک جماعت کوجلا ویا۔ جو اسلام سے پھر گئے تھے۔ یہ خبرابن عباس کو پنجی تو کما اگر میں ہو تا تو ان کو قبل کرتا۔ کیونکہ رسول اللہ طاق کیا ہے۔ جو اپنا وین بدل دیتا ہے اس کردو۔ اور میں ان کو آگ سے نہ جلاتا کیونکہ رسول اللہ طاق کیا کے فرمایا کہ آگ کا عذاب نہ دو جب یہ خبر حضرت علی کو پنجی تو فرمایا کہ ابن عباس نے بچ کھا ہے اس حدیث کو ترفدی نے نقل کیا ہے۔ (انتھی)

شیعد نے جو دولفظ قرآن ناطق اور قرآن صامت گریے ہیں اس سے ان کا مقصود قرآن موجود کو نا کھل و ناکافی خابت کرنا ہے۔ حالا تک حضرت امیر علیہ السلام اسے ناطق فرما رہے ہیں۔ چنانچہ آپ کا ارشاد ہے و کتاب الله بین اظہر کم ناطق لا یعیی لسانه (نج ابلانہ ملومہ بردت جزء اول ص ۱۳۵)

ترجمہ: اور اللہ کی کتاب تہمارے ورمیان ناطق ہے۔ اس کی زبان شیس تھکتی انتھی اور حفرت امیر بی نے اہل بیت کو ٹفل اصغر بتایا ہے جس کی وجہ یہ ہے کہ ائمہ ٹفل اکبر کے مختاج اور اس کی خش میں ہیں۔ اور خود قرآن نازل کرنے والا قرآن کی نسبت یوں فرما رہا ہے۔

(۱) هذا بیان للناس وهدی و موعظة للمتقین (ال مران ع ۱۱) لینی به روش ولیل اس سه الوکول کے لیے اس کا قاری ترجمه مسلمه شیعه به سے هذا

تدفة شيعه

آنچ گذشت ازواقعائے امم گزشتہ بیان للناس دیلے روش است برائے مرد مال یعنی مذبال زبان رسالت پاہیا قرآن دلالت روشن و ہوید است برائے ہمہ مرد مال وحدی و زیاتی بصیرت و بیان طریق رشد بعنت و موعظة للمتقین و پندے تمام برائے پر تیز گارال اگرچہ قرآن مرسقیال رائیز لطیف است اما چو تکہ مقیال برآل پند میگر تدنہ غیرایشال اذیں جست ایشال رابذ کر شخصیص نمود ترجمہ گزشتہ امتوں کے واقعات ایک روشن دلیل بیل لوگول کے لیے یعنی جناب رسالت ماب ماتھ کے زمانہ کے مکذبین کے لیے یا سے قرآن روشن و ظاہر دلالت ہے تمام لوگول کے لیے اور بصیرت کی زیادتی اور جنت کی طرف رہنمائی کے قرآن روشن و ظاہر دلالت ہے تمام لوگول کے لیے اور بصیرت کی زیادتی اور جنت کی طرف رہنمائی کے طربی کارون کے لیے بھی لطیف طربی کا بیان اور مکمل تھیجت ہے بربیز گاروں کے لیے اگرچہ قرآن غیر بربیز گاروں کے لیے بھی لطیف ہے گئین چو نکہ بربیز گار اس سے تھیجت بگڑتے ہیں۔ نہ کہ غیر پر بیز گار اس وجہ سے پر بیز گاروں کو ذکر سے تخصوص کیا (انتھی)

اس سے صاف طاہر ہے کہ قرآن تمام لوگوں کے لیے روش و طاہر ولالت ہے۔ نہ کہ فقط شیعہ کے خیالی ائمہ معصومین کے لیے

ما کان حدیثا یفتری ولکن تصدیق الذی بین یدیه و تفصیل کل شئی و هدی و رحمة لقوم یو هنون (موره ایرست رکوع افیر)

یہ کوئی بنائی ہوئی بات نہیں بلکہ جو اس نے پہلے ہے اس کی تفدیق ہے اور ہر چیز کی تفصیل اور جولوگ ایمان لائے ان کے لیے ہدایت و رحمت ہے (ترجمہ شیعہ)

ھذا ابلغ للناس (ابراہیم: ع) بغرض نفیحت یہ لوگوں کے لیے کافی اطلاع ہے (ترجمہ شیعہ)
اس کا فاری ترجمہ یوں ہے اس قرآن یا آئچہ دریں سورہ است از مواحد کفایت است مرمردمال را
(ظامتہ المنبج) یہ قرآن یا جو نفیحتیں اس صورت میں ہیں کافی ہیں لوگوں کے لیے (انتی)

(4) ونزلناعلیک الکتب تبیانالکل شئی (کل ع) ترجمہ: اور ہم نے تم پریہ کاب نالل کی ہے کہ ہرچ کا بیان ہے کہ ہرچ کا بیخ بیان ہے (ترجمہ شیعہ) فاری ہوں ہے و فرد فرستادیم برقو قرآن رادر حالتیکہ بیان او من ہم جرچ کا بیخ بیان ہوں ہے و فرد فرستادیم برقو قرآن رادر حالتیکہ بیان او من است براہے ہرچ نزاد المور دین بشعمیل واجمالی کہ بیان آن بستہ مطمرہ باشد خلامتہ النجی۔

العنی ہم نے آپ پر قرآن نازل کیا در آنحالیکہ وہ امور دین میں سے ہر چیزے لیے بیان روشن من من سے ہر چیزے لیے بیان روشن

م منصل طور پر اور مجمل طور پر کہ جس کا بیان پنیمبرعلیہ السلام کی حدیث ہے اہتی۔
(۵) ولقد ضربنا للناس فی هذالقران من کل مثل لعلهم یتلہ کرون (زم: ۴۳)
ترجمہ: اور ہم نے آدمیوں کے لیے اس قرآن میں ہر طرکی مثل بیان کی تاکہ وہ نصیحت حاصل
کریں (ترجہ شد،

(6) انا جعلنه قرء نا عربیا لعلکم تعقلون (زخرف ع) ترجمہ: بیشک ہم نے اس کو علی قرآن مقرر کیا تاکہ تم سمجھو-(ترجہ شید)

(7) هذا ابصائر للناس (جافيه: ٢٥) ترجمه: كل آدميول كے ليے يه كلي وليليل يال- (تربر

(8) ولقد يسونا القران للذكر فهل من مدكر (قر: ع) ترجمه: اوريقيعاً بم في تعيمت عاصل كرف والاب-؟ (تبرر عامل كرف والاب-؟ (تبرر عيد)

(9) و تلک الامثال نضربها للناس لعلم يتفكرون (حشر: ع ٣) ترجمه: اوريه مثاليس بيس بم كل آوميول ك ليه بيان كرت بين تاكه وه غور و قكر كرير-(ترجمه شيد)

فلاصد مطلب سے کہ ہمارے پاس جو قرآن ہے اس کے اوصاف بے ہیں۔

(1)وہ تمام لوگوں کے لیے روشن دلیل ہے

(2)وہ ہر چیز کی تقصیل ہے۔

(3) وہ لوگوں کے لیے کافی ہے۔،

(4)اس میں ہر چیز کا بلغ بیان ہے۔

(5) اس میں اللہ تعالی نے لوگوں کے لیے ہر طرح کی مثل بیان فرمادی ہے۔

(6) وہ عربی زبان میں خاطبین کے سجھنے کے لیے نازل کیا گیا۔

(7)وہ کل آدمیوں کے لیے کھلی دلیلیں ہیں-

(8) فدائے اے اپنے بندول کے لیے تقیحت حاصل کرنے کے لیے آسان کردیا۔

(9) مثالیں جو اس میں ذرکور ہیں وہ سارے آدمیوں کے لیے بیان ہوئی ہیں تاکہ وہ غور و نگر کریں۔ اس میں فک نہیں کہ ایبا قرآن ہمارے واسطے کانی ہے یہ خیال کہ اہلیت کے پاس پچھ اور علم ہے جس کے بغیریہ قرآن ہمارے واسطے کائی نہیں محض ایک ویوانہ کی ہوئے حسب عقیدہ شیعہ اہل ہیت کے نزدیک تویہ قرآن محرف و ناقابل اعتبار ہے۔ اول سے آخر تک اس کی ایک آیت ہمی ائی نہیں۔ کہ جس میں تحریف کا اختال نہ ہو۔ پھر بھلا یہ قرآن اہل بیت کے لیے بھی کیو نکر کانی ہو سکا ہے اہل بیت کا قرآن ہی اور ہے اور غار سرمن رای میں تبایا جاتا ہے۔ لاہوری جمتد اگر اس قرآن کو صامت بنائے۔ قرآن ہی اور ہے اور غار سرمن رای میں بتایا جاتا ہے۔ لاہوری جمتد اگر اس قرآن کو صامت بنائے۔ قرآب اختیار ہے مگر ہم یہ نشیعہ کے ائمہ معموم قرآن ناطق ہے۔ کیونکہ بیب تک وہ زندہ رہے۔ نقیہ کا لباس او ڑھے تیخ خلوت میں چھے رہے۔ نطق یائقرآن ان میں پایا نہیں گیا۔

پارہویں امام جو زندہ بتائے جاتے ہیں وہ بھی غار مرمن رای میں خاموش و پوشیدہ ہیں۔ نتیجہ یہ کہ شیعہ کا قرآن صامت غائب اور ان کا امام زمان بھی صامت و غائب احادث شیعہ جو ائمہ کی طرف منسوب کی جاتی بین ان میں اختلاف کا وہ طوفان ہے کہ ایک حدیث بھی ایسی نہیں جس کی ضد دو مری حدیث موجود نہ ہو۔ اب فیصلہ کی کیا صورت؟

جہتد لاہوری فرماتے ہیں کہ اللہ تعالی نے قرآن کو پارہ پارہ اس واسطے نازل کیا ہے کہ ساتھ ساتھ بیغبر علیہ السادہ والسلام اسے بیان فرماتے جائیں اگر قرآن تما (بغیر محمد آل محمد کے) لوگوں کے لیے کان ہو تا قودہ ایک ہی بار محمل کتاب کی صورت میں نازل ہو تا۔ جواب میں گزارش ہے کہ اس سے اتمہ یا آل محمد کے بیان کی ضرورت ثابت نہ ہوئی۔ رہا بیان اجمال قرآن یعنی صدیث نبوی سو اس سے ہمیں انکار نہیں مگر بیان پیغیر علیہ العلوہ والسلام کو قرآن کے پارہ پارہ نازل ہونے کی علت قرار دینا صریح قرآن کے قلاف ہے چنانچے اللہ تعالی یوں فرماتا ہے۔

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلاَ نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْانَ جُمْلَةً وَّاحِدَةً كَذَٰلِكَ لِنُعَبِتَّ هِفُوَادَكَ وَ رَتَّلْنَهُ تَرْتِيْلاً ٥ (فرقان: ع ٣) ترجمه فارى

و گفتند آنا نکہ گر دید نداز بهود ونصاری دیا مشرکان چرافرو فرستادہ نمیشود برجمہ قرآن بگانہ جملہ اپنی کمبار چنانچہ توریت و انجیل و زبور و ایں اعتراض ازروے مکابرہ و عناداست و نفور ابیاں از تن چه فرائد معنف معنف عند و انجیل و زبور و ایں اعتراض ازروے مکابرہ و عناداست و نفور ابیاں از تن چه فرائد میا بیکبار نازل شود و تفریق متعنمی فوائد البت کہ در جملہ نیست چنانچہ مینٹر مائد چیش فرد فرستاد میم براگذرہ تا فابت کرداینم و توت و ہیم بتغریق آن در اوقات متعددہ دل ترا بینی تا بتغریق وتی دل ترابان شمکین دہیم دبر تو خوائد می آزا بینے از پینے اس کردافات متعددہ دل ترا بینی تا بتغریق وتی دل ترابان شمکین دہیم دبر تو خوائد می آزا بینے از پینے اس کرد تعنی دو تو انداز بینے از پینے اس کرد توان دور تا توان خوائد فرائد کی تعنی دور تو اس کرد توان دور تواب اعتراض کفار میغر مائید کہ تفریق قرآن بجست آنست کہ متعنمی فوائد ست کے معنی دور تواب اعتراض کفار میغر مائید کہ تراب ایشاں بیکبار فردہ آند خوائدہ نو سندہ بودند دایس بیغبرہامت کولت حفظ چہ موسی و واؤد کہ کتاب ایشاں بیکبار فردہ آند خوائدہ نوسندہ بودند وایس بیغبرہامت کولت حفظ چہ موسی و واؤد کہ کتاب ایشاں بیکبار فردہ آند خوائدہ نوسندہ بودند وایس بیغبرہامت کولت حفظ چہ موسی و میسی و واؤد کہ کتاب ایشاں بیکبار فردہ آند خوائدہ نوسندہ بودند وایس بیغبرہامت موجب مزید مین اگر اور مین آن و ویگر آنکہ تا ہر نجمے کہ فرودے آید خوائد فائم میکردو در گر زول جرئیل آنا فاغا موجب تسلی خاطر آخضرت است و دیگر دور کر دور کر فران مقتل است برا جوبہ واسولہ و جواب در عقب سوال آند (ظامت المنے)

زبور کی طرح قرآن سارا ایک ہی بار محمر پر نازل کیول نسیس کیا گیا ان کابیہ اعتراض حق سے نفرت اور مكايرة وعناد كے سبب سے تفاكيونك قرآن اعجاز كى صفت سے متصف ہے اور وہ قرآن كے پراگنده ياايك یار نازل ہونے سے مختلف نہیں ہو تا۔ اس کے براگندہ نازل ہونے میں فائدے ہیں۔ جو ایک ہی بار ہونے میں نہیں چنانچہ اللہ تعالی فرماتا ہے کہ ہم نے ای طرح اسے پراگندہ نازل کیاہے تاکہ اوقات متعددہ می اس کے پراگندہ نازل ہونے سے ہم تیرے دل کو ثابت و توی کردیں۔ لینی تاکہ تفریق وحی سے ہم تیرے ول کو اس کے قہم و حفظ پر قادر کردیں اور جم نے اسے بچھ پر بطریق ترتیل ٹھہر ٹھمر کر پڑھا ہے۔ بری مت میں چوہیں یا تیش سال ہے۔ حاصل یہ کہ حقتعالی کفار کے اعتراض کے جواب میں فرماتا ہے۔ کہ قرآن كا يراكنده نازل كرنا اس واسط ب كه اس ميس بست سے فائدے ہيں- اول حفظ كرنے ميس آساني كيونكه حضرت موى و هيسى و داؤد كه جن كى كتاب ان ير ايك بى بار نازل بمونى لكه يراهم تق اوريه پنجیرمع امت کے ان پڑھ ہے پس اگر سارا ایک ہی بار نازل ہو یا تو اسے حفظ کرنا مشکل ہو تا۔ دو مرے یہ کہ موقع موقع ہر اس کا نازل ہونا مزید بصیرت کا موجب اور اس کے معنی میں زیادہ خوض کرنے کا سبب ہے تیسرے تاکہ جو حصہ نازل ہواس کے ساتھ تحری کی جائے اور اس طرح قرآن کا اعجاز اور کفار کاعاج ہونا روز بروز طاہر ہو تا رہے۔ چوتھ سے کہ جرئیل کا آنا فانا نازل ہونا آنخضرت صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ول کی تسلی کا موجب ہے پانچویں ہے کہ قرآن میں ناتخ و منسوخ ہے۔ ناتخ منسوخ سے پیچھے آنا چاہیے دونو ایک وقت میں جمع نہیں ہو سکتے - چھٹے یہ کہ قرآن میں جوابات وسوالات ہیں- اور جواب سوال کے پہنچ آیا کرتا ہے۔ (انتی)

جبتد الہوری نے اخیر میں حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنما کے گریہ کی طرف توجہ واللّی ہے۔ آل حضرت ابن عباس کی عمر ہیرہ سال کی تھی۔ اوقت حضرت ابن عباس کی عمر ہیرہ سال کی تھی۔ (دیکھو تمذیب التہذیب) ان کے خیال میں اگر وہ تحریر وقوع میں آجاتی تو بہت فا کہ ہوتا۔ عمریہ ان کی ایّا رائے ہے۔ فاروق اعظم کی رائے کی فوقیت و اصابت میں کلام نہیں جیسا کہ ہم پہلے خابت کر آئے ہیں۔ والے ہے۔ فاروق اعظم کی رائے کی فوقیت و اصابت میں کلام نہیں جیسا کہ ہم پہلے خابت کر آئے ہیں۔ والی الحائری صحیح مسلم مطبوعہ نو کشور جلد دوم 43 سطر 4 میں ابن عباس سے مروی ہے۔ قال رسول الله صلی علیه وسلم ائتونی بالکتف والدواۃ واللوح اکتب لکم کتابالن تضلو ابعدہ ابدا فقالوا ان رسول الله صلی الله علیه وسلم یہ جو بلفظه اور اس کے ساتھ ہی سطر 5 میں ہے۔

عن ابن عباس قال لما حضر رسول الله صلى الله عليه وسلم في البيت رجال فيم عمر بن الخطاب قال النبي صلى الله عليه وسلم هلم اكتب لكم كتابا لاتضلون بعده ابدا فقال عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قدغلب عليه الوجع وعند كم القران حسبنا كتاب الله فاختلف اهل البيت فاختصمو امنيم من يقول قربوا يكتب لكم رسول الله صلى الله عليه وسلم كتابالن تضلوا بعده ومنيم مايقول عمر فلما اكثر واللغو والاختلاف عند رسول صلى الله عليه وسلم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قوموا قال عبيدالله فكان ابن عباس يقول ان الرزية كل الرزية ماحال بين رسول الله صلى الله عليه وسلم و بين ان يكتب لهم ذلك الكتاب من اختلافهم والغطهم (انتى بائد)

ترجمہ: روایت بخاری کے ذیل میں مرقوم ہے کیونکہ دونوں کامضمون تقریبا واحد ہے

دوستو! اس زوایت صحیح مسلم میں بھی حضرت عمر کا نام نامی موجود ہے اور پہر کا لفظ مرقوم ہے اب انکار کی مخبائش تو رہی نہیں۔ البتہ محیکداران خلافت اب تاویلین کر کے بیچارے ساوہ لوح مسلمانوں پر حق کو مشتبہ کرنے کی کوشش کریں گے مگر میں آپ کو نیقین دلاتا ہوں۔ کہ لفت عرب میں لفظ ھجر معنی پر حق کو مشتبہ کرنے کی کوشش کریں گے مگر میں آپ کو نیقین دلاتا ہوں۔ کہ لفت عرب میں لفظ ھجر معنی بران (بکواس) میں مستعمل ہے اور لفظ اھجر محش (گالی دینے) کے معنی میں استعمال ہوتاہے اس لیے سینوں کے امام الائمہ قامنی عیاض نے کتاب شفاء مطبوعہ صدیقی بریلی کے ص ۱۹ سام ۱۳ میں مجبور ہوکر یہ کھو دیا ہے۔

روایة من روی فی الحدیث هجراذ معناه هذی یقال هجر هجر اذا هذی واهجر هجراذا هذی واهجر هجرااذا فحش واهجر تعدیة هجرا (انتی الله)

لین جس روایت میں کہ ھجر کا لفظ پنجبر کے حق میں عمر کا کمنا آیا ہے۔ اس کے تو معنی ہڑوان (کواس) کرنے کے جیسا کہ لغت عرب میں بکواس کے وقت ھجر ھجر مستعمل ہے اور اھجر واھجر العجرون گل فحش دینے کو کہتے ہیں۔ قرآن کی بھی اصطلاح ہے۔ دیکھو آیت مستکبرین به سموا تھجرون (پہلا: ۵ مل) لین بیبودہ بکواس کرتے النے پاؤں بھا گئے سے (ترجمہ نڈیر احمد سی) تجرون کے معنی بیبودہ بکواس کیئے گئے ہیں۔ ای طرح دو سری جگہ ہے وقال بادب ان قو می اتحذ واھذ القوان مھجو لا ایس کھنے ہیں۔ ای طرح دو سری جگہ ہے کہ اے میرے پروردگار میری امت نے اس قرآن کو ایس کھواں سمجھا (ترجمہ نڈیر احمد سین تجرون اور مجورا ای جرکے باب سے سنتمبل اور مفعول کے صیف بکواس مجھا (ترجمہ نڈیر احمد سین) تجرون اور مجورا ای جرکے باب سے سنتمبل اور مفعول کے صیف بگواں سمجھا (ترجمہ نڈیر احمد سین) تجرون اور مجورا ای جرکے باب سے سنتمبل اور مفعول کے صیف ایس اسلاح قرآن ہیں بھی جس کے معنی بکواس (ہمیان) کے ہیں۔ بے جا تمایت میں لفظوں کو تاویل کی اس اسلاح قرآن ہیں بھی جس کے معنی بکواس (ہمیان) کے ہیں۔ بے جا تمایت میں لفظوں کو تاویل کے ایس میں موجود سین میں موجود سینے میں موجود سینے کرد میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے میں طاح کے جس اس وقت بیت الرسول میں موجود سے سی بھی طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے میں طاح میں موجود سین بھی طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے میں طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے بھی طاح میں موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے میں موجود سینے میں موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے موجود سینے موجود سینے میں موجود سینے میں موجود سینے موجود سی

حضرت عمر کے لفظ بریان اور حسبنا کتا اللہ کئے ہے دوگردہ ہو گئے تھے اور ان میں سخت اختلاف وزران اللہ اللہ اللہ ورائ علی بلکہ لغو کوئی تک بھی لوبت پہنچ چکی تھی۔ فلما اکثر واللغو والا ختلاف عند رسول الله روایت فیکورہ کی عبارت جس پر گواہی دے رہی ہے بید ان کا فعل بھی یقیناً علم خدا اور نص قرآن کے خلاف نشا

لقوله تعالى لا ترفعوا اصواتكم فوق صوت النبي ولا تجهر واله بالقول كجهر بعضكم لبعض ان تحبط اعمال كم وانتم لا تشعرون- (پ٢٦:١٣٥)

کہ اے مسلمانوں اپنی آوازوں کو تیغیر کی آوازے اونچانہ ہونے دو- اور نہ اس کے ماز بہت زور سے بات کرو جیسے تم ایک سے ایک آپس میں زور زور سے بولا کرتے ہو- (کہیں ایبانہ ہو) کہ تہمارا کیا کرایا سب اکارت ہوجائے اور تم کو خبر بھی نہ ہو- (زہمہ نذر احر)

کیول دوستو! اب بھی تم ان محابیول کے عصیان کے قائل نہ ہو محے۔ کہ بخاری ومسلم جین اصح الكتب بھى فدكورہ حديث قرطاس ميں بيت الرسول كے اندر تيفيرعليه السلام كے سامنے حضرت عمراد ویکر صحابیوں کے لڑنے جھڑنے کو تشکیم کرتے ہوئے فخش کلای اور لغو کوئی تک کو بھی مان لیا ہے کونک لفظ لغو کے معنی لغت میں بہودہ گوئی کے ہیں- اور لغت کے معنی ہیں- اصوات مبھمة لا يفهم لين بہت ی مہم چینیں جو سمجھ میں نہ آسکیں۔ پس ایس حالت میں کیا ان کا اس لڑائی اور جھڑا میں تیفبرے سائے آوازو کوبلند کرنا اور لغو گالیال ایک دو سرے کو دینا فدکورہ آیت کے خلاف نہیں تھا۔ یقیناً علم قرآن کے تخالف تھا اور شان نبوت کی توہین برمنی تھا میں وجہ ہے کہ بخاری و مسلم کی مذکورہ روایت میں مرقوم -- (فتنا زعواولا ينبغي عندبني تنازع) كه تغيرك مائے ان محايوں نے جھڑنا شروع كردا مل آ نکہ پیغبرے سامنے ان کا جھکڑنا نبص قرآن ناجائز و نامناسب تھا۔ اس بات کی یہ ' ٹائید ہے کہ ان کی ا^ی عمتانی سے پینمبرعلیہ السلام نے متاذی ہو کر ان سب کو جن میں حضرت عمر بھی تھے۔ بروایت مذکور بخاری ا ومسلم جھڑک دیا۔ اور فرمایا قوموا میرے پاس سے اٹھ جاؤ اگر ان کا گتاخانہ روبیہ پینمبرعلیہ السلام کو ٹاگوار نہ گزر تا تو وہ جھڑک کر اٹھ جانے کے لیے ان کو حکم نہ دیتے۔ اس بہ حکم (قوموا) اس امری ولیل ؟ کہ پینبراسلام اس کتافی کی وجہ سے متاذی ہو کر ضرور ناراض ہو کئے تھے۔ اوررسول کو ایذا پہنچانے والے كا كام قرآنى يہ ہے - كه والذين يؤذون رسول الله لهم عذاب اليم (پ ١٠: ع ١١) يعني اور ع لوگ اللہ کے رسول کو ایذا دیتے ہیں ان کو قیامت کے دن عذاب درد ناک ہونا ہے (ترجمہ نذریر احم) النا سب بالوں کے باوجود بھی پنیبراسلام کو ایڈا پنچانے والوں سے محبت ٹرک کرنے کے لیے میں تم کو مجور كرنانسي- چاہتا تمهارا ضميرتم كو صراط متنقيم كى طرف بدايت كے ليے مجبور كرے كاميرى اب يد وعامول

كه خدا بم سب كو مراط متنقيم ير قائم ركه-

مفكوة شريف مطبوعه محدى دبلي 455 سطرة ميس مرقوم ب-

عن ابن عباس قال لما حضر رسول الله صلى الله عليه وسلم وفى البيت رجال فيهم عمر بن الخطاب قال النبى صلى الله عليه وسلم هلموا اكتب لكم كتابا لن تضلوا بعده فقال عمر قد غلب عليه الوجع وعند كم القرآن حسبكم كتاب الله فاختلف اهل البيت واختصموا فمنهم من يقول قربوا يكتب لكم رسول الله ومنهم من يقول ماقال عمر فلما اكثروا اللغط والاختلاف قال رسول صلى الله عليه وسلم قومواعنى كان ابن عباس يقول ان الرزية كل الرزية ما حال بين رسول صلى الله عليه وسلم و بين ان يكتب لهم ذلك الكتب الا ختلافم ولغطهم وانتى

ترجمہ: روایت بخاری کے ذیل میں گزر چکا ہے تکرار کی وجہ سے ضرورت ترجمہ نہیں عبارت بھی تعرف ترجمہ نہیں عبارت بھی تقریباً وی ہے۔ جو بخاری اور مسلم سے بیں ذکر کر چکا ہوں۔ اس میں بھی حضرت عمر کا نام نای موجودہ جس سے اب کسی کو شک و شبہ کی محفجائش نہیں رہی۔(موحد حسنہ ص ۱۳ - ۵۵ ا اقول ترجمہ: مسلم کی دونوں حدیثوں کا اردو ترجمہ یہ ہے۔

(۱) ابن عباس روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ طائد اللہ فالا کہ شانہ اور دوات یا لوح اور دوات میں مراہ نہ ہو میرے پاس لاؤ۔ تاکہ میں تمہارے لیے ایک تحریر لکھ دول کہ جس کے بعد تم بھجی ممراہ نہ ہو کے بہت تم بھوں نے کہا کیا رسول اللہ بڑیان کہتے ہیں؟ (استی)

ائن عباس سے روایت ہے کہ کما جب رسول اللہ طاق کے اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آؤ میں اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آؤ میں شمارے لیے ایک ایس معزت عمر بن الخطاب سے تو ہی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آؤ میں تمہارے لیے ایک ایس تحریر لکھ دول کہ اس کے بعد تم بھی محمراہ نہ ہوگے۔ پس معزت عمر اللہ من کہ اس کے بعد تم بھی محمراہ نہ ہوگے۔ پس معزت عمر اللہ من کانی ہے پس فرالوں نے اختلاف کیا۔ اور جھڑ ہوئے بعض کتے سے۔ کہ سامان کتابت نزدیک رکھ دو تاکہ رسول اللہ ساتھ تا تہمارے واسطے الی تحریر لکھ دیں۔ کہ جس کے بعد تم ہر کر محمراہ نہ ہوگے۔ اور بعض کتے سے۔ کہ سامان کتابت نزدیک رکھ دو تاکہ اسول اللہ ساتھ تا تھے اسلے الی تحریر لکھ دیں۔ کہ جس کے بعد تم ہر کر محمراہ نہ ہوگے۔ اور بعض کتے سے۔ جیسا کہ معنزت عمر نے کما پس جب انہوں نے شور اختلاف زیادہ کیا تو رسول اللہ ساتھ تا خوایا اٹھ جاؤ عبیداللہ کا بیان ہے کہ ابن عباس کتے سے کہ معینت بدی معینت اللہ ساتھ تا کہ اور اللہ ساتھ تا کہ وال اللہ ساتھ تا کہ وال

ورمیان اس کے کہ آپ ان کے لیے وہ کتاب لکھ ویتے- (انتمی)

تاظرین کو یاد ہوگا کہ ہم پہلے ذکر کر آئے ہیں۔ کہ جن روایتوں ہیں ہجریا یہ ہو ہو اور وہ ہا انکاری مقدرہ جودو سری روایتوں ہیں فہ کور ہے اس صدف پر قریت عقل بھی موجود ہے اور وہ ہے کہ حضور اقدس بائی ہو وای بالاتفاق بدیان سے پاک ہیں۔ اب دیکھیے کہ پہلی صدیف ہیں دخرت فاروق اعظم کا ذکر تک نہیں۔ بلکہ مجوزین کتابت ہیں۔ جو بطور استفہام انکاری ہوں کویا ہیں۔ کیارسول اللہ بالیان کہ رہ مری حدیث ہیں حضرت عمر کا نام بیشک فہ کور ہے محراس میں بدیان کا پھو ذکر لیم باالتہ ہم ہمتند لاہوری یوں لکھ رہ ہیں۔ اس روایت صبح مسلم میں بھی حضرت عمر کا نام بائل موجود ہم الدی ہو ہوں ایک اور میک مقترت عمر کا نام بائل ہوری ہوں لکھ رہ ہا۔ انکار کی مخبائش تورہی نہیں۔ یہ حضرت فاروق اعظم سید ناعمر بن الخطاب کے ساتھ بعض رکھنے کا میتیجہ ہے کہ مجتد صاحب کی بصیرت میں تو خلل تھا ہی اب بصارت میں بھی خلل البصارت ہو گی ایک اور مثال قابل غور ہے۔ آپ لے اجرادر الجوری نہوی معنی لکھ کر اپنی تائید میں کتاب الشفاء کی عبارت نقل کی ہے میں کتاب فہ کور کی لوری مجتد صاحب کے بعد مجتد صاحب کے ایک اور مثال قابل بصارت کے باب میں کی کور عبارت مع ترجمہ نقل کر ویتا ہوں۔ جس کے بعد مجتد صاحب کے اختلال بصارت کے باب میں کی کور کی خل نہ نہ ہی کی ایک نہ رہ کا نہ نہ ہوں۔ جس کے بعد مجتد صاحب کے اختلال بصارت کے باب میں کی کور کی نہ دے گا۔

قال ائمتنا في هذالحديث ان النبي غير معصوم من الامراض وما يكون من عوار ضها من شدة وجع وغشى ونحوه مما يعرض على جسمه ومعصوم من ان يكون منه من القول اثناء ذلك ما يطعن في معجزته ويؤدى الى فساد في شريعته من هذيان اواختلال في الكلام وعلى هذا لا يصح رواية من روى هجر اذمعناه هذى يقال هجر يهجر هجرا اذا هذى واهجر هجرا اذا فحش واهجر تعدية هجر

ترجمہ: ہارے ائمہ نے اس صدیث این عباس کی نسبت فرمایا ہے کہ نمی صلی اللہ علیہ والہ وسلم امراض سے اور امراض کے ساتھ شدت وروغشی وغیرہ سے جو آپ کے جسم کوعارض ہو مصوا نمیں اور اس بات سے معصوم ہیں کہ اشائے مرض میں آپ سے بڑیان یا آپ کے کلام میں اختلال با جائے جس میں آپ سے بڑیان یا آپ کے کلام میں اختلال با جائے جس میں آپ کے مجرودایت کیا ج جائے جس میں آپ کے مجرودایت کیا ج جائے جس میں آپ کے مجرودایت کیا جائے اس کی روایت صحیح نمیں کیونکہ ہجرکے معنی ہیں۔ اس نے پیفا کدہ کلام کما۔ جب کوئی بے فاکدہ کلام کی روایت صحیح نمیں کیونکہ ہجرکے معنی ہیں۔ اس نے پیفا کدہ کلام کما۔ جب کوئی بے فاکدہ کلام کما۔ جب کوئی بے فاکدہ کلام کہ جب محدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود استعمال ہوتا ہے۔ اور جب کوئی فحش کے تو ایھ جو ہدود دیا ہے اور اردو ترجمہ بھی غلط کیا ہے پس مجتد صاحب کی بھادی دوگی الحق کے پہلے جولا سم سے وہ چھوڑ دیا ہے اور اردو ترجمہ بھی غلط کیا ہے پس مجتد صاحب کی بھادی

اور بصیرت ہر دو میں خلل عیاں ہے۔ اگر کوئی اس عبارت فخفاء پر اعتراض کرے کہ روایت میں ہو بھی ایا ہے۔ ایک کوئی اس عبارت فخفاء پر اعتراض کرے کہ روایت میں ہو بھی آیا ہے اس دوایة هجو کے غیر صحیح ہونے کے کیا معنی جیں۔ تو اس کا جواب سے ہے کہ جیک بحرب الروایة ہو درس ہے مگریمال غیر صحیح ہونے سے مراد سے کہ روایة ہو بحسب العنی صحیح نسی۔ اگر اس میں ہمزاہ استقمام مقدر نہ سمجھا جائے۔

بی بہتر لاہوری نے جو آیات پیش کی ہیں۔ ان پی شیعہ و سی جردو کے زددیک جو کے معنی توک اور ھذی دونوں درست ہو سکتے ہیں۔ بسر حال اس سے ہمارے مقصود پر پچھ اثر نہیں پڑ سکتا۔ بخاری مسلم بی بیہ کسی نہیں نہیں آیا کہ حضرت عمر نے پٹیمراسلام کے کلام کوبنریان کہا ہو جب حضور اقدس صلی اللہ علیہ نے انتونی اکتب لکھ ارشاد فرمایا تو اس پر حاضرین دو گردہ میں منتسم ہو گئے۔ ایک متو تغین اور دوسرے مجوزین کتابت جیسا کہ پہلے بیان ہو چکا ہے جہتد صاحب نے جورفع صوت وغیرہ کی نبیت خامہ فرمانی کی ہے ہم اس کا جواب پہلے دے چکے ہیں۔ اور یمال پھراد دلاتے ہیں کہ رفع صوت و تنازع و ایزائ کی ہے ہم اس کا جواب پہلے دے چکے ہیں۔ اور یمال پھراد دلاتے ہیں کہ رفع صوت و تنازع و ایزائ حضرت فاروق اعظم یا صحابہ حاضرین مجلس پر لگائے جائیں ان میں حضرت مال علی مرتضیٰ کرم اللہ وجہہ بھی شامل ہیں۔ جن کو شیعہ معصوم کتے ہیں حدیث مشکوۃ جو مصنف نے لئل کی ہے دی اللہ عامل کے دول کرنے سے بچو طوالت کلام کھی اگرہ نہیں۔

قال الحائري معارج النبوة مطبوعہ نو كشور ركن چمارم باب سيز دہم فصل دوم 330 سفر 24 شرك سينول كے امام المامين كاشنى رقمطراز جيں۔ واقعہ ديگراز وقائح مرض آن بودكہ در حيں اشداد مرض كر المحاب در جرہ ہمايوں مجتمع بودئد آنسر در عليہ السلام فرمود كه دوات و صحيفہ بيا ريد تا از برائے شاد وصيح بنوليم كه برگر گمراہ نشويدا اصحاب اختلاف كروند كه تا بعض شخشد كه آنچه فرموده بدال عمل ہے بايد كرد و منائع مخشد كه اين سخال آل مختال إلى مختل باشد كه درشدت مرض ميگويند اميرالمومنين عمر رضى الله عند گفت كمانت كه اين سخال آل مختال باشد كه درشدت مرض ميگويند اميرالمومنين عمر رضى الله عند گفت كه درد و الم برحضرت رسول مستولى كشة قرآن ورميان ما است ال مارا بند است جمع با فاروق اتفاق كوند و زمود در خالفت ادا صرار نمود ند پس آخضرت صلعم اشارت فرمود كه يارال از صحب بر خيز ندكه كرند و زمود كه بارال از صحب بر خيز ندكه كرند و ترم و در خالفت ادا صرار نمود ند چوں آل سه وصيت بجائے آور ديكي آنكه فرمود كه مشركال را ان برائی مناسب نيست باوجود آل سه وصيت بجائے آور ديكي آنكه فرمود كه مشركال را ان محلت بربيد چنانچه كان ان برائل عرب مشما آيند ايشال راجوائز وصلات بربيد چنانچه كان ان برائل جمامت ميدادم م سوم رادى دا فراموش شده بوديا در اظمار آل مصلحت عربيدانتي بدائل خرب ميدان عرب من كان برائل عرب عن منائع بات قابل ذكر بيات كان خرب ہے كه اس تيرى وصيت كے ظام كرنے ميں معرت محمد مناؤيل نے اس ميں نئي بات قابل ذكر بيات ميں دكاوت ذالے جانے سے سجم علي من كه ميد لوگ بقول الله منان اي الى ليك كه وہ تحريرى وصيت ميں ركاوت ذالے جانے سے سجم علي تھے كه ميد لوگ بقول

مع غزالی و قامنی عیاض امرخلافت اور تعیین خلیفہ کے متعلق مشکلات کا فیصلہ کرنے نمیں دیں مے کیا جب ریرے رہے۔ ومیت کے وقت وہ کب ماننے کے لیے تیار ہول مے۔ غالبا علامہ کاشفی کا یہ آخری جملہ کہ در اظمار آ مصلحت ندید ای مطلب کی طرف اشارہ کرتا ہے کہ حضرت وہ تیسری وصیت جو خلافت کے نیملے کے متعلق متى - خلاف مصلحت سمجھ كرخاموش ہو گئے - اور پہلى وصيت كے متعلق جو سقم تما ہم ال مرا قرطاس کے شروع میں ہی بخاری کی روایت کی توضیح کرتے ہوئے بیان کر چکے ہیں۔ آریخ خمیس مطبوعه مصر جلد دوم ص 182 سطر 26 علامه دیار بکری نے نقل کیاہے-

لما حضررسول و في البيت رجال منم عمر بن الخطاب قال النبي صلى الله عليه وسلم هلم اكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده فقال عمر ان رسول الله صلى الله تخليه وسلم قدغلبه الوجع وعندكم القرآن حسبنا كتاب الله فاختلف اهل البيت واختصموا منهم من يقول قدموا يكتب لكم رسول الله كتابا لاتضلوا بعده ومنهم من يقول ما قال عمر فلما اكثروا اللغو والا ختلاف قال رسول الله عليه ومسلم قوهو اعنى (الخ انتى بائد)

ترجمہ وہی ہے جو پہلے بتا چکا ہوں۔ اس روایت میں بھی اس گرامی حضرت عمر موجود ہے جس کا ذات مطے نے اسلام میں بیہ سارا طوفان مچا ر کھا ہے روایت میں الفاظ بھی وہی ہیں جو عموما سب محدثین و مغرین اہل سنت نے نقل کیے ہیں بغرض اطمینان اصل کتاب میں ضرور ملاحظ سیجیے گا۔ (موعد حنه مل

اقول تصدير بحث كو بحوالہ محاح نقل كرنے كے بعد كتب سيرو تاريخ كى عيارتوں كے نقل كرنے كا ضرورت ند مقی کیونکہ الی کتب بمقابلہ محار پایہ اعتبارے ساقط ہیں ان میں اگر کوئی بات خلاف محال موگی وہ تنکیم نہ کی جائے گی- جہتد صاحب نے معارج النبوة کی عبارت میں تبیری وصیت کی طرف وج ولائی ہے جواب میں گزارش ہے کہ مجتد صاحب اس عبارت فاری (سوم مرراوی فراموش شدہ بودا وراظمار آل مصلحت عريد كا مطلب شيس مجے۔ ہم مديث بخاري كے الفاظ (وسكت عن الثالثة اوقال فنستیھایک تشری میں اس پر کانی روشنی ڈال آے ہیں اس کے مطابق عبات فاری میں رادگا ے مراد سلیمان احول ہونا چاہیے اور ندید کا فاعل سعید بن جبیر اگرچہ یمال متباوراییا ہوتا ہے کہ ندید كافاعل بمى سليمان بى ہے- بسر حال نديد كافاعل كمعي صورت بين آخضرت صلى الله عليه وسلم شين إلى مجتد صاحب کی تمام خامہ فرسائی لا طائل ہے۔

ہم بھی جہتر صاحب کو یمال ایک بات کی طرف توجہ دلاتا چاہتے ہیں۔ اور وہ یہ ہم کہ آپ پہلے لا چکے ہیں کہ حضرت عمر کے لفظ بزیان اور حسنا کتاب اللہ کہنے ہے دو گروہ ہو گئے تھے۔ محراس مبارت معارج النبوة سے جے جہتر صاحب سلیم کرتے ہیں۔ صاف ظاہر ہے کہ جب آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم معارج النبوة سے جے جہتر صاحب سلیم کرتے ہیں۔ صاف ظاہر ہے کہ جب آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم فی اللہ علیہ وسلم فی اللہ تعالی عنہ پر کلمہ بزیان کا الزام بھی غلط ثابت ہو تا ہے۔

مجتد لاہوری نے حضرت عمر کی نسبت جو لکھا ہے کہ ان کی ذات معلی نے اسلام میں یہ سارا موفان عالی رکھا ہے وہ سرا سر غلط ہے حضرت فاروق اعظم کی ذات سے اسلام کو جو تقویت پہنی وہ محکن موفان عالی رکھا ہے وہ سرا سر غلط ہے حضرت فاروق اعظم کی ذات سے اسلام کو جو تقویت پہنی وہ محکن بیان نہیں۔ یہ شیعہ ہیں جو ابن سباکی تقلید سے شیرازہ اسلام کے پراگندہ کرنے میں ہمیشہ سامی رہے ہیں بائرین اس کتاب کے دو سرے جھے میں دیکھیں گے۔ کہ اہلیت جن کی محبت کا یہ دم بھرتے ہیں۔ جود ال کے ساتھ انہوں نے کیاسلوک کیا۔

لماحضر عليه الصلوة والسلام وفي البيت رجال فقال النبي صلى الله عليه وسلم هلموا اكتب لكم كتابالن تضلوا بعده فقال بعضهم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم غلبه الوجع الحديث وفي رواية ائتونى اكتب لكم كتابا لن تضلوا بعدى ابدا فتنازعوا فقالوا ماله اهجر استفهموه دعونى فان الذي انا فيه خير وفي بعض طرقه ان النبي يهجر وفي رواية هجرو يروى اهجر (انتي باند)

رجمہ وہی ہے جو بیان ہوچکا ہے صرف اس روایت میں جملہ مالہ اھجو استف موہ قاتل از بات ہوگیا ہے۔ سمجھو توسی آیا (معاذ اللہ) بڑیان کم رہاہے بینی حطرت عمر نے استفہام کی صورت میں یہ لفظ کما تھا۔ (بہت خوب) فرمایے توفیر کے ان الفاظ میں ایسا کو نسالفظ تھا جس سے حصرت عمریا کسی صحابی کو معاذ اللہ توفیم اسلام صاحب الوحی کے بڑیان کا الفاظ میں ایسا کو نسالفظ تھا جس سے حصرت عمریا کسی صحابی کو معاذ اللہ توفیم کا کلام بلاغت نظام اس بر استعمال کرنا پڑا سنتے توفیم کا کلام بلاغت نظام اس وقت مرف ای قدر تھا کہ انتونی بدواہ وقوطاس اکتب لکم کتابا لن تضلو ابعدی ابدا میں ونیا بحر کم کو اور ایسا کروں گا۔ کہ خدارا توفیم اسلام کے ان کلمات میں خور فرما کر جمعے تاکیں کو الفاظ کی میں اور بے معنی ہے آیا ائتونی بدواہ وقوطاس بریان ہوسکا ہے یا کو الکا کم کتابا فیر مربوط اور بڑیان ہوسکا ہے یا اکتب لکم کتابا فیر مربوط اور بڑیان ہوسکا ہے یا اکتب لکم کتابا فیر مربوط اور بڑیان ہوسکا ہوسکا کے ان کلمات معاذ اللہ بڑیان و بگواس ہوسکا گا

ہ ان تین جملوں کے سواتو کوئی اور لفظ ہی حضرت نے ارشاد نہیں فرمایا جس سے بہ نہ پیدا ہو سکریا ہے بید غیر مربوط اور بلریان ہے پھر سمجھ میں نہیں آتا کہ الین کلام بلاغت نظام کو من کر الین گتافی کو دیکی مرتکب ہوئے۔ پھیٹا بلاوجہ ان کے ایسے بلاغت و فصاحت نظام کلام کو بدیان کہ کر شخیل وصیت میں گزیا ہوئی اس امری ڈگری ہے کہ وہ خود بعد وفات ہفیمر خلافت پر نبعنہ جمانے کی غرض سے مشکلات کو بذرید تخریر وقعیر خدا کو طعے نہیں کرنے وینا جائے تنے جساکہ امام غزالی و قاضی عیاض کے حوالہ سے ہم اس کو بدایو روایت میں کر بیان کر بھی ہوئے۔ اس امر کا بھی اقرار کرتے ہیں کہ ایک اور روایت میں مجرار کرتے ہیں کہ ایک اور روایت میں مجرار کواس کرتا ہے اور تیمری میں انجر (فحش کمہ دینا۔) بھی وارد ہوا ہے لا حول و لا قو ق الا باللہ اور دوایت میں مجرار کواس کرتا ہے اور تیمری میں انجر (فحش کمہ دینا۔) بھی وارد ہوا ہے لا حول و لا قو ق الا باللہ اور دوا

اقول مجتد لاہوری نے جو قابل ذکر بات بیان کی ہے ہم اس پر پہلے بحث کر آئے ہیں گر مجتد صاحب ک خاطریمال مجی کھے گزارش کردیتے ہیں۔جب حضور اقدس مان کیا نے فرمایا۔ انتونی اکتب لکم کتابا لن تضلوا بعده ابدا (سامان كتابت ميرے پاس لاؤ تاكه ميس تمهارے واسطے ايك اليي تحرير لكهدول كه جس کے بعد تم مجھی ممراہ نہ ہوگے۔) تو حاضرین مجلس میں اختلاف ہوا۔ اور ان کے دو گروہ بن گئے۔ ایک تو مجوزین کمابت تھے جو کہتے تھے۔ کہ فورا سامان کتابت آپ کے پاس رکھ دیا جائے۔ تاکہ وہ تحریر لکھدیں دو سرے متو تغین تھے۔ جنہوں نے آپ کی حالت موجودہ کو دیکھ کر اور مقصود کتابت کو سمجھ کر لغیل ارثاد میں وقف کیا بچوزین نے اپنی رائے کی تائید میں متو تفین سے کہا۔ آپ کاکیا حال ہے کیا آپ کی زبان سے ہمیان صادر ہوا ہے آپ سے پوچھ لول ان کا یہ سوال بطریق استفہام انکاری تھا یعنی چو نک، ہریان آتخضرت علی زبان مبارک سے بریان صادر نہیں ہوسکا۔اس کے فورا آپ کے ارشاد کی لٹیل کرو اور آپ ے دریافت کرلو۔ کہ آپ کیا بات حوالہ قلم فرمانا جاہتے ہیں۔ للذا مجتد صاحب کایہ قول (حضرت عمر ف استغمام کی صورت میں) الخ بالکل غلط ہے کیونکہ حضرت عمرات مرات متو تفین کے زمرہ میں تھے اور بہ قول (ماله اهمجو) مجوزین کتابت کا ب اور وہ مجی بطریق استفہام انکاری نہ استجباری اگر بر سبیل تنزل ہم سلیم کر لیں کہ یہ متو تغین کا قول ہے تو اس صورت میں بھی میہ استفہام انکاری ہوگا۔ جس سے ان کا مطلب م موگا کہ آنخضرت سلی اللہ است بدیان صادر نہیں ہو سکتا اور طاہر ارشاد ہماری سمجھ میں نہیں آی۔ال لے آپ سے پوچھ لینا چاہیے کہ اکتب لکم سے آپ کی مراد حقیقت کتابت ہے یا کھے اور اور ارشاد بوی کے نہ سجھنے کی وجہ ظاہر مقی۔ کیونکہ حضور اقدس بانی وای لکھ نہ سکتے تھے۔ اور یسال فرمایا اکتب لكم من تمهارے واسطے لكھ ووں اور نيز آپ سوائے قرآن كے اور چكھ نه لكھوايا كرتے ہے۔ لنذا متو تغين في بطریق استندام انکاری یا استندام مجی به سوال کیا تھا۔ اگر متو تغین کی مراد کلام بینبر اسلام کی طرف بدیان ک نبت کرنا ہوتی جیسا کہ مجمد صاحب کہ رہے ہیں۔ تو اہمجو بطور استفہام نہ کتے بلکہ مجر کتے اور اس کے بعد ابستفہو ہ نہ کتے۔ بلکہ وعوہ (چھوڑو اس کو) یا اعور ضو اعند (روگروانی کرواس سے) کہتے کو نکہ جو مخص بریان کتا ہو اس سے بوچھنا کیا۔ خلاصہ کلام سے کہ تمام روایات ولالت کرتی ہیں کہ اس صدیث کے تمام طریقوں میں استفہام ہے ملفوظ ہویا مقدر للقرا جمال یہجر یا ہجر آیا ہے وہاں ہمزہ استفہام مقدر سمجمنا چاہیے کیونکہ آنحضرت سی بالاتفاق بریان سے پاک ہیں۔

مولوی عائری نے هالمه اهجو استفهموه کا مطلب به لکھا ہے۔ اس کو (پنیمرفداکو) کیا ہوگیا ہوگیا ہوگیا ہوگیا ہوگیا ہوگیا ہوگیا ہوگی قوسی آیا (معاذ الله) بلیان کمہ رہا ہے اس سے صاف ظاہر ہے کہ مجمد صاحب نے استفهوه کا ترجہ مجمود توسی کیا ہے اس سے مجمد صاحب کی علمی لیافت پر کافی روشن پڑتی ہے۔ اور دیکھیے مجمتد صاحب نے ملی کا گلایا ہے۔ آپ فرماتے ہیں۔ اور تیمری میں ماحب نے کتاب الثفاء کی عبارت نقل کرنے میں کیا گل کھلایا ہے۔ آپ فرماتے ہیں۔ اور تیمری میں اهجو (فحش کمہ دینا) بھی وارد ہوا ہے آلا حول والا قوق الا بالله عالانکہ اصل کتاب میں یوں ہے ویروی اهجو جن کا مطلب به ہے کہ ایک روایت میں اَهْجُوّا ہے اور ایک روایت میں مصدر مرفوع ہے۔ اور دو مری میں مصدر می اُهْجُوّا ہے اور دو مری میں مصدر می اُهْجُوّا ہے اور ایک بروایت میں مصدر مرفوع ہے۔ اور دو مری میں مصدر می اُهْجُوّا ہے اور دو مری میں مصدر می اُهْجُوّا ہے اور ایک کا کلام بریان میں ہوں گے۔ اکلام صلی الله علیه وسلم هجو (کیا آپ کا کلام بریان ہوں ہوں گے۔ اکلام صلی الله علیه وسلم هجو (کیا آپ کا کلام بریان کے ہیں۔) مجمد صاحب نے اَهْجُوْ کو اَهْجَوَ (فحش کما) ماضی مطلق خیال کیا ہے۔ اور اس میں اپنا مقصود حاصل دیکھ کر ویروی المجرا کو نقل ہی شیں کیا۔

قال الخائری دونت الاحباب مطبوعہ تینے بهاور لکھنو من 550 سطر 3 کوث جمال الدین نے صدیت و فراس کو بول تقل کیا ہے۔ ور صحاح احادیث مروی گشتہ از سعید بن جبیر کہ ابن عباس گفت دوز "بخشبہ و چہ دوزے بود روز و امرغائب درال روز واقع شد آنگاہ ابن عباس چہ دوزے بود روز افرود آبد پس گفت روز "بخشبہ بود کہ چہ الل مجرات کہ اشک برمثال مروارید در رشتہ کشیدہ روئے او فرود آبد پس گفت روز "بخشبہ بود کہ مران بنیم رفدا اشداد یافت بایارال فرمود بیائید بنز و من تابرائے شا نوشتہ بنوسم روایت آئکہ فرمود درائے و گفتہ و بروانیے دوائے و شانہ بیارید تا برائے شا چیز بنو سم کہ بعد از من ہر کر کمراہ گر دید پس میان اصحاب اختلاف واقع شد بعض سمفتد دوات و صحیفہ سے باید آورد تا حضرت آنچہ خواہد بنو ۔سد بعض میان اصحاب اختلاف واقع شد بعض سمفتد دوات و صحیفہ سے باید آورد تا حضرت آنچہ خواہد بنو ۔سد بعض گفتہ منائب نیست کہ آنخضرت رادریں محل مشغول بکابت واریم وہا یکہ میر منازعت کرد موددرآل فائد در نظر حضرت آواز بلند برداشتہ چنانچہ آنرور بینگ آبد و ترک آن امرکرہ

بخرای ص 550 کی سطر 13 میں یوں ارقام فرماتے ہیں۔ ملاحظہ ہو۔ عمر خطاب گفت وجع پر بغیر غلبہ کردہ وقرآن درمیان ماہست حسبناکتاب اللہ پس خصومت و منازعت نمودند وچوں لغو د اختلاف از مد کز رانید ند فرمود برخیزید از پیش من که سز دار نیست منازعت بنز دیج پینیبریا آنکه فرمود نزد من در وصیت (الخ)

اس کے بعد وہی تین وصیتیں بیان کی ہیں۔ جو ہیں پہلے آپ کو سنا چکا ہوں۔ اس عبارت ہی محدث ممدوح نے صاف اقرار کیاہ کہ ورال خانہ در نظر حضرت آواز بلند برداشتد چنانچہ آل مرورہ نگر آلد و ترک آل امر کرد بہ کہ بیٹیم کے مکان کے اندر آنخضرت کے سائے جھڑے ہیں آوازیں انہوں لے بلند کیں۔ جس سے بیٹیم کو تکلیف ہوئی اور بٹنگ آگر وصیت لکھنا ترک کیا۔ بیٹیبنا اس قدر شادوں کے بیا ان میں حضرت عمر کے موجود ہونے سے کوئی انکار خیس کرسکتا۔ پس اب فرمائے کہ لا نوفعوا اس میں حضرت عمر کے موجود ہونے سے کوئی انکار خیس کرسکتا۔ پس اب فرمائے کہ لا نوفعوا اصوات کم فوق صوت النبی النی (جس کاکہ پہلے ذکر کرچکا ہوں۔) عظم قرآنی کی مخالفت کے مرتکب یو لوگ ہوئے ہیں او پھر اس آئیت کے عظم ان تحبط اعالکم وانتم لا لوگ ہوئے ہیں۔ یا نہیں اگر مرتکب ہوئے ہیں تو پھر اس آئیت کے عظم ان تحبط اعالکم وانتم لا جارہا ہے کمال باتی رہیں۔ نص ان تحبط اعما لکم نے توان کاکیا کرایا سب اکارت کر دیا۔ اور بنی عارہا ہے کمال باتی رہیں۔ نص ان تحبط اعما لکم نے توان کاکیا کرایا سب اکارت کر دیا۔ اور بنی آئیت سے جمع کی شرور افسوس ہے۔

اس میں ایک اور بات قائل ذکر ہے کہ محدث مروح نے بھی اعتراف کیا ہے کہ آنرور بھنگ آمد و ترک آل کرد لیعنی ان لوگول کے اس وقت حضور پیغیر فدا میں جنگ و جدل کرنے اور عام لوگول کی طرح شور مچانے خصومت فساد اور منازعت تک ٹویت پینچنے کی وجہ سے خوو پیغیر تک کوجب لفظ بلان کہنے کی گستاخی کے وہ لوگ مرتکب ہوئے تو پیغیر فدا ان کے ناروا رویہ سے تنگ آکر ترک وجب بلالان کہنے کی گستاخی کے وہ لوگ مرتکب ہوئے تو پیغیر فدا ان کے ناروا رویہ سے تنگ آکر ترک وجب پرجور ہو گئے۔ اس لیے تحریری وصیت تو نہ کر سکے -رہا زبائی سومنقولہ میچی تین زبائی وصیتوں میں سے تیمری وصیت جو پیغیر نے کی ہے۔ دبا زبائی سومنقولہ میچی تین زبائی وصیت کے وقت اگر ان تیمری وصیت بو تینی اس و انہاں کہ کہ کر وال نیاس طرح شور و شرکر کے گئر ہو تا وہ تحریر سے مجبور ہو کر حضرت نے وہی وصیت زبائی کدی پررکول نیاس طرح شور و شرکر کے گئر ہو تا وہ تو تا وہ نیا میا خوات کو مشتبہ کر دیا گیا ہے کہی نا قائل مرک اوگول پر امر حق اور کیا جائے کہ راوی کو تیمری وصیت ہی تا قائل و ثیق بات ہے کہ اس قدر جمع میں سے کوئی صاحب ہا دیے گر بتائے کون ایک گروہ تو حضرت میں بھول میل موجود تھا۔ اور کما جائے کہ راوی کو تیمری وصیت ہی بھول می ان کی طرف تھا ہی دو مرے جو تیغیر کی طرف تھا ان کو سنتا کون کیکہ تھری کی وصیت سے متعلق بھی ان کی میں ان کی تھی اور عمدا ایسا کرنے کے بعد لوگول پر ظاہر نہ ہونے دی اب وحوکا دینے کے لیے کہ دیا ایک نہ نی تھی اور عمدا ایسا کرنے کے لیے کہ دیا ایک نہ نہ نی تکی تھی اور عمدا ایسا کرنے کے بعد لوگول پر ظاہر نہ ہونے دی اب وحوکا دینے کے لیے کہ دیا

سے ہے۔ کہ یہ واقعہ پنجشنہ کو ہوا اور وفات ہوئی حضرت کی دوشنہ کو اگر یہ وصیت مردری ہوتی تو کیاں نہ ان درمیانی تین روز میں دویا ہ حضرت نے چرکی موقعہ پر یہ وصیت کردی ہوتی ہیں یاد رکھو کہ اس کا بی جواب ہے کہ وہ تیسری وصیت کی تھی جس کو نسیان راوی کہ کر محد ثین نے تال دیا ہے بیشہ اس کا بی جواب ہے کہ وہ تیسری وصیت میں تھی جس کو نسیان راوی کہ کر محد ثین نے تال دیا ہے بیشہ اس قدم کے دھوکے یہ لوگ دیا کرتے ہیں الهیت نبوت اور رسالت پر کوئی اعتراض ہو جائے تو ہو گران کی فرساختہ ظافت پر کوئی حرف نہ آنے پائے۔ و سیعلم الذین ظلموا ای منقلب ینقلبون (مواحد دند میں دے)

اقول رومت الاحباب كتب معتبره مين سے نهيں چانچه صاحب تحفه اشاعشريہ يوں لكينة بين كيد بخله وكم الكه تحيد از اليال مخادعہ ميكتند بامؤرخال المستقد پي كتاب در تاريخ تاليف ميكتند داز اخبار و تقسم يزے موہوم آنكه مولف اين كتاب خارج از الجسنت است ورج في نمايندو لكن درسير خلفاء احوال محلبة و كار بات اليال چيزے قبل از قرب خود داخل ميكتند و يعف مورخين الل سنت از ال كتاب بكمال آنكه مؤلف آل المستقت است نقل نمايند و مغلط اختد ورفة رفة موجب ضلالت ناظران بے تحقيق شودو و تعلق اين كيد بهم بر مراد اليال نشسته عالے را از مصنفين توارخ در ورطه غلط انداخت اند و ناظران آل توارخ را در بعض عالم الدين محدث صاحب رومته الاحباب نيز در بعض عالم اذي قرارخ را در تعد ورقصه قرارخ نقل آورده خصوصاً در قصد بيعت الى بكر صديق بن تاتي وتوقف حضرت امير كرم الله وجد در قصد قبيل توارخ نقل آورده خصوصاً در قصد بيعت الى بكر صديق بن تا وتوقف حضرت امير كرم الله وجد در قصد مخرت عثان رضى الله تعالى عنه (خنه الاعزيه م)

رافنیوں کا فریب نمبرا5 یہ ہے کہ ان کا ایک گروہ الجسنّت کے مؤر فول کو وحوکا وہ ا ہی وہ کا ایک بات درج نہیں کرتے ہیں اور اس میں اخبار وقصص میں سے کوئی ایسی بات درج نہیں کرتے ہیں ایسی کرنے دی گروں کہ کتاب کا مؤلف الجسنّت سے خارج ہے گر خلفاء کے سوارج اور صحابہ کے طالت اور ان کے محاربات میں اپنے نہ بہب کی تھوڑی می بات درج کر دیتے ہیں الجسنّت کے بعض مور خین اس کم ان پر کہ اس کا مولف ایلسنّت میں سے ہاس کتاب میں نقل کرتے ہیں۔ اور غلطی میں پڑ جاتے ہیں اور نام کرن فیر محقق کی گرائی کا باعث ہوتے ہیں۔ وہ اس فریب میں کامیاب ہو جاتے ہیں اور اس طرح کی افران فیر محقق ن کے گرائی کا باعث ہوتے ہیں۔ وہ اس فریب میں کامیاب ہو جاتے ہیں اور اس طرح کی شامول نے مصنفین کے گرائی کے محقوم بھن اور حضوت اور دھرت اور دھرت الادباب نے بھی بعض بعض بھن کی میں باخشوص حضرت ابو بکر صدیق کی بیعت اور دھرت امیر کرم اللہ وجہ کے وقف اور دھرت میں باخشوص حضرت ابو بکر صدیق کی بیعت اور دھرت امیر کرم اللہ وجہ کے وقف اور دھرت میں بھن رسی اللہ تعلق عند کے قبل میں بالکل ورست ہے۔ چنانچ عبارت متقولہ مصنف میں الفاظ جو بھی صاحب تحقد نے قربایا ہے بالکل ورست ہے۔ چنانچ عبارت متقولہ مصنف میں الفاظ جو بھی صاحب تحقد نے قربایا ہے بالکل ورست ہے۔ چنانچ عبارت متقولہ مصنف میں الفاظ

(چنانچہ آل سرور بتنگ آمد و ترک آل امرکرد-) ای طرح کی توارخ سے نقل کئے گئے ہیں۔ رفع موت کی بابت ہم پہلے لکھ چکے ہیں۔ آیت قرآنی ہیں یہ ہے کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی آواز پر اپنی آوازوں کو بائد نہ کرو۔ اور یہ نہیں کہ آپ کے حضور ہیں ہو مناظرات و بائد نہ کرو۔ اور یہ نہیں کہ آپ کے حضور ہیں ہو مناظرات و مباحث صحاب کرام ہیں ہوئے تھے۔ وہ حرام تھریں گے۔ حالا نکہ آپ ان کو جائز رکھتے تھے۔ مجتم صاحب نے تیمری وصیت کے بارے ہیں کلام کو بے فاکم طوالت دی ہے اس بیچارے کو یہ بھی معلوم نہیں دو اور کی کون سے ہیں۔ اگر فرمنا داوی بھول گیا تھا۔ تو بھی داوی کون سے ہیں۔ اگر فرمنا داوی بھول گیا تھا۔ تو بھی داوی کون سے ہیں۔ اگر فرمنا داوی بھول گیا تھا۔ تو بھی سے کوئی صاحب بتا ویتے مجتم صاحب کے پاس اس بات کاکوئی شہوت نہیں کہ آخضرت صلی اللہ علیہ والہ وسلم حضرت علی کی خلافت بلافضل کو حوالہ تھم فرمانے گئے تھے۔ اور نہ اس امرکاکوئی شہوت ہیں سینوں تھیری وصیت حضرت علی کی خلافت بلافصل کے متعلق تھی۔ مجتمد صاحب نے یہ سادی عبار تیں سینوں تیمری وصیت حضرت علی کی خلافت بلافصل کے متعلق تھی۔ مجتمد صاحب نے یہ سادی عبار تیں سینوں کہ اس سے اس واسطے لفتل کی خلافت بلافصل کے متعلق تھی۔ مجتمد صاحب نے یہ سادی عبار تیں سینوں کے اس واسطے لفتل کی خلافت بلافصل کے متعلق تھی۔ محضرت عمر نے دسول اللہ مائی ہی خلافت بلافیل کا ذکر تک نہیں۔

جمتد لاہوری کا بید کمنا کہ اہلسنت ظافت ٹلاٹ کے جوت کی دھن میں اہیت ، نبوت کی بھی پوا نہیں کرتے ۔ بالکل غلط ہے ظافت ٹلاٹ کے حق ہونے کا جبوت او کلام اللی سے ملتا ہے۔ جبیبا کہ آبندہ فی کور ہوگا۔ ہاں شیعہ خلافت بلا فضل کی دھن میں اہیت و نبوت کا ڈرا بھی خیال نہیں کرتے چنانچہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ شیعہ نے اپنے اتمہ کی شان میں نمایت غلو سے کام لیا ہے حتی کہ حضرت علی اور دیگر اتمہ کو سوائے حضور خاتم الانبیاء طالبی کے سب نبیوں سے افسنل جانتے ہیں اور پج پوچھے تو ختم نبوت کے بھی منکر ہیں اس مقام پر اہیت میں بھی بطور مشتے نمونہ از خروارال کا ایک عقیدہ بیان کیا جاتا ہے وہ یہ کہ حسب عقیدہ شیعہ اللہ تعالی کو بداء ہو جایا کرتا ہے۔ بداء کے معنی یہ ہیں۔ کہ خدا تعالی کمی کام کا ارادہ یا کم فرائے اور اس کے بعد معلوم کرے کہ یہ امر خلاف مصلحت ہو اور مصلحت کی دو سمرے امر بیل کے امر اول کو ترک فرائے ہو خلاف مصلحت تھا اور دو سمرے امر موافق مصلحت کا از سمر نو تھم فرائے جس کا حاصل ہے ہوا کہ علم اللی میں تغیرہ تبدل ہوتا رہتا ہے۔ اور غدا تعالی عواقب امور نے بار مادہ بارہ موافق مصلحت کا از سمر نو تھم نے امر اللہ علم اللہ علی بداء کے معنی یوں بیان کئے ہیں۔ سے جابل ہے۔ رسالہ اعلام الدے فی تحقیق البداء میں بداء کے معنی یوں بیان کئے ہیں۔

يقال بداله اذا ظهرله راى مخالف للراى الاول وهو الذى حققه الشيخ في العدة وابو الفتح الكراجكي في كنز الفوائد والذي حققه المرتضى في الذريعة ويشعربه كلام الطبرسي هو ان معنى قولنا بداله تعالى اله ظهر له من الا مر مالم يكن ظاهرا- (تحفه اثنا عشويه ص ١٣٥)



جب کی مخص کو اپنی پہلی رائے کے مخالف رائے ظاہر ہو۔ تو اس وقت کما کرتے ہیں بدا کے بین معنی شخ نے عدة الاصول میں اور ابوالفنح کرا جگی نے کنز الفوائد میں شخفیق کیے ہیں اور معنی مرتنی نے کنز الفوائد میں شخفیق کیے ہیں اور معنی مرتنی نے کن دراجہ میں شخفیق کیے ہیں جو کلام طوی سے بھی سمجھ آتے ہیں وہ یہ ہیں کہ بدلہ تعالی کے معنی سہر کرایڈ تعالی کے معنی سے بہر کہ اللہ تعالی کو ایک امر ظاہر ہو جائے۔ جو پہلے معلوم نہیں تھا۔ (انتی)

ناظرين كى آگائى كے ليے بداء كے معتلق چند روائيس اصول كافى سے نقل كى جاتى ہيں۔
محمد بن يحيى عن احمد بن محمد بن عيسى عن الجمال عن ابى اسحق ثعلبة
عن زراة بن اعين عن احد هما قال ما غبدالله بشئى مثل البداء وفى رواية ابن ابى
عمير عن بشام بن سالم ساعظم الله بمثل البداء (امول كافى كآب الوديد - باب البداء م ١٨٠)

(ای فرف اساد) زرارة بن اعین کابیان ہے کہ امام محمد باقر و امام جعفر صادق میں ہے ایک نے فرایا کہ کی چیز کے ساتھ اور ابن افی عمیر نے جو فرایا کہ کی چیز کے ساتھ اور ابن افی عمیر نے جو بھام بن سالم سے روایت کی ہے اس میں یوں ہے کہ کسی چیز کے ساتھ اللہ کی ایسی عباوت نہیں کی گئی۔ جیسا کہ بداء کے ساتھ اللہ کی ایسی عباوت نہیں کی گئی۔ جیسا کہ بداء کے ساتھ اللہ کی ایسی تعظیم نہیں کی گئی جیسا کہ بداء کے ساتھ اللہ کی ایسی تعظیم نہیں کی گئی جیسا کہ بداء کے ساتھ اللہ کی ایسی تعظیم نہیں کی گئی جیسا کہ بداء کے ساتھ۔

(٢) على بن ابراهيم عن ابيه عن الريان بن الصلت قال سمعت الرضا يقول مابعث الله نبيا قط الا بتحريم الخمروان يقر لله بالبداء (اصل كان- باب البداء ص ٨٦)

ریان بن الصلت کابیان ہے کہ میں نے امام رضا کو سنا کہ فرمائے تھے کہ اللہ نے مجمعی کوئی پیفیمر نیس ریان بن مجیجا مگر تحریم خمر اور اقرار بالبداء کے ساتھ۔

(٣) بعض اصحابنا عن ابن جمهور عن ابيه عن ابن محبوب عن ابن رئاب عن عبدالرحمن بن الحجاج وعن محمد بن سنان عن المفضل بن عمر جميعا عن ابی عبدالله علیه السلام قال ببعت عبدالمطلب امة وحده علیه بها الملوک وسیماء الا نبیاء و ذلک انه اول من قال بالبداء (اصل کان ۱۲۸۳)

(محذف اساد) امام جعفر صادق نے فرمایا کہ عبد المطلب تنما ایک امت اٹھایا جائے گا۔ جس پر برشاہوں کا ساجلال اور پنجمبروں کے سے نشان ہوں کے اور اس کی وجہ بیہ ہے کہ وہ پہلے مختص ہیں جو براء کے قائل ہوئے انتھی ملا خلیل قز دینی نے شانی شرح اصول کائی ہیں اس مقام پریوں لکھا ہے۔ چوں براء دراصل لغت بمعنی پشیمانی است استعارہ لفظ بداء ور فعل النی از پیش خود خالی از جرائے نیست پس براء دراصل لغت بمعنی پشیمانی است استعارہ نفظ بداء ور فعل النی از پیش خود خالی از جرائے نیست پس براء دراصل لغت بمعنی پشیمانی استعارہ نہ کر دہ بود چوں آدمی در دفت اضطراب و کمال خوف معذور سے باشد ور

جرات در گفتگو عبدالمطلب این جرات کرده و بعد از دمتمرشد مانند مضمونے وی شده باشد و بیان می بداء شد درباب بست چمارم کتبا التوحید و ازین تقریر ظاہر شد که منافانے نمیست میال این حدیث و احادیث باب فدکور که دلالت میکند برآنکہ بیج بنیبرے مبعوث نشده مکربا قرار به بداء-

ترجہ: چونکہ اصل لفت میں بداء کے معنی پشیانی کے ہیں اس کیے خدا کے فعل میں لفظ بداہ کا استعارہ اپنی طرف ہے جرات سے خالی نہیں لنذا عبدالمطلب ہے پہلے کی نے یہ استعارہ نہ کیا تھا چونکہ انسان اضطراب اور کمال خوف کے وقت جرات کرنے میں معذور ہوتا ہے اس لیے عبدالمطلب نے گفتگو میں یہ جرات کی اوراس کے بعد یہ جاری ہوگیا جیسا کہ وہ مضمون جووجی ہوا ہو بداء کے معنی کتاب التودید باب عد میں گزر چکے ہیں اس تقریر سے ظاہر ہوا کہ اس حدیث اور باب ندکور کی حدیثوں میں (جو دلالت باب کرتی ہیں۔ کہ کوئی تین بیس ہیں گیا۔ گرا قرار بالبداء کے ساتھ) کوئی منافات و مخالفت نہیں۔ استی ایک حدیث میں اصنی بن نباتہ حضرت امیرالمؤمنین سے یوں سوال کرتا ہے۔

ثم ما يكون بعد ذلك فقال ثم يفعل الله ما يشآء فان له بداء ات و ارادات و غايات و نها يات (تاب الحِرباب في اخير س ٢١١)

ترجمہ: پھراس (لیعنی جیرت و غیبت) کے بعد کیا ہوگا حصرت امیر نے فرمایا کہ پھر اللہ تعالی کرے گا جو چاہے گا۔ کیونکہ اس کے لیے بہت سے بداء اور اراوے او مصلحتیں اور عائیتیں ہیں۔(انتی) شیعہ میں سے بعضے اہل حق کی وارد گیر کے وقت تنگ آکر اس عقیدے سے انکار کر جاتے ہیں للذا اس کے ثبوت میں اصول کافی کی روایت ٹیش کی جاتی ہے جس کے الفاظ میہ ہیں۔

على بن محمد عن اسحق بن محمد عن ابى هاشم الجعفرى قال كنت عند ابى الحسن عليه السلام بعد مامضى ابنه ابو جعفر وانى لا فكر فى نفسى اريدان اقول كا نما اعنى اباجعفر وابا محمد فى هذا الوقت كابى الحسن موسى و اسمعيل بن جعفر بن محمد عليم السلام وان قصتهما كقصتها اذكان ابو محمد المرجا بعد ابى جعفر فاقبل على ابو الحسن عليه السلام قبل ان انطق فقال نعم يابا هاشم بد الله فى ابى محمد بعد ابى جعفر مالم يكن يعرف له كما بد الله فى موسى بعه مضى اسمعيل ماكشف به عن حاله وهو كماحدثتك نفسك وان كره المبطلون وابو محمد ابنى الخلف من بعدى عنده علم ما يحتاج اليه و معه الة الا مامة (اصول كافى كتاب)

كماب الجند ياب لاشاره والنص على ابي محمد مليما السلام- م ٢٥٠٠

قالت الزيدية ومما تكذب به دعوى الا مامية انهم زعموا ان جعفر بن محمد عليه السلام نص لم على اسمعيل واشاراليه في حيوته ثم ان اسماعيل مات في حيوته فقال مابدالله في شئى كما بداله في اسماعيل ابنى فان كان الخبرا لا ثنى عشر صحيحا فكان لا اقل من ان يعرفه جعفر بن محمد عليه السلام يعرف خواص شيعته لئلا يغلط هو وهم هذا التغليظ وقلنا لم لم قلتم ان جعفر بن محمد عليه السلام نص على اسماعيل بالا مامة ومادلك الخبر ومن رواه ومن تلقاء بالقبول فلم يجدوا الى ذلك سبيلا وانماهة ولدها قوم قالوا بامامة اسمعيل ليس لها أصل (كال الدين و المامة اسمعيل ليس لها أصل (كال الدين و المامة المعيل ليس الها المين و المامة المين المين المين و المين المي

ترجمہ: ذیدیہ کتے ہیں کہ امامیہ کے اس وعوے (کہ امام بارہ ہیں) تکذیب یوں ہوتی ہے کہ المریکتے ہیں کہ امام جعفر صادق نے اساعیل کی امامت پر نص کی اور اپنی زندگی ہیں اس کی طرف اشارہ کیا کی کہ المام جعفر صادق نے اساعیل کی امامت پر نص کی اور اپنی زندگی ہیں اس کی طرف اشارہ کیا کی کہ اساعیل نے میں ایسا بداء واقع کی زندگی میں وفات پائی پس آپ نے فرمایا اللہ تعالی کو کسی شے میں ایسا بداء واقع میں میں میں وقت ہوا ہے اگر حدیث ائمہ اثنا عشر صحیح ہوتی تو کم

ے کم امام جعفر صادق اور ان کے خواص شیعہ کوم معلوم ہوتی تاکہ آپ اور وہ اس غلطی میں نہ پڑتے ہم (امامیہ) جواب میں زیدیہ سے کہتے ہیں کہ تم کیوں قائل ہو۔ کہ امام جعفر صادق علیہ اسلام نے اسائیل کی امامت پر نص کی۔ وہ حدیث کیسی ہے اس کے راوی کون ہیں۔ اور کس نے اسے قبول کیا ہی وہ نہیں ہتا گئے۔ اساعیل کی امامت کو فرقہ اساعیلیہ نے گھر لیا ہے صالا تکہ اس کی کوئی اصل نہیں۔ (انتی)

امامیہ کا جواب قابل اطمینان نہیں۔ روایت کافی جوہم نے ابھی نقل کی ہے زیریہ کی ولیل کو بہت کچھ سمارا دیتی نظر آتی ہے۔ ابن بابویہ نے امام جعفر صادق علیہ السلام کے قول (هابدالله فی شنی) کی نبیت بوں تکھا ہے

فاما قوله مابدالله في شئى كما بداله في اسماعيل ابنى فانه يقول ماظهرالله امركما ظهر له في اسماعيل ابنى اذا اختر مه في حيوتي ليعلم بذلك انه ليس بامام

لینی امام جعفرصادق کے قول کے معنی سے ہیں کہ اللہ تعالی کوکوئی امر ظاہر نہیں ہوا جیسا کہ اے میرے بیٹے اساعیل کے بارے میں ظاہر ہوا کیونکہ خدا نے اسے میری زندگی میں موت دی تاکہ اس سے میرے بیٹے اساعیل کے بارے میں ظاہر ہوا کیونکہ خدا نے اسے میری زندگی میں موت دی تاکہ اس سے میرے معلوم ہو جائے کہ وہ میرے بعد امام نہیں۔(انتی)

الیی مہمل اور خلاف تبادر توجیہ سے پایا جاتا ہے کہ ابن بابویہ جیسے شیعی اس مسلے میں عاجز ہیں۔ سید والدار علی مجتمد لکھنو کی نے اساس الاصول میں یوں لکھا ہے۔

اما الاعتقادات التى ليست من تلك المثابة كبعض خصوصيات الرجعة وذهاب بعض الايات عن كتاب الله تعالى وامثال ذلك فالمخطى فيه معذور فانا بعد الرجوع الى وحد اننا لانجد فرقا بين المسائل الاجتهادية الفروعية وبين تلك المسائل في عدم ظهور الد لا تل القاطعة فيما ولذا ترى جماكثيرا من اجلائنا علمائنا مختلفين فيها منها جواز السهوعلى الني صلى الله عليه وسلم الذي قال به ابن بابويه واحاله الباقون وهكذا ذكر ذهاب بعض الايات عن الكتاب وانكر القول بالبداء المحقق الطوسي وانكر بعض خصوصيات الرجعة الشهيد الثالث السيد السند مولانا نور الله الشستر و امثال ذلك كثير-

ترجمہ: وہ مسائل اعتقادیہ جو اس پلہ کے نہیں ہیں۔ جیسے رجعت کے بعض خاص مسائل اور نقصان آیات قرآئی وغیرہ ان میں خطا کرنے والا معذور ہے کیونکہ جب ہم اپنے و جدان کی طرف رجونا کرتے ہیں۔ تو مسائل فرعیہ اجتمادیہ میں اور ان مسائل اعتقادیہ میں دلائل تطعیہ نہ ہونے کے اعتبارے ئ فرق نہیں پاتے از انجملہ نبی سی کھیے کے سہو کا جائز ہونا ہے جس کا ابن بابویہ قائل ہوا ہے اور باتی تمام وں روں اور ہوا ہے۔ اور اس طرح کتاب اللہ میں سے بعض آیات کا لکانا ہے اور بداء کے قائل ہونے ہے محقق طوی نے انکار کیاہے۔ اور نیز بعض خاص مسائل رجعت سے شہید الله سد السند مرانا نوراللہ شتری نے انکار کمیا ہے اور اس فتم کے اور بھی بہت سے مسائل ہیں-(انتی)

اس سے ظاہر ہے کہ صرف محقق طوی بدا کا منکر ہے اور سوا اس کے اور تمام علاء اس یر متنق بن صاحب سبيل السلام الى معالم الاسلام كه عده و اعلى علاء الناعشرية سے بين- وه تقريب شرح مديث من زرات بير - كه كلام الشيخ ابي الفتح الكرا جكي في كنز الفوائد يدل على اجماع الامامية على البداء وانه من خصائصم وانكره سائر الفرق وكلام العلامة الحلى في النهاية والتهذيب وكشف الحق يدل على الاصرار في الانكار

لین کلام یفنخ ابد الفنخ کرا جگی کا کنزالفوائد میں دلالت کرتا ہے اجماع امامیہ بر اوپر مسئلہ بداء کے ادر البتہ تحقیق وی بداء خصائص ان کے سے ہے اور انکار کیا اس کاباتی فرقوں نے اور کلام علامہ علی کا نمايد اور ترزيب اور كشف الحق ميس ولالت كرتاب اصرار انكار ميس- (انتي علم الغرائب معنف زبدة المتعمن مودي جانگيرخال ڪئوه آيادي من ۵۲)

شیعہ میں سے بعض بداء کے جواز پر آیت یمحوالله مایشاء ویثبت وعندہ ام الکتاب ت استدلال كرتے ہيں۔ مكر اس آيت ميں محود اثبات سے صحائف اعمال يا صحف ملائكہ ميں محود اثبات مراد ہے نہ کہ علم اللی میں بعض اے ننخ کے ساتھ ملتباس کرتے ہیں۔ حالانکہ ننخ میں مصالح مکلفین کی تریل ہوتی ہے نہ کہ خدا تعالی کے لیے ایک مصلحت غیرظاہرہ کا ظاہر ہونا۔ اس طرح کی تاویلات باطلبہ ت كره فاكره نيس علامه طرى في مجمع البيان من بل بدائهم ما كانوا يخفون من قبل الاية سوره انعام کے تحت میں کھلے لفظول میں بول لکھ دیا ہے-

بداید وابدوا اذا ظهر و فلان ذو بدوات اذا بداله الرای بعد الرای وبدالی فی هذا الا مربدا والبدالا يجوز على الله سبحانه لا نه العالم بجميع المعلومات لم يزل ولا

يؤال الجمع البيان مطبوعه ابران مبلد اول ص ٣٣١)

کابر دو مری رائے طاہر ہوتو اس وقت کما کرتے ہیں کہ فلاں ذوبدوات اور ایوں بھی اس کا استعال ہو ؟ مجیوان ال الم براء الى فى حذا الا مربداء اور بداء الله تعالى بر جائز نهيس كيونكه وه تمام معلومات كاعالم ب عالم رباب الازرم كالدوائتي المارے بیان بالاسے ظاہرہے کہ بداء جس کے معنی ایک رائے کے بعد ووسری مسلمت إراب کا ظاہر ہوناہے خاص شیعہ امامیہ کامجمع علیہ عقیدہ ہے چونکہ اس سے علم باری تعالی میں نقص ادرای ا عواقب امور سے جاتل ہونا لازم آتا ہے اس لیے محتق طوی اور علامہ طبری نے اس سے صاف اند کردیا ہے۔ اور علامہ موصوف نے اس کے اللہ تعالی پر ناجائز ہونے کیوجہ میں بیان فرما دی ہے یہ مقیدا ج سراسر باطل ہے بعض وقت اس سے تاجاز پر فائدہ اٹھانے کی کوش کی جاتی ہے چنانچہ علامہ او منصور عبدالقاہر بغدادی (متوفی ۲۹ مرے کتاب الفرق بین الفرق من ۳۶) میں مختار کاذکر کرتے ہوئے ج م بھے لکھا ہے اس کا ما حصل یہ ہے کہ جب محار بن الی عبید ثقفی نے عبداللہ بن زیاد اور قاتلین انم حسین کو قمل کر دیا۔ نو اس نے کہانت کا دعوی کیا بعد ازاں نبوت کابھی دعوی کردیا۔ مختار نہ کور بدام کا قائل تھا جس کا سبب سیہ ہوا کہ ابر هیم بن اشتر کو جب سیہ خبر پنجی کہ مخار نے کمانت و نزول وحی کا دعوے کیا ہ تو اس کی اعانت چھوڑ دی ۔ اور بلاد جزیرہ کا حاکم بن بیضامعیب بن زبیرنے جب معلوم کیا۔ کہ ابراہیم مخار کو مدونہ وے گا۔ تو اس نے مخار کو مغلوب کرنے کا ارادہ کیا اور سادات کوفہ اس کے ساتھ ہوگئے۔ بب مخار کو بیہ خبر ملی تو اس نے احمد بن شمیط کو تین ہزار کی جمعیت کے ساتھ مععب کے مقابلہ کے لیے ہما۔ اوراس سے سمدیا کہ مجھ پر وحی نازل ہوئی ہے۔ کہ ہمیں فتح ہوگی۔ دونوں لفکروں کا مدائن میں مقابلہ ہوا۔ مخار کے نظر کو فکست ہوئی اور ابن شمیط اور اکثر قواد سیاہ ممل ہوئے۔جوہاتی رہے انہوں نے مخارے کما ک تو نے تو ہم سے وسمن پر فتح پانے کی پیشین کوئی کی تھی۔ مخار نے جواب دیا۔ ان الله تعالی کان الله وعدفی ذلک لکنه بداله (بیشک الله تعالی نے جھ سے فتح کاوعدہ کیا تھا کراے براء واقع ہوگیا) اور براء راس آے ہے استدلال کیا یمحو الله هایشاء ویثبت انتی تعجب نہیں کہ شیعہ امامیہ نے ظافت ا فعنل ہی کی حمایت کے لیے بیر عقیدہ وضع کر لیا ہو۔ کیونکہ وہ ای خلافت بلا فصل کے انکار کے جب مواب كرام مهاجرين و انصار كو مرتد قرار دييت بين- محرجب ان پريه اعتراض كيا جائے- كه الله تعالى في الله پاک کلام میں مهاجرین و انصار کو بیشتی مولے کی خردی ہے۔ تو پھروہ مرتز کیے ہو سکتے ہیں۔ اس کاجواب ا مسلک امامید یمی ہوگا کہ خدا تعالی کو محابہ کے یارے میں بداء ہوگیا لیعنی بے شک پہلے تو ارشاد یاری تعالی ہو نئی تھا۔ یمراس کے بعد اللہ تعالی کو بیہ خلاف مصلحت معلوم ہوا اس کیے ان کو نعود یاللہ من دلک دوز فی

تال الخارى شرح ابن الى الحديد جلد اول ص 73 سطرة بين مرقوم ہے-عن ابن عباس قال لما احتضر رسول الله وفي البيت رجال منسم عمر بن المعطاب ال النبي صلى الله عليه وسلم هلم اكتب لكم كتابا لا تضلون بعده فقال عمر ان رسول الله قد غلب عليه الوجع وعند كم القرآن حسبنا كتاب الله (الق التى مند) ترجمه: وبى ہے جو بيان ہوچكا ہے۔ اس مس معرت عمركا نام نامى موجود ہے جس سے ان كاكوئى مرد الكار نبیس كرسكا۔ (موافظ حند ص ٥٩)

فقد شرحه عز الدين عبدالحميد بن هبة الله المدائني الكاتب الشاعر الشيعي في عشرين مجلدا و توفي سنة 655 خمس و خمسين وستمائة

ترجمہ: شرح لکھی ہے نبج البلاغہ کی عزالدین عبدالحمید بن عمبتہ الله مدائنی کاتب شاعر شیعی نے میں جلدوں میں اور اس نے 655 میں وفات پائی۔ استھی صاحب تحفد اٹناعشریہ لکھتے ہیں۔ وابن الى الحديد ثار ن ن البلاغد كد تشيع رابا عتزال جمع نموده (تخفد اثناعشريه 41) نواب محن الملك مولوي سيد محمد مهدي علی خان صاحب اچی مشہور تھنیف آیات بینات (دو سری جلد ص ۸۰) میں لکھتے ہیں۔ اس فتم کے لوگوں یل این ابی الحدید معتزلی بھی ہے کہ وہ اعتزل کے ساتھ تشیع کا بھی جامع تھا۔ اس نے این ملقی وزیر معهم بالله كے خوش كرنے اور اس كے كتب خانے كے واسطے شرح نبج البلاغه لكھى اور اس ميں كمنام كاول اور غير محقق مصنفول كى تصنيفات سے وہ چھوٹى اور نامعترروائيتى چن چن كر جع كيں۔ جس سے محلبہ کرام مطعول اورمورد ملام ٹھمریں اور شیعوں کے اعتراضات اور عقاید کو تقویت ہو ابن ملقمی اس کا ما ملی اور دوست تھا اس نے اس کتاب کے صلہ میں ایک لاکھ دینار اور بہت بڑا خلعت فاخرہ این ابی المديد كوديا- اورب ابن ملقى معمولي شيعه نه تها بلكه ايبا عالى شيعه اور وشمن سينول كا تهاكه اس في صرف نائی تصب کی وجہ سے عباسیہ کی خلافت کو عارت کیا- اور ہلاکو کوپوشیدہ وعوت دیکر بغداد پر حملہ کرنے کے ساتی بلایا اور خلیفہ کو دھوکا دے کراس کے پاس لے گیا اور اسے مع علاء اور امراء کے شہید کرادیا-ائن ابی الحدید کی کتاب اگرچه نمایت جامع اور عالمانه اور خود این ابی الحدید نمایت قابل اور بر^{وا} الب تما مرفر میں معلی علی اور متعقب شیعہ نے بھی اپنے ذہب کے لیے اس قدر مواد ار رسال منافع کا حامی تعلیہ کسی عالی اور متعقب شیعہ نے بھی اپنے ذہب کے لیے اس قدر مواد ر معرب کی اس کے لیے اس کے اس کے لیے اور معرب میں اور معرب کی دو کتاب ہے کہ اس کے لیے لئے اس کے لیے لئے اس کے اس کے لیے لئے اس کے اس کے اس کے لیے لئے اور جمع کردیا ای کی دو کتاب ہے کہ اس کے لیے لئا ا

روایتوں کو ہمارے مقابلے میں پیش کرتے ہیں شروع زمانے سے اب تک جس کتاب کو شیعوں کی دیکھیے اکثر مطاعن صحابہ میں ابن ابی الحدید ہی کی کتاب کا حوالہ ہوگا۔ اور اس کی جھوٹی اور غلط روایتیں ہمارے مقابلے میں یائی جائیں گے۔ (انتی ہلند)

قال الخائري الفاروق مطبوعه مفيد عام آگرہ حصہ اول صفحہ 60 سطر 14 میں منس العلماء مولوی مو ثیل تعمل الحائری الفاروق مطبوعه مفید عام آگرہ حصہ اول صفحہ 60 سطر 14 میں تاری کامشہور واقعہ قرطاس کا واقعہ ہے جس کی تفصیل ہے ہے کہ آپ نے وفات سے تین روز پہلے قلم اور دوات طلب کیا اور فرمایا کہ میں تمہارے لیے الیمی چیز تکھوں گا کہ تم آیندہ گراہ نہ ہوگے۔ اس پر حصرت عمر نے لوگوں کی طرف مخاطب ہو کر کما کہ آنحضرت کو درد کی شدت ہو اور مارے معلی قرآن کافی ہے حاضرین میں سے بعضوں نے کما کہ رسول اللہ ماری ایک باتیں کر دے ہیں۔ (نعوذ باللہ) روایت میں مجر کا لفظ ہے جس کے معنی بدیان کے جیں۔

اس کے بعد ص 61 سطر 4 میں شیلی صاحب فرماتے ہیں۔ یہ واقعہ ظاہر تبجب انگیز ہے ایک معترض کمہ سکتا ہے۔ کہ بے زیادہ اور کیا گتافی اور سرکشی ہوگی کہ جناب رسول خدا بستر مرگ معترض کمہ سکتا ہے۔ کہ بادیت نامہ لکھ دول ہوتا ہوئی ہوگی کہ جناب رسول خدا بستر مرگ پر ہیں۔ اور امت کے ورد کو اری کے لحاظ سے فرماتے ہیں۔ کہ لاؤ میں ایک ہدایت نامہ لکھ دول ہوتا کو گراہی سے محفوظ رکھے۔ یہ ظاہر ہے کہ گراہی سے بچانے کے لیے جو ہدایت ہوگی وہ منصب نبوت کے لحاظ سے ہوگی اور اس لیے اس میں سہو و خطاکا اختال نہیں ہو سکتا۔ باوجود اس کے حضرت عرب بروائل طاہر کرتے ہیں۔ اور کہتے ہیں کہ بچھ ضرورت نہیں ہم کو قرآن کائی ہے۔ طرو یہ کہ بعض روایتوں میں ہم کو قرآن کائی ہے۔ طرو یہ کہ بعض روایتوں میں ہم کہ حضرت عربی نے ارشاد کو بدیان سے تعبیر کیا تھا(نعوذ باللہ)

مولوی شیلی نعمانی نے اس سارے واقعہ قرطاس کو لکھ کر حضرت عمر کو اس طعن عظیم ہے برنا الذمہ کرنے کی کوشش کرنی چاہی مگروہ عذر گناہ بدتر از گناہ کی پوری مثل صادق ہوئی زیادہ تر انہوں نے جو آویلیس کی جیس موقع بموقع ان کا جواب میں دیتا چلا آیا ہوں۔ مولوی شبلی خواہ اب کچھ ہی تادیلیس اپنے چیس کہ جناب رسول اللہ مائی جی استر مرگ بجیشوا کی جمایت میں کریں۔ مگر خط کشیدہ عبارت میں وہ مان چکے جیں کہ جناب رسول اللہ مائی جی استر مرگ بیس ۔ اور امت کے درد غنو اری کے لحاظ ہے وصیت فراتے ہیں۔ مگر حصرت عمر بے پروائی ظاہر کرنے بیں۔ اور امت کے درد غنو اری کے لحاظ ہے وصیت فراتے ہیں۔ مگر حصرت عمر بی نے آخضرت کی ارشاد کو بدیان سے تعبیر کیا تھا۔ (موحد حد م 20 میں ان کانی ہے۔ اور بید کہ حضرت عمر بی نے آخضرت کی ارشاد کو بدیان سے تعبیر کیا تھا۔ (موحد حد م 20 میں ۔ ۵۰)

اقول میاں تک جہتد صاحب نے صدیث قرطاس کے متعلق مولوی شیلی نعمانی صاحب کی تفید و تحقیق کو تعلق مولوی شیلی نعمانی صاحب کی تفید و تحقیق کو تو مدائی میں انداز کردیا ہے۔ صرف آپ خط کشیدہ عبارت کی طرف ہمیں توجہ دلا رہے ہیں۔ اور اس سے مید نا عمر رضی اللہ تعانی عند کو تعوذ باللہ گستاخ اور کلام پیغیر اسلام کو بدیان کئے والا ثابت کر رہے ہیں۔

مجتند لاہوری کو چاہیئے کہ تھی پرائمری سکول میں اردو سیکھیں اور اس طرح خلق خدا کو ممراہ نہ

قال الحاري عاريخ ابو الفدا جلد اول ص ١٥٩ من منقول ہے-

ولما اشتد به وجعه قال ائتونى بدواة وبيضاء فاكتب لكم كتابا لاتضلون بعد ب ابدا فتنازعوا فقال قوموا عنى لا ينبغى عند بنى تنازع فقالوا ان رسول الله يهجر (الخ)

وی الفاظ ہیں اوروہی ترجمہ ہے جو بیان ہوچکا - اس عبارت میں لفظ معجر موجود ہے جس کے متن ہیں-معاذ اللہ پیٹیر ہریان کمہ رہا ہے-

سرة المحديد ٥٢٨ مين مرقوم ہے۔

دعى رسول الله صلى الله عليه وسلم بكتف قال ائتونى بكتف اكتب لكم كتابا لا تختلفون بعده فاخذ من عنده الناس في لغط فقال امراة ممن حضروا ويحكم عند رسول الله فقال بعض القوم اسكتى فانه لا عقل لك فقال رسول الله انتم لا احلام لكم

 روایت کی مجبت کاکوئی جوت ہو تو پیش کریں۔ ہم انشاہ اللہ اس کا ہواب دیں گے۔

قال الحاکری دوستوا ان سب حوالہ جات کتب معتمدہ المستنت من لینے کے بعد اس مدیث قرطاس منتجہ میں کم از کم جار باتوں میں فینڈے دل سے ضرور خور کرنا چاہیے اول یہ کہ وصبت میں رکاوٹ ڈالے سے یہ لازم آتا ہے کہ حضرت عمر لے کلام پیغیبراسلام کو ردکیا ہے اور کلام رسول وحی ہو تقولہ تعالی من الح روحی خدا کو رد کر دینا کفر ہے باتفاق فریقین بقولہ تعالی و من کم بما ازن اللہ فؤلئک ما اکفرون - (موحد الحست من ۸۰)

اقول قرآن اور مدیث مجمع کے خلاف کوئی روایت جو کتب سیرو تواریخ وغیرہ میں ہو وہ قال تلم · بہیں۔ مجتند لاموری کا بیہ کمنا کہ جن کتابوں سے اس نے حوالہ جات نقل کئے ہیں وہ سب کتب متما 🔻 المستنت بیں بالکل غلط ہے۔ مثلًا مرالعالمین کسی رافعنی نے لکے کر امام غزالی کی طرف منسوب کردی ہے۔ ینائع المودة محی اس فتم کی کتاب ہے۔ معارج النبوة كتب معتده السنت ميں سے جس الفاردق كى كتى میں نمیں- سیرة محرب ایک محبول کتاب ہے- ابن ابی الحدید کی شرح نبج البلاغه رافعیوں کی کتاب ہے۔ رومتد الاحباب كى كوئى روايت بم يرجت نبيس اس كتاب كى نسبت بحوالد تخفد الما عشريد بم يمل كزار ال كر يك بي- أكر اور دركار مو تو بنور سنة فيخ عبدالقادر بدايوني في متخب التواريخ (مطبوعه لو كثور م 302)میں فضلائے حمد اکبر بادشاہ کے ذکر میں یوں لکھا ہے۔ مولانا حبداللہ سلطان بوری ازقوم انسارات واجداد او در سلطان بور آمده سکونت اختیار کرده بودند از فحول علائے زمان ویگانه دوران بود خصوصادر عربيت و اصول وفقه و تواريخ و سائر تقليات صاحب تصانيف لا نقه را نقه است از انجمله كماب عصمت الا نبياء و شرح شائل النبي منتي مشهور است- از بادشاه جنت آشياني رحمه الله خطاب مخدوم الملك دبم هخ الا سلامی یافته بود در ترویج شریعت غرا بیشه سعی بلیغ مے نمود و سنی متعضب بود خیلے از ملاحدہ ور وافض مل او بجائے کہ جست ایشال آمادہ ساختہ بودندر فتد-واز نمایت غلوے دفتر قالث رومته الاحباب راے گفت که از میر جمال الدین محدث نیست- در آن سال که فتح سمجرات شدو او در نتحیور و کیل دیوانحانه علما ورعين جاه و جلال بود فقيراز سنر پنجاب بازگشته روزے بعجبت فيخ ابو الفضل كه بنور لمازم نشده بود دمائى سلطان تما نیسری بدیدن مخدوم الملک رفتیم و دیدیم که دفتر خالث رادر پیش دارد و میگفت که رسیدک مقتدایان ولایت چه خزایهادر دمین کرده اند-وآن بیت رانمود که در منقبت واقع شده بیت بمیل بس بود آشنائیے او- که کردند شک درخدائیے او- و گفت او از رفض ہم گزرانیدہ کار بجائے دیگر رسانید که علول باشد- و قرار داده ام که این جلد را بخضور شیعه بسوزم فقیر برچند از خبایائے مجبول آمده و مرتبه اول الماقات بادنموده بودم بدليري محمنتم اين بيت ترجمه آن شعراست كه بامام شافعي رحمه- الله منسوب است كه -

لوان المرتضى ابدى محله لصار الناس طراً مسجدًاله كفى في فضل مولانا على بموقوع الثك فيه انه الله

> چوں طغیاش بدیدم بنمودم اہل دین را کہ شور بلالے جانما بٹما سپردم ایں را ودرسنہ نعد ونود در مجرات بعد ازا نصراف از مکہ معظمہ بعالم بھا ترامید انتی-

ترجمہ: ملا عبد اللہ سلطان بوری قوم انصار میں ہے جیں۔ ان کے اجداد نے سلطان بور میں آکر کوئٹ افقیار کی تھی۔ وہ اپنے زمانے کے زبردست عالموں میں ہے تھے۔ اور پاکھوس عربیت اصول نقد انتخا اور تھیا ملوم نقلیہ میں بیگانہ روزگار تھے۔ ان کی عمدہ تصانیف ہیں۔ ازا نجلہ کتاب عصمت الانبیاء اور شرح شائل التی میں تالی مشہور ہیں۔ بادشاہ جنت آشیانی رحمہ اللہ (امایوں بادشاہ) کی طرف ہے ان کو مخدوم الملک کا خطاب اور منصب شخ الا سلام بھی ملا ہوا تھا۔ شریعت غواکی ترویج میں بھٹ بدی کوشش کیا کرتے اللہ کا خطاب اور منصب شخ الا سلام بھی ملا ہوا تھا۔ شریعت غواکی ترویج میں بھٹ بدی کوشش کیا کہتے تار منصب شخ الا سلام بھی ملا ہوا تھا۔ شریعت غواکی ترویج میں بھٹ بی کوشش کے دو ان کے لیے تیار منصب شخ الا سلام بھی ملا ہوا تھا۔ شریعت غواکی ترویج میں بھٹے۔ جو ان کے لیے تیار منصب ایک دفتر سوم کی نبعت فرماتے تھے۔ کہ میہ میں گری تھے۔ کہ میہ میں گری تھے۔ کہ میہ میں گری تھے۔ کہ میہ میں کی تبعت فرماتے تھے۔ کہ میہ میں گری تھے۔ کہ میہ میں آپ کی تو تر سوم کی نبعت فرماتے تھے۔ کہ میہ میں گری تھی اور نمایت علو کے سب آپ رومت الا خباب کے دفتر سوم کی نبعت فرماتے تھے۔ کہ میہ میں

جمال الدین محدث کی تصنیف نہیں ہے جس مال مجرات فنح ہوا اور آپ فتچور بیل عین جاہ جال میں وکیل دیوائفائل الدین محدث کی تصنیف نہیں ہے واپس آگرا یک روز شخ ابوالفعنل (جواب تک ملازم نہ ہوا تھا) اور حاجی سلطان تھا نیسری کے ہمراہ محدوم الملک کی زیارت کو کیا۔ ہم نے دیکھا کہ روثتہ الاحباب کاوفتر سوم آگے رکھا ہوا ہے اور فرمارہے ہیں۔ کہ ویکھو متقدا بیاں ولایت نے دین میں کیا کیا خرابیال پردا کوئل ہیں۔ اور آپ نے دہ بیت۔

ہمیں بس پور آشنائے ہے او کے کردند شک در ضدائے او

اور ارشاد فرمایا کہ اس نے تورفض سے بھی آگے حلول تک کی نوبت پنچادی- اور میں نے یہ قرار دیا ہے۔ کہ اس جلد کو شیعہ کے سامنے جلادول۔ فقیروں نے گوزادیہ ممای سے آیا تھا اور آپ سے بہلی ملاقات تھی۔ ولیری سے کما کہ یہ بیعت اس شعر کا ترجمہ ہے جو امام شافعی کی طرف منسوب ہے۔

| مخك | ایدی . | | المرتعثني | لوال |
|------|--------|-----|-----------|------|
| لہ | سجدآ | 1/4 | الناس | لصار |
| على | مولاتا | فضل | نى | سمقى |
| الله | آنہ | نير | افكا | وقوع |

آپ نے میری طرف بھی دیکھا۔ اور پوچھا کہ یہ کمال سے منتول ہے۔ یس نے کما۔ دیوان علی میر حسن میسندی ہے وہ بھی رفض کے ساتھ شم کی شرح ہے آپ نے فرایا کہ شارح دیوان جو قاضی میر حسن میسندی ہے وہ بھی رفض کے ساتھ شم ہے۔ یس نے کما یہ وو سری بحث ہے ابوالفضل اور حاتی سلطان ہربار ہاتھ ہوئٹ پر رکھ کر اشارہ ہے بھی منع کرتے تے۔ پھر یس نے کما یہ کہ جس نے بعض اللہ ین کا منع سے ہے۔ کہ وفتر سوم میر جمل الدین کا تھنیف نہیں۔ ہے۔ بلکہ ان نیکے بیٹے سید میرک شاہ یا کی دو سرے کا ہے۔ ای وجہ سے وفتر سوم کی حبارت بسلے وو وفتروں کی عبارت سے ملتی جملی نہیں۔ کیونکہ وفتر سوم کی حبارت بہت شاعوانہ ہے۔ نہ کھنے شاہد ہے تھنے جانب دیا کہ بلایل نے دو سرے وفتر میں بھی ایش باتیں بائی ہیں۔ جو بھرادت بدھت کھنے شاہد ہے تھنے اور میں نے حواثی بھی کھے جیں۔ ازا ٹھلہ ایک حاشیہ یہ ہے۔ کہ مصف کے فران کھنے ہوں۔ ازا ٹھلہ ایک حاشیہ یہ ہے۔ کہ مصف کے فران کھنے کہنے اور میں نے حواثی بھی کھے جیں۔ ازا ٹھلہ ایک حاشیہ یہ ہے۔ کہ مصف کے فران کھنے کہنے کہ باتھ اور کبھی بیعت نی بڑھ کی بیعت کا فران کے میں اور کھی بیعت نی بڑھ کی بیعت کی فران کے قبل اور گیارہ وزش کے باتھ اور کبھی بیعت نی الواقع وہ باتھ جس نے مسلم کی بیعت نی بڑھ کے۔ حاشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ الی اور گیارہ وزش کے حالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ الی جس کے میں تھنے جی تیں تی بھی جی تھی تیں بڑھ ہے۔ ماشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ اس کے جس نے کہ الی تیں تھی تھی تیں بڑھ ہے۔ ماشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ بید بھی تیں بڑھ ہے۔ ماشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ بھی تھی تیں بڑھ ہے۔ ماشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ اس کے میں اس کے میں کہ اس کے میں بڑھ ہے۔ ماشا و کلا نہ محالت عادی و اعتقادی میں سے ہے۔ میں نے کہ اس کے میں کے کہ میں کے۔ میں نے کہ اس کی کی کی کھی کی کے میں کے۔ میں نے کہ اس کی کی کھی کی کھی کی کھی کی کھی کے۔ میں کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کے کہ کی کھی کی کھی کے کہ کی کھی کے کے میں کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کے کہ کی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کے کہ کی کھی کھی کے کہ کی کے کی کھی کی کھی کے کہ کی کھی کے

وابر فاول یا فکون سے مخلف ہوگا۔ شخ ابولفعنل پوشیدہ میرے ہاتھ کو دروازے یہ ملتے تھے۔ اور مع بھاہر مدوں ۔ اور سے اللہ اللہ اس مخص کی تعریف کیجئے کہ کون ہے۔ انہوں نے میرا کچے مال بیان کیا۔ اور وا الفتكو بخيريت كزر كئ- بابر آكر سائتى كين كيك-كه آج جيب معالمه كزرا-كه مخدوم في تجه ي اورد. ترض نہ کیا۔ ورنہ چھتکارے کا باعث کون ہو آ۔ مخدوم الملک اوا کل عبد میں جب شیخ ابوالفعنل کو دیکھا ر الما الله الله المردول سے فرمایا کرتے تھے۔ کہ دین میں ایسا کونسا خلل ہے جو اس مخص سے بیدا ر برگاربیت

عفياش بديدم بنمودم الل دين شود بلائے جانما بشماسردم این

مخدوم الملک نے 990ھ میں سجرات میں مکہ معظمہ سے واپس آنے کے بعد عالم بقا کو رحلت فراني- انتمي

مسلمانوں کو مخدوم الملک جیسے نقادو مبصراور خالص الاعتقاد بزر کوار کی بزی ضرورت ہے۔ جو قوم . كورالمعيول كے مكائد سے آگاہ كرتے رہيں-

اب ہم محندے ول سے ان باتوں میں غور کرتے ہیں۔ جو مولوی حائری صاحب نے حدیث قرطاس سے بطور سائے اخذ کی ہیں۔ یہ سائج قریباً وہی ہیں جن کی طرف مجسد صاحب اوراق گذشتہ میں بار بار اوجد ولائے رہے ہیں۔ بال عمال وہ ایک جگہ جمع کر دیے مجے میں۔ القدامم محی بالتر تیب ان کا جواب قرر كرتے بين امراول كے متعلق مجتد لاہورى نے جو آيت بيش كى ہے- وہ قرآن كے ساتھ خاص ہے میاکہ علم شدید القوی ظاہر کر رہا ہے الذا اس سے یہ ثابت نہیں ہوتا۔ کہ آتخضرت سال کے تمام اقوال وی ہیں۔ جیسا کہ ہم پہلے ولائل سے ثابت کر آئے ہیں ثانیا اگر تنکیم کرلیں۔ کہ آنخضرت مانجام ال كتابت كے ليے مامور متے۔ لؤ آپ كى كے روكنے سے ہر كزند رك كتے تھے۔ كيونك تبلغ وحى آپ كا فرض اولين قعاله بقوله تعالى۔

الله الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك وان لم تفعل فما بلغت رسلته O والله يعصمك من الناس- (ما كده: ٤٠)

ترجمہ: اے رسول پنچادے جو تیری طرف تیرے پروردگار کی جانب سے نازل کیا گیا ہے۔ اور اگر تونے ایسا نہ کیا تو تو نے اس کا پیغام نہیں پہنچایا۔ اور اللہ تجھ کو لوگوں سے بچائے گا۔ انتھی ذرا فر فور انعاف کیجے اگر مبلغ البهم کی مزاحمت مانع ہو سکتی منی۔ تو اس کے لیے سب سے سزا داروہ وقت تماجب کہ ایک جمان کفریر متفق اور آنخضرت النظام کی ایڈا پر تلا ہوا تھا۔ جب اس وقت

آپ نے تبلیغ میں تسائل نہ فرمایا تو ایسے وقت جب کہ ایک جمان آپ کا مطبع تھا آپ کی گے روئے سے کیسے رک سکتے تھے؟ آپ کا باوجود سید المعصوش ہونے کے اس کتابت کو ترک فرمانا قلہ اس واسطے جب وہ معاملہ آپ پر دوبارہ پیش کیا گیا۔ تو آپ نے فرمادیا کہ میں جس حالت (مراقبہ می میں ہوں وہ اس کتابت سے بہتر ہے جس کی طرف تم جھے بلا رہے ہو۔ حالا نکہ انبیاء علیم السلام کے تبلیغ وہی سے بیرہ کر عباوت اور کوئی کام نہیں خالت حضور اقدس سائی آیا نے استونی صیغہ تح استمال فرمایا تھا۔ جس کے مخاطب نہ فقط حضرت عمر تھے۔ بلکہ جمیع حاضرین مجلس تھے۔ جن میں حضرت علی کو جاہیے تو فرمایا تھا۔ جس کے مخاطب نہ فقط حضرت عمر نے تعیل میں قرقف کیا۔ تو حضرت علی کو چاہیے تو کہ قلم دوات لے کر حاضر ہوتے۔ اور رو وی نہ کرتے۔ اگر وہ حضرت عمر کی موجودگی میں ایسانہ کر سے تھے تو حضور اقدس سائی کیا کہ باتی ایام حیات میں کی دفت حاضر ہو کر حسب عقیدہ شیعہ اپنی خلافت کی تحریری سند لے سکتے تھے۔ جیسا کہ انہوں نے انگشتری وغیرہ کی تھی اپنی عدم تھیل پاردوتی خلافت کی تحریری سند لے سکتے تھے۔ جیسا کہ انہوں نے انگشتری وغیرہ کی تھی اپنی عدم تھیل پاردوتی کے الزام میں حضرت علی بھی شامل ہیں جن کو شیعہ معصوم جانتے ہیں۔

وم بیہ امراب ثابت ہو چکا ہے کہ حضرت عمر نے بقیناً ہمیان کی نسبت رسول اسلام ملڑ کے اور اس اور انہاء علیم السلام بالیقین ہمیان بولنے سے معصوم ہوتے ہیں ورنہ ان کے قول پر کسی طرح اعماد نہیں ہو سکا۔ (موجعہ حسنہ 81)

أقول

قال اجائري

میں ہے۔ گا ہوری کا یہ قول محض بہتان ہے جس قدر احادیث و روایات پیش کی گئی ہیں۔ ان میں ہے کی سے یہ ٹابت نہیں ہوا کہ حضرت عمر بڑا تھ نے نعو ذباللہ آنخصرت الناہ کے نبیت بڈیان دی۔ کس سیح حدیث ہما یہ وارد نہیں ہوا کہ اجح کا قائل حضرت عمر ہیں۔ بلکہ احادیث میں جمال اجح بطریق استفہام انکاری آیا ہے۔ اس کے قائل جو زین کتابت ہیں۔ اگر متو قفین فرض کئے جائیں تو بھی استفہام انکاری ہی ہوگا جیسا کہ پہلے آچکا ہے۔ ہر دو صورت میں اس کی قائل ایک جماعت ہے کیونکہ حدیث میں فقالوا صیغہ جمع وارد ہے۔ ادر اس پر نبیت بڑیان کا الزام عاکد نہیں ہو سکتا۔ بلکہ اس نبیت کا انکار تاابت ہے

قال الحائري

موم پیجبرے سامنے رفع صوت (آوازبلند کرنا) قطعا جرام ہے۔

لقوله تعالى يايها الذين امنوالا ترفعوا اصو اتكم فوق صوت النبى ولا تجهرو اله بالقول كجهر بعضكم لبعض ان تحط اعمالكم وانتم لاتشعرون (پ ۲۲ ع۱۳)

العنى مسلمانو اپنى آوازوں كو يغيمركى آواز سے اونچانه ہونے دو اور نه ان كے ساتھ بهت زور سے

بات کونہ جیسے تم ایک ہے ایک (آپس میں) دور سے بولا کرتے ہو۔ (کمیں ایسانہ ہو) کہ تمہارا کیا

رایا ہب اکارت ہو جائے۔ اور تم کو خبر بھی نہ ہو۔ (ترجمہ نذیر احمد سن) اور صدعث قرطاس میں

ملہ طور پر جابت ہوا کہ حضرت عمر ہمراہیوں کے ساتھ لڑتے جھڑنے تک اتر آئے۔ اور نافو افوا

ین چن و پکار تک آپس میں پینجبر کے سامنے نوبت پہنچ گئے۔ جس پر پینجبر کو قوموا من کمہ کر ان کو

سامنے سے بٹا ویٹا پڑا۔ (موحد حنہ میں ۱۸)

الدلياس آيت سے تو يہ معلوم ہوا كہ جب تم آنخضرت مائي مائي منظوكو- تو اس ميں اپي آواز کورے کو صفور اقدی ساتھ کیا کی آواز پر بلند نہ کرو۔ مگراس سے سے ثابت نہیں کہ آنخضرت ساتھ کیا کے صفور آپس میں تفتلو اور بحث بھی نہ کروجس کے جواز میں کسی کو کلام نہیں۔ للذا سے کمنا کہ پینجبرے سامنے آواز بلند را۔ حام ہے بحث طلب ہے آنخضرت کی خاموشی کی حالت میں اگر کوئی مخص آپ کی خدمت میں آگر فراد كريا- تو وہاں بھى رفع صوت مايا كياكيا وہ بھى حرام تھا- محاربات ميں حضوراقدس باني مو واي كے سامنے لوے باند کئے جاتے تھے۔ کیا وہ بھی حرام تھے۔ آپ کے حضور میں محابہ کرام مهمات امور میں مباحثہ کیا كرتے تھے-كياوہ بھى حرام تھا؟ قصه قرطاس ميں لفظ فتنا زعوا (پس وہ جھڑ پڑے) ہے- جس سے ظاہر ہے کہ تمام حاضرین مجلس آبیں میں جھکڑ پڑے جن میں حضرت علی بھی شامل تھے۔ کسی روایت میں یہ تصریح نیں کہ حضرت عمر وہ تھ ماقی تمام حاضرین سے جھڑ بڑے۔ زیادہ سے زیادہ جو یمال کما جاسکتا ہے۔ وہ سے كه ال وقت وه تنازع مناسب ند تها- جيساك لفظ لا ينبغي (مناسب نيس) ظاهر كررا ب- الدا بوك ے براجرم تمام حاضرین کاب ہوا کہ ان سب نے ترک اولی کیا۔ آنخضرت مان کیا کا قومواعنی فرمانا بجا تھا۔ کونکہ آپ کامٹن بورا ہو چکا تھا۔ کتابت زیر بحث کا ارادہ آپ نے محض امت پر شفقت کے سب کیا فاللذاالي وقت ميں جب كر آپ اس دنيا سے رفعت ہونے كو تھے۔ آپ نے اس كتابت كى نبت نازع سنا گوارا نہ قرمایا اور جب رفیق اعلیٰ کے غلبہ میں قرما دیا قو مواعنی (میرے پاس سے اٹھ جاؤ) قال الخائري چارم وميت ميں ركاوث ۋالنے كى دجہ سے انہوں نے امت كے حق كو تلف كر ديا-مرائد اگر وصیت لکھی جاتی تو یقینا امت مرحومہ مراہی سے بیشہ کے لیے محفوظ رہتی کیونکہ تو بمبر صاوق المن ال صعث قرطاس من وسكوئي كر يك تقد بقوله اكتب لكم كتابا لن تضلو ابعده ابداك ال سے تمک و تعمیل کے بعد تم مراہ نہ ہوئے۔ پھوت اسلام تنتر ذہب متفق ہو جانے اور امت کے مرای میں ہے جائے کے ذمہ وار وصیت روکنے کی وجہ سے حضرت عربوئے یا نہیں۔(مواعظ حند 81) اقول میں بہت سے دمہ وار و میت روسے می وجہ سے سرے سرائے ہیں کوئی رکاوٹ نہ ڈال سکا تھا۔ اقول میں پہلے آچکا ہے کہ اگر امر زیر بحث از قبیل وحی ہوتا۔ تو اس میں کوئی رکاوٹ نہ ڈال سکا تھا۔ ورنہ آئی۔ ورند آنخفرت المرام المرام ورجث المرام وي بولاد وال المال المال كالعدم الله المال كالعدم

میں سے کوئی بھی گمراہ نہ ہوگا۔ کیونکہ یہ تو صرح مخالفت ہے۔ اس صدیث میچے کے جس میں حضور اقد س میں سے کوئی بھی گمراہ نہ ہوگا۔ کیونکہ یہ تو صرح مخالفت ہے۔ کہ میرصد بعد میری امت کے تمتر فرقے ہوں میں ہے۔ بلکہ اس سے مرادیہ ہے کہ اس کے بعد تمہارا اجتماع گمراہی پر نہ ہوگا اس کی مفصل بحث پہلے آپی

قال الحائري پنجم حضرت عمر كابى يه كمناكه وصيت بينجبركى ضرورت نهيس حسبنا كتاب الله قرآن مارے ليے كانى به سكى بغيرك تو بجر بهت كے ليے كانى به سكى بغير وصيت بينجبرك تو بجر بهتر مارے ليے كانى بو سكى بغير وصيت بينجبرك تو بجر بهتر يوب كيوب قرآن به كو بيش كرتے بيں اور اس ايك نائى فرقد يہ كے يوب قرآن كے بوت اس كا خافذ قرآن كے بوت اس كيا شوت ہے كه ان كا خافذ قرآن سے صحیح ہے - باتى سب كا خلط ہے - تنما قرآن كے بوت اس كيا شوق امت يرجانے كى صورت ميں حضرت فاطمه كا دعوے حسبنا كتاب الله صحیح ثابت ہوا با ياطل (مواحد حسبنا كتاب الله صحیح ثابت ہوا با ياطل (مواحد حسبنا كتاب الله صحیح ثابت ہوا با

اقول حبنا کتاب اللہ کی مفصل بحث پہلے آجکی ہے۔ اس کے اعادہ کی ضرورت نہیں۔ حضور اقد س اللہ اللہ کے حبنا کتاب اللہ کے قائل کی رائے ہی کو ایسا پہند کیا۔ کہ ترک کتابت فر مایا حضرت علی جن کو شیعہ معصوم جانتے ہیں۔ ان کو بھی بجز سکونت و تسلیم چارہ نہ ہوا۔ بخث فدک میں دیکھا جائے گا۔ کہ آیا حضرت فاطمہ بڑا تھ سے حسنا کتاب اللہ کا دعوی کیا یا نہیں۔ جہند صاحب بار با بہتریا تہتر فرقول کا ذکر کرئے ہیں۔ ہم ان سے پوچھتے ہیں کہ شیعہ جن کو تھسک بالعشرت کا دعوی ہے۔ ان میں بہت سے فرقے کیول چیں۔ ہم ان سے پوچھتے ہیں کہ شیعہ جن کو تھسک بالعشرت کا دعوی ہے۔ ان میں بہت سے فرقے کیول ہیں۔ ایک ہی فرقہ کیوں نہیں مولوی ھائری صاحب اس آیت قرآنی پر غور فرمائیں۔

ولو شاء ربك لجعل الناس امة واحدة ولا يزالون مختلفين 0 الا من رحم ربك ولذلك خلقهم وتمت كلمة ربك الإملئن جهنم من الجنة والناس اجمعين- (الام

ترجمہ: اور اگر چاہتا تیرا رب کر ڈالٹا لوگوں کو ایک راہ پر اور ہیشہ رہتے ہیں اختلاف ہیں مگر جن پر رحم کیا رب نے اور اس واسطے ان کو پیدا کیا۔ اور پورا ہوا لفظ رب تیرے کا کہ البتہ بحروں گا۔ ووزخ جنوں سے اور آدمیوں سے اسٹے (ترجمہ شاہ عبدالقادر) حضرت شاہ ولی اللہ رحمت اللہ تعالی دوزخ جنوں سے اور آدمیوں سے اسٹے (ترجمہ شاہ عبدالقادر) حضرت شاہ ولی اللہ رحمت اللہ تعالی طن خاست کے حبانا کتاب اللہ عقے دارو مقصود او نفی ظن فاسد است بعن کے ممان کند کہ آنخضرت سائی ایم چیزے در آخر عمر خود خواست کہ بگویند واآل معنی باتمام ترسید نمیدانم شاید سے بعض احکام مقرر مقصود باشد یا فریضہ دیکر را تشریع میخو استد پس احتال متعرف شد بھی احکام شرعیہ فاروق افادہ فرمود کہ ضدا تعالی۔ حیضر مائد المیوم اکھ ملت احتال متعرف شد بھی احکام شرعیہ فاروق افادہ فرمود کہ ضدا تعالی۔ حیضر مائد المیوم اکھ ملت

الکم دینکم واتممت علیکم نعمتی ورضیت لکم الا سلام دینا پی نی اجها منرق بیت - آنچه القائے آل ہے خواستد تاکید و تقریر ادکام سابقہ است (قرق العینمین ۲۹۹ منرق بیت - آنچه القائے آل ہے خواستد تاکید و تقریر ادکام سابقہ است (قرق العینمین ۲۹۹ بزجہ: اور حضرت فاروق کا قول گرا ہے - ان کا مقصود گمان فاسد کا دور کریا ہے - یعنی کولی فنمی گمان نہ کرے کہ آنخضرت ساتھ الے نے آخر عمریس کوئی بات کمنی چاہی اور وہ کمہ نہ سے بھیل مطوم نہیں کہ حضور اقد س ساتھ الے کا مقصود یعض احکام مقرر کا منسوخ کرنا تھا یا آپ کوئی نیا فریغہ مشروع فرمانے گئے تھے - یس سے احتمال تمام احکام شرعیہ بیس چلے گا- اور حضرت فاروق نے بتا دیا کہ اللہ تعالی فرماتا ہے - آج بیس نے تمہمارے لیے تمہمارا دین کائل کر دیا - اور مت پر اپنی نعمت پرری کردی اور اسلام تمہمارے واسطے دین پیند کیا - لاقمال نی کاکوئی احتمال نہیں چل سکا ۔ اور جس چیز کو آپ بتانا چاہے تھے - وہ احکام سابقہ کی تاکیدو تقرر تھی - بنتی

قال الخائري مشم حضرت عمر كى مخالفت وصيت اور نسبت بنيان وين سے بنيغبركو ايذا بيني يا نسي الرايذا نسي بيخي - تو قومو اعنى (ائھ جاؤ ميرے سامنے سے) كمد كران كو كيول باہر نكال ديا - اور اگر ايذا نبيركو بيني ہے - تو ينفيركو ايذاء وين كے متعلق قرآنی تعليم سے - والذين ينو فرون رسول الله المهم عذاب اليم (پ ١٠: ١١) ليمنى جو لوگ الله كرسول كو ايذاء ويتے بيں ان كو (قيامت كے دن) درد ناك عذاب ہونا ہے (ترجمہ نذر احد سن)

دوستو! یہ چھ باتیں اس مسئلہ میں غور طلب ہیں ہرایک مخص سے میں امید کرتا ہوں کہ وہ ان می مناسب تامل اور غور کرنے کے بعد مفید اور قابل قدر بتیجہ تک آسانی کے ساتھ پہنچ سکے گا۔ جس کا منتی باب النجات ہو جائے گا۔ انشہاء الله تعالٰی والیه توجع الا مور (موحد حنے8)

اتول حضرت عمر بخارش نے نہ تو پینجبر علیہ العلوة والسلام کو نسبت بنیان دی۔ اور نہ وصیت کی مخالفت کی۔

بلکہ حضور اقدس ملتا لیا پر شفقت کو طوظ رکھتے ہوئے۔ دو مرے کو بتا دیا کہ ایس طالت میں آپ کو اس امر

کی تکیف نہ وی جائے جس کے حصول کے لیے کتاب اللہ کافی ہے اس رحمتہ اللعالمین سید المعصومین

مناسی عمل سے رائے فاروق کی تصویب فرادی اور لقائے رفیق اعلیٰ کے شوق وغلبہ میں فرا دیا کہ اب

مرائی یاس سے ایک صافی۔

فرماتے ہیں۔ کہ جو بات آپ تحریر کرنا چاہیے تھے۔ وہ وہی وصیت تھی۔ کہ جس کو نسیان راوی کر کر ہ وا ميا - مرجمتد صاحب كے پاس اسنے ول كاكوئى جوت نسين- سليمان احول كائى كمنا (كه سعيد بن جيم تیری وصیت سے چپ رہایا اس نے تو اسے ذکر کر دیا تھا مگریہ بمول کیا) ظاہر کر رہا ہے کہ صعف رہا مغبول النائيا كى رويات ميں اے كس قدر احتياط محوظ ہے أكر مجتند كے قول كو تسليم كر بھى ليا جائے تو يو بھی آپ ماڑی الے نعوذ باللہ خلاف علم النی کیا۔ کیونکہ علم تو لکھ دینے کاتھا علاقہ بریں مجتمد صاحب کے یاس اس کا کیا جوت ہے کہ ومیت سوم حضرت علی کرم اللہ وجہہ کی خلافت بلافصل کے حفلق تھی۔ ور بریں آنکہ حسب قول شیعہ خلافت بلافصل کا اعلان تو ستر ہزار بلکہ اس سے بھی زیادہ آدمیوں کے ملینے خم غدر میں ہو چکا تھا۔ اب دولتخانہ کے اندر چند حضار مجلس کے سامنے اس کے اعلان سے کیا قائدہ قلد ثانياً آخضرت مليَّظ سيس سال مك اين اصحاب كو تعليم قرآن دية رب- اور ان كو عقائد واخلال كي خباشوں سے پاک کرتے رہے جیسا کہ خود قرآن اس پر ناطق ہے۔ مگر بنابر قول شیعہ آپ کی تعلیم کا بجو تین جار اشخاص کے کسی بر کوئی اثر نہ ہوا۔ حق کہ وہ آپ کے حضور میں آداب کلام سے بھی المد محض رہے۔ اور تعوذباللہ گتاخ ایسے کہ آپ کے سامنے آپ کی شان میں نمایت ناموزون الفاظ استعل کمنے ے بازنہ رہتے تھے۔ یہ ان کا حال ہے جو چوٹی کے اصحاب تھے۔ اوروں کی حالت تو اور ناگفتہ بہ ہو گئی کیا اس سے تنقیص شان محمدی لازم نمیں آتی؟ کیایہ اصحاب وہی نہیں جن کے اوصاف حمیدہ اللہ تعالی نے آ رات و انجیل میں بیان فرمائے تھے۔ ٹالٹا عدم تغیل ارشاد نبوی آنخضرت ملی کی سامنے رفع صوت اور تازع اور حق تلفی امت وغیرہ کے الزامات میں سے بعض حضرت علی کرم اللہ وجب بر مجمی عائد ہوتے ہیں۔ اس پر تو حضرات شیعہ کے کان کھڑے ہو جاتے ہیں کیونکہ وہ آپ ساتھ کی عصمت کو بھی اٹی خلافت بلا فصل برے قرمان کرنے کے لیے تیار ہیں- اب دیکھیے حضور اقدس ساتھیا کی عصمت کا مجی کو خیال نسی مرایی خلافت کو بچانے کے لیے کیے ہاتھ پاؤل مار رہے ہیں سید محمد مجتدین سید دلدار علی مجتد لكصنوى طعن الرماح (مطبوعه سلطان المطالع لكعنوء ص ١٩٣٠) مين يول لكصة بين- تفصيل اين اجمل آنکه تول او حصرت عباس و حصرت علی نیز درانونت حاضر بودند مردود است باینکه فاصل معاصر با آنکه عمر عزيز خودرا در بحث وجدال و قيل و قال سيرى كرده منوز از طريق استدلال وفنون مناظرو بلدية بيم زسابعه چہ سے بایست کہ اولا اقامت بینہ برس وعوے نماید زیرا کہ ادعاے بے ولیل مقرون مقبول نے شود دور احاديث كثيره اذكتب اذكتب معتده إال نحله او آنفا لذكور مشته فيج جاذكر حاضر بودن حضرت اميرالمومنين نيست پس اثبات اين وعوى بر كرونش لازم و حمده مانع منع است وبس بعد تسليم عنقريب بوضوح -ا مجامد که اذبال مجوزین احسّار قرطاس از اوناس استحقاق طعن ولوم منزه و مبراست استنی- ترجمه اس اجمل

ی تنسیل میر ہے کہ شاہ صاحب کا میر قول کہ حضرت عباس و حضرت علی بھی اس وقت عاضر تھے۔ مردود ی سان یا مورکہ جمعصر فاضل نے اگر چہ اپنی عمر عزیز بحث و مناظرو میں فتم کی ہے۔ محرات اب تک ہے۔ برن اسدال وفنون مناظرہ سے پچھ بھی والفیت نہیں ہوئی کیونکہ اسے جاہیے کہ پہلے اپنے وعوے پر دلیل اسد الله الله الله وعوے بے ولیل سنا نہیں جاتا۔ (اور ان احادیث کثیرہ میں جو اہمی کتب معتمد الل یں ۔ سنت سے نہ کور ہوئیں۔ کسی جگہ حضرت امیرالمومنین کے حاضر ہونے کا ذکر نہیں ہے۔ پس اس دعوے کا وات كرنا شاه صاحب كے ذمه ہے- اور مانع كاكام تو صرف منع ہے- اور اگر حضرت امير المومنين كا حاضر ہونا تنکیم کیا جائے تو عنقریب واضح ہو جائے گا۔ کہ مجوزین احسار قرطاس کا دامن طعن و ملامت کے التحقاق كى آلودگى سے پاک و منزہ ہے- انتهى جواب ميں گزارش ہے- كه ملا باقر مجلسى حيات القلوب (مطبوعه نو ككثور-جلد دوم-ص 848'847) مين لكھتے ہيں- ينج مفيد روايت كرده است كه حضرت مردم رامر خص کرد و بیرول رفتند و عباس و فضل پسر او علی بن ابی طالب و ابل بیت مخصوص آنخضرت ترد او مائد ند پس عباس گفت بارسول الله اگر این امرخلافت در ماین باشم قرار خوابد گرفت پس مارا بشارت ده که ثلو شویم واگر میدانی که برماستم خوابند کردو خلافت رااز ماغضب خوابند کرد پس باسحاب خود سفارش مارا بكن حفرت فرمود كه شارا بعد از من ضعيف خوابند كرو برشاغالب خوابند شد پس بهد الميت كريال شرئه- واز حیات آنخضرت ناامید گردیدند- دوارال مرض حضرت امیرالمومنین شب و روز در خدمت آنخفرت بودو از آنخضرت مفارقت نم نمود ممر برائے حاجت ضروری وابن بابوید ویشخ مفید و یشخ طوی دمغار بیخ طبری وابن شهر آشوب و دیگرال روایت کرده اندبسند بائے متواتر از حصرت امیرالمومنین و امام محمد باقروامام جعفرصادق وام سلمه وعائشه وغيره اليثال كه در مرض آخر آمخضرت اميرالمومنين برائح ضرورت عرول رفتہ بود حضرت فرمود کہ بخوایند از براے من یار مرادوست مراد برادر مرا- پس حضرت فاطمہ خرت امیرالمومنین راطلب کرد و چول حاضر شد حضرت اور ابر سینه خود چسپانید - ودبان مبارک رابر گوش ادگذاشت وجامه خود را بروری اوکشید و عرق ایثال بروری یکدیگر میریخت وزمان بسیار با آنخضرت راز گفت انتھی مختفرا عبارت سے معلوم ہوا کہ اس مرض میں مفرت علی دن رات آخضرت ملی آئیا کی فدمت میں رہے تھے۔ اور بجر حاجت ضروری باہر نہ جاتے تھے۔ اگر کسی ضرورت کے لیے باہر جاتے اور ا تضرت النظام كو ان كے متعلق كچھ كام موتا (تو ان كو بلالباكرتے تھے۔ اس كے ساتھ يہ بھى طوظ خاطر رہے کہ بنا پر قول شیعہ آنخضرت مان کیا مصرت علی کو ان کی خلافت کی تحریری سند لکھ کر دینے گئے تھے۔ ر ر ان طالات میں حضرت علی غیر حاضر قرار نہیں دے سے الضوص جب کہ خلافت کی سند انہی کو دیلی اس گا اور دو لنفانہ نبوی کے اندر تحریر کا کام حضرت علی ہی کیا کرتے تھے۔ حتی کی**ھی** می میں وہی لکھا کرتے

تھے۔ مصنف طعن الرماح نے برتقذیرِ حضور حضرت امیر درال مجمع وقوع رفع صورت ازال حعرت میگورد که مراد جناب حق تعالی از کریمه لاتر فعوا اصوالتمم نوق صوت النبی نبی است از رفع صوتیکه معتمل بمله ت ادب وموجب تاذي الخضرت يوده باشد رفع صوت چنانچه سياق و سباق آيت برآل دلالت تمام دارد. برگاه منصف خيبر تال نمايد و بنظر انصاف ملاحظه فرمايد يقين ميكند كه رفع اصواتيكه در ماجرات مع قرماي بوقوع پيوسته بود بركمال ابانت واستخفاف مشمل بودو چنانچه كلمه ان الرجل ليهجو هاشانه اهجو كلمه قد غلب عليه الوجع وحسنا كتاب الله برآل دلالت وانحه جليله وارد واماار تفاع موت ك از قبل مجوزین بو قوع پیوسته باشد چوں موافق مرمنی آنجناب و مشمل بریز جرو منع مانعین بودو اطاعت وانتماد آن حضرت بوده باشدنه منافی آن (طعن الرماح ص ١٩٥ ص ١٩٦) حاصل كلام بم يويمترل تنزل اوراس بات كو تشليم كرك كه حضرت اميراس مجمع مين حاضر تھے- اور آپ سے رفع صوت وقوع مين آيا- كتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ کی مراد لا ترفعوا اصواتکم فوق صوت النبی سے منع کرتا ہے۔ جینے رفع موت سے جو بے ادبی پر مشمل اور آنخضرت کی تاذی کا باعث ہوند کہ مطلق رفع صوت چنانچہ اس آیت کا سیاق و سباق ای یر ولالت کرتا ہے-(یمال تک که کما مصنف نے) جب واقف کار مصف تال کرے گا اور بنظر انصاف دیکھے گا۔ تو اے لقین آجائے گا کہ منع قرطاس کے قصہ میں جو آوازیں بند ہو تیں وہ کمل المانت و تخقيرير مشمل تنميل- چنانچه كلمه ان الرجل ليهجر اور ماشانه اهجر اور كلمه قد غلب عليه الوجع حسبنا كتاب الله اس يربوى واضح ولالت كرتے بيں- مر محودين كى طرف سے جوس صوت وقوع میں آیا ہوگا۔ وہ آنجناب کی مرضی کے موافق اور مانعین کے زجزومنع پر مشمل ہونے کے سبب آتخضرت عی عین اطاعت و فرمانبرداری ہوگانہ کہ اس کے مخالف-استی-

جہتر لکھنوی نے آیہ لاتو فعوا پر بنظر انصاف خور نہیں کیا۔ ورنہ اسے چیش بی نہ کرنے کے تکہ اس آبت کا تو مطلب صاف سے ہے۔ کہ جب تم تیفیر فدا الٹیلیل کے ساتھ مختلو کو۔ تو آپ کا عظمت کو ملحوظ فاطر رکھ کر اپنی آوازوں کوان کی آواز پر بلند نہ کرو۔ اس سے یہ نہیں پایا جاتا کہ آپ کے حضور بیں تم باہی گفتگو میں بھی آوازیں بلند نہ کرو۔ اور یہ مختاح بیان نہیں کہ قصہ زیر بحث بیل ماخران میں سے کسی نے اپنی آواز حضور کی آواز پر بلند نہیں کی۔ جب جہتد صاحب نے دیکھا کہ اس ملری فیس سے کسی نے اپنی آواز حضور کی آواز پر بلند نہیں کی۔ جب جہتد صاحب نے دیکھا کہ اس ملری فیس حضرت عمر پر بھی کوئی الزام عاید نہیں ہوتا تو یہ چال چلے کہ اس باہی جھڑے میں بو آوازیں ایک دوسرے پر بلند ہو کس ان بیل فرق تھا۔ چنانچہ حضرت عمر سے جو رفع صوت صاور ہوا وہ نعوفیائٹ ووسرے پر بلند ہو کس ان بیل فرق تھا۔ چنانچہ حضرت عمر سے جو رفع صوت ایسا نہ تھا۔ لیکن یہ خاب کا اس مشکل بی نہیں بلکہ ناممکن ہے۔ کیونکہ حضار مجلس بیں سے کسی کا رفع صوت بھی مشتملبر ایانت و تحقیرت مشکل بی نہیں بلکہ ناممکن ہے۔ کیونکہ حضار مجلس بیں سے کسی کا رفع صوت بھی مشتملبر ایانت و تحقیرت

ور جنزت عمر کے رفع صوت کے خلاف جو کچھ پیش کیا گیاہے اس سے مجتند صاحب کا مقصود حاصل نہیں وا کو فلہ کسی معج مدیث سے بید ثابت نہیں کہ حضرت عمرنے ان الو جل لیھجو کما ماشانہ امجر بجوزین احسا قرطاس کا قول ہے۔جو بطریق استفہام انکاری مانعین کے آمے اپنی رائے کی تائید میں پیش کر رے ہیں۔ اگر پر سبیل تنزل اسے مانعین کا قول قرار دیا جائے۔ تب بھی استفہام انکاری و تعجی ہوگا۔ ند ک الخياري جيماك يمل آچكا ہے۔ رہا قد غلب عليه الوجع وحسبنا كتاب الله موير بيك معرت عمر الله كا قول ہے اور اس سے ظاہر ہے كہ حضرت عمر آنخضرت الله كار شفقت كو ملحوظ ركھ كراليي حالت یں آپ کو کمابت کی تکلیف سے بچانا جائے تھے جیسے آپ نے محض امت پر احتیاط کی رو سے گوارا فرانے کا ارادہ فرمایا تھا۔ اور سے بھی ظاہر ہے کہ اس معالمہ میں جورائے حضور اقدس بابی جو وامی کے نزدیک اولی تھی۔ وہ رائے فاروقی تھی کہ جس کا ثبوت آپ نے عملی رنگ میں پیش کیا۔ پس حضرت عمر رمنی اللہ تعالی عنه کا رفع صوت مجوزین کے رفع صوت کی نسبت بطریق اولے آتخضرت ملی کیا کی مرضی ك موافق تحا- مجتد لكعنوى في طعن الرماح من مجتد لاجوى كى نبت اور بمى بت كيحد زياده لكها ب-الذا بحث حدیث قرطاس کی محیل کے لیے ہم اس میں ہے ضروری امور کو بالاختیار لقل کرتے ہیں۔ احمد ين حنبل المام سميال در مستد خوداز جابر انساري روايت نموده رسول الله دعاعند موته بصحيفة ليكتب فيها كتابا لا يضلون بعده فخالف فيها عمر ليني رسول فدا طلب قرموونزد وقات خود كاندك راماً بنو مدوران نامه كه ممراه نشوند مرد مال بعد آل پس مخالفت ممود درآل عمر-دنهم در صحح مسلم از عبدالله بن عباس مانور است كه گفت-

يوم الخميس ومايوم الخميس ثم جعل يسيل دمو عه حتى رايت على خديه كانه نظام اللؤلؤ ثم قال قال رسول الله ائتونى بالكتف والدواة اواللوح والدواة اكتب كتابا لن تضلوا بعده ابدا فقال عمران رسول الله صلى الله عليه واله وسلم هجرا

وفی بعض النسخ فقالوا ان رسول الله بهجواین این عباس برسمبل تحرو تاسف میگفت که روز "بخشبه وچه روز "بخشبه و گرایستن آغاذ کرو وافک از وید بالیش جاری گشت تا ینکه ویدم ماند مروار بد قطرات عبرات برگونه روایش جاری وافک از وید بالیش جاری گشت تا ینکه ویدم ماند مروار بد قطرات عبرات برگونه روایکه مینوایم کردید- بحد ازال گفت که ور آنروز رسول خدا فر مود بیارید شانه دوات یالوح و دواجیکه مینوایم کردید- بحد ازال گفت که ور آنروز رسول خدا فر مود بیارید شانه دوات یالون میگوید دور بعض برائد شانامه که برگز بعد ازال گمراه نشوید پس عمر گفت بدر سیکه رسول خدا بدیان میگوید دور بعض برائد شعور لفظ فقالو انوشته دندانت که این می محمد مسلم بنا برپاس خلیفه خود لقط عر راساقط ساخته لاعن شعور لفظ فقالو انوشته دنداند که این میخه بحق آنفع است برائ شعیان چه در می صورت معنی آل چنین میشود که عمر و اجاع ادا ز مانعین میخه بحق آنفع است برائ شعیان چه در می صورت معنی آل چنین میشود که عمر و اجاع ادا ز مانعین میخه بحق آنفع است برائ شعیان چه در مین صورت معنی آل چنین میشود که عمر و اجاع ادا ز مانعین

منتد که پنجبر خدا بزیان میگوید چنانچه از شرح مفکوه کلام ابن اثیر صاحب جامع الا صول متنفاد میشود و دسیاتبک کلاهها عما قریب و احمد بن صنبل تصریح باسم عمر نموده در مند خود علی انقل عنه بیگوید ان عمر بن الخطاب قال ان النبی لیه جو لیمن عمر بن خطاب گفت که بختین که بانقل عنه بیگوید و دلمابوسف اعور و اسطی که از متعصین علائے ابل تسنن است در کتاب خود بین بیگر خدا بزیان میگوید و دلمابوسف اعور و اسطی که از متعصین علائے ابل تسنن است در کتاب خود المنزاف تموده باینکه عمر کلمه ان الرجل لیمجر برزبان راند چنانچه کلامش عقریب سمیت تحریر میبابد و غرائی در کتاب مرافعالیمن آور ده قال عمر دعوالرجل فانه لیمجر بینی بگذارید میں مردوا که بزیان میگوید (طمن الرباح 181) ۱۹۵۲)

ترجمہ: سینوں کے امام احمد بن طبل نے اپنی مند میں جابر انصاری سے- روایت کی ہے کہ رسول خدائے اپنی وفات کے قریب ایک کاغذ طلب کیا تاکہ آپ اس میں ایک الی تحریر لکھدیں۔ کہ جس کے بعد لوگ مراہ نہ ہوں۔ اور صحح مسلم میں بھی عبداللہ بن عباس سے مروی ہے کہ آپ نے فرالا روز " بخشنبہ اور کیماروز " بخشنب - پھر آپ کے آنسو بہنے لگے یمال تک کہ بیں نے آپ کے رضاروں پر آنسو ماندم رشتہ مردارید کے دیکھے پھراہن عباس نے کما کہ رسول خدانے قرمایا کہ شانہ روایت یا لوح دوات میرے پاس لاؤ ٹاکہ نیں تہمارے واسطے ایک الی تحریر لکھدوں کہ جس کے بعد تم بھی مراہ نہ ہو کے بیاس کر حضرت عمر نے کہا بیشک رسول خدا ہدیان کہتے ہیں۔ اور صحح مسلم کے بعض شنوں میں انہوں نے اپنے خلیفہ کے لحاظ سے لقط عمر کو گرادیا ہے۔ اور بغیر سمجھے فقالوا لکھدیا ہے۔ اور ان کو یہ معلوم نہیں کہ بیہ جمع کاصیغہ شیعوں کے لیے زیادہ مفید ہے۔ کیونکہ اس صورت میں معنی یوں ہوں ہے۔ ہی عمر اور اس کے تابعین نے جو منع کرنے والے تھے کما کہ بیغبر خدا بزیان کہتے ہیں۔ جیسا کہ شرح مظکوۃ اور ابن اثیر مصنف جامع الاصول کے کلام سے سمجھا جاتاہے اور سے رونوں حوالے عنقریب آئیں گے۔ اور احمد بن حنبل نے اپنی مندمین عمر کے نام کی تصریح کردی جیسا کہ اس سے منقول ہے کہ وہ کہتا ہے کہ عمر بن خطاب نے کما کہ تحقیق پیمبر خدا ہدیان کہتے ہیں اور ملا يوسف اعور واسطى نے جو كہ السنت كے متعقب عالموں میں سے بیں اپنی کتاب میں اس بات کا اعتراف کیا ہے کہ عمرنے کلمہ ان الوجل لیہ جو اپنی زبان سے نکالا تھا۔ جیسا کہ اس کا کلام عنقریب لقل کیا جائے گا۔ اور غزالی نے کتاب سرا تعلین میں لفل کیا ہے کہ عرفے کماکہ اس مخص کو چھوڑ دو کیونکہ بد بلیان کمتا ہے-(انتی)

کہ مرت ہا کہ ان من وہورور یوسے بیاموں معمود ان ان اللہ اللہ اللہ دیا ہے کہ اللہ دیا ہے کہ اللہ دیا ہے کہ اللہ

يه - ٢- حدثنا عبدالله حدثني ابي حدثنا موسى بن داؤد حدثنا ابن لهيعة عن ابي الزبير عن

جابر ان النبى صلى الله عليه وسلم دعا عند موته بصحيفة ليكتب فيهاكتابا لا تضلون بعده قال فخالف فيها عمر بن الخطاب حتى رفضها- (منداح بن مبل مبرر مم جره الدم ٢٣٣)

ترجمہ: صدیث کی ہم کو عبداللہ نے کہ صدیث کی جھے کو میرے باپ نے کہ صدیث کی ہم کو موسی بن داؤد نے کہ صدیث کی ہم کو ابن لیسے نے ابو الزبیرے ابوالزبیر نے جابرے کہ نبی ماہی نے ابو الزبیرے ابوالزبیر نے جابرے کہ نبی ماہی ابن کے بعد ابن وفات کے وقت ایک کاغذ طلب کیا تاکہ آپ اس میں ایک الی تحریر لکھ دیں کہ جس کے بعد وہ ممراہ نہ ہوں۔ رادی کا قول ہے کہ عمر بن خطاب نے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی نے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی نے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی اے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی ایک اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی ایک کے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی ایک کے اس میں اختلاف کیا۔ یمال تک کہ آخضرت ماہی کیا ہے دوران کی ایک کے ایک فرمایا۔ (انتی)

اولا اس حدیث کے اسناد میں کلام ہے۔ موہی بن داور کی نسبت تمذیب التمدیب میں ایک تول یہ مجمی درج ہے قال ابو حاتم ملیخ فی حدیثه اضطراب یعنی ابو حاتم نے کما کہ موی بن داؤد کی صدیث میں اضطراب ہے عبداللہ بن اسع کا حال قائل غور ہے۔

قال حنبل عن احمد ما حديث ابن لهيعة بحجة قال البخارى تركه يحيى بن سعيد وقال ابن مهدى لا احمل عنه شيئا- وقال ابن خزيمة فى صحيحة وابن لهيعة لست ممن اخرج حديثه فى هذا الكتاب اذا انفرد- قال عبدالكريم بن عبدالرحمن النسائى عن ابيه ليس بثقة وقال ابن معين كان ضعيفا لا يحتج بحديثة قال مسعود عن الحاكم لم يقصد الكذب وانما حدث من حفظه بعد احتراق كثبه فاخطا وقال الجوزجانى لايوقف على حديثه ولا ينبغى ان يجتج به ولايغتر برواية- (تذيب النذيب)

ین احمد کا قول ہے کہ این امیعہ کی حدیث جبت نہیں امام بخاری فرماتے ہیں کہ ابن امیعہ کو یجی بن سعید نے ترک کر دیا ہے۔ اور ابن مهدی کا قول ہے کہ میں ابن امیعہ سے کوئی روایت نہیں کرا۔ ابن فزیمہ اپنی صحیح میں فرماتے ہیں کہ ابن امیعہ ایبا نہیں کہ میں اس کی حدیث اپنی کتاب میں نقل کروں۔ جبکہ وہ روایت میں منفرہ ہو۔ امام عبدالر حمٰن نسائی کاقول ہے کہ ابن امیعہ جان بوجھ کر جھوٹ نہ کہتا تھا۔ اس کو کتابیں چل کئی تھیں۔ لاڑا اس نے اپنے حفظ سے حدیث نقل کیس اور خطاکی۔ جو ترجاتی کہتے ہیں کہ ابن امیعہ کی حدیث سے احتجاج نہ چاہیے۔ اور نہ اس کی مدیث سے احتجاج نہ چاہیے۔ اور نہ اس کی روایت سے وحوکا کھانا چاہیے۔ ان تھی۔ جب اس حدیث کے اساد کا یہ حال ہے۔ تو ہم پر ابلور موایت بیش نہیں کی جائے۔ ثانی ارا اساء سے قطعی نظر کی جائے تو بھی تین حدیث سے کوئی

اعتراض حضرت عمر پر وارد نہیں ہوسکا۔ کیونکہ فخالف فیھا بن الحطاب سے مطلب یہ ب کہ عمر بن الخطاب نے بعض عاضرین سے اختلاف کیا۔ نہ کہ نعوذ باللہ آنخضرت مان کی میماکہ مجتد صاحب خیال کر بیٹھے ہیں۔

(۲) عدیث مسلم جو پیش کی گئی ہے۔ اس پر بحث پہلے گرر پی ہے۔ اس کا اسازیوں ہے۔ حداثنا استخق ابراھیم اخیرنا و کیع عن مالک بن مغول عن طلحة بن مصرف عن سعید بن جیو عن ابن انه قال یوم الخمیس الحدیث اس اساد میں وکیج کی نبت پھی کلام ہے۔ چانچہ تمذیب التہذیب میں ہے قال حنبل عن ابن معین رایت عند مروان بن معاویة لوحا مکتوب فیه السماء شیاء فلان گذا او فلان گذا وو کیع رافضی قال یحیی فقلت له و کیع خیر منگ قال قلت نعم قال فسکت یعن سمی بن معین کتے ہیں کہ مروان بن معاویہ کیاں ایک تخی دیمی جرب قلت نعم قال فسکت یعن سمی بن معین کتے ہیں کہ مروان بن معاویہ کے پاس ایک تخی دیمی جرب قبل شخ کے نام تھے۔ کہ فلاں شخ ایما ہے اور فلال ایسا ہے۔ اور وکیج رافضی ہے۔ سمی کابیان ہے کہ میں نے عروان ہی کہا۔ اس کے کام وکیج بیں کہ وہ یہ س کر فاموث ہوگیا۔ انتھی۔

یبال قابل غوریہ امرے کہ سعید بن جبیر کی دو سری رواینوں میں جو صحیح بخاری و صحیح مسلم میں بیس استفہام مقدر سبحت چاہیے۔ اور اس بیس استفہام مقدر سبحت چاہیے۔ اور اس مذف پر ایک قرید عقلی بھی موجود ہے۔ اور وہ ہیہ کہ آنخضرت ملٹی کیا بالاتفاق بلیان سے پاک ہیں۔ الذیا ال مذف پر ایک قرید عقلی بھی موجود ہے۔ اور وہ ہیہ کہ آنخضرت ملٹی کیا بالاتفاق بلیان سے پاک ہیں۔ الذیا ال مدیث مسلم سے مجتد صاحب کا مقصود حاصل نہیں ہوسکتا اور ترجمہ حدیث جو اس نے بصورت اخبار کیا ہے فلط ہے۔ مجتد صاحب کے تصحیح مسلم کے اکثر تسنوں میں فقال عرہے۔ مگر بعض میں اس کا جگہ فقالوا بنا دیا گیا ہے۔ یہ بالکل بہتان ہے۔ کیونکہ تمام تخوں میں فقالوا بایا جاتا ہے۔ بال شیعہ نے اپنی مطبوعہ یا قلمی تسخہ میں فقالوا کی جگہ فقال عربنا دیا ہو تو کھے تنجب نہیں کیونکہ وہ اس فن میں بوت مشاق ہیں۔

(۳) شرح مفکوۃ کے جس حوالہ کی طرف اشارہ کیا گیا ہے۔ وہ یہ ہے۔ ان ابن عباس کان یقول بحلاف ما قال عصرو من تبته من الصحابة یعنی ابن عباس کئے جی کا عمر و من تبته من الصحابة یعنی ابن عباس کئے جی بر برخلاف اس کے بو کا عمر نے اور اس کے تابعین نے صحابہ میں ہے۔ استی حضرت عمر کے اجاع خابت کرنے ہے مجتمد صاب کا مقصود تب بی خابت ہو سکتا ہے کہ صدیث میں استقمام مقدر نہ سمجما جائے۔ عمریہ ہو تبین سکتا۔ ووسری روایات اور نیز قرید عقلیہ ہمرہ استقمام الکاری کے حدف پر صریح دلالت کردہا ہے۔

این اخیری کلام جس کی طرف مجتد صاحب نے اشارہ کیا ہے وہ یہ ہے۔ قالوا ملشانه العجو

اى اختلف كلامه بسبب المرض على سبيل الاستقام اى هل تغير كلامه واختلط لاجل ما بدعن المرض وهذا احسن مايقال فيه ولا يجعل اخبارا فيكون امامن الفحش او الهذبان والقائل كان عمر ولا يظن به ذلك الماين الر

زہر۔ کما انہوں نے۔ کیا طال ہے آپ کا۔ کیا ہجرکیا آپ نے لین مخلف ہوا کلام آپ کا بہب
مرض کے۔ برسیل استغمام۔ لینی کیا تغیر ہو گیا کلام آپ کا اور مخلط ہو گیا بہب مرض کے۔ اور یہ
احس الاقوال ہے۔ اس کو اخبار نہ بنانا چاہیے۔ کہ فحش یا بنیان ہے ہو اور اس کے قائل حضرت
عمر فعیری کہ جن پر یہ کمان نہیں ہو سکا۔ افتی۔ ابن اٹیر کے اس کلام ہے تو ہماری ٹائید ہوتی
ہے۔ کیونکہ علامہ موصوف صاف فرمارہ ہیں کہ امجر کو اخبار نہ بنانا چاہیے۔ جس سے حضرت عمر اور کھرت محراور
پر بھا اترام عائد ہو۔ لندا اس امرکو تنہ مرکز کہ حدیث مسلم میں فقالوا سے مراد حضرت عمر اور کھرا نہیں جو کے اور
دیگر مانھین ہیں۔ ان رسول اللہ مجر کو اخبار نہیں سمجھ کے۔ بلکہ استغمام مقدر سمجھنا پڑے گا۔ اور
دیگر مانھین ہیں۔ ان رسول اللہ مجر کو اخبار نہیں سمجھ کے۔ بلکہ استغمام مقدر سمجھنا پڑے گا۔ اور

(۳) جمتد ماندب نے جو یہ لکھ دیا کہ سند احمد بن طبل میں ہے کہ حضرت عرفے کما ان النبی مجتد ماند با الحکمان النبی مند میں ہے کہ معدث کس دادی کی سند میں ہے۔ کم انتا قبتا دیتے کہ یہ حدث کس دادی کی سند میں ہے۔ کم انتا قبتا دیتے کہ یہ حدث کس دادی کی سند میں ایسالکھا دیکھا دیکھا دیکھا دیکھا دیکھا دیکھا ہے۔ کہ جمتد صاحب نے کسی راقعی کی کتاب میں ایسالکھا دیکھا ہے۔ اور ان کی کتاب کا نام تک تبیں ہے۔ اور ان کی کتاب کا نام تک تبیں مند در پکر ق ہے جس کی یردہ داری ہو دی ہے۔

طمن قرطان مجتدین شعبہ کی بہت ی تسانیف میں ندکور ہے۔ جو عموما فاری زبان میں ہیں۔ مگر ممل کو خفط تعالی جواب میں نکھا کیا ہے۔ وہ فقیر کے خیال میں سب کے جواب کے لیے کانی ہوگا۔ اندا اس بحث کو یمل فتم کر دیا جاتا ہے۔

واللدهو المستعان وعليه التكلان

باب سوم

اعتراضات و جوالات : اس باب میں بنونق اللی ثقل اکبر یعنی قرآن مجید کے متعلق شیعہ کے اعتراضات مع جوابات ذکور موں کے اور طریق قال اقوال جاری رکھا جائے گا۔ مگر اعتراضات کے آغاز ے پہلے مجھے مناسب معلوم ہوتا ہے۔ کہ جمع و تالیف قرآن کی نمایت مختصر کیفیت حوالہ قلم کی جائے تاکہ ناظرين كوميرے جوابات كے سجحتے ميں آساني مو-و هو الموفق والمعيت وقرانا فوق المران كريم عرصه تنيس سال بين تهورًا تهورًا حسب موقع الريا ربا- وقوانا فوقد لتقراه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا (وه قرآن كوجم نے تھوڑا تھو ڑاكر كا الا الك تم فر تھمر کر لوگوں کو پڑھ کر سنا دو- اور ہم نے اس طرح سے اناراجس طرح انارنا مناسب تھا- (ترجمہ: شیعہ موں نی اسرائل وقال اللين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة كذلك لنثبت به فوادك و و تلنه تو تيلا (اور كيف كي وه لوگ جو منكر بيل كيول نه اثرا اس بر قرآن سارا ايك جكد- اى طرح آنابت ر تھیں ہم اس سے تیرا دل اور پڑھ سایا ہم نے اس کو تھمر تھم کر- ترجمہ شاہ عبدالقادر سورہ فرقان- جب کوئی آیت یا سورت نازل ہوتی تو آخضرت ملائظ اپنے اصحاب کو پڑھاتے اور حفظ کراتے۔ آپ کے اصحاب کویاد کرے ساتے۔ انقان حفظ کے بعد وہ اپنے بچوں کو پڑھاتے۔ اور جو اصحاب نزول کے وقت حاضرنہ ہوتے۔ انہیں بھی بتاتے۔ اس طرح وہ آیت یا سورہ ایک جماعت کیرہ کے سینوں میں مفوظ ہوجاتی۔ بَلْ هُوَ ایْتُ بَیِّنْتُ فِی صُدُورِ اللَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ (بلك وه كلي آنيت ان لوكول كے سينول ميں موجود ہيں جن كوعلم وياكيا ہے- ترجمہ شیعد سورہ عکبوت اجرت سے پہلے جس میں انسار میں مدینہ میں اسلام کی روشنی پھیلنے کی تو نو مسلموں کو قرآن سکھانے کے لیے خاص حفاظ صحابہ مثلاً مععب بن عمیراور عمرو بن ام مکتوم مقرر سے۔ قرآن پاک کی خارق عادت ا شركاب عالم تعاكم جرت كے بعد حدود مدين سے خارج غيرمسلم بچوں كے سينوں بيس بھى كمركر با تعا- چنانچه عمود بن سلمہ کا قصد اس پر شاہد ہے۔ مسلمانوں کو تعلیم و تعلیم قرآن کی ترغیب کے لیے حضور اقدس کا بھی کمناکانی خا کہ خیر کم من تعلم القران و علم (صح بخاری) لین تم میں سب سے اچھا وہ ہے جو قرآن سکھے اور سكمائ - اس ليے آپ ك اصحاب ميں سے ہزار باتھ جن كاكام حفظ كلام اللي تما-مجد نبوى الدوت قرآن ع قرآن سے کونجا کرتی تھی اور خود آقائے نامدار مالکا کاقرآن ساکرتے تھے۔ اور شکر کرتے کہ آپ کی امت میں

ر لے لوگ ہیں۔

جب وی نازل ہوئی تو آن خضرت ملی جاتے کے علاوہ اس کے لکھے جائے کا ارشاد فرا ہے۔

اور ب اے آپ کے سامنے چڑے ۔ پتول درخت خرما کی چھال 'سکریزول پر لکھ لیتے۔ اور حضور پر چیش اور ب اے آپ کی سامنے چڑے ۔ پتول درخت خرما کی چھال 'سکریزول پر لکھ لیتے۔ اور حضور پر چیش کے یہاں تک کہ آپ فرمائے کہ درست ہے۔ کتابت وی کا ارشاد اس لیے نہ تھا کہ آپ کسی بحول نہ جائیں۔ کیونکہ آپ کی شان میں وارد ہے۔ سنڈھڑ لُک فَالاَ تَنْسٰی (عَقریب ہم تم کو پردھائیں گے۔ پھر تم نہ جائیں۔ کیونکہ آپ کی شان میں وارد ہے۔ سنڈھڑ لُک فَالاَ تَنْسٰی (عَقریب ہم تم کو پردھائیں گے۔ پھر تم نہ جورہ علی کہ اس لیے تھا کہ است کو بتا دیا جائے کہ کلام اللی کو کتابت کی صورت میں محفوظ رکھنا اس پرواجب ہے۔ آخضرت میں کنوظ رکھنا اس پرواجب ہے۔ آخضرت میں کے حد مبارک میں کتابت قرآن مسنون ورخصت تھی۔ گر آپ کے بعد فرض وعز میت ہوگئی۔ تاکہ صدور و کتابت ہردو میں حفظ ہونے سے وعدہ اللی مشخص ہو جائے۔ انا فیحن نو لنا الذکر و اناله لحفظون (ہم بی کارکو نازل کیا اور یقینا ہم اس کے محافظ میں۔ (جمہ شیہ سورہ چر)

عرب کی عادت تھی کہ ہرایک نفیس و اہم شے مثال اشعار ضیحہ اور خطب بلیفہ کو لکھ لیا کرتے نے بیسا کہ قصائد سبعہ معلقہ اور اس صحیفہ ہے ظاہر ہے بھیے خانہ کعبہ کی چست میں ویمک چاٹ گئی ملمانوں کو کلام الئی ہے عزیز اور کیا شے ہو سکتی تھی۔ لاڈا ان میں ہے جو لکھنا چاہتے تھے وہ اوا کل اسلام میں بھی جبکہ چسپ کر عبادت کیا کرتے تھے۔ جو آیت یا سورت نازل ہوتی اسے لکھ لیا کرتے تھے۔ اور گووں کے اندر صحائف پر سے پڑھا کرتے تھے چنانچہ حضرت عمرفاروق رضی اللہ تعالی عنہ کے اسلام النے کا قصہ اس پر شاہد ہے۔ خود آخضرت میں تھا ہے کہ اسلام النے کا قصہ اس پر شاہد ہے۔ خود آخضرت میں تھا ہے کہ اسلام النے ہا کہ تعلقہ اس پر شاہد ہے۔ خود آخضرت میں تھا ہے کہ اللہ الربیع الاسیدی۔ معیقیب بن ابی فاطمہ۔ خالد الربیع الاسیدی۔ معیقیب بن ابی فاطمہ۔ خالد البید الی بن سعد۔ منظلہ الربیع الاسیدی۔ معیقیب بن ابی فاطمہ۔ خالد البید الی سعیہ بن العاص۔ معاویہ بن ابی سفیان کو کتابت وتی کے لیے مقرر کر دیا تھا۔ آپ کا تب سے البید فرادیا کرتے تھے اور اصحاب سا کرتے تھے۔ اس طرح نفس آیات کی طرح ہورت میں ترتیب آئیں بھی اس الیت بھی محابر کرام کو معلوم تھی۔ صحیح حدیثوں سے پایا جاتا ہے کہ آیات کی طرح ہورت میں ترتیب الیا میں اور آخضرت میں ترتیب سے معارت جبریل علیہ مقرم مرتب تھیں اور آخضرت میں اور آخضرت میں اور تربیب سے میں اور آخضرت میں کیا کہ میں وارد ہے۔

بیان بالا سے قطعی طور پر ثابت ہوگیا کہ آنخضرت مان کے عمد مبارک میں قرآن کریم مرتب الزیرا کے عمد مبارک میں قرآن کریم مرتب الزیرا معلوم تھا۔ اور ہزار ہا حفاظ کے صدور میں محفوظ اور محالف وغیرہ پر بتر تیب حفظ مسلور تھا۔ الممول من الله یتلوا صحفا مطهرة فیها کتب قیمة (الله کی طرف سے رسول جو ان کو پاک صحفے

روه كرسام ع جن من مخت نوشة موجود مين- (ترجد شيعه - سوره مبينه)

حضور اقدس النابيم كي حيات شريف مين تمام جزيره عرب مين اسلام تجيل مي تعاديمن. بري مهان- بنجد- بلاد مصرور سبعه و قضاعه- طا نف- اور مكه - مدينه وغيره مين جابجامسجدين بن ممكن- كوكي قريها شهر ایبا نه نقا جهال نمازوں میں قرآن نه پڑھا جاتا ہو۔ اور مرد عور تیں اور بیچے قرآن نه سیکه رہے ہوں حضرت صدیق اکبر کی اڑھائی سال کی خلافت میں مسلمانوں نے قارس وروم پر حملہ کیا- اور بمامہ کو فعملا قرآن کی قراء ت و تلاوت زیادہ ہوگئی۔ چو تکہ بمامہ کی لڑائی میں بہت سے قاری شہید ہو گئے۔ اس لے حضرت عمر بناتھ نے حضرت ابو بكر بناتھ كو صلاح دى كه قرآن جو مختلف چيزوں پر مكتوب اور سينوں ميں مخنونا ہے- اس کو کاغذوں پر یکجا جمع کر دیا جائے حضرت صدیق اکبر نے آخر کار حضرت فاروق اعظم سے اندال رائے کیا اور حفاظ صحابہ کو جمع کیا۔ حضرت عمرفے اطراف مدینہ میں منادی کردی کہ جس کے پاس کول قطعہ ہو۔ جس پر قرآن لکھا ہو۔ وہ معجد میں لے آئے۔ اس پر بہت سے قطعات لائے گئے۔ مرکوئی قطعہ تبول ند کیا جاتا تھا۔ کاوفتیکہ شادت سے محقیق نہ ہو جائے کہ وہ آتحضرت ملی کیا کے حضور میں لکھا گیا تا اس سے غرض میر تھی کہ ای قطعہ سے نقل کی جائے۔جو رسول اللہ طائع کے سامنے لکھا گیا ہو اور مزد احتیاط کے لیے قطعات مررہ کا مقابلہ مررہ کا مقابلہ بھی کر لیتے تھے۔ قرآن محابہ کرام کی ایک بدی جامت کے سینوں میں محفوظ تھا۔ پھر باوجود اس کے قطعات سے جمع کرنا تقریر برتقریر تھا۔ کسی قطعہ کی نبت شمادت طلب کرنے سے مراد نہیں کہ وہ اس کی قرآنیت کو شمادت سے ثابت کرتے تھے۔ کیوں کہ قرآن تو ان کو قطعا اور یقینا معلوم تھا۔ اور ان کے نزویک غیر قرآن سے متمیز تھا۔ بلکہ یہ ساری محقیق و تعیق محض بنا ہر احتیاط و تاکید تھی۔ قرآن چو نکہ سب کاسب متواتر ہے اس لیے جب تک کہ تمام محابہ انفاق نه كريلية تنه و اور ان كا اجماع نه موجاتا تعا- حضرت زيد بن ثابت نه لكه سكة تنه - غرض اس احتياط كم ساتھ تمام قرآن حضرت زید بی نے لکھا۔ زیدندکور کا بیان ہے کہ میں اس طرح قرآن کی طاش کر؟ رہ اور شاخ خرما۔ سکریزوں۔ چمڑوں - اونٹ یا بکری کے شانہ کی ہڑیوں وغیرہ سے اور حفاظ کے سینوں سے تن كرا را- يمال تك كه جم سوره توبه كى اخردو آيت يعنى لقد جاء كم وسول من انفسكم الله والله وہ جمیں لکسی ہوئی نہ ملیں کو یاد تنمیں۔ تلاش کے بعد ابو خزیمہ انساری کے پاس لکسی ہوئی۔ غرض اس ملما اجماع محابہ سے جمع قرآن کا اہم کام سرانجام پایا۔ ایسے اجماع کے بعد کوئی بید نمیں کمہ سکتا۔ کہ اس قرآن مجل علیہ میں آنوں اور سورتوں کی ترتیب اس طرح نہ تھی جس طرح کہ محابہ کرام نے رسول اللہ ساتھ او طادت فراتے ساتھا یا کتابت میں اس رسم خط کے خلاف کیا گیا۔ جو آتخضرت مالیکیا کے حضور میں اختیار کیا گیا تھا۔ خلاصہ كلام يد ب ك جمع قرآن كا ايم كام بلحاظ ترتيب و لظم در بم ايس قطعي طور سے صورت پذير بواك اس بيل كا

نے زراجی اختلاف نمیں کیا- اور یہ امر مختاج بیان نمیں کہ مجموع سارے کا سارا متواتر- عرضہ اتحرہ کے مطابق اور منوخ الثادة آیات سے پاک تھا-

نا قرین! یہ محلبہ کرام کا ہم پر سب سے بڑا احسان ہے کہ انہوں نے کلام اللی کو جوں کا توں کا توں کا قرن بیں یجا جع کر دیا۔ اور اس کارا خیر میں حضرت صدیق اکبر اعظم الناس اجرا ہیں۔ یہ صحف مجمع ملیما حضرت مدیق اکبر کے بعد حضرت فاروق اعظم کے بعد حضرت مدیق اکبر کے بعد حضرت فاروق اعظم کے بعد حضرت مندیہ بنت عمر دمنی اللہ تعالی عنما کے پاس تھے۔

حضرت مدیق اکبر کی وفات شریف کے بعد حضرت فاروق اعظم کے عبد مبارک میں فارس۔
شام- جزیرہ اور معرفتم ہوا۔ شہرول میں جابجا محدیں بنائی گئیں۔ قرآن نقل کئے گئے۔ آئمہ قرآن سایا
کرتے۔ اور مکاتب میں بچوں کو قرآن پڑھایا جاتا تھا۔ حضرت عمر بواٹھ کی وسیع سلطنت میں ہزار ہالنے قرآن باک کے بول گے۔ جن میں سے کسی میں ایک حرف تک کا فرق نہ تھا۔،

حضرت عثان بڑائنہ کے عہد مبارک میں ایضے مسلمان وو سروں سے کئے گئے کہ ہمارا حرف قراء ت رافت) تہمارے حرف قراء ت سے بہتر ہے۔ چو نکہ اس سے مسلمانوں میں اختلاف عظیم کا خدشہ تھا اس لیے حضرت ذوالنورین بڑائنہ نے قرآن حفعہ طلب کیا جس میں احرف سبعہ ثبت تھیں۔ اور صحابہ کرام کو جن کی تعداد خاص مدینہ منورہ میں بارہ ہزار سے زاکہ تھی جمع کیا۔ اور ان سے مشورہ کیا۔ مشورے کے بعد حضرت عثان غنی نے حضرات زید بن ثابت۔ عبداللہ بن ذہیر۔ سعید بن العاص اور عبداللہ بن مارث بن بہتام کو تھم دیا کہ احرف سبعہ میں سے صرف حرف واحد لینی لفت قرایش برقرار رکھ کر ان صحف کو بن بشام کو تھم دیا کہ احرف سبعہ میں سے صرف حرف واحد لینی لفت قرایش برقرار رکھ کر ان صحف کو معاملہ میں نقل کرد۔ چنانچہ پانچ یا سات مصاحف کھے گئے جن میں سے ایک مدینہ منورہ میں رکھا کیا باتی میں اور کہ شام کوفہ بھرہ یمن اور بھری بی اور اس میں بو اس وقت قرآن مجید ہے اور اس میں اور اس میں اور اس میں بو اس وقت قرآن مجید ہے اور اس میں اور اس میں بو اس وقت قرآن مجید ہے اور اس میں اور اس کی مرف منوجہ ہوتے ہیں۔

قال السيد امداد امام

معظمان قرآنی واضح ہو کہ جناب رسالت ماب نے حدیث انقلین کی رو سے تمام مسلمانوں کو قرآن اور اہلیت کے ساتھ فرمایا تھا گر معفرت عمر ابن الخطاب نے موالیت کے ساتھ فرمایا تھا گر معفرت عمر ابن الخطاب نے موق قرآن کے ساتھ مرف قرآن کے ساتھ میں کہ خود قرآن کے ساتھ

متمسکاران قرآن کس نیج سے پیش آئے عمد معزت ابو بحریس عظم معزت سے قرآن جمع کیا گیا۔ اس کہ کے لیے خلافت اولی کی طرف سے زید بن ثابت ابی بن کعب وغیرہ واسطے جمع کرنے قرآن کے مقرب کے لیے خلافت اولی کی طرف سے زید بن ثابت ابی جمع کردہ قرآن معزت بالاکا مسلمانوں میں مرد شرکتے چنانچہ ان معزات نے قرآن کو جمع فرمایا۔ بھی جمع کردہ قرآن معزت بالاکا مسلمانوں میں مرد شرب کے چنان کی خلافت کا آیا۔ تو آب نے چند اشخاص کے ذریع سے آن کی موج و تر تیب سے نہ صرف مقدم آبیتیں مابق کے نو بائے کی تھی و تر تیب سے نہ صرف مقدم آبیتیں مابق کے نو بائے گئی موجر میں داخل ہو گئیں۔

یا یہ کیے کہ بہت می مرنی آیتیں کی آیتوں میں اور کی آیتیں مرنی آیتوں میں جاملیں۔ بلکہ کو الفاظ کے ترک سے منصوصی حیثیت علی المرتضیٰ اور آل محمد کی بھی جاتی رہی۔ لاریب اہلیت نبوی کی حیثیت کا یہ نقصان حضرت عمر کے قول حسبنا کتاب الله کا معین تو ہوا لیکن اسے نقصان قرآن کے مسوا اور کیا کہہ سے جیں۔ کوئی شک نہیں کہ ایسے متروکات سے قرآن کے ظاہری کمال میں نقص آلا عشل صحح کے زدیک یہ ترتیب عثانی ہر گر کھمل نہیں سمجی جاسکتی ہے۔ واضح ہو کہ حضرت عمان کے قرآن کی تھج و ترتیب کا تھم اس بنیاد پر دیا تھا کہ حضرت ابو بکر کے نسخہ بائے قرآن میں جو اختلاف قرات قرآن کی تھج و ترتیب کا تھم اس بنیاد پر دیا تھا کہ حضرت ابو بکر کے نسخہ بائے قرآن میں جو اختلاف قرات و غیرہ پائے جاتے تھے۔ تھجے و ترتیب سے مث جائیں گے۔

وہ اختلافات تو مث گئے۔ گر حصرت علی اور آل محمد الیم کاروائی ہے بہ اسباب ظاہر بنے گھاٹے ہیں پڑ گئے۔ قرآن کی تھیج و تر تیب کے لیے ذید بن حارث عبدالر ممن بن ذیبر- سعد بن العائل اور عبدالله بن الحارث بن بشام مقرر کئے گئے۔ تھے۔ اور ان حضرات کو علی کے ساتھ کھلے طور پر عداوت تھی۔ اختلافات قراء ت کی بنیاد پر ان حضرات نے لفظ آل محد اور جس علی کے نام کے کو بھی جو چند مقام با کھی۔ اختلافات قرآن تھا۔ قرآن تھا۔ قرآن سے خارج کر دیا۔ بلاشبہ سے امر بھی قول عمری کی طرح حدیث کی تاثیر کا مطاف والا عبد ہوا اس واسطے کہ جب علی اور آل محمد کی منصوصی حیثیت باتی نہیں رہی تو آیندہ آپ حضرات کے ساتھ کیوں کوئی متمک ہوئے گا۔ چنانچہ حضرت معاویہ اور حضرت کے صاحبزادے اور دیگر اشخاص بھی ساتھ کہی مشمک نہ ہوئے۔ مصرت علی بڑاتھ امام حسین کے ساتھ کہی مشمک نہ ہوئے۔ مصراح الظام والیشاح البحم۔

نعی نے بواس قول کی شرح میں لکھا ہے وہ بھی حوالہ گلم ہو چکا ہے۔ اگر ضرورت ہو تو اس کتاب کا صفحہ علا ہے کہ مطرت عثمان کے عمد میں قرآن کی تقیع و ترتیب از مرنو ہوئی۔ جس سے مطرت علی اور جو یہ لکھا ہے کہ مطرت عثمان کے عمد میں قرآن کی تقیع و ترتیب از مرنو ہوئی۔ جس سے مطرت علی اور بو ہے۔ آل محربہ اسباب ظاہر بڑے کھائے میں بڑے گئے۔ بالکل غلط ہے۔ جیسا کہ تاریخ القرآن کے مطالعہ سے ، جو بیان ہو چکی ہے ظاہر ہے۔ حضرت زید بن شابت وغیرہ کو حضرت علی اگا دستمن بتانا مصنف کا محض وہم بریاں ہے۔ معرت معاویہ وغیرہ کی تبعت جو لکھا ہے۔ اس کا ذکر مناسب موقعہ پر آئے گا۔ انشااللہ تعالی۔ قال السيد امداد الام جائے لحاظ ہے كه قول حسبنا كتاب الله كى برولت دوامر بزرگ مى سے ايك امریزرگ کینی تمسک به الل بیت تو متروک ہو ہی چکا تھا۔ اب دو سمرا امریزرگ جو قرآن تھا اس میں اس طرح ی کتر ہونت کی گئی۔ کہ سول اللہ کے بعد علی جو اہلیت کے سردار تھے۔ ان کی منصوصی سرداری یا امامت معرض زواع ہو میں۔ عموما السنت می کہتے ہیں کہ قرآن میں تو نام کسی اہلیت کا نہیں دیکھا جاتا ہے بجرامامت ینی مرداری علی کی یا کسی اور اہل بیت کی کیونکر قرآن سے ثابت ہو سکتی ہے۔ اب میں دکھلانا جاہتا ہوں۔ کہ رورت على كروقت ميں ايسے قرآني انقلابات بيدا ہوئے كه جو على مرتفے كى منصوصى سردارى كو امت محمرى ے زنامی بنانیوالے ہو گئے۔ واضح ہو کہ عمد آنخضرت میں آیت بلغ یارہ 6 رکوع 14 کی قراء ت یوں ہوتی تھی۔ یا ابها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك ان عليا مولى المومنين به عمرًا ان عليا مولى المومنين كا قرآن موجود سے خارج کر دیا گیا۔ اس ترک کا بورا پند تفاسیر قرآن سے لگتا ہے۔ (دیکھا در منشور تفسیر علامہ بلال الدين سيوطي و كتاب مفتلح النجا مرزا محمد ابن معتمد خال بد خشاني) اس طرح مفسرين لكهة بي كه قراء ت ابن مسعود میں سمفی اللہ المومنین القتال کے بعد معلی ابن ابطالب کا مکرا واخل تھا۔ چنانچہ ای ور مٹور اور مفاح النجامیں ابیا ہی لکھا ہوا ہے۔ پھر تعلی اپنی تفسیر میں اپنے استاد الی وائل سے روایت كتين كه بم نے مصحف عيدالله بن مسعود كو جويڑهاتو آيه ان الله اصطفى ادم و نوحا و ابراهيم وال عموان على العلمين مين آل عمران كے بعد آل محمر كالفظ موجود تفااس سے معلوم ہواكہ مصحف ابن مسود کے وجود تک مید لفظ ال محمد کا واخل قرآن تھا اور قرآن کے بڑھنے والے اس کو بڑھا کرتے تھے۔ گرتعجب ہے کہ عثمان اور حضرت کے کارکنال نے اس لفظ کو نامعتبر سمجھا اور اسے قرآن سے خارج كرديا- كياعلى اور آل محمر كے الفاظ كے نكال والنے ير قرآن كى تھيج موقوف تھى اہل انصاف خود اس كى تجویز کرلیں راقم کواس سے زیادہ عرض کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ مگرجو روز سیاہ ابن مسعود کو اس قرآنی قصہ میں پیش آیا وہ نمایت ملال انگیز ہے۔ جب اس جلیل القدر صحابی نے اپنے نسخہ قرآن کو حضرت وال کے حوالہ کرنے سے انکار کیا تو خوب ان پر مار بڑی (دیکھو نمایہ العقول امام نخرالدین رازی اور

نجاۃ الموسنین ملا محس سمیری اور بھی معارف ابن قتیب) بائے بیچارے ابن مسعود کا قرآن کا قرآن کیا اور بھی بدن کی مرمت الگ ہوئی ان رمیمانہ کا روائیتوں کا جواب ابن مسعود کیا دے سکتے تھے مار کھا کر چہ ہو رہے۔ گر نمایت غفیناک ہوئے۔ اور حفرت فلیفہ کی شمان میں جو پچھ ارشاد فرمایا راقم کو اس کے اعادہ کی مرورت نہیں ہے۔ گر ایک زبائی خلکی سے کیا ہو تاہے۔ تھم حضرت فلیفہ سے آپ کے والد ہزرگوار کا قرآن بھی ابن مسعود اور دیگر افتخاص کے نسخہ بائے قرآن کے ساتھ فاک کے برابر کردیا گیا۔ مصاح الملم والیناح البیم۔

اقول بحد الله المنت سے تمسک عاصل ہے اور رہا ہے جیبا کہ اس کتاب کے دو مرے حدین انشاالله تعالی ندکور موگا- ربا ثقل اکبر سو شرقاغما البسنت کامعمول بیه ہے- اور اس کی نسبت ان کاعقید، ہے کہ یہ کلام اللی غیر محرف و کامل ہے۔ مگرشیعہ کا معالمہ اس کے بالکل بر تکس ہے۔ اسلام میں شیعہ بالا فرقہ ہے جس نے اہلیت کی مخالفت کی کیونکہ خوارج جنہوں نے حضرت مولی مرتفی کرم اللہ تعالی وجہ کی خالفت کی وہ شیعہ تھے۔ اور شیعہ ہی پہلا فرقہ ہے جس نے قرآن کا انکار کیا۔ خلافت بلا فصل حب عقیدہ شیعہ اطل اصول دین ہے۔ انہوں نے جب دیکھا کہ نماز روزہ وغیرہ کے مسائل او قرآن کریم یں موجود ہیں۔ حالا نکہ بیہ ایسے ضروری نہیں۔ مگر خلافت بلا فصل کا اس میں ذکر تک نہیں اس لیے دہ قرآن میں تحریف کے قائل مو گئے۔ اور کئے گئے کہ فلال جگہ سے لفظ آل محد حذف کر دیا گیا ہے۔ اور فلال آیت سے فقرو ان علیا مولی المومنین نکال ویا گیا ہے۔اس قتم کی روایتیں ان کی معتر کتابول میں بھوت من ہیں۔ گر بطور الزام وہ ہماری کتابوں کے حوالے بھی پیش کرتے ہیں۔ جیسا کہ مصنف نے یمال کیا ہے۔ جواب میں گزارش ہے کہ کسی روایت کا محض کسی کتاب تفسیریا تاریخ میں منقفول ہوتا اس کی صحت کیا ولیل نمیں ہو سکتا بغرض تو صبح ہم ور متثور اور تفسیر تعلی ہی کو لیتے ہیں جن کا مصنف نے حوالا دیا ہے۔ شیعہ جن آیات و احادیث و آثار سے حضرات شینین بناٹھ کی فضیلت ثابت کرنا جاہتے ہیں۔ ان کاذکر كرتے ہوئے مولانا شاہ ولى الله رحمت الله قرة العينين (مطبوعه مجتاباتى والى 281-283) ميں يول تحرير فرائے ہیں- تفصیل این اجمال آنکہ درامت مرحومہ منسوب بذریت حضرت مرتفے فرق ضالہ بسیار شدہ اندائد المميه و زيد به و اسلميليه و تناعيه وبإطنيه وغيره البتال و تحقيت چندال شعب نداهب واختلاف آراد تنزل ورامل و فروع که از دریت حفرت مرتضی برخاسته است یج شعبه و اختلاف بوجو دنیا دراست و برج ازيشال وائل بودند عذب خود بلكه بسيارے انبيال بوضع احاديث برائے تروي نهب خود جوير ميكرديم خواہ این وضع صریح باشد خواہ بتا دیل مثال وضع بتادیل آنست کہ امامیہ گفتہ اند ہرج از مصوب این شود نسبت آل محفرت پیغامبر درست است از را که معصوم نے گوید الا موافق علم پیغامبرو جع از لفن

وليم طرق غريبه غاينة الغرابه كه سلف يوجود كوشش بسيار آنرا نيافتند وعرض ايثال ازيس جمع آل روكه بعد جمع حفاظ محدثين درآن حديث تامل كنند موضوعات رااز حسان لغير بإمتاز نمايند چنانكه امحاب مانید طرق احادیث جمع کردند و غرض ایشا آن بود که حفاظ محدثین متواتر مشهور و مستفیض و میج و حسن و غیب ضعیف و غریب غیرضعیف از یکد گیر ممتاز سازند و آنچه ، مفته و تفسیروا عتقادر قاق تعلق وارد در محل خود بکار برند وظن هر دو فریق را خدا تعالی محقق ساخت پس بخاری و مسلم ترمذی و حاکم تمیز احادیث كردند-وتكم معجت وحسن نمودند- وابوداؤد و نسائي ودار قطني بهيقي برائے نقه تصانيف نبودند كه احاديث كه مقته تعلق دراد جدا ساختند- وابوالشيخ وابن مرددويه وابن جرير در تغيير تصانيف ير داختند واحاديث مناسبه بآیات ایراد نمودند- و آخری و بیهی در عقیده خود آنچه معقاید مناسب بود مجرد نمودند وجمینال متاخران دراحادیث خطیب وطبقه او تصرف نمودند این جوزی موضوعات را مجرد ساخت- و سخاوی در مقاصد حسنه حمان لغيمها از ضعاف ومناكير مميّز نمود- سيوطي در در متثور جمع احاديث مناسبه بقرآن نمود قطع نظراز صحت وسقم تامحدث آنهاراميران علم خود بسنجدو برحديث ورمحل خودش مكرارد- وخطيب وطبقه او راز خود این عار رازاکل ساخته اندزیراکه در مقدمات کتب خود باین مقاصد تقریح نموده اند جزاجم الله تعالی عن امتى النبي النبيام له خيرا صاحب جامع الاصول نقل كرده است كه خطيب از شريف مرتف براور رضى احادیث شیعه روایت کرده است- وسیوطی دراول جمع الجوامع ذکرنموده که این کتب متفردا ند برائے ضعاف لى أكر كے از جمع الجوامع ور منتور مائند آن احاديث ضيفه جمع كند وخلاف مذهب الل سنت و جماعت تروت كمايد ملاوميتوال كفت-

> قان سمنت لا تدری الک میست فان سمنت تدری فالمعیست اعظم

ودريس احادث چيز بااست كه بالقطع معلوم البطلان است انتقى بلفظ

(ترجمه) اس اجمال کی تفصیل بیہ ہے۔ کہ امت مرحومہ میں ذریت معزت مرتمنی سے منہر رب مراه فرقے بہت ہوئے ہیں۔ جیسا کہ امامیہ زیدیہ اسلامیلید- تنامعیہ وغیرہ حقیقت میں جتناانظانی رو رست اور اختلاف آرا اور اختلاف اصول و فروع حضرت مرتنی کی ذریت سے پیدا ہوا ہے اور کس ایا کتنا اختلاف ظہور میں نہیں آیا۔ ان میں سے ہر فرقد اپنے اپنے ند جب کی طرف بلا اتھا۔ بلکہ ان میں سے بت ے اپنے ذہب کے رواج دینے کے لیے حدیثیں وضع کرنا جائز سجھتے تھے۔ فواہ وہ وضع مرت ہویا اویل کے ساتھ تاویل کے ساتھ وضع کی مثال میہ ہے کہ اماسیہ کہتے ہیں کہ بھی معصوم سے جو مکم ثابت ہو اے حضرت پنجبرے منسوب کرنا درست ہے کیونکہ معصوم وہی کتا ہے جو پینجبر کے علم کے موافق ہو-اورب گروہ اس بات سے نہیں ڈر تا کہ متن حدیث کی الی وجہ سے تقریر کرے جو اس کے منہوم کو حطوق کردے اور اس کے اشارہ کو صریح بنا دے اور ایک گروہ صدیث کی ایک وجہ سے وارد ہونے کے سیب کہ جیسا وہ خود سمجھا ہے۔ اے قصہ کے درمیان وافل کردیتا ہے اور سوق مدیث کو درہم برہم کر دیتا ہے۔ وغیرہ وغیرہ - زیدبیہ کو ایسا اتفاق ہوا ہے کہ قریباسو مرتبہ انہوں نے سلطان وقت بر خروج کیا ہے۔ اور لوگوں کو اپنی طرف بلایا ہے۔ ان کی غرض یہ تھی کہ خلافت حضرت مرتضیٰ کا حق تھا ان کے بعد حضرات حسنین کا حق تھا۔ اور ان کے بعد ہر فاطمی عالم جو تکوار کے ساتھ خروج کر سکتا ہو۔ اس پر خروج واجب ہوتا ہے،- اور بیر شرط اس بات کا باعث ہوئی کہ وہ اسینے جھوٹے دعاوی کو مقلوبتہ المن والند حدیثوں سے نفویت دیں۔ جب علم حدیث کی نوبت ویلمی و خطیب وابن عسا کر کے طبقہ کو پہنی توان بزرگوار نے دیکھا کہ صیح و حسن حدیثوں کو متقدین نے صبط کر لیا ہے۔ اور اس بات میں کوشش کی محنجائش نهیں رہی۔ پس وہ اس بات کی طرف مائل ہوئے کہ ان ضعیف و مقلوب حدیثوں کو جن کریں جن کو سلف نے دیدہ و دانستہ چھوڑ دیا تھا۔ اور نمایت غریب طریقوں کے جمع کرنے کی طرف جھے کہ جو سلف کو باوجود بہت کوشش کے نہ ملے تھے۔ اس جمع کرنے سے ان کی غرض یہ تھی کہ جمع کئے جانے کے العد حافظ محدثین ان حدیثول میں غور و تامل کریں۔اور موضوع حدیثوں کو حس تغیر ہاسے جدا کردیں جس طرح اصحاب مسانید نے احادیث کے طریقے جمع کر دیتے۔ اور ان کی غرض یہ تھی کہ حفاظ محد ممبن ان میں سے متواثر مشہور۔ مستغیض۔ صحیح۔ حسن غریب ضعیف اور غریب غیرضعیف کوایک دوسرے ع الگ كر و كھائيں- اور ان ميں سے جو نقه و تغييرو اعتقاد و وعظ كے متعلق ہوں ان سے اپنے اپنے محل؟ كام ليس- بردو فريق كے ظن كو اللہ تعالى في يوراكر ديا۔ چنانچه بخارى ومسلم و ترندى و حاكم في احادث الله مميز كي- اور ان پر صحيح- حسن مونے كا حكم لكا ديا- اور ايو داؤد ونسائي و دار قطني و بينتي نے فقه مي

تمانی کیں اور جو صدیثیں فقہ کے متعلق تھی ان کو الگ کیا۔ اور ابو الشیخ و ابن مردویہ و ابن جرہے نہ شہر می تصانیف کیں اور ان میں آیوں کے مناسب صدیثیں لائے اور آجری اور آبھی نے اپنے عقیدہ میں وہ صدیثیں لکھیں۔ جو عقاید کے مناسب تھیں۔ ای طرح متاخرین نے خطیب اور اس کے طبقہ کی صدیثوں میں تصرف کیا۔ چنانچہ ابن جوزی نے موضوع صدیثوں کو الگ کر ویا۔ اور سخاوی نے مقاصد حسن میں حمان فقیم اکو ضعیف و مشرصد یہوں سے جدا کر ویا۔ اور سیوطی نے در مشور میں صحت و سقم سے قطع میں حمان فقیم اکو ضعیف و مشرصد یہوں سے جدا کر ویا۔ اور سیوطی نے در مشور میں صحت و سقم سے قطع کو آن کے مناسب صدیثیں جمع کیں تاکہ کوئی محدث ان کو اپنے علم کے ترازو سے تولے اور ہر صدیث کو اس کی جگہ میں رکھے خطیب اور اس کے طبقہ نے اپنے آپ سے اس عیب کو دور کر ویا ہے کہ کہ انہوں نے اپنی تمان کہ اس میں میں ان مقاصد کی تصریح فرمادی ہے۔ جزاہم اللہ تعالیٰ عن است کی جگہ انہوں نے اپنی تمان مواصل نے نقل کیا ہے کہ خطیب نے رضی کے بھائی شریف مرتشنی سے شید کی صدیثیں روایت کی جیں۔ اور سیوطی نے جن الجوامع کے شروع میں ذکر کیا ہے۔ کہ یہ کنائیں ضعیف حدیثیں روایت کی جیں۔ اور سیوطی نے جن الجوامع کے شروع میں ذکر کیا ہے۔ کہ یہ کنائیں ضعیف حدیثیں حدیثوں کے لیے مخصوص ہیں۔ یہ آگر کوئی شخص جن الجوامع یا در مشور یا ایک کی اور کتاب سے ضعیف حدیثیں جن کر دے۔ اور الجسنت و جماعت کے ذہب کے ظاف ان کو روان و دے تو جم اس سے شعیف حدیثیں جن کر دے۔ اور الجسنت و جماعت کے ذہب کے ظاف ان کو روان و دے تو جم اس سے کہ جن س۔

فان کنت لا تدری فتلک مصیبته اگر توشیں جاتا توید ایک مصیبت ہے۔ وان کنت تدری فالمصیبة اعظم

اور اگر تو جانیا ہے تو یہ مصیبت اس سے براہ کرہے۔

اور ان حدیثوں میں الی باتیں ہیں جن کا باطل ہونا قطعی طور پر معلوم ہے۔ انتھی بیان بالا سے معلوم ہوا کہ دومتور اور اس قتم کی اور کتابوں کی کوئی حدیث ہم پر جبت نہیں۔ تاوقتیکہ اصول روایت و درایت پر بوری نہ اقرے روایت ورمنٹور جو مصنف نے پیش کی ہے۔ اس کے الفاظ یہ ہیں۔

اخرج ابن مردویه عن ابن مسعود قال کنا نقرا علے عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم یاایها الرسول بلغ ماانزل الیک من ربک ان علیا مولی المومنین وان لم تفعل فما بلغت رسالته والله یعصمک من الناس- (در مترر 2 ال ال ۲۹۸)

این مردویہ نے بروایت این مسعود نقل کیا ہے۔ کہ کہا این مسعود نے کہ ہم رسول الله ملی ایک کے عمد میں یوں پڑھا کرتے تھے۔

يا ايها الرسول بلغ ماانزل البك من ربك ان عليا مولى المومنين وان لم تفعل فما

بلغت رسالته والله يعصك من الناس التي-

اولا حضرت عبداللہ بن مسعود جلیل القدر صحابی ہیں۔ ابن مردوب یعنی مافق ابو کر احمد بن مور و مسلم اللہ کی وفات 410 میں ہوئی پس ورمیانی سلسلہ رواۃ ندراد ہے۔ اور بغیراسالو کے رواعت ی صحت و سقم کا حال معلوم ہونا متعذر ہے۔ للذا مخالف اس رواعت کو بطور جمت ہم پر پیش نہیں اسک عانیا اللہ تعالی قرآن کریم کی نسبت فرماتا ہے۔ وانا له لمحفظون یعنی ہم بی اس کے جمہن سکتا عانیا اللہ تعالی قرآن کریم کی نسبت فرماتا ہے۔ وانا له لمحفظون یعنی ہم بی اس کے جمہن ہیں۔ پس اگر یہ فقرہ قرآن میں ہوتا تو آنحضرت ساتھیا کے بعد کوئی اے قران سے فارج نہ کر سکا تھ اس سے عابت ہوا کہ یہ رواعت موضوع ہے۔ اس کے وضع کرنے والے شیعہ ہیں جنوں نے فارف اس سے طاف ہیں۔ چنانچہ آیت زیر بحث کے متعلق بلا فصل کے عابت کرنے کے دو ہزار سے زاید روایتی وضع کرنے والے شیعہ ہیں جنوں نے متعلق بلا فصل کے عابت کرنے کے لیے وہ ہزار سے زاید روایتی وضع کیں۔ چنانچہ آیت زیر بحث کے متعلق تفیر تی اور تغیرصافی ہیں کھا ہے کہ کہ آیت ایوں اقری تقی۔

یا یہ الرسول بلغ مانزل الیک من ربک فی علی و این لم تفعل فما بلغت رسالته لین اے پیغیراللہ تعالی نے ہو کھ علی کے بارے میں آپ پر نازل کیا ہے اسے پیغیاد ہے اگر آپ الیانہ کریں گے تو آپ اللہ تعالی پیغام خدا کو نہ پینچائے والے ٹھریں گے۔ انہی اس سے مترقع ہوتا ہے۔ کہ شیعہ کے نزدیک آنخضرت التی بیا مرالت محض تبلیخ ظافت بلافصل میں مخصر تی۔ موتا ہے۔ کہ شیعہ کے نزدیک آنخضرت مراد لیتے ہیں۔ جو بالکل فلط ہے۔ مفصل بحث قصہ فم غدیم شیعہ لفظ مولے سے اولے بالتھرف مراد لیتے ہیں۔ جو بالکل فلط ہے۔ مفصل بحث قصہ فم غدیم میں انشااللہ تعالی آئے گی۔ اب احمد بن محمد بن ایراجیم تعلی صاحب تفیرا کشف والبیان کی بابت سنتے امام تعلی اخباری ہیں جن کا کام قصص واخبار بیان کرنا ہے۔ خواہ وہ صحیح ہوں یا غلط چنانچہ صاحب کشف انظنون (جر اول 300ھ) طبقات مفسرین کا ذکر کرتے ہوئے کہتے ہیں۔

والا خبارى ليس له شغل الاالقصص والتيفاق ها والا خبار عمن سلف سواء كانت صحيحه او باطلة ومنهم الثعلبي-

لین اخباری کا کام بجراس کے نہیں کہ قصے بیان کرے اور انہیں پوری طرح لائے اور گزشتہ لوگوں کے حالات بتائے اور الیے مفسروں میں سے تعلی ہے۔ انتھی پس تعلی کی تغیرر کیا اعماد ہو سکتا ہے؟ تعلی کاسنہ وفات کے ۱۳۲۷ھ ہے مصنف کی عبارت سے متباور ہوتا ہے۔ کہ تعلی کے استاد الووائل نے مصحف ابن مسعود کو پڑھا۔ جس سے معلوم ہوتا ہے کہ مصحف ابن مسعود پانچویں صدی ہجری تک موجود تھا گریہ صرح البطلان ہے۔ کیونکہ مصنف خود لکھ رہائے معمف ابن مسعود کو حضرت عمان دولت کے سامت کر دیا اگر تعلی یا مصنف کی پچھ اور مراد ہے تو پوری مسئد پیش ہوئی جا ہیے غرض سے روایت بھی موضوع ہے۔ اور اس کے وضع کرنے دالے دی این

جو قرآن موجود کو محرف بتا رہے ہیں جُوت کے لیے اس کتاب کا صفحہ 29 کا ماحظہ ہو۔

حفرت ابن مسعود کے ساتھ قرآئی قصہ میں جو بد سلوکی کا ذکر کیا گیا ہے وہ بے اصل ہے شیعہ کی مادت ہے کہ غیر مشہور نادر الوجود کتابوں کا حوالا دیتے ہیں۔ نمایت العقول اور نجات المومنین مادت ہے کہ غیر مشہور نادر الوجود کتابوں کا حوالا دیتے ہیں۔ نمایت العقول اور نجات المومنین ہیں۔ بان فتیہ دو ہیں۔ ایک سف وو سرا رافضی۔ شاید رافضی کی کتاب میں اس بد سلوکی کا پچھ ذکر شیعہ کا ایک فریب ہے۔ جس کی تشریح تحف الثا عشریہ ص می کی عبارت ذیل سے ظاہر ہے۔ کید فرز ہم آنکہ ور اساء والقاب رجال معرین اہل سنت نظر کنند و ہر کراا ذجال خود شریک نام ولقب اویا بنہ صح اس میں نشود پس نمیاں نا واقف اور الماسے ازائمہ خود اعتقاد کنند۔ وروایت اور احمل اعتبار شار ند ماس کی کہ دو کس اند سدی کیر وسدی صغیر کبیر از معتبرین وثقات الجسفت است۔ وصیفر مثل سدی کہ دو کس اند سدی کبیر وسدی صغیر کبیر از معتبرین وثقات الجسفت است۔ وصیفر رافضی غالی ست وعبداللہ بن مسلم بن فتیبہ کہ در الجسفت محدودے شود و کتاب المعارف رامل از تصانف ہمیں اخیر است اما آل رافضی غیز کتاب خود رامعارف نام کردہ کا شنباہ صاصل دراصل از تصانف ہمیں اخیر است اما آل رافضی غیز کتاب خود رامعارف نام کردہ کا اشتباہ صاصل موروں ا

ترجمہ: انیسوال قریب شیعہ کائی ہے کہ المسنّت کے ہاں جو لوگ معتبر سمجھے جاتے ہیں۔ وہ ان کے اسام و القاب پر نظر ڈالتے ہیں اور اپنے اشخاص میں ہے جس کو سی کے نام و لقب میں شریک پاتے ہیں اس کی عدیث و روایت کو اس سی کی طرف مغموب کرتے ہیں۔ اور نام و لقب میں اتحاد کے سبب میں مثریک پاتے ہیں۔ اس کی عدیث وہ روایت کو اس سی کی طرف مغموب کرتے ہیں اور نام و لقب میں اتحاد کے سبب وہ دولوں میں تمیز نہیں رہتی۔ پس سی بیچارے اس کو اپنے اماموں میں ہے ایک امام سمجھے جاتے ہیں۔ اور اس کی روایت کو معتبر خیال کرتے ہیں۔ مثلا سدی دو فخص ہیں۔ سدی کبیر اور سدی صغیر کر این قال سے ہے۔ اور الفنی غلل ہے۔ اس طرح این قتیبہ بھی دوہیں۔ ایک ابراہیم بن قتیبہ جو غالی رافضی ہے۔ دو سرا عبداللہ رافنی غلل ہے۔ اس طرح این قتیبہ بھی دوہیں۔ ایک ابراہیم بن قتیبہ جو غالی رافضی ہے۔ دو سرا عبداللہ بن ملم بن قتیبہ جو المسنّت معارف رکھا ہے۔ تاکہ اشتباہ ہو جائے۔ استی علامہ آلوسی بغدادی اپنی تغیرک دیاچہ میں لکھتے ہیں۔ تاکہ اشتباہ ہو جائے۔ استی علامہ آلوسی بغدادی اپنی تغیرک دیاچہ میں لکھتے ہیں۔

ومانقل عن ابن مسعودانه قال لما احراق مصحفه لوملكت كما ملكو الصنعت

بمصحفه كما صنعوا بمصحفى كذب كسوء معاملة عثمان معه التي يزعمه الشيعة حين اخذ المصحف منه- (تغير ردح العالى يزادل ص ٢٠)

اور سے جو ابن مسعود کی نسبت منقول ہے۔ کہ جب حضرت عثان نے ان کا معجف جلا را۔ ت انہوں نے کما اگر میں قابو پاؤل جیسا کہ انہوں نے قابو پایا ہے تو ان کے معنف کے ماتو دی کروں جو انہوں نے میرے مصحف کے ساتھ کیا ہے۔ سویہ جھوٹ ہے۔ جیساکہ ابن مسود کے ساتھ حضرت عثمان کی بدسلوکی کا دروغ ہے اور میر روافض کا گمان ہے کہ ان سے معمف لیا گیاتا انتھی بالفرض اگر ابن مسعود کے ساتھ ذرا ساتشدد بھی وقوع میں آیا ہو۔ تو وہ حضرت عنان کے ملازموں کی طرف سے ہوگا۔ اگر حضرت عثمان کی طرف سے بھی تنکیم کرلیا جائے تو چندان تال اعتراض نهيں- كيونكه اس معالم ميں حق حضرت عثان كي طرف تفا- جو عاہم تھے كه امت كم متواتر و مجمع علیه قرآن پر جمع کردیں۔ اور امت کی بہبودی بھی اسی میں تھی۔ گر حفزت این مسون اس امر کے مخالف نہ تھے مصنف نے جو کچھ حضرت عائشہ صدیقہ بناٹھ کی نبیت لکھا ہے کے اصل ہے حقیقت یہ ہے کہ حضرت عثمان بناشم نے نقل کرنے کے لیے حضرت حفیہ ہے وہ زآن طلب کیا تھا۔جو حضرت صدیق اکبر کی خلافت میں جمع کیا گیا تھا اور انہوں نے بغیر کی عذر کے بیج ویا تھا حضرت عثان بڑاٹٹر نے جو دیگر مصاحف کو تلف کیا بھاڑ کریا جلا کریا یاٹی ہے وحونے کے بعد جلا كراس مين ان يركوني الزام عايد شين موسكا- كيونكه وه اختلاف عظيم جس كا فدشه تماان ے امت محدید علی صاحبہاالعلوة واسلام کو روکنے کا بمترین طریقہ اس وقت میں تھا۔ حفرت ال كرم الله. وجه نے بھى حضرت عثان والله كاس معالمه كو بيند فرمايا چنانچه أنخ انبارى شرة مج بخاری (جز تاسع ص ۱۵) میں ہے۔

اخرج ابن ابی دانو د باسنا دصحیح من طریق سوید بن غفلة قال قال علی لا نقولوا فی عثمان الا خیر افوالله مافعل الذی فعل فی المصاحف الا عن ماء منا قال ماتقولون فی هذه القراة فقد بلغنی ان بعضهم یقول ان قراتی خیر من قراتک وهذا یکادان یکن کفرا قلنا فماتری قال اری ان نجمع الناس علی مصحف واحد فلا تکون فرقة و لا اختلاف قلنا فنعم ماراایت-

ابن انی واؤد نے سند سیح کے ماتھ سوید بن غفلہ کے طریق سے نقل کیا ہے کہ حفرت علی کے فرایق سے نقل کیا ہے کہ حفرت علی کے فرمان فرمایا کہ حضرت عثمان کے حق میں سوائے نیکی کے پچھ اور نہ کمو-اللہ کی میم اس نے جو مصاف کے بارے میں کیا وہ ہم صحابہ کے حضور میں اور ہماری رضا مندی سے کیا۔ کما حضرت عثمان نے کہ بارے میں کیا وہ ہم صحابہ کے حضور میں اور ہماری رضا مندی سے کیا۔ کما حضرت عثمان نے کہ

تم اس قراء ت کی نبت کیا گئتے ہو۔ جھے خود خبر پنجی ہے کہ گئتے ہیں کہ اماری قرارت تساری قرارت تساری قرائت ہے ہو۔ قرائت سے بہتر ہے۔ اور یہ قریب ہے کہ کفر ہو ہم نے کہا کہ آپ کی دائے کیا ہے معرت، لے بواب دیا کہ میری دائے یہ ہے کہ ہم لوگوں کو ایک معمف پر جمع کریں کہ کوئی اختلاف نہ ہو۔ ہم نے کہا کہ آپ کی یہ دائے اچھی ہے انتہں۔

كماقال ابن عمر لا يقولن احدكم قد اخذت القرآن كله مايد ريه ماكله قد ذهب

یہ تو قرآن پاک کی سرگزشت ہے۔ دست اعداء سے نہ اہل بیت نبوی ہے اور نہ قرآن مجید گرکیا

کیا جائے۔ جس قدر اور جس وضع پر اس وقت قرآن مجید موجود ہے۔ اس کو سنی اور شیعہ گلے

لگائے ہوئے ہیں۔ راقم مجھی اس قرآن کو اپنا ہادی جانتا ہے لیکن اگر علی مرتضٰی کا جمع کردہ قرآن یا

تزلہ ابن مسعود بی کا قرآن دستیاب ہو سکتا۔ تو راقم کو قرآن موجود سے آزاد ہو جانا پڑتا۔ راقم کی

تقیق سے ایسا معلوم ہوتا ہے۔ کہ قرآن موجود میں کوئی شے افزود نہیں کی گئی ہے۔ اس وقت

جس قدر قرآن وجود رکھتا ہے۔ یہ سب کا سب قول خدا ہے قول بشر نہیں ہے۔ گراس میں بھی

ثر نہیں کہ قول خدا ناتمام ہے جیسا کہ اوپر دکھلایا گیا ہے مصان کا اظلم والیشاح البم۔ ص ۱۹

اقول علامہ سیوطی نے قرآن میں شخ کی تین قسمیں بیان کی جیں اور قول این عمر کو تیسری قسم لین منتم لین عرکو تیسری قسم لین منتم لین عرکو تیسری قسم لین منتم کے تحت میں یوں ذکر کیا ہے۔

قال ابو عبيد حدثنا اسمعيل بن ابرابيم عن ايوب عن نافع ابن عمر قال لا تقولن احد كم قد اخذات القوان كله ومايد ريه ماكله قد ذهب منه قرآن كثير ولكن ليقل قد اخدات منه ما الهور (تغير القان ما معربه عن منه)

کما ابو بید نے کہ حدیث کی جم کو اسلیل بن ابراہیم نے ابوب سے اور ابوب نے نافع سے اور ابوب نے نافع سے اور نافع سے اور نافع سے اور نافع سے مارا قرآن لیا ہے نافع سے این عجر نے تم میں سے کوئی یہ نہ کے کہ میں سے سارا قرآن لیا ہے اور اسے کیا معلوم کہ سارا کنتا ہے۔ کیونکہ اس میں بہت سا قرآن جاتا رہا۔ بلکہ بول کے کہ میں فران سے کیا معلوم ہے کہ قرآن شریف 23 سال کے عرصے میں سے قرآن شریف 23 سال کے عرصے میں حسب ضرورت و موقع تھوڑا تھوڑا اتر تا رہا ہے۔ اس عرصے میں بعض آیتیں آئے ضرت ساتی ہے معلوم ہوگئی تھیں۔ لندا وہ قرآن میں موجود نہ رہیں ہی حضرت این

مرکایہ قول درست رہا کہ کوئی یوں نہ کے کہ میں نے سارا قرآن افذ کیا ہے اور نہ ی معلم بنہ کہ کل قرآن (منسوخ اللاوۃ آیتیں لو اس میں موجود رہیں کہ کل قرآن (منسوخ اللاوۃ آیتیں لو اس میں موجود رہیں کی کا افذ کس طرح منصور ہو سکتا ہے۔ پس قول ابن عمرے یہ سجھتا کہ محابہ کرام یا آخذ کس طرح منصور ہو سکتا ہے۔ پس قول ابن عمرے یہ سجھتا کہ محابہ کرام یا آخذ کشرت ما افذ کس طرح معنف کا قرآن میں کمی کر دی بالکل غلط ہے۔ معنف کا قرآن میں کمی کر دی بالکل غلط ہے۔ معنف کا قرآن موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا میں موجود کو ناقص و نا تمام جاننا اور اس کی ترتیب کو غلط سجھتا اور پھراس کو اپنا ہادی جانا ہوں اس کی ترتیب کو غلط سی سے سے میں اس کے ترتیب کو غلط سی سے سی ترتیب کو غلط سی سی ترتیب کو غلط سی خوال کی ترتیب کو غلط سی سی ترتیب کو غلط سی ترتیب کو ترتیب کو نا ترتیب کو نا ترتیب کو ترتیب کو غلط سی ترتیب کو ترتیب ک

قال السيد الداوالام وہ حضرات جو کتے ہیں کہ قرآن کا حافظ خود خدا ہے۔ اس میں کوئی شک دیں کہ قرآن کا حافظ خود خدا ہے۔ اس میں کوئی نقصان لاحق نہیں ہو سکا۔ اس کا جواب یہ ہے کہ کوئی شک نہیں کہ قرآن کا حافظ خدا ہو۔ اگر نقوش کتابی کا بھی حافظ خدا ہو اگر نقوش کتابی کا بھی حافظ خدا ہو تا تو ایک نسخہ بھی قرآن مجید کا عمد حضرت عثان ابن عقان میں نہ جانیا جاسکا۔ اور نہ ان کے بعد بھی قرآن کے نقوش کتابی کو کسی طرح کا آسیب پنچ سکتا۔ حال میں ایک کافرنے کی مجبر می کھس کر ایک نسخہ قرآن کو جلا ڈالا اگر بالصرور نقوش کتابی کا حافظ خدا تحالی ہو تا تو اس عاقبت برادے ایا فعل فیج صادر نہ ہو سکتا۔ پس جاننا چاہیے کہ خدا نے تحالی قرآن کا حافظ ہو۔ گر ضروری نہیں کہ نوش کتابی کا بھی حافظ ہو۔ قرآن قول خدا ہے اور علم خدا میں محفوظ ہے۔ اور کوئی شے ماسواء ایک نہیں ہے کہ اس کی حفاظت میں اپنے فعل سے خس برابر بھی کی کرسکے جس کے باعث کسی طرح کا نقص قرآنی پراہو اس کے مصباح اظلم والیشاح البہ 19 ص۔

اقول الله تعالی قرآن کریم کی نسب فرماتا ہے۔ ان نحن نولنا الذکو وانا له لحفظون فی بیک بم بی نے قرآن اتارا ہے۔ اور ہم بی اس کے تکہان ہیں۔ انتھی اس آیت میں الله تعالی نے قرآن بوابارا ہے۔ اس کی حفاظت کا وعدہ فرملیا ہے۔ علم اللی میں جو قرآن محفوظ ہے اس میں تحریف محصوری نمیں۔ المنا اس کی حفاظت کی ضرورت ہی نمیں ہاں جو نازل کیا گیا ہے اس میں تحریف کا اخمال تھا۔ سواس کی حفاظت کی ضرورت ہی نمیں ہاں جو نازل کیا گیا ہے اس میں تحریف کا اخمال تھا۔ سواس کی حفاظت کی معنی یہ ہیں کہ اگر اس میں تحریف کرنے کی کوشش کی جائے قوا کوشش کے سود ہوگی کہ اگر کوئی ایک نقط بھی بدل دے تو اطفال کمتب بھی اس کی تردید کردیں گااہ بتا ویں کے کہ صحیح یوں ہے چنانچہ روح المعانی جزرائع میں کے ۲ میں ہے۔ (وانا له لحفظون) ایک من کل مابقد ح فیم کالتحریف والزیادة والنقصان وغیر ذلک حتی ان الشیخ المحبیب لوغیر نقطة یر د علیه الصبیان و معنی حفظه من ذلک عدم تاثیرہ فیہ وذبه عند انتھی مختصرا۔

ادر ہم ہی اس کے تکہان ہیں لیعن ہرائیے امرے جو اس میں قادح ہو مثل تحریف اور کی بیشی وغیرہ کے یماں تک کہ اگر کوئی بارعب شیخ ایک نقط کو بدل دے تو پچے اس کی تردید کر دیں گے۔ اور قدا اور قرآن کو تحریف سے بچانے کے معنی سے ہیں۔ کہ اس میں تحریف اثر نہ کرے گی۔ اور قدا تحریف کو اس سے دور رکھے گا انتھی ہمارے بیان کو تقدیق خود شیعہ کے عمل سے ہوئی ہے جنوں نے قرآن میں تحریف کرنے کے لیے ہر چند ہاتھ پاؤل مارے اور دو ہزار سے زاید حدیثیں بھی گھڑس۔ گراس کا بچھ اثر نہ ہوا۔ قرآن وہی رہا جو پہلے تھا آیت نہ کورہ بالا کے متعلق مزید بحث انشاللہ تعالی آیندہ آئے گی۔

ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ دور ٹالٹ کے شیعہ تحریف بالزیادہ کے سوا اور سب طرح کی تحریف کے قائل ہیں گر آن کل بین الفریقین قرآن کی بحث چھڑجانے ہے وہ اپنی کروریوں کو محسوس کر گئے ہیں اور لاجواب ہوکر ان ہیں ہے بعض عجیب چالیں چل رہے ہیں۔ کوئی تو کہتا ہے کہ قرآن موجود میں جو تحریف وہ ظفائے ہلئے کے وقت میں نہیں ہوئی ہاں ان کے بعد کا تبوں کی تقعیف سے خرابی پیدا ہوگئی۔ پٹانچہ مولوی میرزا احمد سلطان صاحب مصطفوی چشتی وہلوی نے اپنے رسالہ تقیف کا تبین و تقص آیات کیاب مین (مطبوعہ مطبع یوسنی وہلی ماہ اگست 1918ھ میں یمی مسلک افقیار کیا ہے۔ اور کوئی یوں کمہ دہا کہ قرآن موجود ہے وہی ہے جو رسول سائے ہیا ہے کہ قرآن میں بھی کوئی تحریف واقع نہیں ہوئی۔ اس وقت جو قرآن موجود ہے وہی ہے جو رسول سائے ہیا کہ موجد کے حمد مبارک میں تھا مولوی عائری صاحب لاہوری اب اپنا ہی مسلک ظاہر کر رہے ہیں۔ جیسا کہ موجد کے حمد مبارک میں تھا مولوی عائری صاحب لاہوری اب اپنا ہی مسلک ظاہر کر رہے ہیں۔ جیسا کہ موجد کراف خریف قرآن مرتبہ سید محمد رضی الرضوی (مطبوعہ پلک پر شنگ پریس لاہور ماہ اپریل 1923ھ میں نہ کور

قال الميرزا بسم الله الرحمن الرحيم نحمده ونصلى عليه واله الطيبن الطاهوين واصحابه الميكزمين.

المابعد احقر العباد احامد سلطان خاور گورگانی مصطفوی چشتی این میرزا محمد مظفر نجت بهادر این میرزا محمد محمد شاه بادشاه عازی عرض پرواز محمد شاه برادر این بهشت آرامگاه حضرت ابو ظفر سراج الدین بهادر شاه بادشاه عازی عرض پرواز خدمت احباب به مدت سے سنی شیعه بیل نقص و تحریف قرآن کی چھیڑ چھاڑ ایک شعار خاص بوگیا ہے۔ اور الجسنت و جماعت اس کو سب و شتم خلفاء شات سمجھ کر برافروخت ہوتے ہیں۔ اور شیعه ان کے چڑنے سے اور جان جان کر نقص و تحریف قرآن کا الزام خلفاء شاتہ اور بالخصوص شیعه ان کے چڑنے سے اور جان جان کر نقص و تحریف قرآن کا الزام خلفاء شاتہ اور بالخصوص محرت عثمان غن کے سرنگاتے ہیں جو دونوں فریق کی غلطی اور خطائے فاحش ہے۔ کیا معنی کہ جو تشرت عثمان غن کے سرنگاتے ہیں جو دونوں فریق کی غلطی اور خطائے فاحش ہے۔ کیا معنی کہ جو ترآن مجید خلافت اولی کا اور پھر قرآن مجید خلافت اولی کا اور پھر قرآن مجید خلافت اولی کا اور پھر

خلیفہ فانی کا انتقال ہو گیا۔ اگر چہ اس قرآن ناقص کی نقول زمانہ فاروق ہی میں تقریبا ایک لاکو سے زیادہ ہو چکی تعییں۔ مگر جمع ترتیب قرآن کے وقت حضرت عثمان نے ان جملہ قرآنوں اور رسول خدا کے زمانہ کے جمع و تصبح شدہ قرآنوں کو جلا دیا۔ چنانچہ عینی کی شرح بخاری عمدہ القاری جلد و صفحہ 306 میں ہے کہ حکم دیا کہ جو مصاحف عثمانی ممالک میں جمیع کئے تھے۔ ان کے خلاف جس قدر مصاحف ہوں۔ وہ سب جلا دیے جائیں اس وقت ملک عراق کے جملہ قرآن جلادیلے جس قدر مصاحف ہوں۔ وہ سب جلا دیے جائیں اس وقت ملک عراق کے جملہ قرآن جلادیلے گئے۔ انتھی محملاء۔

وعند ابى داؤد والطبرانى امرهم ان يحرقوا كل مصحف يخالف المصحف الذى ارسل اليه قال عند ذلك احرقت المصاحف بالعراق بالنار ـ

اشعته اللمعات شرح مفكوة فيخ عبدالحق والوى كى جلد دوم كتاب الفضائل القرآن باب اختلاف القرآن وجمع القرآن صفحه (175) مين ہے-

حتى اذا نسخوا الصحف في المصاحف رد عثمان رضى الله عنه الصحف الى حفصة وارسل الى كل افق بمصحف مما نسخوا وامر بما سواه من القرآن في كل صحبفته او مصحف ان يحرق-

تاآنکہ وفتیکہ نسخہ براداشتد صحف رادر مصاحف بازگرد انید عثان آل مصحف رابسوئے دفھ فرستاد عثان رضی اللہ عند بسوئے ہرناجیہ از دیار اسلام مصحفے راازاں مصاحف کہ انتاخ نمودند مجراس کے آئے لکھا ہے

وامركرد عثمان بانچه بود جزء ال مصاحف در جر صحيفه تأكه سوخته شوديا پارا پارا كرده شود-

ظاہر امراد از صحیفہ آن بود کہ درر قاع و لحاف وجز آن بودو ہر مصحف آنچہ ترد حفہ بود-و آنا کہ شک رادی باشد بحر ت بجائے محملہ و خائے مجملہ رو روایت است۔ و ظاہر صدیث آنت کہ آنچہ نزدیک حفمہ بود بعد از وفائے وعدہ رد کردہ نیز سو ختد انتھی بلاند۔ لیکن ان شخ صاحب محدث داول کے نزدیک حفمہ بود بعد از وفائے وعدہ رد کردہ نیز سو ختد انتھی بلاند۔ لیکن ان شخ صاحب محدث داول کے بعد علاوہ اور موضین و محد مین نے بید لکھا ہے۔ کہ زمانہ عثمان ہی میں ام المومنین حفمہ کے انتقال کے بعد مروان بن الحکم نے عبداللہ ابن عمرے حفمہ والا قرآن منگا کر پارا پارا کرکے جلادیا بسرطال مجموعہ روایات کے خابت ہے کہ ظافت اولی و خانی کے جمع شدہ قرآنوں کا وجود و نیا میں نہ رہا اور رسول خدا کے زمانہ کے خاب سے خابت ہو کہ ظافت اولی و خانی مرجان اور پنہ لگتا ہے۔ کہ امام تراوح کا ابی بن کعب اور عبداللہ انک مسعود کے قرآن زیرد تی تجھین کرجلا دیے گئے جس کی گواہ صحاح اور قواری وسیر ہیں پس جب اب

و سراوہ قرآن ہو شاہ بھین نے سرور کائنات کے دواب میں طاب ایا تھا اور آند ند کے اعلیٰ کے بعد حضرت ابو بکر نے اس کے دواب میں قرآن جوایا جس کا آغاز دورہ ایف سے جو وہ قرآن آئ تک ایک شیشے کے مندوق میں محفولا ہے جس کو اوائٹر سید کاظم ' بین صاحب سائن علا اورہ و کچہ کر ہندوستان واپس آئے تو وہ قرآن میکن وار لخاافہ سلطنت بھین میں ہوئی۔ اس لی اُقل اُس طلب والے کو میسر نہیں ہوئی۔ اس قرآن کا بہت اب سے تین سال بہتر یعنی 20 مر یا 1333 مر اجری میں آور اور اور کے اخبار مشرق نے بھی دیا قا۔

تیراجناب علی کا مرتبہ قرآن بس کا ذکر انقان سیوطی جلد اول صفحہ 14 میں ہے ہے۔
مات ابو بکر ولم یہ معمع القرن وقتل عموو لم یہ معمع القرن قال ابن حجو وقد
و دعن علی انه جمع القرن علی تر تیب النزول عقب موت النبی اخر جه ابو داؤد
ابو بکر مر سے۔ اور قرآن جمع نہ ہونے پایا۔ اور عمو قل کے سے اور قرآن جمع نہ ہوئے پایا۔
اور جناب علی نے بعد انقال رسول تر تیب نزول کے مطابق قرآن جمع کیا۔ اسمی

تواس قران کی نسبت یہ روایت ہے کہ جناب علی نے زمانہ شیخیں میں قرآن مرتب کر کے پیش کید صغرت عمر نے کما کہ ہم کو تمہارے قرآن کی حاجت نہیں۔ اس پر جناب علی نے فرمایا کہ تم چراس قرآن کو نہ پاؤ گے۔ پس ایساہی ہوا۔ کہ پھراس کو کسی آنکھ نے نہ دیکھا چنانچہ حضرت ابو طفیل عامری صحابی رسول اللہ کے غلام مسمی محمد بن سیرین نے روپیہ خرج کر کے صدی اول ہی میں بہت تلاش کرایا۔ لیکن نہ وستیاب ہوا۔ پس اس کی نقل بھی دنیا میں ظاہر نہیں ہے۔ تقیف کا تنین ونقص آیات کتاب مبین مفید۔ 45ء۔

اقول مصنف نے جمع قرآن کی نسبت جو پھھ لکھا ہے اس کی ناوا قفیت پر دلالت کرتا ہے جیساکہ تاریخ انتران سے جو پہلے فدکور ہو چکی ہے ظاہر ہے جناب رسالتماب التی کیا کے زمانہ مبارک میں قرآن مرتب بخریب معلوم تھا۔ گر سکریزوں۔ ورخت خرما کی چھال وغیرہ پر پراگندہ تھا۔ حضرت صدیق اکبر کے عمد میں اسے کاغذوں پر عرضہ اخیرہ کے مطابق باثبات حروف سبعہ کیا جمع کر ویا گیا۔ اس قرآن کائل کی نقلیں حضرت فاردق اعظم کے عمد میں ہو کی مطابق باثبات حوف سبعہ کیا جمع کر ویا گیا۔ اس قرآن کائل کی نقلیں حضرت فاردق اعظم کے عمد میں ہو کی حضرت عثان غنی کی خلافت میں بعض دو سروں سے کہنے کہ ہمارا حقیم کے عمد میں اختلاف عظیم کے قرف ہمارے حرف سے بہتر ہے۔ چو نکہ اس سے امت محمدیہ علی صاجما العلوۃ ولسلام میں اختلاف عظیم کے وقوع کا خدشہ تھا اس لیے حضرت ذوالتورین نے عشورہ صحاب کرام قرآن ایک حرف یعنی لغت قریش کی حکمت میں اور کئی تبدیلی نہیں ہوئی اور اس کی نقلیں کئی جگہ بھیج دیں۔ اور باتی مصاحف جو تھی دسہ تھا۔ کر میں۔ اور باتی مصاحف جو تک حضرت عثان بڑاتھ

مام سماوں و مین سے رب پر اور معانی کے معرف کو تلف کرنے میں وہ حل پر جھے آن کل ہو قرآن جم مسال باب ای میں اور مصحف عثان میں ملحظ رسم و نظم و ترتبیب ذیرانجی فرق نمیں۔ مصنف کے جو جین اس قرآن کا ذکرکیا ہے وہ قصہ بے سند ہے اس جائے کہ اس کا مفعل علل بحوالہ کتب معتبو پیش کسے قرآن علی کی نسبت جو روایت پیش کی مئی ہیں۔ وہ کتب شیعہ سے ماخوذ ہے محمد بن سیران ابھی حق روب کی در در در ابو طفیل عامری کا غلام بتانا ورست نہیں- ہاں ان کے والد معرت الس بن مالک کے مہر م مکاتب نتھ۔ جو مکاتبت اوا کرنے پر آزاد ہو گئے تتھے۔ اور خود ابن سیرین فارس میں معرانس بن مالک ئے كاتب سنے۔ جيساك قاضى ابن خلكان نے وفيات الا عيان ميں لكما ہے مصنف لے جو تغيرانقان الموال نقل کیا ہے اس میں لم مجمع القرآن کا ترجمہ غلط کیا ہے۔ علامہ سیوطی نے پہلے معرت مدیق اکبرے ملا قرآن ہونے کے ولائل بیان کیے ہیں۔ پھراس پر بطور استدراک لکھتے ہیں۔

(قلت) لكن اخرج ابن اشتة في المصاحف بسند صحيح عن محمد بن سيرين قال مات ابو بكر ولم يجمع القرآن وقتل عمر ولم يجمع القرآن-

میں کمتا ہوں۔ لیکن این اشتہ نے مصاحف میں بند صحیح محمد بن سیرین کا بیہ قول نقل کیا ہے۔ کہ حضرت ابو بكرنے وفات يائى اور انہوں نے قرآن جمع ند كيا تھا اور حضرت عمر قمل ہوئے اور انہوں نے قرآن جمع نہ کیا تھا۔ انتھی پس اس عبارت میں القرآن کا مطلب بیہ ہوا۔ کہ وہ عافظ قرآن نہ ست اس واسط علامه سيوطى في است النوع العشرون في معرفة حفائد وردانة (بيبوي نوع قرآن کے حافظوں اور راویو کی پیچان میں کے تحت میں ذکر کیا ہے۔ علامہ موصوف نے ای لوع میں اور بست می روایت نقل کی ہیں۔ جن کا جمع قرآن سے مراد حفظ قرآن ہے۔مثلاً

(١) روى البخاري ايضا عن قتادة قال سالت انس بن ملك من جمع القرآن على عدرسول الله صلى الله عليه واله وسلم الحديث لين الم بخارى بى نقل كياب-ك حضرت قاده كا قول ب ميس في انس بن مالك س يوجها ك رسول ما الميل كم مدين كس كس ف قرآن حفظ كيا- (الحديث)

(2) اخرج النسائي بسند صحيح عن عبدالله بن عمر وقال جمعت القرآن فقرات به كل لية فبلغ النبي صلى الله وسلمه فقال اقراه في شر الحديث-نائی نے سند میچ کے ساتھ عیداللہ بن عمرو کاب قول نقل کیا ہے کہ میں نے قرآن کو حفظ کرایا لى مل جررات سارا قرآن براهتا- ني مان الم الوجوية خريتي- تو فرماياكه ايك مين من فتم كياكر

(3) اعرج ابن ابي دالود بسند حسن عن محمد بن كعب القرظي قال جمع القرآن على عدرسول الله صلى الله عليه واله وسلم خمسة من الا نصار الحديث سی ابن الی داؤد لے سند حسن سے ساتھ محد بن کعب قرعی کا قول لقل کیا ہے۔ کہ رسول خدا ابن ابی داؤد کے سند حسن سے ساتھ محد بن کعب من مديس انساريس سے پانچ نے قرآن حفظ كيا الحديث-

(4) اخرج البهيقى في المدخل عن ابن سيرين قال جمع القران على عد رسول الله صلى الله عليه واله وسلم اربعة الحديث-

ینی بیتی نے مال میں ابن سرین کاب قول لقل کیا ہے کہ رسول اللہ ساتھ اللہ کے حمد میں جار مخصوں نے قرآن حفظ کیا الحدیث-

فلاصه کلام یہ ہے کہ ابن اشتہ کی روایت میں جمع قرآن سے جمع و تالیف قرآن مراو نہیں۔ بلکہ دفظ قرآن مراد ہے۔ مصنف نے قرآن علی کی نسبت ابن ابی داؤد کی روایت نقل کی ہے وہ قابل اعتماد نیں۔ چنانچہ تغییرانقان (جز اول ص ۵۹) بی میں ہے-

اخرج ابن ابي داؤد في المصاحف بسند حسن عن عبد خير قال سمعت عليًا يقول اعظم الناس في المصاحف ابوبكر رحمة الله على ابي بكر هو اول من جمع كتاب الله لكن اخرج ايضا من طريق ابن سيرين قال قال على لما مات رسول الله صلى الله على وسلمه آليت ان لا اخذ على ردائي الالصلوة جمعه حتى اجمع القران فجمعته قال ابن حجر هذا الاثر ضعيف لا نقطاعه بتقد ير صحته فمراده بجمع حفظه في صدره وما تقدم من رواية عبد خير عنداصحي فهو المعتمد ابن ابی واؤد نے سند حسن کے ساتھ عبد اخیر کا یہ قول نقل کیا ہے۔ کہ میں نے حضرت علی کو میہ کتے ساکہ مصاحف میں سب سے زیادہ تواب والے حضرت ابو بکر ہیں۔ اللہ تعالیٰ کی رحمت ہو معنرت ابو بكرير وه پہلے مخص ہيں جنهوں نے قرآن جمع كيا- ليكن ابن ابى داؤد نے ابن سيرين كاني قول مجمی نقل کیا ہے کہ حضرت علی نے بیان فرمایا کہ جب رسول الله النائظ نے وقات بائی تو میں نے سم کمائی کہ نماز جعہ کے سوا اور کسی کام کے لیے اپنی جادر نہ اور حول گا- یمال تک کہ قرآن کو جمع کرلوں۔ پس میں نے قرآن کو جمع کرلیا۔ این حجرنے کہا کہ بیہ اثر ضعیف ہے۔ کیونکہ یہ منقطع ہے بر تقدیر صحت جمع قرآن سے مراد حفظ قرآن ہے مگر روایت عبد خیرجو پہلے ند کور ہے وہ زیادہ میج ہے للدا وہی معتد ہے۔ انتھی تغییر انقان میں دو سری جکہ (جز اول ص 60) ہول

-4

. وقد اخرج ابن اشتة في المصاحف عن الليث بن سعد قال اول من جمع القرن ابو بكر وكتبه

زید لیحتی ابن اشتہ نے مصاحف میں لیٹ بن سعد کا یہ تول نقل کیا۔ کہ سب سے پہلے جم نے قرآن جمع کیا وہ حضرت ابو بکر ہیں۔ اور اس کو حضرت ابن زید نے لکھا انتھی۔ علاوہ ازیں حضرت مدیق اکبر اور حضرت عثمان غتی کے عمد میں جمع قرآن کا مفصل حال بحوالہ صحیح بخاری پہلے ذکور موجع کا اس کے مقابلہ میں اثر ابن سیرین یا کوئی اور اثر پیش نہیں ہو سکتا قرآن علی کا مزید حال انشااللہ تعالی آئندہ آئے گا۔

قال الميرزا

احوال مصلاحق عثمان پر چرہے مصاحف عثانی جو بحکم عثان مد۔ مدید "مین" بحرین" معر" کوفہ "شام بھی جی سے کئے تھے۔ ان کی کیفیات ملاحظہ ہوں فغ الطیب مصری جلد اول مصاحف عثان علامہ ابو القاسم تھی سبتی سے روایت ہے وہ کتے ہیں کہ شام والا مصحف عثانی دمشق کی جامع بنی امیہ کی ایک محراب میں رکھا ہوا تھا جس کی میں نے جہ ہوریہ لین ہوا تھا جس کی میں نے جہ ہوریہ لین قام والا مصحف عثانی کو میں نے جہ بہوریہ لین قام قام والا القاسم فرکور کے ایک صدی کے بعد ایک اور مصنف جن کا نام عبدالمالک لکھا ہے۔ وہ فرماتے ہیں کہ میں نے مکہ اور مدینہ اور دمشق والے مصاحف عثانی کی زیارت عبدالمالک لکھا ہے۔ وہ فرماتے ہیں کہ میں نے مکہ اور مدینہ اور دمشق والے مصاحف عثانی کی زیارت عبدالمالک کھا ہے۔ وہ فرماتے ہیں کہ میں سے ایک مصحف جانے کیو نکر اندلس میں پہنچ گیا۔ جو قرطبہ کی جائے مسجد میں ایک مدت تک نمایت احترام و تعظیم سے رکھا رہا۔ اور مدینہ والے اور اندلس والے مصحف عثانی کا ایک خط تھا۔

ائل اندلس کا اپنے ہاں کے معمف عثانی کی نبست سے عقیدہ تھا کہ یہ وہی معمف ہے کہ جس بہ شہید ہوتے وقت حضرت عثان کا خون گرا تھا۔ مگر علامہ مقریزی اس خیال کو بعید از قیاس بتاتے ہیں۔ کہ شہید ہوتے وقت حضرت عثان کا خون گرا تھا۔ مگر علامہ مقریزی اس خیال کو بعید از قیاس بتاتے ہیں۔ کہ مذکور میں سے بھی ہے کہ سلاطین موحدین کے پہلے تاجدار سلطنت مراکش یعنی ابو مجمد عبدالمومن بن علی کو اپنے وارالخلافہ قاس میں مصحف عثانی کے رکھنے کی بڑی خواہش تھی مگر مسلمانان قرطبہ کے ملال کے سبب وہ جرات نہ کرتا تھا۔ لیکن اتفاقا قرطبہ ہی کے دو ر کیس زادے ابو سعید اور ابو لیعقوب نامی من امن جرک میں فاس لے گئے۔ اور اس قرآن کا استقبال بڑی دھوم سے کیا گیا بھروہ قرآن شاہان مراکش میں اور ہر سلطان اس کو سفرہ حضر میں بنظر خیرو ہرکت اپنے ساتھ رکھتا تھا۔ ان ہی سلاطین مراکش ہیں سے اور ہر سلطان اس کو سفرہ حضر میں بنظر خیرو ہرکت اپنے ساتھ رکھتا تھا۔ ان ہی سلاطین مراکش ہیں سے اور ہر سلطان اس کو سفرہ حضر میں بنظر خیرو ہرکت اپنے ساتھ رکھتا تھا۔ ان ہی سلاطین مراکش ہیں سے

معيد ابن على بن مامول يعنى معتضد باالله 645ه ميل تلمسان روانه موا- اور حسب رواج وه معمف عثاني عدان لی دو ادراس کا بیٹا ابراہیم نامی مارا کیا تو مخالف بدوی اور سازو سامان کے ساتھ اس مصحف کو ساتھ فار ہی وہ ادراس کا بیٹا ابراہیم نامی مارا کیا تو مخالف بدوی اور سازو سامان کے ساتھ اس مصحف کو ساتھ فار ہی وہ ادراس کا بیٹا ابراہیم نامی مارا کیا تو مخالف بدوی اور سازو سامان کے ساتھ اس مصحف کو ما کا ما این ما اور مجروہ مصحف بحالت کمنای تلمسان میں رہا آخر ماہ رمضان 737ھ میں نی مرکن میں اوٹ کر کے گئے۔ اور مجروہ مصحف بحالت کمنای تلمسان میں رہا آخر ماہ رمضان 737ھ میں نی مرکن ی و اس معرف عالی کے تلمسان النج کر کے اس قرآن پر قبضہ کیا۔ اور سے بھی اس معرف عانی کو یہود کی کے بادشاہ ابوالحن نامی نے تلمسان النج کر کے اس قرآن پر قبضہ کیا۔ اور سے بھی اس معرف عانی کو یہود کی س میں اور ایس اس مصحف کو بھی لے گئے۔ پھر کسی تا جرنے بوے حسن تدبیرے اس کو میں گھر کر مارا گیا۔ تو اہل پر تگال اس مصحف کو بھی لے گئے۔ پھر کسی تا جرنے برے حسن تدبیرے اس کو یں ہر مامل کر کے 745ھ میں مچرمراکش پہنچا دیا۔ اس کے بعد کا حال معلوم نہیں سنا جاتا ہے کہ فی الحال ایک معن عانی قطنطنیہ کے خزانہ شاہی میں موجود ہے استھی ملحصا سروولیم میور صاحب اپنے ترجمہ قرآن کے مقدمہ میں لکھتے ہیں کہ امام تامی مصحف عثمانی جو خاص مدینہ کے لیے تھا وہ قرطبہ کی جامع مسجد میں موجود تھا۔ زوال سلطنت اسلامیہ کے بعد وہ سلطنت مراکش کے وار لخلافہ فاس میں منتقل ہو گیا جس کا دافلہ آریخ اور لیسی میں اس طرح ہے مگر آٹھویں صدی کاسیاح ابن بطوط کتا ہے کو امام نامی مصحف جس ر خون عمان کے دھیے تھے۔ بھرو کی جامع مسجد میں تھا۔ اور اب سنا جاتا ہے کہ وہ مصحف سلطنت روس کے قدیم وار لسلطنت ماسکو میں موجود ہے۔ جو کتب خانہ مسلمانان ماسکو نے قائم کیا ہے اور بخارا سے كابي مظاكر بھى اس بيں ركھى جين- اور يہ بھى مقدمہ فدكور بين ہے- كه مصاحف عثانى كے اصلى نيخ مقالت فارس ومثق مکہ مدینہ میں ہیں- اور مدینہ کے تسخد کے آخر میں لکھا ہے کہ بیہ مصحف عثمان کے عظم ے لکھا گیا انتھی ملحما۔

اگرچہ مور نیبن کی یہ گیبیں قرآن کے نقائص موجودہ کے سبب اہلسنت و الجماعت کی پریشانی اور شیعول کے بغل بجانے کے لیے بہت کافی جیں لیکن یہ سب نقش برآب جیں۔ کیا لیعنی کہ علامہ سید قرالدین این عبد اللہ شافعی مرنی کہ جن کا انتقال 911ھ جس ہوا۔ ان مفتی مدینہ کی مشہور کتاب وفا الوفائی اخبار دارالمصطفے کے صفحہ (481) جس ہے کہ۔

فكتب الحجاج المصاحف ثم بعث بها الى الا مصارو بعث بمصحف الى المدينة فكره ذلك ال عثمان فقيل لهم اخر جوا مصحف عثمان ويقروا فقالوا اصيب المصحف يوم مقتل عثمان-

جائ بن اوست امیر خلیفہ عبدالملک بن مروان بن تھم نے قرآن لکھو کہ تمام ممالک بیں مجوائے جن میں سے ایک مصحف میند میں رکھا گیا گر اولاد عثمان کو یہ امر ناگوار گزرا۔ کما گیا کہ مصحف عثمان نکال کر پڑھولوگوں نے کما کہ مصحف عثمان بروز قتل عثمان ضائع ہوگیا۔ ابتی۔

اور ای کتاب کے صفحہ (482) میں ہے۔

ان مصحف عثمان تغيب فلم يجدله خبرابين الاشياخ

کہ مصحف عثان غائب ہو گیا اہل علم کے باں اس کا پنتہ نہیں۔ انتی۔

یہ روایت بالکل صیح معلوم ہوتی ہے۔ کیامعنی کہ حضرت عثان کی شکایت کے وفتر کے وفتر ہے منیس ویار بکری و امامته والسیادة این قتیبه ورومنته الا حباب و تاریخ ابو الغداء و فتح الباری وازاله الغلوا ومدارج النبوة و صحاح وغيره ميس بكثرت درج جي- ازانجمله ابل مدينه نے مسلمانان بعره كوفه معروفيره كو شکایات لکھیں اور حضرت عثمان پر جماد کرنے کی رغبب دی تو ان میں سے درج کیا تھا کہ عثمان نے ظالموں کو حکومت دی- اور حقد ارول کو محروم کیا- اور بنی امیه و مردانیه کو مالدار کردیا- اور پی بی عائشه اور اینے اور ا بنی اولاد کے واسطے بوے فیمتی قصرعالی کھڑے گئے اور عمدہ چراگاہیں انے اصطبل اور شرخاتوں وفیرہ کے کے روک لیں۔ اور طریق رسول ترک کر دیا۔ اور ام المومنین عائشہ اور بعض بدری و احدی محلب کے وطائف بند كرديئ - اور قرآن كوياره باره كرديا - اور سات حرف ترك كرك قرآن كوايك حف يركروا. وغیرہ وغیرہ پس بیہ اور الیک اور بکٹرت ممالک مختلف کے مسلمانوں کی شکایات پر یقین ہے۔ کہ ان کثیر التعداد مخالفان عثمان نے ہر مقام کے مصاحف عثان ضائع کر دیئے ہوں گے۔ ای سبب سے تجلیٰ بن لوسف کو ان مقالمت لینی که مدینه کوفه بقره-مصر-شام بحرین مین- بر مکرر قرآن سیجنے پڑے- یہ جمل جہاں حضرت عثمان نے بیسیجے تھے۔ اور مخالفان عثمان کی عدواتوں سے قطع نظر بھی کی جائے تو خلیفہ عبدالملک بن مروان اور اس کے عکم سے تجاج بن بوسف نے وارث رسول اور مالک شریعت جمانے کی غرض سے مثل خلفاء علثہ اپنی رائے سے قرآن مرتب کر کے ممالک میں بھجوائے ہوں گے۔ اس وجہ سے جم مصاحف عثانی کادنیا میں وجود نہ رہنا قرین عقل ہے۔ تضحف کاتبین وانقص آیات کتاب مبین-(ص ۲۰۳) ا قول مصنف نے جو احوال مصاحف عثان بحوالہ نفح اللیب وغیرہ کیے ہیں ان سے ظاہر ہے کہ مصاحف عثان آٹھویں صدی ہجری تک موجود تھے بلکہ اب تک موجود بتائے جاتے ہیں۔ ان حالات کو بلادجہ تہیں بتانا خود مصنف کی گپ ہے۔ وفا الوفائے حوالے بورے نقل نہیں کیے گئے۔ لنذا ہم ان کو نقل کرنے بتاتے ہیں کہ ان سے کیا نمائج افد ہو سکتے ہیں۔

عن محرزين ثابت مولى سلمة بن عبدالملك عن ابيه قال كنت في حرس الحجاج بن يوسف المصاحف ثم بعث بها الى الحجاج بن يوسف المصاحف ثم بعث بها الى المدينة فكره ذلك ال عثمان فقيل لم اخرجوا مصحف عثمان يقراء فقالوا اصيب المصحف يوم مقتل عثمان قال محرزو

بلغنى ان مصحف عثمان صارائى خالد بن عمرو بن عثمان قال فلما استخلف المهدى بعث بمصحف الى المدينة فهو الذى يقرافيه اليوم وعذل مصحف الحجاج فهو في الصندوق دون المنبر انتهى-

المد بن عبدالملک کے آزاد کردہ غلام محرزین ثابت سے روایت ہے کہ سلمہ کے باپ نے کہا کہ بی عبدالملک کے پاسبان بیں تھا۔ تجاج نے مصاحف لکھ کر شہروں میں بجبوائے اور ایک معنی برینہ بیں بجبجا۔ اولاد عثمان کو بیہ امر ناگوار گزرا ان سے کما گیا کہ وہ معنف نکالو جو معرت بین پردا کرتے تھے۔ انہوں نے جواب دیا کہ وہ مصحف بروز قتل عثمان جاتا رہا روز محرز کا قول بی پردا کرتے تھے۔ انہوں نے جواب دیا کہ وہ مصحف بروز قتل عثمان جاتا رہا روز محرز کا قول ہو گیا جب ہدی فیلے یہ وہ اس خال کے باس متعل ہو گیا جب بدی فلید ہوا۔ تو اس نے ایک مصحف مدینہ میں بھیجا ہی مصحف ہے جس پر آج پردھا جاتا ہے۔ اور مصحف خال برطرف کر دیا گیا۔ اس لیے وہ اس صندوق میں ہے۔ جو منبر کے قریب ہے۔ اور مصحف خال کر دیا گیا۔ اس لیے وہ اس صندوق میں ہے۔ جو منبر کے قریب ہے۔ انہوں کر دیا گیا۔ اس لیے وہ اس صندوق میں ہے۔ جو منبر کے قریب ہے۔ انہی۔

علامه مهودي ووسري جكه (وفا الوفاجز اول 482) لكصة جي-

قال ابن قتیبه کان مصحف عثمان الذے قتل وهوفی حجره عند ابن ابنه خالد ثم صارمع اولاده وقد درجوا قال وقال لی بعض مشائخ اهل الشام انه بارض طوس انتهی

ابن قتیبہ (متونی) 276ھ کا بیان ہے وہ مصحف جو شہید ہونے کے وقت حضرت عثمان کی بغل میں افران کے بیٹل میں افران کے پاس تھا۔ پھر خالد کی اولاد کے پاس رہا اور وہ گزر گئے۔ اور این کتیہ کا قران کے بیٹل شام کے بعض مشائخ نے مجھ سے ذکر کیا کہ مرزمین طوس میں ہے انتھی۔ قول ہے کہ اہل شام کے بعض مشائخ نے بھی دی نے بوں فرمایا ہے۔

وقلا اشاطبی ماحاصله ان مالکار حمه الله قال انما یکتب المصحف علی الکتابة الا ولی لا علی مااستحدثه الناس قال وقال ان مصحف عثمان رضی الله عنه تغیب فلم نجدله خبرا بین الا شیاخ وقال ابو عبیده القاسم بن سالم فی کتابه فی القران رایت المصحف الذی فقال له الامام مصحف عثمان بن عفان رضی الله عنه استخرج لی من بعض خزائن الا مراء وهو المصحف الذی کان فی حجره حین اصیب وزایت اثار دمه فی مواضع منه ورده ابو جعفر النحاس بماتقدم من کلام مالک قال الشاطبی و اباه المنصفون لانه لیس فی قول مالک تغیب مایدل علی مالک قال الشاطبی و اباه المنصفون لانه لیس فی قول مالک تغیب مایدل علی

المصحف بالكلية بحيث لا يوجد لان ما تغيب يرجى ظوره قلت فيحتمل اندبه ظبوره نقل الى المدينة وجعل بالمسجد النبي لكن يوهن هذا الاحتمال ان بالقاهرة مصحفا عليه اثر الدم عند قوله تعالى فسيكفيكهم الله الا ية كما هويا ب المصحف بالشريف الموجوداليوم بالمدينة ويذكرون انه المصحف العثماني وكذالك بمكة والمصحف الامام الذي قتل عثمان رضي اللهعنه وهو بين بديه لم يكن الا واحدا والذي يظهران بعضهم وضع خلوقاعلى تلك الا ية تشبها بالمصحف الامام ولعل هذه المصاحف التي قد مناذكر ها ممابعث بدعيها رضي الله عنه الى الا فاق كما هو مقتضى كلامه ابن جبير في المصحف الموجود بالمدينة

اور امام شاطبی کے قول کا ماحصل ہیہ ہے کہ امام مالک رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ مصحف کو مرف ملی رسم خط کے مطابق لکھنا جا ہے نہ کہ اس کے مطابق جو لوگوں نے نی پیدا کی ہے-اوراام شاطبی نے کہا کہ امام مالک کا قول ہے کہ مصحف عثان رضی اللہ تعالی عنه غائب ہو گیا-اور ہم نے مشائخ کے درمیان اس کی کوئی خبر نہیں یائی ابو عبیدہ قاسم بن سلام (متوفی 224ھ)نے کلب القراآت میں ذکر کیا ہے۔ کہ میں نے وہ مصحف عثان دیکھا۔ جے امام کہتے ہیں۔ وہ امراء کے کی خزانے سے میرے واسطے نکالا گیا تھا یہ وہی مصحف ہے جو ہروفت شہادت حضرت عثمان کی گود میں تھا۔ میں نے اس کی کئی جُگہوں پر خون کے نشان و کیھیے قاسم بن سلام کے قول کو ابو جعفرنے اہم مالک کے کلام بدکورہ بالا کے ساتھ رو کیا ہے۔ شاطبی نے کما کہ منصف مزاج لوگوں نے ابو جفر کی تردید کو تشکیم کرنے سے انکار کیا ہے۔ کیونکہ امام مالک کے قول تغیب (غائب ہو کیا) ہے ہو نهيں پايا جاتا كه مصحف عثان بالكل معدوم ہو كيا ہو- كه روئے زمين يرنه ملے اس ليے كه جو غائب ہو گیا اس کے ظہور کی امید ہو سکتی ہے میں کتا ہوں۔ کہ اختال ہے کہ ظہور کے بعد مین میں منتقل ہو گیا ہو- اور معجد نبوی میں رکھا گیا ہو- لیکن اس احمال کو بیر امر کمزور کر دیتا ہے کہ قاہرہ میں ایک مصحف ہے جس میں فسیکفیکھم الله الایه پر خون کا نفان ہے جیساکہ ال مصحف شریف میں ہے جو آج کل مدینہ منورہ میں ہے۔ اور ذکر کرتے ہیں کہ وہ مصحف علانی ج ای طرح مکه مشرفه میں بھی نشان ہے- اور مصحف امام جو بروقت شمادت عثان رضی الله تعالی عند کے پاس تھا بجزایک کے نہ تھا ظاہریہ ہے کہ کی نے اس آیت پر معحف امام سے مثابہ کرنے کے لیے خوشبو رکھ دی- شاید یہ مصاحف جن کا ہم نے ذکر کیا ہے منجلہ ان سے ہیں- جو حفرت

عنان رمنی اللہ تعالیٰ عنہ نے اطراف میں بھیج تھے جیسا کہ مدینہ میں معنف موجود کی نسبت ابن جبیرے کلام کامقضا ہے۔ انتی۔

عبارات بالاسے معلوم ہوا۔ کہ مصحف امام حضرت عثمان رضی اللہ تعالی عنہ کی شادت کے دن رہا ہے ناپید نہیں ہوا تحقیق ہے کہ وہ تیسری صدی بجری تک موجود تھا بلکہ آٹھویں بجری میں بھی دیکھا علیہ نشج الحطیب میں ندکور ہے علامہ سمودی کے وقت جو قرآن مرید منورہ میں موجود تھا اس کی نہیں انہاں ہو جو منتقل ہو کر پھر مدید منورہ میں آگیا ہو۔ یا کم سے کم وہ منجملہ ان نہت اختال ہے کہ وہ مصحف امام ہو جو منتقل ہو کر پھر مدید منورہ میں آگیا ہو۔ یا کم سے کم وہ منجملہ ان قرآنوں کے ہیں۔ جو حضرت ذوالنورین رضی اللہ تعالی عنہ نے اطراف میں بھیجے تھے تجابح بن یوسف نے قرآنوں کے ہیں۔ جو حضرت ذوالنورین رضی اللہ تعالی عنہ نے اطراف میں بھیجے تھے تجابح بن یوسف نے ہو مصاحف عثمان کا دنیا سے ناپدید ہونا نہ تھا اس کی وجہ روایت ابو احمد عشری میں انشاء اللہ عنقریب آئے گی۔

علامہ سمودی نے فقط مصحف امام کی نسبت کلام کیا ہے۔ اگر ہم نشلیم بھی کرلیں کہ مصحف امام ویا سے ناپدید ہوگیا۔ عہم باقی چار یا چھ مصحف تا ناپید نہیں ہوئے۔ اگر ان کابھی معدوم ہو جانا نشلیم کیا جائے توان کی لاکھوں صحح نقلیں جو ہو تمیں وہ کماں گیں۔ اس سے بھی قطع نظر ہر قرآن میں لاکھوں تھا فلہ ہوئے رہے ہیں جن کے سینوں میں قرآن محفوظ چلا آتا ہے نظر برایں حالات خلفائے مملاشہ یا کوئی اور مخض قرآن کو اپنی رائے سے کیو تکر مرتب کر سکتا تھا۔ اور امت مرحومہ اسے کیو تکہ قبول کر عتی تھی۔ اس کتاب اللی کا توبہ خاصہ ہے کہ سینوں میں بھی محفوظ رہے۔ بل ھو اایات بینت فی صدور الذین او توالعلم (سورہ عنکہوت) سب سے بردھ کریے کہ جس کتا کا حافظ خدا ہو۔ اس میں تغیرہ تبدل کیے او توالعلم (سورہ عنکہوت) سب سے بردھ کریے کہ جس کتا کا حافظ خدا ہو۔ اس میں تغیرہ تبدل کیے او توالعلم (سورہ عنکہوت) سب سے بردھ کریے کہ جس کتا کا حافظ خدا ہو۔ اس میں تغیرہ تبدل کیے او توالعلم (سورہ عنکہوت) سب سے بردھ کریے کہ جس کتا کا حافظ خدا ہو۔ اس میں تغیرہ تبدل کیے

حفرت عثان رضی اللہ تعالی عند کی نسبت شکایات کا پایا جانا ان کی بررگ میں قادح نہیں۔ ایک شکایات سے کون نیج سکتا ہے۔ کیا حضرت علی کی نسبت شکایات ند تفیس؟ ایس شکایات کا جواب انشاء الله تعالی مناسب موقع بر آئے گا

 قائل ہونا بڑا۔ جیساکہ آئندہ معلوم ہو گا۔ اور سے بدیری بات ہے کہ جامعان قرآن نعنی ظفاہ دید ان ع قاس ہونا ہوا۔ میں میں میں اور وہ کسی قدر ہر سے لکھے بھی سے وجہ ان کی موجودہ افلاط قرآن کاوتی، جن کی مادری زبان عربی متنی - اور وہ کسی قدر ہر سے لکھے بھی سے وجہ ان کی موجودہ افلاط قرآن کاوتی، مدور محال تقعيف كاتبين- من ٩-٨

اقول فلم نجد له خيرا بين الاشياخ رحمه الله تعالى كا مقوله ب جس يركافي بحث بوكل ي اشارہ كر رہا-ان كى تفصيل مع جواب عنقريب آئے والى ہے جس كلام كا حافظ خدا ہو- اس ملى بندر ك کیا مجال کہ تغیر کر دے فرقہ شیعہ جو تحریف قرآن کا قائل ہے اے اسلام کا گروہ عظیم کمنا خت علم

قال المير زا بس جب كه مصاحف عثاني دنيا مين اسلام نما دشمنون في باقى نه ركه- اور كم استواد عربی وان کاتبین نے فائدہ دنیا کی غرض سے اپنے اپنے قلم کے لکھے ہوئے مصاحف کو مصاحف علیٰ فام کیا۔ تو اس صورت میں قرآن موجودہ پر جو کچھ اعتراض ہو گا۔ وراقین سابقین پر ہو گا۔ خلفاء ثلثہ یہ ہرگزنہ ہو گا۔ تقحیف کاتبین صفحہ (10)

اقول ہم اوپر ثابت كر آئے ہيں كہ مصاحف عثاني ونيا سے ناپديد نسيس ہوئے ہر زمانے ميں ان كى لاكون معی تقلیں موجود رہیں۔ اور لا کھوں حافظ قرآن موجود اور ان سب پر اللہ تعالی کی طرف سے الل حفاظت کا وعد موجود بایں ہمہ قرآن میں کا تبین کی بھیف کا قائل ہونا اگر جنون نہیں تو کیا ہے-قال الميرزا دوسري دليل خلفاء ثلثه كى بريت كى بيه ب كه أكثر ممالك اسلاميه اور نيز بندوستان مل عموا قرآن مجید خط شخ پائے جاتے ہیں۔ اور خط شخ تیسری صدی جزی میں ایجاد ہوا۔اور چو تھی صدی جمل میں قرآن مجید خط شخ میں نقل ہوا۔ چنانچہ اب ہم اس کی کیفیات باختصار لکھتے ہیں۔ لیکن یہ مضمون فمن امور کی تحقیق پر مشمل ہے۔ ایک ایجاد خط عربی اور دوسرا ایجاد نقاط و اعراب اور تبسرا ایجاد خط ن اور اس ميں قرآن مجيد كا لقل هونا---نفحيف كاتبين-صفحه 10 11-

اقول اگر قرآن کریم چوتھی صدی ہجری میں خط شخ میں نقل ہوا۔ تو اس سے یہ کیو کر کر جابت او ہے۔ کہ اس نقل میں کاتبین نے غلطیال کر دیں۔ پہلی تین صدیوں کے قرآن مجید ممالک اسلامہ مختلف حصول میں ملتے ہیں- ان کے ساتھ مقابلہ سے معلوم ہو تا ہے۔ کہ بلحاظ نظم و تر تیب ورسم چو کی صدی کے لکھے ہوئے قرآنوں اور اس سے پہلے کے قرآنوں میں ذرا بھی فرق نہیں-



قال الميرزا

تقة واول آغاز خط عرفی الاسلام مولوی سيد امير على صاحب مين ہے۔ كه عربي تحريري كما ر المام على المام على المام ا ن مار ہے وال تھا۔ پھرید موجد سکونت انبار ترک کرکے مقام حیرہ میں جا بیا تھا۔ اور جب حرب ہوں عبدالشمس لیعنی معاویہ بن ابی سفیان کا دادا حیرہ گیا تو اس فن کو اسلم بن سدرہ ہے سیکھ کراس ے سکھا تھا۔ اور قبائل مدینہ لیعنی اوس و خزرج نے یمود مدینہ سے سکھا تھا اگرچہ باختلاف روایات اہادیث سے فرامین رسالت اور کاتب وحی بہت ہے حضرات معلوم ہوتے ہیں۔ لیکن حضرت عثمان بن مفان نے عبداللہ بن زبیر اور سعید بن العاص اور عبدالر حمن بن حارث بن بشام اور زید بن ثابت کو كتب قرآن بنايا تفا- جن ميس نه كوكي حافظ قرآن تفا- نه فقيه نه خوشخط نه بني باشم-

مغتاح السعادت مولفه ابو الخيرعصام الدين احمر تاش كرمي زاده المتوفى به 968ه جلد اول محمّه 73 الم اعداد كر عربي خط فى طے كے قبيلہ بولان سے تين مخصول نے ايجاد كيا تھا۔ جو شرانبار علاقہ حرو كے دہے والے تھے جن میں سے مرامرین مرونے حروف کی شکلیں اور نقاط ایجاد کیے اور اسلم بن سدرہ نے ومل وفعل حدف ایجاد کیتے اور عامرے اعراب

وحكى ابواحمد العسكرى في كتاب الصحيف ان الناس عبروا يقرون في مصحف عثمان بن عفان رضى الله عنه نيفا و اربعين سنة الى ايام عبدالملك بن مروان ثم كثر التصحيف وانتشر بالعراق قفزع الحجاج بن يوسف الى كتابه وسالهم ان يضعو الهذه الحروف المشبهة علامات فيقال ان نصر بن عاصم قام بذالك فوضع النقط افرادا وازواجا وخالف بين اماكنها فعبر الناس بذالك زمانالا بكتبون الا منقوطا فكان مع استعمل النقط ايضايضع التصحيف فاحدثوا لاعجام فكانوا يتبعون النقط الاعجام فاذا اعقل الاستقصال عن الكلمة فلم توف

حقوفها اعترى- (وفيات الاعيان 'ج١' صفحه ١٦٥)

الوائم عمری نے اپنی کتاب تقیف یہ روایت لکمی ہے کہ لوگ عثان کے معیف میں پچھ اوپر پالیس مال عبدالملک بن مروان کے عمد تک پرھتے ہے۔ لیکن نقطے نہ ہونے کی وجہ سے عراق میں تفیف بہت ہونے کی یعنی متثابہ حروف کو کچھ کا کچھ پڑھنے گئے۔ اس پر تجابح بن یوسف کے عکم سے نصر بن عاصم (یا بچی بن معمر) نے نقطے ایجاد کیے کسی حرف کے لیے ایک کسی کے لیے رو کسی کے لیے تین اور کسی کے اور کسی کے بیچے اور کسی کے نیچ میں پس اب حروف تو صحیح پڑھ جانے گئے مگر ذیر ذیر پیش کی غلطیاں ہونے گئیں پس اس کے وقعیہ کے لیے اعراب کو ایجاد کیا ۔ انتھی ملحما۔ (از ترجمہ تاریخ الا اسلام ماشر ذاکر حسین صاحب ساکن محل کلال دبلی)

یں لیکن ان روایات میں کچھ غلطی ہے جو تحقیق دوم سے واضع ہوتی ہے تعیفہ کاتبین۔صفحہ۔11'12۔

آقول روایت ابو احمد عسری (متونی 282ھ سے ظاہر ہے کہ عبدالملک بن مروان (متونی 88ھ کے زائے تک مصاحف میں نقطے نہ ہوا کرتے تھے۔ جس کی وجہ سے عراق میں بکٹرت تقیف ہونے گئی تی۔ للڈا تجابع بن یوسف (متوفی 95) نے نئے مصاحف نقل کرا کر بھیجے ہوں گے جن میں حروف پر مناسب بگہ پر نقطے ہوں گے۔ ہم اس روایت کی طرف اوپر اشارہ کر آئے ہیں۔ للڈا مصنف کا یہ الاپنا کہ مصاحف عثانی کے ناپرید ہونے کے سبب کم استعداد عربی دان کا تبول نے فائدہ ونیوی کے لیے قرآن میں تعیف کر دی اور اپنے تھم کے لکھے ہوئے مصاحف کو مصاحف عثانی ظاہر کیا بالکل غلط ہے مصحف کے کا تبول بی دی اور اپنے تھم کے لکھے ہوئے مصاحف کو مصاحف عثانی ظاہر کیا بالکل غلط ہے مصحف کے کا تبول بی تی جن چار کے نام لکھے گئے ہیں وہ سوائے حضرت زید بن ثابت کے جو قاری و حافظ و کاتب دی نے قربی شے۔ اور اس کام کے لیے قریشیوں کی خاص ضرورت تھی۔ کیونکہ قرآن اصل میں لغت قربی ٹی اترا تھا اور اس میں رکھنا منظور تھا۔

قال الميرزا

تحقیق ووم ایجاد و نقاط و اعراج مفاح نہ کوریں ہے کہ جناب علی علیہ السلام کی تعلیم السلام کی تعلیم السلام کی تعلیم السلام نے نقاط و اعراب ایجاد کئے اس وعوے کی تقدیق کتب نحو سے بخوبی ہوتی ہے۔ چنانچہ متن شکا عبدالرسول سمار نبودی کے ص ہم میں ہے۔ کہ جناب علی علیہ السلام نے سنا کہ ایک مخص نے ہوتی اس طرح پڑھی ان الله بوی من الممشویکن و رسوله یعنی رسول کے لام کو بالکسر پڑھا۔ اس حت آیت کے یہ معنی ہوئے۔ کہ اللہ تعالی مشرکین سے اور معاذ اللہ رسول سے بیزار ہوئے۔ تو جناب الله علیہ اسلام نے ابو الا سود دو کئی کو یہ تعلیم فرمائی کہ ۔ فاعل مرفوع ہوا کرتا ہے۔ اور مفعول منصوب اللہ مضاف الیہ مجرور - اور فرمایا کہ اس طریق پر چلا چل ۔ انہی۔ مضاف الیہ مجرور - اور فرمایا کہ اس طریق پر چلا چل ۔ انہی۔ درایہ شرح بدید التو کے صفحہ اللہ علی ہیں سالم کے واوا نے ابوالا سود دو گئی ک

روایت کی ہے۔ ابو الا سود نے کما کہ ایک ون میں جناب علی علیہ اسمام کی فدمت میں حاضر ہوا۔ تو رکھاکہ آپ منظر بیٹے ہیں۔ میں نے عرض کیا یا امیرالمومنین آپ کیا سوچ رہے ہیں۔ آپ نے فربایا نمارے شرمیں قلطیاں سی ہیں۔ اس وجہ سے ارادہ ہے کہ عربی ذبان کے اصول کی ایک تب بناؤ سی نے عرض کیا اگر آپ نے ایساکیا تو ہمیں جلالیں گے۔ اور اس ذبان کو ہمارے در میان ذخوہ کر دیں میں نے عرض کیا اگر آپ نے ایساکیا تو جناب امیر علیہ اسلام نے میرے مسائے ایک کانفر ڈالدیا۔ جس می کے۔ پس پھرجو میں شین دن بعد گیا تو جناب امیر علیہ اسلام نے میرے مسائے ایک کانفر ڈالدیا۔ جس می کیا تھا اسلام میں ہوتے ہیں۔ یعنی اسم قبل و حرف سے نیسائے وہ ہو اپنی مسمی سے خبروے اور فعل وہ ہے جو فاعل سے خبروے او حرف وہ ہے کہ وہ ایس مین بتائے جو نہ اسم سے ظاہر ہو نہ فعل سے اور فرمایا کہ یمال تک تو میں نے خور کیا ہے اب اس کے آگے تو بردھا لیجیو۔ جو تیرے خیال میں آئے۔ اور فرمایا کہ یمال تک تو میں علاء ایسے ہی الفاظ کے سمجھ لینے ہوئے ہیں۔ ظاہر اور مضم اور تیسرے ایسے کہ نہ ظاہر وال نہ مضم پس علاء ایسے ہی الفاظ کے سمجھ لینے ہوئے۔ یہی۔ طاہر اور مضم اور تیسرے ایسے کہ نہ ظاہر وال نہ مضم پس علاء ایسے ہی الفاظ کے سمجھ لینے سے ایک دوسرے پر فضیلت نے جاتے ہیں۔ جو ظاہر و مضم نہ ہوں۔

ابو الاسود کہتے کہ میں نے پچھ مضمرات جمع کرکے جناب امیرعلیہ اسلام کے ملاحظہ میں پیش کیے اور انہی میں حروف نصب بھی تھے۔ إِنَّ أَنَّ لَيْتَ لَعَلَّ كَانَّ اور حرف لاكن نہ تھا اس پر جناب امیرعلیہ الملام نے فرمایا كہ تونے كیا كہ لاكن كيوں ترك كر دیا۔ میں نے عرض كیا كہ اس كو بھی انہی میں شار كدوں؟ آپ نے فرمایا بال اس كو بھی انہی میں برحمالے۔ انتی۔

ورابید فدکور میں ووسری روایت ہے کہ زمانہ عثمان میں بمواجہ امیر معاویہ بن ابو سفیان ایک فورت آئی اور اس نے کما مات ابی و توک ولی مال لینی مالا کے لام کو مرفوع پڑھا۔ اس کے یہ معتی بوت کہ میرا باپ مرکیا۔ اور میرے لیے مال نے بھوڑ دیا۔ پس معاویہ کو یہ بات ناگوار گزری کو تکہ اس مقام پر لفظ مال منصوب لینی مفعول ہے پس اس غلطی کی خبر جناب امیر علیہ السلام کو ہوئی۔ اور آپ نے ابرالا سود سے فرملیا کہ نحو وضع کر۔ پس اس نے باب اضافت تصنیف کیا۔ پھریہ قصہ بھی درایہ فدکور میں ہوالا سود سے فرملیا کہ نحو وضع کر۔ پس اس نے باب اضافت تصنیف کیا۔ پھریہ قصہ بھی درایہ فدکور میں ہوالا اسود کے اپنی اولاد کو سکھلا اور عملی پر اقسام استفہام و تنجب جمع کیے اور ان کو اپنی اولاد کو سکھلا اور پر ابرالا اسود کی اولاد سے ابو اسحاق حضری اور عیسی الشفی اور ابو عمروین العلا وغیرہم نے علم نحو سیکھا۔ اور اس کے پر ابدالا سے سے کتب نحو میں اکثر مثالیہ فقرات توہین علی علیہ الدام سے اور اس مل طرح شفعے کے نبج پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ لوگ جناب علی علیہ صورت زید عصوا اور اس طرح شفعے کے نبج پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ لوگ جناب علی علیہ اسلام کے بیتی و دعموا اور اس طرح شفعے کے نبج پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ لوگ جناب علی علیہ اسلام کے بیتی و دعموا اور اس طرح شفعے کے نبج پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ لوگ جناب علی علیہ اسلام کے بیتی و دعموا اور اس طرح شفعے کے نبج پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ لوگ جناب علی علیہ اسلام کے بیتی و دعموا اور اس طرح شفعے کے نبح پر ہندہ بکرو خالد کے اساء ہیں اور یہ والد ابو طالب نے رکھا تھا

پس مثالیہ نقرات میں دشمنان علی کا نام اس نج سے لانا اس بات کی دلیل ہے۔ کہ علم نحو کا آنوز جنب م علیہ اسلام سے موا- اور اسکی اشاعت شیعان علی سے مولی- انعیف اتین م سائنہ اقول مشف الملون جز اول من ١٧٧م من بحواله ملاح المعادت يول مذكور ب-

بع علم ان الصدر الأول اخذ القرآن والحديث من افواه الرجال بالتلقين ثم لما كثر اهل الا سلام اضطر واالي وضع النقط والاعجام فقيل اول من وضع النقط مرا مروا الاعجام عامر وقيل الحجاج وقيل ابو الاسود الدؤلي بتلقين على رضى الله تعالى عنه الا ان الظاهر انهما موضوعان مع الحروف اذيبعدان الحروف مع تشابه صورها كانت عرية عن النقط الى حين نقط المصحف وقد روى أن الصحابة جردوا المصحف من كل شئي حتى النقظ ولولم يوجد في زمانهم لما يصح

التجريد منه جان لے کہ صدر اول نے قرآن و حدیث کو لوگوں کی زبانی تعلیم سے لیا ہے۔ پھرجب اہل اسلام زیادہ ہو گئے۔ تو نقطوں اور اعراب کی ضرورت یوی کما گیا ہے کہ پہلے جس مخص نے نقطے وضع كئے وہ مرامر تفا اور جس نے يہلے اعراب وضع كئے وہ عامر تفا- اور كما كيا ہے كہ حجاج نے وضع كئے اور کما گیا ہے کہ ابو الا سود دو کلی نے حضرت علی بناتھ عند کی تلقین سے وضع کیے مگر ظاہر یہ کہ نقطے اور اعراب ہر دو حروف کے ساتھ وضع ہوئے کیونکہ یہ بعید ہے۔ کہ حروف باوجود مثلبہ الشكل مونے كے مصحف شريف ميں نقطے ديئے جانے كے وقت تك نقطوں سے خالى مول-اور س مروی ہے کہ صحابہ کرام نے مصحف شریف کو ہرشے حتی کہ نقطوں سے بھی مجرد رکھا۔ اگر ان ك وقت من نقط ند تھے۔ تو ان سے قرآن كى تجريد بے معنى ہے۔ انتھى صاحب كشف الطنون نے نقطوں اور اعراب کے حروف کے ساتھ وضع کیتے جانے کی جو وجہ بیان کی ہے وہ بالکل دوست ہے للذا ابو الا سودیا حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ یا تجاج بن یوسف کو واضع نقط و اعجام قرار دیئے میں کلام ہے- ہاں یہ مصحف شریف میں پہلے پہل نقطے اور اعراب لگائے والے مانے جا سكت بس- چنانچه تفيرانقان من ب- (الله عن م ١١٥٠)

اختلف في نقط المصحف وشكله ويقال اول من فعل ذلك ابوالا سود الدؤلي بامر عبدالملك بن مروان وقيل الحسن البصري ويحيى بن يعمر وقيل نصربن عاصم الليثي واول من وضع الهمزو التشديد والروم والاشمام الخليل-مصحف شریف میں نقطے اور حرکات لگانے میں اختلاف ہے۔ کما جاتا ہے کہ پہلے جس نے بید کام کیا ابولا سودود کلی تھا۔ جس نے عبدالملک بن مروان کے تھم سے ایساکیا۔ اور کما کیا ہے۔ کہ وہ حسن بھری (متونی الھ) اور یحبی بن یعمر (متونی ۱۹ الھ) سے اور کما کیا ہے کہ وہ نفر بن عاصم یئی حونی مهری الھی اور کما کیا ہے کہ وہ نفر بن عاصم یئی حونی ۸۹ھ تھا۔ اور پہلے جس نے ہمزہ و تشدید روم واشام وضع کیا۔ وہ فلیل (متونی ۱۵ است تھی) استمی علامہ سیوطی نے مغیت الوعاۃ فی طبقات اللغومین والخاۃ مطبوعہ معرص ۱۷۲۴ میں ابو الاسود و نئی متونی ۱۷ ھے۔ وھو اول من نقط المصحف یعنی ابوالا سود پہلا مخص ہے جس نے مصحف شریف میں نقطے لگائے استھی۔ تغیراتقان جز جانی ص ۱۵ میں ہے۔

كان الشكل في الصدرا الاول نقطا فالفتحت نقطة على اول الحرف والضمة على اخره والكسرة تحت اوله وعليه مشى الدانى والذى اشتهرالان الضبط بالحركات الماخوذة من الحروف وهو الذى اخرجه الخليل وهوا اكثرو اوضع وعليه العمل فالفتح شكلة مستطيلة فوق الحرف والكسر كذالك تحته والضمه واو صغرى فوقة التنوين زيادة مثلها.

مدر اول میں اعراب نقطے تھے فتح رف کے شروع کے اوپر ایک نقط ہوتا تھا۔ سمہ حرف کے آخر پر ایک نقط ہوتا تھا۔ اور کرو حرف کے شروع کے شیج ایک نقط ہوا کرتا تھا۔ اور کرو حرف کے بہتے ایک نقط ہوا کرتا تھا۔ اور کرو حرف کے بہتے ایک نقط ہوا کرتا تھا۔ اس کے ماخوذ ہیں۔ اس کے اور اب جو مشہور تھا۔ لینی ان حرکات کے ساتھ ضبط کرنا جو حرفوں سے ماخوذ ہیں۔ اس کے مطابق فتح حرف موجد ظیل بن احمد ہیں۔ یہ ضبط اکثر و اوضح ہے۔ اور اس پر عمل ہے۔ اس کے مطابق فتح حرف کے اوپر ایک مستطیل شکل ہوتی ہے۔ اور کرو ایک ہی شکل حرف کے شیج ہوتی ہے۔ اور ضمہ حرف کے اوپر چھوٹی واؤ ہوتی ہے اور تنوین دوہری شکل ہوتی ہے۔ انتھی۔

بیان بالا سے ظاہر ہے۔ کہ مصنف کا دعوی کہ حضرت علی کرم اللہ وجہ موجہ نقاط و اعراب تھے۔

پایہ جوت کو نہیں پنچا۔ اس نے اپنے دعوے کی تقدیق کے لیے جو متن متین عبد الرسول کا حوالہ نقل کیا ہے۔ اس سے بجائے تقدیق کے اس وعوی کی تکذیب ہوتی ہے۔ کیونکہ ایک مخص کا ان اللہ بری من المصشو کین ورسولہ کے لام کو بالکر پڑھنا صاف بتا رہا ہے کہ اس نے اعراب میں غلطی کی پس اس سے ثابت ہے کہ اعراب کا وجوداس واقعہ سے پہلے تھا اس سے یہ اعراب میں غلطی کی پس اس سے ثابت ہے کہ اعراب کا وجوداس واقعہ سے پہلے تھا اس سے ہرگز ثابت نہیں ہو تا کہ اعراب کا وجود مطلقانہ تھا۔ ورایہ کی دو مری روایت سے بھی میں معلوم ہرگز ثابت نہیں ہو تا کہ اعراب کا وجود مطلقانہ تھا۔ ورایہ کی دو مری روایت سے بھی میں معلوم ہوتا ہے۔ کہ اعراب کا وجود پہلے سے تھا۔ ائن عورت کی اعراب میں غلطی ایس عمر کی غطی اس امر کا باعث ہوئی جس کی غرض ایس غلطیوں سے بچانا ہے۔ اس طرح ابوالاسود کی بٹی کی غلطی اس امر کا باعث ہوئی کہ اس نے اتسام استفہام و تعجب جمع کیئے مصنف کا یہ کہنا کہ عمرہ نمدہ و بکر خالد باعث ہوئی کہ اس نے اتسام استفہام و تعجب جمع کیئے مصنف کا یہ کہنا کہ عمرہ نمدہ و بکر خالد

معرت على كرم الله وجه كے وشمن تھے محل سوم نفن ہے۔ توجين عين كى مثل صوب زيد عمروا معمد الكيزے - كو مكد اس من عمرو كانام آيا ہے - ندك معرت عمرفاروق رضى الله تولى مند کا۔ کیاکٹ نویں ضرب زیدا ہے؟ اے شیعہ نے اس بنا پر کیوں نہ نکال ویا۔ کہ اس میں معرت كرم الله تعالى وجه كى تواين ب؟

قال الميرزا دوم علم نوكا موضوع كله وكلام كى بحث اس علم بين من حيث الاعوب اولى ب اور اور کی روایات سے ظاہر ہے کہ جناب علی علیہ اسلام کو معانی قرآن کے بدل جانے سے علم نو کی ایجوو تدوین کی ضرورت ہوئی۔ تو پس نابت ہو کیا۔ کہ حروف قرآن پر نقاط و اعراب کا ایجاد جناب امیرعلیہ اللام نے کیا باندوجہ فیات الا عین کی روایت سے جو لصربن عاصم یا یکی معمر کوبایمائے محباح بن بوسف موجدا احراب ونقاط بتایا کیا ہے۔ محض فلط ای طرح منهاج السعادة کی روایت کا وہ حصہ مجمی فلط ہے کہ مرام بن مرونے اشکال حروف کے علاوہ نقاط و اعراب مجمی ایجاد کیئے تھے۔ اور عامرنے اعراب- ہال بیہ ضرور ہوگا۔ کہ حروف مشابہ کے امتیاز و تفریق کے واسطے کوئی نہ کوئی ظاہری علامت ضرور رکھی ہوگی۔ جیسی نشانیال ہندی کے بعض حروف مشابر پر پائی جاتی ہیں۔ پس جناب امیر علیہ السلام نے ان نشانیوں کے عوض نقاط ا کیاد کر دیئے ہوں گے۔ اگر مراہ و عامر موجد نقاط واعراب ہوتے تو قریش اس کا ضرور اتباع کرتے۔ اورزمانہ رسول خدا اور زمانمائے خلفاء ثالہ کے مرتبہ قرآنوں پر نقاط و اعراب ضرور ہوتے جو نکہ ان پر نقاط و اعراب نه ستے۔ لندا موجد ان مذکورہ کو نقاط و اعراب کا بھی موجد بنانا محص لغو۔ دوم اگر این مرہ د عامر کو موجد نقاط و اعراب مان ليا جائ - تو جناب على عليه السلام موجد علم نحو نهيس قرار يا عليه - جو جهور نحومين اسلام کے برخلاف ہے۔ کیونکہ علم نحو کا تعلق صحت عبارت کے ساتھ من حیث الاعواب سوم ظفاء علته اور ان کے اتباع نے بیاطن اور نا کین و قاسلین اور مارقین نے بظاہر تقلید وانباع علی کو حرام قرار وے دیا تھا۔ اور حکام جابر وصلفاء جائز نے اعلان کرویا تھا۔ کہ علی اور اولاد علی پر مجمع عام اور ہرجمعہ وجماعت یں سب و شتم کیاجائے۔ اور ان کی کسی بات میں گواہی نہ قبول کی جائے اور نہ بنو امیہ و مروانیہ پر بنی ہ^{اتم} کو شرف دیا جائے۔ اور ان کے وظائف اور سکونتی مکانات منہدم کر دیتے جائیں۔ وغیرہ وفیرہ۔ ان ہاتوں ے جوت مروج الذہب و تاریخ میں یہ بھی ہے کہ محد ثین اہلتت صدیوں قال علی کہنے کے بجائے خوف ے سبب به تقیه قال ابو الزینب کتے تھے اور تمازوں میں درود شریف ترک کر دیا تھا۔ جس کو آٹھویں صدی میں سلطان الجائنة مقتب به خدا بندہ نے مرر جاری کرایا۔ (تزک تیموریی) اور بیر ای قرار واو جرم کا آن تک اثر موجود ہے۔ کہ جملہ اہل سنت شعار شیعیت سے سیجنے کے لیے خلاف قرآن وضوء میں پاؤں وحوت بین مسع نمیں كرتے طالانك جمله الل سنت كو انتاع قرآن كا ادعا ، اور باتفاق جمهور اسلام مسلم

فوے بڑھ کر اور کوئی عملی تھم قرآن میں واضع تر نہیں اس خرابوں کی وجہ یہ ہے کہ جناب علی مليه السلام موجد اعراب و نقاط ستے اور قريش ميں فن تحرير عربی کے پھيلانے والے بني اميہ جو مخالف بني ائم اور بالضوص وشمن على منه- اس سبب سے عام و خاص نجوف جان و آبرو آیات قرآنی بر نقاط و اعرب ن دیتے تھے۔ چنانچہ مفتاح ندکور میں لکھا ہے کہ متشابہ حروف پر نقاط اور حروف قرآن پر اعراب لگانے کا وستور قدیم نہ تھا۔ کیونکہ شاہ حراسان عبداللہ ابن طاہر جو کہ 213ھ میں تخت نشین موا تو اس کے حضور میں کی خوشنویس نے ایک کتبہ چیش کیا- عبداللہ فدکور نے جو خوعلی کی تعریف کی- مرتقطوں کی نبست کا۔ كما اكر اس كتبه ير نقطول كى كلونجى جيمركى موئى نه موتى تو خوب موتا- الغرض ثابت موا- كه موجدان خط على في فقاط و اعراب مركز ايجاد شيس كيئ ان دونول ك موجد جناب على عليه السلام بين-"سبهر جن المسنّت و جماعت كابيه قول بلكه اعتقاد ب- كه جناب على عليه اسلام في بمقابله خلفاء ملاية اسلام کی اعانت نہیں گی۔ پس وہ نقاط و اعراب قرآن کے فوائد برغور کر کے تحفظ اسلام اور تحفظ مقاصد خدااور رسول کا کوئی طریقتہ اس سے بہتریا اس کا مساوی خلفاء ٹلانڈ کا پیش کریں۔ جو نہ کر سکیس تو ایس تغویت سے توبہ کریں۔ اور یقین جان لیس کہ جو پچھ مفسرین و محدثین و تقمین واصولین و قراء کے تنازعات آیات قرآنی کی نسبت ہیں۔ وہ سب ترک اتباع و تقلید جناب علی علیہ اسلام کے سبب سے ہیں اگر ابتداء سے جناب ممدوح کی پیروی کرتے تو آج ان معارضات کا وجود دنیا میں نابید ہو تا۔ انھیف کاتین۔ ص ۲۱۲ ۱۳۲ ا قول روایات بالاے توبہ ثابت ہو تا ہے (کہ حضرت علی کرم الله تعالی وجہ نے اعراب کی غلطی (خواہ وہ آیہ قرآنی میں تھی یاغیر قرآن میں) کو سن کر ایسا عمل وضع کیا۔ جس میں اعراب کے متعلق قوانین وضوابط مول- ان سے ميد معلوم شيس موتاك آپ في نقاط و اعراب ايجاد كيے- وفيات الاعيان اور مفاح المعادت ک عبارتوں پر کافی بحث ہو چکی ہے۔ جس کے اعادہ کی ضرورت نہیں مصنف کاب استدلال کہ چو تکہ زمانہ رسول خدا اور زمانهائے خلفاء ولئے کے مرتبہ قرآنوں پر نقاط و اعراب نہ تھے۔ اس کیے ثابت ہوا کہ اس وقت تک اعراب و نقاط کا وجود مطلقاً نه تھا۔ درست شیس ہم کتے ہیں۔ که اعراب و نقاط کا وجود تو اس سے پیٹو بھی تھا۔ مگر قرآن میں ان کا استعال نہ کیا گیا۔ جس کی وجہ سے معلوم ہوتی ہے کہ خط عربی اس وقت ابتدائی حالت میں تھا۔ قرآن چو نکہ عربی میں ہے۔ اس کیے اہل عرب نقطوں اور حرکات کے بغیراس کو أماني سے رور ليتے تھے۔ اور سمجھ ليتے تھے اور وہ نقاط و حركات كو ذاكد خيال كرتے تھے۔ اى واسطے انہوں نے کوسش کی کہ قرآن کو نقاط و حرکات سے مجرد رکھا جائے۔ اور حکایت عبداللہ بن طاہر مجمی ہمارے قول کی موید ہے اس حکایت کو مصنف نے بیجا استعمال کیا۔ اور اس سے غلط تعجبہ نکالا ہے۔ چنانچہ کشف ، ص ۱۸ میں بحوالہ مقاح السعادت یوں لکھاہے-

واعلم ان النقط والا عجام في زماننا و اجبان في المصحف و اما في غير المصحف و اعلم ان النقط و اللبس فر فعند خوف اللبس و اجبان البتة لا نهما ما وضعا الا لا زالته و امامع من اللبس فر كه اولى سيما اذا كان المكتوب اليه اهلا وقد حكى انه عرض على عبدالله بن طابر خط بعض الكتاب فقال مااحسنه لولا اكثر شونيزه و يقال كثرة النقط في الكتاب سوء الظن بالمكتوب اليه وقد يقع بالنقط ضرركما حكى ان جعفر الكتاب سوء الظن بالمكتوب اليه وقد يقع بالنقط ضرركما حكى ان جعفر المتوكل كتب الى بعض عماليه ان احص من قبلك من الذميين وعرفنا بمبلغ عددهم فوقع على الحاء نقطة فجمع العامل من كان في عمله منه وخصاهم فما تواغير رجلين الا في حروف لا يحتمل غيرها كصورة الياء و النون والقاف والفاء المفردات و فيها ايضًا مخير

جان لے کہ ہمارے زمانے میں معضف شریف میں نقطوں اور حرکات کا ہونا واجب ہے اور جب التہاس کے گئے۔ التہاس کا خوف ہو تو غیر قرآن میں بھی ہر دو یقینا واجب ہیں۔ کیونکہ دونوں رفع التہاس کے گئے۔ ہاں جب التہاس کا خوف نہ ہو تو ان کا ترک کرنا اولی ہے۔ خصوصا جبکہ محتوب الیہ اہل ہو حکابت ہے۔ کہ عبداللہ بن طاہر کے حضور میں کسی کانٹ کا خط پیش کیا گیا۔....

شاہ موصوف نے و کھے کر کما کہ کیا خوب ہو تا اگر اس میں کلو ٹجی کی کثرت نہ ہوتی۔ اور کما جاتا ہو کہ خط میں نقطوں کے کہی کثرت کتوب الیہ کی طرف بد ظنی ہے۔ اور نقطوں ہے کھی نقصان ہو جایا کرتا ہے۔ چنائی حکایت ہے۔ کہ جعفر متوکل نے اپنے کسی عامل کو لکھا۔ کہ تمہمارے ہاں جھنے ذی اشخاص ہیں۔ ان کو شار کرو اور ان کی تعداد کی اطلاع ہمیں وو لکھنے میں احص کی ح پر ایک نقطہ لگ کیا۔ پس عامل نہ کورے اپنے ہاں کے تمام ذمیوں کو جمع کیا اور انہیں خصی کردیا۔ جس نقطہ لگ کیا۔ پس عامل نہ کورے اپنے ہاں ان حروف میں جن میں فیرکا اختال نہیں نقطوں سے منرر نہیں۔ سے دو کے سوا تمام مرکئے۔ ہاں ان حروف میں جن میں فیرکا اختال نہیں نقطوں سے منرر نہیں۔ اور ان میں بھی اختیار ہے نقطے دے یا نہ دے۔ انہی۔ اس بیان سے ناظرین اندازہ لگا سکتے ہیں کہ حضرات خلفاء شلاشہ رضی اللہ تعالی عنم کے زمانے میں نقطوں کے کرد کھا گیا۔ انقان تعالی کو کس نگاہ سے دیکھتے ہوں گے۔ ای واسطے معمقہ شریف کو نقطوں سے مجرد رکھا گیا۔ انقان جن شانی می سامیں ہے۔

عن ابن مسعود قال جردوا القران لا تخلطوه بشى واخرج عن النخعى انه كره نقط المصاحف وعن ابن سيرين انه كره النقط والغواتح والخواتم وقال مالك لا باس بالنقط في المصاحف التي تتعلم فيها العلماء الا مهات فلا.

حضرت ابن مسعود متونی ۱۳ ھے منقول ہے کہ آپ نے فرمایا قرآن کو بجرد رکھو۔ اور اس کے ساتھ کوئی اور شے نہ ملاؤ اور امام نخفی سے منقول ہے کہ آپ مصاحف میں نقطوں کو کردہ جانے سے۔ اور امام مالک فرماتے ہے کہ ان مصاحف میں جن میں سے علاء سکیمیں۔ نقطے لگانے کا ڈر نہیں۔ کر اصل شخول میں نقطے نہ چاہیے۔ انتھی خلاصہ یہ کہ آنخفرت ما پہلے کے حضور میں جو قرآن لکھا جاتا تھا۔ اس میں نقطے اور حرکات نہ تھے۔ اور نہ اہل عرب کو ان کی ضرورت تھی۔ حضور اقدس ما پہلے کے بعد بھی ای خط مصحف کا اجاز کیا گیا۔ کہ اگر این موہ عامر کو موجد نقاط و اعراب مان لیا جائے۔ تو جناب علی علیہ السلام موجد علم نحو نہیں قرار پاکتے علم نحو میں اعراب کے متعلق قواعد و ضوابط نہ کور ہوتے ہیں۔ للمذا اگر حضرت علی کو موجد علم نحو تعلیم کیا جائے تو اس متعلق قواعد و ضوابط نہ کور ہوتے ہیں۔ للمذا اگر حضرت علی کو موجد علم نحو تعلیم کیا جائے تو اس سے بیا جاتا ہے۔ کہ اعراب کا وجود پہلے تھا جس کے متعلق قواعد و ضوابط کی ضرورت بلے تھا جس کے متعلق قواعد و ضوابط کی ضرورت

ولیل سوم کے ضمن میں مصنف نے بے اصل یا تھی کھی ہیں جن پر بحث کا یہ مقام نمیں اہلنّت و جماعت کو اتباع قرآن کا دعوے ہے۔ اور وہ اپنے دعوے ہیں سے ہیں۔وضوء میں پاؤں کا مح کرنا قرآن سے خابت نہیں بلکہ پاؤں کا دھونا خابت ہے۔ بعنو ان شیہ مصنف نے جو کچھ لکھا ہے۔ وہ اسے مفید نہیں۔ کیونکہ حضرت علی کرم اللہ وجہ موجد نقاط و اعراب نہیں اگر انہیں موجد فرض کر لیا جائے تو بھی معاملہ مصاحف میں وہ ظافاء خلافہ ہے کی طرح سبقت نہیں لے جا سے۔ کیونکہ ظیفہ اول اس معاملہ میں سب سے اول نمبر پر ہیں۔ جس کا خود حضرت علی کو بھی اعتراف کیونکہ ظیفہ اول اس معاملہ میں سب سے اول نمبر پر ہیں۔ جس کا خود حضرت علی کو بھی اعتراف ہے۔ وہ مرے درجہ پر حضرت فاروق اعظم میں جنہوں نے حضرت صدیق اکبر کو اس کا ذہر کی ترفیب وی۔ شیرے درجہ پر حضرت فاروق اعظم میں جنہوں نے حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ نے حسب عقیدہ ترفیب وی۔ شیرے درجہ پر حضرت فاروق اعظم میں جنہوں کے حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ نے حسب عقیدہ شیعان قرآن کی سے ضدمت کی کہ اسے گم بھی کر دیا۔ کیا شخط اسلام اور شخط متعاصد خدا اور رسول شیعان قرآن کی سے ضدمت کی کہ اسے گم بھی کر دیا۔ کیا شخط اسلام اور شخط متعاصد خدا اور رسول کا کی طریقہ ہے اس طریقہ سے برتر اور کونیا طریقہ ہوسکتا ہے اگر حضرت مولی مرشی نے نقاط اور اعراب ایجاد کیے۔ تو انہیں کان استعمال کریں؟ کیا بقول شیعہ بیاض عثانی میں کہ جس کی ایک اور اعراب ایجاد کیے۔ تو انہیں کان استعمال کریں؟ کیا بقول شیعہ بیاض عثانی میں کہ اس میں تحریف کا اعتمال نہ ہو؟ کیا ناقس و محرف قرآن نقاط و اعراب کا گھ میں بہ قرآن بھی ہوتا جو اب ہے۔

قال الميرزا

اقول قرآن مجید کی نظم و رسم و ترتیب خواہ وہ کی خط میں ہو بھینہ وہی رہی ہے۔ جو حضور اقدی مانی اللہ اللہ کے مبارک زمانے میں بھی مصاحف عثانی اور ان کی بیٹار نقلیں اب تک موجود ہیں۔ جس کا بی چاہا ان مند مختلف کے شخوں کا باھم مقابلہ کرکے دیکھے ان میں ذرا بھی فرق شیں۔ اور فرق آتا کیے جب کہ سلور کے علاوہ لاکھول صدور ہیں محفوظ رہا ہے۔ اور رہے گا۔

قال الميرزا

عدم ونوق فرلیس براخیار تحریف سیری دلیل بریت فلفاء ثلاث کی یہ بھی ہے۔ کہ نقص و تحریف قرآن کی احادیث فرلیس براخیار تحریف سیری دلیل بریت فلفاء ثلاث کی احادیث فرلیس براخیار تحریف اور جیس برو کٹرت اخراج کے سبب متواتری معلوم ہوتی ہیں۔ اور جو بالفرض ان بیس کہ بعض علائے المستت کے نزدیک احادیث متواتر کا وجود تی نہیں۔ اور بعض نے صرف تین فتم کے مضافین کی احادیث کو متواتر مانا ہے۔ ایک قرآن کے منجاب خدا ہونے ووم نقل قرآن سوم اداے صلوق منجگانہ کی احادیث اور باقی اور جملہ اقسائی احادیث اور بملہ اقسائی احادیث کو متواترات سے نہیں مانا۔ دوم علماء المستت کے نزدیک احادیث متواتر منب علم ہیں۔ مرمند یقین نہیں ہیں۔ سوم بعض گروہ قوم و ملت کا قواتر دو سرے گروہ ملت والوں کے واسط منبد علم بھی نہیں ہوتا چونکہ تدیر کتب سے قواترات ملی و قومی کا احتالی درجہ ثابت ہے۔ بانیوجہ نقص و

آریف قرآن کی بعض اطادیث و متواتر مان کر بھی فریقین میں ہے کسی نے قرآن ورست کرنے کی جرات نہیں کی۔ لہذا جامعان قرآن نقص و تحریف قرآن کے الزام ہے بری بلکہ خلفاء الله کو محرف قرآن سمجمتا معزات شیعہ کی زادتی ہے۔ ہال بعض جابل اہل سنت قرآن کو محفوظ مان کر تحریف قرآن کا معقد فرقہ شیعہ کو بتاتے ہیں تو جمافت ان اہل سنت کی ذائی ملت کا قصور نہیں کیونکہ ان کی ملت کے علماء نے جز کے جربی قرآن کے اثبات میں سیاہ کر دیے ہیں۔ لیکن ہم اس جھڑے کا فیصلہ ہی کہنے دیتے ہیں۔ انہین می ۱۵-۱۸)

اقول بین الفرقین حدیث متواتر علم یقینی کا موجب ہوتی ہے۔ اس واسطے اعتقادیات کے ثبوت میں تواتر شرط ہے۔ قرآن موجود کی نسبت اہل سنت وشیعہ کے عقیدے میں زمین آسان کافرق ہے۔شیعہ کاعقیدہ ے کہ قرآن موجود میں تحریف بائی جاتی ہے۔ اور وہ تحریف محلبہ کرام نے اغراض دنیوی کے لیے آتخفرت ملٹی کیا کے وصال شریف کے بعد کی ہے۔ وہ روایات شیعہ (دو ہزار سے زائم) جن یہ اس عقیدے کا مدار ہے- علائے شیعہ کے نزدیک متواتر ہیں- جیسا کہ بحوالہ انوار نعمانیہ پہلے آچکا ہے- اور وہ فیعی علاء کے نزدیک صراحہ تحریف قرآن ہر دلادت کرتی ہے اس کے برعکس اہلسنت کامیہ عقیدہ ہے۔ کہ قرآن میں کوئی تحریف نہیں ہوئی۔ ہمارے ہاتھ میں جو قرآن ہے وہی ہے جو حضور رسول اکرم مانجیج اس ونیا سے تشریف کے جانے کے وقت چھوڑ گئے تھے۔ شیعہ بطور الزام جاری کتابوں سے جو بعض روایات بیش کرتے ہیں کہ جس سے قرآن میں نقصان ثابت ہو۔ وہ اولا تو احاد ہیں۔ جو مدار عقیدہ نہیں بن سکتیں انیار تقذیر صحت ان سے صرف اتنامعلوم ہو تا ہے۔ کہ بعض آیتیں۔ ایسی تھیں جو نازل ہو کر آنخضرت الناج ك زمانے بى ميں منسوخ اللاوة بوكيں- لنذا قرآن ميں نه رہيں- اللبنت ميں سے كوئى بھى يہ شيس كتاك ان روايتوں سے وہ تحريف ثابت ہوتی ہے جس كے شيعہ قائل ہيں غرض قرآن ميں تحريف كا قائل مرف فرقہ شیعہ ہے مصنف تقیف کاتبین کا قول یہ ہے۔ کہ حضرات شیخین نے جو قرأن اپنی رائے سے جمع کیا تھا وہ ناقص تھا۔ حضرت عثمان غنی نے اس قرآن کو اس کی نفول سمیت تلف کرویا اور اٹی رائے سے نیا قرآن جمع کیا اور اس کی نقلیں اطراف میں جیجیں مگر مصاحف عثانی ظاہر بھی ناپید ہو گئے م استعداد کاتبوں نے ونیاوی اغراض کے لیے عط معاصف میں قرآن لکھ لکھ کر ان کو معاصف عثانی طامر کیا- اس طرح ان کاتبوں نے فاش غلطیاں اور نقائص پیدا کر دیئے جو آج تک قرآن میں موجود ہیں-مرياد رب كه مصنف كايد قول سرا سرغلط و افتراء ب جيها كد اوراق سابقه كے مطالعه في عيال --

قال المير زا

فیصلہ عدم وعدہ حقاظت قرآن اگرچہ اس معنی کے مضمون کو ہم اپنی بعض تالیف مثلا عربفہ خاور اور نوحہ نثریہ وغیرہ میں لکھ چکے ہیں لیکن یہ رسالہ خاص اثبات تحریف قرآن کے باب ہی میں لکھنا متعمور ہے۔ اس لیے ان ہی میں کے بعض مناسب مضامین میں درج کیے جاتے ہیں-

اِنَّا نحن نزلنا الذكر واناله لحفظون كى بحث آغاذ كرنے سے پہلے يہ باتيں ظام كروبى مرورى ہيں۔ كه فريقين كے نزويك قرآن مابين الدفتين جو كچھ اور جيسا كچھ ہے۔ وہ سب كلام خدا ہے۔ اس ميں كسى بشركا كلام شريك نہيں۔ اور نہ قرآن بحيثيت تنزيل ناقص ہے۔ اگر كوئى قرآن مجيد كو بحثيت تنزيل ناقص سمجھے۔ تو وہ كافر جنمى ہے اس ميں خواہ كوئى شيعہ ہو يا سنى ليكن فريقين كاكوئى فرو قرآن مجيد كو بحثيت تنزيل ناقص نہيں سمجھتا۔ لنذا اس كى بحث عبث ہے۔ انقيف كاتين من ۱۸

اقول ہم پہلے بحوالہ کت معترہ شیعہ خابت کر آئے ہیں۔ کہ شیعہ قرآن موجود میں اذروئے کتب سب الشخ کے تحریف کے قائل ہیں۔ ان کے زدیک قرآن موجود کی کوئی آیت الی نہیں۔ جس میں تحریف کا حمّال نہ ہو۔ مگر اہلسنت کے نزدیک جو کچھ مین الدفتین ہے۔ وہ قرآن ہے۔اور انتا ہی اور ای ترتیب سے حضور اقدس ما تھے دنیا سے تشریف لے جانے پر چھوڑ گئے تھے۔ آپ کے بعد اس میں کی نے کی بیشی نہیں کی

قال المير زا اب رہا قرآن مجيد كا بحيثيت نظم و ترتيب ناقص ہونا۔ تو يہ بديمات سے ہے۔ ميساكہ آيدہ معلوم ہوگا۔ ليكن بعض علماء فريقين قرآن ميں محرف ہونے كے منكر بيں۔ تو فريقين كايہ انكار محمول بو تقيہ ہے۔ اور علمائے المستت كا انكار حفظ دين و ملت خلفاء ثلاث كيونكہ المستت و جماعت خليفہ اول دوم و سوم كو جامعان قرآن جائے ہيں۔ اور موجود قرآن كو حضرت عثمان كا مرتبہ سمجھے ہوئے ہيں۔ جس كاغلط ہونا اوير بہ تفصيل بيان ہو چكاہے۔

اقول ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ حسب عقیدہ اہلسنّت قرآن موجود بین الدفتین جس تر تیب ہے ہے۔
ای تر تیب سے لوح محفوظ میں ہے۔ اور ای تر تیب سے اسے جناب رسالت ماب علیہ الوف التحیہ والعلوة تلاوت فرمایا کرتے تھے اہلسنّت کا یہ بھی عقیدہ ہے کہ قرآن مجید میں کسی طرح کی تحریف واقع شیں ہوگی جسیا کہ خود قرآن مجید اور ان کی کتب معتبرہ سے خابت ہے۔ مگر شیعہ کا عقیدہ اس کے بالکل بر عکس ہے۔
جمع و تالیف قرآن کی بحث میں ثابت کیا جا چکا ہے کہ آج جو قرآن ہمارے پاس ہے۔ اس میں اور مصف عمان میں بلحاظ نظم و رسم تر تیب ذرا بھی فرق شیں۔

تال الميرزا مقام غور ہے كہ حفرت موسى عليہ إسلام تو ريت كو اپ وصى معموم لين حفرت يوشع بن نون عليہ اسلام كے حوالہ كر گئے تھے۔ اور ان كے بعد بكفرت انبياء معموم كى حفاظت و اشاعت كرتے به كلين پر بھى تحريف ہوگئى۔ اور باعتقاد المسنّت پنيمبر خدا كے بعد كوئى معموم نهيں رہا۔ بانبوجہ قرآن باز افغاء اور عمل الفسق كے پالے پڑگيال پس اس ميں تحريف ہوگئى تو كونسا تعجب كا مقام ہے۔ (تقیف باز افغاء اور عمل الفسق كے پالے پڑگيال پس اس ميں تحريف ہوگئى تو كونسا تعجب كا مقام ہے۔ (تقیف باز افغاء اور عمل الفسق كے پالے پڑگيال پس اس ميں تحريف ہوگئى تو كونسا تعجب كا مقام ہے۔ (تقیف

اقول قرآن کا حافظ خود خدا تعالی ہے۔ اس واسطے اس میں تحریف نہیں ہو سکتی۔ تو رات کی حفاظت خود بود پر جھوڑی گئی تھی۔ اس واسطے اس میں تحریف ممکن تھی اور ہو گئی۔ اللہ تعالی فرما تا ہے۔

ان انزلنا التوراة فيها هدى ونور يحكم بها النبيون الذين اسلمو اللدين هادو او الربا نبون ولا حبار بمااستحفظو من كتب الله وكانو اعليه شهداء- (مائده:ع)

بینک ہم نے توریت نازل کی جس میں ہدایت اور نور ہے۔ وہ انبیاء جو مطبع خدا تھے۔ یمودیوں کے نفط اس کے مطابق کرتے رہے۔ اور اس طرح اللہ والے نوگ اور علماء جن کو اللہ کی کتاب کی مفاظت سپرد کی گئی تھی۔ اور وہ اس کے گواہ تھے۔ (انتھی ترجمہ شیعہ)

الم بیتی روایت کرتے ہیں۔ کہ یکیٰ بن اسم متوفی ۲۳۲ھ نے کما کہ ایک یمودی فلیفہ ماموں کی فلامت میں آیا۔ اس نے کلام کیا اور اچھا کلام کیا۔ فلیفہ نے اسے دعوت اسلام دی۔ گراس نے فلامت میں آئاد کردیا۔ جب ایک سال گزرا تو وہ مسلمان ہو کر ہمارے پاس آیا۔ اور اس نے علم وفقہ میں انکار کردیا۔ جب ایک سال گزرا تو وہ مسلمان ہو کر ہمارے پاس آیا۔ اور اس نے علم وفقہ میں انکار کردیا۔ ماموں نے اس سے لوچھا کہ تیرے اسلام لانے کا باعث کیا ہے اس نے کما کہ میں نے آپ کے ہاں سے کما کہ میں نے آپ کے ہاں سے ہماکہ میں کی بیشی کر دی۔ اور ان میں کی بیشی وسیتے وہ تینوں نے فروخت ہوگئے پھر میں نے آئیل کے میں کی بیشی کر دی۔ اور ان میں کی بیشی کر دی اور ان کو وراقین کے ہاں بھی دیا۔ اور مول میں قرآن مجید کے تین نے لکھے اور ان میں کی بیشی کر دی اور ان کو وراقین کے ہاں بھی دیا۔ انہوں نے ان نیوں کے وہ ان لیا کہ بیٹ کیا گو ان کو پھینک دیا۔ اور مول نہوں نے ان سے میں نے وہ ان لیا کہ بیٹ کیا تو ان کو پھینک دیا۔ اور مول نہوں نے ان سے میں نے وہ ان لیا کہ بیٹ کیا اور سفیان بن مینیہ ہے طامیں نے ان سے بے قصہ بیان نہ لیا سے میں نے وہایا کہ اس کا مصداق قرآن مجید میں موجود ہے۔ میں نے لوچھاں کس کا میان می وہ دو ہے۔ میں نے لوچھاں کس کا میان کی جو زی گو۔ اس کا مصداق قرآن مجید میں موجود ہے۔ میں نے لوچھاں کس مقام کی۔ خرایا کہ اللہ قرایا۔ اور انجیل کی بایت بھا استحفظو ا من کتب اللہ فرایا۔ کیا مقام کی۔ خرایا کہ اللہ قوایا کہ اللہ قرایا۔ اور انجیل کی بایت بھا استحفظو ا من کتب اللہ فرایا۔ انہ مقام کی۔ خرایا کہ اللہ قوان کی جہور ڈی گئے۔ می قرآن کریم کی نبت قرایا ہے۔ انا نبحی نزلنا اللہ کو

وان له لحفظون اس واسط الله تعالى نے اس تحریف و تبدیل سے محفوظ رکھ ہے- (دیمونسائم كرب البوطي مطبوعه مجلس وائره المعارف انظاميه حيدر آباد مي ١٨٥)

قل الميرزا دوم كلام خدا محرف ہونے كے سبب دائرہ احترام واتباع سے خارج نہيں ہوتا-اور نہ كام اللی کی تحریف ایاجرم ہے کہ محرف کلام اللی اپنے ذہب متعلقہ سے خارج ہو جائے۔ چنانچہ قربت انجیل محرف ہونے پر بھی کلام خدا مانی جاتی ہیں۔ اور محرفان توریت و انجیل یبود و نصاری کملاتے ہی۔ لنذا قرآن محرف مجمى كلام اللي مانا جائے گا- اور محرفان قرآن كو مسلمان- (تقیف كاتبین ص ١٩) ا قول محرف كلام اللي كي تعظيم صرف اس حيثيت سے ہے۔ كه اس ميں كچھ حصد كلام اللي مجي موجود ہے۔ کلام الی کی تحریف کفر ہے۔ قرآن کی موجودگی میں تو رات و انجیل (خواہ غیر محرف عی کیل نہ

ہوں) پر عمل کرنا جائز نہیں محض یہود و نصاری کہلانا کیا فائدہ دے سکتا ہے محرف **توریت و انجیل ادل ہے** آخر تک کلام اللی نمیں مانی جاتیں۔ ورنہ وہ محرف خابت نہ ہوں گی۔ قرآن مجید میں حسب وعدہ اللی تحریف ہو ہی نہیں سکتی۔ للذا جو مخص قرآن میں تحریف کا قائل ہے وہ منکر قرآن اور بے دین ہے۔ ولل الميرزا سوم قرآن مجيدے پہلے كے جملہ كلام اللي مكن التحريف عصد جن كى تحريف كى شادت قرآن مجیدے ظاہرہے چمارم ہر کلام کی شان ہے۔ کہ وہ ممکن الحفظ بھی ہو- اور ممکن التحریف بھی-ادر قرآن كو كلام مانا جاتا ج- للذا وه بهى ممكن التحريف موا- أورجو ممكن التحريف نه مانا جائ تو قرآن مفت

كلام سے خارج- (تعيف كاتين ص ١٩)

اقول بیشک قرآن مجید شاہر ہے۔ کہ اس سے پہلے کے جملہ کلام اللی محرف ہو گئے۔ مگریہ مجی قرآن مجد ہی سے ثابت ہے۔ کہ قرآن میں تحریف نہیں ہو سکتی۔ کیونکہ اس کا حافظ خود خدا ہے پس اس طرح کلام الى كى دو قسميس موسي - ايك ممكن التحريف دو مرے ممتنع التحريف- للذابيد كمناكد أكر قرآن كو ممكن التحريف نه مانا جائے تو صفت كلام سے خارج ہو گا غلط ہے۔

تال الميرزا بعض منقولي دوستوں كى خاطرے أكر آية انا نحن نزلناالذكر واناله لحفظون يك ذكر مل قرآن مراد ليس اور لحافظون سے اس كى حفاظت كا وعدہ مجصيں توبيہ بهت بري خطا ہے۔ كيا منى ك کلام مجید میں لفظ ذکر بہت ہے معانی میں آیا ہے۔ از انجملہ رسول کے معنی میں مجمی چنانچہ سورہ طلاق میں

قدانزل الله اليكم ذكرا رسولا يتلو عليكم ايات الله مبينت بینک ہم نے رسول کو ذکر کر کے بھیجا۔ وہ خدا کی آیتا کو تم پر ظاہر بڑھتا ہے۔ سایت یس ذکرے مراد رسول کا ہونا ایسا صرت کے ہے۔ کہ کوئی بات بن سیس پڑتی۔ باندوجہ فریقین

علاء نے یہاں ذکر کر کہ معنی رسول ہی اختیار کیے ہیں۔ اور صاحب اعالم الزیل نے لکھا ہے وان لله لحفظون ہیں کی ضمر تغیبر خدا کی طرف راجح ہے۔ بانیوجہ خدا کا وعدہ حفاظت لفس تغیبر کی طرف سے بس کا ایفاء معرکائے بدر اخد خندتی خیبر حنین تبوک وغیرہ مقامات پر ہو چکا اور جو ذکر کے معنی قرآن فرض کے جائیں۔ ولیافظون سے قرآن کی حفاظت کا وعدہ خدا سمجھا جائے گا۔ چوں کہ کتب فریقین میں قرآن موجودہ کی نہیت نقص و تحریف کی اخادیث و روایات موجود ہیں۔ جن کے سبب خدا تعالی جائل اور وعدہ خاب فابت ہوتا ہے۔ بانیوجہ فریقین کا فراور کلیہ غلط۔ بال اگر کھطون سے وعدہ بائے وین لیے جائیں تو ماسب وانسب

(1) قرآن مجید میں کسی بشر کا کلام شریک نہ ہوگا۔ (2) صدود و اصو قرآن ضائع نہ ہو سکیں گے۔ (3) الفاظ قرآن اور مقامات تحریف شدہ بے پہتا نہ ہونے پائیں گے۔ (4) آیات نہ سورہ قرآنی خلاف ترتیب زبل ہو کر دنیا میں باقی ریس گی۔ (5) صدر اول کے کاتبین کے اغلاط صریح سے محکوک و خارج نہ ہونے بائیں گے۔

پس بی پانچویں وعدے صحیح اور سے ہو سکتے ہیں لیکن نظم و ترتیب قرآن کام مطابق تنزیل ہو کر اپ بہلہ الفاظ کے ساتھ محفوظ رہنا بالکل غلط اور بدیمی البطان ہے چونکہ ایسے ہی مضحکم ولائل فریقین کے علمہ ایس منجے۔ بایں سبب قرآن کے کامل ہونے کا اعتقاد فریقین کے علمہ نے سرط اسلام نہیں قراردیا۔ فافسم فتد بو (تھیف کاتین م ۲۰) ۱۹)

اقول آیت زیر بحث میں ذکر سے مراد قرآن اور محافظوں سے اس کی حفاظت کا وعدہ ہے کی درست مسلم میں درست مسلم کی بردی خطا ہے بغرض توضیح ہم اس آیت کو آیات ما قبل سمیت نقل کرتے ہواں کو بری خطا کمنا مصنف کی بردی خطا ہے بغرض توضیح ہم اس آیت کو آیات ما قبل سمیت نقل کرتے ہوا۔

وقالوا يايها الذى نزل عليه الذكرانك لمجنون- لوما تاتينا بالملكة ان كنت من الصدقين مانتزل المليكة الا بالحق وماكانوا اذا منظرين- انا نحن نزلنا الذكر وانا للحفظون

اور انہوں نے یہ کمہ دیا کہ اے وہ مخص جس پر قرآن مجید نازل کیاگیا ہے۔ تو ضرور دیوانہ ہے۔
اگرتو بچوں میں سے ہوتا تو تمہارے پاس فرشتے کیوں نہ لے کر آتا۔ فرشتوں کو تو ہم موقع ہی سے بھیجا کرتے ہیں۔ (اور جن کی طرف بھیجتے ہیں) پھران کی مسلت نہیں دی جاتی بیشک ہم ہی نے ذکر کو نازل کیا ہے اور بقیقا ہم ہی اس کے محافظ ہیں۔ (ترجمہ شیعہ) مترجم اردونے پہلی آیت میں ذکر کو نازل کیا ہے۔ اور بقیقا ہم ہی اس کے محافظ ہیں۔ (ترجمہ شیعہ) مترجم اردونے پہلی آیت میں ذکر کا ترجمہ قرآن مجید کر دیا ہے۔ حالا تکہ بمال بھی ذکر

کا وصف حزیل آیا ہے۔ اور حزیل کے معنی بقدرت کی مرة بعدا خرے پارہ پارہ اہرنا ہے جیار مفردات راغب میں ذکور ہے۔ ملا فتح اللہ کا شانی نے ان آیتوں کا فاری ترجمہ کیا ہے۔ و گفتر کفار عرب اے آن کسیکہ فرود آمدہ است برو قرآن بدر سٹیکہ فودیوانہ کہ مارا از فقر بنیے خوانی این کلام مرابطریق استہزاے گفتند چہ اعتقاد بنزول قرآن و نسبت جنون ہم راست نے آیہ چرائے آری بما وستگان بگوائی رسالت خود اگر جستی اذ راست گویاں در دعوی تیفیری ہکفور ماگوائی دہ خوا آگر جستی اذراست گویاں در دعوی تیفیری ہکفور ماگوائی دہند برسالت تو حق توائل در جواب فرمود کہ فرو آمد نشوند طائکہ مگر ہوتی یا عذاب یعنی طکر مابعورت اصل خود وقعے تو اند دید کہ بجست عذا نازل شود چنا نکہ قوم تمود جبرا کیل رادر زبان مابعورت اصل خود وقعے تو اند دید کہ بجست عذا نازل شود چنا نکہ قوم تمود جبرا کیل رادر زبان میجہ دیدتہ یابوقت مرگ چنانکہ ہمہ کس سے بیند - ونیا شند آل ہنگام کہ طائکہ رابدین صورت فرستم از مسلت دادہ شدگال یعنی فی الحال معذب شونہ چہ ایمان ایشاں درانصورت برطریق اجبار باشد نہ افقیار واین منانی تکلیف است - بدر ستیکہ مافرد فرستادیم قرآن راکہ یاد کردن مومنانست دیا موجب شرف خواندگال وبدر سیکہ مامرو انکمبریائیم از تغیرہ تبدیل یعنی شیاطین نتواند کہ درو چزے ان اطل میفر ایند - یا چزے از حق کم کن خلاصت المنج اس شیعہ کے متند فاری ترجمہ میں دونوں جگہ ذکر کا ترجمہ قرآن کیا ہے - تغیرصانی میں بول ہے۔

وقالو يايها الذى نزل عليه الذكر نادوه على سبيل التهكم والا ستهزاء كمادل عليه مابعده انك لمجنون لتقول قول المجانين حين تدعى ان الله نزل عليك الذكراى القران لوماتا تينا بالملئكة ليصدقوك ويعصدوك على الدعوة لقوله لولا انزل اليه ملك فيكون معه نديرا ان كنت من الصدقين في دعواك مافنزل الملئكة اى تتنزل الا بالحق بالحكمة والمصلحة وماكانو اذا منظرين يعنى غهلهم ساعة القمى قال لوانزلنا الملئكة لم ينظروا وهلكوا انا تحن نزلنا الذكر ردالا نكارهم واستهزائهم ولذالك اكده من وجوه وانا له لحفظون من التحريف والتغير ولاذيادة والنقصان.

اور انہوں نے یہ کمہ دیا کہ اے وہ مخص جس پر قرآن مجید نازل کیا گیا ہے) کفار نے بر سبیل تکم واستراء آنخضرت سے خطاب کیاہے۔ جیسا کہ اس کا مابعد اس پر ولالت کرتا ہے۔ (نو ضرور دیوان ہے) تو بینک دیوانوں کی می بات کتا ہے۔ جب کہ تو وعوے کرتا ہے۔ کہ اللہ نے جمعے پرذکر یعنی قرآن اتارا ہے۔ (نو ہمارے پاس فرشتے کیون نہ لیکر آتا) تاکہ وہ تیری تقدیق کرے اور وعوت میں تجھے مدد دیتے جیسا کہ اللہ تعانی کا قول ہے۔ لو لا انزل الیہ ملک فیکون معه نزیو (اگر ق

جں بیں ہے ہوتا) اپنے وعوے میں ہم فرشتوں کو نہیں ہمیجا کرتے) یعنی وہ نہیں اڑتے (گر ہوں ساتھ دلتے کے) یعنی حکمت و مصلحت کے ساتھ (پھران کو مسلت نہیں دی جاتی) یعنی ہم ان کو ایک ماعت کی مسلت نہ دیتے تغییر فتی میں ہے کہ اگر ہم فرشتوں کو اتارتے تو ان کو مسلت نہ وی ماتی- اور وہ بلاک ہو جاتے (بیشک ہم بی نے قرآن کو نازل کیا ہے) یہ کفار کے انکار واستہزاء کارو ے اور ای واسطے اس کو کئی طرح موکد کیا ہے۔ (یقبینا ہم ہی اس کے محافظ میں) تحریف و تغییراور ، زبادت و نقصان سے استھی۔ پس تغییر صافی سے ذکر کے معنی قرآن ہونے کے علاوہ بیہ مجمی ظاہر ہوگیاکہ آید زیر بحث کفار عرب کے افکار واستہزاء کی تردید میں نازل ہوئی ای طرح تفیر منبح الصادقين ميں ہے-وبعد آزال بلمب رد و انكار و استهزاء ايشال بيان حقيقت قرآن كردہ بوجيہ مؤكده فرمود كه بدر ستيكه مافرد فرستاديم قرآن راكه باد كردن انست مومنال نسبت وذكر بمعنى شرف نیز آمده یعنی بے کہ موجب شرف خوانند گان بدرستیک مامرو را مکمنانانیم از وزیادہ نقصان این شیاطین جن وانس موانند که در چیزے میفرانید چیزے از حق کم کنند لقوله لا یا تبیه الباطل من بن يديه ولا من خلف يأنكه واو اديم از تطرق خلل تاروز قيامت بجمت آنكه حجت مكلفا نست بخلاف كتب مقدمه كه حافظ آل احبار علماء عصر بودند بجهت وقوع خلاف ميال ايثال راه تحريف درو کشاده شدو یاحافظ ایم ورول مومنال و گویند منیمر راجع تحفرت رسالت لیعنی محکمیان اونیم از معرت اعادي كما قال الله والله يعصمك من الناس ترجمه: اس كي يعد الله تعالى ن کفار عرب کے انکار و استہ زاء کی تردید کے لیے تاکید کے طریقوں سے قرآن کا حق ہوتا بیان کیا اور فرمایا کہ بیشک ہم ہی نے قرآن تازل کیا ہے۔ جو مومنوں کا یاد کرنا ہے۔ اور ذکر شرف کے معنی یم بھی آیا ہے۔ بعنی ہم نے الیم کتاب نازل کی ہے۔ جو اس کے پڑھنے والوں کے شرف کا باعث ہ اور بیٹک ہم ہی اس کے تکمیان ہیں تحریف و تبدیل اور زیادت و نقصان سے لیعنی شیاطین جن وانس اس میں کوئی چیز باطل زیادہ نہیں کر کتے یا کوئی چیز حق اس میں ہے کم نہیں کر سکتے ال ليح كه الله تعالى قرما تا ہے۔ لاتيه باطل من بين يديه و لا من خلفه يا ہم روز قيامت تك قرآن کے مگمدار ہیں خلل آنے سے اس کیے کہ قرآن مکلفین کی جمت ہے۔ بخلاف کتب مقدمہ سمابقہ کے کہ جن کے مکسبان احبار و علمائے زمانہ تھے۔ کہ جن کے درمیان اختلاف پیدا اونے کے سبب ان میں تحریف کا دروازہ کھل حمیا- یا ہم قرآن کے مکسبان میں- مومنوں کے ول مل کتے ہیں۔ کہ ضمیر کا مرجع جناب رسالت ماب ہیں۔ لیعنی ہم ان کے تکسبان ہیں۔ وشمنوں کے مرد سے جیراکہ اللہ تعالی قربا ہے۔ والله یعصمک من الناس انتہی مطلب بیا کہ کفار

عرب نزول قرآن کے منکر تھے اور آنحضرت سال کیا ہے۔ اور یہ قرآن جے تو مجمتا ہے۔ کہ انہ تھے۔ اے مفتری اللہ تعالی نے تھے پر قرآن نازل نہیں کیا۔ اور یہ قرآن جے تو مجمتا ہے۔ کہ انہ تعالیٰ کے ہاں سے ہے۔ یہ اللہ کی طرف سے نہیں بلکہ یہ جن کا القاء ہے۔ اور تو مجنون ہے۔ انہ اللہ تعالیٰ نے ان کفار کے تردید آیہ ذیر بحث میں کی طرح کی تاکید کے ساتھ فرادی بدیں طور کہ اللہ تعالیٰ نے ان کفار کے تردید آیہ ذیر بحث میں کی طرح کی تاکید کے ساتھ فرادی بدیں طور کہ صدر جملہ میں ان تاکید کے لیا گیا۔ چران کے اسم و خبر کے ورمیان صمیر فصل نہ کور بولی اور شکلم واحد کو تعظیم واجلال کے لیے بصیغہ جمع وارد کیا گیا۔ اور تھم کی تقویت و تقریر کے لیا اداد کا تکرار واقع ہوا۔ خلاصہ یہ کہ حسب تفاسیرو تراجم شیعہ یمال ذکر کے معنی قرآن کے ہیں۔ اداد کا تکرار واقع ہوا۔ خلاصہ یہ کہ حسب تفاسیرو تراجم شیعہ یمال ذکر کے معنی قرآن کے ہیں۔ جس پر سہاق ولالت کر رہا ہے بلکہ ہم کہتے ہیں۔ کہ سیاق بھی یمی ظاہر کر رہا ہے چنانچہ تغیر مجم البیان (جلد دوم) میں ہے۔

انا نحن نزلنا اللكراي القرن وانا له لحافظون عن الزيادة والنقصان والتحريف والتيغير عن قتادة وابن عباس ومثله لاياتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه وقبل معناه نتكفل بحفظه الى اخر الدهر على ماهو عليه فتنقله الامة وتحفظه عصر ابعد عصر الى يوم القيامة لقيام الحجة به على الجماعة من كل من لزمته دعوة النبى عن الحسن وقيل بحفظه من كيد المشركين فلا يمكنهم ابطاله ولا يندرس ولا ينسى عن الجبائي وقال الفراء يجوزان يكون الهاء في له كناية عن النبي فكانه قال ان نزلنا القرآن وانا لمحمد لحافظون وفي هذه الا ية دلالة على ان القران محدث اذا لمنزل والمحفوظ لا يكون الا محدثا ولقد ارسلنا من قبلك يامحمه رسلاعن ابن عباس فحذف المغعول لدلالة الارسال عليه في شيع الاولين اى في فرق الاولين عن الحسن والكلبي وقيل في الامم الا ولين- عن عطاء عن ابن عباس وما يتيهم من رسول الاكانو ابه يستهزؤن وهذا تسلية للنبي اذا خبره ان كل رسول كان مبتلى بقومه واستهزاؤهم بالرسل انما حملهم على ذلك استبعادهم مادعوهم اليه واستيحاشهم منه واستنكارهم له حتى تواهموانه مها لايكون ولا يصح مع مخالفته لما وجدوا عليه كذلك لنسلكه في قلو^ا المجرمين فيه قولان احدهما ان معناه انا نسلك الذكر الذي هو القرآن في قلوب الكفار باخطاره عليها والقائه فيها وبان نفهمهم اياه وانهم مع ذلك لايومنون الم ماضيين على سنة من تقدمهم في تكذيب الرسول كما سلكنا دعوة الرسل في

قلوب من سلف من الا مم عن البلخى والجبائى والمرادان اعرضهم عن القرآن لا يمنعنا من ان ند خله في قلوبهم تاكيدا للحجة عليهم والا خران المعنى نسلك الا ستهزاء فى قلوبهم عقوبة لهم على كفرهم ولاول هوالصحيح وقد روواعن جماعة من المفسرين ان المراد نسلك الشرك فى قلوب الكفار وذلك لا يصح لانه لم يجر للشكرك ذكر وقد جرى ذكراللكر وهو القرآن ولا نه قال لا يومنون به ولاعاد الضمير فى قوله به الى الشرك لكان الكفار محمودين اذا كاتوالا يومنون بالشرك ولا خلاف ان الا ية وردت على سبيل الذم لهم ولوكان الله سبحانه قد سلك الكفر فى قلوبم لسقط عنهم الذم ولماجازان يقول لهم وكيف تكفرون وانتم تتلى عليكم ايت الله لقد جنتم شيا ادا تكاد السموت يتفطرن منه وكيف ينكر عليهم هذا الانكار وهو الواضع لذالك فى قلوبهم وكيف يامرهم باخراجه من حيث وضعه فيه تعالى وتقدس عن ذلك وقد خلت وكيف يامرهم باخراجه من حيث وضعه فيه تعالى وتقدس عن ذلك وقد خلت الله المنزلة ثم لا يومنون-

پیک ہم ہی نے نازل کیا ہے ذکر کو۔ لین قرآن کو۔ اور ہم ہی اس کے جمہان ہیں۔ زیادت و نقصان اور تحریف و تغییرے (از قادہ وابن عباس) اور اس کی مثل ہے آیت ہے۔ لا یا تبدہ المباطل من بین بلدیہ و لا من خلفہ اور کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ ہم آخر زمان تک اس کو من بین بلدیہ و لا من خلفہ اور کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ ہم آخر زمان تک اس کو امت روز قیامت تک ہر زمانے میں نقل امل طالت میں محفوظ رکھتی رہے گی کیونکہ اس کے ماتھ گروہ مکلفین پر جمت قائم ہے (ازحس) اور کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ اللہ تعالی قرآن کو مشرکین کے کرے محفوظ رکھے گا اس کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ اللہ تعالی قرآن کو مشرکین کے کرے محفوظ رکھے گا اس کے معنی ہے ہیں کہ اللہ تعالی قرآن کو مشرکین کے کرے موفظ رکھے گا اس کے معنی ہے کہ اور یہ نے گا۔ اور یہ جملایا جائے گا۔ ازجبائی اور فراء کا قول ہے کہ جائز ہے کہ لہ کی ضمیر بی سے کنایہ ہو۔ گویا اللہ تعالی فرانا ہے۔ کہ بینک ہم بی نے قرآن محدث ہو کونازل کیا ہے اور ہم مجد کے تکمبان ہیں۔ اس آیت میں اس بات کی ولیل ہے کہ قرآن محدث ہے۔ کیونکہ مزل و محفوظ محدث ہی ہوگا۔ اور تحقیق ہم نے جمیع بھے سے پہلے اے محد پینیمبر از حسن و کبی) اور کما گیا ہے کہ پہلی امتوں میں (از حسن و کبی) اور کما گیا ہے کہ پہلی امتوں میں (از عطااز ابن میں پہلی اور کونی رسول ان کے پاس ایسا نہ آتا تھا۔ کہ وہ اس کی نہی نہ اڑا تے تھے۔ یہ بی کے لیے ملی اور کوئی رسول ان کے پاس ایسا نہ آتا تھا۔ کہ وہ اس کی نہی نہ اڑا تے تھے۔ یہ بی کے لیے

تلی ہے کیونکہ اللہ تعالی نے آپ کو خردی کہ ہرایک رسول اپنی قوم میں جلا رہا اور ان کے بنیمروں کی ہنی اڑائے کا باعث فقط یہ تھا۔ کہ وہ ان کی وعوت کو بعید مجھے اور اس سے ار سی رس ن سی میں ہوئے تھے۔ یماں تک کہ ان کا خیال تھا کہ بیہ ناممکن و نادر ست ہے۔ اور کرتے ۔ اور اے برا جانبے تھے۔ یمان تک کہ ان کا خیال تھا کہ بیہ ناممکن و نادر ست ہے۔ اور ان کے اسلاف کے ندہب کے مخالف ہے۔ ایساہی ہم ڈال دیتے ہیں اس کو مجرموں کے داوں مر اسکی تغییر میں دو قول ہیں- ایک میے کہ اس کے معنی ہے ہیں کہ ہم ذکر کو جو قرآن ہے- کفار کے دلوں میں ڈالتے ہیں- بدیں طور کہ ہم ان کے دلول کو قرآن یاد دلاتے ہیں- اور ان کے دلوں میں قرآن ڈالتے ہیں۔ اور انہیں یہ سمجھاتے ہیں مگروہ باالمنمہ اس پر ایمان نہیں لاتے اور پنمبروں کی تكذيب ميں پہلو طريق پر چلے جاتے ہیں۔ جيسا كہ ہم نے پینمبروں كى دعوت كزشته امتوں كے دلوں میں ڈال دی۔ (از بلخی وجبائی) اور مرادیہ ہے کہ قرآن سے ان کی روگروانی ہمیں اس بات ے نہیں روکتی کہ ہم اے ان کے ولوں میں ڈال دیں۔ تاکہ ان پر ججت کی تاکید ہو جائے۔ دوسرا قول میہ ہے کہ اس کے معنی میہ جیں۔ کہ ہم کفار کوان کے کفر کی سزا دینے کے لیے استزاء کو ان کے دلول میں ڈالتے ہیں- اور بیہ معنی ورست نہیں- اس لیے کہ شرک کا کوئی ذکر نہیں ہے۔ اور ذکر یعنی قرآن کا ذکر آیا ہے۔ اور اس لیے کہ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ کہ وہ اس پر ایمان نہیں لاتے۔ اگر الدی ضمیر شرک کی طرف چمرے تو کفار شرک بر ایمان بند لانے کے سبب ستودہ تھریں گے۔ اور اس میں اختلاف نہیں کہ یہ آیت کفار کی فدمت میں وارد ہوئی ہے اگر فداء یاک کفر کو ان کے دلوں میں ڈالٹا تو ان ہے ندمت ساقط ہو جاتی۔ اور جائز نہ ہو تا کہ خدا ان ہے يوں كے۔ وكيف تكفرون وانتم تتلى عليكم ايت الله لقد جئتم شيا ادا تكاد السموت يتفطون منه اور ان ير ايا انكار كول كرتا جب كه خودى ان ك ولول من كفرك ڈالنے والا ہوتا ۔ اور ان کو کیونکر تھم دیتا کہ کفر کو دل ہے نکال دو کہ جس میں خود اس نے ڈالا ہے۔ خدا اس سے برتر و پاک ہے۔ اور پہلوں کی روش میں ہو چی ہے۔ لین گزشتہ امتول کا بہ طريقه رہا ہے كد ان كے پينيران كو الله كى اتارى موئى كتابوں كى طرف بلايا كرتے تھے۔ مرده ايمان نه لاتے تھے۔ (انتمی)

تغیر منج السادقین میں ان آیٹوں کی قریبای تغیر فاری میں کی گئی ہے۔ ان میں سے پہلی آب کی تغیر نقل ہو چکی ہے۔ ان میں سے پہلی آب کی تغیر نقل ہو چکی ہے۔ و لقد الاسلنا طذف مفعول ہجت ولالت فعل است برآل یعنی تحقیق کہ فرستادیم رسولال وامن قبلک پیش اذ او فی نشیع الا ولین در گروہ میشنیال و در میان ایشاں پنجبرال راتعین کردیم شی جمح شیعہ است یعنی

تابع يقال شاعه اذا بتعده وما يتيهم دنيا مديديشان من رسول الاكالو چ فرستادہ ممرکہ بووند کہ ازروئے کبرو عناد بہ بال پینمبریستنزون استزاء میکر دند چنانکہ ای پ ر معاندان میکند یعنی از میان انبیاء تو مخصوص نیستی بایذاء قوم بلکه بهمه ایشان مدین جلابودند اموضوع است برائے حال وور مضارع واخل نمیشود محرکہ بمعنی حال باشدویا در مامنی کہ قریب بمال باشد وامیں بر سیبل حکایت است ازحال ماضیہ وسوق آیت برائے تملیہ حضرت رسالت است كذالك جمينانك در آورديم ذكرحق رادر قلوب كفار پيشين ليني بدعوت پنيبران و القاء آل كرديم . روقلوب ایشاں وابیٹال نزد آل ایمال نیا وردند عجیس نسکه درے آریم ذکررا که قرآن است فی قلهٔ ب المجرمين ورولهائ كافران زمان تو وايثال از فرط فوط عناد لايومنون به نميكروند مال لعني باوجود اعراض الشال از ذكرما آنرادر قلوب الشال درم آوريم بهت تأكيد جحت برايشال وكويند معنے آنست كه استهزاء رادر قلوب ايشال درسه آوريم بجت عقوبت ايشال بركفروقول اول صحح است نزد جمع ازارباب تفسير معنى آنست كه ماشرك وكفررادر قلوب ايثال واخل ميكر دائيم اين نيز غير منج است زيراكه ذكردر آبيه متقدمه بمعنى قرآنست بالقال ونيزآل منافى لايومنون است چه اسناد عدم ایمان بایشال شده و دیگر آنکه حق تعالی ایجاد کفرو شرک کرده باشد در قلوب ایشاں پس قدموم نمی بودند بلکه معدورے سے بودند وحال آنکه سوق آیہ برسبیل ذم است و نیز باک معذب نے شدند زیرا کہ آل از فعل فدا است وانشال رادر آل دیلے نیست و دیگر آل حق تعالى نے گفتے برسیل تعجب کہ کیف تکفرون بالله وانتم تتلی علیکم ایت الله ولقد جئتم شیناادا تکادا السموت يتفطرن منه چكونه انكار كردب برايتان وحال آنكه خود واضع أَل بوده باشدو يجيه وجه إمر كرديه (- ابيثال رابا خراج كفريا آنكه خُودُ وَضَع آل نموده باشدور قلوب اليَّال تعالَى الله عن ذلك علوا كبيرا نعوذ بالله من العقائد الباطلت والا راء الضالت وقد خلت سنة الاولين فيدر سيك وثنة است عادت فدادر بلاك ميشنال يعنى مر کہ ازیشاں ہلاک شدہ بترک قبول جن و محکمت بیت اسل بودھ استھی تغیر منج الصافین سے یہ مجی معلوم ہوگیا کہ آیت زیر بحث میں ذکر مح معنی بالانقاق قرآن کے بین- خلاصہ المنج اور تغیر صافی من مجى ان آيتوں كى تفسير ميں بالا خضار قريبا وہى أركور ب يو مجمع البيان اور منج الصادقين ميں ہے ہم بخوف طوالت ان کی عبار تیں تیسال نقل جمیں کرنے پی شیعہ کی تقامیرو تراجم سے ابت ہوگیا۔ کہ آیہ بحث میں ذکر سے مراد بالانقاق قرآن مجید ہے۔ بیسا کہ سیاق و سباق اس پر ولالت کردہاہے اور اس کی حفاظت کا وعدہ اللہ تعالی کی طرف سے ہوا ہے میں قول مغتد علیہ ہے اور



ای کی، تائید ایک دوسری آیت یا تیه الباطل من بین یدیه و الامن حلفه سے ہوتی ہے۔
صاحب مجمع لبیان نے صرف فراء نحوی کی نسبت لکھا ہے کہ وہ کہتے ہیں کہ لہ کی ضمیر کا آنخفرت میں ہوئی کی طرف راجع کرتا بھی جائز ہے۔ سونحوی موصوف نے فقط ایک اخمال پیش کیا ہے۔ جو درج اعتبار سے ساقط ہے۔ حق کہ خلاصت الممنج اور تغییر صافی ہیں اس اخمال کا ذکر تک نمیں مفض نے سورہ طلاق کی جو آیت پیش کی ہے اس میں مجازا ذکر سے مراد آنخفرت میں ہیں۔ کو نکہ آپ فرکر یعنی قرآن کو بھڑت تلاوت فرایا کرتے تھے یا اس کے ساتھ تبلیغ فرایا کرتے تھے۔ اس پر یعنی قرآن کو بھڑت تلاوت فرایا کرتے تھے یا اس کے ساتھ تبلیغ فرایا کرتے تھے۔ اس پر یعنی قرآن کو بھڑت تلاوت فرایا کرتے تھے یا اس کے ساتھ تبلیغ فرایا کرتے تھے۔ اس پر یعنی اور علی موجود ہے۔ مراس آیت سے سے کی طرح طابت نیس ہو سکا کہ یعنی اندون نو لمنا الذکو میں بھی ذکر سے مراد حضور اقدس سائے ہیں۔ للذا مصف کا آبہ سورہ طلاق کا چیش کرتا ہے سود ہے۔ مرزا صاحب نے تفاسیر اہلیقت میں سے صرف معالم الزیل کا چیش کرتا ہے سود ہے۔ مرزا صاحب نے تفاسیر اہلیقت میں سے صرف معالم الزیل کا جوالہ دیا ہے اور وہ بھی ناتمام للذا ہم اس حوالہ کو پورا نقش کرتے ہیں اور وہ ہی ناتمام للذا ہم اس حوالہ کو پورا نقش کرتے ہیں اور وہ ہی ناتمام للذا ہم اس حوالہ کو پورا نقش کرتے ہیں اور وہ ہی۔

انا نحن نزلنا الذكر يعنى القرآن وانا له لحافظون اى بتحقظ القرآن من الشباطين ان يذيد وافيه اوينفصوا منه اويبد لوابغيره قال الله تعالى لاياتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه والباطل هوا بليس لا يقد ران يزيد فيه ماليس منه ولا ان ينقص منه ماهو منه وقيل الهاء في له راجعة الى محمد اى انا لمحمد لحافظون ممن اراده بسوه كما قال حل ذكره والله يغصمك من الناس- (معالم التنزيل مطبوعه مطبع كريمي بمبئي جلد ثاني ص ١٩١٠)

ب شک ہم ہی نے نازل کیا ذکر کو لیمی قرآن کو اور ہم ہی اس کے تکمیان ہیں لیمی ہم شیاطین میں سے کم کر دیں۔ یا فیر سے قرآن کی حفاظت کرتے ہیں کہ وہ اس ہیں نہیں کر دیں۔ یا اس ہیں ہے کم کر دیں۔ یافیر قرآن کے ساتھ تبدیل کردیں۔ اللہ تعالی قرآن ہے لا ماتیہ المباطل میں بین یدیہ و لا من خلفه (قرآن میں باطل کا دخل نہیں آگے ہے اور نہ بیچھے ہے) اور باطل سے مراد ابلیس ہے۔ جو اس میں نیاوہ نہیں کر سکتا ہے۔ وہ جو اس میں نیاوہ نہیں کر سکتا وہ جو اس میں اور نہ اس میں سے کم کر سکتا ہے۔ وہ جو اس میں نیاوہ نہیں کر سکتا ہے کہ لہ کی ضمیر مجمد ساتھ کی طرف راجع ہے لیمی ہم مجمد ساتھ کے تکہان میں اس محف سے جو آپ کو ضرر پیچانا چاہے جیسا کہ اللہ عزوج سے لیمی ہم کی ساتھ کے قرایا ہے و اللہ یعصم میں الناس اور خدا آپ کو لوگوں سے بچائے گا۔ انتھی عربی ذبان میں قبل کہا گیا) ضعف کی طرف دشارہ ہوا کرتا ہے ہیں معالم الزمل کی عبارت سے معلوم ہو گیا کہ لہ کی ضمیر کا مرجع جناب پینجبر خدا ساتھ کو کو منان قول مفیون ہے۔

مصنف نے جو تعما ہے کہ آیت زیر بحث میں تفاظت قرآن کا وعدہ مراد نہیں ہوسکا کیو نکہ سی
وشیعہ۔ ہردو کی کنابوں میں نقص و تحریف کی احادیث و روایات موجود ہیں۔ سوید ایک مخالطہ ہے۔ کیونکہ
المنت کی کسی معتبر کتاب میں الیکی روایت نہیں کہ جن سے ان کے نزدیک ثابت ہو کہ آنخضرت مانی المان کے بعد قرآن میں تحریف و تغییریا کی بیشی ہوگئی۔ جیسا کہ ہم اسے مفصل طور پہسس پہلے میان کر آئے
یاں۔ ہاں شیعہ کی معتبر کتابوں میں الیک روایات شرت بلکہ تو اتر کے ورجہ کو پنجی ہوئی ہیں۔ کہ جن سے
بیں۔ ہاں شیعہ کی معتبر کتابوں میں الیک روایات شرت بلکہ تو اتر کے ورجہ کو پنجی ہوئی ہیں۔ کہ جن سے
میان کی گئے ہیں۔ وہ مصنف کی اپنی گھڑت ہے۔

آخریں جو میرزا صاحب نے لکھا ہے(۔ کہ قرآن کے کائل ہونے کا اعتقاد قریقین کے علاء نے شرط اسلام قرار نہیں دیا سو وہ اصلاح طلب ہے۔ کیونکہ شیعہ کے ہاں تو ایسا ہی ہے۔ مگر اہلت کے زدیک قرآن کو ناقص بٹانا قرآن کی تکذیب و بے حرمتی کرنا ہے۔ (چانچہ شنا سفہ قاشی میاض بی ہے)

اعلم ان من استخف بالقران اوالمصحف اوبشى منه اوسما او كذب به او جحده او جزاء منه او آیة او گذب به او بشئى منه او گذب بشئى صرح به فیه من حکم او خبر او ثبت مانفاه او نفى ماا ثبته على علم منه یدالک او شک فی شئى من ذلک فهو کافر عند اهل العلم باجماء قال الله تعالى وانه لکتاب عزیز لا یا تیه الباطل من بین یدیه و لا من خلفه تنزیل من حکیم حمید-

جان لے کہ جس مخص نے قرآن یا مصحف کی یا اس کے کی جزء کی ہے حرمتی کی۔ یا قرآن یا اس کے کسی جزء کو گالی دی یا قرآن کی محف کی یا انروٹ عناد قرآن کا یا اس کے کسی جزء یا آرت کا انکار کیا۔ یا قرآن کے کسی جزء یا اس کی کسی شنے کی محکذیب کی۔ یا کسی محم یا خبر کی آرت کا انکار کیا۔ یا قرآن کے کسی جزء یا اس کی کسی شنے کی محکذیب کی۔ یا کسی محم یا خبر کی محکذیب کی جو صراحت قرآن میں موجود ہے۔ یا جان ہو جھ کر اثابت کیا اس کو جس کی قرآن نے نفی کی اس کی جس کو قرآن نے انبی محل الله کی کسی شنے میں قل کیا۔ وہ اہل کی ۔ یا نفی کی اس کی جس کو قرآن نے اللہ تعالی فرماتا ہے۔ اور قرآن بیشک ایک ناور کتاب ہے۔ مام کے نزویک بالا تقاق کا فر ہے۔ کیونکہ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ اور قرآن بیشک ایک ناور کتاب ہے۔ جس میں باطل کا وضل نہیں آگے سے اور نہ بیجھے سے۔ یہ صاحب حکمت و لا کئ ستا کیش خدا کا جس میں باطل کا وضل نہیں آگے سے اور نہ بیجھے سے۔ یہ صاحب حکمت و لا کئ ستا کیش خدا کا

اتار ہوا ہے۔ انتی۔
قال المیر زا آربید عیسائی شیعہ سی میں نقص و تحریف قرآن کے مباحث کیر مدون و شایع ہو کیے مارن المیر زا آربید عیسائی شیعہ سی میں نقص و تحریف قرآن کے مباحث کیموری ضلع سارن میں۔ اس کورت سے زیادہ ہم نہیں لکھ کے اور بالنصوص صاحب الشمس مجموری ضلع سارن فی اس کورت سے آبل میں۔ اس کے قبل موجہ بمار نے بمقابلہ رسالہ انتجم لکھنو اس کورت سے اسانیا تھ تحریف پیش کردیے ہیں کہ نہ اس کے قبل

کی نے پیش کیے اور نہ آئندہ ان سے زیادہ ضرورت کی توقع ہو سکتی ہے۔ للذا ان ابحاث کا اعادہ نفول ہے۔ لیکن تذہر قرآن سے چند نئے اغلاط و نقص باعانت علی جناب مولوی عکیم سید مقبول احمد قبلہ و تعبہ مطلہ اور باستداد عالی جناب مولوی ماہ عالم صاحب قبلہ ہاتھ آئے ہیں۔ وہ ظاہر کر دیے جاتے ہیں۔ جن کا طاہر کر دینا مسلمانوں کی تجی خیر خواہی ہے ہیں ان کو ہم لے اس رسالہ موسوم بہ تقیف کا تبین و نقم آیات کتاب مہین میں ورج کیا ہے۔ خدا کرے کہ جملہ مسلمانوں کو اس سے نفع حاصل ہو۔

واضع ہو کہ حرف کے معنی ہر چیز کا کنارہ ہر چیز کی تیزی کسی چیز کا حاصل کرتا۔ آئھوں میں سرمہ لگانا کسی چیز کا پھیرتا ہیں لفظ حرف کے اس آخری معنی کی بنا پر باب تفعیل سے لفظ تحریف بنایا گیا ہے۔ اس کے معنی جین ۔ بات کا پھیرتا کسی چیز کا اس کی حالت یا وضع یا موضوع کی طرف سے پھیر دینا۔ پس حرف و تحریف کے معنی جین معانی اور باب تفعیل کے خواص شحویل سے کمی و زیادتی لفظی و معنوی سے سب مل کراور جدا جدا جدا جدا بھی موسوم بہ تحریف جیں۔ لیکن قرآن کی تحریف کے مباحث مکتوبی و ملفوظی تحریف سے متعلق ہیں جدا جدا جدا بھی موسوم بہ تحریف جیں۔ لیکن قرآن کی تحریف کے مباحث مکتوبی و ملفوظی تحریف سے متعلق ہیں جدا جدا بھی موسوم بہ تحریف جیں۔ لیکن قرآن کی تحریف کے مباحث مکتوبی و ملفوظی تحریف سے متعلق ہیں جدا ابدا بھی موسوم بہ تحریف جیں۔ لیکن قرآن کی تحریف کے مباحث مکتوبی و ملفوظی تحریف سے متعلق ہی

اقول مسئلہ تحریف قرآن میں آریہ وعیمائی شیعہ ہی کے کاسہ لیس ہیں۔ اور شیعہ جو روایات اس بارے میں ہماری کابوں سے پیش کرتے ہیں۔ ان کاجواب ہم پہلے دے چکے ہیں۔ بال شیعہ کے ہال ایک روایات تحریف مشہور بلکہ متواتر موجود ہیں۔ جو شیعہ ہی کے نزدیک صراحتہ تحریف پر دلالت کرتی ہیں۔ اس واسطے شیعہ کا عقیدہ ہے۔ کہ آنخضرت ملڑ ہیا کے وصال شریف کے بعد صحابہ کرام نے اغراض دیوی کے لیے قرآن میں تحریف کردی۔ حق کہ اب ایک آیت بھی ایس نہیں ہے۔ کہ جس میں تحریف کا اخمال نہ ہو۔ گرق مصنف کا ملک اس مسئلے میں ان سے نزالہ ہے۔ گو متحبہ ایک ہی ہے۔ کہ جس میں تحریف کا اخمال نہ ہو۔ گرق میں نے حد کے تمام قرآنوں کو جو ناقص و ناتمام تھے۔ حصرت عثمان نے تلف کر دیا اور مصاحف عثمانی جو غلیفہ طالث کی رائے سے از سرتو مرتب ہوئے تھے۔ وہ سب ناپدید ہو گئے۔ پس مختلف مکان و زمان کے دنیا پر ست کم استعداد عربی دان کا تبول نے اپنے اپنے تھم سے خط مصاحف عثمانی میں غلط قرآن لکھ کران کو مصاحف عثمانی میں غلط قرآن لکھ کران ان کو مصاحف عثمانی غلس من نا نا کا تبول سے بعض کا ذکر کرتا ہے۔ اور اسے مسلمانوں کی تجی خیرخوای سجھ رہا ہے۔ انہ بھی۔ ایک بھی۔ بھی۔ یہاں مصنف العجب شمانعی۔ ما سجھ رہا ہے۔

قال الميرزا

بحث اول تضحیف کا تبین لغت میں تقیف کے معنی ہیں۔ کتابت میں خطاکرنا اور یہ خطا خواو نقلہ ن لحفظون کے فرضی ووجمی معنی کے خلاف ہیں- چنانچہ ملاحظہ ہو- این مااین کے معنی (کمال) اور ماک منی (جو پھھ یا جن چیزوں کو) اور ملاکر انیا لکھاجائے تو اس کے معنی سے موں گے۔ تم جہال کہیں ہو۔ اپس اسلاف وراقین میں سے کسی نے بجائے (این ما) کے (انیا) لکھ دیا۔ اور بجائے (انیا) کے (این ما) لکھ دیا جس ے قرآن کی حالت و وضع اور موضوع بدل گیا۔ چنانچہ سورہ نساء رکوع (۱۱) میں ہے۔ این ماتکو نوایدرک کم الموت تواس رسم الحظ کے بموجب اس آیت کے یہ معنی ہوئے۔ (بو کھے بھی ہو تم کمال ہو تم كوموت بإلے كى) حالاتك اس آيت بيس اس طرح (التما) لكمنا جاسيے تفا تواس كے يد معنى موت (تم جمال كيں ہوتم كو موت يالے كى) (2) سورہ شعر ركوع (5) يى لكھا ہے- وقيل لھم اينما كنتم تعبدون من دون الله تواس رسم الحظ کے بموجب سے معنی ہوئے (ان سے کما جائے گا جمال بھی تم ہو غیرخداکی بستش كرو) پس اس يموند ك رسم الحظ سے موضوع قرآن بدل كيا- اور اگر اس آيت بي اس طرح (اين ما) لکھاجاتا تو موضوع قرآن کے مطابق سے معنی ہوتے۔(ان سے کما جائے گاکہ جن کی خدا کے سوا پرستش كرت ته- اب ووكمال بي- (٣) سوره نساء ركوع-(١١) بين لكماجاتا ب- فمال هولاء القوم لا یکادون یفقوا حدیثا تو اس رسم الحظ کے بموجب اس آیت کے بید معنی ہوئے-(پس اس قوم کامال لا اس بات کو نہیں سیجھتے) اگر اس طرح لکھنا جاتا) (فیما ہؤلاء القوم تو اس آیت کے یہ معنی ہوئے اس قوم كوكيا بوكياب كدوه بات نبيل سجية)

لطیفہ اس رسم الحظ کی خرابی سے بیہ تکت لطیف بھی پیدا ہوتا ہے۔ کہ محاورہ عرب میں مال کو مورثی سے تعمیر کرتے ہیں۔ اور ظاہر ہے کہ مورثی حیوان ناطق نہیں جو بات کو سمجھے تو اس رسم الحظ کے سبب سے بید معنی پیدا ہو گئے۔ کہ اس قوم کے مورثی کو کیا ہو گیا۔ کہ وہ بات نہیں سمجھتے۔

(4) سورہ تحل رکوع (2) میں لکھا جاتاہے۔ لا عذبنہ عذا باشدید اولا اذبحنہ اولای تینی بسلطان مبین پس اولا اذبحہ میں الف کی زیادتی اس آیت کے یہ معنی ہو گئے۔ (میں اس کو ضرور سخت عذاب دول گایا اس کو ذرکے نہ کرول گا۔ یا ضرور ہے کہ وہ میرے پاس کملی نشانی لاوے۔ لیکن مقیقتہ یوں مختاب دول گایا اس کو ذرکے نہ کرول گا۔ یا ضرور ہے کہ وہ میرے پاس کملی نشانی لاوے۔ لیکن مقیقتہ یوں مکمتا چاہیے تھا۔ (اولا ذبحنه توارادہ خدا کے مطابق یہ معنی ہوتے (میں اس کو ضرور ذریح کروں گا) الفرض

ایک الف کی زیادتی سے حالت و وضع آیت کی بدل گئ-

اید است فی رود است کے منافقین و منافقین کا رسم الحظ منفقون پایا جاتا ہے۔ اور منافقین و منافقین کا رسم الحظ منفقون پایا جاتا ہے۔ اور منافقین اور جن کو بظاہر اسلام کا قرار اور دل میں انکار ہو۔ اور منفقین کے معنی (راہ خدا میں خرج کرنے والے اس کی مثال الی ہے کہ جیسے کوئی مخص فقرہ آمدہ بود کو اس طرح لکھے (آم دہ بود) تو اس رسم الخاک ہوجب یہ معنی ہوں گے۔ کہ (دس آم تھے) ہیں اب آیہ سورہ نساء رکوع (2) طاحظہ ہو ان المنفقین فی بموجب یہ معنی ہوئے۔ (بیشک راہ خدا میں خرج کرنے المدرک الا سفل من الناد تو اس رسم الحظ کے بموجب یہ معنی ہوئے۔ (بیشک راہ خدا میں خرج کرنے والے سب سے نیچ طبقہ میں ہوں گے) ہی اس رسم الحظ کی خرابی سے صالت و وضع و موضوع قرآن والے سب سے نیچ طبقہ میں ہوں گے) ہی اس رسم الحظ کی خرابی سے صالت و وضع و موضوع قرآن والے سب سے نیچ طبقہ میں ہوں گے) ہی اس رسم الحظ کی خرابی سے صالت و وضع و موضوع قرآن والے سب سے نیچ طبقہ میں ہوں گے) ہی اس رسم الحظ کی خرابی سے صالت و وضع و موضوع قرآن

برس یہ اس میں ہوا کرتی ہوا کرتی ہوا کرتی۔ اسم پر ہوا کرتی ہے۔ لیکن کاتین مابق نے جو نظا سورہ ہوا کرتی ہے۔ لیکن کاتین سابق نے جو نعل پر تنوین لکھ دی۔ تو آج وہ ہندوستان کے ہر قرآن میں پائی جاتی ہے۔ مثلاً سورہ ہوسف رکوع۔(5) میں ہے لیسجنن ولیکو نا من الصاغرین اس آیت کے یہ معنی ہیں۔ (ضرور قید بھی ہوگااور زلیل بھی ضرور ہو جائے گا) طاہر ہے کہ لیکوئن صیغہ واحد مذکر عائب بانون خفیفہ ہے۔ اسم نہیں۔

(7)) قراء میں ہے۔ لنسفعااصل میں لسفعن بانون حقیقہ تھا جس کے معنی ہیں۔ (ہم ضرور عمدی کے معنی ہیں۔ (ہم ضرور عمدی کے معنی ہیں۔ (ہم ضرور عمدی کے معنی ہیں۔ کہ محفوظ چلی آئی محمدی کے معنی کی سے۔ (قودہ علمی آج تک محفوظ چلی آئی ہے۔ (قیف کاتین م ۲۱۔ ۲۳)

ا قول ہا پہلے بیان کر چکے ہیں۔ کہ حضرت صدایق اکبر بڑاٹھ کے عمد میں جو قرآن بہت کیا گیاوہ انمی تعلقات کے لیے بیا ۔ جو آخضرت ماٹھ کے حضور میں لکھے گئے تھے اور کتابت میں اس رسم خط کا اتباع کیا گیاجی میں۔ وہ قطعات لکھے ہوئے تھے۔ حضرت عبان ذوالورین بڑاٹھ نے اس قرآن سے اور اس کی عاریا چھے لئت قرایش بر قرار رکھ کر بے کم و کاست اپنا معجف نقل کرایا جے امام کہتے ہیں۔ اور اس کی عاریا چھے نقلیں کروا کر اطراف میں بجوائیں پھر ہر ذمانے میں مصاحف عبانی کی نقلیں اس رسم خط میں ہوتی رہا ہوتی رہا حتی کہ ہمارے پاس جو قرآن ہے اس کی رسم خط اور نظم و تر تیب وہی ہے۔ جو مصحف امام کی تھی۔ پس جموں اقد س اللہ مختی قرآن موجود کی رسم و نظم و تر تیب پر اعتراض کرتا ہے۔ وہ حقیقت میں حضور اقد س اللہ اللہ اعتراض کرتا ہے۔ وہ حقیقت میں حضور اقد س اللہ اللہ اعتراض کرتا ہے۔ وہ حقیقت میں حضور اقد س اللہ اللہ اسلام اعتراض کرتا ہے۔ نظر دکھا جائے۔ تو کتابت قرآن میں صرف سترہ فیض تھے جو لکھ سکتے تھے۔ خط عربی کی اس ابتدائی حالت کو برت عرصہ نہ گزرا تھا کہ اسلام انکر در نظر دکھا جائے۔ تو کتابت قرآن میں چند امور کا خلاف اصول رسم وقرع کسی طرح جرت انگیز شیں۔ قابل خور امرے تو ہیں کہ قرآن میں چند امور کا خلاف اصول رسم وقرع کسی طرح جرت انگیز شیں۔ قابل خور امرے تو ہی کہ قرآن میں وہ محفوظ تھا تی سطور میں مجمی محفوظ رہا۔ تو اس در میں قرح محفوظ تھا تی سطور میں مجمی محفوظ رہا۔ تو اس در میں قران میں مور میں تو می کوظ رہا۔ تو اس در میں تو محفوظ تھا تیں سطور میں مجمی محفوظ رہا۔ تو اس در میں تو محفوظ تھا ہیں جو

دخور رسول اکرم شاہیم کے حضور میں افتیار کیا گیا تھا۔ دور اسلام میں خط عملی میں بہت سے افتابات معور رین اللہ مصحف شریف کے رسم خط میں تعرف کرے- امام مالک سے وریافت کیا کیا۔ ہوے۔ وال اللہ اللہ اللہ اللہ جائے جو لوگوں نے شے اختیار کیے ہیں- امام موصوف نے اللہ معنف شریف کوان جو امام موصوف نے رواب میں فرمایا نہیں اسے پہلے ہی رسم خط کے مطابق لکھو- امام احمد بن جنبل نے فرمایا کہ واوالف یا وغیر ہواب میں اللہ ایکان میں مخالفت حرام ہے- امام بیعتی نے شعب الا ایکان میں لکھا ہے- کہ کاتب قرآن کو جاہیے ہم مصاحف عثانی کے ہجا کو بر قرار رکھے- اور اس میں ان مصاحف کے لکھنے والوں کی مخالفت نہ کرے۔ اور ان کے رسم خط کو نہ بدلے کیونکہ ہماری نسبت وہ زیادہ عالم ول و زبان کے زیادہ سے اور زیادہ امین نے۔ پس ہمیں اپنی نسبت سے کمان نہ کرنا چاہیے۔ کہ ہم تدارک مافات کر رہے ہیں۔ سے خدائی حفاظت مروشمنان قرآن كاكيا علاج جو مات قرآن مجيدكي كمال حفاظت كي دليل ہے وہ انہيں۔ عيب نظر آري - قد تنكر العين ضوء الشمس من رمد وينكر الفم طعم الماء من سقم رسم معضى كي یاں تک حفاظت ہوئی کہ علائے متقد مین و متاخیرن نے اس مضمون پر کتابیں تصنیف کی ہیں۔ چنانچہ ابو مرعثان بن سعيد وانى (متوفى 444هـ) نے المقنع في رسم المعمن لكسى- اور ابو العباس مراكشي نے عنواني الدليل في مرسوم خط الترويل لكني-

· كشف الكنون (جزء اول ١٩٩ ميس --

قال في الكشاف وقد اتفقت في خط المصحف اشياء خارجة عن القياس ثم ماعاد ذلك بضير ولا نقصان لا ستقامة اللفظ وبقاء الخط وكان اتباع خط المصحف سنة لا تخالف وقال ابن درستويه في كتاب الكتاب خطان لا يقاسان خط المصحف لانه سنة وخط العروض لانه يثبت فيه مااشبته اللفظ ويسقط عنه مااسقط

-- ترجمہ: کشاف میں ندکور ہے کہ خط مصحف میں بعض باتیں خلاف قیاس واقع ہوئی ہیں۔ ممر استقاست لفظ وبقاء محط کے سبب اس سے مجھ جرج و تقصان نہیں ہوا اور محل معحف کی وروی سنت متی ۔ کہ جس کی مخالفت نہ کی جاتی تھی۔ ابن درستور یہ نموی (متوفی 347) نے کتاب الكتاب من لكما ہے كه دو خطول ير قياس نه كرنا جا سي ايك خط مصحف جو سنت ہے- دو سرا خط موص کہ جس میں حروف ملفوظ کا اعتبار ہوتا ہے۔ اور غیر ملفوظ ساقط عن الاعتبار ہوتے ہیں۔ انتمی علامہ ابن خلدون نے جو اس بارے میں لکھا ہے۔ اس کا خلاصہ سے کہ بنابر قول راج الل مجازئے فن کتابت جیرہ سے سیکھا اور اہل جیرہ نے بتابغہ و حمیرہ سے سیکھا اور حمیرہ ہی سے قبیلہ

معز نے خط عربی سیکھا حمیر بھی اس فن میں پچھے ایسے اچھے نہ تھے۔ کیونکہ بدویت اور مناکع وفتون ے درمیان شخالف ہے۔ اور بادیہ نشینوں کو صنائع کی چندال منرورت بھی نمیں ہوتی معزچو تکہ بدویت میں حمیرے بھی بڑے ہوئے تھے اور اقامت شہرے بعید تر تھے اس لیے آغاز اسلام تک . خط عربی عد گ و استواری میں متوسط درجه کو مجھی نه پہنچا تفاای واسطے اس رسم خط میں جے محلیہ . کرام نے کتابت مصحف میں اختیار کیا گئی ہاتیں اہل فن کے نزدیک فن کتابت کے اصول مخالف تنیں۔ صحابہ کرام کے بعد تابعین نے تیر کا اس رسم خط کا اتباع کیا۔ جیسا کہ اس زمانے تک تیر کا كى ولى ياعالم كے خط كى تقليد كى جاتى ہے۔ خواہ وہ خط خطا ہو يا صواب حالاتك، اسے محاب كرام کے خط سے تو کوئی نبت ہی نہیں۔ پھرازمنہ مختلف میں کتابت قرآن میں وہی رسم خط قائم رکھ گیا۔ اور علائے نے اس کے ابتاع کی نسبت تاکید کر دی بعض نادان سے کہتے ہیں کہ محابہ کرام فن كتابت ميں ماہر شف انہوں نے جمال جمال اصول رسم كے خلاف كيا ہے۔ وہ سے وجہ نہيں۔ مثلاً لا اذ بحنه میں الف کی زیادتی آگاہ کر رہی ہے۔ کہ ذبح وقوع میں نہیں آیا۔ اور با یبد میں یا کی زیادتی كمال قدرت اللي ير ولالت كرتى ہے- مكريد محض تحكم ہے- ان باتوں كى كوئى اصل نييں وہ نادان یہ سمجے ہوئے ہیں کہ فن کتابت میں ممارت ایک کمال ہے۔ اس فن میں ماہرنہ ہونے سے محاب كرام كى نبت نقص كا وہم ہو تا ہے۔ اس ليے اس نقص سے پاك ظاہر كرنے كے ليے وہ محابہ كرام كے حق میں كمال كو منسوب كرتے ہیں- اور رسم خط میں خلاف قیاس مقامات كی تعلیل و حوید نے کے وریے ہوتے ہیں۔ حقیقت یہ ہے کہ فن خط صحابہ کرام کے حق میں کمال نہ تھا۔ کیونکہ محط مدنی دیوی منائع میں سے ہے۔ اور منائع میں کمال اضافی ہے۔ کمال مطلق نہیں۔ کیونکہ صنائع میں نقص سے دین میں نقص لازم نہیں آتا ہاں اس کا اثر اسباب معاش پر پڑتا ہے-و میسیے جناب رسالت ماب علیہ الوف التحیتہ والعلوة امی تنصے۔ اور امی ہونا آپ کے حق میں کمال تھا۔ مگرہارے حق میں امی ہونا کمال نہیں۔ پھرجب عربوں نے شراور ملک فتح کیے اور کوف ویصرہ میں متیم ہو گئے۔ اور سلطنت کو کتابت کی ضرورت پڑی تو انہوں نے فن کتابت میں ترتی کی۔ اور اسے ورجہ کمال تک پنیچا ویا- (دیکھو مقدمہ تاریخ ابن خلدیون مطبوعہ مصر249 248) بیان بالا ے مصنف کے تمام اعتراضات ساقط ہو گئے۔ لا اذبحنہ میں رسم معحف کے قاعدے کے مطابق الف زیادہ ہے۔ جیساکہ لا اوضعوا لا الی الله ولا الی الجمعیم میں ہے ای طرح رسم القرآن میں ٹون خفیفہ کو الف سے لکھتے ہیں۔ چنانچہ ولیکونن اور لنسفعن کو ولیکونا اور لنسفعا لكما ما اس- تغير جمع البيان (جلد اول 531) مي --

وليكونا من الصاغرين هذه النون الخفيفة التي يتلقى بالقسم واذا وفقت بالا لف تقول وليكونا وهي بمنزلة التنوين الذي يوقف عليه بالالف في نحو قولك رايت رجلا قال الاعشى- وصل على حين العشيات والضحى- ولا تعبد الشيطان والله فاعبدن فابدل في الوقف من النون الفاء

ترجمہ: ولیکونا من الصاغرین یہ نون خفیقہ وہ ہے جو قتم کے بعد آتا ہے۔ جب اس پر وتف ہوتا ہے آتا ہے۔ جب اس پر وتف ہوتا ہے اور یوں کما جاتا ہے۔ ولیکونا اور یہ بمنزل اس تؤین کے ہے۔ جس پر الف کے ساتھ وقف ہوتا ہے۔ جسیا کہ دایت رجلا میں عثی کا قول ہے۔

وصل على حين العشيات والضخى ولا تعبدا لشيطان والله فاعبدا

اس شعریس فاعبدا اصل میں فاعبدن تھا۔ حالت وتف میں نون الف سے بدل کیا۔ استی۔

قال المیر زا (8) سورہ عکبوت رکوع(۱) میں ہے ولقد فتنا الذین من قبلهم فلیعلمن الله الذین صدقوا ولیعلمن الکه الذین من قبلهم فلیعلمن الکه الذین من قبلهم فلیعلمن الک الذین اس آیت کے یہ معنی ہیں۔ (اور بیشک ہم نے ان نے پہلوں کو بھی جائے لیا مقال کے گا۔ جو سے جن دور حدثول کو بھی جائیں۔ لیا دور بھی جائی داری من اس من استان کو بھی جائیں۔ اور حدثول کو بھی جائیں۔ اور محدثول کو بھی جائیں۔ لیا دور بھی جائیں۔ اور جو شعب کے تعدید کا معدد من استان کو بھی جائیں۔ اور حدثول کے بعد مان سے گاہ جو سے جن دور اور جو شاہد ان کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کا دور بھی جائیں۔ اور جو شاہد کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو سے جو جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جائیں۔ اور جو شاہد کی جو بھی جو بھی

مسر و بعد ان سے بہنوں او بعی جانج لیا ۔ اور جھوٹوں کو بھی جان لے گا۔ ان مضارعوں کی تقیف قالی اللہ ان کو بھی جان لے گا۔ جو سے ہیں۔ اور جھوٹوں کو بھی جان لے گا۔ ان مضارعوں کی تقیف افراب سے خدائے علام الغیوب کی نسبت جمل لازم آتا ہے۔ جواصل اصول اسلام اور موضوع قرآن

کے ظاف ہے۔ مقیقتہ ان دونوں مقاموں پر (لَیَعْلِمَنَّ) کے صینے ہونے چاہیے تھے جس کے سبب آیت کے یہ معنی ہوتے (جملاوے گاخدا کہ کون سے اور کون جموٹے تھے۔ تقیف کا تبین -23

اتول شیعه کی بردی معتبر تغییر مجمع البیان (مطبوعه ایران 1284ه جلد دوم 213 میں ہے-

ولقد فتنا الله ين من قبلهم اى ولقد ابتلينا الله ين قبل امة مجمد من سالف الا مم بالفرائض التى افترضنا ها عليهم اوبالشدائد والمصائب على حسب اختلافهم وذكر ذلك تسلية للمو منين قال ابن عباس منهم ابراهيم خليل الرحمن وقوم كانو امعه ومن بعده نشرو ابالمناشير على دين الله فلم يرجعواعنه وقال غيره يعنى بنى اسرائيل ابتلوا بفرعون يسو مونهم سوء العذاب فليعلمن الله الذين صدقوا فى اسرائيل ابتلوا بفرعون يسو مونهم سوء العذاب فليعلمن الله الذين عدقوا فى المائه وليعلمن الكاذبين فيه وانما قال فليعلمن مع ان الله سبحانه كان عالمانهم ولعيلمن سيحدث يفه وأنما قال فليعلمن مع ان الله سبحانه فيما لم يزل بانه وانما يعلمه حادثا اذا حدث وقيل معناه فيلميزن الله الذين صدقو امن الذين كذبوابالجزاء والمكافاة وعبر عن الجزاء والتمييز بالعلم لان كل ذلك انما

يحصل بالعلم فاقام السبب مقام المسبب ومثله في اقامة السبب مقام المسبب يمس بالمراه عنها ومعنى الطعام فهذا سبب قضاء الحاجة فكنى بذكره عنها ومعنى صدقواى ثبتو اعلى الشدائد وكذبوااى لم يثبتو ومنه قول زهير اذا مالليث كلي

ترجمہ: اور بیٹک ہم نے جانچا ہے ان کو جو ان سے پہلے تھے لینی گذشتہ امتول میں سے جو لوگ عن اقرانه صدق-امت محرے پہلے تھے ہم نے ان کی آزمائش فرائض کے ساتھ کی جو ہم نے ان پر فرض کے یا ان کے اختلاف کے مطابق شدا کد مصائب کے ساتھ اکلی ازمائش کی- اللہ تعالی نے یہ موموں کی تلی سے لیے ذکر کیا ہے۔ ابن عباس نے کماکہ ان میں سے ابراہیم خلیل اللہ اور وہ لوگ ہیں جو ان کے ساتھ تھے۔ اور جو ان کے بعد تھے۔ وہ اللہ کے دین پر آرہ سے چیرے گئے۔ مرائے دان سے نہ چرے ابن عباس کے سوا اورول نے کما کہ اس سے مراد ین اسرا میل ہیں۔ جو فرعون کے ساتھ آزوائے گئے۔ جس کی قوم ان کو برا عذاب چکھاتی تھی۔ سو البتہ اللہ ضرور جان لے گاان کو جو عج ہیں۔ اپنے ایمان میں۔ اور البتہ ضرور جان لے گا ان کو جو جھوٹے ہیں۔ اس میں فدانے باوجود کے دہ ازل سے جاتا ہے کہ فلال امر معلوم حادث ہوگا۔ یمال فرمایا فلیعلمن سو ضرور جان لے گا۔ اس لیے کہ اللہ پاک کی نبت ہوں نہیں کمہ سکتے کہ وہ ازل میں جاناتھا کہ وہ امر موجود ہے۔اس کو حادث و موجود تو جب ہی جانا ہے کہ وجود میں آچکاہو۔ اور کما گیا ہے کہ اس کے متن یہ میں کہ اللہ تعالی جزاء و مکافات کے ساتھ البتہ چوں کو جھوٹوں سے جدا کردے گا۔ پس جزاءو تمیز کو علم سے تجبیر کیا کیونکہ ہرایک علم ہی سے حاصل ہوتا ہے اس صورت میں سب کو مب ک جگہ لایا گیا۔ اور سبب کو مسبب کی جگہ لانے کی ایک اورمثال سے سے کہ کان یا کلان الفعام (دونوں کھانا کھاتے تھے) چونکہ طعام قضاء حاجت کا سبب ہے لنڈا طعام کا ذکر کرکے اس سے قضا حاجب مرادلی گئی-صدقوا کے معن ہیں شدا کد پر ثابت رہے- اور کذبوا کے معنی ہیں کہ طابت ندرہ اور ای سے ہے زہیر کا یہ قول اذا مااللیث کذب عن اقرانه صدق شیعہ کے متند فاری ترجعه لعنى خلامت المنبح من آيت بالاكايول ترجمه كياب ولقد فتنا بدر سيك امتحان كرديم وورفت اندا ختيم اللدين من قبلهم آنا زاك فيش ازين بودند از مومنال يعني اس صورت وروم امم والع شدہ ونفل وعوے ہر یک رابر امحک بلا آزموں اند پس خلاف آل توقع مدارید وورصدے آما کہ پین از شابعض را ابرسرے نماوند وبد و نیم میکردند- تااورا ازدین بگردانند نتو انستند و بعض را، نا بالسة أبنس بوست وكوشت ازا ستوان شال برميكند ند كازدين بركروند برنبكتند فليعلمن

الله الذين صدقوا لي بر آئينه بدائد خدا بجت ابتاء امتحان آنانکه راست گفتند در دعوے ابحان والیعلمن الکاذبین بدا اند دروغ گویال رادر وعوے ابحان چول علم ذانیت وجمع معلوات ازلا وابدا نزاو علی السویه است پی مراد از علم لازم آنست که تمیزاست میان حق باطل بین تامیز سازد خدا مومن راز کافرو مجازات دم بریک رابر وفق اعتقاد و یا معنی آئست که تاعمل خدا بوجود مومن کافر تعلق کیرد معلوم است که خدا معدوم رابعنوان عدم دائد تا موجود نشود ویر العبنوان وجود ثداند انتها

رجمہ: البتہ ہم نے امتحال کیا اور آزمائش میں ڈالا ان کو جو ان سے پہلے تھے مومنوں میں سے لعنی بیا مورت تمام امتول میں واقع ہوئی ہے۔ اور ہرایک امت کے دعوے کی نفتری کو بلاکی کسوٹی پر آزمایا کیا ے ہی تم اس کے ظاف توقع نہ رکھو- اور حدیث میں آیا ہے کہ کی کے سربر آرہ رکھ کر دو عرب كرية تھ تاكہ اس كو دين سے برگشة كرديں- مرنه كرسكے- اور بعضول كے كوشت و يوست آبنى اللهوا ، مرود نه مرح عقد الله وه دين يد جرجائي - مروه نه جرع عقد سو البته خدا ابتلا و الخان کے سبب ان کو جان لے گا۔ جو ایمان تے وعوے بین سیے ہیں۔ اور ان کو جان لے گا جو ایمان کے راك بيل جھوٹے بيں- چو تك خدا كاعلم ذاتى ہے اور اس تي بزديك تمام معلومات ازلا وابدأ برابر بيل ال لي يمال علم سے مراد لازم علم ہے جو تق و إطلي مين جيرے ليني پس خدا مومن كو كافرے جدا كدے گا۔ اور ہرايك كو اعتقاد كے مواقف بدلى دے كاليا يہ معنے ہيں۔ كه پس خدا كاعلم مومن و كافر کے وجود سے تعلق پکڑے گا۔ اور معلوم ہے کہ خدا معدوم کو معدوم جانیا ہے۔ جب تک موجود نہ ہو ات موجود نهيں جانيا انتقى- منسج الصادقين اور نسير صافى ميں بھى قريباً بهي مضمون ورج ہے-تال الميرزا: (٩) سوره بن اسرائيل ركوع (٢) من -- وقضى ربك ان لا تعبدوا الااياه لين نوائے مقابلہ میں وہ کونی مخالف قوت ہے۔ جو کروڑوں غیراللہ کے پجاریوں سے کسی زمانہ کو خالی نہیں ائے دیں۔ کر حقیقت یمال ووصی ربک تما۔ کس جائل کاتب نے (داو) ص سے ملادیا۔ یا سای گرنے سے حرف قضی بن گیا۔ اور کاتب او تھ کیا۔ جیسا کہ درمتور میں ہے کہل یہ علطی الرَّآن مِن مَعْوظ چلی آتی ہے۔ تصحیف کاتبین ۲۳-۲۳

اقراع مح البيان (طدوم ٥٦- من --وقضى ربك اى امر ربك امر اباتا عن ابن عباس والحسن وقتادة وقيل الزم واوجب ربك عن الربيع بن انس وقيل اوصى عن مجاهدان لا تعبد واالا اياه معناه ان تعبد وه ولا تعبد واغيره وبالوالدين احسانا وقضى بالوالدين احسانا واومي الوالدين احسانا واومي الوالدين احسانا ومعنا هما واحدلان الوصية امر-

پانو اساس و حن و آثارہ) اور کما گیا ہے کہ تیرے پروردگار نے الان و واجب کرویا ہے (ازی بن انس)اور کر اساس و حن و آثارہ) اور کما گیا ہے کہ تیرے پروردگار نے لازم و واجب کرویا ہے (ازی بن انس)اور کر ایا ہے کہ تضی کے متن ہیں۔ اوصی۔ (وصیت کی ہے) از مجاہد کہ تم اس کے سواکی کی عہادت نہ کرد۔ اور مال باپ کے ساتھ نگی کرد۔ اور مال باپ کے ساتھ نگی کرد۔ ان ووز راس حمیٰ ہیں۔ کہ مال باپ کے ساتھ نگی کرد۔ یا وصیت کی ہے کہ مال باپ کے ساتھ نگی کرد۔ یا وصیت کی ہے کہ مال باپ کے ساتھ نگی کرد۔ ان ووز راس حمیٰ ایک بی جی کیونکہ وصیت ایک حکم ہے انتھی۔ اس آیت کا فاری ترجمہ یوں کیا گیا ہے۔ حم کر پروردگار تو اے جمہ جمیع مکلفال رابانکہ میرسید یعنی تو و اقبیال پرسش منمائید مگراورا کہ خداونہ بھی اس کے بوائی کی باوردگار نے اور تمان کے بید بہاور پر رئیوئی کروئی (ظامت المنے) اور ای آیت کا اردو ترجمہ سے ہے۔ اور تمان بروردگار نے یہ علم قطعی دے دیا ہے کہ تم اس کے سواکسی اور کی عبادت نہ کرد۔ اور مال باپ کے ساتھ نگی کرتے رہو۔ (ترجمہ شیعہ) اس طرح تغیر صافی ہی جم کے معنی اعمر مقطو عابد (قطعی حم دے ویا ہے) کیسے ہیں۔ تغیر در مشور کی نبست ہم پہلے لکھ چے ہیں۔ کہ اس میں رطب و دیا بس بہت ہا وہ لی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا والی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا ور نہ ایس اس عادر اس مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا اور کی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا اور کی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا اور کی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا اور کی مصنف نے اپی طرف سے زیادہ کرا

قال المير زا الغرض حرف اعراب نقط كى تقيف قرآنان موجوده مين ثابت بير- جو دعده حفاظت قرآن كي خلاف بير- النفران المرفق الما الله كوو اناله لمحافظون مين ذكر سے مراد قرآن اور كانظون سي ذكر سے مراد قرآن اور كانظون سي حقاقت كا وعده خدا سجمة جهل ب- (شيف كاتين- ص ٢٠٠)

اقول ہمارے جوابات سے ظاہر ہے۔ کہ امثلہ ذکورہ بالا میں سے کسی سے بھی قرآن کرم میں تفین طابت میں ہوتی۔ بلکہ اس کے برعکس ان سے قرآن مجید کی کمال حفاظت خابت ہوتی ہے۔ مدور کے علاوہ سطور میں اس طرح قرآن باک کا بے کم و کاست محفوظ رہنا ای وعدہ النی کا ایفا ہے۔ جو آیہ انا نعن نزلنا اللہ کو میں ذکور ہے۔

قال الميرزا

بحث ووم نقص آیات کتام مبین جم نے اس بحث میں صرف وہی آیات پیل کی ہیں۔ کہ جن میں اپنی طرف سے جب تک الفاظ نہ طلو آیت کے پورے معنی نہیں بنتے کلام ناقص رہتا ہے۔ بانی

می آیات و سور اور ان کی نقتر یم و تاخیر نقتر یم ناسخ اور تاخیر منسوخ و فیرو کی ابحاث کو بالکل ترک کردیا ہے۔ الم تريف قرآن كافيمله قرآن سے مو جائے۔

(۱) میتول رکوع (۵) میں ہے۔

واذ قيل لهم اتبعوا ما انزل الله قالوابل نتبع ماالفينا عليه اباء نا اولو كان اباؤم لا بعقلون شياء ولا يهتدون..

ترجمہ: اور جب ان سے کما جاتا ہے کہ خدائے جو کچھ نازل کیا ہے اس کی پیروی کرو تو کتے ہیں ك بم تواس كى پيروى كريس كے - جس بر بم ت اپنوباپ وادا كو پايا - بھلا اگر ان كے باب دادا عقل نه رکمے تھے اور ہدایت یافتہ نہ تھے۔ نقص محتدون کے آگے الفاظ ان معانی کو کم ہوگئے ہیں (تو بھی کیاوہ ایسا ی کریں هے) پس جب تک ان کے معانی کے اوا کرنے والے الفاظ نه ملاؤ کلام ناقص رہتا ہے- (تعیف کاتین عمل ۱۳۳)

اقول ہم اوپر قرآن ہی سے خابت کر چکے ہیں۔ کہ قرآن حسب وعدہ النی ہیشہ تحریف سے محفوظ رہا ، ----ہے-اور رہے گا- مصنف نے جو نقص آیات کی مثالیں چیش کی ہیں- ان میں کوئی نقص نہیں- صرف اس ک مجھ کا نقص ہے۔ کیونکہ قرآن اول سے آخر تک فصاحت وبلاغت کے خارق عادت وہجہ میں ہے اور پار پار کر کہ رہا ہے۔ کہ چھوٹی سے چھوٹی سورت کی مقدار بھی کوئی انسان نہیں بنا سکتا عرب جو نزول قرآن سے پہلے میدان فصاحت و بلاغت میں کوس لمن المک بجارے تھے۔ اس کے معاوضہ ہے ایسے عاج آئے کہ انہوں نے جلاوطنی قبل اور جزید کو آسان خیال کیا مگر آج پورے چورہ سوسال کے بعد ایک المرك براك رما ہے۔ كه قرآن ميں نقائص بين- العجب ثم العجب بيلا نقص جو اس مندى كو تظرآيا لايرب كه آيه واذ اقيل لهم اتبعو اماانزل الله جزاء محذوف ہے- ناظرين خود انصاف كريں كيا جزاء كا مذف نقص ہے؟ ایک طفل مکتب بھی ہیہ جانتا ہے کہ بعض جگہ اختصار وغیرہ کسی غرض کے لیے جزاء منزوف پر ماسبق ولالت كر رہا ہے-

قال الميرزا سوره بقره كے آخرى ركوع ميں ہے-

امن الرسول بما انزل اليه من ربه والمؤمنون كل امن بالله وملائكته وكتبه ورسله لانفرق بين احد من رسله

ترجمہ: رسول ایمان لایا اس چیز کے ساتھ جو اس کے رب کی طرف سے نازل کیا گیا اور مومن ادر تمام لوگ ایمان لائے اللہ پر اور اس کے فرشتوں اور کمایوں اور رسولوں کے ساتھ ہم نہیں فرق كرتے كى ايك بيں اس كے رسولوں بيں سے- (انتقى)



تقص) لفظ رسله اور لانفرق کے درمیان سے کوئی لفظ نکل کیا ہے۔ پس نمیں معلم ہو کرکے کہ لانفرق کس کامقولہ ہے تھیف کاتبین- ص ۲۳

ومن قرء لا يفرق فعلى تقدير لايفرق الرسول او حل لا يفرق والنون على تقدير وقالوا لا نفرق كقوله ولوترى اذا لمجرمون ناكسو رؤسهم عند ربسم ربنا ابصرنا وسمعنا اى ويقولون ربنا .

ترجمہ: جو لایفرق پڑھتا ہے تو اس تقدیر پر کہ نہیں فرق کر؟ رسول یا کل فرق نہیں کرتے۔ اور انول نے کما کہ ہم فرق نہیں کرتے۔ جیسا کہ آیت ولونری افرق کی صورت میں تقدیر ہوں ہوگی۔ اور انہول نے کما کہ ہم فرق نہیں کرتے۔ جیسا کہ آیت ولونری اذا لمجرمون ناکسوارؤسہم عند ربھم ربنا ابصرنا و مسمعنا (اور بھی تو دیکھے جم وقت یا گنگار مرجھکائے ہوں گے۔ اپ رب کے پاس اے ہمارے پروردگار ہم نے دیکھ لیا اور س لیا) میں ایک ہمارے پروردگار ہم نے دیکھ لیا اور س لیا) میں ایک ہمارے پروردگار ہم نے دیکھ لیا اور س لیا) میں ایک ہمارے پروردگار ہم نے دیکھ البیان ہی میں ہے۔ الله ای ویقولون (اور کہتے ہوں گے) مقدر ہے انہیں۔ جمع البیان ہی میں اللہ نفرق بین احد من رسله ای ویقولون لا نفرق

ترجمہ: ہم فرق نہ کرتے کسی ایک میں اس کے رسولوں میں سے بینی اور وہ کہتے ہیں کہ ہم فرآ نمیں کرتے انتھی تغییرصانی ہے

لانفرق بين احد من رسله يقول ذلك

ہم قرق نمیں کرتے کئی ایک میں اس کے رسولوں میں سے وہ کہتے ہیں یہ انتھی فاری رجمہ

میں یوں ہے۔ وہمہ متنق الکلمہ شدہ میکویئد۔ ما تغریق نمیکنیم الخ پس ثابت ہوا کہ مصنف ہندی کا یہ کمنالکا نہیں معلوم ہو سکتالانفرق کا مقولہ ہے) ورست نہیں۔ قال المیر زا (۳) سورہ آل عمران رکوع(۹) میں ہے۔

يوم تبيض وجوه وتسود وجوه فامالذين اسودت وجوهم اكفر تم بعد ايمالكم فذوقوا العذاب بماكنتم تكفرون اس دن منہ سفید ہوں گے- اور سیاہ اور جن لوگوں کے منہ سیاہ ہوں مے کیا کافر ہو گئے ایمان اللہ عنداب چکھوا سوجہ سے کہ تم کافر ہو گئے- (انتی)

نقص وجو ههم كفرتم بعد ايمانكم ك درميان سے كوئى لفظ نكل كيا ہے۔ جس كے بين معلوم ہوتا كہ اكفرتم سے ختم آیت تک كس كامقولہ ہے تقیف كاتبين۔ ص ٢٥-٢٥ الول تنبير مجمع البيان (جلد اول) ميں اس آیت کے تحت میں يوں لکھا ہے۔

وجواب امافی قوله فاما الذین اسودت وجوههم محذوف و تقدیره فاما الذین اسودت وجوهم فیقال لم اکفر تم فخدفت لد لالته اسودا والوجوه علے حال التو بیخ حتی کا نه ناطق به وقد یحذف القول فی مواضع کثیرة استغناء بما قبل من البیان کقوله ولوتری اذا لمجرمون ناکسوار وسم عندر بهم ربنا ابصرنا ای یقولون ربنا ابصرنا لد لالة تنکیس الواس من الجر مین علی سوال الا قالة و مثله کثیر

ترجمہ: فاھا اللہ ین اسو دت و جو ھھم فیقال لبم اکفر تم (پی جن کے منہ ساہ ہوئے سوان شریوں ہے۔ فاھا اللہ ین اسو دت و جو ھھم فیقال لبم اکفر تم (پی جن کے منہ ساہ ہوئے سوان کے کا جائے گا۔ کہ آیا تم کافر ہو گئے ایمان لائے کے بعد) پی اما کا جواب حذف کیا گیا۔ کیو فکہ منہ کا ساہ ہونا حال تو تیج پر ولالت کرتا ہے۔ یماں تک کہ گویا وہ اس کے ساتھ ناطق ہے۔ قول بہت جگوں میں مذف کیا جاتا ہے۔ اس لیے کہ بیان ما قبل کے ساتھ اس کے اظمار کی ضرورت نہیں رہتی جیسا کہ اس فرف کیا جاتا ہے۔ اس لیے کہ بیان ما قبل کے ساتھ اس کے اظمار کی ضرورت نہیں رہتی جیسا کہ اس فول اللی میں ہے۔ ولو تری افا لمحرومون فاکسورؤسھم عند ربھم ربنا ابصر فا اس می عند ربھم کے بعد ویقولون اور کتے ہوں گے۔ محذوف ہے کیونکہ گنگاروں کا مرجھکانا معانی کے سوال لبھم کے بعد ویقولون اور کتے ہوں گے۔ محذوف ہے کیونکہ گنگاروں کا ترجھکانا معانی کے سوال پر ولالت کرتا ہے۔ ایسے حذف کی مثالیں بہت ہیں۔ انتھی ابو علی طبری کی تقریر سے ظاہر ہے کہ ایسے مذف فی مثالیں بہت ہیں۔ انتھی ابو علی طبری کی تقریر سے ظاہر ہے کہ ایسے مذف فی مثالیں بہت ہیں۔ انتھی ابو علی طبری کی تقریر سے ظاہر ہے کہ ایسے مذف فی مثالیں بہت ہے۔ واضح رہے کہ آیہ ذیر بحث آل عمران کے مقالت پر حذف ضروری ہے۔ اور اظمار خلاف فیاحت ہے۔ واضح رہے کہ آیہ ذیر بحث آل عمران کے مقالت پر حذف ضروری ہے۔ اور اظمار خلاف فیاحت ہے۔ واضح رہے کہ آیہ ذیر بحث آل عمران کے مقالت ہے۔ دائے مذک میں جیسا کہ مصنف نے لکھا ہے۔

تفل الميرزا (٣) سورة آل عمران ك ركوع (١٩) ميس ہے-

ان فى خلق السمون والارض واختلاف البل والنبار لايات لاولى الالهاب الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنو بهم ويتفكرون فى خلق السمون والارض وبنا ماخلقت هذا باطلا سبحنك فقنا عذاب النار-

البتر آسالوں اور زمین کے بنانے میں اور رات دن کے بدلنے میں عقل مندوں کے لیے نشانیاں



میں وہ وہ بیں جو اللہ کو یاد کرتے میں کھڑے اور بیٹھے اور بہ کروٹ اور فور کرتے میں آئان ار زمین کی پیدائش میں اے رب تونے یہ بیکار نہیں بنائے تو عیبوں سے پاک ہے ہی جم کو خاب دوزخ سے بیجانتی۔

نقص والارض اورربنا ماخلقت کے درمیان سے کوئی لفظ نکل کیا ہے۔ جس کے سب پر نر معلوم ہوتا ہے کہ یہ رینا کس کا مقولہ ہے۔ تقیف کا تین - ص ۲۵

اقول ان آیتوں میں بھی رہنا ماخلقت سے پہلے قول محذوف ہے اور اس کی وجہ وہ ہے۔ ہوں ہے۔ ہوں مختوف ماخلفت مذا باطلا ای یقولون ماخلف مرک شیعی نے لکھا ہے۔ وقوله ماخلقت هذا باطلا ای یقولون ماخلف هذا الخلق ولذلک لم یقبل هذه ولا هو لاء (مجمع البیان جلد اول) می ۲۱۹

ترجمہ: تونے یہ نفنول پیدا نہیں کیا۔ یعنی وہ کہتے ہیں کہ تونے اس مخلوق کو نفنول پیدا نہما کا ای واسطے ہذہ یا ہولاء نہ کہا۔ انہی

تفال الميرزا (٥) سوره بني اسرائيل (١) ميں ہے۔

واتینا موسی الکتاب و جعلنه هدی لبنی اسرائیل الا تتخذو امن دونی و کیلاذربهٔ من حملنا مع نوح انه کان عبد شکوراً

ترجمہ: اور مویٰ کو ہم نے کتاب دی تھی۔ اور اس کو بنی اسرائیل کے واسطے ہدایت مترد کیا تھا۔ کہ میرے سواکسی اور کو کار سازنہ بنانا اور ان کی ذریت کو نوح کے ساتھ سوار کیا تھا بے فک وابط شکر گزار بندہ تھا انتی۔

تقصی معرت موی کا اتمام قصہ چموڑ کر معرت نوع کا قصہ بے ربطی کے ساتھ بیان ہونے لگا ؟ س بے جوڑ بات ہے پس موی کے قصہ کا آخری معد اور معرت نوح کے قصہ کا محد اول علم اور معرت نوح کے قصہ کا محد اول الله جائے تو مطلب پورا ہوگا۔ تقیف کا تیمن ۔ ص ٢٥ اقول مصنف ہندی ان دو آیوں کا مطلب ہی شیس سمجھانہ یماں دو قصے ہیں۔ نہ کوئی بے ربطی ہے اس بات اور سمجھ کو دیکھے کہ ذریعته من حسملنا مع نوح کا ترجمہ یوں کیا ہے۔ اور ان کی ذریت کو نوح کے ماتھ سوار کیا تھا۔ شیعہ کا منتد فارسی ترجمہ ان دو آیوں کا یوں ہے و دادیم موی راکتاب تورات وگرو اندیم موی یا تورات راراہ نما یندہ مرفرزندان لیعقوب راد کفتیم آنکہ فرا گیرید بجراز من پروروگار کہ اندہ دورہ سے گزاریدائے ذریعہ آل کے کہ برداشیم اور اور کشتی بانوح مراد سام است کہ جد ابراہیم است کہ جد ابراہیم است دابراہیم جد بنی امرائیل بعنی نجات از طوفان راکہ بشما ارزانی داشیتم یاد کنید و شکر گزاری آل نمائید۔ بدر شیک نوع برد بندہ سیاس وار ندہ (ظامنہ المنہ)

ترجمہ: اور جم نے موی علیہ السلام کو کتاب تورات دی اور موی علیہ السلام یا تورات کو فرزندان لیقوب کے لیے رجما بنا دیا اور کمہ دیا کہ میرے سوا کسی کو پروردگار نہ بناؤ۔ کہ اپنا کام اس پر چوڑو۔ اے ذریت اس کی جس کو جم نے توح علیہ السلام کے ساتھ کشتی جس لاو لیا۔ اس سے مراد سام بی ۔ جو حضرت ایراجیم علیہ السلام کے جد بیں۔ اور حضرت ایراجیم علیہ السلام بنی امرائیل کے جد بیں۔ بین طوفان سے مجات جو جم نے حمیس دی یا د کرو اور اس کا شکریہ ادا کرو۔ بے شک نوح شکر گزار بندہ تھا۔ اس سے ناظرین مصنف بندی کی لیافت و جرائت کا اندازہ لگا سکتے ہیں۔

قال الميرزا

(٢) سورہ تور ركوع (٢) من ب- ولو لا فضل الله عليكم رحمته وان الله غفور رحيم ير قرآن مجيد من كئ مقام ير ب-

اور اگرتم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی ہے شک اللہ بڑا بخشنے والا مموان ہے۔ تفقی اس آیت میں شرط موجود اور جزائدارد ہے پس لفظ رحمته اور ان لله کے درمیان سے کوئی لفظ فکل کیا ہے۔ اس وجہ سے آیت ناقص رہ گئی۔ (نعیف کاتین۔ ص ۲۵)

الراس مصنف بندی محض اردو خوال معلوم ہوتا ہے۔ ورنہ یہ نہ لکھتا کہ لفظ رحمتہ اور ان اللہ کے درمیان سے کوئی لفظ نکل گیا ہے۔ ان للہ سے پہلے واو عاطفہ ہے جو طاہر کر رہا ہے کہ اس کا عطف ما تمل پر اسمان سے کوئی لفظ نکل گیا ہے۔ ان للہ سے پہلے واو عاطفہ ہے جو طاہر کر رہا ہے اس کی جزاء وشک سے اور شرط ہے اس کی جزاء وشک سے کوف فضل اللّٰہ سے لے کر رحم تک تمام لولا کے تحت میں ہے اور شرط ہے اس کی جزاء وشک مخذوف ہے کوئی جس للڈا اسے دوبارہ ذکر کرنے کی مخذوف ہے کوئی جس للڈا اسے دوبارہ ذکر کرنے کی مخذوف ہے کوئی جس للہ علیکم ورحمته فی مورست نہ تھی۔ اور وہ آیت جس جس جزاء ڈکور ہو جا فضل الله علیکم ورحمته فی اللّٰنیا و الا خورة لمسکم فی ما افضتم فیه عذاب عظیم اور اگر دنیا اور آخرت میں تم پر خدا کا اللّٰنیا و الا خورة لمسکم فی ما افضتم فیه عذاب عظیم اور اگر دنیا اور آخرت میں تم پر خدا کا

فعنل اور اس کی رحت نہ ہوتی تو جس بات کا تم نے چرچاکیا تھا۔ اس کے سب سے تم پر براعزاب از روم ۱۵۸۔ یس ہے۔ ہوتا۔ (ترجمہ شیعہ) تفسیر مجمع البنان جلد دوم ۱۵۸۔ یس ہے۔

ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رؤف رحيم لعلجلكم بالعقوبة ولكنه برحمته انهلكم لتتوبوا وتند مواعلى ماقلتم وجواب لولامحذوف لد لالنه الكلامه عليه-

ترجمہ: اگر تم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی اور یہ کہ اللہ نرمی کرنے والاے مہان اور تم پر جلدی عذاب نازل کر؟ لیکن اپنی رحمت سے تنہیں مملت دی تاکہ تم نوبہ کرو اور اپنے کے پہنیان ہو۔ اور لولا کا جواب محذوف ہے اس لیے کلام اس محذوف پر دلالت کر رہا ہے۔ انتھی فاری تا جہد اور اولا کا جواب محذوف ہے اس لیے کلام اس محذوف پر دلالت کر رہا ہے۔ انتھی فاری

واگرنه فضل خدا بودے به بردباری برشا و بخشایش اومهلت دادن برائے توبه و آنکه خدامهان باست و براء ت ذمه و پاک دامنی مقدوف را ظاہر گرداند و روشن سازد بخشا بنده است که بنوبه بنایت قاذف رادر گزارند یعنی اگر نه فضل و رحمت ورافت خدا بودے ہر آینه عذاب برشا ناذل شدے انتم (خلاصه المنج)

ترجمہ: اگر تم پر بردباری کے ساتھ خداکا فضل نہ ہوتا۔ اور توبہ کے لیے مسلت دینے کے ساتھ

اس کی رحمت نہ ہوتی اور یہ کہ خدا مربان ہے اور مقدوف کی پاکدامنی اور اس کے بری الذمہ ہونے کو طاہر و روش کر دیتا ہے بخشے والا ہے کہ توبہ سے قاذف کے گناہ سے ورگزر کرتا ہے لینی اگر خداکا فضل رحمت اور اس کی نری نہ ہوتی تو بیشک تم پر عذاب نازل ہوتا۔ انتھی۔ تغییر روح المعائی (جزء سادل می اسم میں ہے) و جو اب لولا محدوف لنہ و بله حتی کانه لا تو جد عبارة تحیط بیانه و هذا المحدف شائع فی کلامهم قال جزیو

كذب العواذل لو رائين مناخنا بجزيز رامته والمطى سوام ومن امثالهم لوذات سوار لطمتني

ترجمہ: اور لولا کا جواب محدوف ہے کیونکہ وہ ڈراؤٹا ہے حتی کہ ایسے الفاظ شیب ملتے کہ جن میں اس کا بیان ہو سکے اور یہ حدف کلام عرب میں شائع ہے چنانچہ جزیر شاعر کہتا ہے گذب العوافل لوداً بین مناخنا بہزیر رامة والمطی سوام (المامت کرنے والیول نے جھوٹ کما اگر وہ جزیر رامہ بمارے مناخ (اوتول کی خوابگاہ کو ویکھتیں اور سواری کے اونٹ چرتے ہوتے۔

اور عرب کی مثال میں سے ایک مثال یہ ہے۔ لوذات سوار لطمتنی (اگر کنکن والی میرے

منہ پر تھیٹر ارتی) انتقی مصنف ہندلی کی لیافت تو ظاہرہے بد قشمتی سے اسے جو مددگار ملے ہیں وہ بھی ای کے میل کے معلوم ہوتے ہیں۔ چنانچہ مولوی علیم سید مقبول احمد صاحب نے آیت زیر بحث کا اردو ترجمہ پول کیا ہے۔ اور اگر تم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی (تو وہ تم پر جلد عذاب نازل کر؟) اور ہیک اللہ بڑا مہریان اور رحم کرتے والا ہے۔ (ترجمہ شید)

قال الميرزا

(2) سوره نور ركوع (٣) يش ٢- وليستعفف الذين لا يجدون نكاحا حتى يغنيهم الله من فضله والذين يبتغون الكتب مما ملكت ايمانكم فكاتبوهم تبوهم ان علمتم خيرا و آتو هم من مال الله الذي اتكم ولا تكرهوا فتيتكم على البغاء ان اردن تحصنا التبتغو عرض الحيوة الدنيا ومن يكرههن فان الله من بعد اكر اههن غفور رحيم

اور جن کو تم میں سے نکاح کرنا میسرنہ ہو تو ان کو پارسائی برتن چاہیے یہاں تک کہ اللہ ان کو فن کردے اور تسارے لوعدی و غلام جو مکاتبت کے خواستگار ہیں تو اگر تم ان میں نیکی کے آثار پاؤ تو ان سے مکاتبت کر لو اور ان کو اس مال سے یکھ دوجو خدا نے تم کو دیا ہے اور جو تساری باندیاں پاکدامنی کی خواستگار ہیں تو ان کو بدکاری پر مجبور نہ کرو کہ اس سے تم دنیا کا کوئی نفع اٹھاؤ اور جو کوئی ان کو مجبور کرے گاتو اللہ مجبور کرنے کے بعد بڑا بخشنے والا مریان ہے انتی۔

القص من بعد اکر اههن کے آگے شدید العقاب یا عزیز ذوانتقام جیے الفاظ ہونے مناب سے تو تو شرط کی جزاء ظاہر ہوتی اور اب جو اکراممن غفور رحیم آگیا ہے تو موضوع قرآن کے فلاف جرکرنے والول کی جزاء کا اختال ہو تا ہے۔ اور بیز اس جزاسے خدا تعالی کا جمل بھی ثابت ہو تا ہے اور جو مجبور الول کی جزاء کا اختال ہو تا ہے۔ اور بیز اس جزاسے خدا تعالی کا جمل بھی ثابت ہو تا ہے اور جو مجبور لونڈیول کی جزا غفود رحیم ہے تو جابر اچھے رہے انہوں نے دنیا کا لفع بھی اٹھایا اور ان کو کوئی نقصال بھی نہوا اور نہ سزائی۔

سند اس آیت سے یہ بھی مستوج و مستنبط ہوتا ہے کہ پاکدامن لونڈ بول کو بدکاری پر مجبور نہ کرو ادر بان کو ادر بان کے دوریہ کارٹ کو بدکاروں کو بدکاری سے نہ روکو اور ان سے رویہ کائے جاؤ۔ کیونکہ آگر نیک باند بول کی طرح ان کو بھی مکانٹ بنالو کے توبہ یہ کار لونڈ یال کارویہ اپنی بدکاری سے جلد اداکر کے تم سے جدا ہو جائیں گی تو نقصان ہوگا۔ لیس یہ احکام اللہ جل ذکرہ کی شان کے بالکل خلاف ہیں اس بنا پر بھین ہوتا ہے کہ اور آیات کی نسبت اس میں سے زیادہ الفاظ نکل گئے ہیں ہے تھی انہوں مردی اس میں سے زیادہ الفاظ نکل گئے ہیں ہے تا ہوں الفاظ نکل گئے ہیں ہے تا ہوں الفاظ نکل گئے ہیں ہوتا ہے کہ اور آیات کی نسبت اس میں سے زیادہ الفاظ نکل گئے ہیں ہے تا ہوں۔

اقول

مصنف ہندی نے آیت منقولہ کے اخیر نصف کا مطلب غلط سمجماہے-اس کیے ہم اخیر نعف کی تفییرو ترجمہ کتب معتبرہ شبعہ سے نقل کرتے ہیں۔ جس میں اس کے اعتراضات کاجواب بھی آجائے گا- تفيير مجمع البيان (جلد دوم ١٢١- يس --

ولا تكرهوا فتيا تكم اى امائكم وولائدكم على البغاء اى على الزنا ان ارد. تحصنااي تعففا وتزو يجاعن ابن عباس وانما شرط ارادة المتحصن لان الاكراه لا يتصور الاعندارادة التحصن فان لم ترد المرة التحصن بغت بالطبع فهذه فائدة الشرائط لتبتغو عرض الحيوة الدنيااي من كسبهن وبيع اولا وهن قيل ان عبدالله بن ابي كان له ست جواري يكر ههن على الكسب بالزنا فلما نزل تحريم الزنا اتين رسول الله فشكون اليه فنزلت الاية ومن يكرههن اي ومن يجبر هن على الزنامن سادتهن فان الله من بعد اكراههن غفور المكرهات لاللمكره لان الورز

علية رحيم بهن

ترجمه: اور مجبور نه كرواين جوانول كوليني اين لونديول اور چھوكريول كوبدكاري يريعني زناپراگر وہ چاہیں پارسائی لینی پاکدامنی اور نکاح کرتا- (ازابن عباس) اور تحصن بارسائی کے ارادے کی شرط مرف اس واسطے لگائی گئی کہ ارادہ تحصن کے بغیر مجبور کرنا متصور نہیں پس اگر عورت تحصن نہ چاہے تو وہ باللغ زنا كرے گ- يہ ہے قائدہ شرط كاكم تم كمايا جابو اسباب ونياكى زندگى كا- ان كے كسب سے اور ان كے اولاء کے پیچنے سے کما گیا ہے کہ عبداللہ بن الی کے پاس چھ لونڈیاں تھیں جنہیں وہ زنا سے کمانے ؟ مجبور كرتا تھا۔ جب زنا كے حرام ہونے كى آيات نازل ہوئى تو انہوں نے رسول الله ملى الله ملى خدمت مى حاضر ہو کر شکایت کی پس بیہ آیت اتری اور جو ان کو مجبور کرے نعنی ان کے مالکوں میں سے جو ان کو زنائ مجبور كرے - تو الله ان كے مجبور كے جانے كے بعد بخشے والا ہے مجبور كى كئى لونديوں كو نہ كہ مجبور كرنے والے کو کیونکہ گناہ اس کا ہے مرمان ان پر انتقی ابوعلی طبری کی تغییرے ظاہر ہے کہ ادادہ تحسن اکراہ كے ليے شرط ہے اس ليے كه اكراه اس كے بغير محقق نہيں ہو سكتا كيونكه اگر وہ تحمن نہ جاہيں كى وال كا زنا بالطبع موگانہ کہ اکراہ سے اگر ارادہ تحصن کو ننی (منع اکراہ) کی شرط قرار دیں تو اس سے دہم گزر؟ ہے۔ کہ جب ارادہ تحصن نہ ہو تو منی بھی نہ ہوگی- اور جب منی نہ ہوئی تو اکراہ کا جائزہ ہو تالازم آئے گامر یے درست نمیں کیونکہ نی کے ارتفاع سے منی عنہ (اکراہ) کاجواز اس صورت میں لازم آسکا ہے جب کہ عدم ادادہ تحفن کے وقت منی عنہ متصور ہو۔ اور اس میں شک نہیں کہ عدم ارادہ تحفن کے وقت ارادہ تحفن کے وقت ارادہ تحفن کے دقت ارادہ تحفن کے وقت ارادہ تحفن کے وقت اکراہ ماجواز لازم نہیں آنا حاصل کلام ہے ہے۔

کہ ارادہ تحفیٰ کے وقت اکراہ علی الزنا حرام ہے اور عدم ارادہ تحفیٰ کے وقت اکراہ ممتنع ہے۔

آبت مُدکورہ بالا کے نصف اخیر کا فاری ترجمہ بول ہے۔

داکراه واجبار کنید کنیران خود رابر زنا پلید کاری اگر خوابند معفف و پربیز گاری راوا اگر نخوابند و زکر اراده تحص مقتفاء چال است واکراه بهمه حال ممنوع است و اوجهه آنست که اکراه چول منصور نیست گرزد تحص بی ازیل جست شخصین شرط اکره واقع شده پس میفر ماید که شااکراه کنید قتیات خودا برذنا تاقر ایرید مال زندگانی ونیا از کسب فرج ایشال و فردختن اولاد ایشال د جرکه اکراه کند کنیرال خود رازنا پس بدر میبی خدا از پس اکراه کر دن خواجگان مرآنمار آمرزنده آست گنابان کنیران مکریه مهریان برایشال دو زدبال نیست مگر برگردن اکراه کنندگال (خلاصه المنج)

ترجمہ: اور تم اپنی لونڈیوں کو زنا اور بدکاری پر مجبور نہ کرد۔ خواہ وہ پاکدامنی اور پر بیز گاری چاہیں یا نہ چاہیں۔ اور ارادہ تحصن کا ذکر مقتضائے حال ہے ہے اور اکراہ ہرحال ہیں منع ہے اور بہتریوں ہے کہ چوں کہ اکراہ تحصین ہی کے وقت متصور ہے اس لیے تحصین اکراہ کی شرط واقع ہوا ہے لیس اللہ تعالی فرماتا ہے۔ تم اپنی لونڈیوں کو زنا پر مجبور نہ کرو۔ کہ ان کی زنا کی کمائی اور ان کی اولاد کے بیجنے سے زندگانی ونیا کامال جمع کرو جو محض اپنی لونڈیوں کو زنا پر مجبور کرے گا۔ یس خدا بے شک مالکوں کے اپنی لونڈیوں کو زنا پر مجبور کرے گا۔ یس خدا بے شک مالکوں کے اپنی لونڈیوں کو زنا پر مجبور کرے گا۔ یس خدا بے شک مالکوں کے اپنی لونڈیوں کو گناہ بخشنے والا ہے اور کوئی گناہ دو بال نہیں گر مجبور کرنے والوں کی گرون پر انتھی۔ تفسیر صافی میں ہے۔

ولا تكر هوا فتياتكم على البغاء على الزنا ان اردن تحصنا تعقفا شرط للاكراه فانه لا يوجدبد ونه وان جعل شرطا اللنبي لم يلزم من عدومه جواز الاكراه لجواز ان يكون ارتفاء النهي با متناع المنبي عنه

اور تم مجبور نہ کرو اپنی لونڈیوں کو بدکاری پر لینی زنا پر اگر وہ چاہیں پارسائی لینی پاکدامنی سے شرط ہے اگراہ کے لیے کیونکہ اکراہ بغیر ارادہ تحصن کے نہیں پایا جاتا۔ اگر ارادہ تحصن کو نئی کی شرط قرار دیں۔ تو اس ارادے کے عدم ہے اکراہ کا جواز لازم نہیں آتا۔ کیونکہ جائز ہے کہ نئی کا انقاع منی عنہ کے ممتنع ہونے کے باعث ہو۔۔ انتھی واضح رہے کہ آیت ذیر بحث سورہ نور کے رکوع (۳) میں ہے۔ دکوع (۳) میں ہے۔ قال المیر زا (۸) سورہ فرقان رکوع (۲) میں ہے۔

واذا لقوا منها مكانا ضيقا مقرنين دعواهنالك ثبورا لاتدعو اليوم ثبورا واحداوا

اور جب مکان تک لیعنی دو ارخ میں ڈال دیدے جائیں کے تو وہال موت ہی موت پکاریما کے آن ایک عی موت کو نہ پکارو بہت سی موتول کو پکاروانتی۔

تقص منالک ثبورا اور لاتدعو اليوم ك درميان سے كوئى لفظ نكل كيا ہے اس وجہ سے بات بورى تبين بوتى - الله وجہ سے بات

اقول لاتدعو اليوم سے پہلے قول مقدر ہے جس کے ہذف کے وجہ پہلے بیان ہو چی ہے۔ اور یہ بھلا دد و والے فاعل سے حال واقع ہوا ہے ایس اس کی تقریریوں ہے۔ دعوا هنالک ثبو را مقولا لهم لاند عو اليوم ثبورا واحدا لين وہال موت بی موت پکاریں گے درانحاليکہ ان سے کما جائے گاکہ آن ایک بی موت کو نہ پکارو یہ بھی جائز ہے کہ فلا تد عوا کو جملہ متانفہ قرار دیں۔ جو ایک موال کا جواب ہے کیا یول کما گیا ہے کہ ان کے پکار نے پر کیا ہوگا۔ اس جواب دیا گیا کہ ان سے کما جائے گاکہ آج ایک بی موت کونہ کیارو دیکھو نقایم

قال الميرزا (٩) سوره عمل ركوع (١) ميس ب-

يا موسى انه انا الله العزيز الحكيم والق عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مد برا ولم يعقب يموسى لا تخف انى لا يخاف لدى المرسلون

اے مویٰ میں ہی تو زیر دست حکت والا خدا ہوں اور تو اپنا عصا ڈال دے پس جب اس کو زندہ لهراتا دیکھا تو منہ پھیر کر بھاگے اور پلٹ کرنہ دیکھا اسے مویٰ ڈرو نہیں کہ میرے پاس رسول ڈرا نہیں کرتے۔ائتی

تقص اس آیت میں عصاک اور فلما راھا کے درمیان سے کوئی لفظ نکل گیا ہے، در لم یعقب یا موسلی کے درمیان سے بھی کوئی لفظ نکل گیا ہے ہایں وجہ کلام ناقص رہ گیا۔
سورہ نقص رکوع (۲) میں ہے۔

وان الق عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب يموسى اقبل ولا تخف انك من الامنين

اور تو اپنا عصا ڈال دے پس جب اس کو زندہ لہرا تا ویکھا تو بھا کے اور پلیٹ کرنہ دیکھا اے موگا آگے بڑ ہو بے شک تم امن پانے والے ہو۔ انتی۔ زند

نقصر جو دو نقصان نویس تبرکی آیت میں ہیں وہی اور اسی طرح اس آیت میں بھی نقصان ہیں بالی وجہ

كلام تام نهيل- (تفيف كاتين- ص ٢١- ٢٤)

اقول فلما داها میں جو فاء ہے وہ فسیحہ کملاتی ہے۔ کیونکہ وہ ایک جملہ کو بتاتی ہے جو ہوجہ ظہور وزف کی آبا ہے اور نیز اس کا حذف اس بات پر ولالت کرتا ہے کہ اس کا مضمون سرعت کے ساتھ وقوع میں آبا ہے کویا ہوں کما گیا ہے۔ فالقا ها فا نقلبت حیة فلما راها تھتز پس حفرت مویٰ نے اے پھینکا پس وہ سانپ بن گیا ہی جب حضرت نے اسے لہراتا دیکھا موی کا قائل اللہ عزوجل ہے جیسا کہ سیات وہ سانپ بن گیا ہی جب حضرت نے اسے لہراتا دیکھا موی کا قائل اللہ عزوجل ہے جیسا کہ سیات وہ سان دھ طاہرے۔

مصنف ہندی جیسے اردو خوانوال کو چاہیے کہ پہلے علوم عربیہ پڑھیں تاکہ قرآن کی تغییر کو سمجھ کیں۔ ورند محض رائے زنی سے اپنی عاقبت براب نہ کریں۔ واضح رہے کہ آیت نمبر اسورہ نقص کے رکوع ۲ میں ہے۔
رکوع ۲ میں نہیں بلکہ رکوع ۲ میں ہے۔
قال المیر زا سورہ خمل رکوع ۲ میں ہے۔

ويوم نحشر من كل امة فوجا ممن يكذب بايتنا فهم يوزعون حتى اذا جاء واقال اكذبتم يايتي ولم تحيطوبها علمًا اماذا كنتم تعلمون

ترجمہ: اور اس دن ہم پر ایک میں سے یک گروہ کو جو ہماری آیت جھٹلایا کرتے تھے جمع کرلیں کے وہ برابر کھڑے کیے جائیں گے۔ جب وہ سب آجائیں کے کیاتم نے ہی میری آیتوں کو جھٹلایا۔ حالانکہ تم از روئے علم ان کا احاطہ نہیں کر سکتے آیا تم اور کیا کرتے تھے۔ انتی۔

اقول مصنف ہندی نے یہ تو لکھ دیا کہ قال اس مقام پر نامناسب ہے گراس کی وجہ بیان نہیں کی ہندی اور قرآن کی اصلاح اس جرات کا باعث بجر نادانی و نافدا تری اور کیا ہو سکتا ہے۔ مصنف ہندی نے آیت کے اردو ترجمہ میں قال کا ترجمہ ہی نہیں کیا۔ اس حصہ کا اردو ترجمہ یہ ہے۔ یہاں تک کہ جب وہ آجائیں کے اردو ترجمہ میں قال کا ترجمہ ہی نہیں کیا۔ اس حصہ کا اردو ترجمہ یہ ہے۔ یہاں تک کہ جب وہ آجائیں کے تو فدا فرمائے گا۔ کیا تم نے ہی میری آجوں کو جھٹلایا فقا۔ اب ناظرین خود فیصلہ فرمائیں کہ آیا یہاں قال افدافرمائے گا۔ کیا تم ہے۔ واضح رہے کہ یہ آیتیں سورہ نمل کے رکوع المیں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے شرور اللہ میں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے میں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے شرور اللہ میں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے شرور اللہ میں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے میں نہیں ہیں بلکہ رکوع کے شرور ہیں ہیں۔

كال الميرزا (١٢) سوره عمل ركوع (١١) يس --

ومن جاء بالسيئة فكبت وجو ههم فى النار هل تجزون الا ماكنتم تعملون ترجمه: اور جو بدى لے كر آئے گا اور جنم بن اوندہے منه ڈال دیا جائے گا۔ تم جو عمل كرتے



تھے اس کے سوا اور کسی چیز کا بدلہ تھو ڑا ہی دیا جائے گا- انتسی۔

علی الفظ فی الناد اور هل تجزون کے درمیان سے کوئی لفظ نکل گیا اس لیے اگا کام مم نم رہا۔ تقوف کا تین ۲۷

اقول مل تجزون سے پہلے قول مقدر ہے اور بیہ جملہ ضمیرو جو ھھم سے حال واقع ہوا ، پر تقدیریوں ہوگی-

فكبت وجوهم في النار مقولا لهم هل تجزون الاماكنتم تعلمون

سوان کے مند اوند ہے آگ میں ڈالے جائیں گے بحالیکہ ان سے کما جائے گا کہ تم وی بدلہ پاؤ

مے جو پچھ کرتے تھے۔ انتھی۔ ہم پہلے بیان کر چھے ہیں کہ کلام عرب میں قول اکثر حذف کیاجاتا ہے بب
کہ کلام اس پر دلالت کر رہا ہو۔ جیسا کہ یماں ہے ایسے مقالات پر حذف کرنا داخل فصاحت ہے۔

والے المیر زا تھیف کی نو مثالیں اور نقص آیات کی بارہ مثالیں پیش کی ہیں جو ونیا بھر کے رائح قرآن اللہ عن بین جو ونیا بھر کے رائح قرآن جید کے کامل ہونے کے مدع ہیں وہ اپ دعوی ہے تب کریں اور قوم میں ناقص و کامل ہونے کے فسادوں کے بائی نہ بنیں۔ واخود عو انان الحمد للدوب العلمين تھیف کائیں کا

اقول ہمارے جوابات سے ظاہر ہے کہ مصنف نے جو اکیس مثالیں پیش کی ہیں وہ اس نادانی کے اکیس مثالیں پیش کی ہیں وہ اس نادانی کے اکیس مثالیں پیش کی ہیں وہ اس نادانی کے اکیس مثبوت ہیں لنذا اسے اور اس کے ہم خیال اصحاب کوچاہیے کہ فوراً اپنے دعوے سے توبہ کریں۔ کیونکہ جو مختص قرآن کا مشکر ہے۔

نصائح شيعه بمقابله اصول عقائد المستنت وجماعت

قال المير زا: تمام ابل سنت و جماعت اس پر متفق بين كه پيغبر خدا افضل المرسلين و خاتم النين رسته المعاليين بين - اور يه بحى مانت بين كه اگر آپ پيدا نه بوت تو يه زمين و زمان ومانيما كچه پيدا نه بوتا - اور يه بحى مانت بين كه امار ملين كو جيسا تقرب احديت حاصل تقاكى كو نه تقال حتى كه آپ كو معراج بوئى جوكى جوكى كو نه بوئى ليكن باوجود ان انتهائى كمالات و فضائل مان لين كه يه بحى مانت بين كه اور اخبياء مرسلين كى طرح مرور كائنات سے بھى خطائي مرزد بوئين - جيسى بازارى آواره مزاع عمالوں عماروں مرزد و بواكر تى بين - چنانچه بخارى كتاب الملاق باب هن و هل يو اجه المو جل اهو اته بالمطلاق معرف ابو سيد رضى الله عند سے مروى ہو وه فرماتے بين كه بهم رسول الله كے ماتھ جا رہے تھے كه ايك بال ابوسيد رضى الله عند سے مروى ہو وه فرماتے بين كه بهم رسول الله كے ماتھ جا رہے تھے كه ايك بال بينج جس كانام شواط تقال حتى كه بهم دو باغوں كے در ميان پنچ اور وہاں آنخضرت نے فرمايا كه يمال بينجوں

ادر آپ خود اندر تشریف لے گئے۔

وقد اوتى بالجوينة فانزلت فى بيت فى نحل فى بيت اميمة بنت النعمان بن شراحيل و معها دا و تها خاننة لها فلما دخل عليه النبى قال هبى نفسك لى قالت وهل تهب الملكة نفسها للسوقة قال فاهوى بيده يضع يده عليها ليسكن فقالت اعوذ بالله منك فقال غذت بمعاذ ثم خرج علينا فقال يا ابا اسيد اكسها راز قين والحقها با هلها-

ترجمہ: اور آپ اندر داخل ہوئے اور جو نیہ بلائی گئی اور ایک خانہ باغ جو امیمہ بنت نعمان ابن شراحیل کا تھا اس میں اٹاری گئی اور اس کے ساتھ اس کی محافظ پالنے والی بھی تھی پس آنخضرت اس کے باس گئے اور فرمایا تو جھے اپنا نفس بہہ کر دے یعنی نکاح کرلے۔ جو ینہ نے کمایہ کیو کر ہو سکتا ہے کہ ایک ملکہ ہو کر ایک بازاری شخص کو اپنا نفس بہہ کردے اس ششخ سننے کے بعد بھی آنخضرت نے اس کی طرف باتھ بڑھایا۔ جو نیہ نے کما کہ میں خدا سے پناہ ما گئی ہوں۔ آنخضرت نے فرمایا تو نے اس سے پناہ ما گئی جس کا گئی جس کردے ما گئی جاتھ بڑھایا۔ جو نیہ نے کما کہ میں خدا سے پناہ ما گئی ہوں۔ آنخضرت نے فرمایا تو نے اس سے پناہ ما گئی جس کردے ما گئی جاتھ بڑھا گئی جاتھ بڑھا گئی جاتھ کیا گئی جاتھ کے اور ابو اسید سے فرمایا سفید عمرہ لباس دے ما گئی جاتھ کی جاتھ کی جاتھ کی جاتھ کی جاتھ کی جاتھ کی جاتھ کے گئی جاتھ کی کے جاتھ کی جاتھ کی

می بین مراب می از جائے ہیں۔ رہی کا تین م ۱۲٬۲۹)

اقول اہل سنت و جماعت یہ عقیدہ رکھتے ہیں کہ تمام انبیاء مرسلین صلوات اللہ سلامہ علیم اجمعین معموم ہیں مصنف نے حدیث بخاری کے نقل و ترجمہ کرنے ہیں بہت غلطیاں کی ہیں المذاہم ذیل میں المصوم ہیں مصنف نے حدیث بخاری کے نقل و ترجمہ کرنے ہیں بہت غلطیاں کی ہیں المذاہم ذیل میں اللہ علیہ اللہ علیہ وسلم باب من طلق و هل یواجه الرجل امرته بالطلاق حداثنا الحمیدی حداثنا الولید باب من طلق و هل یواجه الرجل امرته بالطلاق حداثنا الحمیدی صلی الله علیه وسلم محداثنا الاوزاعی قال سألت الزهری ای ازواج النبی صلی الله علیه ان ابنة الجون لما محداثنا الاوزاعی قال اخبرنی عروة عن عائشة رضی الله عنها ان ابنة الجون لما محداثات منه قال اخبرنی عروة عن عائشة رضی الله عنها ان ابنة الجون لما محداثات منه قال اخبرنی عروة عن عائشة رضی الله عنها ان ابنة الجون لما

ادخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم ودنا منها قالت اعود بالله منك فقال لها لقد عدت بعظيم الحقى باهلك قال ابو عبيدالله راواه حجاج بن ابى منيع عن جده عن الزهرى ان عروة خبره ان عائشته قالت حدثنا ابو نعيم حدثنا عبد الرحمن بن غسيل عن حمزة بن ابى اسيد عن ابى اسيد رضى الله عنه قال خرجنا مع النبى صلى الله عليه وسلم حتى انظلقناالى حائط يقال له الشوطحي اغتيهنا الى حائطين جلسنا بينهما فقال النبى صلى الله عليه وسلم جلسوا ههنا وداخل وقد اتى بالجوينة فانزلت فى بيت فى نخل فى بيت اميمة بنت النعمان بن شراحيل ومعها داتيها حاضنة لها فلما داخل عليها النبى صلى الله عليه واله وسلم قال هبى نفسك لى قالت وهل تهباالملكة نفسها للسوقة قال فاهوى بيده يضع يده عليها لتسكن فقالت اعوذ بالله منك فقال قد عذت بمعاذ ثم خرج علينا فقال يا ابا اسيد اكسها رازقين والحقها باهلها وقال الحسين ابن الواليد علينا فقال يا ابا اسيد اكسها رازقين والحقها باهلها وقال الحسين ابن الواليد النبى صلى الله عليه وسلم الميمة بنت شراحيل فلما ادخلت عليه بسط-

ترجمہ: باب ہے اس کا جو طلاق دے اور کیا مرو طلاق اپنی عورت کے سانے دے صدیث کی ہم کو جیدی نے کہ صدیث کی ہم کو او ڈائی نے کہ میں نے زہری ہے بوچھا کہ چینجہ رخدا صلی اللہ علیہ وسلم کی ا ذواح میں ہے کس نے آپ ہے بناہ مائٹی کما زہری نے کہ جمحے خبردی عود کی جینی اللہ علیہ وسلم کی ا ذواح میں ہے کس نے آپ ہے بناہ مائٹی کما زہری نے کہ جمحے خبردی عود نے کا کشر رضی اللہ تعلیہ وسلم پر واظل کی گئی اور حضرت اس کے زود کی ہوئے قو اس نے کما کہ جس تجھ سے اللہ کی پناہ مائٹی ہوں۔ یہ س کر حضرت نے فرایا کہ تو نے بزرگ ضدا کی پناہ مائٹی ہو اپنے قال سے جامل ابو عبداللہ امام بخاری نے کما کہ میں تجھ سے اللہ کی پناہ مائٹی ہوں۔ یہ س کر کہا کہ میں تجھ سے اللہ کی پناہ مائٹی ہوں۔ یہ س کر کہا کہ میں تجھ سے اللہ کی پناہ مائٹی ہوں۔ یہ س کر کہا کہ میں تجھ سے اللہ کی پناہ مائٹی ہوں۔ یہ س کہ کہا کہ میں تبدیری ہو کے کہا کہ میں تبدیری ہو کہا کہا کہ میں تبدیری ہو کہا کہا کہ میں تبدیری ہو کہا کہ کہا کہ میں تبدیر میں اللہ علیہ والمہ وسلم کے خبروی کہ عائشہ سے کہا ابو اسید نے کہ ہم چیفیر صلی اللہ علیہ والمہ وسلم کے مرب کی ہو کہ اس کے درمیان بیٹھ اور آپ بابواسید سے کہا ابو اسید نے کہ ہم چیفیر صلی اللہ علیہ والمہ وسلم کے بہا کہ والے ابواسید سے کہا ابواسید سے خبروی کہ ہم جیفیر میں ایک تھی ہیں جیفیر واور آپ وافل کے بہا کہا کہ کہا کہ ہم ویک اور اس کی کافظ تھی ہی جو سے اور جود پہلئی گئی پس امیمہ بنت تعمان بن شیراحیل مجور کے درخوں میں ایک گھر کے اندر انگی کی درخوں میں ایک گھر کے اندر انگی کی درخوں میں ایک گھر کے اندر انگی کی درخوں میں ایک کھی ہی دور کور خور اس کی دائی وسلم اس کی دائی وسلم اس کی دائی در می درخوں میں اللہ علیہ وسلم اس کی دائی و در میمان کہا کہا کہا کہا کہا کہا کہا کہا کہا کہ درخوں میں ایک گھر کے اندر انگی کی درخوں میں ایک کھی جو اس کی محافظ تھی کی جب پیشیر خبر خدا میں اللہ علیہ وسلم اس کی دائی در می کی درخوں میں ایک درخوں میں ایک درخوں میں اللہ علیہ وسلم اس کی دائی در میں درخوں میں ایک درخوں میں کی درخوں کی درخوں کی درخوں میں کی درخوں کی د

رافل ہوئے تو آپ نے اس سے فرایا کہ تو اپنے تین میرے حوالے کروے۔ اس نے جواب ویا کہ کیا ملکہ اپنے تین رعیت کے کسی فخص کے حوالہ کر عتی ہے؟ راوی کا تول ہے پس حضرت نے اپنا ہاتھ برہایا کہ اس پر رکھ دیں تاکہ چپ ہوجائے پس وہ بولی کہ میں تجھ سے اللہ کی بناہ ما گئی ہوں۔ حضرت نے فرایا کہ آس کی بناہ ما گئی کہ جس کی بناہ ما تکی ہا وہ بولی کہ میں تجھ سے اللہ کی بناہ ما تکی کہ جس کی بناہ ما تکی ہے بعد ازاں حضرت ہماری طرف تشریف لائے اور فرایا کہ اب ابو اسید جو نبیہ کو دو سفید کمان کے کپڑے پہنا کر اس کے اہل میں پہنچا دو۔ روایت کی حسین بن ولید نبیا پوری نے عبد لرا جمن سے اور عبد الرحمن نے عباس بن سمیل سے اور عبد لرا جمن سے اور عبد الرحمن نے عباس بن سمیل سے اور عباس نے اپنے باب اور ابو اسید سے کہ کما ہر دو نے کہ تینم خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے امیمہ بنت شراجیل سے نکاح کیا پس جب وہ آپ پر داخل کی گئی تو آپ نے اپنا ہاتھ مبارک اس کی طرف بردھایا پس گویا اس نے یہ تاپینڈ کیا اس لیے آپ پر داخل کی گئی تو آپ نے اپنا ہاتھ مبارک اس کی طرف بردھایا پس گویا اس نے یہ تاپینڈ کیا اس لیے آپ نے ابو اسید کو حکم دیا کہ اس کا مامان تیار کر دو اسے دو سفید کمان کے کپڑے پہنا دو۔ انہی

ترجمہ بالا کے مطالعہ سے اردو خوال اصحاب بھی سمجھ سکتے ہیں کہ امام بخاری نے ایک باب بالدها ہے بدیں عنوان کہ آیا مرد اپنی عورت کو طلاق اس کے سامنے دے؟ اس باب میں امام موصوف طلاق بی کے متعلق حدیثیں لائے ہیں- ان میں سے پہلی صدیث میں اس امرکی صراحت موجود ہے کہ ابت الجون یا جونیا آنخضرت صلی الله وعلیه وسلم کی ازواج میں سے تھی لینی آپ کا اس سے نکاح موچکا قا- ای واسطے حضرت عائشہ صدیقت رضی اللہ تعالی عنهانے اس کی تبیت یوں کما جب وہ رسول الله صلی الله عليه وسلم ير واخل كي كئي اس سے مراد وبي ادخال ہے جو زوجه كا زوج ير ہواكر تا ہے- اور القاظ دنا منها آپ اس کے نزدیک ہوئے اس کی وضاحت کر رہے ہیں۔ اخیر میں حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کا اس الحقى باهلك تو اين الل سے جال فرماناً زب من طلاق سے جيساك ابل علم كو معلوم بے پس حديث عائشہ صديقة سے صاف ظاہر ہے كہ جونيہ سے زكاح ہو چكا تھا مگر جناب رسالت ماب عليه الوف التيس والعلوة في است طلاق وس وى للغدا اس حديث اور عنوان باب من بالكل مطابقت ب ووسرى مدیث ابو اسید ہے جے مصنف نے نقل کیا ہے اور تعصب کی پی آگھ پر باندھ کر اس سے غلط نتائج اخذ کے بیں چنانچہ هبی نفسک کا لفظی ترجمہ کرے لکھا ہے۔ لینی نکاح کر لے مگراہے یہ نہیں سوچاکہ ديكم والا يهل عنوان ياب كو ديكه كا-عنوان باب كاجوار دوترجمد نهيس لكما كيااس كى دجه محى يى معلوم ہوتی ہے کہ بیچارے اردو خوال شیعی امحاب کہ جن کو نصیحت کے لباس میں دھوکا دینا مقصود ہے کہ مخوان باب کو نه سمجھیں ورنہ وہ ان الفاظ کا بیہ مطلب نه لکھتا جائے غور ہے کہ عنوان باب ہو اس امر کا اً مود الى عورت كو طلاق اس كے سامنے دے اور اس كے تحت ميں جو حديث ہو اس ميں فقط كى اجنی حورت کے ساتھ خلوت کا ذکر ہو حیف ہے الی سمجھ پر من چہ سے سرایم و ملبنورہ من چہ سے سمرایر



اور سنے کہ مصنف ہندی نے اس حدیث میں لفظ سوقہ کا ترجمہ ایک بازاری مخص کیا ہے حالا نکہ سوقہ کے معنی رعیت کے ہیں۔ چنانچہ علامہ فیوی مصباح منیر مطبوعہ مصر جز اول ۱۳۵) میں بول تحریر فرماتے ہیں۔ وقال ابو اسحق السوق التي يباغ فيها عولثة وهي افصح واصح وتصغيرها سويقة والتذكير خطا لانه قيل سوق نافقة ولم يسمع نافق بغير هاء والنسبة اليها سوتي على لفظها وقولهم رجل سوقة ليس المرادانه من اهل السواق كما تظنه العامة بإ السوقة عندالعرب خلاف الملك قال الشاعر

> فبينا نسوس الناس والأمر امرنا اذا نحن فيهم سوقة نتنصف

وتطلق السوقة على الواحد والمثن والمحجوع ترجمه: اور ابو اسحاق كاقول بكره سوق (بازار) جس میں خریدو فروخت ہوتی ہے مونث ہے اور میں زیادہ نصیح اور زیادہ صحیح ہے۔ اور سوق کو تفنی سويقه ہے اور سوق كى فدكر كمنا خطا ہے كيونكه عربي ميں سوق نافقه بارونق بازار) كيتے ہيں- سوق نافق بغير ہاء ك سنے میں نہیں آیا اور سوق سے اسم نبت سوقی آتا ہے جب رجل سوقة كما جائے تواس سے يہ مرادنيں ہوتی کہ وہ محض بازاری لوگوں میں ہے ہے جیسا کہ عوام الناس سمجھ بیٹھے ہیں بلکہ عرب کے نزدیک ال کے معنی ہیں وہ جو بادشاہ نہ ہو- چنانچہ ایک شاعر کہتا ہے۔

والأمر امرنا فبينا تسوس الناس نحن فيهم سوقة

ہم لوگوں کے بادشاہ تھے اور ہمارا ہی تھم چل رہا تھا۔ کہ ناگاہ ہم ان میں رعیت ہیں اور انساف طلب کرتے ہیں۔

اورسوقہ کا طلاق واحد تنشنیہ اور جمع پر ہوتا ہے۔ انتھی جومیہ جس کا نام امیمہ تھا چونکہ خاعمان كنده ين سے تقى جو عرب كا ايك حكران خاندان تھا اس ليے اس نے اپنے آپ كو ملك كما مر صفود اقدس ملی او جو اس نے رعیت کا ایک شخص سمجھا۔ اس سوء ادب کی وجہ یہ معلوم ہوتی ہے کہ کندہ بخ نے مسلمان موئے تھے کیونکہ ان کا وفد اوھ میں حضور کی خدمت اقدس میں حاضر ہوا تھا دیکھوسرت ابن ہشام اور رہے الاول او بی میں حضور لے جونیہ سے نکاح کیاتھا چونکہ جونیہ سے جالمیت کا اثر اہمی بالکل ذاكل نه موا تفا اس كے منہ سے حضور مل الكام كى نسبت به لفظ نكل كيا اور اى واسطے اس رحت العالمين نے اس پر پچھ مواخذہ نہ فرمایا آخر کا جب اس نے نعوذ باللہ منک کما تو آپ نے اے طلاق دے کران کے گھر پنچادیا- صدیث زیر بحث کے بعد امام بخاری نے قصہ جونب کو تعلیقاً روایت کیا ہے-اس تعلق کے

تراس بات كا ايسا فيصله كرويا ہے كه اب اس ميں كى چون وچراكى ذرا بھى تمنجائش نہيں رہى- كيونكه اس یں صاف لفظ تزوج موجود ہے اور طرف یہ کہ جونیے کندیہ کا نکاح خود شیعہ کی بڑی معتر کماب سے ابت ہے چنانچہ فروغ کافی مطبوعہ نول کشور جلد دوم ۱۷۱-۱۷۱ میں ہے۔

على بن ابراهيم عن ابيه عن ابن ابي عمير عن عمر بن اذينة قال حدثني سعيد بن ابي عروة عن قتادة عن الحسن البصري ان رسول الله صلى الله واله وسلم تزوج امرأة وهي من بني عامر بن صعصعة يقال لهاسناة وكانت من اجمل اهل زمانها فلما نظرت اليها عائبشة وحفصة قالتا لتغلبنا هذه على رسول الله صلى الله عليه واله وسلم بجمالها فقالتا لها لا يرى منك رسول الله صلى الله عليه واله فلما دخلت على رسول الله صلى الله عليه واله وسلم تناو لها بيده فقالت اعوذ بالله فانقبضت يدرسول الله صلى الله عليه واله عنها فطلقها والحقها باهلها وتزوجا رسول الله صلى الله عليه واله وسلم امراة من كندة بنت ابي الجون قلما مات ابراهيم بن رسول الله ابن مارية القبطية قالت لوكان نبيا مامات ابنه فالحقها رسول الله با هلها قبل ان يد خل بها فلما قبض رسول الله صلى الله عليه واله وسلم وولى الناس ابوبكر اتته العامرية والكندية وقد خطبتا فاجتمع ابوبكر وعمو فقالا لهما اختارا ان شئتما الحجاب وان شئتما الباه فاختا رتاالباه فتزوجتا فجذم احد الزوجين وجن الاخرقال عمربن اذينة فحدثت بهذاالحديث زرارة والفضيل فروياعن ابى جعفر عليه السلام انه قال مانسي الله عزوجل عن شئى الاوقد عصى فيه حتى لقد نكحوا ازواج رسول الله صلى الله عليه واله وسلم من بعدوذكرها لين العامرية والكندية ثم قال ابوجعفر عليه السلام لوسالتم عن رجل تزوج امراة فطلقها قيل ان يد خل بها اتحل لابنه لقالوا لا فرسول الله صلى الله عليه واله وسلم اعظم حومة من ابائهم-

ترجمہ: علی بن ابرائیم نے اپنے ماپ سے اس نے ابن ابی عمیرے اس نے عمر بن اذبینہ سے روایت کی کما عمر بن اذیبہ نے کہ حدیث کی مجھ کو سعید ابن ابی عروہ نے قادہ سے اور قادہ نے حسن بھری سے کہ رسول نے قبیلہ بی عامر بن صعصعہ کی ایک عورت سے نکاح کیا جے سنات کہتے تھے اور وہ زیبا ری الل زمان خور میں سے تھی۔ جب عائشہ و حفصہ کی نظراس پر پڑی تو وہ کہنے لگیں۔ کہ میہ اپنے حسن والمال ك سبب سے جم ير عالب آئے كى اور رسول كو جارے باتھ سے لے لے كى- يس دونور

ے کما کہ چاہیے کہ رسول تیری طرف سے اپنی محبت کا اشتیاق نہ پائیں ہی جب وہ رسول کے زریک ریں گئی تو آپ نے اپنے ہاتھ سے اسے پکڑ لیا۔ پس اسنے کما کہ میں خدا کی پناہ مانگتی ہوں پس رسول کا ہر الله الله الله المحارث وخر الى الجون سے ثكاح كيا جب رسول الله الله الله الله عورت وخر الى الجون سے فكاح كيا جب قبطیہ کے شکم مبارک سے تھے وفات پائی۔ تو اس کندیہ جو شیہ نے کما اگر وہ پینمبر ہوتے تو ان کا بیٹانہ مرا پس رسول الله نے وخول سے قبل اے اس کے اہل میں پہنچا دیا جب رسول اللہ نے وقات پائی اور ابوبر لوگوں کے خلیفہ ہوئے۔ تو عامریہ اور کندیہ ان کے پاس آئیں اور لوگ ان کی خواستگاری کرتے تھے۔ ہی ابو بكرو عمر جمع ہوئے اور ان دونول سے كماك أكرتم جابو تو يرده تشين بو جاؤ- اور اگر جابو تو لذت جماع كو اختیار کرو۔ پس ان دونوں نے لذت جماع کو اختیار کیا اور نکاح کر لیا۔ پس دونوں شوہروں میں سے ایک کو جذام اور دو سرے کو جنون ہو گیا۔ عمر بن اذبینہ کا بیان ہے کہ میں نے زرارہ اور فغیل سے اس مدیث کا ذكر كيا- انهوں نے روايت كى كم امام محد باقر عليه السلام نے فرمايا كم الله عزوجل نے كى شے سے مع سیس کیا۔ گریہ کہ اس میں نافرمانی کی گئی۔ یمال تک کہ لوگول نے رسول اللہ کے بعد آپ کی ازواج سے نكاح كيا اور امام موصوف نے ہروہ عامريد كنديد كا ذكر كيا۔ پھرامام محد باقرعليد السلام نے قرمايا كه أكرتم بم ے بوچھو کہ ایک مخص نے ایک عورت سے نکاح کیا اور تمبل از دخول اسے طلاق دے دی کیا وہ عورت اس کے بیٹے کے لیے حلال ہے۔ تو وہ جواب دیں سے کہ حلال نہیں پس رسول الله کی حرمت تو ان کے بابوں سے زیادہ ہے۔ انتھی۔ اس صدیث میں بھراحت تمام ذکور ہے کہ آنخضرت کے جونیہ کدیہ ع نکاح کیا تھا۔ اور اس مقام پر میں ہمارا مقصود ہے دیگر تقاصیل سے جو اس حدیث میں فرکور ہیں۔ بحث نہیں ميرزا صاحب ذرا موش ميں آؤ- كيا اى بل بوتے ير آپ شيعه كو تفيحت كر رہے ہيں- وہ بيازے ق ما شات میں ذکیل ہو رہے ہیں۔ کیا آپ جائے ہیں۔ کہ آپ کی تعیمت ر عمل کر کے اور ذلیل ہوں۔ قال الميرزا اكثرابل سنت و جماعت پغيرول كے آباؤ اجداد كے كفركے علاوہ پغيرول كے كفركے بعل قَائلَ بين- چنانچه تغيير كبير جلد بشتم صفحه ١٠٢ مين ہے:

اعلم أن بعض الناس ذهب الى انه كان كافر افي اول الامرثم هداه الله وجعله نبيا قال الكلبي وجدك ضا لا يعني كافرا في قوم ضلال فهداك للتو حيد وَقَال السدي كان على دين قومه اربعين سنة

بعض لوگ اس طرف مے ہیں کہ آنخضرت عبل بعثت کافر تھے۔ پھر اللہ نے ہدایت کی اور کی بنایا۔ کلبی نے کہا و جدک ضالا سے مراد خدایہ ہے کہ آنخضرت قوم ممراہ میں کافر ننے مجرخدا تعالی ک وحدی طرف ہدایت کی اور امام سدی نے کہا کہ آنخضرت عالیس سال تک اپی قوم یعنی واق کے وین برخے۔ انتھی محصلا۔

بينها مي عقيده شرح مواقف مطبوعه لو كشور كے صفحه ١٩٢ ش ب ووجدك صالا فهدى ولاشك ان الضال عاص المجواب انه قبل النبوة انتى هيف الاتين-س٢٩

اقول اہل سنت وجماعت کے نزدیک حضور اقدی کے آباذ اجداد بلکہ آمام انبیائے کام علیم العلواة اللام کے آباذ اجداد مومن اور کفرو شرک کی نجاست سے پاک تھے۔ ہی صبح ہے جیسا کہ ہم نے مولود به نظیر کے حاشیہ میں بحوالہ قرآن حدیث ثابت کیا ہے۔ مولانا شیخ عبدالحق محدث وہلوی اشحہ اللمعات میں لکھتے ہیں ابائے کرام آنخضرت پس ہمہ ایشال از آدم تا عبداللہ طاہر و مطمرا نداز دنس کفرو رجس شرک چنا نکہ فرمودہ آمدہ ام ازاصلاب طاہرہ وارحام طیبہ دلائل ذیگر کہ متا نزین علائے کے حدیث آزہ تحریر و تقریر نمودہ آمدہ ام ازاصلاب طاہرہ وارحام طیبہ دلائل ذیگر کہ متا نزین علائے کے حدیث آزہ تحریر و تقریر نمودہ اندا استھی علامہ سخادی نے جناب رسالتماب علیہ الوف افتیحہ والعلوۃ والدین کا اسلام ثابت کرنے کے لیے تعن رسالے لکھے ہیں جیسا کہ علامہ سندی نے طوائح الا نوار حاشیہ در مخارش انداز المعارف ان طرح علامہ جلال الدین سیوطی نے اس مقصد کے لیے متعدد رسائل متا نزالز کر ہیں سے اس وقت ایک رسالہ انظامیہ حدید آباد و کن میں چھپ کرشائع ہو چکے ہیں رسائل متا نزالز کر ہیں سے اس وقت ایک رسالہ انظامیہ حدید آباد و کن میں چھپ کرشائع ہو چکے ہیں رسائل متا نزالز کر ہیں سے اس وقت ایک رسالہ کی اخبر فصل انشانی الجدی سوطی نے یوں لکھا ہے۔

ثم رايت الامام فخر الدين الرازى احتج بما احتجت من ان اباء النبى صلى الله عليه واله وسلم كلهم كانوا على التوحيد فقال في كتابه اسرارا لتنزيل مانصه قيل ان از رلم يكن والد ابرهيم بل كان عمه واحتجوا عليه بوجوه منها ان آباء الا نبياء ماكانو كفارا- (الخ)

ترجمہ: پھریں نے امام فخرالدین رازی کودیکھا کہ اس امرکو ابت کرنے کے لیے کہ پغیرفدا کے آبائے کرام سب توحید پر سے استدلال کیا ہے کہ جس ہے بستدلال کیا ہے چانچہ الم موموف نے اپنی کتاب اسرار التربل میں بدیں الفاظ لکھا ہے کہ آزر ابراہیم کا باب نہ تھا بلکہ آپ کا بی کتاب اسرار التربل میں بدیں الفاظ لکھا ہے کہ آزر ابراہیم کا باب نہ تھا بلکہ آپ کا بی تھا۔ اور علائے نے اس پر کئی وجہ سے استدلال کیا ہے منجملہ ان کے ایک وجہ یہ کہ پنجمبروں کے آباؤ اجداو کافر نہ ہتے الح اس رسالہ میں دو سری جگہ ص ۲۱ پر یوں ہے۔ گفت الح اس ستقراء فو جدت جمیع امهات الانبیاء علیہ الصلوة والسلام مومنات فلا بلدان تکون ام النبی صلی الله علیه واله وسلم کذلک و بیان ذلک

يكون بالتفصيل والاجمال الخ

ترجمہ: تنتیج افراد سے میں نے غور کیا ہی میں نے انبیاء علیم العلوة والسلام کی تمام ماؤں ک ایمان والی پایا۔ پس ضرور ہے کہ پینمبرخدا کی والدہ مجمی مومنہ ہوں۔ اور اس کا بیان تغمیل و اجمال ہر رو طرح ہے ہے انتھی۔ جس مخص کو دلائل دیکھنے کا شوق ہو وہ رسائل ندکورہ بالا کا مطالعہ کرے۔ مصنف بندی نے جو تغیر کبیر کا حوالہ نقل کیا ہے وہ بورا نہیں لندا ہم یمال اے بورا نقل کرے وکھاتے ہیں کہ شیعہ کس طرح خلق خدا کو گمراہ کر رہے ہیں۔ وہ پورا حوالہ یہ ہے۔ (ووجدگ ضالا فهدى) فاعلم ان بعض الناس ذهب الى انه كان كافرا في اول الامرثم ثمه هداه الله وجعله نبيا قال الكلي وجدك ضالا يعنى كافرافي قوم ضلال فهداك للتوحيد وقال السدي كان على دين قومه اربعين سنة وقال مجاهد وجدك ضالا عن الهدي فهداك لدينه و احتجو على ذلك بايات اخرمنها قوله ماكنت تدري ماالكتاب ولا الايمان وقوله وان كنت لمن الغافلين وقوله لئن اشركت ليحبطن عملك فهذا يقتض صحة ذلك منه واذا دلت هذه الاية على الصحة وجب حمل قوله ووجدك ضالا عليه واما الجمهور من العلماء فقد اتفقوا على ان رسول الله عليه السلام ماكفر بالله لحظة واحدة ثم قالت المعتزلة هذا اغير جائز عقلالما فيه من التنفير و عند اصحابنا هذا غيره ممتنع عقلا لانه جائز في العقول ان يكون الشخص كافرا فيرزقه الله الايمان ويكرمه بالنبوة الاان الدليل السمعي قام على ان هذا الجائزلم يقع وهو قوله تعالى ماضل صاحبكم وماغوى-

رجمہ: پس جان کے کہ بعض لوگ اس طرف کے ہیں۔ کہ آنخضرت بعثت سے پہلے کافر تے پھر اللہ نے آپ کی ہدایت کی اور نبی بنایا۔ کلبی نے کہا کہ و جدک صالا کے معنی یہ ہیں کہ اللہ نے تجے گراہ قوم میں کافر پایا۔ پس تجھے قودید کی ہدایت کی اور سدی نے کہا کہ حضرت چالیس سال سک اپی قوا کے دین پر شھے۔ اور مجاہد نے کہا کہ و جدک صالا کے معنی یہ ہیں۔ کہ خدا نے تجھے ہدایت سے گراہ پایا۔۔۔۔۔ پس تجھے اپ دین کی ہدایت کی اور اس معا پر وہ دو سری آیتوں سے استدلال کرتے ہیں منجلہ پایا۔۔۔۔ پس تجھے اپ دین کی ہدایت کی اور اس معا پر وہ دو سری آیتوں سے استدلال کرتے ہیں منجلہ ان کے یہ قول خدا ہے۔ ماکنت تدری ماالکتاب و لا الایمان تو نہ جانا تھا کہ کیا ہے کاب اور سی ایکان اور یہ قول خدا ہے۔ وان کنت من قبلہ لمن الغافلین اور تو تھا اس سے پہلے البتہ بے فہوں سے اور یہ قول خدا ہے۔ لئن اشو کت لیحبطن عملک اگر تو نے شرک کیا تو تیرا عمل ضرور مث جا ور یہ قول مقنی ہے کہ شرک آخضرت سے جابت ہو۔ جب اس آیت نے شرک کے شوت کی جوت کی جوت کی جات کی دین کے شوت کی حاب اس آیت نے شرک کے شوت کی جات کا جات کی کہ شرک آخضرت سے جاب اس آیت نے شرک کے شوت کی جات کی جات کی جات کی جات کی جات کی جات کیا ہو تی کے شرک کے شوت کی جات کی جات کی گرک کے شوت کی جات کی گرت کو جب اس آیت نے شرک کے شوت کی جات کی جات کی جات کی جوت کی جات کی گرت کی خوت کی جات کی گرت کے شوت کی جات کی جات کی گرک کے شوت کی جات کی گرت کی جات کی گرت کی خوت کی جات کی گرت کی جوت کی جات کی گرت کی گرت کی گرت کی جات کی گرت کی جوت کی جات کی گرت کی گرت کی خوت کی گرت کر گرت کی گرت کی گرت کی گرت کی گرت کر گرت کر گرت کی گرت کی گرت کر گرت کی گرت کر گرت کر گرت کر گرت کی گرت کر گرت کر گرت کی گرت کر گر

والت کی تو وہ و جدک ضالا کو اس پر محمول کرتا واجب ہوا لیکن جمہور ملاء کا اس بات پر اتفاق ہے۔ کہ بخبر علیہ السلام نے ایک لحظ بھی خدا کا انکار نہیں کیا۔ پھر معزلہ کتے ہیں۔ کہ ازروئے عقل یہ جائز نہیں کیا۔ پھر معزلہ کتے ہیں۔ کہ ازروئے عقل یہ ممتنع نہیں کیا تکہ اس میں نفرت ولانا ہے۔ اور ہمارے اصحاب شافعیہ کے زددیک ازروئے عقل یہ ممتنع نہیں کیا تکہ عقل کی رو سے یہ جائز ہے کہ ایک محفی کافر ہو پھر اللہ اس ایمان وے اور نبوت کے ساتھ اس کے عقل کی رو سے یہ جائز ہم وجود ہے کہ یہ جائز امروقوع میں نہیں آیا اور وہ دلیل نقلی یہ ہے کہ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ ماضل صاحب کم و هاغوی (تممارا رفق نہ بھٹک گیا ہے اور نہ بمکا۔ زبر شید۔ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ ماضل صاحب کم و هاغوی (تممارا رفق نہ بھٹک گیا ہے اور نہ بمکا۔ زبر شید۔ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ ماضل صاحب کم و هاغوی (تممارا رفق نہ بھٹک گیا ہے اور نہ بمکا۔ زبر شید۔

عبارت بالا میں اس امرکی صراحت ہے کہ جمہور علماء کا اتفاق ہے کہ آنخضرت اللہ جا ہیں بعثت ہیں معصوم سے اور ولیل نقلی بھی اسی کی متقنی ہے گراس عبارت میں مزید غور سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ حقیقت میں تمام اہل سنت و جماعت کا میں عقیدہ ہے کیونکہ سدی اور کلبی جو ناصح شیعی کے نزویک اکثر المنت و جماعت ہیں وہ ساقط عن الاعتبار ہیں بلکہ انہیں اہل سنت میں شار کرنا ہی ورست نہیں کیونکہ یہ روٹوں رافسنی ہیں۔ چنانچہ تہذیب التہذیب (مطبوعہ مطبع وائرة المعارف انتظامیہ حیدر آباد جلد ۹ ص ۱۷۸) میں جرین مائب کلبی کی نسبت یوں لکھا ہے

قال معتمر بن سليمان عن ابيه كان بالكوفة كذابان احدهما الكلبى وعنه قال ليث بن ابى سليم كان بالكوفة كذابان احدهما الكلبى والاخر السدى قال الدورى عن يحيى بن معين ليس بشئى وقال البخارى تركه يحيى وابن مهدى قال الاصمعى عن ابى عوانه سمعت الكلبى يتكلم بشئى من تكلم به كفر فسالته عنه الاصمعى عن ابى عوانه سمعت الكلبى يتكلم بشئى من تكلم به كفر فسالته عنه فحجده وقال عبدالواحد بن غياث عن ابن مهدى جلس الينا ابو جزء على باب ابى عمرو بن العلاء فقال اشهدانه كافرا قال فماذ ازعم قال سمعته يقول كان جبريل يوحى النبى صلى الله عليه واله وسلم فقام النبى لحاجته وجلس على فاوحى الى على فقال يزيد انالم اسمعه يقول هذا اولكنى رايته يضرب صدره ويقول انا سبائى انا سبائى قال العقيلى هم صنفى من الرافضة اصحاب عبدالله بن ويقول انا سبائى انا سبائى قال العقيلى هم صنفى من الرافضة اصحاب عبدالله بن الجنيد والحاكم سبا وقال النسائى ليس بثقة ولا يكتب حديثه وقال على بن الجنيد والحاكم ابواحمد والدار قطنى متروك وقال الجور جانى كذاب ساقط وقال ابن حبان الوضوح الكذب فيه اظهر من ان يحتاج الى الاغراق فى وصفه روى عن ابى صالح وضوح الكذب فيه اظهر من ان يحتاج الى الاغراق فى وصفه روى عن ابى صالح التفسير وابو صنالح الم يسمع من ابن عباس لا يحل الاحتجاج به وقال الساجى

متروک الحدیث و کان ضعفیا جد الفرطه فی التشیع وقد اتفق ثقات اهل النقل علی ذمه و ترک الروایة عنه فے الاحکام والفروع قال الحاکم ابو عبدالله روی عن ابی صالح احادیث موضوعة انتهی مختصراً

ترجمہ: معتمر بن سلیمان اپنے باب سے روایت کرتے ہیں۔ کہ کوفہ میں دو گذاب تے جن می ے ایک کلبی تھا۔ اور ای سے روایت ہے کما کہ لیث بن انی سلیم نے کما کہ کوف میں رو گذاب تے ایک کلبی اور دو مرا اسدی دوری نے بروایت میلی بن معین بیان کیا ہے۔ کہ کلبی کھ نہیں امام بخاری کا قول ہے کہ سمی اور ابن مهدی نے ترک کردیا تھا۔ اسمعی نے بروایت ابو عوانہ ذکر کیا ہے کہ میں لے سا کہ کلی الی بات کتا تھا۔ کہ جس کا قائل کافر ہو جاتا ہے اس میں نے کلی سے اس کی بابت بوجما کر اس نے اس بات سے الکار کر دیا عبدالواحد بن غیاث نے ابن ممدی سے روایت کی کہ ابو جزء ہارے پاس ابو عمرو بن علاء کے دروازے پر جیٹھا تھا تو اس نے کما کہ بیں گواہی دیتا ہوں۔ کہ تعلمی کافرے کما کہ کلبی نے کیا کہ جوابریا کہ میں نے اسے یہ کتے ساکہ جرائیل آنخضرت کی طرف وحی کررہے تھے۔ پس حضرت كى حاجت كے ليے المح اور حضرت على بيٹھ محكے بس حضرت جبراكل نے على كى طرف وي ك یزید نے کماکہ میں میں نے کلبی کو یہ کہتے نہیں سنالیکن میں نے اسے دیکھا کہ ایناسینہ ٹھونک کر کمتا تھا۔ میں سائی ہوں۔ میں سبائی ہوں۔ عقیلی نے کہا کہ سبائی رافعنیوں کے ایک فتم ہیں۔ جو عبداللہ بن سباکے چیلے ہیں۔ اور نسائی نے کما کہ کلبی تقد نہیں اور نہ اس کی صدیث لکھی جاتی ہے اور علی بن جدید اور ابو احمد حاكم اور وار قطني نے كماكه وہ متروك ب اور جوز جانى نے كما-كه وہ كذاب ساقط عن الاعتبار ب اور ابن حبان نے کما کہ اس میں گذب ای وضاحت سے ظاہر ہے کہ اس کے وصف میں مبالفہ کا ضرورت شیں- اس نے ابوصالح سے تفیر روایت کی ہے حالا نکہ ابو صالح نے حضرت ابن عباس سے نمیں سنا۔ اس سے احتجاج جائز نہیں اور ساتی نے کہا۔ کہ وہ متروک الحدیث ہے۔ اور شیعہ بن میں زیادتی كے سبب وہ نمايت ضعيف ہے اور اہل نقل نقات اس كى ندمت اور احكام و قروغ ميں اس سے روايت ك ترك ير منفق بي- ابو عيدالله حاكم في كماكه اس في ابو صالح سے موضوع عديثين روايت كى بي-

سدی صغیر یعنی محمد بن مردان بن عبدالله بن اساعیل بن عبدالر ممن کوفی جے صاحب تحفد انگا عشریہ نے رافضی عالی لکھا ہے۔ اس کا مزید حال ہد ہے۔

قال عبد السلام بن حازم عن جريربن عبد الحميد كذاب و قال الدورى عن ابن معين ليس بثقة وقال ابن نمير ليس بشئى وقال يعقوب بن سفيان ضعيف غير ثقة

وقال صالح بن محمد كان صعيفًا وكان يضع وقال ابو حاتم متروك الحديث لا يكتب حديثه البتة وقال ابن عدى الضعف على رواياته بين وقال ابن حبان لا يحل كتب حديثه الا اعتبارا ولا يحتج به بحال وقال ابو جعفر الطبرى لا يحتج بحديثه وقال الماجى لا يكتب حديثه انتهى مختصرا - (تذيب التذيب جلدنمبر ٥ ص ٢٣٦)

ترجمہ: عبدالسلام بن جازم نے بروایت جریر بن عبدالحمید بیان کیا کہ سدی کذاب ہے اور روری نے بروایت این معین کما کہ وہ تھے نہیں اور این نمیر نے کما کہ وہ تجھ نہیں اور این سفیان نے کما کہ وہ غیر تھے ہے اور صالح بن محمد نے کما کہ وہ ضعیف تھا اور حدیثیں وضع کرتا تھا۔ ابو حاتم نے کما کہ وہ متروک الحدیث ہے۔ اس کی حدیث ہرگز نہیں لکھی جاتی۔ اور ابن عدی نے کما کہ اس کی روانخوں پر ضعف ظاہر ہے اور ابن حبان نے کما کہ اس کی حدیث صرف بغرض اعتبار کھنی جائز ہے مگر اس سے کی حالت میں احتجاج نہیں کیا حدیث ہے۔ اور ابو جعفر طبری نے کما۔ کہ اس کی حدیث سے احتجاج نہیں کیا حدیث میں احتجاج نہیں کی حدیث بیں کہ جاتم ہوں ان کی حدیث بیں کھی جاتی انتھی۔ اگر تفیر بیر کی عبارت بالا میں سدی سے مراد سدی بیرہ لیعنی اس کی حدیث بین ابی کریمہ بھی فرض کیا جائے۔ تب بھی مخالف کو مفید نہیں۔ کو نکہ سدی بیرہ لیعنی اس کے برعکس کتے ہیں۔ کونکہ سدی بیرہ کا حال مختلف نیہ ہے۔ بعض اسے تھنہ بھتے ہیں اور بعض اس کے برعکس کتے ہیں۔ پانچہ تمذیب التہذیب جلد اول ۱۳۱۳ میں ہے۔

قال عبدالله بن حبيب بن ابى ثابت سمعت الشعبى وقيل له ان السدى قد اعطى خطا من علم القرآن فقال قد اعطى خطا من جهل بالقران وقال ابو طالب عن احمد ثقة وقال الدورى عن يحيى فى حديثه ضعف وقال الجوز جانى هو كذاب شتام قال حسين بن واقد سمعت من السدى فاقمت حتى سمعته يتناول ابابكر وعمر فلم أعداليه انتهى مختصراً

ترجمہ: عبداللہ بن حبیب بن ابی طابت کا بیان ہے کہ امام شعبی سے کما گیا۔ کہ سدی علم قرآن سے بمرہ ور ہے اور ابو سے بمرہ ور ہے۔ اس پر میں نے امام شعبی کو یہ کہتے سا کہ سدی جمالت بالقرآن سے بمرہ ور ہے اور ابو طالب نے بروایت اجمد کما کہ وہ ثقہ ہے۔ اور دوری نے بروایت یعجی کما کہ اس کی صدیث میں ضعف ہے اور جوز جانی نے کما کہ وہ گذاب گالیاں ویے والا ہے حبین بن واقدی کا بیان ہے کہ میں نے سدی سے اور جوز جانی نے کما کہ وہ گذاب گالیاں ویے والا ہے حبین نن واقدی کا بیان ہے کہ میں نے سدی سے مار صدت کیا ہی میں اس کے پاس ٹھرا رہا بمال تک کہ میں نے اسے حضرت ابو بکرو عمر رضی اللہ تعالی مناکو برا کمتے سا۔ اس لیے پھر میں اس کے پاس نہ آیا۔ انتھی رہا مجابد کا قول جو ثقہ ہے کہ گومد اس سے مراو شریعت ہو۔ عبارت ذیر بحث میں جن آیات سے مراو شریعت ہو۔ عبارت ذیر بحث میں جن آیات سے مراو شریعت ہو۔ عبارت ذیر بحث میں جن آیات سے مراو شریعت ہو۔ عبارت ذیر بحث میں جن آیات سے

استدلال کیا گیا ہے وہ استدلال ورست نہیں کیونکہ ماکنت تدری ماالکتاب ولا الایمان میں جب استفهاميه لاياكيا ہے- تو معنى بيہ ہوئے كه حضرت نه كتاب كا حال جائے تھے- نه ايمان كاكتاب كا عال اس کی قرات و تلاوت ہے اور ایمان سے مراد آنخضرت کا ایمان نہیں کیونکہ آپ تو ابتدائی سے ایمان بریدا ہوئے تھے۔ بلکہ اس سے مراد آپ کی امت کے لوگوں کا ایمان ہے ہی مطلب یہ ہوا کہ آمخضرت وجی ے پیشتر قرآن پڑھنانہ جانتے تھے۔ اور نہ میہ جانتے تھے کہ لوگ کیو تکرامیان لائمیں۔ کے جب وی آئی تر آب کو قرات قرآن کا علم ہوگیا۔ اور جب آپ نے وعوت شروع کی اور لوگ ایمان لائے تو آب کوان کے ایمان کا حال معلوم ہوگیا۔ بعض کہتے ہیں کہ اس آیت کے بید معنی ہیں کہ نزول قرآن سے بہٹر آپ قرآن نه جانتے تھے۔ اور نه كماب الله سے پیشرايمان بالفرائض اور اعمال تفعيد سے واقف تھے دومري آیت این وان کنت من قبله لمن الغافلین سے مرادیہ ہے کہ آپ وی سے پہلے تصر اوس سے بے جبرتھے۔ اور تیسری آیت لین لئن انشو کت تفیہ شرطیہ ہے۔ اور تفیہ شرطیہ جس میں ترف شرط ان ہو- ان کے طرفین لین مقدم و تالی کا صدق لازم نہیں تفصیل کے لیے تقاسیر ملاحظہ ہوں- ظامر ب کہ ناصح شیعی کا ایک وو کو اکثر اہل سنت سے تعبیر کرنا محض وصوکا ہے اور جرح وقدح سے قطع نظران ا یک یا دو مخصول کی روایت بھی شاذ و خلاف اجماع السنت ہے چنانچہ قاصی عیاض رحمہ اللہ تعالی مونی (٥٣٣) شفا شريف ش قرات بي- ولا اعلم احدا من المفسوين قال فيها ضالا عن الايمان لين میں مفسرین میں سے کسی کو نہیں جانیا جس نے اس آیت کے معنی ایمان سے گمراہ بتائے ہوں انتھی اس عبارت میں شفاکی شرح میں علامہ شماب الدین خفاجی یوں تحریر فرماتے ہیں۔

(ولا اعلم احداهن المفسرين قال فيها) اى فى تفسير اية ووجدك ضالا فهد الانبياء معناها (رضالا عن لايمان) الا نه صلى الله تعالى عليه وسلم وسائر الانبياء معصومون قبل النبوة وبعد هاعن الكفرو كل مانيفرعنه القلوب وفى الكشاف من قال انه صلى الله تعالى عليه وسلم كان على امر قومه اربعنين سنة ان اراد خلوه عن الا مور السمعية فنعم وان اراد انه على كفر هم ودينم فمعإذ الله فانه صلى الله تعالى عيه وسلم وسائر الا نبياء معصومون قبل النبوة وبعد هاعن الكبائر والصغائر الشائنة فما بالك بالكفر و الجهل بالصانع ماكان لنا ان نشرك بالله من شئى وكفى نقيصة عند الكفار ان يسبق منه كفر انتهى وما نقل عن الكلبي والسدى من ان الاية عل ظاهر ها ومعناها وجدك كافرافى قوم كفار مخالفالاجماع وبعيد عن لا دراك ان ينسب صلى الله عليه واله وسلم الى

اشراک ولهذه الرواية الشاذة بل الفاسدة رده زمخشرى فيماقاله- (نسيم الرياض مطبوعه استنبول جلد رابع ص ۵۳)

اور بیں مغربین بیل کسی کو نہیں جاتا کہ جس نے کہا ہو اس بیل یعنی آیت و جدی ضالا فہدی کی تغییر بیل کہ اس کے معنی ہیں۔ ایمان سے گراہ۔ کیونکہ آخضرت اور باقی تمام پنجبر نبوت سے پہلے اور اس کے بعد معصوم ہیں کفرے اور ہرائی شئے سے جس سے دل نفرت کرتے ہیں۔ اور تغییر کشاف میں ہے کہ جو محض یہ کتا ہے کہ آخضرت چالیس سال تک اپنی قوم کی حالت پر رہے اگر اس کی مراویہ ہے کہ امور محیہ سے خالی رہے تو ہم سلیم کرتے ہیں اور اگراس کی مراویہ ہے کہ اپنی قوم کے کفرو دین پر رہے۔ تو خدا کی پناہ کیونکہ آخضرت اور باقی تمام پنجبر نبوت سے پہلے اور اس کے بعد دحب لگانے والے گناہان کیرہ و صغیرہ سے معصوم سے پس خدا سے انکار وجالت کا تو کیا ذکر ہے۔ ہمیں یہ شایال نمیں کہ کسی کو اللہ کا شریک خصرا کی اور کفار کے نزدیک یہ عیب کافی ہے کہ آخضرت پہلے کفار شے۔ نشس کہ کسی کو اللہ کا شریک خصرا کی اور کفار کے نزدیک یہ عیب کافی ہے کہ آخضرت کی ہیں ہورائی اور کا سے بعید ہے کہ انتھی۔ اس اور یہ اور اس کے متن یہ ہیں۔ کہ خدات تعالی نے کہ قوم کفار میں کافرپایا۔ مویہ اجماع کے خلاف ہے اور اس کے متن یہ ہیں۔ کہ خدات تعالی نے کہتے قوم کفار میں کافرپایا۔ مویہ اجماع کے خلاف ہے اور یہ اور اس کے متن یہ ہیں۔ کہ خدات تعالی نے کہتے قوم کفار میں کافرپایا۔ مویہ اجماع کے خلاف ہے اور یہ اور اس کے متن یہ ہیں۔ کہ خدات تعالی نے کہتے قوم کفار میں کافرپایا۔ مویہ ایس کا خوشری نے این واسطے زمیشری نے اپنی اس کی تردید کردی ہے۔ اس واسطے زمیشری نے اپنی اس کی تردید کردی ہے۔ استھی۔

بیر سابی من میں ملیوں میں ہوری عبارت نقل نہیں کی- اور جو نقل کی ہے اس کال مطلب ناصح شیعی نے شرح مواقف کی بوری عبارت نقل نہیں سمجھا بوری عبارت میہ ہے-

ووجدك ضالا فهدى ولاشك ان الضال عاص الجواب اله قبل النبوة او اراد ضالا في امور الدنيا ويجب حمله على هذا لقوله تعالى ماضل صاحبكم وما غوى اذالمرادبة نفى الضلالة والغواية في امور الدين بلا شبهة فوجه التوفيق بينهما ماذكرنا.

(شرح مواقف مطبوعه مصرجزه ظامن ٢٤١)

ترجمہ: اور پایا تھے گمراہ ہیں ہدایت کی اور شک نہیں کہ مگراہ گنگار ہوتا ہے اس کا جواب یہ ہے کہ نبوت سے پہلے ایسا تھا یا مراہ ہے (مگراہ امور دنیا میں) اور اس آیت کے کہی معنی لینے واجب ہیں) کو نبوت سے پہلے ایسا تھا یا مراہ ہے (مگراہ امور دنیا میں) اور اس آیت کے کہی معنی لینے واجب ہیں) کیونکہ اس سے مراد بے شک امور کیونکہ اللہ تعالی فرماتا ہے۔ بہکا نہیں تہمارا رفتی اور بے راہ نہیں چلا) کیونکہ اس سے مراد بے شک امور دین میں مگرای اور بے راہی کی نفی ہے۔ بس ان دونوں آجول میں تطبیق کی وجہ وہی ہے جو ہم نے بیان کردی افتی ورب دائی کی شمل کی ہے اور دو مرکی کردی افتی عبارت بالا سے فاہر ہے تامیح تھیمی نے جواب کی صرف ایک ہی شق نقل کی ہے اور دو مرکی

شق کو جو راج و مخار ہے اس نے عدا پس انداز کر دیا ہے اور پہلی شق بھی جس مدعا کے لیے اس نے ال رود اس سے ماصل نہیں ہوتا کیونکہ اس میں عاصی کے معنی کافر کے نہیں جیسا کہ وہ سمجا ب ں میں ہے۔ اس کیے کہ نبوت سے قبل اور بعد انبیاء سے کفر کی تنی پر تمام اہل سنت وجماعت کا اتفاق ہے چانچہ ش مواقف) (جر عامن القعد الحامس في عصت الاعباء ١٢١٣)

رواما الكفر فاجمعت الامة على عصمتهم منه قبل النبوة و بعدها ولاخلاف لاحد منم في ذلك غيران الا زارقة من الخوارج جوزوا عليهم الذنب وكل ذنب عندهم كفر فلزم تجويز الكفربل يحكى عنمم انم قالوا بجوز بعثة نبي علم الله تعالٰي انه يكفر بعد نبوته وجوزوا الشيعة اظهاره) اي اظهاراالكفر تقية عند خوف الهلاك لان اظهارا لاسلام حينئذ القاء النفس في التهلكة (وذلك) باطل قطعا لانه يفضي الى اخفاء الدعوة) بالكلية وترك تبليغ الرسالة اذاولي الاوقات بالتقية وقت الدعوة للضعف) بسبب قلة الموافق اوعدمه وكثرة المخالفين

ترجمہ: (لیکن کفرسو امت نے انقاق کیا ہے کہ انبیاء اس سے معصوم ہیں۔ نبوت سے پہلے اور اس کے بعد اور امت میں سے کسی کو اس میں اختلاف نہیں (سوائے اس کے کہ خوارج میں سے (ازارقہ نے تغیروں پر گناہ کو جائز رکھا ہے۔ اور ان کے نزدیک ہر گناہ کفرہے) پس ان کو کفر کا جائز رکھنالازم آیا بلکہ ان کی نسبت بیان کیا جاتا ہے کہ وہ کتے ہیں کہ جائز ہے کہ اللہ تعالی ایسے کو پیٹیبر بنا کر بھینے کہ جس كے بارے ميں اسے علم ہے كه وہ نبوت كے بعد كافر جوجائے گا- (اور شيعه نے جائز ركھاہے) اس كافلام كرنا) يعنى كفركا ظاہر كرنا تقيه كے ليے بلاك كے خوف كے وقت كيونكه اس وقت اسلام كا ظاہر كرنا الن آپ کو ہلاک میں ڈالنا۔ اور وہ قطعی طور پر باطل ہے اس کیے کہ وہ وعوت کے پوشیدہ رکھنے کا موجب ہے) کلی طور پر اور موجب ہے تبلیغ رسالت کے ترک کیونکہ تقیہ کے لیے سب سے اچھاوت رعوت کا وقت ہے بوقت کمزوری کے اس لیے کہ اس وقت موافق کم ہوتے ہی یا ہوتے ہیں نہیں اور بوجہ ظالفین کی کثرت کے انتقی ندہب شیعہ میں تقیہ بھی ایک عجیب مسئلہ ہے جس کی بحث انشاء الله مناسب موقع يآئے گی۔

تفال الميرزا ان سب معايب سے قطع نظر جملہ اہل سنت اس كے بھى قائل و معقد ہيں كه رسول الله ملغ احكام خدا من محى خطاكرت بير- چنانچه شرح مسلم الثبوت اصل اول باب الشخ ١٩٥٩ يس الم ولا تصغ الى قول من يقول ان الانبياء كيف يخطئون في احكام الله تعالى فان هذا القول قدصدر من شياطين اهل البدعت كالر وافض وغيرهم الم تراهل الحق من

اهل السنة والجماعة القامعين للبدعة كثرهم الله تعالى يجوزون على الانبياء الخطاء كما ظهر في اسارى بدر من سيد العالم صلوات الله وسلامه عليه العيف المين ٢٠-٢٠)

ترجمہ: اس مخص کی بات ہرگزنہ سنو جو یہ کتا ہے کہ انبیاء تبلغ ادکام خدا بیل کو خطاکر سے بیں۔ پس بیہ قول شیاطین اہل بدعت سے صادر ہوا ہے جیے رافعی وغیرہ ادر اہل حق بین اہل سنت و ہماہ جو اکھیڑ دینے والے ہیں خدا ان گوزیادہ کرے اور انبیاء سے صدور خطاکو جائز جانے ہیں۔ بیسے آخضرت سے اسیران بدر کے باب میں خطا واقع ہوئی ان پر اللہ تعالیٰ کا دورہ اور اسلام ہو۔ انتھی۔ اقول ناصح محیدی شرح مسلم البوت کی عبارت کا مطلب نہیں سمجھا اور نہ اسے اس کا سیاق و سباق معلوم ہات ہوئی ان پر اللہ تعالیٰ کا دورہ اور اسلام ہو۔ انتھی۔ معلوم ہے بات میہ کہ صاحب مسلم البوت نے جواز شخ قبل المکن پر قبعہ حضرت ابراھیم علیہ السلام سے بھی استدلال کیا ہے بدیں طور پر حضرت ابراہیم علی نبینا و علیہ العلوة والسلام کو رؤیا میں اپنے بیٹے ک نین استدلال کیا ہے بدیں طور پر حضرت ابراہیم علی نبینا و علیہ العلوة والسلام کو رؤیا میں اپنے بیٹے ک نزئ کرنے کا ارشاد ہوا تھا۔ گر صفرت نے ترک ذرک کیا اگر ترک کے وقت بھی وجوب ذرخ ولد تھا تو ترک سے حصیان لازم آتا ہے صالانکہ یماں حصیان نہیں بلکہ خدا تعالی نے اس استدلال پر کسی نے اعتراض کیا ہے کہ متاب کے دعورت کو ذرک ولد کا امر ہوا تھا۔ بلکہ آپ نے ایک رؤیا دیکھا تھا جے آپ نے امر خطافی ظندہ امر ابد بع الولد کھا یہ جا در عبارت ذریر بحث سے پہلے یوں لکھا ہے۔ اور عبارت ذریر بحث سے پہلے یوں لکھا ہے۔ اور عبارت ذریر بحث سے پہلے یوں لکھا ہے۔ لکن اخطافی ظندہ امر ابد بع الولد کھا یہ حطی المجتھد فی الاجتھا د

لیکن حضرت نے اس کو امر بذرج ولد گمان کرنے میں خطاکی جیسا کہ مجتند اجتماد میں خطاکر تا ہے انتمی معترض پر بید اعتراض وارد ہو تا تھا کہ بیغیروں کے خواب تو وی ہوتے ہیں پھر مضرت کے رویاء میں خطاکہ کر ہوگئی ایس کا جواب شارح نے یوں دیا ہے۔

قلت نعم وحى لكن لا نسلم انه وحى بما راى مطلقابل يجوز ان يكون وحيابما يعبر به اونقول انه وحى بعد التقر رعليه بل امر بذبح الكبش-

جرب او صول الدو حتی بعد السور علی مارؤیا وی تھا۔ کر ہم سنیم نہیں کرتے کہ یہ رؤیا مطلقا وی تھا۔ کر ہم سنیم نہیں کرتے کہ یہ رؤیا مطلقا وی تھا۔ کر ہم سنیم نہیں کرتے ہیں کہ یہ رؤیا تقررو ثبات کے بعد وی تھا۔ اور یہ اللہ جائز ہے کہ یہ رؤیا مع التعییر وی ہویا ہم کہتے ہیں کہ یہ رؤیا تقررو ثبات کے بعد وی تھا۔ اور یہ ن تفرر نہ ہوا۔ بلکہ ذرئے کبش کا امر ہوا انتھی غرض قصہ حضرت ایما ہیم علیہ السلام شارح کے نزویک شخ اللہ فرائ کی مثال ہے اس کی تائید ہیں شارح نے عبارت زیر بحث اللہ سنت کا گھی ہے جہتا کہ اہل سنت کا سنی جہتے تاسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہاں نقل کیا ہے۔ اس عبارت سے ناسی جیسی نے یہ دور کا ہے جیسی نے یہاں نقل کیا ہیں دور کیا ہے دور کا ہے جیسی ناسی کیا ہیں دور کیا ہے دور کا ہے دور کی دور کا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کا ہے دور کیا ہے دور کا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کا ہے دور کا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کیا ہے دور کا ہے دور کیا ہے دور

عقیدہ ہے کہ انبیاء تبلیغ احکام میں خطا کرتے تھے اس کی فلط فنی ہے اس واسطے اس نے کیف علون فی احکام اللہ تعالیٰ کا ترجمہ انبیاء تبلیغ احکام خدا میں کیو تکر خطا کر سکتے ہیں۔ فلط کیا ہے اس عبارت کے بعر شارح نے حضرت داؤد موی و نوح علی نبینا علیم الصلوة والسلام کی اجتمادی خطاکی مثال دے کر ہوں لکھا ہے۔

ثم ان في اراء ة الرؤيا على هذا الوجه وعدم الاعلام بالعبير ابتلاء عظيما له عليه السلام ونيلا لمرتبة عظيمة لكن لما لم يكن الانبياء مقرين على الخطاء اعلمه الله تعالى ونا داه ان يا ابرهيم قد صدقت الرؤيا-

ترجمہ: پھر حضرت ابراہیم کو اس طرح رؤیا وکھانے اوراس کی تعبیرنہ بتانے میں آپ کے لیے بینی آزمائش اور برے مرتبے کا حصول تھا۔ لیکن چو نکہ انبیاء خطاپ ثابت و بر قرار نہیں رکھے جاتے۔اس لیے اللہ تعالی نے آپ کو بتا دیا اویوں پکارا اے ابرہیم تو نے بیشک خواب یج کرد کھایا انتھی۔ شارح مواتف نے جو قصہ اسیران بدر کو اجتمادی خطاکی مثال میں چش کیا ہے اس میں کلام ہے جس پر بحث کا بیہ مقام نہیں بسر حال انبیائے کرام بعض وقت ان امور میں اجتماد کرتے تھے۔ جن کے بارے میں پیشروی نازل نہ ہوئی تھی اور ان کا اجتماد صحیح و مطابق واقع ہوا کرتا تھا۔ آگر شاذ و نادران سے اجتماد میں خطا ہوگئی۔ تو ان کو فور آ بذراید وی آگاہ کردیا جاتا تھا اس سے کوئی الیا مفسدہ لازم نہیں آتا جو ان کی عصمت میں خلل انداز

یماں تک کہ شارح مواقف کے قول کی تشریح و توضیح کی ہے۔ شارح ہدکور کا یہ کمتا کہ اہل سنت پیغبروں پر خطائے اجتمادی کو جائز سیجھتے ہیں بحث طلب ہے۔ اگر اس بات کو تشلیم کر لیا جائے کہ آخضرت بعض وقت ان امور میں اجتماد کیا کرتے تھے جن کے بارے میں پیپٹروجی نازل نہ ہوئی تھی۔ قو پھر بھی یہ سوال حل طلب رہ جاتا ہے کہ کیا آپ اپنے اجتماد میں بطور شدوذ کبھی خطا کرتے تھے کہ جس پر بھر بھی یہ سوال حل فررا آگاہ کردیا جاتا تھا۔ اس سوال کے جواب میں بظاہر اختلاف ہے۔ قاضی عیاض شفا شریف میں لکھتے ہیں۔

فلا يكون ايضا ما يعتقده مما يثمره اجتهاده الاحقا صحيحا هذا اهو الحق الذي لا يلتفت الى خلاف من خالف فيه.

لیمنی پس آنخضرت کے اجتماد کا ثمر بیشہ حق وصیح ہی ہوگا۔ یہ الیم بات ہے کہ جو اس کے فلاف کے۔ اس کے فلاف کے خلاف کی طرف توجہ نہ کرنی چاہیے۔ انتھی علامہ شماب الدین خفاجی نے اس مقام پر تنہم الریاض جلد رالح ۱۲-۱۵) میں یوں لکھا ہے۔

وهذا بناء على انه صلى الله تعالى عليه وسلم لا يخطى في اجتهاده اصلا كما رتضاه الفزالي ونبى عليه انه يجوز القياس على مااجتهدفيه وهو اللائق بمقام النبوة ومثله في هذا كله سائر الانبياء عليم الصلوة والسلام وذهب ابن الحاجب وغيره الى انه يقع منه الخطاء نادرا الاانه الايقر عليه وليس مااستدلوابه خطأبل خلاف الاولى فان ارادوه ارتفع الخلاف فتدبر

ترجمہ: اور میہ مبنی ہے اس امربر کہ آنخضرت اپنے اجتماد میں تبھی خطانہ کرتے تھے۔ اس قول کو الم غزال نے پند کیا ہے۔ اور اس پریہ قاعدہ بنی کیا ہے کہ جس میں آپ نے اجتماد کیا اس برقیاں جائز ے- اور میں مقام نبوت کے لائق ہے اور باقی انبیاء ملیم العلوة والسلام اس تمام میں آپ بن کی مثل ہں۔ اور ابن حاجب وغیرہ اس طرف گئے ہیں۔ کہ شاذو نادر آپ سے خطا وقوع میں آتی تھی۔ ممر آپ اس خطام برقرار نه رکھے جاتے تھے۔ گرانهوں نے جس امرے استدلال کیا ہے۔ وہ خطانہیں بلکہ خلاف ادلى تفا- پس أكر ان كى ميى مراد تقى تو اختلاف جاما رہا- ننديو استى - شخ عبدالوہاب شعراني كتاب اليواقيت والجوابرني بيان عقايد الاكابر مطبوعه مصرجز فاني اء بين يون تحرير فرمات بين-

قال اثمة الاصول الانبياء عليم الصلوة والسلام كلهم معصومون لا يصدرعنم ذنب ولوصغيرة سهوا ولا يجوز عليم الخطاء في دين الله قطعا وفا قاللا ستاذ ابي اسحاق الا سفر ايني و ابي الفتح الشهر ستاني والقاضي عياض و الشيخ تقي الدين السبكي وغيرهم-

ترجمه: ائمه اصول كا قول ب كه تمام البياء عليهم العلوة والسلام معصوم بين ان س بطور سهو بحى كوئى كناه خواه صغيره بو- مرزد شيس بوتا تقا- اور دين خدايس ان برخطا تفعا جائز شيس (انتهى) رباناصح قیعی کا بیر اعتراض کہ جملہ اہل سنت اس کے بھی قائل و معتقد ہیں کہ رسول اللہ مان کیا تبلیخ احکام خدا میں بھی خطاء کرتے تھے۔ سو اس کے جواب میں گزارش ہے کہ سے اہل سنت پر محض افتراء ہے۔ چنانچہ شفائے قامنی عیاض میں ہے۔

واجمعت الامة فيماكان طريقه البلاغ انه معصوم فيه من الاخبار عن شئي منها بخلاف ماهوبه لاقصدا ولاعمداولا سهوا اوغلطأ

ترجمہ: امور علیعیہ میں امت کا اجماع ہے اس بات برکہ رسول الله اللہ اللہ اللہ اسے امور میں سے کی کی نبیت خلاف واقع خبردین- ایسی خبرنه آپ تصدا دیتے تھے- اور ند عمداً ورنه سمویا غلطی سے-انته ام، ط ح مسامره شرح مسائره للعلامنية الكمال بن الهام مطبوعه مصر (۴۰۰) ميں ہے-



رواما قيما طرايق الابلاغ) اى ابلاغ الشرع و تقريره من الاقوال وما يجرى مجراها من الافعال كتعليم الامة بالفعل فيم معصومون فيه من السهو والغلط من الافعال كتعليم الامة بالفعل فيم معصومون فيه من السهو والغلط اس كامطلب بيرب كه اتوال بلاغيه اور افعال بلاغيه ش انها على مهو اور للمل من معمد

اگرچہ اپنے مقدس معقد علیہ بیغیر کی توہین صریح باکر ان عقائد کے معاوضہ ہیں آپ معرات المست کرتے ہیں۔ جو لفل حق بجانب ہے۔ المست المست کرتے ہیں۔ جو لفل حق بجانب ہے۔ کیکن اب شک جو عیوب بیغیر خدا کے باساد بیان ہوئے۔ ان ہیں سے بخاری کتاب العلاق کا سما ایک واقد تو کیکن اب شک جو عیوب بیغیر خدا کے باساد بیان ہوئے تو بھر ہم یقین کرلیں ہے۔ کہ تحریف قرآن کا الزام جو بھو خلفاء ثلثہ کی نسبت کتب المست میں و کھا دیجے تو بھر ہم یقین کرلیں ہے۔ کہ تحریف قرآن کا الزام جو بھو آپ خلفاء ثلثہ پر رکھتے ہیں۔ ورست اور حق بجانب ہے۔

تدر کتب محاح وسراہل سنت سے معلوم ہوتا ہے کہ جس قدر پینجبر ضدا میں عیب تھای قدر فلفاء ملتہ شریک فی النبوۃ تھے۔ اگر یہ فلفاء ملتہ ہوتا ہے عیب سنے جس کا بہتی فلا بہر ہے۔ کہ بفول شاہ ولی اللہ فلفاء ملتہ شریک فی النبوۃ تھے۔ اگر یہ لوگ اسلام قبول نہ کرتے۔ تو ، عقیدہ الجسنّت اسلام کا وجود دنیا میں نہ ہوتا ہی لیقین جانے کہ آپ کا فدا اور رسول و قرآن الجسنّت کے خدا و رسول اور قرآن سے بالکل جدا ہے۔ اس سبب سے ان کے اصول عقائد ہے۔ مفائرہ مبائن ہیں۔

نی الحقیقت کسی الل فرجب پر اعتراض اس کے اصول عقائد و مسلمات کے مطابق ہونا ہاہے۔ اور آپ حضرات اپنی من گفرت پر الل سنت کو الزام دینا چاہتے ہیں۔ ای وجہ سے بیشہ اہل سنت کی بہت اور شیعہ کی بارسی جاتی ہے دیکھیے۔

الثانية للصحابة باسرهم خصيصة وهى انه لايسئل عن عدالة احد منهم بل ذلك مرفوع عنهم لكونهم على الاطلاق معدلين بنصوص الكتاب والسنة واجماع من

معتدبه في الاجماع (علوم الحديث ابن الصلاح)

ترجمہ: عام محابہ کی نسبت اہل سنت کا اعتقاد اور عمل ہے کہ کسی محانی کی عدالت کی نسبت سوال ند كيا جائے - (خواہ كھ عى كيا مو) محاب كى نسبت ايساسوال كرنا قوم كى طرف ، منع كياكيا ہے كيونكه ما تنصیل قرآن و صدیث اجماع کے عکم سے عادل ہیں اس بی کتاب و سنت و اجماع سے ان کی فانیت بر استدلال کیا جاتا ہے استمی محملا

یہ عقیدہ جملہ اہل سنت کاعام محابہ کی نسبت ہے جو آپ کے یمال مجتدوں کو میسر نہیں تواب معزات شیخین کا درجه جن کو شریک نی النبوة ول میں سمجما جاتا ہے۔ ان کا درجه کس قدر ارفع و اعلی ہوگا۔ جونك عملى عقيده السنت سے ثابت ب كه حفرات شينين به بركت اسلام معموم عن الخطاء والنسيان مو يك سف - جس كاعلم بيغبر خداكو تعا- اى سبب سے آپ نے فرمايا-

اقتدو بالذين من بعدى ابوبكر وعمر

اور ای صدیت کی بنیاد پر به اصول زبر تائم کیا گیا- من انکوامامة ابی بکو فهو کافر (موافق محرقہ) پس مناسب ہے کہ پہلے آپ حضرات اہل سنت جماعت کے اصول و عقائد کی تحقیق و تدوین سیجے اور اس کے بعد ان کے اصول و عقائد کے مطابق اگر اعتراض میسر آجائیں تو شوق سے سیجے ورنه کف لسان فرمایتے اور اصول و عقائد کی لا علی کی حالت میں اعتراض محض لغو واخو دعوانا

الحمدلله وب العلمين (تعيف كاتين ص ٣٠٠٣)

اقول ناصح شیمی نے جو چند معاتب بلا اسناد لکھے ہیں۔ وہ صریح البطلان ہیں میچی میں یہ سیس میں آیا كه الخضرت عائشه صديقة رمني الله تعالى عنها كے حسن وعشق ميں نعوذ بالله بے قرار وب اختيار تھے-الجواب الكافى جارے ياس موجود نهيں تأكه اسے وكم ليا جاتا سنن الى داؤد كاجو حوالہ ديا ہے اس ميں سي مذكور نسيس كه آمخضرت في اس ب خودى مين ايساكيا زبان چوسناب شك مذكور ب مكرب خود كاكوئي ذكر نيس- فود حضرت عائشه صديقه رمني الله تعالى عنها فرماتي جي- وكان املككم الاربه ليني آتخضرت ائي عاجب میں تم سب سے زیادہ اپنے آپ پر منبط رکھنے والے تھے۔ (صحیح بخاری) کتاب الصوم- باب المباشرة للمائم) يد نعل اس غرض سے تھا كه امت كويد مسئله معلوم موجائے كه جو مخف حالت صوم بي ايباكرے اور اے انزال نہ ہو تو روزہ نہیں ٹوٹا کتب شیعہ میں بھی یہ ستلہ فرکور ہے چانچہ تنفیب الاحکام کتاب العوم میں ہے۔ کہ امام جعفر صادق نے ایک مخص کے وریافت کرنے پر فرمایا۔ کہ جو مخص اپنی عورت کو ہاتھ سے مس كسك اس كاروزه نهيس لونا خواه ندى فكل آئے اى طرح المام محمد باقرر مند الله تعالى في فرايا كد بوسد لينے سے روزہ نہیں ٹوٹا پیغیر خدا صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے قرآن بعول جانے کی تشریح کردی جانے اور بنایا جائے کہ

محاح میں یہ مضمون کماں ذکور ہے۔ ہم انشاء اللہ تعالی اس کاجواب دیں کے پیغیر خدا کاحل سے انجاف کو اللہ تعالی محاح میں یہ ہوگی۔ معرت عائشہ مدیقہ رمنی اللہ تعالی افترا ہے ہاری مختصر بغداد ابن طاہر ناصح شیعی نے دیکھی بھی نہ ہوگی۔ معرت عائشہ مدیقہ رمنی اللہ تعالی عنها کو ناچ دکھانا کتب المستنت میں کہیں فہ کور نہیں ہاں صحیح بخاری (باب اصحاب الحراب فی المسجم) میں یہ مدین موجود ہے۔

حدثنا عبدالعزيز بن عبدالله قال حدثنا ابراهيم بن سبعد عن صالح عن ابن شاب قال اخبرنى عروت بن زبير ان عائشة رضى الله عنا قالت لقد رايت رسول الله صلى عليه واله وسلم يوما على باب حجرتى والحبشة يلعبون في المسجدو رسول الله صلى عليه واله وسلم يسترنى بردائه انطراالى النبهم-

ترجمہ: (محذف اساد) حضرت عائشہ رضی اللہ عنها کا بیان ہے کہ ایک روز ہے شک میں لے رسول اللہ کو اپنے جرے کے دروازے میں دیکھا۔ اور جبھی محبر میں کھیل رہے تھے۔ اور رسول اللہ اپی چادر مبارک ہے جمعے سر کیے ہوئے تھے اور میں ان کے کھیل کو دیکھ رہی تھی۔ (انتھی) دو مری روایت میں ہے۔ والمحبشة یلعبون بحرابهم یعنی جبی اپنے آلات بنگ کے ماتھ کھیل رہے تھے۔ انتھی قسطلافی شارح بخاری نے اس حدیث کی شرح میں لکھا ہے کہ حضرت عائشہ صدیقہ کی نظر صرف آلات بنگ پر پڑی تھی۔ کیونکہ عورت کی نظر اجبی مرو پر پڑنا جائز نہیں آخضرت نے حضرت صدیقہ کو آلات بنگ کے دیکھنے سے منع نہ فرایا تاکہ وہ اس واقعہ کی روایت کریں اور لوگ اس کی مشق کیا کریں۔ کیونکہ سے جماد کی تیاری ہے۔ اس واسطے آخضرت طرف ان حبشیوں کو معجد میں مشق کرنے ہے منع نہ فرایا استھی اب ناظرین غور کریں۔ کہ معالمہ کیا تھا۔ اور اسے بدل کر کیا ظاہر کیا گیا ہے۔ کیا شیعہ کے نامی ایک

صیح بخاری کماب المطاق کے واقعہ کا بواب پالے آچکا ہے شیعہ کا حضرات اصحاب ملاقہ رضی اللہ تعالی عنم کو لعنت طامت کرنا اپنی عافیت خراب کرنا ہے۔ اہل سنت و جماعت کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ تعالی علیہ معصوم شے جیسا کہ بحوالہ کتب اوپر آچکا ہے حضرات خلفائے ٹلاشہ رضی اللہ تعالی عنم کو ہم معصوم نہیں جانے بلکہ محفوظ جانے ہیں ناصح شیعی کا یہ لکھتا کہ بقول شاہ ولی اللہ خلفائے شالی عنم کو ہم معصوم نہیں جانے بلکہ محفوظ جانے ہیں ناصح شیعی کا یہ لکھتا کہ بقول شاہ ولی اللہ خلفائے شائل شریک فی النبوۃ تھے۔ شاہ صاحب پر افتراء ہے کیونکہ شاہ صاحب قرۃ العینین مطبوعہ مجتبائی وہلی ۱۲۲۳ شی یوں تحریر فرماتے ہیں باید وائست کہ موافقت در فضائل با پیغامبر پیند وجہ سے تو اند شد کیا ممالکت میں یوں تحریر فرماتے ہیں باید وائست کہ موافقت در فضائل با پیغامبر پیند وجہ سے تو اند شد کے ممالکت درصفت و نبوت ایں معنی فقط در انبیاء خواہد بود چنانچہ صدیث الانبیاء نبو العملات برآل ولالت سے کک درصفت و نبوت ایں معنی فقط در انبیاء خواہد بود چنانچہ صدیث الانبیاء نبو العملات برآل ولالت سے کک درصفت و نبوت ایں معنی فقط در انبیاء خواہد بود چنانچہ صدیث الانبیاء نبو العملات برآل ولالت سے کک درصفت و نبوت ایں معنی فقط در انبیاء خواہد بود چنانچہ صدیث الانبیاء نبو العملات برآل ولالت سے کیا معنی

موافق با آنخضرت نمى تواتد كروبسب انقطاع نبوت ديكر مشابت ورجزر على وعملي نفس ناطقه فى الجمله والله المعند ورجزر على وعملي نفس ناطقه فى الجمله والله معنى درغيرو انبياء متفور است چنانچه و لا يبقى بعدى من النبوة الا المبشرات ولالت ميكند وآن در شيخين متخقق است چنانكه ذكر كرديم-

ترجمہ: جاننا چاہیے کہ فضائل میں پنیمر النظام کے ساتھ موافقت کی طرح سے ہو عتی ہے ایک و صفت نبوت میں مشاہبت ہے۔ اور یہ فقط پنیمبروں میں ہوتی ہے جیسا کہ حدیث الانبیاء بنو العلات بنیبر آلیں میں پدری بھائی جیں) اس پر ولالت کرتی ہے۔ اور یہ نمایت ورجہ کی فضیلت ہے کہ جس کے مقابل وہ سرے فضائل کی گنتی میں نہیں اور آنخضرت النظام اللہ فخص اس فضیلت میں آپ کے ساتھ موافقت نہیں کر سکتا کیونکہ آپ کے بعد سلملہ نبوت منقطع ہے۔ وو سرے نفس ناطقہ کے جزر علمی ماتھ موافقت نہیں کر سکتا کیونکہ آپ کے بعد سلملہ نبوت منقطع ہے۔ وو سرے نفس ناطقہ کے جزر علمی النہوة الا المستشوات میرے بعد نبوت سے سوائے سے خوابوں کے نہ رہے گا ولالت کرتی ہے اور یہ النبوة الا المستشوات میرے بعد نبوت سے سوائے سے خوابوں کے نہ رہے گا ولالت کرتی ہے اور یہ بات مقرات شخین میں بائی جاتی ہے جیسا کہ جم نے ذکر کیا ہے اسی۔



موعظ کو سید محمد رضی الرضوی النمی نے مرتب کیا ہے۔ اور شیعہ بیک مین سوسائٹی خواجگان نارو دالی لاہی نے ماہ اریل ۱۹۲۳ء میں شائع کیاہے اس رسالہ کی تردید میں ہم اپنے طریق اقول کو بدستور قائم رکھی ے۔ ناظرین بھند لاہوری اور ان کی لیافت و روش سے بہلے ہی واقف ہیں- للذا ہمیں کی تمید و تعریف كى ضرورت نيس بكه متوكلا على الله يمال سے اصل مقصود شروع كردياجاتا ہے- والله هو

المستعان وعليه التكلان-

تفال الحائري عزيزو! دوستو؟ قبل اس كے كه مسئلہ تجريف ميں كسى فتم كى روشنى ۋالول آپ كى بزل توجه کاخواہشمند ہوں۔ که حضرات اہل سنت کا آپ کو رہین منت ہونا چاہیے۔ جن کی چھیڑچھاڑ کی ہولت آپ کو تربب حق میں بشارت ید خلون فی دین الله افواجا کا مسرت پخش نظارہ نصیب موا ہے۔ مارے کرم فرا ہے اگر ہم پر ان مسائل متازع فیما میں اتمام و بستان لگا کر ہم کو وفاعی رنگ میں ازالہ تہمت اور جواب وہی پر آمادہ نہ کرتے تو اس کثرت کے ساتھ میہ سعید روحیں کیو ککر دائرہ النجات (شیعہ ذہب) میں داخل ہوسکتیں اس میری التماس یہ ہے کہ تمام شیعوں کو اس حیثیت سے سینوں کا عمواً اور واترة الاصلاح ومعين الاسلام كا خصوصا شكر كزار بونا جابيے جن كى اس تحريك سے دونوں فريق كاجود د سكون طويل ذاكل موكر دونول فرقول مين تحقيق حق كامزاج اور جذبه بيدا موكيا ہے - اور طالبان حق كو آخر حق نے اپنی چیک و کھا کراہے اندر جذب کری لیا۔ دوستویاد رکھو نیک نیتی سے تبادلہ خیالات کرناا، بعد تحقیق کے کسی مفید بتیجہ تک ماطمینان پہنچ جانا نمایت مبارک کام ہے جس کو ہرانجام بین سعید الفطرت پند كرتا ، بشرطيكه مير سب مجمد ايماندارى نيك نيتى اور تعصب سے بالكل عليحدہ ره كر موحقيقت بس اى جدوجمد کا نام مشن ہے۔ اور جو کام کہ اس نیک نیتی سے ہوگا۔ وہی تبلیغ ہے۔ قرآن میں بھی ای اصول تبلیغ کو حسب ذیل لفتلوں میں بیان کیا ہے ولتکن منکم امة ید عون الی النحیر ویا مرون بالمعروف وينهون عن المنكر واولئك هم المفلحون

اور چاہیے کہ تم میں ہر وقت ایک الیا گروہ موجود رہے جو لوگوں کو بھلائی کی طرف بلائے رہیں۔ اور نیک باتوں کا حکم دیں۔ اور بری باتوں سے روکیس۔ اور می کامیاب ہونے والے ہیں۔

غور قرمائیں یمال کامیانی کادارومدار اس بات پر رکھا ہے کہ مسلمانوں میں ایک مروہ داعمان اسلام كا موجود رہے كيونكه الخيركا لفظ جس كى طرف وعوت كاتكم ديا ہے اس سے مراد دين اسلام اور تقلین مینی قرآن مجید اور عترت طاہرہ ہے۔ کیونکہ سب مطائی کی راہیں سال بتادی کی ہیں۔ مقصودیہ ج کہ آگر دنیا میں تم ایک کامیاب اور زندہ قوم رہنا چاہتے ہو۔ تو ضروری ہے کہ تم میں ایک کروہ مبلقین اسلام حقیق کا رہے۔ گویا اس میں اصول سائنس کی طرف متوجد کیاہے کہ اگر تم اس کوشش میں نہیں

کے رہو گے۔ کہ دو سرول کووین اسلام میں داخل کرو۔ تو پھرتم کامیاب بھی نہیں رہ کتے۔ کیونکہ اگر ترتی کی کوشش جاتی رہی۔ تو تنزل اور انحطاط کا آجاتا لازی ہے۔ (موملا تحریف ترآن ۱-2)

اقول مناظروں ہیں ہر جگہ شیعہ کو فلست ہو رہی ہے جی کہ ناصح شیعی میرز اجر سلطانی مصنف تقیف کا بہتر نے صاف لکھ ویا ہے کہ ہیشہ اہل سنت کی جیت اور شیعہ کی ہار سی جاتی ہے جی ہالمحق یعلو ولا یعلی جبتد لاہوری کا یہ بیان غلط ہے کہ لوگ ذہب شیعہ میں واغل ہو رہے ہیں۔ مجتد صاحب زہب شیعہ کو مشنری بنانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ گریہ نعل شیعہ کے آئمہ مصوبین کی تعلیم کے فلاف ہے۔ چنانچہ حضرت امام جعفرصاوق کا قول ہے۔ کفو اعن الناس و لا تدعو ا احد الی امر کم لین اپنے تیک لوگوں سے روکو۔ اور کمی کو اپنے وین کی دعوت نہ دو۔ (اصول کائی (۱۸۸۰)۔ امام موصوف یہ بی فرائے ہیں۔ یہ اور کما کائی (۱۸۸۰)۔ امام میں رہ کر کوئی یہ بی فرائے ہیں۔ یہ اصوب کو جانبی کہ جب تک تقیہ باتی ہے اپنے نہ بب میں رہ کر کوئی ان کا مشر ہے۔ (اصول کائی (۱۸۸۰)) اس بیان سے صاف طاہر ہے کہ شیعہ نہ بب میں رہ کر کوئی ایس میں سکا۔ لافا جبتد صاحب کو جانبی کہ جب تک تقیہ باتی ہے اپنے نہ بب کی تبلغ کا نام نہ لیں۔ اگر مجتد صاحب ہو جانبی کہ جب تیک تقیہ باتی ہے اپنے نہ بب کی تبلغ کا نام نہ لیں۔ اگر مجتد صاحب ہو تا ہیں۔ کہ اب تقیہ کا خاتمہ ہوگیا ہے تو ان کا بیہ خیال حسب عقیدہ شیں۔ اگر مجتد صاحب ہو تا ہیں۔ کہ اب تقیہ کا خاتمہ ہوگیا ہے تو ان کا بیہ خیال حسب عقیدہ شیں۔ اگر مجتد صاحب ہو تا ہیں۔ کہ اب تقیہ کا خاتمہ ہوگیا ہے تو ان کا بیہ خیال حسب عقیدہ شیں۔ اگر مجتد صاحب ہو بیا ہیں۔ کہ اب تقیہ کا خاتمہ ہوگیا ہے تو ان کا بیہ خیال حسب عقیدہ شین جو حدیث شین شیعہ دوست نہیں چنانچہ کشف الغرب میں جو حدیث شین شیعہ کی مشہور کا ب اور (۱۸۷۷) ہ میں تعفیدہ تعفیدہ کی مشہور کا ب ہولی وارو ہے۔

عن الحسنين بن خالد قال قال الرضاعليه السلام لا دين لمن لا ورع له ولا ايمان لمن لا تقية له وان اكرمكم عندالله اتقاكم فقيل له يا ابن رسول الله الى متى قال الى يوم الوقت المعلوم وهو يوم خروج قائمنا فمن ترك التقية قبل خروج قائمنا فليس منا.

(كشف النم في معرفة لائمه مطبوعه ايران (١٣٩١) وص ١٣٣١)

ترجمہ: حسین بن خالد کا بیان ہے کہ امام رضاعلیہ السلام نے فرملیا کہ نہیں دین اس کا کہ جس میں بھیہ نہیں اور بے فک اللہ کے نزدیک تم میں سب کرگ وہ سے جو سب سے اتفی ہو۔ امام رضا سے دریافت کیا گیا کہ تقیہ کب تک رہے گا۔ امام نے برگ وقت معلوم کے دن تک اور وہ ہمارے قائم (امام غائب) کے نگلنے کا دن ہے ہیں جس مخص مخاب دوا ہو ہم میں سے نہیں۔ انتھی۔ کتاب نہ کور سے حاثیہ پر منام مائی کے نگلنے سے پہلے تقیہ چھوڑ دیا وہ ہم میں سے نہیں۔ انتھی۔ کتاب نہ کور سے حاثیہ پر اللہ مائی کے محل کے ورائی مدیث اللہ محل کے مائی میں التھیة جو تم میں سے تقیہ پر سب سے زیادہ عامل ہے) اور اس مدیث میں کی محل کے مسلم تبلیخ میں آپ



اہے قرآن ناطق (یعنی ائمہ معمومین) کے برظاف کیوں چل رہے ہیں اور ندہب شیعہ سے کیوں فارن ہو
رہے ہیں۔ ویگر آنکہ تغیر مجمع البیان (جلد اول ۱۹۲۳) میں آب ولتکن منکم امة کے تحت میں لکھا ہ
ویروی عن ابی عبدالله علیه السلام ولتکن منکم ائمة و کنتم خیر ائمة اخرجت للنام
انتی لین امام جعفر صادق ہے آیت ہوں مروی ہے ولتکن منکم ائمة کنتم خیر ائمة اخرجت
للناس ہیں مجمد صاحب یہ مجمی بتاویں کہ یہ قرات اہل بیت ورست ہے۔ یا نہیں کیا ہم ان دواہم موالوں
کے جواب کا انتظار کریں۔ (دیدہ باید)

تكال الحائري جب بم ماريخ اسلام بر نظرة التي بي تو اس اصول قرآني كي صدافت بين طور ير نظر آجاتی ہے- ابتداء اسلام کا زمانہ تو وہ تھا کہ ہرایک سچے مومن کے اندر دعوت الی الحق کی ایک زردست روح کام کرتی نظر آتی ہے۔ ویکھو اور غور کرو۔ کہ ولائیت ماب جناب امیراور حسین علیم السلام اور ان ك نقش قدم ير چلنے والول في وعوت الى الحق كو اى اينى زندگيول كا اصلى مقصد سمجه ركھا تھا اس ليے اسلام ایک جیرت انگیز سرعت کے ساتھ دنیا میں پھیلٹا چلا گیا۔ اور اس جوش و تڑپ نے جو یہ بزرگوار اشاعت اسلام کے لیے رکھتے تھے۔ واعیان اسلام کو دور دور کے ممالک میں پہنچا دیا۔ اور اس طرح پر تھوڑے ہی عرصہ کے اندر ایک انقلاب عظیم انہوں نے دنیا میں پیدا کر کے دکھا دیا۔ پھر بعد اس کے ایا زمانہ آیا کہ سلاطین ورؤساء اسلام تو اس اہم فرض کی طرف سے بالمرہ غافل ہو کر تعیشات میں گرفار ہو گئے اور غلائے اسلام وعوت الی الحق کے کام میں لگے رہے۔ اور وہ بزرگ جن کے ناموں پر آج لا کھوں نفوس قرمان ہوتے ہیں ان کی سے عرت محض اسلام کی اس خدمت سے ہوئی۔ مگر افسوس کہ ان بزر گواروں کے گزر جانے کے بعد ان کے قائم مقاموں نے ان کی گدیوں کو پیے کمانے کی مثین اور ذراید بنالیاجس کی وجہ سے تبلیخ اور وعوت الی اسلام کاکام قریباً بالکل بی جاتا رہا اور اس سے اسلام کوجس قدر نقصان پنجا۔ اس کی تلافی اگر ممکن نہیں تو دشوار ضرور ہے۔ خوب یاد رکھو کہ مسلمانوں کے اوبار کے دن وہی پاؤ گے۔ جب انہوں نے جدوجمد کے اس مقدس فریضہ کو ترک کردیا۔ اور یہ سمجھ لیا کہ اب ہم برای قوم ہیں۔ ہمیں آئندہ تبلیغ کی ضرورت نہیں۔ ادہر انہوں نے جدوجمد کو چھوڑا ادہر ترقی کی بجائے ان میں تنزل شروع ہو گیا حی کہ اس زمانے میں اسلام دوسری اقوام کے حملوں کا آما جگاہ ہو گیا۔ اور بست سے اسلام کے نام لیوا دوسرے قداہب میں چلے گئے۔ یہ اوبار تبلیغ اسلام کے کام کو چھوڑنے کالازی تنبید تھا۔ (موحد تحریف قرآن (۸))

ا تول اس میں شک نہیں کہ محابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین نے اپنے آقائے نامدار من اللہ اسلام اللہ علیم اجمعین نے اپنے آقائے نامدار من اللہ اسلام کو نمایت خلوص سے جاری رکھا اور اس پر اپنا جان و مال قربان کردیا۔ ای واسلے شریف کے بعد تبلیغ اسلام کو نمایت خلوص سے جاری رکھا اور اس پر اپنا جان و مال قربان کردیا۔ ای واسلے



پنی سال کے اندر اسلام حدود عرب سے نکل کر بہت دور تک پہنچ گیا۔ چنانچہ معزت مدلق اکبر کی . خلافت راشدہ میں بمامہ کے علاوہ اطراف عراق اور شام کے بعض شرفتے ہوئے۔ اور حعزت فاروق اعظم ى ظلافت راشده مين ومشق واحسيه مص علوان رقه ربا حران راس العين خابور تعسن عقلان طرابل و ساحل ملحقه "بيت المقدس بيسان برسوك ابواز "قساريي معر تستر نهاد غرر وعلاقه ملحقه 'اصفهان بلاد فارس' اصطحر' بهدان' نوبه ' برلس' بربروغيره فتح بوئے- اور حضرت ذوالنورين كي خلافت راشده من اسكندرىيه " سابور " ممالك افرايقه قبرس " سواحل روم " خورستان طبرستان " كرمان تجستان " ساحل اردن مردان وغيره كافتح موے- نداجب عالم ميں كوئى اور ندجب ايسانسيں جس نے ايسے قليل عرصه ميں اتی ترقی کی ہو- اگر ترقی کی رفتار میں رہتی تو حضرت مولی مرتنی کی خلافت راشدہ میں اسلام اقصائے دنیا تک پہنچ جاتا گر افسوس ہے کہ حضرت ذوالنورین کے عمد میں ابن سباظام رہوا۔جو ند بہب شیعہ کا بانی ہے۔ یہ مخص اصل میں میںودی تھا۔ جو بظاہر مسلمان ہوگیا تھا ابن بسااسلام کی اس بے نظیر ترقی کود مکھ کرجل گیا۔ اور مسلمانوں میں نا اتفاقی پیدا کرنے کے لیے اس نے ایک نیافیہب نکالا اور مصر میں جاکر اہل مصر کو حضرت ذوالنورين كے برخلاف بھڑكايا جس كا نتيجہ جو ہوا وہ معلوم ہے ناظرين اس كى تفصيل انشاء الله تعالى اس كماب كے دوسمرے حصہ میں بائيس مے اگر ندہب شيعد كى كمابوں كو ديكھا جائے تو ان سے محل معلوم ہوتا ہے کہ حضرت امیراور دیگر آئمہ تقیہ میں زندگی بسر کرتے رہے چنانچہ حضرت امام جعفر صادق رحمتہ الله تعالى فرماتے ہیں۔ یا معلی ان التقیت من دین ودین ابائی (اصول کانی ص ۲۸۷ یعنی اے معلی تقید غرب کامچھپانا میرے دین سے اور میرے آباؤ اجداد کے دین سے ہے۔ انتھی پس اس صورت میں ان بزرگون سے تبلیغ حق متصور ہی نہ تھی مجتند لاہوری نے جو دعوت الی الحق کے ضمن میں حضرت امیراور حسنین رضی اللہ تعالی عنهم اور ان کے نقش قدم پر چلنے والوں کا خصوصیت سے ذکر کیا ہے۔ ہم اس سے دریافت كرتے بيں كہ آئمہ انا عشرنے كمال كمال اسلام بھيلايا كمل فرست مع حوالد كتب مطلوب ہے كيا جميں ال اہم سوال کے جواب کا انتظار کرنا چاہیے (دیدہ باید)



ول الحائري سنة ہو كيے كيے پاك اصول فلاح كے مسلمانوں كو اس پاك كتاب كے ذريد ديے ك و اهذا القران مهجورا كا مصداق اپنے آپ كو ثابت كركے دكھا ديا۔ دوسرى قويس لو قرآن مجيرك یاک اصولوں سے مشتع ہوئیں۔ اور نہ ہوئے تو شیعہ کس قوم کی مقدس کتاب میں یہ اصول باندماکا ہے۔ کہ تم میں ایک جماعت وعوت الی الحق کے لیے رہے سوائے قرآن کے بیہ اصول کمی کتاب میں نہ یاؤ گے۔ مگر عملی طور پر کون سی قوم ہے جو آج ونیا میں اس اصول کی تارک نظر آتی ہے۔ سوائے شیوں ے کوئی نہیں ہرایک قوم کو ظر گئی ہوئی ہے کہ دو مرول کو اپنا ہم خیال بنائے ہرایک قوم شب وروز جددجمد میں معروف ہے اور سکون کو اسے لیے موت سجھتی ہے۔ ہر شیعہ جن کی کتاب نے زندگی کا اصول جدوجمد كو بتايا ہے ايسے عافل ہيں۔ كه ہر طالت ميں جمودو سكون سے باہر نكلنا بى نميں چاہے الى خرجب کی تبلیغ سے کلیتا بے فکرو عافل میں نہ مبلغ پیدا کرنے کا سامان ہے۔نہ ونیا کی ضرورت کی خرے نہ فربب پر حملوں کی پروا ہے۔ نہ دو مرے فداہب کی کتابیں عربی انگریزی اور اردو ذبانوں میں زجمہ ہو کر ال تك يستيائي جا چكى يير - مرخود شيعول كى بيه حالت ب كه نه صرف ان واعظ كے اور ان كى كماين دو مرون تک نہیں پنچیں بلکہ اینے گرے اندر بھی انہوں نے چوٹ ڈال رکھی ہے۔ اگر دوسری قوش مجمی اینے اپنے غدابب کی اشاعت کی طرف سے لاہرواہ ہوتیں۔ تو پھر بھی شیعوں کی یہ غفلت چندال نقصان دہ نہ ہوتی- مرجال ایک سخت جدوجمد گی ہوئی ہے- اور ہر ذہب اس فکر میں ہے- کہ دوسرے غداہب کو اپنے اندر جذب کرلے تو آپ خود غور فرمائیں کہ ایسے وقت میں یہ غفلت اپی موت کے فتوے ہر خود مرانگانا نہیں تو کیا ہے۔

سنتے ہواس میں شک نہیں کہ قوم کی ضروریات بہت ہیں۔ اور ان سب کی طرف متوجہ ہونا ہی ا ضروری ہے گریاو رکھو کہ زندگی اور موت کا سوال سب سے مقدم ہے۔ اگر دوسری ضروریات قوم کی ہتاء کا سوال ہے۔ اس کی طرف ایک ایحض بیماروں کا علاج ہیں۔ تو اشاعت و تبلیغ ند بب حق کا سوال قوم کی ہتاء کا سوال ہے۔ اس کی طرف ایک لحد بھی غفلت کرنا سراسر ہلاکت اور فنا کا باعث ہے لیکن اس میں بھی شبہ نہیں کہ جس قدر یہ کام اہم ہے۔ اس قدر ذیادہ شیعہ اس طرف سے عافل ہیں۔ اور وہ ایک طرح حق بجانب بھی ہیں۔ کہ ان کو ان کو ان طرف توجہ ہی نہیں ولائی گئی۔ ورنہ اپ موالی طاہرین علیم السلام کی طرح جس قدر کہ شیعوں میں ابگاد کا دہ موجود ہے۔ کسی دو سرے فرقہ میں موجود نہیں ہے۔ اس لیے شیعہ مشن کی طرف قوم کی قوجہ مشن میں ہوئی تھی۔ اور قدرتی نشود نما خود بخود ہوتا گیا اور اب جب کہ پنجاب شیعہ مشن نہ صرف منعطف نہیں ہوئی تھی۔ اور قدرتی نشود نما خود بخود ہوتا گیا اور اب جب کہ پنجاب شیعہ مشن نہ صرف الفظی عارت میں جیار کیا گیا۔ بلکہ ، مفعلہ تعالی ان کو عملی جامہ بھی پسنا دیا گیا ہے۔ تو اب قوم کا فرض ہے کہ ر کوئی ستقل انتظام اس کے بقاء اور قیام کے لیے کرے۔ (موحد تحریف قرآن من ۱۰۸)

رہ میں ہے۔ جو قرآن موجود ہے متمتع نہ ہوئے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ اس کو اس قدر محرف ہجمتے اور اپنیدہ جو قرآن موجود ہے متمتع نہ ہوئے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ اس کو اس قدر محرف ہیں گیا۔ اس کی ایک آیت بھی ایک تمیں جس میں تحریف کا اختال نہ ہو اور ان کا عقیدہ ہے۔ کہ فیر محرف واصلی قرآن جو حضرت علی کرم اللہ وجہ نے جمعے کیا تھا۔ وہ خلافت اولی ہی کے وقت ہے غائب ہے۔ اور شہری صدی ہجری سے اب تک امام غائب کے پاس بتایا جاتا ہے جب وہ ظاہر ہوں گے تو قرآن اصلی بھی ناہر ہوگا۔ جب شیعہ کے پاس قرآن اصلی ہمی اور ناہر ہوگا۔ جب شیعہ کے پاس قرآن اصلی نہیں تو ان کے لیے تمتع بالقرآن محال ہے چو نکہ شیعہ کو تاظمور امام زمان تقیہ کا بھم ہے اس لیے وہ اپنے نہ بس میں رہ کر نہ تبلیغ کر سکتے ہیں نہ مبلغ تیار کر سکتے ہیں۔ اور نہ اپنی تمام کی اشاعت بصورت تراجم کر سکتے ہیں۔ یک وجہ ہے کہ اہل سنت کو کتب شیعہ کا رستیب ہونا نہایت وشوار ہے اگر فی الواقع شیعہ کا مشن قائم ہو گیا اور اس نے تبلیغ فرہب شیعہ شروع کی رستیب ہونا نہایت وشوار ہے اگر فی الواقع شیعہ کا مشن قائم ہو گیا اور اس نے تبلیغ فرہب شیعہ شروع کوری ہو۔ آئے وہ کی وہ ہو گیا ہور اس نے تبلیغ فرہب شیعہ شروع کی کہ وہ ہو گیا ہور اس نے تبلیغ فرہب شیعہ شروع کی دی ہو۔ آئے وہ وہ ہوگا جو حضرت المام جعفر صادق کے الفاظ ذیل سے ظاہر ہے۔

يا معلى من اذاع امرنا ولم يكتمه اذله الله به في الدنيا ونزع النور من بين عينيه فه الاخرة وجعله ظلمة تقوده الى النار (اصول كافي ص٨٦)

ترجمہ: اے معلی جس نے ہمارے دین کو فاش کیا اور پوشیدہ نہ رکھا اللہ تعالی اس کوفاش کرتے کے سبب دنیا میں خوار کرے گا۔ اور آخرت میں اس کی دونوں آئھوں کے درمیان سے نور کو برطرف کرد گا اور ہمارے دین کو تاریکی بنادے گا۔ جو اسے دوزخ کی طرف لے جائے گا۔ انتی۔
قال مالحاری خوب ماور کھو کہ جہاں کامیانی کی موہوم امید بھی ہو وہاں لوگ اینا مال یانی کی طرح ہما

بجائے اس سے بے توجی قائم رکھ کربگاڑ دیا۔ (موحد تریف ترآن صفہ ۱۳۲۱)
اقول ان اوراق میں مجتمد لاہوری نے قوم شیعہ کو موسوم امیدول کے سبزیاغ دکھاکر ترغیب دی ہے کہ
سیسے
وہ پنجاب شیعہ مشن کو مالی مرد دیں اور یہ بتایا ہے کہ اگر خدا نخواستہ شیعوں کو خفلت ہے اس مشن کو
فعمان پنچا تو شیعہ جو پہلے ہی ہمت ہار بیشے پھرشاید بھی بھی لیے ندہب حق کو دوسروں تک پنچانے کی

جرات نہ کر سکیں ہے۔ شیعہ کے نزدیک غلبہ اسلام کا حتی وعدہ اب تک پورا نہیں ہوا جب اہام زبان فرر مرمن دای ہے تکلیں ہے۔ تو اس وقت یہ وعدہ پورا ہوگا۔ چنانچہ خلات المنبی میں آیت لیظھرہ علی اللہ ین کللہ کے تحت میں یول لکھا ہے۔ واز امام جعفر صادق مروبیت کہ تاویل ایس آیہ ہنوز مرحفل نیامہ وورجین ظہور حضرت صاحب الزمان بنطور خواجہ رسید زیرا کہ در آل زمان غیراز دین اسلام دیگر نخواجہ دورجین ظہور حضرت صاحب الزمان بنطور خواجہ رسید زیرا کہ در آل زمان غیراز دین اسلام دیگر نخواجہ

ترجمہ: اور امام جعفر صادق سے مروی ہے کہ اس آیت کی تاویل اب تک ظہور میں نہیں آئی۔ جب حضرت صاحب الزمان ظاہر ہوں گے۔ تو ظمور میں آئے گی۔ کیونکہ اس وقت دین اسلام کے سواکوئی اور مذہب نہ رہے گا۔ انتقی۔ ملا محد باقر مجلس نے رسالہ رجعت (مطبوعہ مطبع جعفر لکھنو صفحہ ١٠٢٥٩) ميں یوں ذکر کیا ہے۔ دور حدیث دیگر از حضرت امام جعفر صادق مرویست که حضرت امیر المومنین باحضرت امام حسین یک رجعت خوامد فرمود از جمیع بنی امیه و معاویه و آل معادیه و هر که باد جنگ کرده انتقام خوامد کثیر پس خدا زنده کندی بزار کس راز یا ورال و از ابل کوف و سائز مردم بفتاد بزار کس ودر مفین با معادیه و اصحابش که زنده شده اند ملاقات واقع شده بود معاویه و اصحابش را بهتگی مقتل رساند پس دیگر زنده شوند وايثال رابا فرعون وآل فرعون بهد ترين عذابها معذب كرداند- پس بار ديمر حضرت اميرالمومنين باحضرت تبغيبر بركردو جميع تبغيبرال ظاهر شوند وحضرت رسول علم خودراما آنخضرت بديد وانبياء بهمه درزير علم اوباشد واورا غلیفه کرداندور زمین وشائر امال عاملان و نائبان آنخضرت باشند اطراف عالم و غدارا مروم ور (محفرا زمین بدون تقیه علانیه عبادت کنند و حق تعالی به مینغبر عطا فرماید چند برابر بادشای جمیع ابل دنیا از اول دنیا ^{تا} آخر دنیا ؟ آنکه بهل آید آن وعده که در قرآن یا آل حضرت فوموده که اور ابر جمع و بناغالب گرد اندواز حضرات امام جعفر صادق منقولست که چول حضرت رسول رجعت نماید پنجاه بزار سال ور رجعت بادشای كند- حصرت امير المومنين چل و چهار بزار سال دوار احاديث معتبره وارد شده است كه سوال كردند از آنخضرت از تغییرای آیدان الذی فرض علیک القران لرادک الی معاد آنکه قرآن رابر تو واجب کرده است ترابر میکرداند عمل بازگشت حصرت فرموده والله که ونیامنقفی نشود تا آنکه حضرت رسول و حضرت اميرالمومنين بر دوبدنيا بركروتد دور نجف اشرف يك ويكر و وَر آنجا ملاقات كنند وا آنجام جد، بناكتندك دوازه بزار داشته باشد وابن طاوس از بعضے كتب معتبره روايت كرده است كه عمر دنيا صد بزار سأل است یست بزار سال از سائر مردم است و بشآه بزار سال مدت ملک آل محد است و بادشای ایشال داز حفرت الم جعفرصادق منقولت كه فرمود كه كويا مع بينم كه تفخة از نور كزاشة باشد قبه ازيا قوت سرخ برال زده باشند مزین بانواع جوابر و حفرت امام حبین برآل نشسته باشد دور دور و کنار او نود بزار رقبه نور سبر

باند دمومنال فوج فوج بدیدن آنخضرت آیندو سلام کنند و ندا از جانب حق تعالی بایشال رسد که اے
دوستان من جرچه خواجید از من سوال کنید- که بسیار آزار کشدید و خواری دیدید و مظلوم شدید امروز رو
دیست حاجت از حاجت دنیا و آخرت سوال کنید گرآنکه برآورم و طعام و آب ایشال از بهشت برائے
ابٹال آید-

ترجمہ: دو مری حدیث میں حضرت امام جعفر صادق سے مروی ہے کہ حضرت امیر المومنین معن امام حسین کے ساتھ ایک رجعت فرمائیں گے۔ اور تمام بنوامیہ اور معاویہ اور آل معاویہ سے اور برایک ایسے مخص سے جو حضرت کے ساتھ لڑا ہوگا۔ بدلہ لیں گے ۔ پس خدا زندہ کرے گا اہل کوفہ میں ے ان کے تمیں ہزار مددگاروں کو - اور باتی ستر ہزار مردول کو اور حضرت مقام مفین میں معاویہ اور اس کے ساتھیوں سے جو زندہ ہوں گے۔ اس جگہ ملاقات کریں گے۔ جہاں کہ پہلی ملاقات ہوئی تھی۔ اور معادیہ اوراس کے تمام ساتھیوں کو قمل کریں گے۔ وہ دو سری دفعہ حضرت امیرالمومنین حضرت پیغیبر کے ماتھ رجعت فرمائیں گے۔ اور تمام پیغمبر ظاہر ہوں گے اور حضرت رسول اپنا جھنڈا حضرت امیر کو دیں گے۔ اور تمام انبیاء حضرت امیر کے جھنڈے تلے ہوں گے۔ اور پینمبر خدا حضرت امیر کو دنیا میں خلیفہ بنائمیں گے۔ اور باقی امام اطراف عالم میں حضرت کے عامل و نائب ہوں گے۔ اور لوگ ونیا میں تقیہ کے بغیر تھلم کھلا خدا کی عبادت کریں گے۔ اور خدا تعالی اپنے پیغیبر کو اول دنیا ہے آخر دنیا تک تمام اہل دنیا کو بادشائی سے کئی گنا بادشائی عطا فرمائے گا۔ تاکہ وہ وعدہ بورا ہو جائے جو اس نے قرآن میں آنحضرت سے كيا ب كه ان كے دين كو تمام ويوں ير غالب كروے گا- اور حضرت امام جعفر صادق سے منقول ہے ك جب حضرت رسول رجعت فرہائیں کے تو رجعت میں پچاس ہزار سال بادشاہی کریں گے۔ المیر المومنین چوالیس ہزار سال بادشاہی کریں گے-(اور معتبر حدیثوں میں آیا ہے کہ آنخضرت سے آبیہ ذمل کی تغییر المافت كي كئ- أن الذي فرض عليك القران الرادك الى معاد وه جس نے تجم ير قرآن واجب كيا ب محجم باز گشت کے محل کی طرف اوٹائے گا۔ حضرت نے جواب دیا۔ اللہ کی قسم دنیا کا فاتمہ نہ ہوگا۔ یمال تک کہ حضرت رسول اور حضرت امیر المومنین دونوں دنیا میں پھرآئیں گے۔ اور نجف اشرف میں ایک دو مرے سے ملاقات کریں گے ۔ اور وہاں ایک معجد بتائیں گے جس کے بارہ ہزار دروازے ہوں گے۔ اور ائن طاؤس نے بعض کتب معتبرہ ہے روایت کی ہے کہ دنیا کی عمرایک لاکھ سال کی ہے جیں ہزار سال اور لوگوں کی بادشاہت ہوگی اور اسی ہزار سال آل محمد کی بادشاہت ہوگی- اور حضرت امام جعفرے منقول ہے ك آپ نے فرمایا كە كویا میں د كچير رہا ہوں۔ كە نور كا ايك تخت بچيليا كيا ہے اور اس پريا قوت سرخ كاقبہ لگا دیا گیا ہے۔جو انواع جوا ہرات سے مزین ہے۔ اور حضرت اما حسین اس پر جیٹھے ہیں۔ اور اس کے گرد

نوے بزار تیے نور سزکے ہیں اور شیعہ مرد ہا مروہ آنخضرت کے زیارت کے لیے آ رہے ہیں- اور سلام كررے ہيں- اور خدا تعالى كى طرف سے يہ ندا آراى ہے كہ اے ميرے دوستوجو جاہو جمع سے ماكم تر نے بہت تکلیف اٹھائی اور خوار و مظلوم ہوئے۔ آج وہ دن ہے کہ دنیا آخرت کی حاجوں میں سے جم حاجت کا سوال تم مجھ سے کرو گے میں اسے بورا کروں گا- اور ان کے واسطے کھانا اور پانی بمشت سے آئے كا- انتقى- اى رساله رجعت مين ايك طويل حديث (٢٩ تا ٣٣) كتاب منتخب البعار على نقل كى كنى ب جس کے رادی کو معتمد اور سند کو معتبر کما گیا ہے اس صدیث میں مفضل بن عمر حضرت امام جعفرصاد ت ہے کی سوال امام زمان کے متعلق بوچمتا ہے چنانچہ اس کا ایک سوال یہ ہے کہ جب امام زمان مدینہ میں جائي هے۔ او وہال كياكريں مے۔ امام صادق جواب ديتے ہيں كه وہال حضرت ابوبكرو عمر رضى الله تعالى عنما کو قبروں سے نکالیں گے۔ اور ان کو زندہ کرے تمام مظالم کا اقرار کرلیں گے۔ پھریہ عبارت ہے پی ایثال رابفر ماید بر درخت بر کشند و آتشے را امر فرماید که از زیان بیرول آید و ایثال رابسوز اند بادرخت وبادے رامر فرماید کہ فاکسترایشاں رابدد یا یا شد مففل گفت کہ اے سید من ایس آخر عذاب ایشال خواہد بود قرمود كه بميات اے مففل و الله كوسيد اكبر محد رسول الله و صديق اكبر امير المومنين و فاطمه زبرا و حسن مجتبی و حسین کربلا و جمع ائمه مدی جمگی زنده خواهند شد هر که ایمان محض خالص واشته باشد و هرکه کافر محض بود جمكى زنده خوامند شد و ازبرائے جمع اتمه عليهم السلام و مومنال ايشال را عذاب خوامند كرد حتى كه در شانه روزے ہزار مرتبہ ایشاں را بکشندو زندہ شوند پس خدا بسر جائیکہ خواہدایشاں بردو معذب گرداند-ترجمہ : پس امام زمان ان کی نبست تھم دیں گے۔ کہ ورخت پر اٹھائے جائیں اور ایک آگ کو تھم دیں گے کہ زمین سے نکل کر ان کو درخت سمیت جلادے - اور ایک ہوا کو تھم دیں گے کہ ان کی راکھ کو وریا میں اڑا وے مففل نے عرض کی- اے میرے آقاکیا یمال کا خیرعذاب ہوگا- امام صادق نے فرمایا اے مفضل افسوس اللہ کی فتم کہ سید اکبر محمد رسول اللہ اور صدیق اکبر امیرالمومنین اور فاطمہ زہر اور حسن مجتبی اور حسین شہید کرملا اور ائمہ ہدی سب کے سب زندہ ہوں گے اور جو خالص ایمان رکھتا موگا- اور جو کافر محض ہوگا- سب زندہ مول گے- اور تمام ائمہ علیہم السلام اور مومنوں کے سبب ال کو عذاب دیں گے۔ یمال تک کہ ایک دن رات میں ہزار بار ان کو قبل کریں گے۔ وہ دو سری دفعہ پھر ذیدہ ہو جائیں گے اور حضرت ان کو فرعون اور آل فرعون کے ساتھ برے ہے برا عذاب دیں گے کی اور ذہرہ ہوں گے۔ پس خدا جس جگہ جاہے گا- ان کو لے جائے گا- اور عذاب دے گا- انتھی اس مسئلہ رجعت بر شیعه کا اجماع ہے چنانچہ رسالہ رجعت (۲۰) میں ہے بدا نکہ از جملہ اجماعیات شیعہ است کہ چیش از قیامت ور زمان حضرت قائم از نیکال بسیار نیک و جمعے از بدال بسیا ربد بد نیابر میگرد ندالخ پیخ ابن بابویہ کے

من لا بحفرہ الغقیہ میں حضرت صادق سے روایت کی ہے کہ جو فخص رجعت پر ایمان نہ رکھتا ہو۔ اور متعہ کوطال نہ جانتا ہو وہ ہم میں سے نمیں ہے۔ ناظرین کرام بیہ ہیں۔ سبز باغ جو شیعول کو دکھائے جا رہے ہیں۔ یہ بالطیل جن کو وہی فخص تسلیم کر سکتا ہے کہ جس کو تعصب نے اندھاکر دیا ہو یہ ہے تعمیل ہیں۔ یہ بین اباطیل جن کو وہی فخص تسلیم کر سکتا ہے کہ جس کو تعصب نے اندھاکر دیا ہو یہ ہے تعمیل اس حتی وعدے کی جس کی طرف مجتمد لاہوری نے اشرازہ کیا ہے۔

قال الحائرى صاحبان مناسب ہے کہ پہلے لفظ تحریف کی حقیقت کو آپ سمجھ لیں۔ اس کے بعد مسئلہ کون کی تمام مشکلات خود بخود احسن وجوہ سے تحریف علی ہوتی جائیں گی انشاء اللہ تعالی سنے حضرات! محیف صدر ہے باب تفعیل سے جو حرف سے اخوذ ہے اور حرف سے حد اور طرف مراد ہے اس لیے آت میں ہے۔ من یعبد اللہ علی حوف یعنی علی طرف اور دو مری جگہ فرمایا ہے۔ الا متحو مالفنال یعنی قمال کے لیے کی طرف کو ماکل ہونا تغیر کبیر میں افخر رازی کتا ہے کہ تحریف دراصل حق سے کی چڑکا امالہ ہوتا ہے تحریف قلم اور تلم محرف سے تام کو قط دیاجانا مراد ہوتا ہے۔ یہ تو ہوئے تحریف کے لفوی معنی اب اصطلاحی معنی میں اور تلم محرف سے اصطلاح مفرین میں کی عبارت کے تغیرو تحویل اور کی کلمہ کے لفوی معنی اب اصطلاحی معنی میں اور عاصر کے معنی میں واقع ہو۔ جسے مثال ولیکھ اللہ میں خلاف قرید دائی کو محب اور ناصر کے معنی میں جائے یا معنی میں واقع ہو۔ جسے مثال ولیکھ اللہ میں خلاف قرید دائی کو محب اور ناصر کے معنی میں جزائل اور تحریف کر دیا جائے ۔ خواہ لفظی اور معنوی دونوں متم کی تحریف اور تہدیل کی جائے جسے جزائل عائم کریف کر دیا جائے ۔ خواہ لفظی اور معنوی دونوں متم کی تحریف اور تہدیل کی جائے جسے جواہ نیاد گلے کو صِوَاطُ عَلَی سے بدل دیا جائے یہ سب اقسام تحریف کرف کے ہیں۔ جواہ نواق کرف کے جن سے جواہ نیاد کرات کے جن سے ولا الصنالین کے ساتھ آمین زیادہ کردیا جائے یہ سب اقسام تحریف کے ہیں۔

دوستو! تحریف قرآن کی طرح ایک اور مسئلہ بھی ہے جو تمنیخ قرآن سے موسوم ہے اس لیے فروری ہے کہ تحریف کے ماتھ ہی تمنیخ کا مطلب بھی آپ سمجھ لیں۔

تنتیخ کے معنی ہیں دو سرے علم سے پہلے تھم کازائل اور باطل ہونا اور اس کے لیے سات شرطیں بیان کی جاتی ہیں۔ جیسا کہ خود محدثین اور مفسرین اہلسنت نے وہ شرطیں لکھ دیں ہیں

افادة الشيوخ مطبوعہ لاہور صنحہ ۵ سطر نو بیں نواب صدیق حسن خال فرائے ہیں شخ راشرط ہا است کے آکہ منسوخ شری یاشدنہ عقلی لینی پہلی شرط یہ ہے کہ منسوخ شری عظم ہونا چاہیے۔ نہ عقلی دوم آنکہ ناسخ منفصل و متاخر باشد از منسوخ زیراکہ ہر مقترن است چنانکہ شرط و صفت و استثناء مسمی است بلکہ تخصیص است ۔ لینی منسوخ سے ناسخ علیحدہ اور بعد بیں آیا ہو۔ کیونکہ جو شرط صفت اور استثناء کی طرح ساتھ سخصیص است ۔ لینی منسوخ سے ناسخ علیحدہ اور بعد بیں آیا ہو۔ کیونکہ جو شرط صفت اور استثناء کی طرح ساتھ سخصیص ہوگ ۔ وہ شخ نہیں کہلا سکتا بلکہ اس کا نام شخصیص ہو مون ادبشرع پس انتظام علم بموت شخ و بود بلکہ سقوط تکلیف باشد ۔ لینی شنح کا شرح کے ساتھ ہونا ضروری ہے۔ پس موت کی انقاع محم بموت شخو بود بلکہ سقوط تکلیف باشد ۔ لینی شنح کا شرح کے ساتھ ہونا ضروری ہے۔ پس موت کی



وجہ سے علم کا اٹھ جاتا نتخ نہیں کہلاتا بلکہ وہ تکلیف کاساقط ہونا کہلاتا ہے۔ چہارم منسوخ مقید بوقت نی وبدے است انقضائے آل وقت نئے نیست یعنی منسوخ وقت کے ساتھ مقید نہیں ہو تا۔ کہل اگر مقید منعف مزمل قوی نتواند شداواین تعلم عقل است و اجماع برآن ولالت کرده چه محابه نص قرآن را بج واحد منسوخ کردہ اندلینی نامخ قوت میں منسوخ کی طرح ہو بلکہ اس سے قوی ترکیونکہ ضعف کی مورت میں ضعیف قوی کو زائل نہیں کر سکتا ہے اور یہ عقلی تھم ہے اور اجماع اس پر دلالت کرتا ہے کیونکہ محابہ نے نص قرآن کو خبرواحدے منسوخ نہیں کیا ہے۔ ششم آنکہ منقفی منسوخ غیر مقتفی ناتخ باشد ہمد الازم نیا ید و شرط نیست متناول بودن لفظ ناسخ چیزے راکہ منسوخ متناول اور ربود لعنی ضروری ہے کہ منسوخ کا مقضی مان کا مفتفی تاکه (مسئله) بد الازم نه آئے اور بی شرط نسیس ہے که لفظ ناسخ بھی اس چزیر شامل ہو۔ جس پر منسوخ شامل ہے ہفتم آنکہ منسوخ جائز النسخ بود پس داخل نشود سنیخ براصل توحید زیرا که وے سبحانه کم بزل ولایزال با اساء و صفات خود است وہم چنیں بر چیزے که تابیدہ توقیت آن نبض معلوم شده ازیں جا دریافت شد که شخ در اخبار نیست زیرا که وقوع آل خلاف خبر مجز صادق غیر متعور است- لیعنی سے ضروری ہے کہ منسوخ جائز النع ہو پس اصل توحید میں شنخ داخل نہیں ہوسکا کونکہ خدائے تعالی اپنے ناموں اور صفتوں کے ساتھ ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گا۔ اور اس طرح جس چزی تابيد ہميشہ رہنا اور توقيت كى خاص وقت تك رہنا نص سے معلوم ہو چكى ہو۔ اس ميں ننخ وارد نہيں ہو سكنا اس سے معلوم ہوا كہ جس قدر آيتيں- اخبار كے طور وارد ہوئى ہيں ان بيں شخ داخل نہيں ہوتا كيونكه ايما شخ ظاف خرمخرصادق صلع واقع مونا غيرمتصور ب-

لیں یہ یاد رکھنا چاہیے کہ اہل سنت کے ہاں ان سات شرطوں کے ساتھ کی آیت میں شخ وارد ہوسکتا ہے۔ ان کے سوا پر روایات اہل سنت اگر کسی آیت میں لفظی معنوی یا اعرائی تغیر ہوا ہو تو وہ "منیخ شیس بلکہ یقینا تحریف ہے بعض سینوں نے جان چھوڑا نے کے لیے یہ رویہ اختیار کر رکھا ہے کہ ان کی غربی کتابوں سے جب انہیں تحریف ہونا دکھایا جاتا ہے تو وہ جھٹ کہ دیا کرتے ہیں کہ یہ تحریف نہیں شنیخ ہے اس لیے ای وقت فوراً اس سے یہ مطالبہ کیا جانا چاہیے کہ وہ اپنے ان سات مسلمہ شرطوں کے ساتھ "منیخ ہے اس لیے ای وقت فوراً اس سے یہ مطالبہ کیا جانا چاہیے کہ وہ اپنے ان سات مسلمہ شرطوں کے ساتھ "منیخ کو ثابت کرے۔ ورنہ ان کی مسلمہ سات شرطوں کے خلاف تحریف کو "منیخ کہ کر ٹال دیخ کا ان کو کوئی حق صاصل نہیں ہو سکتا۔ اور ایکی صورت ہیں جب کہ وہ مسلمہ سات شرطوں کے مطابق حمنین حمنین مطبوعہ مطبع اجمدی نوع ک⁴ طابت نہ کرسکے گا۔ تو لاز ہاس کو تحریف قرآن کا قائل ہونا پڑے۔ تغییر انقان مطبوعہ مطبع اجمدی نوع ک⁴ طبت نہ کرسکے گا۔ تو لاز ہاس کو تحریف کے متعلق ابن حصار کا قول بڑی وضاحت سے لکھا ہے۔

انما يرجع في النسخ الى نقل صريح عن رسول الله صلى الله عليه واله وسلم وعن صحابي بقول اية انتهى بلفظه

و من اس کے سوا نہیں کہ شخ قبول کرنے کے لیے رجوع کیا جائے گا- الی مریح حدیث کی اس کے سوا نہیں کہ شخ قبول کرنے کے لیے رجوع کیا جائے گا- الی مریح حدیث کی طرف جو پیغیبراسلام سے منقول ہویا ثقتہ محالی سے جس پر تائخ آیت موجود ہو-

الصاً ١١٦ سطر(١) ميس --

ولا يعتمد في النسخ قول عوام المفسرين بل ولا اجتهاد المجتهدين من غير نقل صحيح ولا معارضة بينه لان النسخ يتضمن رفع واثبات حكم تقر رفي عهده صلى الله عليه واله وسلم فالمعتمدفيه النقل والتاريخ دون الراى والا جتهادانتهي بلفظه-

یعن تمنیخ میں عام مفسروں کے قول بلکہ مجتدوں کے محض اجتباد کا بھی کوئی اغتبار نہیں ہوسکا۔
ہب تک حدیث صحح سے تمنیخ نہ ثابت ہوجائے کے معارض کوئی بینہ اور برہان موجود نہ ہو۔ کیونکہ نخ
کی (قرآنی) تکم کے ازالہ یا اثبات برشامل ہوتا ہے جو عہد پیٹیبراسلام میں مقرر ہو چکا ہو۔ اس سے کسی
، آبت کو منسوخ قرار دینے کے لیے حدیث اور تاریخ کی ضرورت ہے نہ کہ کسی کی رائے اور اجتباد کی۔
وستو! کیوں سن لیا امام سیوطی نے صاف کہ دیا ہے کہ جب تک حدیث صحیح سے یہ ثابت نہ ہو جائے
کہ فلاح منسوخ آبت کے لیے فلال نائخ آبت بتصدیق پیٹیبرعلیہ السلام ہے اس وقت تک کسی مفسریا
مجتد کی ذاتی رائے سے کوئی قرآنی آیت منسوخ نہیں قرار پاسکی۔ موعد تحریف قرآن (۱۸۲۱)

اقول

مجہد لاہوری تحریف کی حقیقت کو خود نہیں سمجھتے وہ دو سروں کو کیا سمجھائیں گے ای واسطے اواطی جگہ صراط کو تحریف لفظی کی مثال بتا رہے ہیں۔ عالانکہ یہ دونودرست ہیں۔ کیونکہ قرات متواترہ میں سے ہیں۔ جیسا کہ انشاء اللہ تعالی عقریب بیان ہوگا۔ ای طرح انسا ولیکم اللہ و دسولہ واللہ بن المنو کو تحریف معنوی کی مثال بتانا بھی درست نہیں کیونکہ اگر اس آیت میں دلی کے معنی ناصر لیے جائیں اور فور تحریف معنوی کی مثال بتانا بھی درست نہیں کیونکہ اگر اس آیت میں دلی کے معنی ناصر لیے جائیں تو یہ ظاف قرید نہیں بلکہ موافق قرید ہیں۔ کیونکہ کلام مومنوں کے دل میں تقویت و تبلی اور ان سے مراد ناصر بی ہے۔ اگر بنظر مرتبی کا خوف دور کرنے میں ہے اور بڑا قوی قرید ہے۔ کہ یمان دلی سے مراد ناصر بی ہے۔ اگر بنظر انسان دیکھا جائے تو اس آیت کا بابعد (ایا ایھا اللہ بن المنو الا تتخذوا الایة بھی اس معنی کی تائید کرتا انسان دیکھا جائے تو اس آیت کا بابعد (ایا ایھا اللہ بن کہ کی آیت سے حضرت علی کرم اللہ وجہ کی سے مجمد صاحب کو یہ خوب سمجھ لینا چاہیے کہ قرآن مجید کی کسی آیت سے حضرت علی کرم اللہ وجہ کی

خلافت بلافضل ثابت نہیں ہوتی۔ اگر ایہا ہوتا تو شیعہ قرآن میں تحریف کے قائل نہ ہوتے اس کی پرئ بحث انشاء اللہ اپنے مناسب مقام پر آئے گی اسی طرح جمتد صاحب کا صبو الط عکمی کو درست اور صوائل عکمی کو محرف بتانا بھی غلط ہے بلکہ حق الا مراس کے برعکس ہے کیونکہ دنیا بھر کے قرآنوں میں صواط علمی موجود ہے۔ حتی کہ شیعہ کے قرآن مترجم میں بھی ایہا ہی ہے۔ اگرچہ اس کا اردو ترجمہ دیا ہے۔ علمی موجود ہے۔ حتی کہ شیعہ کے قرآن مترجم میں بھی ایہا ہی ہے۔ اگرچہ اس کا اردو ترجمہ دیا ہے۔ ولاالصالین کے بعد امین کمنا منع نہیں ہاں آمین کو داخل قرآن نہ سجھنا چاہیے۔

و المحدول المجاري في المنسوخ كے معنی بھى ورست بيان نہيں كيے كيونكہ سقوط عمم اول بھى بلا برل بھى بواكر يا ہے چنانچہ افادة اليشيوخ (صفحہ ٢ سطر٢) بى بيں ہے۔ پنجم آنكہ شرط نيست ور شخ بدل آل وبايل رفتہ اند جمهور بعنی پانچوال مسئلہ ہے ہے كہ كہ لئخ بيل اس كابدلہ شرط نہيں ہے اور جمهور اس كى طرف رفتہ اند جمهور بعنی پانچوال مسئلہ ہے ہے كہ كہ لئخ بيل اس كابدلہ شرط نہيں ہے اور جمهور اس كى طرف كئے بيل۔ انتقى۔ شيخ الطاكفہ طوس نے عدة الاصول مطبوعہ بمبئى جز افى (٢٥) ميل يول لكھا ہے۔ كئے بيل۔ انتقى۔ شيخ الطاكفہ طوس نے عدة الاصول مطبوعہ بمبئى جز الى فى الاحكام الشوعية على وليس من شرطه ان يكون للحكم المنسوخ بدل فى الاحكام الشوعية على

مازعم بعضهم

ترجمہ اور فنخ کی شرط میں ہے یہ نہیں کہ تھم منسوخ کا احکام شرعیہ میں کوئی بدل ہو۔ جیسا کہ بعضوں نے گمان کمیا ہے انتقی- ابن مطبر علی نے تہذیب (نیتہ اللیب شرح التہذیب مطبوعہ مطبع ریاض الرضاء لکھنؤ 221) میں یول تحریر کیا ہے-

ثم النسخ قد يكون لا الى بدل فيشترط وجود لفظ بدل على الزوال

ترجہ: پر شخ بلا بدل ہوتا ہے۔ پس شخ میں ایسے لفظ کا وجود شرط ہے جو عظم اول کے زوال پر والت کرے۔ انتھی زبدۃ الاصول (المعاف المامول بشرح زبدۃ الاصول مطبوعہ مطبع اثنا عشری لکھنؤ ۱۳۵۸) میں یوں ہے۔ و یجو ذبالاشق الا ثقل کما شوراء برمضان وبل بدل کایة ۔۔۔۔۔انصدقۃ اور جائز ہے شخ ساتھ اس عظم کے جو منسوخ ہے اشق و ثقل ہو جیسا کہ روزہ عاشورا کا شخ روزہ رمضان کے ساتھ اس عظم کے جو منسوخ ہے اشتی و ثقتل ہو جیسا کہ روزہ عاشورا کا شخ روزہ رمضان کے ساتھ اور جائز ہے شخ بلا بدل جیسا کہ آیت صدقہ انتھی۔

معلوم ہوا ہوا ہوا ہوں ماحب نے جو تقیر اتقان سے ابن حصار کی دو عبار تیں نقل کی ہیں۔ ان سے معلوم ہوا ہے کہ آپ معمولی عبارت عربی کامجی مطلب نہیں سمجھ سکتے پہلی عبارت کا اخیر حصد یول ہے۔ اوعن صحابی یقول ایة کذانسہ حت کذا

ترجمہ: یا نقل صریح کسی محانی ہے ہو کہ یوں کے کہ فلاں آیت نے فلاں آیت کو منسوخ کردیا انتقی محر مجتمد صاحب نے یوں ترجمہ کیا ہے۔ یا ثقتہ محانی ہے جس پر ناسخ آیت موجود ہو۔ دو سری عبارت کا مطلب ہے ہے کہ یغیر نقل صریح اور بغیر معارضہ بینہ کے شخ میں عامہ مغسرین بلکہ مجتمدین کا قول معتمر

1

لیں۔ لینی بب تک نقل صریح نہ پائی جائے۔ اور ناخ و منسوخ میں صاف مظاہر تعارض نہ پایا جائے۔
بین بب کا قول بلکہ مجتمدین کا اجتماد بھی درباب سخ معتبر نہیں امید ہے کہ اب نا قرین مجتمد المهوری

اللہ منسون کا قول بلکہ محتمد من کا اجتماد میں درباب سخ معتبر نہیں امید ہے کہ اب نا قرین مجتمد المهوری ہے۔

اس اردو ترجہ (جس کے معارض کوئی بینہ اور بربان موجود نہ) کی داد دیں سے شرائط شنے تو مجتمد میں اس کو جم انشاء اللہ مال کو جم انشاء اللہ مال کو جم انشاء اللہ مال و ثابت کریں گے۔

قال الحائري

صاحبان؟ میں وہ جامع العلوم قانون الی ہے جس کے بعد قیامت تک اور آسانی کتاب کی مزرت شیس رہی قرآن کی سب سے بڑی عزت اور عقمت صرف اس میں شیس ہے کہ اس ذریفت اور یقی عمدہ روبالوں اور غلافوں میں مضبوط گریں لگا کربلند طاقجوں پر رکھ دیا جائے۔ شیس ہرگز شیس بلکہ فران کی چی اور واقعی تعظیم و تکریم حقیقت ہی ہے کہ سمجھ کر اس کی روزانہ علاوت کی جائے۔ اور اس کے ادکام او امراور نوابی کی تعمیل کو قرض عین سمجھ کیا جائے (الی ان قال) ایک تھوڑے عرصے کے اندر ای قرآن کی تعلیم نے ان (عربوں) کو ایک خدا برست راست باز انسانوں کی جماعت بنا کر دنیا کی اصلاح کے لیے کھڑا کر دیا۔ اور دو سرول میں بھی انہوں نے وہی روح بھوٹک دی جو قرآنی تعلیم کے مطابق خودان کے اندر کام کر رہی تھی۔ قرآن کی تعلیم کے مطابق خودان کے اندر کام کر رہی تھی۔ قرآن کے متعلق تمام شیعوں کا کہی عقیدہ ہے۔ اس پر شیعوں کو کما جاتا ہے کہ قرآن پر ان کا ایمان شیس ہے اور نہ ہو سکتا ہے جیسا کہ اس عنوان سے ایک چاک ورقہ پیفلٹ لاہوری فارش کے مطابق ہوا ہے اور اس میں خاکسار کو خاص طورے مخاطب کیا ہے۔ ان کی فارش کے مطابق ہوا ہے اور اس میں خاکسار کو خاص طورے مخاطب کیا ہے۔ ان کی فارش کے مطابق ہوا ہے اور اس میں خاکسار کو خاص طورے مخاطب کیا ہے۔ ان کی فارش کے مطابق ہے کہ آیا شیعوں کا ایمان قرآن پر شیس سے یا سینوں کا تمام مطابق اسی مفید نتیجہ سک پڑج شیس اسیوں کی شیس ہو طبقہ تعلیم یافتہ کے نزد یک مفید نتیجہ سک پڑج شیس۔ اس کی خوات کراس۔ اور حوالوں کے مظابق ان ان میں ہو سکتا۔ (موحد تریف قرآن کہ سینوں کی ضیں ہے طبقہ تعلیم یافتہ کے نزد یک کان وقتی تمیں ہو سکتا۔ (موحد تریف قرآن کہ سینوں کی ضیس ہو طبقہ تعلیم یافتہ کے نزدیک

اقول

مجہتد لاہوری نے جو کچھ تاثیر قرآن مجیدے متعلق لکھا ہے وہ شعبہ کی معتبر کتابوں اور عقیدہ کے اللہ اللہ علی معتبر کتابوں اور عقیدہ کے اللہ اللہ علی میں ہے میات کے سب سے سب نعوذ باللہ

منافق و مرتہ تھے۔ انی منافقین میں ہے ایک ہے آخضرت کے اپی دو لڑکیاں کیے بعد دیگر بیاه دی تھی۔

یمی منافقین حضور اقدس مٹائی کی خدمت اقدس میں دہا کرتے تھے۔ یاتی جن کو ایما تدار بتایا جا ان میں سے سب ہے بزرگ یعنی حضرت مولی مرتفی کی نسبت شیعہ کا عقیدہ ہے کہ انہوں نے کال وفیر محرف قرآن بحت کیا تھا۔ گراس کو ایک وفعہ دکھا کرایا چھایا کہ شیعہ علی کو بھی بھرد کھانافیب نہ ہواشید حضرت علی کی شجاعت کے بڑے مداح بین گراس کے ساتھ یہ بھی کہتے ہیں کہ حضرت فاروق اعظم نے ان کی بیٹی ام کلاؤم سے زبرو تی نکاح کرلیا۔ اور وہ یہ بھی کتے ہیں۔ کہ آخضرت کی وفات شریف کے بیر حضرت مولے مرتفے نے ظافت کی طلب میں حضرت فاطمہ زھراء دختر محترمہ حضور رمول اللہ سائی کہا کہ کہا گرایا۔ ان امور میں ہے بعض اس کرھے پر سوار کرکے مہاج بین و انسار سے مدد ما گئے کے لیے دربدر پھرایا۔ ان امور میں ہے بعض اس کرتے ہیں۔ اور باتی انشاء اللہ تعالی دو سرے حصہ میں آئیں گے۔ اب ہم مجتم کا بھر میں ہو کر آئے۔ تو اس کی نسبت شیعہ کا کیا عقیدہ ہونا چاہیے۔ کیا حسب عقیدہ شیعہ آخضرت صلی اللہ مٹائی کی صحبت اور قرآن کرم کا اثر بی کہا عقیدہ ہونا چاہے۔ کیا حسب عقیدہ شیعہ آخضرت صلی اللہ مٹائی کی حجب اور قرآن کرم کا اثر بی موا۔ کہ کل چھ سات آدمی ایمان لائے۔ اور وہ بھی تقیہ کے عامل پھر سے کو کر رست ہو سکا کے۔ کہ قرآن نے عروں کو راست باز انسانوں کی جماعت بنا کر دنیا کی اصلاح کے لیے کھڑا کردیا۔ کیا ہم ان انگار کریں۔ ردیاہ ایمان

قال الحائري

صاحبان سب سے پہلے جس بزرگ وار نے اپنے عمل سے ونیا کے مامنے اپنی نگاہ میں عن اور عظمت قرآن قائم ہونے کا جبوت دیا۔ وہ حضرت عثمان تھے جس نے تعظیم و تو قیر قرآن کا طریقہ اس کو آگ میں جلا دینا مقرر کیا۔ اور الی جامع العلوم کتاب اللی کو بنابر اعتراف اہل سنت کے ہر لئم کی تحریف سے محرف کردیا۔ جس سے قیامت تک قرآن ان کار ہیں منت اور ممنون کرم رہے گا۔ تحریف کے مسئلہ کو قرآنوں کو جانا کم آپ ای جلسہ میں تفصیل کے ماتھ من لیس گے۔ مگر خلیفہ المسلمین حضرت عثمان کا قرآنوں کو جانا کم ان معترہ کتب الجسنت میں بقید صفحہ ضرور ملاحظہ کرلیں۔

صحیح بخاری مطبوعه جمینی جلد ۲ فضائل القرآن ۲۵ سطر۳ تاریخ اعتم کوفی ترجمه فارسی مطبوعه جمینی

NJ ILM

رومنته الاحباب مطبوعه تتيغ بهادر جلد ٢٠ ص ٢٢٩ مطر٢

مفکوة مطبوعه محمدی دبلی ۱۵۰ سطر ۱۸ تفییراتقان مطبوعه احمدی ۸۴ سطر ۱۸ صواعق محرقه مطبوعه بهیه مصرا ۱۰ سطر ۱۳ تاریخ خمیس مطبوعه مصر جلد دوم عل ۲۰۲ سطر ۱۳ تخفه غذیه مطبوعه رفاه عام لاجور ۵۵ سطر ۱۹ سکسر زآف محمد واهنگشن اورنگ ۱۸ دغیره وغیره

ان تمام حوالوں میں حضرت عثمان کا قرآن کو پھاڑنا اور جلانا دونوں فتم کی قرآنی تعظیم اور تکریم تفسیل سے مرقوم ہے اور رسالہ موعد حسنہ میں ان حوالوں کی کھمل عبار تیں مع التراجم اور بعض ضروری نوٹوں کے درج میں- ملاحظہ فرما کر آپ خود ہی فیصلہ کرلیں کہ آیا قرآن مجید کو پھاڑنا اور جلا دینا ایمان کا اقتفاء ہو سکتا ہے یا کیا۔

جن کو تاریخ پر عبور حاصل ہے۔ وہ انکار نہیں کر سکتے کہ ولید بن پزید بن عبدالملک فلیفتہ المسلمین نے حضرت عثان کے احراق و تحریف قرآن کو ناکائی سمجھ کر کتاب اللہ کی یہ عرات افزائی کی کہ اس پراس قدر تیر برسائے کہ قرآن پارہ پارہ ہوگیا تاریخ الحلفاء مطبوعہ سرکاری لاہور ص ۲۵۳ سطرہ میں الم سیوطی نے بھی مناقب ولید بن برید بن عبدالملک ذکر فرماتے ہوئے یہ لکھ ویا ہے کہ وردشق المصحف بائسھام کہ ولید نے قرآن مجید پر تیرمارے وفسق ولم یخف الاثام اور اس نے فسق المصحف بائسھام کہ ولید نے قرآن مجید پر تیرمارے وفسق ولم یخف الاثام اور اس نے فسق ان کیااور گناہوں سے نہیں ڈرا۔ عام طور پر تواریخ میں سینوں کے اس فلیفہ ولید بن برید کے حالات میں ان کیااور گناہوں سے نہیں ڈران پر کس کا کا تیروں سے قرآن کو غمال کر دینے کے بعد بھی آگر ایمان ویسے کا ویسا ایمان ہے۔ رافعنیوں کا یا خارجیوں کا تیروں سے قرآن کو غمال کر دینے کے بعد بھی آگر ایمان ویسے کا ویسا کی رہا تو سبحان اللہ ایسے ایمان کا کیا کمنا ایسا ایمان آپ بی کو مبارک ہو۔ خلیفتہ السلمین کے بعد اب فتیر المسلمین کا ایمان بھی قرآن پر طاحظہ کر لیس۔ کہ قرآن مجید کی تعظیم و تحریم کمال تک انہوں نے محوظ فیلید کریں۔

در عثار میں جو سینوں کے نقہ کے معتر کتاب ہے۔ یہ جیب و غریب فقے مرقوم ہے جس سے قرآن پر ان کے ایمان ہونے کا پورا ثبوت ملتا ہے۔

لور عف فكتب الفاتحة بالدم على جبهة وانقه جاز الا استشفاء و بالبول ايضًا ان علم فيه شفاء لا باس به انتهى بلفظه

لعنی اگر کسی کو تکسیر کا مرض ہو- اور سورہ فاتحہ کو خون سے اس کی پیشانی اور ناک پر لکھ دیا

جائے تو نیت استفاء جائز ہے۔ اور ای طرح اس کے پیٹاب ت لین میں مضالف جیں آ میں آ اور ای طرح اس کے پیٹاب ت لین میں مضالف جیں آ

قاوے قاضی فان ۳۱۳ اور قاوت مراجب برحاشیہ قاضی فال ۱۳ مالکیری ۱۳۲۰ والذی رعف فلا یرقادمه فارا دان یکتب بدمه علی جبینه شیئا من القران قال ابوبکر الا سکاف یجو زقیل لوکتب بالبول قال لوکان فیه شفاء لا باس به قیل لوکتب علی جلدمیته

بعنی جس کی تکسیر پھوٹے اور خون نہ تھے سو اگر وہ خون کے ساتھ اپنی چیثانی بہ پھر لکھے تو ہاز ہے۔ اور اگر پیشاب سے قرآن لکھے اور اگر مردار کی کھال ہر قرآن لکھے تو اگر اس بیں شفا ہو تو مغمانقہ نہیں ہے۔(معاذ اللہ)

لاحول ولا قوة الابالله (معاذ الله) پیشاب اور خون جیسی نبس چیزے قرآن مجید اکھا جائے اور پھراس میں شفاء کی امید ناوانوں ہے ہے اوئی تو خدا کے کمال غضب اور قرکا یاعث ہے اان ایس شفا غاک ہوگی۔ بلکہ خدا کا قرو غضب نازل ہوگا۔ بیاری برصے گی۔ کیا بجیب کہ بیہ سوء اوئی ہلاکت کا بھی باش خاک ہو جائے ہو فتوے بازی قرآن کی کوئی آیت سے ماخوذ ہے قرآن تو چیخ پکار کر کھہ رہا ہے والا یہ سما الا المصطہرون جس کتاب خدا کا خالی مس کرنا بھی نبض قرآن بغیر طمارت اور پاکی کے نا جائز ہو اس آو خوان اور پیشاب جیسی نا پاک چیز ہے لکھنے کے لیے جائز ہونے کا فتوے جو ذہب دے رہا ہو وہ کس طرح قرآن اور پیشاب جیسی نا پاک چیز ہے لکھنے کے لیے جائز ہونے کا فتوے جو ذہب دے رہا ہو وہ کس طرح قرآن کی ایمان رکھنے کا جھوٹا دعوے کر سکتا ہے شرم 'شرم 'شرم ' پس میں اب بیہ کموں گا کہ دوستوا شیمول کی نظروں میں قرآن بجید کی عظمت اور عزت جنتی گنا کم یا زیادہ لیکن سینوں کے خلفاء راشدین و فقہا مسلمین کی نظروں میں قرآن بجید کی عظمت اور عزت جنتی گنا کم یا زیادہ لیکن سینوں کے خلفاء راشدین و فقہا مسلمین کی نظروں میں قرآن بجید کی عظمت اور عزت جنتی گنا کم یا زیادہ لیکن سینوں کے خلفاء راشدین و نقہا مسلمین کی نظروں میں قربالکل ہی نہ تھی ورنہ وہ ایسے قابل شرم فتوے وینے کی کسی طرح بھی جرات نہ کرتے کی نسی قرآن ۲۲۵ کا

اقول

احراق مصاحف کی نسبت ہم پہلے بھی لکھ بچے ہیں۔ مگر مجتد اللهوری کی خاطر پچے بمال بھی کار بڑے ہیں۔ مگر مجتد اللهوری کی خاطر پچے بمال بھی مخزارش کی جاتی ہے۔ دعزت صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ کے عمد ہیں قرآکو صحائف پر ایک جگہ جع کر دیا گیا تھا۔ تاکہ حاملان قرآن کی وفات سے اس میں سے کوئی شے ضائع نہ ہو جائے اور وہ مجموع مشمل براحرف سبع تھا حضرت ذوالنورین رضی اللہ تعالی عنہ کے حمد ہیں مسلمانوں میں اختلاف پیدا ہوا بعض دوسروں سے کئے کہ ہمارا حرف (لغت) تمهارے حرف سے بہتر ہے۔ چو نکہ اس سے اہل اسلام میں

اندان کا اندیشہ باہمی تکفیرکا دفد نہ تھا اس لیے حضرت عثان غی بڑتھ کے بشورہ اصحابہ کرام بن میں حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ بھی شامل سے پہلے تیار شدہ مجموع کو صرف لفت قریش باتی رکھ کر بیوایا۔ جب اس طرح کی مصاحف کصے جاچکے تو حضرت عثان بڑاتھ نے بنا پر صدیث بخاری حکم دیا کہ ان کے واج وجی ہے ہوں جلا دیا جائے۔ مجہد لاہوری ای احراق پراعتراض کردہا ہے' اور مخلف کے واج وجی بیادی سب سے پہلے کی کتاب ہے۔ جواب میں گزارش کے والے دے رہاہے جن میں سے صحیح بخاری سب سے پہلے کی کتاب ہے۔ جواب میں گزارش کے صدیث بخاری کے اس محرف کو جس میں احراق ذکور ہے۔ تسلیم کرنے میں ہمیں کا ل ہے۔ کو حدیث بخاری متوفی ۱۵۲ھ کی صحیح سے پہلے کی ایک معتبر کتاب میں اس احراق کو بے بنیاد بتایا گیا ہے کہ دار سے اس کا در سے کہ فقہ کا ایک مسئلہ ہے کہ جب مسلمانوں کو غیمت میں کوئی مصحف ہاتھ گے اور سے معلم نہ ہو کہ اس میں کیا لکھا ہے تو رات یا انجیل یا زبور تواس کی بیج بعد تقسیم مابین الغانمین جائز نہیں معلوم نہ ہو کہ اس میں کیا لکھا ہے تو رات یا انجیل یا زبور تواس کی بیج بعد تقسیم مابین الغانمین جائز نہیں اورنہ اس کا جانا جائز ہے چنانچہ امام محمد رحمہ اللہ تعالی (متوفی ۱۸۹ھ) فرماتے ہیں

ولا ينبغى له ان يحرق بالنار ذلك ايضا لائه من الجائز ان يكون فيه شئى من ذكر الله تعالى ارمما هو من كلام الله تعالى ففى احراقه بالنار من الاستخاف ما لا يخفى- والذى يروى عن عثمان رضى الله تعالى عنه انه فعل ذلك بالمصاحف المختلفة حين اراد جمع الناس على مصحف واحد لا يكاد يصح فالذى ظهر منه من تعظيم الحرمة لكتاب الله تعالى والمداومة على تلاوته آناء اليد والنهار دليل على انه لا اصل لذلك الحديث- (ش تيركير قس الائت الرثى المتونى ١٨٣ه مطبوع دائرة المعارف النامي حيار آباد كن ١٣٥٥ه بر عانى ص ١٢٥٠)

آرہمہ: اور امیر لفکر کو یہ بھی نہ چاہیے کہ اس مصحف کو آگ جلا دے کیونکہ ممکن ہے کہ اس میں کوئی شے ذکر اللی یا کلام اللہ کی فتم ہے ہو۔ بس اے آگ کے ساتھ جلانے میں بے حرمتی ہے جو پوشیدہ نہیں۔ اور وہ جو حضرت عثمان بڑا تھ کی نسبت مروی ہے کہ جب انہوں نے لوگوں کو ایک مصحف پر جمع کرنا چاہا۔ تو مصاحف تحتاف کو جلا دیا۔ سویہ قریب نہیں کہ صحح ہو۔ کیونکہ ان سے جو کہ اللہ کی حرمت کی تعظیم اور رات دن اس کی تلاوت کی مداومت ظہور میں آئی ہے مال باللہ کی حرمت کی تعظیم اور رات دن اس کی تلاوت کی مداومت ظہور میں آئی ہے لا اس بات کی ولیل ہے کہ وہ حدیث بے بنیاد ہے۔ انہوں اگر ہم احراق نہ کور کو صحیح تسلیم کرلیں لا اس بات کی ولیل ہے کہ وہ حدیث بے بنیاد ہے۔ انہوں اگر ہم احراق نہ کور کو حصیح تسلیم کرلیں گرائی صورت میں بھی حضرت عثمان بڑا تھ ہوئی اعتراض نہیں آئی کیونکہ جن مصاحف کو جلانے یا گرائی صورت میں بھی حضرت عثمان بڑا تھ ہوئی اعتراض نہیں آئی کیونکہ جن مصاحف کو جلانے یا گرائی صورت میں بھی حضرت عثمان بڑا تھ ہوئی اعتراض نہیں آئی کیونکہ جن مصاحف کو جلانے یا گرائی صورت میں بھی حضرت عثمان بڑا تھا۔ ان میں قراء ت شاؤہ بھی تھیں اور پھی الفاظ بطور تغیر کی دیان مبارک سے سے ہوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے ہوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے جو صحابہ کرام نے حضور اکرم شائی جانے کی دیان مبارک سے جو صحابہ کرام نے حضور اکرم شائی جانے کی دیان مبارک سے سے ہوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے جو صحابہ کرام نے حضور اکرم شائی جانے کیادہ میں میں کی دیان مبارک سے بھوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے جو صحابہ کرام نے حضور اکرم شائی جانے کی دیان مبارک سے سے ہوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے سے ہوئے تھے۔ علاوہ کی دیان مبارک سے سے موسی سے حضور اکرم شائی کی دیان مبارک سے سے ہوئے تھے۔ علاوہ کور کی کور کی کی دیان مبارک سے سے دیان مبارک سے سے میں کور کی کی دیان مبارک سے دیان مبارک سے دیان کی دیان مبارک سے دیان مبارک سے دیان کی دیان مبارک سے دیان مبارک سے دیان کی دیان کی دیان کی دیان کی کیان کی دیان کی



اذیں ان میں بعض منسوخ التلاوۃ آیتیں بھی تھیں۔ ایسے مصاحف سے اہل اسلام میں فتنہ عظیم کا اذیں ان میں بعض منسوخ التلاوۃ آیتیں بھی تھیں۔ ایسے مصاحف سے اہل اسلام میں فتنہ عظیم کا اللہ اختال قوی تھا جس کا سدباب کماحقہ ای طریق سے ہو سکتا تھا۔ جو حضرت ذوالنورین رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اختیار کیا۔ اور اس وقت میں ورست و مناسب تھا حتی کہ جناب مولی مرتضیٰ کرم اللہ وجہ فرماتے ہیں کہ احراق مصاحف کے معاملہ میں حضرت عثمان کے حق میں بجر بھی کچھ نہ کمو تفسیر انقان (مطبوعہ مصرجز ٹائی کے معاملہ میں حضرت عثمان کے حق میں بجر بھی کچھ نہ کمو تفسیر انقان (مطبوعہ مصرجز ٹائی کے) میں ہے۔

اذا احتيج الى تعطيل بعض اوراق المصحف لبلاء ونحوه فلا بجوز وضعها في شق اوغيره كانه قد يسقط ويوطا ولا يجوز تمزيقها المافيه من تقطيع الحروف وتفرقة الكلم وفي ذلك آزراء بالمكتوب كذا قاله الحليمي قال رئه غسلها بالماء وان احرقها بالنار فلا باس احرق عثمان مصاحف كان فيها ايات وقرات منسوخة ولوينكر عليه وذكر غيره ان لا حراق اولى عن الغسل لان الغسالة قد تفع على الارض وجزم القاضى حسين في تعليقه بامتناع الاحراق لانه خلاف الاحترام والنووى بالكراهة وفي بعض كتب الحنفية ان المصحف اذابلي لا يحرق بل يحفرله في الارض ويدفن فيه وقفة لتعرضه للوطء بالاقدام-

ترجمہ: جب بوسیدگی وغیرہ کے سبب مصحف کے بیض اوران کے تلف کرنے کی ضرورت پرے تو ان کا کسی شکاف وغیرہ میں رکھ ویناجائز نہیں کیونکہ بعض وقعہ وہ گر پڑتے ہیں اور بابال ہوتے ہیں۔ اور نہ ان کا پجاڑ وینا جائز ہے کیونکہ اس میں تقطیع حروف اور تفرقہ کلمات ہے اور اس میں کمتوب کی بے حرمتی ہے حلیمی نے ایسا ہی کما ہے اور فرایا کہ ان کا پانی ہے وھو وینا بھی جائز ہے۔ اور اگر ان کو آگ میں جلا وے تو پچھ مضا گفتہ نہیں کیونکہ حضرت عمان رضی اللہ تعالی عنہ نے ان مصاحف کو جلاویا جن میں آئتیں اور منسوخ قرائتیں تھیں اور کسی نے آپ پر انگار نہ کیا اور حلیمی کے موا اوروں نے کما کہ عنس ہے۔ اور قاضی حیون نے آپ پر انگار نہ کیا اور حلیمی کے موا اوروں نے کما کہ احراق اچھا ہے۔ کیونکہ یہ ظاف احرام ہے اور نودی نے کما کہ احراق مروہ ہے اور حفیہ کی بعض کابوں میں ہے کہ جب مصحف ہوسیدہ ہو جائے اسے جلانا نہ جا ہیے۔ بلکہ اس کے لیے ذہن میں گڑھا کھودنا چا ہیے اور وفن کر وینا چا ہیے اور اس میں تائل ہے کیونکہ پایال ہونے کا اختمال ہے انتہی حضرت عمان رضی اللہ تعالی عنہ کے ضل پر کسی صحابی نے اعتراض نہیں کیا۔ تو معلوم ہو گیا کہ جب مصوف کی فرق نہ آیا کیونکہ متوائر و جمع علیہ اور منسوخ اتلاوۃ آیات کی گئی سے کم ان طلات میں وی فعل جائز درست تھا۔ اور یہ بھی مرکوز خاطر رہے کہ ان مصاحف کے تلف سے کم ان طلات میں وی فعل فرق نہ آیا کیونکہ متوائر و مجمع علیہ اور منسوخ اتلاوۃ آیات سے پاک

ر آن موجود رو گیا اور رہا مجمی اس لغت میں کہ جس میں پہلے نازل ہوا تھا اور امت بیشہ کے لیے اختلاف عظیم سے فیج گئی-

مجتد لاہوری کا یہ کمنا (اور الی جامع العلوم کتاب اللی کو بنابر اعتراف الجسنت کے ہر شم کی بین کہ اللہ نت کے ہر شم کی بین کہ اصل قرآن وہی تھا۔ جو حصرت بین کہ اصل قرآن وہی تھا۔ جو حصرت علی کرم اللہ تعالی وجہ نے جمع کرکے چھپا دیا اور اب جو قرآن موجود ہے وہ سراسر محرف ہے اگر ولید نے قرآن پر جیرار کراسے پارہ پارہ کردیا تو یہ اس کی خطاہے اس کا یہ فعل ہمارے واسطے سند نہیں ہو سکتا۔

ماحب طعن السان قصہ احراق مصاحف پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں۔ فراواں جرت ہے بناب طوی علیہ ماعلیہ بعض علمہ کو بھڑکا کر سینوں کے مدرے کہ خالی قرآن سے اور حدیث سے نہ تنے پوکھوائیں خدام ولا ان کو خطاب محرق القرآن کا نہ فرمائیں اور بیچارے عثان فیر خواہ امت شفیع امتال کو بہب احماق مشکوک القرآن کے محرق القرآن بتائیں چار دن کی بات ہے معرکہ اجود ہیاکہ کمتر از معرکہ ببب احماق مشکوک القرآن کے محرق القرآن بتائیں چار دن کی بات ہے معرکہ اجود ہیاکہ کمتر از معرکہ کرلانہ تھایاد سیجیے کہ جب کفار نابکار نے کلام اللی شہید کیے اور غریب ایمانداروں نے اوراق سوخند حکام بافرجام کو دیے کس نے آئھوں پر پٹی بائدھ کی کون کان میں تیل ڈال بیٹا کس کی مساہلت اور خرابت افرام کو دیے کس نے آئو قرآن کی الی مار بڑی کہ طبقہ الث کیا اور سارا کارخانہ پیٹ کیا رشق النبال علی اصاب الفلال مطبوعہ مجمع البحرین لودیانہ ۱۲۸ھ میں میں

اب ہم ناظرین کی توجہ مسئلہ تکسیر کی طرف مبذول کرانا چاہتے ہیں ہمارے ہاں حرام شے کے ماتھ علاج جائز نہیں چنانچہ زاد المغاد (مطبوعہ مصرجز ٹانی ص ۱۰۱) میں یوں لکھا ہے۔

فصل في هديد صلى الله على وسلم في المنع من التداوى بالمحرمات روى ابوداؤد في سننه من حديث ابي الدرداء قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الله انزل والدواء و رجعل لكل داء دواء فتدا ووا وه تداروا بالمحرم ذكر البخارى في صحيح عن ابن مسعود ان الله لم يجعل شفاء كم فيما حرم عليكم وفي السنن عن ابي هريره قال نهى رسول الله عليه وسلم عن الدواء الخبيث

ترجمہ: آنخضرت کا طریق سے تھا کہ حرام چیزوں کے ساتھ دواکرنے سے منع قرماتے تھے چنانچہ ابو داور نے سنی بروایت ابو الدرواء نقل کیا ہے کہ رسول اللہ ملٹی کیا نے فرمایا بیاری اور دوا نازل کی سب اور جربیاری کے لیے دوا بنائی ہے۔ پس تم دواکرو اور حرام چیز کے ساتھ دوا نہ کرو اور امام بخاری سے اور جربیاری کے لیے دوا بنائی ہے۔ پس تم دواکرو اور حرام چیزوں میں تمہاری شفاء مقرر نہیں کی۔ ساتھ میں بروایت ابن مسعود ذکر کیا ہے کہ اللہ نے جرام چیزوں میں تمہاری شفاء مقرر نہیں کی۔ اور سنن عمل بروایت ابو جربی وارد ہے۔ کہ رسول اللہ نے خبیث دوا سے منع قرمایا ہے۔انتھی ور مخار



كمكب اللحف ولاياحته) ميس ہے-

وكذاكل تداوى لا يجوز الابطاهر لابنجس

ای طرح علاج کرنا جائز نہیں گریاک چیزے نہ نجس ہے۔ انتقی ور مخار (کتاب اطمارة ہل المیاه) ہی میں وو سری جگہ یوں ہے۔

اختلف بالتداوى بالمحرم وظاهر المذهب المنع كمافى رضاع البحر

حرام چیزے دوا کرنے میں علاء کا اختلاف ہے اور ظاہر فدہب سے کہ درست نہیں جیماکہ بحرا لرائق کی کماب الرضاع میں ہے۔ انتھی۔

ر دالخار میں اس قول کے تحت میں ہے۔

ففى النهاية عن الذخيرة يجوزان علم فيه شفاء ولم يعلم دواء اخروفى الخانية فى معنى قوله عليه الصلاة والسلام ان الله تعالى لم يجعل شفاء كم فيما حرمه عليكم كمارواه البخارى ان مافيه شفاء لاباس به كما يحل الخمر للعطشان فى الضرورة وكذا اختاره صاحب الهداية فى التجنيس فقال لورعف فكتب الفاتحة بالدم على جبهته وانفه جازللا ستشفاء بالبول ايضاً ان علم فيه شفاء لا باس به لكن لم ينقل وهذا لان الحرمة ساقطة عندا لا ستشفاء كحل الخمر و الميتة والعطشان و الحائع

ترجمہ: نما یہ میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ حرام چیز سے دوا کرنا جائز ہے اگر اس میں شظامطوم
ہواور اس کے سواکوئی اور دوا معلوم نہ ہواور فاوی قاضی خال میں ہے کہ آنخضرت نے جو فرایا ہے کہ
اللہ تعالی نے حرام چیزوں میں تمہاری شظا نہیں ٹھرائی جیسا کہ امام بخاری نے اسے روایت کیا ہے ال
کے معنی جیں کہ جس میں شفا (متیقن) ہے اس سے دوا کرنے میں مضا گفتہ نہیں جیسا کہ ضرورت و مجودی
میں پاسے کے لیے شراب کا پیناجائز ہے۔ اور اس طرح صاحب ہدایہ نے تجنیس میں اسے افتیار کیا ہے
اور فرمایا ہے کہ اگر کسی کو تکمیر کا عرض ہو۔ اور وہ سورہ فاتحہ کو خون سے اپنی پیشانی اور ناک پر لکھ لے فرف
شفا یابی کے سب یہ جائز ہے اور پیشاب سے بھی لکھنے میں ندا گفتہ نہیں اگر اس میں شفا معلوم ہو گئی ہو جاتی ہو جاتی ہو جاتی ہو جاتی ہو میں اور جواز کی وجہ یہ ہے کہ شفا معلوم ہونے کے وقت حرمت ماقط ہو جاتی ہو سیسا کہ ضرورت کے وقت حرمت ماقط ہو جاتی ہو سیسا کہ ضرورت کے وقت حرمت ماقط ہو جاتی ہو سیسا کہ ضرورت کے وقت ہیا ہے کہ شراب کا پینا اور بھو کے لیے عروار کا کھانا جائز ہے۔ انتھی۔

في الحاوي القدسي اذا سال الدم من انف انسان ولا ينقطع حتى يخشي عليه

الموت وقد علم انه لوكتب فاتحة الكتاب او الاخلاص بدالك الدم على جبهته ينقطع فلا يرخص له فيه وقيل يرخص كماير خص في شرب الخمر للعطشان واكل الميتة في المخمصة وهو الفتوى-

رجمہ: جب خون آدی کی ناک سے روال ہو- اور بند نہ ہوتا ہو یمال تک کہ اس کے مرجانے کا خوف ہو اور اے اس بات کاعلم ہو کہ اگر وہ سورہ فاتحہ یا سورہ اخلاص کو اس خون ہے اپنی پیشانی مر لکھ لے تو خون بند ہوجائے گا۔ پس اس کو لکھنے کی اجازت نہیں اور کما گیا ہے۔ کہ اجازت ہے جیاک اضطرار کے وقت پاسے کو شراب کے بینے اور بھوک شدت میں مردار کے کھانے کی اجازت ہے اور میں فتوی ہے انتھی عبارات ذركورہ بالاے ملعوم ہواكہ السنت كے نزويك حرام چیزوں سے دوا کرنا جائز شیں اور میں حنفیہ کے ہاں ظاہر فدہب ہے مگرجب حالت اضطرار ہو- اور اس بات کاعلم و تنین ہو کہ حرام چیز کے استعمال سے بیاری جاتی رہے گی۔ اور اس حرام چیز کے سوا اس بہاری کی کوئی اور دوا بھی معلوم نہ ہو۔ تو الین حالت میں بھی حرام چیز کے استعال کی اجازت نہیں۔ ہاں اس صورت میں بعض نے جواز کا فتوی دیا ہے جب کہ مرجانے کا خوف ہو۔ الی بی حالت اضطرار میں صرف بعض نے سورہ فاتحہ یا اخلاص کوخون سے لکھنے کی اجازت دی ہے رہابیشاب سے فاتحہ کا لکھنا سووہ الی حالت میں کسی کامچی ذہب نہیں ہے اور اس کے ساتھ یہ بھی شرط ہے کہ اس میں شفاء یابی کاعلم ہو اور یہ کوئی کمہ شیس سکتا ہی ہے تعلیق بالحال ہے للذا كسى صورت ميں پيشاب كے ساتھ لكھنے كا جواز ثابت نہيں تغيير القان (جز ثانی ١٤٠) ميں صاف لکھا ہے۔ و تحوم کتابتہ بشئی نجس لین نا پاک چیزے قرآن کا لکھنا حرام ہے۔ اتنی- اب مجتند لاہوری کی دیائنداری کو دیکھیے اول تو اس نے رومخار (جے وہ رومخار الکھ رہا ب) سے مسکلہ زر بحث کے متعلق بوری عبادت نقل نہیں تاکہ صورت کا کسی کو پہند نہ لگے۔ دو مرے کو بیر کہ ان علیمہ فیہ شفاء (اگر اس میں شفامعلوم و متیقن ہو) کا ترجمہ (اگر اس میں شفاكي اميد ركفتا مو) غلط كيا ہے - - اور لكن لم ينقل (ليكن چيشاب سے لكھنے كاجوا منقول نہيں كو عداً پن انداز کر کیا ہے تیرے ہے کہ جازللا ستشفاء کارجمہ (بہ نیت استشفاء جائز ہے) غلط کیا ہے کیونکہ اس کا مطلب میہ ہے کہ جواز اس لیے ہے کہ اس امر کاعلم و ہیتن ہو کہ اے شفا حاصل ہو جائے گی۔

ما ربیل ہو جانے گا-شیعہ کہتے ہیں حضرت علی کرم اللہ وجہ نے جو قرآن جمع کیا تھا۔ وہی اصلی قرآن تھا۔ اس سے قرآن موجود کی عظمت و عزت ان کے دلول میں کچھ نہیں میں وجہ ہے کہ شیعہ میں حافظ قرآن



نہیں ہوتے بلکہ عافظ قرآن کو تقارت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں عالانکہ اللہ تعالی فراتا ہے بل ھو ایات بینات فی صدور اللہ ن او تو العلم (بلکہ وہ کملی آیتیں ان لوگوں کے سینوں ہی موجود ہیں جن کو علم دیا گیا ہے ترجمہ شیعہ مولوی سید ناصر حسین نے رشق النبال علی اسحاب الفلال ۳۹ ہیں لکھا ہے اناللہ لحفظون کے یہ معنی نہیں ہیں کہ ان جولا ہے جالموں کے یاد کر نے الفلال ۴۹ ہیں لکھا ہے اناللہ لحفظون کے یہ معنی نہیں ہیں کہ ان جولا ہے جالموں کے یاد کر نے محافظت کی ہوگی۔ بلکہ اس سے مراد یہ ہے کہ علیم علی الاطلاق نے قرآن صامت کی عافظت قرآن ناطق کی مقارنت سے کی ہے۔ کہ ہر زمانہ ہیں ایک معصوم مفترض الطاعۃ کو علم عافظت قرآن ناطق کی مقارنت سے کی ہے۔ کہ ہر زمانہ ہیں ایک معصوم مفترض الطاعۃ کو علم اس کے الفاظ و معانی کا مطابق واقع کے ایسا عطا فرمایا ہے کہ گفلین کے وجود کی برکت سے عالم قائم ہے جیسا کہ اوعید المحیہ ہیں وارد ہے

بوجوده ثبتت الارض والسماء وبيمنه رزق الورى وبه يملا الله الارض قسطا وعدلاكماملثت ظلما وجورا

و یکھو عظمت قرآن کی ہمارے اعتباد میں ہے یا تہمارے عقیدہ میں سیعلم الذین ظلموالی منقلب ینقلبون ناظرین آپ نے و کھ لیا کہ شعبہ قرآن کی تعظیم یوں کرتے ہیں کہ اے امام غائب ک پاس محفوظ جانتے ہیں۔ اور ہر دور میں غائب کو ذریعہ قیام عالم سیجھتے ہیں اب ہم مجمتد لاہوری ہے دریافت کرتے ہیں۔ کہ آپ جو لکھ رہے ہیں کہ بلکہ قرآن کی کچی اور واقعی تعظیم و تکریم ای میں ہے کہ سیجہ کراس کی روزانہ تلاوت کی جائے اور اس کے احکام اور امراور نوابی کی تقیل کو فرض عین سیجہ لیا جائے اس ہدایت پر کوئی شیعی عمل نہیں کر سکتا کیونکہ اصلی قرآن حسب عقیدہ شیعہ امام غائب کے پاس ہے۔ روزانہ تلاوت کس کی جائے۔ اور اس قرآن محفوظ کے احکام پر کس طرح عمل کیا جائے قرآن موجود کی جو عظمت و عربت شیعہ کی خاص ہو اس کا اندازہ ذیل سے بخوبی لگ سکتا ہے۔

(۱) فروغ كافي للكليني كتاب الحيض بأب الحائض والنفساء تقروان القرآن ص ۵ يس ب على بن ابرهيم عن ابيه عن ابن ابي عمير عن زيد الشحام عن ابي عبدالله عليه السلام قال تقراء الحائض القرآن والنفساء والجنبا ايضا-

ترجمہ: (بحد ف اسناد) امام جعفر صادق علیہ السلام فرمائے ہیں کہ حیض والی عورت قرآن پڑھ کے اور نفاس والی عورت او جنب بھی پڑھ لیا کریں-انتھی-

(۲) اصول كانى (كمّا الجدياب الاشاره والنص على امير المومنين عليه السلام ص ۱۸۰) يس -- الم عن زيد بن جهم الهلالي عن ابي عبد الله عليه السلام قال سمعته يقول لما نزلت ولايت على بن ابي طالب وكان من قول رسول الله صل عليه وسلم سلموا على على بامرة المومنين فكان مماا كدالله تعالى عليهما فى ذلك اليوم يازيد قول رسول الله صلى الله عليه واله وسلم لهماقوما فسلما عليه بامرة المومنين فقالاامن الله اومن رسوله يا رسول الله صلى الله عليه واله فقال لهما رسول الله صلى الله عليه واله فقال لهما رسول الله عليه الله عليه واله وصمم من الله ومن رسوله فانزل الله تعالى ولا تنقضو االايمان بعد توكيد ها وقد جعلتم الله عليكم كفيلا ان الله يعلم ما تفعلون يعنى به قول رسول الله عليه واله لهما وقو لهما امن الله اومن رسوله ولا تكونو اكالتي نقضت غزلها مامن بعد قوة انكاثا تنخذون ايمانكم دخلا يينكم ان تكون امة هي ازكي من امتكم قال قلت جعلت فداك قال رى والله ائمة قلت فانا نقرا اربى قال فقال من امتكم قال قلت جعلت فداك قال دى والله ائمة قلت فانا نقرا اربى قال فقال ما ما واومي بيده فطر حها الحديث.

ترجمہ: زید بن جہم ہلائی سے روایت ہے کہ میں نے امام جعفر صادق علیہ السلام کو سنا کر قرباتے سے۔ کہ جب علی بن ابی طالب کی ولایت تازل ہوئی اور منجلہ قول رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم کے یہ قا۔ کہ تم علی کو امیرالمؤمنین کمہ کر سلام کرویس اے زید منجلہ اس کے کہ جس کے ساتھ اللہ تعالی لئے اس روز الن دونوں کو یہ فربانا تھا کہ دونوں اٹھو۔ لے اس روز الن دونوں کو تاکید کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم کا دونوں کو یہ فربانا تھا کہ دونوں اٹھو۔ اور علی کوامیرالمومنین کمہ کر سلام کرو۔ دونوں نے کماکیا یہ تاکید اللہ کی طرف سے ہے یا اس کے رسول کی طرف سے ادر اس کے رسول کی طرف سے اور اس کے رسول کی طرف سے بس اللہ علیہ والہ وسلم نے فربایا کہ اللہ کی طرف سے ادر اس کے رسول کی طرف سے بس اللہ علیہ والہ وسلم نے فربایا کہ اللہ کی طرف سے اور اس کے رسول کی طرف سے بس اللہ عروجل نے یہ آبیتیں نازل کیں۔

ولا تنقضوا الايمان بعد توليد ها وقد جعلتم الله عليكم كفيلا ان الله يعلم ماتعقلون ولا تكونوا كالتي نقضهت غزلها من بعد قوة انكاثا تتخذون ايمانكم دخلايينكم ان تكون ائمة ازكى من ائمتكم-

ترجمہ: زیدین جہم کا بیان ہے کہ میں نے (امام صادق ہے) یوں غرض کی میں آپ ہے قربان ہو ہوئی کیا۔ (آیت قرآئی میں) لفظ آئمہ ہے ۔ امام نے فرمایا ہاں اللہ کی قتم آئمہ ہے میں نے عرض کی ہم تو البا ہڑ ہے۔ البا ہڑھتے ہیں زید بن جہم کا بیان ہے کہ یہ سن کر امام صادق نے فرمایا کہ ادبی کیا ہے؟ اور اپنے ہاتھ ہے الثارہ کیا لیس اس کو پھینک ویا انتھی صافی شرح اصول کانی میں اخیرکا حصد کا یوں ترجمہ کیا ہے۔ واشارت کر الباست خود مانند کمیکہ در استبعاد دست خود رامیجتباند ہی انداخت دست خود را لیعنی امام نے اپنا ہاتھ الباس کے جو کسی بات کو بعید سجھنے کے وقت اپنا ہاتھ ہلاتا ہے۔ لیس امام نے اپنا ہاتھ کی انتر اس محض کے جو کسی بات کو بعید سجھنے کے وقت اپنا ہاتھ ہلاتا ہے۔ لیس امام نے اپنا ہاتھ کرا ویا استعمی محر فطر محاکی ضمیر کا مرجع (ید) ہاتھ کو قرار دینا درست معلوم نہیں ہوتا کیونکہ طرح کے معنی کرا ویا انتھی محر فطر محاکی ضمیر کا مرجع (ید) ہاتھ کو قرار دینا درست معلوم نہیں ہوتا کیونکہ طرح کے معنی



مجینک دینے اور دور کرنے کے ہیں۔ اور یہ ہاتھ پر صادق نہیں آتے ہاں اگر ہاتھ جم سے کا وا جائے و اس وقت کمہ سکتے ہیں کہ ہاتھ کو پھینک دیا مفردات راغب اصفهمانی میں ہے۔

الطرح القاء الشنى وابعادة والطروح المكان البعيد ورايته من طرح اى بعد والطرح المطروح لقلة الاعندادبه قال اقتلوا يوسف اوطر حواه ارضا

والطبی المعلوں کے معنی کی چیز کا پھینک دیٹا اور دور کر دیٹا ہے اور طروح کے معنی مکان بعید کے بیں رایته من طرح کے معنی جیل کہ میں نے اس کو دور سے دیکھا طرح کے معنی مطروح کے بیں۔ کیونکہ اس کا چندال اعتبار نہیں کیا جاتا قرآن بجید میں ہے اقتلوا یوسف اوطوحوہ ارضا (یوسف کو قتل کر ڈالویا اس کو کسی ذمین میں پھینک دو) انتھی) پس ہاتھ کے لیے افظ طرح استعال نہیں ہو سکتا اور عبارت اصول کائی میں کوئی اور لفظ نہیں جے اس جمیر کا مرجع قرار دے کیس بجواس کے کہ آیت ان تکون امة ھی اربی من امة لیعنی اس صحیفہ کو جس پر یہ آیت کسی ہوئی تھی ضمیر کا مرجع بنایا جائے۔ اور یک درست ہے۔ کیونکہ تفیرصائی میں ہے۔ کسی موئی تھی فیل انا نقراء وفی الکافی والقمی عنه انه قر آن تکون ائمة ھی از کی من ائمتکم فقیل انا نقراء ماھی اربی من امة فقال و ما اربی و او ھی بیدہ فطرحھا۔

ترجمہ: اصول کافی اور تغیر لتی میں ہے کہ امام جعفر صادق نے پڑھا ان تکون ائمة ھی از کی من اقدائی کی من اقدائی کی من اقدائی کے الم نے فرمایا اور اربی کیا ہے اور اپنے ہاتھ سے اشارہ کیا لی اس کو پھینک دیا انتھی تغیرصائی کا اس عمارت میں ھاکا مرجع دونوں آیت ہے لی اب صاف ظاہر ہوگیا کہ فطوحها سے مرادیہ ہے کہ المام جعفر صادق نے اس صیفہ کو جس پر آیة ان تکون اهة ھی اربی من اهة کھی ہوئی تھی پھینک دیا علادہ ازیں مقام بھی اس معنی کا مقتضی ہے کیونکہ امام صادق ھی اربی کو س کر نھا ہو گئے لی انہوں نے نقل انہوں نے نقل میں اس آیت کو جو صحیفہ پر تکھی ہوئی تھی۔ زشن پر پھینک دیا۔ اگر خلاف لغت و مقتضائے مقام ہم تلیم میں اس آیت کو جو صحیفہ پر تکھی ہوئی تھی۔ زشن پر پھینک دیا۔ اگر خلاف لغت و مقتضائے مقام ہم تلیم میں کہ امام صاحب نے اپنے ہاتھ کو گرا دیا تب بھی ہمارا مقصود ثابت ہم کہ کو جو نگہ اس عبارت سے کم از کم انتاق ظاہر ہے کہ امام صاحب نے اپنے ہاتھ کو گرا دیا تب بھی ہمارا مقصود ثابت ہم کی ادبی کو جو قرآن میں موجود ہے۔ بنظر تھارت میں موجود ہے۔ بنظر تھارت کے کہ امام صاحب نے اپنے ہاتھ کو گرا دیا تب بھی ہمارا مقصود شاہت ہم کی ادبی کو جو قرآن میں موجود ہے۔ بنظر تھارت کے کہ نام اور بھی ادبی کو جو قرآن میں موجود ہے۔ بنظر تھارت

(٣) فروغ كافي (باب الحائض والنفساد تقرآن القرآن ٥١) من ب-

محمد بن يحيى عن احمد بن محمد عن الحسن محبوب عن ابن رباب عن ابى عبيده قال سالت ابا جعفر عليه السلامه عن الطامث تسمع السجدة فقال أن

كانت من العزاتم فتسجد اذا سمعتها

بعدن اساد) ابو عبيده كابيان ب كه من في المام محد باقرعليه السلام مد دريافت كياكه حيض الماع وريافت كياكه حيض الماع وريافت كياكه حيض الماع وريافت كياكه حيض وقت ين الماع وريافت كياكر المام في جواب ديا اكر سجده عزائم كاب توجس وقت ين الماع المناع المبيد - انتهى -

(٣) شیخ صدوق من لا یحضر الففیه (مطبوعہ جعفریہ تکھنؤے ۱۳۰ براء براء اول من ۱۰ میں لکھے میں - وسال عمر بن یزید ابا عبد الله علیه السلام عن التسبیح فی المخرج وقراء ق القران فقال لم یوخص فی الکنیف اکثر من ایة الکرسی ویحمد الله او ایة الحمد لله رب العالمین عربن بزیر نے ابام جعفر صادق علیه السلام سے دریافت کیا کہ پانخانہ میں اس سے زیادہ پانخانہ میں اس سے زیادہ کی اجازت نہیں کہ آیت الکری کی مقدار قرآن پڑھ کے اور قدا کی حمد کرے یا آیت الحمد کی اجازت نہیں کہ آیت الکری کی مقدار قرآن پڑھ کے اور قدا کی حمد کرے یا آیت الحمد الله رب العلمین بڑھ کے انتھی۔

(a) (من لا يحضره الفقيه جز اول ٢٥) ميس يے-

لا باس بان يقرا الجنب القرآن كله ما خلا العزائم التي يسجد فيها وهي سورة لقمان وحم السجدة والنجم و سورة اقرا باسم ربك ومن كان جنبا اوعلى غير وضوء فلا يمس القرآن و جائز له ان يمس الورق اويقلب له الورق غيره ويقرا هو و يذكر الله عزو جل.

ترجمہ: مضائقہ نئیں کہ عزائم کے سواجن میں سجدہ کیا جاتا ہے جنب سارا قرآن پڑھ لے اور المرائم یہ علام مربک جو مخص جنب یا ہے وضو ہو المرائم یہ علام سورہ القمال میں سجدہ والنجم اور سورہ اقراء باسم ربک جو مخص جنب یا ہے وضو ہو الاقران کو ہاتھ نہ لگائے اور اس کے لیے جائز ہے کہ ورق کوہاتھ لگائے یا اس کے لیے کوئی دو سرا ورق النہ اللہ عزوجل کا ذکر کرے انتھی۔

(٢) كتاب الاستبصار فيخ الطائف اللوى (مطبع جعفريه لكفنو جز اول باب الجنب والحائض تقرآن القرآن ٥٤) مير --

عن الفضيل بن يسار عن ابى جعفر عليه السلام قال لا باس ان يتلوا الحائض والجنب القوان-

ترجمہ: فضیل بن بیار کا بیان ہے کہ امام محد باقر علیہ السلام نے فرمایا کہ حیض والی عورت اور بنہا کر قرآن پڑھ لے تو پچھے مضا کقہ نہیں-انتھی -





(2) میخ الطا كفه طوى نے كتاب الاستبصار جز اول ٥٤ ميس ذكركيا ہے۔

عن عبيد الله بن على الحلبي عن ابي عبدالله عليه السلام قال سالته القراء النفساء والحائض والجنب والرجل يتغوط القران فقال يقرء ون ماشاء وا

ترجمہ: اللہ بن علی طبی کا بیان ہے کہ میں نے امام جعفر صادق سے پوچھا کہ کیا نفاس والی عورت اور حیض والی عورت اور جنب اور قضائے حاجت کرتا ہوا مرد قرآن پڑھ لیں امام نے جواب ریا کہ یڑھ لیں جوچاہیں۔انتھی۔

ناظرین! ند بب امامیہ قرآن مجید کی تلاوت کے آداب آپ دیکھ چکے ہیں ان کے علاوہ بہت ہے مسائل ہیں جن کا بیان اس مقام پر مناسب نہیں-

قال الحائري

اہلسنّت کا قرآن ناقص ہے نہ تحصٰ غلط بہتان اور افتراء ہے صرف وحوکہ دینے کی غرض ہے یہ لوگ ایے شیعوں کا قرآن ناقص ہے نہ تحصٰ غلط بہتان اور افتراء ہے صرف وحوکہ دینے کی غرض ہے یہ لوگ ایے کہ دیا کرتے ہیں۔ سنو شیعوں کا بھی کامل قرآن ہے جس کا ثبوت میرے ذمہ ہے ابھی ابھی میں اپنا اس کا دعوے کا بدلل ثبوت آپ کے سامنے پیش کروں گا۔ گر عطار شاء بلقاء شار کے اقتضاء ہے پہلے ان کا اعتراض انہیں کی مسلمہ کتب ہے ان پر پیش کرتا ہوں تاکہ گر بجویٹ اور محققین میں تعلیم یافتہ طبقہ یہ اعتراض انہیں کی مسلمہ کتب ہے ان پر پیش کرتا ہوں تاکہ گر بجویٹ اور محققین میں تعلیم یافتہ طبقہ یہ اچھی طرح سمجھ جائے کہ ایسے لوگوں کو دو سروں پر اعتراض کرنے کا سبب اور کیا ہو سکتا ہے سوا اس کے اتحصب کی عینک آنکھوں پر گئی ہوئی ہے جس سے دور کا نکا تو یا آسانی نظر آجاتا ہے لیکن قریب کا شہیر بھی دکھائی نہیں دیتا اپنی نہ بھی روایات سے ناواقف ہو کر خواہ مخواہ دو سروں کو چھیڑ چھاڑ کر طمن کرنے کا یہ نتیج ہوا کرتا ہے۔ کہ طاعن کے فرجب کا بخیہ او چیڑ کرتمام پر زے سامنے رکھ دیے جاتے ہیں جس پر وہ حسرت اور افسوس کے ہاتھ ملتا رہ جاتا ہے۔

تقیراتقان مطبوعه مطبح احمدی ص ۱۳۱۲ سطره پس امام جلال الدین سیوطی نے لکھا ہے کہ: قال ابو عبیده حدثنا اسماعیل بن ابر هیم عن ایوب عن نافع عن ابن عمر قال لا یقولن احد کم قد اخذت القران کله و ماید ریه ما کله قد ذهب منه قرآن کثیر انتهی بلفظه

لین ابن عمرے مروی ہے کہ تم میں سے کوئی شخص بھی یہ نہیں دعوے کر سکتا کہ اس نے پورا اور کمل قرآن تمک کیا ہے۔ اور اس کو کیو کر معلوم ہو سکتا ہے۔ کہ کمل اور پورا قرآن کیا ہے

N :

ر تکہ اس قرآن کا بہت ساحصہ اس میں سے نکل کمیا ہے۔

کیوں صاحب؟ فرمائے کس کا قرآن ناقص ہوا شیعوں کا یا سینوں کا ظیفہ زادہ حضرابن عمر سی فلیا شیعہ اس نے قو بہانگ وہل یہ کھول کر کمہ دیا ہے کہ ایک نظر بھی تم ہیں ہے اس امر کا دعوے نہیں کر سکتا کہ اس نے بورے اور مکمل قرآن کا تمسک کیا۔ کیونکہ سینوں کے خلیفہ زادہ کے قول ہے تو یہ قرآن ناقص ہے بھرناقص قرآن کا مانے اور تمسک کرنے والا سینوں کا گروہ کائل قرآن کے مانے والے شیوں پر طعن کرنے کا کیا حق رکھتا ہے۔ موحد تریف قرآن (۲۳۲۲)

اقول

المسنّت و جماعت میہ نہیں کہتے کہ شعبوں کا قرآن ناقص ہے۔ بلکہ وہ تو یہ کہتے ہیں کہ شیعہ کے اس قرآن ہی ہیں۔ کیونکہ ان کا اصلی قرآن حسب عقیدہ شیعہ امام غائب کے پاس ہے۔ اور جو قرآن اب موجود ہے وہ محرف و نادرست ہے جیسا کہ ہم بحوالہ کتب معتبرہ شیعہ ثابت کر چکے ہیں اگر د مجتمد لاہوری سے ثابت کردے کہ شیعوں کا سے میں کال قرآن ہے تو چشم ما روشن وول ماشاد مجتند صاحب نے جو والد تغیرانقان سے پیش کیا ہے۔ ہم اس کتاب کے صفحہ ۱۹۳ پر اس کا جواب دے آئے ہیں۔ کہ قرآن مجید ۲۳ سال کے عرصہ میں حسب ضرورت و موقع تھوڑا تھوڑا اتر تا رہا ہے۔ اس عرصہ میں بعض آیتیں آ تخضرت صلی الله علیه واله وسلم کے عمد مبارک ہی میں منسوخ الثلاوة ہو گئی تنمیں للدا وہ قرآن میں موجود نہ رہیں۔ پس حضرت این عمر رضی اللہ تعالی عنما کا بیہ قول ورست ہے کہ کوئی یوں نہ کے کہ میں نے سارا قرآن لیا ہے ورنہ سے معلوم کہ کل قرآن (منسوخ اللاوة سمیت) کتنا تھا۔ کیونکہ منسوخ التلاوة آیتیں تو اس میں موجود نہ رہیں۔ پس کل اخذ کس طرح منصور ہوسکتا ہے۔ پس قول ابن عمرے یہ سمجھنا کہ اصحابہ کرام نے آنخضرت صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی وفات شریف کے بعد قرآن میں کمی کردی بالکل غلط ہے۔ مولوی سید حامد حسین رافضی نے استعماء الانحام و استیفار الانتقام (مطبوعه مطبع مجمع البحرین لودیان ۱۲۲۱ھ جلد اول ۱۰) میں اس مقام پر صاحب منتنی الکلام پر یوں جرح کی ہے۔ و اما تاویل افادہ ابن عمریا یک غُرْض جنابش اذ فقوه قد ذهب منه قوآن كثيراي است كه ان چه منسوخ التلادة بود ازآن رفت است محكه بیش نیست زیرا كه بر فدر كه منسوخ اللادة شداز حقیقت قرآن و مابیت آن خارج گردید آنر اقران دانس معنائے تدارد بلکہ کتابت آن ہمہ در قرآن جائز نیست و بنا بریں ادعائے اخذ تمام قرآن صحیح باشدو ومنع ممنوع و تلعاغيرجائز انتقى -

ترجمہ: مگر قول این عمر کی تاویل یوں کرنا کہ جناب کی عرض قد ذهب منه قو آن کثیر بیشک

اس میں سے بہت سا قرآن جاتا رہا) سے یہ ہو کچھ منسوخ التلاوۃ تھا وہ اس میں سے جاتا رہا ہے یہ صرف ایک مصحکہ ہے کیونکہ جس قدر منسوخ التلاوۃ ہویا وہ قرآن کی حقیقت و ماہیت سے خارج ہوگیا۔
اس کو قرآن جانا ہے معنی ہے بلکہ اس کا قرآن میں لکھنا بھی جائز نہیں اس لیے سارے قرآن کے افذ کا وعوے کرنا صحح ہے اور اس سے منح کرناممنوع اور تعلیا ناجائز ہے۔ انتھی۔

سید حالد حبین نے ای قتم کی ڈاڈ خاتی ہے اپنی کتاب کو صحیح کر دیا ہے ایک طفل کتب بھی سکتا ہے کہ منسوخ الثلاوۃ آیات قرآئی بلحاظ تلاوت وو سکتیں۔ لینی آیات قرآئی بلحاظ تلاوت وو قتم کی ہیں ایک منسوخ الثلاوۃ دو سری غیر منسوخ الثلاوۃ کی ہے مئن صَبحک صُسحت صلال منسوخ الثلاوۃ ہے ہیں۔ چنانچہ مولوی سید ناصر حبین نے رشق النبال علی اصحاب الغلال مطبوعہ مطبع مجمع البحرین لودیا نہ المالاہ مل سال ہیں یوں لکھا ہے۔ منسوخ الثلاوۃ ایک خاص اصطلاح اہل سنت کی ہے۔ کہ صحیح کے قرائیت منسوخ الثلاوۃ ایک خاص اصطلاح اہل سنت کی ہے۔ کہ صحیح منسوخ اس پردے ہیں چھپاتے ہیں اور یہ نہیں جسمح کے قرائیت منسوخ الثلاوۃ کی ای لفظ سے جابت ہے کہ اس کی تلاوت کو تم نے منسوخ قرار دیا۔ لیعنی قبل وجود ناکٹ کے وہ الثلاوۃ کی ای لفظ سے جابت ہے کہ اس کی تلاوت کو تم نے منسوخ قرار دیا۔ لیعنی قبل وجود ناکٹ کے وہ قرآن ہونا اور واخل مصاحف تھیں اب ان کا پڑھنا منسوخ ہوگیا اور مخفی نہیں کہ منسوخ ہو جانے سے قرآن ہونا اور واخل مصاحف تھیں اب ان کا پڑھنا منسوخ ہوگیا اور مخفی نہیں کہ منسوخ ہو جانے سے شخب کرکے ہناؤ کون کی آیات کا ڈاکل نہیں ہوا۔ بال اب تہمارے وحد ہے کہ آیات قرآئی ہیں کہ منسوخ الثلاوت کو المہے کی کتابوں میں آیات منسوخ الثلاوۃ کو المادہ کو المادہ کو المادہ کی کتابوں میں البتہ بست آیات منسوخ الثلاوۃ کہ کور اب اب ہرایک کے نائج کو تم بناؤ جیسا آگے چل کران آیات کا ڈکور ہوگا۔ انہی ۔

سید ناصر حسین صاحب نے یہ درست کما کہ آیت منبوخ اللاوۃ ہونے سے قرآنیت سے فارج نہیں ہوسکتی۔ مگراس نے یہ برا بول بولا ہے کہ امامیہ کی کتابوں میں منسوخ التلاوت کا کہیں ذکر نہیں امامیہ کے علامہ علی تہذیب ص ۲۳۰ میں لکھتے ہیں۔

ويجوز نسخ التلاوة دون الحكم وبالعكس لانهما عبادتان لا تلازم بينهما وقد وجدفي الاعتداد بالحول والرجم للشيخين.

ترجمہ: اور جائز ہے تلاوت کا منسوخ ہوتا بغیر منسوخ ہونے تھم کے اور اس کا عکس بھی جائز ہے کیونکہ تلاوت اور تھم دو عبادتیں ہیں جن کے ورمیان کوئی تلازم نہیں منسوخ الحکم غیر منسوخ الثلادة کی مثال یہ ہے کہ ایک مال کی عدت وفات کو اللہ تعالی نے چار مینے وس ون کے ساتھ منسوخ کرویا۔ اور منسوخ الثلادة غیر منسوخ الحکم کی مثال یہ آیت رجم ہے۔ الشیخ والشیخة اذا زنیا فارجمو هما البتة نکا لا من الله انتھی امامیہ کے بماؤ المل الدین زبرة الاصول سعاف الامول شرح زبرة الاصول مطبوعہ

انا عثرى لكفتو ٢٥٨) مين بول تحرير كرتے بين وقلد ينسخ التلاوة لا الحكم و بالعكس وهما معا بين بهى تلاوت منسوخ نه كه عكم اور بهى اس كا عكس بوتا ب اور بهى تلاوت و عكم ووثول منسوخ بوتے بين بهى تلاوت و عكم ووثول منسوخ بوتے بين انتقى زيدة الاصول كى شرح امعاف المامول ميں ہے۔

امانسخ التلاوة دون الحكم فمثاله ماروى بطريق الاحادانه كان من القران الشيخ والشيخة اذا زنيا فارجموهما نكالا من الله فنسخ تلاوتة مع بقاء حكم و امانسخ الحكم دون التلاوة فمثاله اية العدة الدالة على الاعتداد بالحول ثم نسخت باية التربص بار بعة اشهر وعشر فنسخ الحكم المستفاد من الاية الاولى مع تلاوتها وامانسخ التلاوة والحكم معافكما روى ان سورة الاحزاب كانت تعدل سورة البقرة فنسخ تلاوتها وحكمها معا

ترجمہ: مسوخ اتفاوۃ وغیرہ مسوخ الحکم کی مثال وہ ہے جو بطریق احاد مردی ہے کہ یہ آیت قرآن میں تھی المشیخ و المشیخة اذازنیا فار جمو هما نکا لاهن الحق پس اس کی تلاوت منوخ ہوگی اور حکم باتی رہ گیا۔ اور منسوخ الحکم غیر منسوخ الثاوۃ کی مثال آیت عدت جو دلالت کرتی ہے کہ جس فورت کا خاوید مرجائے اس کی عدت ایک سال ہے پھریہ آیت منسوخ ہوگئی۔ اس آیت کے ساتھ جس میں چار مینے وس دن کا انتظار ذکور ہے پس پہلی آیت کا تھم منسوخ ہوگیا۔ اور تلاوت باتی رہی۔ اور منسوخ التلاوۃ والحکم کی مثال وہ ہے جو مردی ہے کہ سورہ احزاب سورہ بقرہ کے برابر تھی پس اس کی منسوخ التلاوۃ والحکم کی مثال وہ ہے جو مردی ہے کہ سورہ احزاب سورہ بقرہ کے برابر تھی پس اس کی تلاوت و تھم دو تو منسوخ ہوگئے۔ انتھی امامیہ کے شخ الطائفہ ابو جعفر محمد طوسی عدۃ الاصول (مطبوعہ جمبئی جن و ثانی ص ۲س) میں یوں لکھتے ہیں۔

فصل في ذكر جواز نسخ الحكم دون التلاوة ونسخ التلاوة دون الحكم جميع ما ذكرناه جائز دخول النسخ فيه لان التلاوة اذا كانت عبادة والحكم عبادة اخرى جاز وقوع النسخ في احد هما مع بقاء الا خركما ـ يصح ذلك في كل عبادتين واذا ثبت ذلك جاز نسخ التلاوة دون الحكم والحكم دون التلاوة فان قيل كيف يجوز نسخ الحكم مع بقاء التلاوة وهل ذلك الا نقص لكون التلاوة دلالة على يجوز نسخ الحكم مع بقاء التلاوة وهل ذلك الا نقص لكون التلاوة دلالة على الحكم فينبغي ان يكون دلالة مادامت ثابتة والا الحكم لانها اذا كانت دلالة على الحكم فينبغي ان يكون دلالة لانها تدل على كان نقضا على مايينماه قيل له ئيس ذلك نقضاً لكونهاد لالة لانها تدل على الحكم مصلحة واما اذا تغير حال الحكم وخرج من كونه مصلحة الحكم مادام الحكم مصلحة واما اذا تغير حال الحكم وخرج من كونه مصلحة الى غيره لم يكن التلاوة دلالة عليه وئيس لهم ان يقولو الافائدة في بقاء التلاوة اذا



The State of the last

ار تفع الحكم وذلك انه لا يمتنع ان يتعلق المصلحة بنفس التلاوة وان لم يقتض الحكم واذالم يمتنع ذلك جاز بقائها مع ارتفاع الحكم- وليس لهم ان يقولوا ان هذا المذهب يودي الى انه يجوز ان يفعل جنس الكلام بمجرد المصلحة دون الافادة وذلك مما تابونه لانا انما نمنع في الموضع الذي اشار وا اليه اذا خلا الكلام من فائدة اصلا وليس كذلك بقا التلاوة مع ارتفاع الحكم لانها افادة في الابتداء تعلق الحكم بها وقصد بهاذلك وانما تغيرت المصلحة في المستقبل في الحكم فنسخ ويقي التلاوه لما فيها من المصلحة وذالك يخالف ماسال السائل عنه واما نسخ التلاوة مع بقاء الحكم فلا شبهة فيه لما قلناه من جواز تعلق المصلحة بالحكم دون التلاوة وليس لهم ان يقولوا ان الحكم قد ثبت بها فلا يجوز مع زوال التلاوة بقائه وذلك أن التلاوة دلالة على الحكم فليس في عدم الدلالة عدم المدلول عليه الاترى ان الشقاق القمر ومجرى الشجرة دال على نبوة نبينا ولا يوجب عدمهما خروجه من كونه نبيا كذلك القول في التلاوة والحكم ويفارق ذلك الحكم العلم الذي يوجب عدمه خروج العالم من كونه عالما-لان العلم موجب لا انه دال- ط ما جواز النسخ فيهما فلا شبهة ايضافيه لجواز تغير المصلحة فيهما وقدورد النسخ بجميع ماقلناه لان الله تعالى نسخ اعتداد الحول بتربص اربعة اشهر وعشرا ونسخ التصدق قبل المناجاة ونسخ ثبات الواحد للعشرة وان كانت انتلاوة باقية في جميع ذلك وقد نسخ ابقاء التلاوة وبقى الحكم على ماروي من اية الرجم من قوله الشيخ والشيخة اذاز نيافار جموهما البتة نكالا من الله واان كان ذلك مما انزله الله والحكم باق بلا خلاف و كذلك روى تتابع صيام كفارة اليمين في قراءة عبد الله بن مسعود لانه قد نسخ التلاوة والحكم باق عند من يقول بذلك واما نسخهما معافمثل ماروي عن عائشة انها قالت كان فيما انزله تعالى عشرة رضعات يحرمن ثم نسخت بخمس فجرت بنسخه تلاوة وحكما وانماذكرنا هذه المواضع على جهة المثال ولولم يقع شئى منها لمااخل بجواز ماذكرناه وصحته لان الذي اجاز ذلك ماقد مناه من الدليل وذلك كاف في هذا الباب

ترجمہ: تمام جو کچھ کہ ہم نے ذکر کیا ہے اس میں شخ جاز ہے کیونکہ جب علاوت ایک مباوت

عادر عم دوسری عبادت ہے تو جائز ہوا کہ دونول میں سے ایک منسوخ ہو جائے اور دوسرا باتی رے م المردو عباد لول میں جائز ہے اور جب سے ثابت ہو گیا تو تلاوت کا تنبخ بغیر تنبخ تھم کے اور تھم کا تنبخ بغیر بہاکہ ہردو الله علات عے جائز ہو گیا۔ اگر کما جائے کہ یہ کیو نکر جائز ہو سکتا ہے کہ عظم مغسوخ ہوجائے اور الاوت باقی مانے کہ جب تک تلاوت ثابت رہے وہ دلالت ہو-ورنہ یہ نقض ہوگا۔ جیسا کہ ہم نے بیان کیا ہے۔ ہم واب میں لکھتے ہیں کہ میر تلاوت کے ولالت ہونے کا نقص نہیں کیونکہ تلاوت تھم پرولالت کرتی ہے ب تك علم مصلحت بو- مرجب علم حال كابدل جائے- اور وہ مصلحت نہ رہے تو تلاوت اس ير دلالت ر ہوگا۔ معترضین سے نہیں کہ سکتے کہ جب حکم منسوخ ہوگیا تو تلاوت باقی رہنے میں کوئی فائدہ نہیں کیونکہ رام متنع نہیں کہ معملت نفس تلاوت سے متعلق ہوا۔ اگر چہ تھم کی مقتفی نہ ہو۔ پس جب بہ امر ممتنع نه بوا الدوت كاباتى ربنا- اور تحكم كامنسوخ بونا جائز بوا- أكر معترضين بيه اعتراض كريس كه بيه مبلك تواس بات کی طرف کے جاتا ہے کہ عجرد مصلحت بغیرافادہ کے کوئی جنس کلام وقوع میں آئے اور میں تہمارا تفود ہے تو اس کا جواب میر ہے۔ کہ اس جگہ میں جس کی طرف انہوں نے اشارہ کیا ہے ہم مانع ہیں جب کہ کلام میں ہرگز کسی قتم کا فائدہ نہ ہو گر شخ تھم کے ساتھ الاوت کا باتی رہنا ایسا نہیں ہے کیونکہ اس ے افادہ ہوتا ہے۔ کہ ابتداء میں تلاوت سے تھم متعلق و مقصود تھا۔ مرمستقبل میں تھم میں معملت بدل گئ- اس کیے وہ منسوخ ہو گیا اور تلاوت باقی رہ گئی کیونکہ اس میں مصلحت ہے۔ اور یہ مخالف ہے اس كے جس پر معترض نے اعتراض كيا ہے رہا تلاوت كامنسوخ مونا۔ اور تھم كا باتى رہنا۔ سواس كاجواز ميں كوئى شك نميں۔ كيونك جائز ہے كہ بجائے تلاوت كے مصلحت كا تعلق تھم سے مو معترضين يہ نہيں كم ملتے کہ تھم تلاوت کے ساتھ فابت ہے للذا تلاوت کے زائل ہونے پر وہ باتی نہیں رہ سکتا کیونکہ تلاوت محم پر دلالت کے ساتھ خابت ہے لندا تلاوت کے زائل ہونے پر وہ باتی شیں رہ سکتا کیونکہ تلاوت عظم پر الالت ہے اور عدم ولالت عدم مدلول علیہ کا موجب نہیں۔ کیا تو نہیں دیکھتا کہ شق القمراور ورختوں کا چلنا المارك بغيركي نبوت ير ولالت كريا ہے مكر ان دونوں كاعدم آپ كے ليے نبوت سے خروج كا موجب المیں کی حال ہے تلاوت و تھم کا اور وہ تھم علم سے مختلف ہے کیونکہ علم کا عدم انسان کے عالم ہونے سے خروج کا باعث ہے اس لیے کہ علم موجب ہے نہ بیر کہ وہ وال ہے۔ اب رہا تلاوت و تھم دونوں کے نن لَكُوْ كَا جَارُ بِهِونا - سواس ميں بھي كوئي شك نهيں كيونك جائز ہے كه دونوں ميں مصلحت بدل جائے ان تمام مورتوں میں جو ہم نے بیان کی میں تنخ و قوع میں آیا ہے کیونکہ اللہ تعالی نے ایک سال کی عدت کو چار مینے اور وس ون کے انتظار کے ساتھ منسوخ کردیا۔ اور جماد میں دس کے مقابل ایک کے ثبات کو منسوخ

کردیا۔ اگرچہ ان تمام میں تلاوت باتی ہے۔ اور تلاوت کو منسوخ کرکے بھم کو باتی رکھا جیسا کہ آب رہم ہے الشیخ و الشیخ اذاز نیا فار جمو ھما البتہ نکالا ھن اللہ یہ آبت اللہ تعالیٰ نے بازل فرہائی تی اب اس کا بھم بالااتفاق باتی ہے۔ اس طرح عبداللہ بن مسعود کی قراء ت میں کفارہ یمین کے روزوں اتقالی باتی ہے در پے رکھنا) مروی ہے لیس جو محف اس کا قائل ہے اسکے نزدیک تلاوت منسوخ ہوگی اور اس کا تقائل ہے اسکے نزدیک تلاوت منسوخ ہوگی اور اس کا تھا کی ہے میاتی ہوری کے مراب کے فرایا کہ اللہ تمالی کا تھم باتی ہے رہا تلاوت و تھم دونوں کا شخ سو اس کی مثال ہے ہے کہ حضرت عائشہ نے فرایا کہ اللہ تمالی کے آب عشور ضعات یحو من نازل کی تھی پھریا چے کے ساتھ منسوخ کردی پس اس کی تلاوت و کم دونوں منسوخ ہوگئے ہم نے ان مقامات کو بطور مثال ذکر کیا ہے اگر ان میں سے پچھ بھی دقوع میں نہ آب توجو ہم نے ذکر کیا ہے اس کے جواز و صحت میں خلل نہ آبا کیو نکہ اس کے جائز کرنے والی وہ دلیل ہے جہ نے بہلے بیان کردی اور بیہ اس باب میں کافی ہے۔ انتھی الم سے کی بڑی معتبر تغیر ججمع البیان (جلد اول جم نے بہلے بیان کردی اور بیہ اس باب میں کافی ہے۔ انتھی الم سے کی بڑی معتبر تغیر ججمع البیان (جلد اول جم نے بہلے بیان کردی اور بیہ اس باب میں کافی ہے۔ انتھی الم سے کی بڑی معتبر تغیر ججمع البیان (جلد اول کے کے ت بیس ایس آبی مانسم من آیة او ندسہ اے تحت بیس یوں ٹیکور ہے۔

واولى مايحدبه النسخ ان يقال هو كل دليل شرعى دل على ان مثل الحكم الثابت بالنص الأول غير ثابت في المستقبل على وجه لولاه لكان ثابتا بالنص الأول مع تراخيه عنه والنسخ في القرآن على ضروب منها ان يرفع حكم الآية و تلاوتها كما روى عن ابى بكرانه قال كنا نقر الا ترغبواعن ابائكم فانه كفر بكم ومنها ان قئبت الآية في الحظ و يرفع حكمها كقوله فاتكم بشئي من ازواجكم الى الكفار فعا قبتم الآية فهذه ثابتة اللفظ في الخط مرتفعة الحكم ومنها ماير تفع اللفظ ويثبت الحكم كاية الرجم فقد قبل انها كانت منزلة فرفع لفظها وقد جاءت اخبار كثيرة بان اشياء كانت في القرآن نسخ تلاوتها ومنها ماروى عن ابى موسى انهم كانو يفرء ون لو ان لا بن ادم وادبين من مال لا بتغي لهما ثالثاو لا يملا جوف ابن ادم الا التراب ويتوب الله على من تاب ثم رفع وعن أنس ان السبعين من الا نصارالدين قتلوا ببئر معونة قرا نافيهم كتابا بلغوا عنا قومنا انالتينا ربنا فرضي خنا وارضانا ثم ذلك رفع انتهى.

ترجمہ: اور شخ کی بہتر تعریف ہیہ ہے کہ کماجائے کہ وہ ہر ایک وہ ال شرق ہے جو دلالت کرتا ہے کہ نص اول کے ساتھ ثابت تھم کی مثال مستقبل میں غیر ثابت ہے اس طرح پر کہ آگر وہ دلیل نہ ہوتی تو وہ تھم نص اول کے ساتھ ثابت رہتا اور دلیل شرعی اس سے متاخر ہوتی ہے اور قرآن میں شخ تی ' کا ہے۔ اول میہ آیت کا تھم اور اس کی تلاوت ووٹوں منسوخ ہوں۔ چنانچہ مروی ہے کہ حضرت ابوبکر خرایا کہ ہم یہ آیت پڑھا کرتے سے لا توغبو اعن اہائکم فانہ کفر بکم دوم یہ کہ آیت قرآن بی کہ بین بدستور ہے مگر اس کا حکم منسوخ ہو جائے کہ وان فاتکم شئی من ازواجکم الی بی ایسے ہیں بدستور ہے مگر اس کا حکم منسوخ ہو کیا ہے۔ الکفار فعا قبتم الایته اس لیے کہ اس آیت کی تلاوت بدستور ٹابت ہے۔ گراس کا حکم منسوخ ہوگیا ہے۔ مراس کا حکم منسوخ ہوگیا ہے۔ مراس کا حکم منسوخ ہو جائے اور حکم ٹابت رہے جیسا کہ آیت رہم کیونکہ کما گیا کہ یہ نازل ہوئی تھی پھر موم ہو گئی اور بہت سی حدیثیں۔ اس بارے میں آئی ہیں۔ کہ قرآن میں بعض آیات الی اس کی تلاوت منسوخ ہوگی اور بہت سی حدیث ابو موی ہے کہ ہم یہ پڑھا کرتے ہے۔ اس بارے میں کہ ہم یہ پڑھا کرتے ہے۔

لو ان لا بن ادم واديين من مال لا بتغي لـما ثالثا ولا يملا جوف ابن ادم الا التراب ويتون الله على من تاب

کھریہ مرفوع ہوگیا اور حضرت انس سے مروی ہے کہ انسار میں سے ستر جوہر معونہ میں شہید ہوئے۔ہم ان کے بارے یہ پڑھاکرتے تھے۔بلغوا عنا قومنا انا لقینا ربنا فرضی عناوار ضانا پھریہ مرفوع ہوگیا انتھی مجمع البیان میں اس مقام پر یول نہ کور ہے۔

ماتنسخ من آیة قد ذکر ناحقیقة النسخ عند المحققین وقیل معناه مانوفع من ایة وحکم ایة وقیل معناه مانبدل من آیة عن ابن عباس ومن قرأ اوننسها فمعناه علی بوجهین فان لفظ النسی المنقول منه انسی علی ضربین احدهما بمعنی النسیان اللی هوخلاف الذکر نحوقوله تعالٰی واذکرریک اذانسیت والاخربمعنی الترک نحوقوله نسوالله فنسیهم ای ترکو اطاعة الله فترک رحمتم او ترک تخیصهم فالوجه الا ول فی الایة مروی عن قتادة وهو ان یکون محمولا عل النسیان اللی هومقابل الذکر و یجوز ذلک علی الامة بان یومروابترک قراء تها فینسوها علی طول الا یام ولایجوز ذلک علی النبی (صلی الله علیه واله وسلم) لا نه یودی ذلک الی التنفیر کذا ذکره الشیخ ابوجعفر فی تفسیره وقد جوز جماعة من المحققین فلک علی النبی (صلی الله علیه واله وسلم) قالوا انه لا یودی الی التنفیر اتعلقه فلک علی النبی (صلی الله علیه واله وسلم) قالوا انه لا یودی الی التنفیر اتعلقه بالمصلحة و یجوز ایضا ان ینسیهم الله تعالٰی ذلک علی الحقیقة وان کانو جمعا کثیر اوجماغفیرا بان یفعل النسیان فی قلوب النجمیع وان کان ذلک خار قاللعادة ویکون معجزا اللنبی (صلی الله علیه واله وسلم) واستد من حمل الایة علی النسیان اللذی هو خلاف الذکر وجود النبی صلی الله علیه و آله وسلم مرادابه النسیان اللذی هو خلاف الذکر وجود النبی صلی الله علیه و آله وسلم مرادابه بقرله صبحانه سنقرئک فلا تنسی الاماشاء الله ان تنساه قال والی هذا ذهب ابو بقرله صبحانه سنقرئک فلا تنسی الاماشاء الله ان تنساه قال والی هذا ذهب ابو



الحسن فقال ان نبيكم اقرا القران ثم نسيه وانكرائز جاج هذا القول فقال ان الله تعالى قد انبا النبى (صلى الله عليه واله وسلم) فى قوله ولنن شئنا لنذ هبن بالذى اوحينا اليك بانه لا يشاء ان يذهب بالذى اوحى النبى (صلى الله عليه واله وسلم) قال ابو على الفار سى هذا الذى احتج به على من ذهب الى ان ننسها من النسيان لا يدل على فساد ماذهبو اليه وذلك ان قوله ولئن شئنا لنذ هبن بالذى اوحينا اليك على مالا يجوز عليه النسخ والتبديل من الا حبار واقا صيص الا مم ونحوذلك مما لا يجوز عليه التبديل والذى ينساه النبى (صلى الله عليه واله وسلم) هو ما يحوز ان ينسخ من الا وامر والنوا هى الموقوفة على المصحلة وفى الاوقات مايتي يكون ذلك فيها اصلح (الى ان قال) والوجه الثاني وهوان المراد بالنسيان الترك في الاية مروى عن ابن عباس (رضى الله عنهما) فعلى هذا يكون المراد بالنسيان ما الترك في الاية مروى عن ابن عباس (رضى الله عنهما) فعلى هذا يكون المراد المراد

ترجمہ ؛ جو منموخ کرتے ہیں ہم کوئی آیت محققین کے نزدیک ہو شخ کی حقیقت ہے وہ ہم بیان کرچکے ہیں اور کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہیں ہم نہیں اٹھاتے کوئی آیت یا کسی آیت کا عظم اور کما گیا ہے کہ اس کے معنی ہیں ہم نہیں بدلتے کوئی آیت (ازاین عباس اور جس نے پڑھا کہا گیا ہے کہ اس کے معنی ہیں ہم نہیں بدلتے کوئی آیت (ازاین عباس اور جس نے پڑھا اور نہیں اٹھاتے ہیں اس کو تو اس کے معنی ہیں جو مقابل ہے ذکر کا جیسا کہ قول اللی واذکو ربک ہے وہ طرح آتا ہے ایک نسیان کے معنی ہیں جو مقابل ہے ذکر کا جیسا کہ قول اللی واذکو ربک اذا نسیت اور دو سرا ترک کے معنی ہیں جو ساکہ قول خدا نسو االلہ فنسیجہ یعنی انہوں نے خدا کی اطاعت ترک کردی پس خدا نے ان پر رحمت ترک کردی یا ان کی تخلیص ترک کردی وجہ اول اس آیت ہیں مروی قادہ ہے اور وہ میہ کہ کوئی جمول ہو نسیان پر جو کہ ذکر کا مقابل ہے اول اس آیت ہیں مروی قادہ ہے اور وہ میہ کہ کوئی آیت کی قرائت کو ترک کردیں۔ اور وہ امت پر جائز ہے بدیں طور کہ ان کو حظم دیا جائے کہ کسی آیت کی قرائت کو ترک کردیں۔ نسیس۔ کیونکہ میہ لوگوں کو آپ سے نفرت دلانے کا باعث ہے۔ شخ ابو جعفر نے اپنی تغیر ہیں ای جماعت نے بخیر خدا صلی اللہ علیہ والہ وسلم پر نسیان کا جائز ہیں۔ اور یہ خواہ وہ جماحت متعنی میں ان کو جملا دے خواہ وہ جماحت متعنی ہے۔ اور جم غفیر ہوں بدیں مورک بھی جائز ہے کہ اللہ تعائی حقیقت ہیں ان کو بھلا دے خواہ وہ جماحت کثیر و جم غفیر ہوں بدیں طور کہ سب کے دلوں ہیں نسیان ڈال دے۔ آگر چہ سے خارق عادت ہے اور نبی کا مجزہ ہوگا۔

دنوں نے اس آیت کو نسیان پر محمول کیا ہے جو کہ ذکر کا مقابل ہے اور جائز رکھا ہے کہ اس سے مراد نی ہیں۔ ان کی ولیل اللہ تعالی کا بیہ قول ہے سنقرئک فلا تنسی الا ماشاء الله ہم ردمائي سے تھم كو چر تو نہ يمولے كا حروو جات اللہ تعالى يعنى مرحو جات اللہ ك تو اس بمول مائے۔ اور ای طرف کیا ہے۔ ابوالحن جس نے کہا کہ تمہارے پینمبر قرآن بڑھائے گئے مجراے بمول محے زجاج نے اس قول کا انکار کیا اور کما ہے کہ اللہ تعالی نے اسے قول ولئن شئنا لند هبن بالذی اوحینا الیک اگر ہم چاہیں البتہ لے جاویں وہ چیز کہ وحی کی ہے ہم نے تیری طرف میں نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو خبروی ہے کہ وہ نہیں جابتا کہ لے جائے اس چیز کو جو اس نے پنیبر کی طرف وحی کی ہے۔ ابو علی فارس نے کما کہ جس قول النی سے زجاج نے ان لوگوں كے فلاف جست پكڑى ہے جن كامسلك يہ ہے كه ننسسا نسيان سے ہے وہ قول ان كے مسلك کے فساد ہر ولالت شیں کرتا۔ وجہ بیر کہ ولئن شئنا محول ہے اخبار اور امتول کے قصول وغیرہ یر جن میں تنخ و تبدیل جائز نہیں- اور پنجیبر خدا بھول جاتے تھے- وہ ایسے اوا مرو نواہی ہیں جن میں ننخ جائز ہے اور جو مصلحت ير موقوف ہوتے جي اور ان او قات ميں ہوتے جيں جن ميں ان كا ہونا صلح ب (يمال تك كه كما صاحب مجمع البيان في) اور دوسرى وجد ليني اس آيت ميس نسيان س مراد ترک ہو- این عباس سے مروی ہے اس اس صورت میں نسماسے مراد یہ ہے کہ جو ہم حمیں آیت کے ترک یعنی اس پر عمل کے ترک کا تھم دیتے ہیں- انتھی اس تفیر جمع البیان میں سوره اعلى كى تغيريس -- (سنقرئك فلا تنسى الا ماشاء الله) ان ينسيك بنسخه من رفع حكمه وتلاوته عن الحسن وقتادة وعلى هذا فالا نساء نوع من النسخ وقد مربيانه في سورة البقرعند قوله مانسخ من آية اوننسها الاية

ترجمہ: (ہم پڑھائیں گے تھ کو گھرتو نہ ہولے گا۔ گرجو چاہ اللہ کہ تھے ہے بھلاوے اس کا کم و تلاوت منسوخ کر کے (از حسن و تحارہ) اس صورت بیں النسیاء شخ کی ایک قتم ہے۔ اور سورة بقر شل ما نسخ من اینة اوننسها الایت کے تحت میں اس کا بیان آچکا ہے انتھی المید اتناعشری کی نمایت می معتبر تغیر لیعنی الم حسن عسکری (مطبوعہ مطبع جعفری لکھنو ص ۲۲۳۳) میں اس طرح واروہ۔
قال الا مام قال محمد بن علی بن موسی مانسخ من آیة بان توفع حکمها اوننسٹها بان نرفع رسمها وقد نبلی عن القلوب حفظها وعن قلبک یا محمد کما قال سنقرئک فلا تنسی الا ماشاء الله ان ینسیک فرفع عن قلیل نات بخیر منها یعنی بنخیر عملکم بهذه الثانیة واعظم لئوا بهاواجل لصلاحکم من الایة الا ولی من من بنخیر عملکم بهذه الثانیة واعظم لئوا بهاواجل لصلاحکم من الایة الا ولی من



المنسوخة او مثلها من الصلاح لكم اى انا لا ننسح ولا نبدل الا وغرضنا في ذلك مصالحكم ثم قال يا محمد الم تعلم ان الله على كل شئى قدير-

ترجمہ: امام حسن عسری کا قول ہے کہ میرے جد امجد امام محد تقی بن علی بن موی نے آیت) تغیریوں فرمائی ہم جو منسوخ کرتے ہیں کوئی آیت بدیں طور کہ ہم اس کا تھم منسوخ کرتے ہیں۔ یا بھلاتے میں اسے بدیں طور کہ اس کی تلاوت منسوخ کردیتے ہیں- اور اے محمد تیری امت کے دلو_{ل س}ے اور تیرے ول سے اس کی یاو اڑا ویتے ہیں۔ جیما کہ قول سنقو لک فلاتنسی الا ماشاء الله (بم یر حائیں گے تجھ کو بھر تو نہ بھولے گا مگر جو چاہے اللہ کہ تجھ سے بھلا دے پس اس کی یاد ذرا ی دریل اٹھ جاتی ہے تو لاتے ہیں بمتراس سے جس پر تمهارا عمل کرنا بمتراور جس کا تواب بزرگ تر اور جس میں مصلحت زیادہ ہوتی ہے یہ نببت منسوخ آیت کے یا برابراس کے تمهاری مصلحت کے لحاظ سے لینی ہم منسوخ کرتے اور نہ تبدیل کرتے ہیں مگربہ کہ اس میں ہماری غرض تمہماری مصلحین ہوتی ہیں پھراللہ عزوجل نے فرمایا۔ اے محم کمیا تجھ کو معلوم شیں اللہ ہر شے پر قادر ہے انتھی امامیہ اٹنا عشریہ کی خاص تقبیر لعنی تفییر صافی میں آبیہ نشخ کی وہی تفییرورج ہے۔ جو تفییرا مام حسن عسکری میں ہے۔ لاذا اسے یمال نقل نہیں کیاجاتا۔ امامید امنا عشرید کی تغییر منج الصادقین)جلد اول ۱۰۲) میں آید ننخ کے تحت میں یوں ذکور ہے وانساء آیہ اذباب آنست از قلوب چنال کہ در روایت آمدہ کردے در مجلس رسول برپائے خاست و گفت یا رسول چند آیہ قرآن ہے دانستم و در نماز تنجدے خواندم شب برخاستم فراموش کردہ بودم و ہرچھ که خواستم که بیاد من آید میسرنشد و دیگرے برخاست و گفت مرانیز جیس قضیه دست داو دیگرے مجنیل گفت بینمبر صلی الله علیه الله وسلم فرمود که بیج سے دانید که سبب این میست سمفتند الله و رسول اعلم فرمودای بجت آنست که حق تعالی آنرا شخ فرمود و برگاه آیتے راشخ نماید آنرا ازیاد مردمال برودای از جمله معجزات آمخضرت اسمت-

رجہ: اور آیت کانساء (بھلاتا) اس کا دلوں سے دور کرنا۔ چنانچہ ایک روایت میں آیا ہے کہ ویجبر خدا کی مجلس میں ایک محض نے اٹھ کر عرض کیا یا رسول اللہ مجھے قرآن کی چند آبیتی یاد تھیں۔ جن کو میں ٹماز تہجد میں پڑھا کر تا تھا رات کو جو میں اٹھا تو مجھے بھولی ہوئی تھیں۔ میں نے ہرچند چاہا کہ یاد آجا ہیں۔ مگر نہ ہوسکا۔ ایک اور مخض نے اٹھ کر عرض کیا کہ مجھے بھی میں معالمہ پیش آیا اور ایک اور نے بھی ایسا مکر نہ ہوسکا۔ ایک اور مخض نے اٹھ کر عرض کیا کہ مجھے بھی میں معالمہ پیش آیا اور ایک اور نے بھی ایسا کی بیان کیا پنجبر نے فرایا کہ کیا تہمیں اس کا سب معلوم ہے انہوں نے عرض کی کہ اللہ اور اس کا رسول غوب جائے ہیں آپ نے فرایا کہ کیا تہمیں اس کا سب معلوم ہے انہوں نے عرض کی کہ اللہ اور اس کا رسول خوب جائے ہیں آپ نے فرایا کہ اس کی وجہ سے ۔ کہ اللہ تعالی نے ان کو مضوح کردیا۔ جس وقت اللہ تعالی میں آیت کو مضوح کردیا ہے۔ اے لوگوں کے دلوں سے بھلا دیتا ہے۔ اور سے آخضرت کے مجزات تعالی میں آیت کو مضوح کردیتا ہے۔ اے لوگوں کے دلوں سے بھلا دیتا ہے۔ اور سے آخضرت کے مجزات

بی ہے ہے۔ اسمی - خلامت المنبی میں جس میں مغرین کے وہ اتول لائے گئے ہیں جو فرہب المہ میں معند ہیں۔ آب ننے کا فاری ترجمہ یوں فرکور ہے۔ ماتنسنخ من ایة ہرچہ منسوخ میگرد اینم از آبت از قرآن بدونی مصلحت خلقان ومتعمائے زبان او ولنسبها فراموش میگرداینم آنواو از دلها نے معے بویم نات بنخیو منها ہے آریم ہمترا آزال آب منسوف در نفع بندگال چنا کلہ جمادیک غازی رایاد تن منسوخ کردیم بدوتن یاوربیار ثواب کہ ور ناتخ باشد ودر منسوخ نہ او مثلها یاے آریم مائن آنچہ فنح کردہ ایم ور منسوخ نہ او مثلها یاے آریم مائن آنچہ فنح کردہ ایم ور منسوخ نہ او مثلها یاے آریم مائن آنچہ مودی کردہ ایم ور منسوخ کردہ ایم ور منسوخ نہ اور میل مائن آنے مسلحت چول گردائیدن قبلہ ازبیت المقدس بکعبہ مردی است کہ مردے در مجلس اشرف رسالت برپائے خاست و گفت یا رسول اللہ چند آب از قرآن سے دائسم در نماذ تنجدے خوائدم نہ بیش برخاستم فراموش کردہ بودم ہرچند خواستم کہ بیاد آرام میسرنشد و دیگرے نیر برخاست و گفت مرائیز ہمیں صورت دست داد دیگرے نیز چنس گفت حضرت فرمود کہ حق تعالی انرا نئح فرمود کہ تن قائی انرا نئح فرمود کہ حق تعالی انرا نئے فرمود کہ تن قائی انرا نئے فائد و کرمود کہ تن تعالی انرا نئے فرمود کہ تن تعالی انرا نئی نہرد

ترجمہ: مانسخ من آیہ ہو ہم منسوخ کرتے ہیں قرآن کی کوئی آت بندوں کی مصلحت اور زمانے کے مقتضا کے موافق او ننسھایا فراموش کرتے ہیں اس کو اور دلوں ہیں ہے لے جاتے ہیں ناات بخیر منھا لاتے ہیں بمتراس آیت منسوفہ ہے بندوں کے نفع ہیں جیسا کہ دس کے ساتھ ایک کے جماو کو ہم نے دو کے ساتھ منسوخ کرویا۔ یا ثواب کی زیادتی ہیں جو ناتغ ہیں ہو اور منسوخ ہیں نہ ہو او مشلھا یا ہم لاتے ہیں بازیر اس کے جو ہم نے منسوخ کیا ہے نفع اور ثواب ہیں باوجو و رعایت مصلحت کے جیسا کہ بیا المقدس ہے کو جہ کو قبلہ مقرر کرنا مروی ہے کہ ایک فخص نے جناب رسالت پناہ کی مجلس اشرف بیٹ المقدس ہے کو جہ کو قبلہ مقرر کرنا مروی ہے کہ ایک فخص نے جناب رسالت پناہ کی مجلس اشرف میں اٹھ کر عرض کیا یا رسول اللہ قرآن کی چند آیتیں مجھے یاد تھیں۔ جو ہیں نماز تبحہ ہیں پڑھا کرنا تھا۔ کل دات جو ہیں اٹھا تو یاد نہ تھیں ہیں ہے چند چاہا کہ یاد آجا تیں گرنہ ہو سکا ایک اور فخص نے بھی اٹھ کر مرض کیا یا دہ تھیں ہیں ہو یمی معالمہ چیش آیا ہے ایک اور نے بھی ایسا ہی بیان کیا۔ حضرت نے مرض کیا۔ کہ میرے ساتھ بھی ہو یمی معالمہ چیش آیا ہے ایک اور نے بھی ایسا ہی بیان کیا۔ حضرت نے فراموش کردیتا ہے۔ اے لوگوں کے دلوں سے فراموش کردیتا ہے۔ اے لوگوں کے دلوں سے فراموش کردیتا ہے۔ اس کو منسوخ کردیا۔ جس آیت کوخدا تعالی منسوخ کردیتا ہے۔ اے لوگوں کے دلوں سے فراموش کردیتا ہے۔ انتھی۔

ناظرین آپ نے دیکھ لیا کہ امامہ اٹناعشریہ کی کیسی کیسی معتبر کمابوں سے بلکہ فود قرآن مجید سے

دخ کی تمن قسمیں شابت ہوتی ہیں۔ لینی ننخ الثادة والحکم معا۔ ننخ الثادة دون الحکم ننخ الحکم دون الثادة یا

النمر کسی شیعی مولوی کا یہ کمنا کہ منسوخ الثادة ایک خاص اصطلاح اہل سنت کی ہے امامہ کی کمابوں میں

النمر کسی شیعی مولوی کا یہ کمنا کہ منسوخ الثادة ایک خاص اصطلاح اہل سنت کی ہے امامہ کی کمابوں میں

آیات منسوخ الثادة کا کمیں ذکر نہیں کمال درجہ کی جمالت کی تجابل ہے۔ ان اقسام شاشہ کود کھے کر مجتد

البحدری کی تو روح کا نہتی ہوگی کیونکہ ان سے اس کے اعتراضات کا قلع قمع ہو جاتا ہے۔ اور اس کی عمر کا

اندو خند اس کی آتھوں کے سامنے خاک میں ملاجاتا نے اہلتنت و جماعت کی کتابوں میں بھی ان اقرام ہو ذکرہے جس کا جی چاہے انقاق وغیرہ میں و مکھ نے۔

قال الحائري

سینون کے قرآن میں زیادتی مان اسینون کے قرآن میں دیادتی صاحبان؟ آپ یہ خیال نہ فرمائیں کہ سینوں کے اعتقاد میں مرف نقسان ہی ان کے قرآن میں واقع ہوا ہے۔ بلکہ جمان بعض آیتوں کا ان کی مسلمہ روایات کی بنا پر قرآن سے نکل جاتا ثابت ہو تا ہے زیادہ کیا جاتا بھی ان کی معتبر روایتوں سے ثابت ہے جس سے معلوم ہوا زیادتی اور کی دولوں قتم کی تعریف قرآن میں سینوں کا اعتقاد اور فدہب ہے نمونہ کے طور پرزیادتی کی بھی دو چارمثالیں سن لیں۔

(۱) تفیراتقان مطبوعہ احمدی ۴۳۰ سطر دو میں امام جلال الدین سینوی رقم طراز ہیں وسورۃ الا عراف زید فیھا الصاد علی الم لما فیہ مامن شرح القصص انتھی بلفظه لینی سورہ اعراف (اپ ع ۸) کا شروع جو موجودہ قرآن میں آلمقض سے ہوتا ہے یہ درامل صرف آلمۃ تین حرف شے اس میں ایک حرف صاد اس لیے زیاد کردیا گیا ہے کہ اس میں نہیں کے قصول کا بیان ہے۔

(۲) اسناص ۳۳ سطر ۳ میں مرقوم ہے وزید فی الوعد ولا جل الوعد والبوق انتھی بلفظه

یعنی سورہ رعد کا شروع جو موجودہ قرآن میں آلمر ہے ہوتا ہے یہ بھی دراصل آلم نازل ہوا تھا

اس میں بھی ایک ر زیادہ کردیا گیا ہے کیونکہ اس سورۃ میں رعد اور برق کا ذکر ہے۔

کیول جناب فرمائے قرآن میں کی اور زیادتی ہونے کا اعتقاد سینوں کا ہوا یا شیعوں کا غیر تمند

کے لیے تو ڈوب مرنے کا مقام ہے کہ جس کے گھر کا یہ حال ہو وہ کی کامل الایمان ندہب بہ
تحریف کا بہتان کیونکر لگا سکتا ہے موحد تحریف قرآن (۲۳۳ ۲۳۲)

اقول

آنخضرت کے وصال شریف کے بعد قرآن مجید میں حسب عقیدہ اہلتت و جماعت نہ کی ہوئی نہ زیادتی اور نہ کسی اور طرح کی تحریف گرمجتد لاہوری کی سمجھ کو ہم کیا کریں۔ وہاں قول ابن عرش لفظ ذید کو دیکھ کر ہم میاک دی کہ سینوں کے ذھب دیکھ کر کمہ دیا کہ سینوں کا قرآن ناقص ہے یمال لفظ ذید کو دیکھ کر بڑھانک دی کہ سینوں کے قرآن میں ذیادتی ہمی ہے قول ابن عمر کا بیان تو ہو چکا اب یمال مزید غور سیجھے۔ کہ تفییرانقان نوع شعبت

روم میں آبنوں اور سورتوں میں مناسبت کابیان ہے اس نوع میں کئی قصلیں ہیں جن میں سے ایک بوں رور ہے۔

قال في البرهان ومن ذلك افتتاح السور بالحروف المقطعة واختصاص كل واحدة بمابدئت به حتى لم تكن لترد الم في موضع الرلاحم في موضع (طس)

ترجمہ: فصل برہان میں مذکور ہے کہ ازا نجملہ ہے سورتوں کا افتتاح حروف مقطعہ کے ساتھ اور ہرسورت کا اختصاص اس سے کہ جس کے ساتھ وہ سوریت شروع کی گئی ہے یماں تک کہ آلم وارد نہیں ہوسکتا ہجائے آلر کے اور نہ تم ہجائے مس کے انتھی ای فصل میں مقطعات و سوز کے ورمیان تناسب کی مثاوں میں یہ عبارت ہے۔
مثالوں میں یہ عبارت ہے۔

والم جمعت المخارج الثلاثة الحلق واللسان والشفتين على ترتيبها وذلك اشارة الى البداية التى هى بداء الخلق والنهاية التى المعاد والوسط الذى هو المعاش من التشريح بالا وامر والنواهى وكل سورة افتتحت بهافهى مشتمله على الا مور الثلاثة وسورة الاعراف زيد فيها الصادعلى آلم لما فيها من شرح الققص قصة ادم عليه السلام فمن بعده من الانبياء ولما فيها من ذكر فلا يكن فى صدرك حرج ولهذاقال بعضهم معنى آلمَض الم نشرح لك صدرك وزيد فى الرعدراء لا جل قوله رفع السموات ولا جل ذكر الرعد والبرق وغيرهما.

ترجمہ: اور آلم جامع ہے تین مخارج کو بالترتیب لیٹی جلق ذبان اور ہوشوں کواور یہ اشارت ہے ہائے کی طرف جو آغاز پیدائش ہے اور نمایت کی طرف جو معادو آخرت ہے اور وسط کی طرف جو معاش ہوتی اوامرو نواہی کا بیان کرنا جس صورت کا افتتاح ان تین حرف سے ہوتا ہے وہ انہی تین امور پر مشتل ہوتی ہے اور سورہ اعراف کے شروع میں آلم پر حرف صاد زیادہ کیا گیا ہے ۔ کیونکہ اس میں مخرت آدم اور ان ک بعد کے نیول کے کا بیان ہے اور اس میں فلایکن فی صدرک حرج ذکور سے ای واسط بعضوں نے کما ہے کہ المص کے معنی ہیں الم نشوح لک صدرک (کیا ہم نے نہ کھول سے ای واسط بعضوں نے کما ہے کہ المص کے معنی ہیں الم نشوح لک صدرک (کیا ہم نے نہ کھول سے ان واسط بعضوں نے کما ہے کہ المص کے معنی ہیں الم نشوح لک صدرک (کیا ہم نے نہ کھول سے ان واسط بعضوں ہے کما ہے کہ المص کے معنی ہیں الم پر حرف "در" کا ذیاوہ کردیا گیا کیونکہ اس میں منا الم اس میں منا الم میں الم میں الم میں الم میں منا کی المورث وغیرہ ذکور ہیں۔ انتھی۔

ندکور بالا عبارت عربی کے ترجمہ سے ایک طفل کمتب بھی یہ سمجھ سکتا ہے کہ مصنف کا مطلب میں ساتھ کے مصنف کا مطلب میں سنت کو اللہ تعالی نے جو سورہ اعراف کو بجائے الم کے المص سے شروع کیا ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اللہ تعالی اور معاد و معاش کے علاوہ عبول کے قصے بھی ذکور جیں محر جمتد لاہوری اس سے یہ سمجھتے



ہیں کہ سورہ اعراف کے شروع میں اصل قرآن میں صرف تین حرف لینی الم تنے مگر محابہ کرام نے چی اللہ سے مگر محابہ کرام نے چی تی حرف ساد اپنی طرف سے زیادہ کردیا ہے۔ علی ہذا لقیاس سورہ رعد میں حرف "ر" کا زیادہ کردیا ہے۔ اب ناظرین خود فیصلہ کرلیں۔ کہ کس کے لیے ڈوب کر مرنے کا مقام ہے۔

قال الحائري

(۳) تغییر در متور جلد ۲ یا ص ۲۱۷ سطر۳ میں سیوطی لکھتا ہے کہ احمد بزاز طبرانی اور ابن مردریہ نے ابن عباس اور ابن مسعود سے روایت کیا ہے۔

انه كان يحك المعوذ تين من المصحف ويقول لا تخلطو القرآن بما ليس منه انهما ليستا من كتاب الله انتهى بلفظه

لیعنی ابن مسعود نے معوذ تین اپنے قرآن سے کاٹ دیا تھا اور کہتے تھے کہ قرآن میں غیر قرآن کو خلط و طط نہ کمدو-

يه دونول سورت كالب خدايس داخل نيس ي-

تغيير كبير مطبوعه مصر ١٩٩ سطر ١٤ مين امام فخرالدين رازي لكصة بين-

نقل في الكتب القديمة ان ابن مسعود كان ينكر كون سورة الفاتحه من القرآن وكان ينكر كون المعوذ تين من القران اتنبي بلفظه-

ایعنی این مسعود سورہ الفاتحہ اور معوذ تین کے داخل قرآن ہونے سے انکار کرتے تھے۔

صاحبان؟ آپ نے غور کیا کہ در معثور اور کیر سینوں کی دونوں مسلمہ تغیروں سے یہ ثابت ہوا کہ نہ توسوہ فاتحہ قرآن ج اور نہ معوذ تین طال آنکہ حضر عثان کے اس جمع کئے ہوئے موجودہ قرآن میں اس وقت یہ سور تی موجود ہیں فرمائے سینوں کے ان ڈکور احوالوں کے مطابق زیادتی ثابت ہوئی یا نہیں تم خود تی انساف کرو کہ تحریف کے دونوں قتم کی کی اور زیادتی کا ہونا قرآن میں سینوں کا ذہب ہوایا نہیں موجعہ تحریف قرآن ہم ہیا ۲۵)

أقول

مجتمد الهورى نے تغیردرمنثور سے بورا دوالہ نقل نہیں کیا اور وہ یہ ہے۔ اخرج احمد والبزار والطبرانی هردویة من طرق صحیحة عن ابن عباس وابن مسعود انه کان یحک المعوذتین من المصحف ویقولوالا تخلطوا القرآن

میں ہے۔

بماليس منه انهما ليستامن كتاب الله تعالى انما امر النبي على الله عليه واله وسلم ان يتعوذ بهما وكان ابن مسعود لا يقراء بهما قال البر از لم يتابع ابن مسعود احد من الصحابة وقد صح عن النبى صلى الله عليه وسلم انه قرآ بهما في الصلاة واثبتنا في المصحف.

ترجمہ: احمد بزاز و طرانی و ابن مردویہ نے صحیح طریقوں سے ابن عباس و ابن مسعود سے روایت

ک کہ ابن مسعود معوذ تین کو مصحف سے کاٹ دیتے تھے اور فرائے تھے کہ قرآن کو غیر قرآن کے ساتھ فلط لط نہ کرو۔ یہ دونوں سور تیں کتاب اللہ میں سے نہیں ہیں۔ پیغیر ضدا نے صرف یہ تھم دیا ہے کہ ان دونوں کے ساتھ تعوذ کیا جائے اور ابن مسعود ان دونوں سور توں کو نماز ہیں نہ پڑھا کرتے تھے۔ بزاز نے کما کہ سحابہ ہیں سے کمی نے ابن مسعود کی متابعت نہیں گی۔ اور تیغیر ضدا سے تابت ہے کہ آپ نے ان دونوں کو نماز ہیں سپر جا۔ اور یہ دونوں مصحف ہیں ثبت کی گئیں۔ انتھی اس پورے حوالہ ہیں حائی ان دونوں کو نماز ہیں بڑھا۔ اور یہ دونوں مصحف ہیں ثبت کی گئیں۔ انتھی اس پورے حوالہ ہیں حائی مائی حائی کا احتراض کا جواب بھی آگیا۔ کیونکہ ابل سنت کا نم بہ یہ کہ معوذ تین واحل قرآن ہیں کی تمام صحابہ کرام کا قرآن نہ بھتے تھے۔ کیونکہ ان کو داخل قرآن نہ بھتے تھے۔ کیونکہ ان کو داخل قرآن نہ بھتے تھے۔ کیونکہ ان کو داخل قرآن نہ بھتے تھے۔ کیونکہ ان کے نزدیک ان کاتوا تر ثابت نہ تھا۔ بظاہر دہ بھی آئر کار دیگر صحابہ کرام کے ساتھ متنق ہوگئے تھے۔ والعلم عنداللہ تقیر کبیر سے جو حوالہ نقل کیا گیا ہے وہ بے سد ہے ایسے نہ سرویا حوالے کے سند نے لیے ہم تیار نہیں۔ اگر امام رازی کا نام بطور سند پیش کیا جائے تو وہ یوں فرماتے ہیں۔ الا غلب علی النظن ان ہذا النقل عن ابن مسعود سے نقل کذب باطل ہے۔ انتھی۔ این مسعود سے یہ نقل کذب باطل ہے۔ انتھی۔ این مسعود سے یہ نقل کذب باطل ہے۔ انتھی۔ جمہتد لاہوری المستنت پر تو اعتراض کرتے ہیں۔ گرانہیں اسٹے گھرکا صال معلوم نہیں تغیرصافی

وعن الصادق انه سئل عن المعوذ تين أهما من القرآن فقال نعم هما من القرآن فقال الرجل ليستا من القرآن في قراءة ابن مسعود لا في مصحفه فقال اخطا ابن مسعود قال كذب ابن مسعود هما من القرآن قال الرجل فاقراء بهمافي المكتوبة قال نعم والقمى عن الباقر قيل له ان ابن مسعود كان يمحو المعوذتين من المصحف فقال كان ابي يقول انما فعل ذلك ابن مسعود براية وهما من القرآن المصحف فقال كان ابي يقول انما فعل ذلك ابن مسعود براية وهما من القرآن ترجمه: الم يعقرصادق ب دريافت كياكياكم آيا معود تين جرء قرآن جي آپ في قراليال جرد قرآن جي اس ما كل في عرض كي كد ابن مسعود كي قرات عن قربي الديم مسعود ابن مسعود ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن الرياس الله المسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرق قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي ادر ته مصحف ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي المعرف كي كد ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي المعرف كي كد ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي المعرف كي كد ابن مسعود كي قرات عن قرآن جي المعرف كي كد ابن مسعود كي قرات عن المعرف كي كد ابن مسعود كي قرات عن المعرف كي كد ابن مسعود كي قران عرب كي كد ابن مسعود كي قران عرب كي كد ابن مسعود كي قران عرب كي كو ابن مسعود كي قران عرب كي كد ابن مسعود كي قران عرب كي كد ابن مسعود كي قران عرب كي كد ابن مسعود كي قران كي كو ابن مسعود كي قران كي كد ابن مسعود كي قران كي كد ابن مسعود كي كو ابن مسعود كي كد ابن مسعود كي كو ابن مسعود كي كو ابن كو كو ابن كو ابن

میں ہیں۔ امام نے فرمایا کہ این مسعود نے خطاکی یا فرمایا کہ ابن مسعود نے جمعوث کما۔ وہ جزو قرآن بیں اس مخص نے پوچھا کہ کیا ہیں ان کو نماز فرض میں پڑھ لیا کروں۔ امام نے فرمایا ہاں۔ اور تغییر فی میں ہے اس مخص نے پوچھا کہ کیا ہیں ان کو نماز فرض میں پڑھ لیا کروں۔ امام نے فرمایا کہ ابی کم امام مجر ہاقرے کما کیا کہ ابن مسعود معود تین کو مسحف میں سے ہٹا دیتے تھے۔ امام نے فرمایا کہ ابی کما کرتے تھے کہ ابن مسعود نے یہ اپنی رائے سے کیا طال نکہ وہ دونوں جزو قرآن جیں۔ انتھی۔

قال الحائري

(۳) تغییر در متور مطبوعه معرجلد ششم می ۳۵۸ سطر۵ بین امام سیوطی نے لکھا ہے۔ معید بن منصور احمد بن حمید بخاری مسلم ترزی۔ نسائی۔ ابن جریر - ابن المنذر ابن مردویہ نے علقمہ سے روایت کی

انه قدم الشام- فجلس الى ابى الدرداء فقال له ابو الدرداء ممن انت قال من اهل الكوفة قال كيف سمعت عبدالله يقراء والليل اذا يغشى قال علقمة والذكر والانثى فقال ابو الدرداء اشهدانى سمعت رسول الله صلى الله عليه واله وسلم يقراء هكذا وهؤلاء يريد ونى على انى اقراها خلق الذكر والانثى والله لا اتابعهم انتهى بلفظه

یعنی علقہ۔ ایک مرتبہ شام میں آیا۔ اور ابو درداء کے پاس بیٹا انہوں نے بوچھا کہ تم کن اوگوں میں سے ہو علقہ نے کہا کہ میں بال کوفہ میں سے ہوں۔ پس ابودردائے کہا تم نے عبداللہ کو سورہ واللیل اذا یعنی کس طرح پڑھتے ساہے علقہ نے کہا میں نے بجائے وہا خلق الذکرولائی کے والذکروالائی بڑھتے ساہے پس ابو درداء نے کہا۔ میں شہادت دیتا ہوں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم کو بڑھتے ساہے پس ابو درداء نے کہا۔ میں شہادت دیتا ہوں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم کو بھی بڑھتے ساہے لیکن مید لوگ جاہتے ہیں کہ میں و ها خلق الذکو والا نشی پڑھوں بخدا میں ہرگزان کی متابعت نہ کروں گا۔ (موحد تریف قرآن ۲۵)

اقول

والذكرو الا نشى قراة شاذه ب اس تحريف س كيا تعلق مجتد صاحب قرآت متواتره شاذه سب كو تحريف من شاركر رب بين عقل و دانش ببايد كريست تفير روح المعانى (جزء اسع ٣٨٣) مين ب-

وانت تعلم ان هذه قراءة شاذة منقولة احاد الا تجوز القرأة بهالكنها بالنسبة الى

من سمعها من النبي عليه الصلاة والسلام في حكم المتواتر تجوز قراء ته بها.

میں مسلم ہے۔ رجمہ: اور کتھے معلوم ہے کہ یہ قراء ہ شاذہ ہے جوبطریق آحاد منقول ہے۔ اس کے ساتھ قرات ہار نہیں ہاں جس نے اسے پیفیبر خدا ساتھ ہے سنا ان کے لیے متواتر کے تھم میں ہے اور اس کے ساتھ قرات جائز ہے استھی شیعہ کی بڑی معتبر مجمع البیان میں ہے۔

في لاشواذ قراة النبي وقراة على ابن ابي طالب وابن مسعود وابي الدراد، وابن عباس النهار اذا تجلى وخلق الذكروالا نثى بغير ماروى ذلك عن ابي عبدالله

ترجمہ: شاذ قراء توں میں قرات نی او قرات علی بن ابی طالب و ابن مسعود و ابو الدرداء ابن مباری ہے الهنار اذا تجلی و خلق الذكووالانثى بغیر ما كے اور يه امام جعفر صادق ہے مروى ہے۔ انتھى۔

قال الحائري

سینوں کے قرآن سور توں کا نقصان دوستو؟ ہاں حضرات اہلستت نے اسی قدر کھنے پر اکتفا میں کیا ہے قرآن نا ممل (ناتھ) ہے بلکہ ان کے ہاں ایسی روایتیں بکٹرت ہیں جن سے یہ جابت ہونا ہے کہ ان کے اس ناقص قرآن کی سور تیں بھی ناقص ہیں جن سے ان کے خلیفہ زادے حضرت ابن مرکے اس خدور کی تقدر ہوتی ہے۔ اور فی الواقع ان کا قرآن ناکھل ہے۔

تقیراتقان ص ۱۳۱۱ سطرااعلامه سیوطی نے ام المومنین حضرت عائشہ سے نقل کیا ہے۔ عن عائشة قالت سورة الا حزاب تقرافی زمن النبی مائتی ایة فلما کتب عثمان المصاحف لم تقدرمنها الا علی ماهو الان انتهی بلفظه

تقییر در متور مطبوعه مصر جلد کم ۱۸۰ سطر ۲۳ میں مجمی عینانیه روایت مرقوم ہے۔

لینی جناب ام المومنین حضرت عائشہ نے فرمایا کہ سورۃ احزاب کی جو پارہ ۲۱ میں ہے) حضور پینجبر المام علیہ والہ وسلم کے عمد اور زمانہ میں پوری دو سو (۲۰۰۰) آیتیں تلاوت کی جاتی تھیں لیکن سی مملانوں میں خلیفہ حضرت عثمان نے قرآن لکھتے وقت جب دو سرول کے قرآن جلا دیے تھے) صرف اس قرآن میں سورہ احزاب میں لکھی ہیں۔ جو اس وقت قرآن میں سوجود ہیں۔

کیوں سن لیا آپ نے بتائیے؟ اب تحریف کاکون قائل ہے کی عائشہ صاحبہ کے اس قول سے تو البت ہوا کہ رسول کے زمانہ میں سورہ احزاب میں نہ تمنیخ واقع ہوئی نہ تحریف کیونکہ آخضرت مل اللہ اللہ کا علیہ علی میں مشمل پڑھا جاتا رہا۔ اگر تمنیخ ہوئی ہوتی تو رسول خدا پر تائخ آیت ارتی اور وہ سب کو معلوم ہوتی مگر راز طشت ازبام بول ہوتا ہے کہ بی عائشہ یمل صاف ہوں فہارتی ہیں کے اور وہ سب کو معلوم ہوتی مگر راز طشت ازبام بول ہوتا ہے کہ بی عائشہ یمل صاف ہوں فہارتی ہی کے حضرت عثمان نے قرآن لکھتے وقت سورہ احزاب جس بجائے ۲۰۰ آخول کے کل بھتریا آئیس تعمیر ہی اسلام سیوطی ص ۱۳۳ سطر ۱۳ زن ایک سوستا کیس یا اٹھا کیس آئیس سورہ برائت سے تحریف کردیں۔ انقان امام سیوطی ص ۱۳۳ سطر ۱۳ زن جیش سے نقل کیا گیا ہے۔

قال قال لى ابى ابن كعب كاين تعد سورة الاحزاب قلت اثنتين و سبعين آية اور ثلاثا و سبعين آية قال ان كانت لتعدل سورة البقرة انتهى بلفظه

یعنی ذرین جیش نے کما کہ ابی ابن کعب نے جھے سے کما۔ کہ سورہ احزاب کی تم کتنی آیتی ثار کرتے ہو۔ میں نے کما بھتریا تہتر آیتیں ابی بن کعب نے کما اگر یہ سورت پوری رہے دی جاتی تو سورہ بق کے برابر ہوتی۔

جب بیہ سورہ پوری ۲۰۰ آیتوں میں الماوت ہوتا رہا ہے تو سینوں کے خلیفہ عثان کو نصف سے زیادہ کم دینے کا اس میں کیول حق حاصل ہوا۔ طرفہ بیہ ہے کہ سنی مصنف منقول عنہ سینوں کی کتب زرین جیش ناقل بھی سنی ابی بن کعب راوی سنی محرف حضرت عثمان سینوں کا امام اور خلیفہ سوم ڈوب مرخ کا مقام ہے کہ اس پر بھی طعن الٹاشیعوں پر کما جاتا ہے۔ کہ شیعہ تحریف قرآن کے قائل ہیں۔ کیا رافضیوں کا ایمان قرآن پر ہے۔ یا ہو سکتا ہے۔

اب نہ کورہ فبوت کے بعد لاہوری سی انجمن کے نمبرہ پمفلٹ نہ کورہ کے جواب میں ہم مرف ای قدر کہتے کہتے ہیں کہ شرم- شرم- شرم- موعد تحریف-ص ۲۷-۲۷

اقول

اہل سنت نے یہ کمیں نہیں لکھا کہ ہمارا قرآن ناقص ہے۔ ہاں ججھ کا تھے ہا تھے ہوئی کہ معولی جس کی وجہ سے اس نے اہل سنت پر یہ افتراء کیا ہے۔ اس کی لیافت کا یہ حال ہے کہ عربی کی معمولی عبارت کو بھی نہیں سمجھ سکا۔ چنانچہ اپ لم تقدر منہا الا علی ماھو الان کا ترجمہ یوں کیا ہے۔ صوف اس قدر آیتیں سورہ احزاب میں لکھی ہیں جو اس وقت قرآن میں موجود ہیں اور اس کا مطلب یہ لکھا ہے کہ سورہ احزاب میں بجائے۔ ۲۰۰۰ آیتوں کے کل بھتریا تھتر آیتیں لکھیں باتی ایک سوستا کیس یا اٹھا کمی آتیتیں سورہ برائت سے تحریف کردیں۔ اس چالوں سے ان پڑھا اشخاص بالخصوص نو تعلیم یافتہ طبقہ کو جو گئی سے باکل نابلہ اور دین سے ناواتف ہیں۔ وجوکا دینا مقصود ہے اور سنٹے کہ جہتہ صاحب نے حوالہ احزاب کے متعلق روایت عائشہ صدیقتہ رضی اللہ تعالی عنہا کو انقان سے نقل کر کے ورمنٹور کا بھی حالہ احزاب کے متعلق روایت عائشہ صدیقتہ رضی اللہ تعالی عنہا کو انقان سے نقل کر کے ورمنٹور کا بھی حالہ

را ہے۔ مگر روایت زرین جیش کو صرف بحوالہ انقان نقل کیا ہے۔ اور دوہ متور کا ذکر بھک جمی شیس کیا اس کی وجہ یہ ہے کہ درمتور سے پوری روایت کو س کر سامعین فریب میں نہ آ کتے تھے ہم اس روایت کو ذیل میں نقل کرتے ہیں۔

اخرج عبدالرزاق في المصنف والطيالسي وسعيد بن منصور وعبدالله بن احمد في زوائد المسيد وابن منيع والنسائي وابن المنذر و ابن الا نبارى في المصلحف والدار قطني في لا فراد والحاكم وصححه وابن مردويه والضياء في المختارة عن زرقال قال لي ابي ابن كعب تقراء سوره الاحزاب او كم تعدهاقلت ثلاثا وسبعين اية فقال ابي قدرائيتها وانها لتعادل سورة البقرة او اكثر من سوره البقرة ولقد قرانا فيها الشيخ والشيخه اذاز نيا فار جموهما البتة نكا لامن الله والله عزيز حكيم في في منها هارفع تفسير درمنثور- مطوع مرجء خاص ص ١٥٥)

ترجمہ : محذف کتب مخرج منها زر کا بیان ہے کہ مجھ سے الی بن کعب نے بوچھا کہ تو سورہ اجزاب كوكس طرح يوهتا ہے يا اس كى كتنى آيتي شاركر تا ہے ميں نے كما تہتر آيتي اس پر ابى نے كما یں نے اے دیکھا ہے بقرہ کے برابریا اس سے بھی زیادہ تھیں۔ اور ہم نے اس میں یہ آیت پڑھی ہے۔ الشيخ والشيخة اذازنيا فارجموهما البتة نكالا من الله والله عزيز حكيم پس اس مس س مرفوع ہوا جو مرفوع ہوا (لعنی منسوخ اللاوت ہوگیا جو ہوگیا) انتھی اس اثر انی بن کعب سے ہتقدیر صحت صاف معلوم ہوگیا کہ سورہ احزاب کی بت سی آیتیں منسوخ اللاوۃ ہوگئیں۔ اور مغجوائے ارشاد عزوجل او تسجا وه کسی کو یاد نه ربی- ای واسطے رویات عائشہ صدیقته رمنی الله تعالی عنها میں آیا ہے کہ صحابہ کرام مرف سام آجوں مر قادر ہوئے باتی جو اللہ عزوجل نے حضور اقدس صلی اللہ علیہ والہ وسلم کی حیات شريف بي ميس بهلا دي تنيس- وه بر سنور فراموش رجي- روايت صديقه رضي الله تعالى عنها كاب مطلب نہیں کہ وہ ایک سوستائیس یا اٹھا کیس آیتیں اصحابہ کرام نے آخضرت صلی اللہ کی وفات شریف کے بعد قرآن سے خارج کر دیں کیونکہ بہ تو صریح نص قرآن کے خلاف ہے۔ اور وہ نص بہ ہے انانحن نزلنا الذكروانا له لحافظون بيتك بم بى نے قرآن نازل كيا ہے اور بم بى اس كے تكسبان بين) شيعہ كى كتاب امعاف المامول بشرح زبدة الاصول كے حوالہ ے جم پہلے نقل كر بيكے جي كه سورہ احزاب بقدر مورہ بقرہ تھی مگر آیات موجودہ کے سوا باتی تمام آیات منسوخ اللاوة والحکم ہو کئیں۔ اور یہ امر بھی پہلے البت مو چکا ہے کہ قرآن میں شخ اللاوة والحكم او شخ اللاوة دون الحكم كو شيعه بھى سليم كرتے ہيں۔ لنذا امید کی جاتی ہے کہ مجتدیا کسی دوسرے شیعی صاحب کو ہماری تقریر کے تتلیم کرنے میں غذر ند ہوگا۔

اخیریں ہم یہ ہمی بتانا چاہتے ہیں کہ ملامہ سیوطی کی تغییر در مشور کی نبت پہلے آپکا ہے کہ اس کاب کی روایتیں ہم پر جمت نہیں ہاوقتیکہ ان کی صحت کا جُوت چیش نہ کیا جائے ہی حال روایات انقان کا ہے۔ لاڈا ہم جمتد صاحب سے وریافت کرتے ہیں کہ یہ روایات نقل کر رہے ہیں۔ کہی ہیں؟ اگر اواد ہیں تو ان کی صحت خابت سیجے اگر یہ صحح خابت ہو جائیں تو پھر ہم پوچھتے ہیں کہ ان احاد سے ہمارے ہیں تو ان کی صحت خابت کیے خابت ہوگ۔ کیونکہ قرآنیت کے جُوت کے لیے تو اثر شرط ہے زویک آیات ذیر بحث کی قرآنیت کی جوت کے لیے تو اثر شرط ہے اگر قرآنیت بو جائے تو ہمارا جو اب وہی ہے۔ جو حضرت انی بن کعب رصنی اللہ تعالی عنہ نے فرایا کہ وہ آیات بیشک واخل قرآن تھیں۔ مرحضور رسول اکرم کی حیات شریف ہیں منسوخ اتلادہ ہو گئیں کہ وہ سطے قرآن بین اللہ نین مجمع علیہ ہیں نہ جی کیا ہم جہتد صاحب کے جواب کے ختار رہیں (دیدہ باید)

قال الحائري.

سورت توب كا نقصان تغيرور مشور مطبوعه مصرجلد سوم ص ٢٠٨ سطر ١١ من سيوطى لكمتاب كه افراج كيا هم ابن الى شيبه طراتى ابوالشخ حاكم اور ابن مردويه ن حذيفه س قال التى تسمون سورة التوبة هى سورة العذاب والله ماتر كنا احدا الانالت منه ولا تقرؤن منها مما كنانقرا الاربعها انتهى بلفظه

لینی جس سورۃ کو تم توبہ کی نام سے یاد کرتے ہو۔ وہ در حقیقت سورۃ عذاب ہے خدا کی حم ہم (صحابہ) میں سے ایک بھی ایسا نہیں چھوٹا جس کے متعلق کوئی نہ کوئی عذاب کی آیت نہ آئی ہو۔اور تم اس سورہ توبہ میں نہیں پڑھتے ہو جو پچھ کہ ہم پڑھا کرتے ہتھے گراس کا چوتھا حصہ۔

ا۔ مناص ۲۰۸ سطر ۲۳ میں سیوطی لکھتا ہے کہ اخراج کیا ہے ابوالشیخ نے مکرمہ ہے کہ اس نے کماقال عمر فرغ من تنزیل بوأة حتى ظننا انه لم يبق منا احدالا ينزل فيه و كانت تسمى الفاضحة انتهى بلفظه ظامہ يہ كہ سورہ برات نازل ہونے پر ہم نے گمان كيا كہ ہم (صحابہ) میں ہے کوئی بھی ايبا صحابی باتی نہ رہے گاجی کے متعلق كوئی نہ كوئی تھيجت نہ نازل ہو اور (اس ليے) اس سورہ كا نام فاخح ہے۔

کیوں صاحبان فرمائے اس میں میرا قصور کیا ہے حضرت فذیفہ اور فلیفہ المسلمین حضرت عمر راوی حضرت امام سیوطی ناقل ہیں فرمائے ہے حضرات شیعہ تھے یا سی اور بنابران کی ذکورہ روانتوں کے فرمائے اس سورۃ توبہ کے تین جھے کمال چلے گئے۔ میں یہ کہنے کی جرات و جسارت نہیں کرنا چاہتا کہ فلیفہ المسلمین نے جھوٹ یا غلط کما ہو۔ کہ تمام صحابہ کی نصیحتیں اس سورہ فاضحہ (سورہ توبہ) میں نازل ہو کیں

نہیں۔ اور بنول خذیفہ جو تین جھے اس سورت سے تحریف کردیے گئے۔ کیا وہ تین جھے پورے محابہ کی فنیحوں کے تھے۔ یا کیا براہ کرم قرآن پر ایمان رکھنے کے مدعیان اور رافعنیوں کا ایمان قرآن پر نہ ہوئے کے عنوان سے پفلٹ مشتمرہ شائع کرنے والے اراکیس سی الجمن بتاکیں کیا یہ دونوں راوی کاذب ہیں۔ یا مغرناقل۔ یا کہ مشتمران پفلٹ نہ کور۔ کیا ہم اس کے ضیح جواب کے مشتمرہیں۔ (دیدہ باید) موحد تحریف قرآن ۲۸یا۲۸

اقول

ہم بار ہا لکھ چکے ہیں کہ حسب عقیدہ اہلتت قرآن جید میں آخضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے وصال شریف کے بعد کوئی کی بیشی وقوع میں نہیں آئی جس قدر قرآن حضور اقدس مان ہے جھوڑ گئے تھے انابی اور اس ترتیب سے محفوظ ہم تک پہنچا ہے۔ چتانچہ صحیح بخاری کتاب فضائل القرآن باب من قال لم یتوک النبی صلی الله علیه والله وسلم الا مابینالدفتین میں ہے

حدثنا قتيبة بن سعيد حدثنا سفيان عن عبدالعزيز ابن رفيع قال دخلت انا وشداد بن معقل على ابن عباس رضى الله عنه فقال له شداد بن معقل اترك النبى صلى الله عليه واله وسلم من شئى قال ماترك الا مابين الدفتين قال و دخلنا على محمد بن الحنفية فسالناه فقال ماترك الامابين الدفتين

ترجمہ: حدیث کی جم سے قتیبہ بن سعید نے کہ صدیث کی جم کو سفیان نے عبدالعزیز بن رفیع

اللہ عبدالعزیز نے کہ میں اور شداد بن معقل حفرت ابن عباس وضی اللہ عنہ کی خدمت میں عاضر

الائے۔ پس شداد بن معقل نے ان سے پوچھا کہ کیا پینیبر فدا نے قرآن کے سوا پچھ اور چھوڑا انہوں نے بواب دیا کہ آخضرت نے ماہین الدفین کے سوا نہیں چھوڑا۔ عبدالعزیز کا بیان ہے کہ ہم محمہ بن حنفیہ کی خواب دیا کہ آخضرت نے ماہین الدفین کے سوا خواب دیا کہ آخضرت نے ماہین الدفین کے سوا خواب دیا کہ ماہین الدفین کے سوا کہ منہ محمہ نہیں چھوڑا انہی ۔ اس حدیث میں امام بخاری رحمہ تعالی نے رافینیوں کی تردید بوجہ لطیف کردی جو کتے ہیں کہ آخضرت کی وفات شریف کے بعد صحابہ کرام نے قرآن میں سے حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ کی خوافت بلا فصل کی نصوص کو تو کردین کیو تکہ قرآن میں خلافت بلا فصل کی نصوص اللہ تعالی وجہ کے صاحبزادے پچیرے بھائی دوٹوں کو ان کی ضرور خبر اللہ تعالی وجہ میں کہ آخضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ماجن الدفتین کے سوا اور رافین کی صور کا اعتراض باطل ہوگیا علاوہ اذیں آیت انا ندحن نزلنا الذکو وانا اللہ اللہ قرآن نہیں چھوڑا تو رافعنیوں کا اعتراض باطل ہوگیا علاوہ اذیں آیت انا ندحن نزلنا الذکو وانا اللہ اللہ قرآن نہیں چھوڑا تو رافعنیوں کا اعتراض باطل ہوگیا علاوہ اذیں آیت انا ندحن نزلنا الذکو وانا اللہ اللہ قرآن نہیں چھوڑا تو رافعنیوں کا اعتراض باطل ہوگیا علاوہ اذیں آیت انا ندحن نزلنا الذکو وانا اللہ اللہ علیہ وسلم کے باتین الدفتان کو وانا اللہ اللہ کو وانا اللہ کو وانا اللہ اللہ کو وانا ا

لحافظون رافینیوں کے لیے صاعقہ آسانی ہے جہتد لاہوری نے جو اثر حذافہ نقل کیا ہے۔ اس کا جواب وی ہے جو ہم سورہ احزاب کے متعلق کے دے آئے ہیں۔ لینی برتقذیر صحت وہ تین جھے حضور الدس کی ۔ ں ۔ ، ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ اگر وہ منسوخ اللادۃ ہوتے تو مابین الدفتین میں ضرور ہوتے ۔ اگر وہ منسوخ اللادۃ ہو کے تھے۔ اگر وہ منسوخ اللادۃ ہو کا اڑ حذیفہ کے نقل کرنے میں مجتد صاحب نے ویانتداری سے کام نہیں لیا۔ کیونکہ تغییرورمتور میں ہے والله ما تركنا احدا الا نالت منه (فداك قتم بم محاب ميس سے ايك بهى ايا نسين چمونا جس ك متعلق کوئی نہ کوئی عذاب کی آیت نہ آئی ہو) اس طرح روایت عکرمہ کی بجائے مافرخ کے فرغ اور بجاے سینزل کے بنزل نقل کیا ہے اور ترجمہ بھی درست نہیں کیا۔ میج ترجمہ یوں ہوگا۔ حفرت عمر نے فرمایا کہ سورہ برات کی تنزیل تمام نہ ہوئی یمال تک کہ ہم نے گمان کیا کہ ہم میں سے کوئی باتی نہ رے گا۔ گریے کہ اس کے بارے میں کوئی نہ کوئی آیت نازل ہوگی۔ اور اس صورت کو فانو کیتے تھے۔ اتنی یہ قول (ہم نے گمان کیا الخ) قائل کے تقوے اور خشیتہ اللی پر دلالت کرتا ہے اس قول میں یہ ذکور نہیں کہ نعوذ باللہ محابہ کرام کی نضیت کے بارے میں آئٹیں نازل ہوئیں اور بیہ مجتند صاحب کا افراء ہے۔ کیونکہ قرآن مجید میں سحابہ کرام کے مناقب بکثرت ندکور ہیں۔ جن میں سے اقل قلیل بطور مضے نمونہ از خروار اس کتاب میں بھی آچکے ہیں ہے کہ مجتند صاحب نے سورۃ توبہ کے متعلق دواڑ نقل کئے ہیں جن میں اس سورت کے وو نام نہ کور ہیں مگر آپ نے اپنے خبف باطن کی وجہ سے ناجائز طورے دونوں کی وجہ نشمیہ میں عذاب و فضیت کا مورو محابہ کرام کو قرار ویا ہے حالاتکہ کتب فریقین میں بھراحت تمام مذکور ہے کہ اس سورت کو سورہ عذاب اس واسطے کتے ہیں کہ اس میں عذاب کفار منافقین كا ذكر ہے- اور فاخمہ اس واسطے كہتے ہيں- كه اس ميں فضائح منافقين كابيان ہے چنانچہ تغير بيضادي ميں اس سورت کے ناموں میں سے بحوث و فاخد و سورہ عذاب کی وجہ شمیہ یوں لکھی ہے لما فیھا من البحث من حال منافقين وما يفضحهم ويذكر عذابهم كونكه اس مين منافقين كے طال سے بحث ہے اور ان کے فضائح عذاب کا بیان ہے- انتھی تغییر اتقان (مطبوعہ مصر جز اول ۵۵) میں ہے اخرج ابن ابي حاتم عن قتادة قال كانت هذه السورة تسمى الفاضحة فاصحة

ترجمہ: ابن ابی حاتم نے بروایت قادہ کما کہ اس سورت کو فاضحہ لینی فضیحت کنندہ منافقین کتے المنافقين يتھے- انتھی ای طرح شيعه کی تفسير مجمع البيان (جلد اول ٣٣٨) ميل ہے-

الفاضحة عن سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس سورة التوبة فقال تلك الفاضحة مازال ينزل ومنهم ومنهم حتى خشينا ان لا يبقى منا احد الاذكر

وسميت بذالك لا نها فضحت المنافقين باظهار نفاقهم سورة العذاب عن حذيقة ابن اليمان لانها نزلت بعذاب الكفار.

ترجمہ: سورہ توبہ کا ایک نام فاخوہ ہے کہ سعید بن جبیر کا قول ہے کہ جس نے ابن عباس سے کما مورہ توبہ اس پر ابن عباس نے کما کہ بیہ سورہ فاخوہ ہے بیہ یکے بعد دیگرے منافقین کے بارے جس اترتی رہیں۔ یماں تک کہ ہم ڈر گئے کہ ہم جس سے کوئی ہمی باتی نہ رہے گا۔ اور جو اس جس فدکور نہ ہوگا۔ اس کانام فاخوہ اس واسطے رکھا گیا کہ اس نے منافقین کا نفاق ظاہر کرکے ان کی نفسیت کردی اس کا ایک نام سورۃ عذاب ہو قالیہ بن الیمان سے روایت ہے کہ اس کا بیانا سے دوایت ہے کہ اس کا بیانا سے منافقات طاہر کرکے ان کی نفسیت کردی اس میں عذاب کفار کا ذکر ہے۔ انتھی شیعہ کے مشد فاری ترجمہ لینی خلاصہ المنبی جس بول ہے۔ این سورہ رانا مہائے متعدوہ است کے براۃ کہ جمعنی بیزاری است از کفرو نفاق دویم توبہ زیرا کہ متفتی بینی پاک کندہ از نفاق ششم فاخو بمعنی فضیحت کشدہ از نفاق چمارم گخریہ لینی رسوا کندہ ایشان پنجم مقشید لینی پاک کندہ از نفاق ششم مورۃ العذاب زیرا کہ آل بحث عذاب کفار سے کندا الخی رافطیوں کا ایمان قرآن پر ہونے کی بحث انشاء اللہ عنقریب آئے گی۔

قال الحائري

سینوں کے قرآنی حرفوں کی تحربیف عزیز و دیا رکھنا کہ قرآن مجید میں الکتاب سورہ فاتحہ ہے جو سات آیتوں سے زیادہ نہیں مرسینوں کی مستند و معتبر کتابوں سے ثابت ہوتا ہے کہ ان کے ہاں ان سات آیتوں میں بھی چار آیتوں کے حروف اور الفاظ میں ضرور تحریف واقع ہوئی ہے۔

مزے کی بات اس میں یہ ہے کہ ان کے اکابر آئمہ نے یہ نتایم کرلیا ہے کہ سورہ فاتحہ میں نہ کوئی ناسخ ہے نہ منسوخ جیسا کہ افادۃ الشیوخ مطبوعہ محدی لاہوری ۱۳ سطر ۲ میں علامہ صدیق حسن خال نے محل ایل ناسخ ہے نہ منسوخ قاتحہ ایس سورہ دوبارہ فردد آمہ بارے در مکہ محرمہ وبارے در مدینہ منورہ حرسما اللہ تحالی وردوے نہ ناسخ است نہ منسوخ ذیرا کہ اول او شاء راست واوسط حصر استعانت درخدا و آخرا و دما نتھی بلقظ

لینی سورہ فاتحہ دو مرتبہ نازل ہوئی ہے ایک مرتبہ تو کمہ کرمہ میں اور دو سری مرتبہ مدینہ منورہ بلی سورۃ میں نہ توکوئی آیت منسوخ ہوئی ہے ایسا ہی تغییرانقان- مطبوعہ بلی اور اس سورۃ میں نہ توکوئی آیت منسوخ ہوئی ہے ایسا ہی تغییرانقان- مطبوعہ اتمان میں ساس سطرے انوع ۲۷ میں ہے کہ سورہ فاتحہ میں نہ تائخ آیا ہے نہ منسوخاب اس ہے صاف ٹابت ہوا کہ اس بوری سورت میں نہ توکسی آیت کا جز منسوخ ہے نہ کوئی

پوری کل آیت منسوخ ہے باوجود اس کے بنا پر روابات المسنّت اس سورت میں جمال کمیں تغیر ہوا ہوں لاز التحریف پر بنی ہے۔ نہ سمنیخ پر کیونکہ ناسخ و منسوخ تو بروایات اہل سنت اس سورت میں آیا ہی قمیل۔ تفییر در متثور جلد اول مطبوعہ مصر ۱۳ اسطر ۳۳ میں امام سیو کھی رقم طراز ہے۔

اخرج ابن منصور وعبد بن حميد والبخاري تاريخه وابن الانبازي عن ابن عباس انه قرا اهدنا الصراط بالسين انتهي بلفظه-

یعنی ابن عباس احدنا العراط المستقیم لین کے ساتھ قرات فرماتے تھے ابن انبازی نے کہاکہ عبداللہ بن کیر سراط سین کے ساتھ قرات کرتے رہے ہیں ابن ابی داؤد ابن المنذر عبد بن حمید سعید بن منصور وکیج اور ابو عبیدہ نے کما کہ حضرت عمر بھی سراط سین کے ساتھ قرات کرتے رہے درمشور جلا اول ص ۱۵ سطر ۳۵ کیوں جناب اس میں نہ نات ہے نہ منسوخ تو سراط بالسین کیوں صراط بالصادے بدل دیا گیا یہ تحریف بالحرف نہیں تو کیا ہے دوسری مثال بھی سن لیں۔

اليساص ١١ سطر٢٩ مين المم سيوطي في لكها -

اخرج الترمذي وابن ابي الدنيا وابن الانباري كلا هما في كتاب المصاحف عن ام سلمة ان النبي كان يقرء ملك يوم الدين بغير الف انتهى بلفظه

لعنی اخراج کیا ہے ترندی نے اور ابن الی الدنیا وابن الانباری نے کتاب المصاحف أم سلمہ سے کہ پیٹیبرخدا ملک یوم اللدین بغیرالف کے پڑھا کرتے تھے۔

اور سطر ۳۰ میں ہے کہ ابن الانباری نے اخراج کیا ہے انس بن مالک ہے۔

قراء رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم عمر وطلحته والزبير وعبد آلرحمن بن عوف و معاذبن جبل ملك يوم الدين بغير الف-

یعنی پنیبراسلام علیہ والہ وسلم اور عمر طلحہ ' زبیر عبدالرحمان بن عوف اور معاذبن جبل لے ملک یوم الدین بغیرالف کے قرآت کی ہے۔

الینا ص ۱۱ سطر ۱۳ میں تیمری روایت ابوداؤد خطیب نے افراج کی ہے۔ بطریق این شاب سے سعید بن المسیب اور براء بن عاذب سے کہ انہوں نے کہا۔ قواء رسول الله صلی و ابوبکو وعمر ملک یوم اللدین کیول صاحب فرمائے جب اکابر آئمہ اہل سنت مان کے ہیں کہ سورة الفاتحہ میں نہ کوئی آیت ناتخ ہے نہ منسوخ تو پھردو جگہوں میں دو حرفوں کا تغیر یعنی سراط سین کا صادب بدل جاناادر ملک با افسان سین الف زیادہ کرکے مالک بنا دنیا حروف قرآئی کی تحریف نہیں تو کیا ہے۔

ملک بے الف میں الف زیادہ کرکے مالک بنا دنیا حروف قرآئی کی تحریف نہیں تو کیا ہے۔

اس میں ایک اور بات قابل غور یہ ہے کہ جب بیر ثابت ہے کہ ملک القع بردھادینے سے مالک

بنایا گیا ہے تو معلوم ہوا کہ سینول کی روا تیوں سے جہاں قرآن میں کی کیا جانا طابت ہو ؟ ہے ای طرح قرآن میں زیاوہ کیا جانا گابت ہوا۔ پس اس سے انکار شیں کیا جاسکتا کہ سینوں کے ذہب کے مطابق قرآن میں دونوں فتم کی تحریف واقع ہوئی ہے یعنی اگر بعض سور توں اور آ پنوں میں کی کی گئی ہے تو بعض سور توں اور آ پنوں میں کی کی گئی ہے تو بعض سور توں میں ذیادتی بھی کردی گئی ہے۔ و کیصیے بات ہوتی نہ عوض معاوضہ گا ندار موحد تحریف قرآن (ص

اقول

سيد على حائرى جن كو اعلى حضرت رئيس الشيعة مدار الشريعة جمة الاسلام نائب الم سلطان الحدثين صد المفسرين محى الملته والدين سركار شريعت مدار علامه مجمئد العصر والزمان لكها جاتا ہے كه ان كى ليات كاب حال ہے كه آب قرآت متواتره كو بھى تحريف كى مثالول ميں شار كرتے ہيں۔ حالا تكه قرآت سبعه كو شيعه بھى متواتر جائے ہيں۔ بلكه اكثر اصحاب شيعه قرآت عشره كو متواتر كتے ہيں جيسا كه بحواله انوار فعمانيه بهلى مذكور ہوچكا ہے۔ تفير مجمع البيان جلد اول ص مم ميں ہے۔

فاعلم ان الظاهر من مذهب الامامية انهم اجمعوا على جواز القراة بماتتد اوله القرأبينهم من القرأت الاانهم اختار واالقراة بما جاز بين القرأ وكر هو اتجريد قراء ة مفردة

ترجمہ: پس جان کے طاہر ذہب امامیہ سے کہ قاربوں کے درمیان ہو قراء تیں متداول ہیں ان کے ساتھ قرات کو ساتھ قرات کے ساتھ قرات کو ساتھ ترات کو مردہ بتایا ہے۔ انتھی ملافتح اللہ کا شانی تغیر منج الصادقین کے ویاچہ (جلد اول ص سا میں لکھتے ہیں۔ بناء علی ہذا بخاطر فاطراایں فقیر ضعیف جائی المنتقرائی عفران اللہ اللطیف السجائی ابن شکر اللہ فتح اللہ الشریف الکاشائی کسا جا جلابیب رضوانہ وسقایما شامید عفران اللہ اللطیف السجائی ابن شکر اللہ فتح اللہ الشریف الکاشائی کسا جا جلابیب رضوانہ وسقایما شامید عفرانہ رسید کہ تقریا الی اللہ تعالی طلب المرضانۃ العلی مطالعہ تفامیرو عربیہ وفا رسیہ وکتب تواریخ فقیہ علیہ علیہ المرضانۃ العلی مطالعہ تفامیرو عربیہ وفا رسیہ وکتب تواریخ داخل فرات و خروغ فقیہ کردہ تفییرے ازاں انتخاب نماید کہ جنی باشد برطل معائی قرآن برطبق قرات سبعہ کہ مسلم الشبوت است و مجمع علیہ جمیع موافق و مخالف و معترض قرات دیکر معائی قرآن برطبق اختلاف و ران

ترجمہ: بنابریں اس فقیر ضعیف گنگار مختاج عنو کردگار ابن شکر الله فتح الله شریف کاشانی (خدا ہر اور کو اپنی رضا مندی کی چادریں او ژھائے اور اپنی معانی کی بارشوں سے سیراب کرے کے خاطرفاتر میں آیا

کہ خدا کے تقرب دو رضا مندی کے لیے نقامیر عربیہ دفارسیہ اور کتب تواری و اطوعت اور ان کے موا

کتب کلامیہ و اصول و فروغ نقیہ کا مطالعہ کر کے ان میں سے بطور انتخاب اب ایک تغییر کلمے ہو بنی ہو

مل معانی قرآن پر مطاباق قرات سبعہ کے جو مسلم الشوت ہیں او جن پر شیعہ و سینوں کا انقاق ہم مجمو

قرات شیعہ کے موا اور قراء توں سے تعرض نہ کرے کیونکہ ان میں اختلاف ہے انتمی لانما ہم مجمو

ماحب کے جواب میں گزارش کرتے ہیں کہ مالک اور ملک دونوں متواتر قراء تیں ہیں ای طرح مراما

اور مراط بھی مختلف قراء تیں ہیں اور دونوں درست ہیں چنانچہ تغییر منبج انصاد قین (جلد اول می کہ ا)

میں ہے بدا انکہ عاصم و کسائی مالک خواتدم اند باثبات الف کہ بمعنی منصرف است در عین اعمیان مملوک بمروحت خواہدداد مشتق منہ ملک است بکر میم و نائع واین کیڑو ابو عمرو حمزہ ملک خواندہ اند کاذف الف کہ بمعنی متصرف است در مرح ازدل و مراط کر بمدی متصرف است بامرو نمی درامورین مشتق از ملک منعم میم و ایں اپنی است در مرح ازدل و مراط دراصل مراط بودہ سین ماخوذ از سوط الطعام افدا ابتاعه فی انہ یسرط المسابلة لائما آ آزا لام نیز مگر دراصل مراط بودہ سین ماخوذ از سوط الطعام افدا ابتاعه فی انہ میسرط المسابلة لائما آ آزا لام نیز مگر دراصل مراط بودہ سین ماخوذ از سوط الطعام افدا ابتاعه فی انہ میسرط المسابلة لائما آ آزا لام نیز مگر دراس خود و المباق و قرائی صاد محض انہ می مجمع البیان میں بھی سے دونوں قراء تیں خدور جی خود جی خود خواندہ و بواتی صاد محض انہ می مجمع البیان میں بھی سے دونوں قراء تیں خدور جی خود جی خود خواندہ و بواتی صاد محض انہ می جمع البیان میں بھی سے دونوں گیا ہے۔

چنانچ الم تر ان الله خلق السموات والارض بالحق (موره ابراہیم) کی تغیر میں کھا ہم برانکہ قرات حزه کسائی اسم فاعل خالق السموات والارض است بنا برا آنکہ خبر آن قرار داده شد والسموات والارض باضافت خواء ، شد چنانکہ فاطر السموات والارض فائق الا صباح وجاعل الليل سكنا خوانده سے شودو باتی قراء خلق بھيغہ نقل ماضی قرات كرده اندو السموات والارض رابنا بر مفعولیت معوب خوانده اند پس بسر طال خطاب الم تو برائے نبوی فداه ای دابی بسر طال خطاب الم تو برائے نبوی فداه ای دابی بسر سال بسر سال مست لوامع التر بل جز خالف عشر من الله است و مراد اذال امت آل جناب علیه السلام است لوامع التر بل جز خالف عشر من الله ای تغیر میں لکھا ہے کسائی تنها پہ فتح لام اولی خوانده ای دابی است دلام خانی دامرفوع و قراء و دیگر بکسر لام اول و نصب لام خانی و در شوافاست از علی مرتفی وابی مسعود و ابی کعب گفتہ وان کا دمکو ہم لتزول و باتی قراء ان کان مکو ہم خوانده اند لوامع التر بل جز خالث عشر من کلما) اب مجتمد لاہوری بتائیں کہ کیا اختلاف قرات قراء تحریف قرآن ہے کیا ہم الله واللہ عوال کے جواب کے خشکر جی (دیدہ باید)

قال الحائري

سینوں کے قرآئی لفظوں کی تحریف : صاحبان؟ سینوں کے قرآن کے حروف کی تحریف بھورت کی زیادتی دونوں قسموں سے آپ سن چکے ہیں۔ اب ان کے لفظی تحریف کا رخ بھی پیش کر ہوں غور سے ساعت فرائیں۔

تفسيرو متثور جلد اول مطبوعه مصرص ١٥ سطر٢٥ من علامه سيوطي لكصة بي-

اخرج وكيع وابو عبيد وسعد بن منصور وعبد بن حميد وابن المنذر وابن داؤد و ابن الانبازي كلا هما في المصاحف من طرق عن عمر بن الخطاب انه كان يقرا سراط من انعمت عليهم غير المغضوب وغير الضالين انتهى بلفظه

لعنی حضرت عمر بن الخطاب صواط انعمت علیهم کو سواط من انعمت علیهم پڑھا کرتے تھے۔ کرتے تھے۔ کرتے تھے۔

المناص ١٥ سطر٤ من سيوطي لكصة بير

اخرج ابو عبيد و عبد بن حميد وابن ابى داؤد وابن الانبارى عن عبدالله ابن الزبير قرأ صراط من انعمت عليهم غير المغضوب عليهم وغير الضالين في الصلاة انتهى بلفظه.

لعن عبرالله زير بهي من انعمت عليهم اور غير الضالين يرماكرت تهـ

ا۔ شاجلد ششم مطبوعہ مصر۲۱۹ سطر ۸ میں سیوطی لکھتے ہیں کہ شافعی عبدالرزاق 'فرابی سعید بن مفور' ابن ابی شبیہ 'عبد بن حمید' ابن جریر' ابن المنذر ابن ابی حاتم ابن لانباری اور بہیتی نے ابن عمر اخلیفہ زادہ سے روایت کی ہے قال ما سمعت عمر یقوء ها قط الا فامضو االی ذکر الله انتہی بلفظه

لین ابن عرف کما کہ میں نے حضرت کو (سورۃ جعد میں آب فا سعوا الی ذکر الله کو بیشہ فامضو الی ذکر الله کو بیشہ فامضو الی ذکر الله پڑھتے سا ہے۔ ای صفحہ ۲۱۹ کے سطر ۱۳ سطر ۱۳ سطر ۱۳ سطر ۱۵ سطر ۱۵ سطر ۱۵ سطر ۱۵ سطو ۱۱ کی ضرور مانظہ فرمائیں جن میں مرتوم ہے کہ حضرت عمر وقت موت شک فامضوا کی بجائے فاسعواالی فکر فکر الله ترات کرتے رہے۔ اور یہ کہ این مسعود اور این الزبیراور این عباس بھی فامضوا الی ذکر الله قرات فرماتے تھے۔

صاحبان؟ ان ندكوره روايتون سے سوره جمد ميں لفظ فاعضو اكافا سعوا كے ساتھ تبديل مو





جانا ثابت ہے چونکہ سینوں کے ہاں سورہ جعہ میں نائخ و منسوخ نہیں ہے جیسا کہ افادۃ الثیوخ فی الناخ والمنسوخ مطبوعہ محمدی البور ص ۲۲ سطر ۲۳ میں مرقوم ہے کہ سورہ جمہ مدنی است قرطبی گفتہ در قول جمع والمنسوخ مطبوعہ محمدی البور ص ۲۲ سطر ۲۳ میں مرقوم ہے کہ سورہ جمہ مدنی است قرطبی گفتہ در قول جمع ودروے ہم ناخس و منسوخ نمیست جب اس سورۃ میں تعنیخ نہیں تو پھر لازما ثابت ہوا کہ فاعضوا کا فاسعوا ہے بدل جانا تحریف ہے۔

فاسعوا سبر برا بالراب المسلم المراب المراب

لینی سورہ طلاق ب ۲۸ ع ۱۲ میں اس وقت ہے فطلقو هن بعدتهن طلائکہ پنیم خدا فطلقو هن فی قبل عدتهن آیت میں پڑھا کرتے تھے۔

اس آیت میں بھی قبل عد تھن کو بعد تھن سے تبدیل و تحریف کردیا کیا ہے۔ انا لله واناالیه

راجعون
البعق البنا جلد ششم مطبوعه معرص ۱۱۱ سطر ۲۸ سيوطی لکھتے ہيں که احمر ابوداوُد ترفری مع التعمیم البنا جلد ششم مطبوعه معرص ۱۱۱ سطر ۲۸ سيوطی لکھتے ہيں که احمر ابوداوُد ترفری مع التعمیم البنا البنا البنا البنازی ابن حبان عالم مع التعمیم ابن مردويه اور ربيقی في ابن مسعود سے روايت کی ابن البنازی دسول الله صلی الله عليه وسلم انی انا الرزاق ذوالقوة المعتين - انتهى بلغه - قال اقرانى دسود في كما كه تي بير غدا في بي عالما انى الرزاق)

رسی از الله ماحیان یہ آیت ۲۷ پ ۳ سورہ الذاریات میں ہے اس وقت اس آیت میں ان الله موالرزاق ذوالقوة المتین ہے اس آیت میں انی اناکوان الله هو کے ساتھ تبدیل و تحریف کر واگیا۔

وستوا غور کیا آپ نے اہل سنت کی ان روایتوں سے قرآن میں لفظی تحریف کا واقع ہونا بھی البت ہوگیا کیو تکہ حضرت عمراور عبداللہ بن زبیر هن انعمت علیم قرآت اور تلاوت کرتے رہے ہیں۔
مراس وقت الذین انعمت علیم قرآن میں موجود ہے۔ پس ایک تو لفظ من کو الذین کے ساتھ تبدیل و تحریف کیا گیا ہے۔ دو مراغیو المضالین میں لفظ غیر کو لا کے ساتھ تحریف و تبدیل کرویا گیا۔ طالا تکہ سینوں کا یہ مسلمہ ہے کہ سورہ فاتحہ میں نہ نائ آیا ہے نہ منسون پھران حوف اور الفاظ میں جب حمین واقع بی تابع آیا ہے نہ منسون پھران حوف اور الفاظ میں جب حمین واقع بی تبدیل ہونا کا یہ مسلمہ ہوئی۔ تو پر پھریہ بانا پڑے گا۔ کہ تحریف ضرور واقع ہوئی ہے۔ ای طرح فاحضو اکو فاسعوا اور قبل عد تھن کو بعد تھن سے تبدیل ہونا اکابر ائمہ محد مین و مفسرین اہل سنت خود اقرار و اعتراف کر رہے تیل عد تھن کو بعد تھن سے تبدیل ہونا اکابر ائمہ محد مین و مفسرین اہل سنت خود اقرار و اعتراف کر رہے ہیں علی عد تھن کے جو نہ ب خود ہیں قرم کا مقام ہے کہ جو نہ ب خود ہیں میں می منسخ کا واقع نہ ہونا سینوں کا مسلمہ ہے۔ پس شرم کا مقام ہے کہ جو نہ ب خود ہیں طالا تکہ ان میں بھی تعنیخ کا واقع نہ ہونا سینوں کا مسلمہ ہے۔ پس شرم کا مقام ہے کہ جو نہ ب خود

تحریف قرآن کا قائل ہو وہ دو سرے نداہب پر کیوں تحریف کا طعن کرسکتا ہے۔ اس ہوت کے بعد اب انساف کا اقتضاء میہ ہے کہ حضرت المسنّت و جماعت مسئلہ تحریف قرآن کا اعتراض اور طعن شیعوں سے واپس لیں۔ ورنہ آج کے اس وعظ کے بعد یہ مکمل تقریر چھپ کرشائع ہونے پر تمام دنیا فاص کر گر کجوب اور تعلیم یا فتہ طبقہ خود فیصلہ کرے گا کہ سینوں میں اس قدر تحریفات مسلم ہونے کے بعد آیا سی تحریف قرآن کے قائل جیں یا شیعہ۔ (عافلاں لمید عدد مطلب رسد ند مومد تحریف قرآن ۴۳۲۳

اقول

جمتد لاہوری حروف قرآن کی جس کی پیٹی کو تحریف کہ رہا ہے۔ اس کا جواب ناظرین دیکھ کے بیں جائے فور ہے کہ مجہد صاحب نے وہاں قرات متوازہ کو تحریف بتایا اور یمال قرات شازہ (صواط من العمت علیہم غیر المعفضوب علیہم و غیر الضالین) کو جو بطریق احاد مروی ہے تحریف بتا رہا ہے حالا تکہ تقامیر شیعہ بیس بیر قرآت موجود ہیں۔ اور کوئی انہیں تحریف نہیں کتا اہلنت و جماعت کے نزدیک قوالیے امور کا قطعی فیصلہ ہوئے تیمہ سو سال سے زیادہ گر کے ہیں جب حضرت صدیق آکبر رضی اللہ تعالی عد نے قرآن جمع کیا تو اس وقت بین الدقین بالانقان وہی جمع ہوا جو متواز اور عرصہ اخبرہ کے مطابق تھا۔ قرآت شازہ متقولہ بطریق احا، اور منسوخ التلادۃ آیات بین الدقین نہ رہیں۔ جیسا کہ ہم پہلے بالتفیل بیان کر کے جیں۔ اہلست میں ہے کوئی بھی قائل نہیں کہ حضور اقدس سٹائج کے وصال شریف کے بعد قرآن کر کے جیں۔ اہلست میں سے کوئی بھی قائل نہیں کہ حضور اقدس سٹائج کے وصال شریف کے بعد قرآن متواز میں جیسا کہ آج بین الدقین موجود ہے کی قشم کی کی بیشی وقوع میں آئی ہو۔ پس کی قرآت شازہ کو بین الدقین نہ پاکر بیہ کمنا کہ قرآن میں تحریف ہوگئی ہے۔ کمال درجہ کی نادائی ہے صواط من انعمت کی طرح انی انا الدوزاق بھی قرآت شازہ ہے اور قرآت شازہ کی قرآت ہارے نزدیک ثابت نہیں کیو تکہ قرآت ہاری طرح انی انا الدوزاق بھی قرآت شازہ ہے اور قرآت شازہ کی حضورہ بھی فامضوا بھی قرات شازہ ہے۔ چنانچہ گرآئیت کے جو تھ بی انا الدوزاق بھی قرآت شازہ ہے۔ ای طرح سورہ جمہ میں فامضوا بھی قرات شازہ ہے۔ چنانچہ گرم البیان جلد طانی ہے ہیں ان میں ہے۔

وقراعبدالله بن مسعود فامضوا الى ذكر الله و روى ذلك عن على بن ابى طالب و عمر بن الخطاب وابى بن كعب وابن عباس وهو المروى عن ابى جعفر وابى عبد

الله

الله

اور برد حاعبدالله بن مسعود نے فاصفوائی ذکر الله اور یہ مردی ہے علی بن ابی طالب اور عمر

بن خطاب اور الی بن کعب اور ابن عباس سے اور یکی مردی ہے امام محمد باقرامام جعفر صادق سے استی

تغیررورح المعانی (جزو تاسع ص ۲۲) میں ہے۔

وقرا كثير من الصحابة والتابعين فامضوا و حملت على التفسير بناء على اندلا يراد بالسعى الاسراع في المشى ولم تحمل قرانا المخا الفتها سوادا المصحف المجمع عليه

ترجمہ: اور پڑھا بہت سے محابہ و تابعین نے فامضوا اور بہ قول محمول ہے تغیر پر کونکہ فاسعوا میں سعی سے مراد چلنے میں جلدی کرنا نہیں ہے اور اس کو قرآن قرار نہ دیا گیا۔ کونکہ بہ مواد معمف مجمع علیہ کے مخالف ہے۔ انتھی کی حال فی قبل عدتهن کا ہے چنانچہ صاحب مجمع البیان (جلد مائی ۲۳۲) نے اس قرات کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے واما قولہ فی قبل عدتهن فانه تفسیر للقراة المشہورة فطلقو هن لعدتهن ای عند عدتهن

ترجمہ: قولہ فی قبل عد تھن تغیرے قرات مشہورہ فطلقوا لعد تھن کی لیمی لعد تھن کے معیٰ عند عد تھن ہیں انتھی اس روایات ندکورہ بالا سے قرآن میں کوئی تحریف ہاہت شیں ہوتی ہال کتی معیٰ عند عد تھن ہیں روایات کثیرہ ورجہ شہرت بلکہ حد تواتر کو پینی ہوئی موجود ہیں جن سے حسب اعتراف ائمہ و علمائے شیعہ صراحت تحریف ثابت ہوتی ہے لئدا تحریف قرآن کا اعتراض شیعہ سے والی شین لیا جاسکتا ہے دعاقاں تھی کہ معلب ریدی

قال الحائري

سینوں کے قرآنی آینوں کی تحریف صاحبان؟ حروف و الفاظ کی تحریف کو آپ معتدہ کتب اہل سنت ہے من چکے ہیں۔ اب سینوں کے قرآنی آینوں کی تحریف بھی من لیس چند آئیش مثال اور نمونہ کے طور پر پیش کرتا ہوں۔

(۱) آیت صلوة حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی وقوموالله قانتین پ ۲ع ۱۵ اس وقت قرآن جمع کرده حضرت عثمان میں موجود ہے۔

یعنی اے مسلمانو تمام نمازوں کا عموا اور نے کا نماز کا خصوصا تحفظ کرو اور نماز میں اللہ کے آگے تنوت میں کھڑے رہو۔ (شیعوں کا نماز میں قنوت پڑھنا اس آیت سے ثابت ہے) اب میں سینوں کے متند روایتوں سے اس آیت میں جو تحریف کی گئی ہے پیش کرتا ہوں خور سے ساعت فرمائیں۔

تفیرورمتور مطبوعہ معرجلد اول ۳۰۲ سطرا۲ میں امام سیوطی لکھتے ہیں۔ کہ تخریج کیا ہے الک ابوعبیدہ- عبد بن حمید ابو علی این جربر ابن الا نبازی نے فی المصاحف اور بہق نے سنن ش

عمرو بن رافع ہے۔

قاكنت اكتب مصحفا لحفصة زوج النبى صلى الله عليه وسلم فقالت اذبلغت هذه الآية فاذنى حافظوا على الصلوات والصلوة الوسطى فلما بلغتها اذنتها فاملت على حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى وصلاة العصر وقومو االله قانتين وقال اشهداني سمعتها من رسول الله صلى عليه وسلم انتهى بلفظه

الین عروبن نافع نے کما حفصہ زوجہ پنیبر کے لیے میں قرآن لکھ رہا تھا کہ حفصہ نے کما جب حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی تک پنچو توجھے پوچھ لینا عمرو کرتا ہے جب میں اس آءت پہنچا تو میں نے حفصہ سے سے استیذان کیا۔ اس وقت ام الموسنین حفصہ نے یہ آیت جھے اس طرح الما کی کہ حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی و صلوة العصر وقو موالله قانتین اور فرایا میں شمادت دیتی ہوں کہ میں نے اس کوای طرح رسول خدا سے سنا ہے۔

الینا ص ٣٠١ سطر ٢٠ مين سيوطی نے دو سری روایت الى يونس سے نقل کی ہے جو ام المؤمنین عائشہ کے مصحف کا کاتب تھا بينہ اس کی روایت ميں بھی ايبا ہی وارد ہوا ہے۔ کہ عائشہ نے اس کو يہ آیت اطاکی حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی و صلوة العصر وقو مو الله قانتين اور فرمایا عائشہ نے سمعتها من رسول الله اور میں نے اس آیت کو پیغیر ضدا سے سا ہے اس روایت عائشہ کو تخریج کیا ہے ابو واؤد ترقدی الله عالک احمر عبد بن حمید ابن جربر ابن الى داؤد ابن الاتباری اور بیعتی نے ابی سئن ہیں۔

کیوں جناب فرمائے اسمیں میراکیا قصور ہے ام المؤمنین حف اور عاکشہ کی ان دو رواجوں سے البت ہے کہ آیت تحفظ صلوۃ میں تحریف کی گئی ہے۔ اور والصلوۃ العصر کا جملہ اس آیت سے نکالاگیا ہے حال آئکہ پیغیر کی قرات اور حف و عاکشہ کے مصحف میں بیہ جملہ موجود قعا۔ بیہ بات یاد رکھو کہ بعض معدی ہٹ دہرم لوگ لاجواب ہو کر موقع ٹال دینے کے لیے یہ کہ دیتے ہیں کہ قلال آیت میں شمنیخ دارو ہوئی ہے تحریف نمیں ہے۔ سواس کا جواب بیہ ہے کہ آیت صلوۃ سورہ بقرہ کی آیت ہے اور باعتراف الکرائمہ المستقت سورۃ بقرہ میں زیادہ سے زیادہ ۲۱ یا ۲۷ آیتوں میں شمنیخ وارد ہوئی ہے۔ دیکھو اقادۃ الشیوخ فی النائ والمسوخ مطبع محری لاہوری میں ۱۲ سطر ۳ گراس آیت صلوۃ کا معلقا ان میں ذکر تک نمیں فی النائ والمسوخ مطبوعہ مطبع محری لاہوری میں ۱۲ سطر ۳ گراس آیت صلوۃ کا معلقا ان میں ذکر تک نمیں آیا ہے جس سے ثابت ہوا کہ آئمہ اہل سنت اس آیت صلوۃ میں شمنیخ کے قائل نمیں ہیں۔ اور جب آیا ہوئی تو حف اور عاکشہ ام المومنین کی نہ کورہ روایات کے مطابق پھرلازما ضرور تحریف واقع ہوئی میک نمیں ہوئی تو حف اور عاکشہ ام المومنین کی نہ کورہ روایات کے مطابق پھرلازما ضرور تحریف واقع ہوئی سے اس کا کاکوئی جواب اہل سنت کے پاس نہیں ہوئی قرآن کے قائل شیعہ ہوئے سے اس کا کاکوئی جواب اہل سنت کے پاس نہیں ہوئی خرائیت اب تحریف قرآن کے قائل شیعہ ہوئے

یا سی ۔ خواہ مخواہ چھیڑ کریہ ورپردہ راز بھی تم نے طشت ازبام کراہی دیا۔ اور اب تم کو لینے کے دیئے ہا سے ۔ قرضہ اوا ہو گیا۔ اور حساب بالکل بے باق موعد تحریف قرآن (۳۵۲۳۳)

اقول

مجتد لاہوری کا یہ کمنا (تو حفعہ اور عائشہ ام المومنین کی ندکورہ روایات کے مطابق پر لازما فرور تحریف واقع ہوئی ہے اس کا کوئی جواب اہل سنت کے پاس نہیں) محض ناوائی ہے۔ اس قرات شاذہ سے یہ کیو کہ خابت ہو سکتا ہے کہ ام المومنین حضرت عائشہ یا حفعہ رضی اللہ تعالی عنما قرآن میں تحریف کا قائل نمیں۔ انا نحن نزلنا الذکو وانا لله لحفظون کی موجودگی میں کوئی مسلمان بھی قرآن میں تحریف کا قائل نہیں ہو سکتا۔ بشرطیکہ وہ قرآن مین الدفتین پر ایمان رکھتا ہوجب ام حمید بنت عبدالر ممن نے معزت صدیقہ رضی اللہ تعالی عنما سے صلوۃ وسطی کی بابت دریافت کیا تو آپ نے یوں جواب دیا۔ کنا نقرؤ ھافی الحرف الا ول علی عهد النبی صلی الله علیه وسلم حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی و صلوۃ العصر وقو مو الله قانتین۔ (درمشور جزء اول م

ترجعہ: ہم پیفیر خدا صلی اللہ تعالی وسلم کے عمد مبارک میں اس آیت کو بہلی قرات میں یوں پر حاکرتے ہے۔

حافظوا على الصلوات والصلوة الوسطى وصلوة العصر وقومو الله قانتين اتنير مانى

اس سے ظاہر ہے کہ حضرت صدیق رضی اللہ تعالی عنها کے نزدیک اس آیت میں اختلاف قرات تھا۔ امام محدیا قررحمہ اللہ تعالی بھی فرماتے ہیں۔

وفي بعض القرائات حافظوا على الصلوات والصلوة الوسطى وصلوة العصر وقوموالله قانتين- (تفسير صافي)

ترجمہ: اور بعض قراء توں میں یوں ہے۔ حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی وصلوة السطوة الوسطی وصلوة الصعور وقومو الله قانتین۔ انتھی مر اختلاف قرات کا تحریف کیا رہے ہم سو ہمارے لیے قرات شاذہ منقولہ بطریق اعاد کا پڑھتا بھی جائز نہیں کیونکہ ہمارے نزدیک اس کی قرآنیت ثابت نہیں چنانچہ علامہ نووی (صحیح مسلم مع شرح نووی مطبوعہ مطبح انصاری دبلی۔ جلد اول ص ۲۲۷) حدث عائشہ صدیقہ کی شرح میں لکھتے ہیں۔

هكذا هوفى الروايات وصلوة العصر بالوا ووا ستدل به بعض اصحابنا على ان الوسطى ليست العصر لان العطف يقتضى المغايرة لكن مذهبنا ان القراة الشاذة لا يحتج بهاولا يكون مهاحكم الخبر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم لان ناقلها لم ينقلها الا على انها قرآن والقران لا يثبت الا بالتواتر بالا جماع واذ لم يثبت قرآنالا يثبت خبراً

ترجمہ: تمام روایتوں میں وصلوۃ العصرواو کے ساتھ ہے اور اس سے ہمارے بعض اصحاب نے اس بات پر استدلال کیا ہے۔ کہ وسطی سے مراد نماز عصر نہیں کیونکہ عطف (معطوف و معطوف علیہ کے درمیان مغائرت کو چاہتا ہے۔ لیکن ہمارا ندہب سے ہے کہ قرات شاذہ کے ساتھ احتجاج چائز نہیں۔ اور نہ اس کے خرکا تکم ہے۔ کیونکہ اس کے ناقل نے اس صرف سے قرار دے کر نفل کیا ہے۔ کہ وہ قرآن ہے۔ اور قرآن بالا نفاق صرف تو اتر سے جابت ہوتا ہے جب اس کی قرآنیت خامت نہ ہوئی تو وہ خربھی خابت نہ ہوئی تو وہ خربھی خابت نہ ہوئی انتھی روایت حفصہ کی نبیت درمشور (جز اول ص ۲۰۰۲) میں خابت نہ ہوئی تو وہ خربھی خابت نہ ہوئی انتھی روایت حفصہ کی نبیت درمشور (جز اول ص ۲۰۰۲) میں خابت نہ ہوئی تو وہ خربھی خابت نہ ہوئی انتھی سلیمان بن ارقم کے طرق سے بروایت حسن و ابن سیرین و ابن شماب زہری یوں اخراج کیا ہے۔

قالو الما اسرع القتل في قراء القرآن يوم اليمامة قتل معهم يومئذ اربع مائة رجل لقى زيد بن ثابت عمر بن الخطاب فقال له ان هذا القرآن هو الجامع لديننا فان ذهب القرآن ذهب ديننا وقد عزمت على ان اجمع القرآن في كتاب فقال له انتظر حتى نسال ابابكر فمضينا الى ابى بكر فاخبراه بذلك فقال لا تجعل حتى اشاور المسلمين ثم قال حطيبافي الناس فاخبرهم فقالوا اصبت فجمعوا القرآن وامرابو بكرمناد يافنادي في الناس من كان عنده من القرآن شئى فليجئ به قالت حفصة اذا انتهيتم الى هذه الاية فاخبر وني حافظوا على الصلوت والصلوة الوسطى فلما بلغوا اليها قالت اكتبوا والصلوة الوسطى وهي صلوة العصر فقال لها عمر رضى الله عنه الك هذا ابينة قالت لا قال فوالله لاند خل في القرآن ماتشهد به امراة بلا اقامة منذ.

ترجمہ: انہوں نے کما جب جنگ ممامہ میں قرآن کے قاربوں کا قبل شدید واقع ہوا تواس روز ان کے ساتھ چار سو آدمی شہید ہوئے حضرت زید بن ثابت نے حضرت عمرفارون سے مل کرکما کہ قرآن جمارے دین کا جامع ہے۔ اگریہ جاتا رہا تو دین جاتا رہے گا میں نے مصم ارادہ کرلیا ہے کہ قرآن کو ایک سبب میں جمع کروں حضرت فاروق اعظم نے یہ س کر کما کہ تھمریے ہم حضرت ابو بحرے ہو ہیں۔ اس کے وہ دونوں حضرات ابو بحری فدمت میں گئے ۔ اور ان کو اپنے ارادہ سے مطلع کیا۔ حضرت مدیق ابجر نے فرہایا جلای نہ کرو جمعے مسلمانوں سے مشورہ کر لینے دو۔ پس آپ لوگوں کے درمیان بلور خلیب کھڑے ہوئے اور انہیں اس امر کی خبردی انہوں نے عرض کیا کہ آپ کی دائے درست ہے۔ پس انہوں نے قرآن کو جمع کیا۔ اور حضرت ابو بحر نے ایک فخص کے ذریعہ لوگوں میں منادی کردای ۔ کہ جس کے پس قرآن میں سب یکھ ہو وہ اسے لے کرحاضر ہو حضرت حفد رضی اللہ تعالی عنما نے فرمایا۔ کہ جب تم باس قرآن میں سے یکھ ہو وہ اسے لے کرحاضر ہو حضرت حفد رضی اللہ تعالی عنما نے فرمایا کہ جب وہ بہتے تو حضرت حفد رضی اللہ تعالی عنما نے فرمایا کہ جب وہ بہتے تو حضرت حفد رضی اللہ تعالی عنما نے فرمایا کہ کھو و الصو ق الموسطی و بھی صلاۃ العصر اس بر بہتے تو حضرت حفد نے فرمایا کہ نمیں حضرت عرب بر حضرت حفد نے فرمایا کہ نمیں حضرت عرب بر ایک عورت بغیرولیل قائم کے شمادت و سے ۔ انتھی

جمتد صاحب جوہار ہار ہی کے جاتے ہیں کہ اہل سنت قرآن میں تحریف کے اگر ہیں۔ اور جوت میں قرات شاذہ پیش کر رہے ہیں۔ ہم انہیں بتاتے ہیں۔ کہ تحریف کا الزام اہلتت پریوں ثابت ہو سکتا ہے۔ کہ پہلے تو وہ ایس قراء تول کی قرآئیت قوار ثابت کریں۔ پھریہ ثابت کریں۔ کہ حضور اقد سکتا ہے۔ کہ پہلے تو وہ ایسی قراء تول کی قرآئیت توار ثابت کریں۔ پھریہ ثابت کریں۔ کہ حضور اقد سکتی ہوئی تھی۔ ایسی قرات متوار وغیرہ منسوخہ کو قرآن متوار میں سے نکال دیا۔ اور دونوں باتوں کا جوت مع اعتراف علائے اہلتت انمی کی معتبر کتابوں سے چیش کریں۔ ورنہ بے فائدہ تضیع او قات نہ کریں ہمارا دعوی ہے۔ اور سچاد ہوے ہے۔ کہ جمتد لاہوری کی تو کیابساط شیعہ کا کوئی بڑے سے بڑا مجتد بھی ایسا نہیں کر سکا۔ ایس خیال است و محالت و جنوں ہاں شیعہ کا عقیدہ تحریف قرآن شیعہ ہی کی کتب معتبرہ کی ایسا نہیں کر سکا۔ ایس خیال است و محالت و جنوں ہاں شیعہ کا عقیدہ تحریف قرآن شیعہ ہی کی کتب معتبرہ کی ایس دوانتوں سے ثابت ہے۔ جو حد توار کو جنوں ہاں شیعہ کا عقیدہ تحریف قرآن شیعہ ہی کی کتب معتبرہ کی ایس دوانتوں سے ثابت ہے۔ جو حد توار کو کی بیا۔ اور حسب اعتراف علائے شیعہ وہ آیات صراحہ تحریف پر دلالت کرتی ہے۔ بہ بین نقادت رہ دور کیاست تا یکیا۔

اس سے مجتند لاہوری کو معلوم ہو جائے گا۔ کہ لینے کے دینے کیے بڑ گئے۔ اور حساب کیونکر بیباق ہوگیا مجتند صاحب نے جو آیت میں لفظ قاتین سے نماز میں قنوت پڑھنے پر استدلال کیا ہے۔ اس میں کلام ہے قنوت کا اطلاق کئی معانی (قیام و سکوت ' دوام عبادت ' دعا و شبیع خضوع) پر ہو تا ہے چنانچہ قرآن مجید میں ہے۔

وله من في السموات والارض كل له قانتون ه امن هو قانت اناء الليل ساجدا

وقائماه وصدقت بكلمات ربها وكتبه وكانت من القانتين-

معرت زید بن ارقم فرماتے ہیں کہ جب یہ قول الئی- (وقو مو الله قانتین) نازل موالو ہمیں سوے کا تھم دیا گیا اور کلام کی ممانعت کردی گئی۔

قال الحائري

نمبرا آيات تبليغ

یا ابها الرسول بلغ ماانزل الیک من ربک فان لم تفعل فما بلغت رسالته والله یعصمک من الناس الایة (پ۱۱ع ۱۱۱) جو اس وقت قرآن می موجود ہے۔

یعنی اے پینمبر خدا جو تھم تم پر تمهارے پروردگار کی طرف سے تازل ہوا ہے۔ (بلا کم و کاست اوگوں کو نہیں پہنچایا اوگوں کو نہیں پہنچایا اوگوں کو نہیں پہنچایا اواللہ تم کو لوگوں کے نہیں کہ تم نے خدا کا کوئی پیغام بھی لوگوں کو نہیں پہنچایا اواللہ تم کو لوگوں کے شرے محفوظ رکھے گا۔

صاحبان سنے! اب میں اہلسنت ہی کی متندات سے بتا آ ہوں کہ آیت مجیدہ میں کماں تحریف کی اُن ہے۔ جس سے آپ خود ہی منا تحریف کو سمجھ جائیں گے۔

تغییر در منثور مطبوعہ مصر جلد دوم ۲۹۸ سطر ۱۰ بین امام سیوطی رقم طراز ہیں۔ کہ اخراج کیا ہے ابن مردویہ نے ابن مسعود شے ...

قال كنا نقرا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ياايها الرسول بلغ ماانزل اليك من ربك ان عليا مولى المومنين وان لم تفعل فما بلغت رسالته والله يعصك من الناس

لینی ابن مسعود نے کما کہ پیغیر خدا کے زمانہ میں ہم محابہ اس آیت تبلیغ کو اس طرح بڑھا کرتے تھے۔

يا ايها الرسول بلغ ماانزل اليك من ربك ان عليا مولى المومنين فان لم تفعل فمابلغت رسالته والله يعصمك من الناس

مراس وقت اس آیت میں یہ جملہ ان علیا مولی المو منین موجود تمیں ہے۔
حضرات فرمائیے یہ جملہ ان علیا مولی المومنین جب عمد رسول اللہ میں اہل سنت کی
مطابق قرات ہوتا رہا ہے۔ تو پھراس کے اخراج و تحریف کا کسی کو کیا حق حاصل تھا جو
الیات ذکورہ کے مطابق قرات ہوتا رہا ہے۔ تو پھراس کے اخراج و تحریف کا کسی کو کیا حق حاصل تھا جو
الیات ذکورہ سے نکال دیا گیا۔ جب ابن مسعود سینوں کے نزدیک راوی ثقة علامہ جلال الدین سیوطی بھی

سینوں کامسلم امام 'اور مصنف معتمد علیہ اور درمشور بھی ان کے بال کی معتبراور مضہور تغیراس بھی اسینوں کامسلم امام 'اور مصنف معتمد علیہ اور درمشور بھی ان کے بال کی معتبراور مضہور تغیراس بھی اگر تم علی کا نام قرآن سے نکال دینے کے بعد مسئلہ تحریف قرآن میں خود کو پاک وامن جمانا چاہو۔ تو ایں خال است و جنول

عن اسور المعناك اس كرواب على موقع النے كے ليے مكن ہے كوئى يہ كمد دے كه ال است على المو هنين ال آءت ہے فكل ديا كيا يہ است على المو هنين الله آءت عن فكل ديا كيا يہ وعوے محض غلط ہے اور قابل شليم نہيں ہو سكنا دو وجوں ہے ايك تو وجہ يہ ہے كہ آءت بمنى مورد ما كما كى آيت ہے اور محد ثين و مفسرين اہل سنت نے يہ تشليم كر ليا ہے۔ كہ سورة ما كماه ميں زيادہ سے زيادہ كى آيت ہے اور محد ثين و مفسرين اہل سنت نے يہ تشليم كر ليا ہے۔ كہ سورة ما كماه ميں زيادہ سے زيادہ اقدة اللهورى من من سلم الله الله واقع ہوئى ہے جسیاك افادة اللهور في النافخ والمنسوخ مطبوعه محدى لاہورى من من مراد من مرقوم ہے۔ كران او آيتوں ميں اس آيت تبليغ كے تعنيخ كاكس بھى ذكر نہيں ہے جس سے ثابت ہوا كہ اس آيت تبليغ كے تعنيخ كاكس بھى ذكر ہم صرور اس كا بھى ذكر من مردور ہو آ۔ اور جب بيہ ثابت ہوا كہ اس ميں تعنيخ نہيں ہوئى تو پحرلاز ما بيہ مانا پڑا كہ اس آيت تبليغ سے موجود ہو آ۔ اور جب بيہ ثابت ہوا كہ اس ميں تعنيخ نہيں ہوئى تو پحرلاز ما بيہ مانا پڑا كہ اس آيت تبليغ سے موجود ہو آ۔ اور جب بيہ ثابت ہوا كہ اس ميں تعنيخ نہيں ہوئى تو پحرلاز ما بيہ مانا پڑا كہ اس آيت تبليغ ہوئى كرويا كيا مولى المو هنين با عتراف الهنت تحريف كرويا كيا ہے۔

ان حدیا موسی الموسی بی المسات المسنت سے یہ ایت ہوتا ہے۔ کہ یہ آیت تجہ الوداع کے دو مری وجہ یہ ہے کہ مسلمات المسنت سے یہ المحت ہوتا ہے۔ کہ یہ آیت تجہ الوداع کے موقع پر بمقام غدیر خم نازل ہوئی اور اس میں صرف ان علیا مولی المومنین تبلغ کردی تھی۔ پھراگر تبلغ کے بعد اسلام علیہ والہ السلام نے باتفاق جمع امت وہیں ای وقت تبلغ ولایت علی کردی تھی۔ پھراگر تبلغ کے بعد تمنیخ ہوتی تو پوری آیت منسوخ ہوتی نہ صرف ان علیا مولی المومنین کیونکہ یہ ہو نہیں سکا کہ جس تمنیخ ہوتی تو پوری آیت منسوخ ہوتی نہ صرف ان علیا مولی المومنین کیونکہ یہ ہو نہیں بکا کہ جس چیز کا پہنچانا خدا کو مطلوب ہے وہ تو منسوخ ہوجائے اور اس کا تھم تبلغ یاتی رہ جائے آپ بی بتائیں کہ البانا تحریف تعلق معقول الفی میں نہیں تو کیا ہے ہی بمرویہ اہل سنت یمال بھی تنسخ نہیں بلکہ تحریف تخ و منسوخ خلاف معقول الفی میںان نہیں تو کیا ہے ہی بمرویہ اہل سنت یمال بھی تنسخ نہیں بلکہ تحریف

ہے۔ کیوں جناب کیے؟ سینوں کی اس روایات س لینے کے بعد تحریف قرآن کے کون قائل ہوئے سی یا شیعہ کاش یہ لوگ اپنی نہ ہی روایات کو پس پشت ڈال کرخواہ مخواہ دو سروں پر طعن کر کے یہ ذات نہ خریرتے و ضوبت علیہ مالذلة والمسکنة کا مصداق نہ بنتے۔ (موضع تحریف قرآن ۳۵۲۳۵)

اقول

سمی روایت کا محض در مشور میں ہونا اس امرکی دلیل نہیں کہ وہ روایت سمجے ہے کیونکہ الل تغییر میں رطب ویا بس سمجے و سقیم غث و سمین بہت ہے علامہ سیوطی نے جبن عرض ہے اس تغییر میں ہر حتم کی روایات کو جمع کیا ہے وہ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں۔ عمر جمتد صاحب کی خاطر بہاں ہمی بلدر ماند الله کا کرتے ہیں مولانا شاہ وئی اللہ رسم الله فرماتے ہیں۔ و سیوطی ور در مشور جمع احادیث مناسبہ قرآن نمو و للع نظراز صحت و سقم کا محدثے آل رامیزان علم خود ،سنجد ہر حدیثے رادر محل خودش بگذارد خطیب وطبقہ او از خودادیں عار رازا کل ساختہ اند زیر اکہ ورمقد مات کتب خود ہایں مقاصد تصریح نمودہ اند جزا ہم اللہ نقال عن احت النبی صلی اللہ خیراہ صاحب جامع الاصول لقل کردہ است کہ خطیب از شریف مرتضی براور رضی احادیث شیعہ روایت کردہ است سیوطی وراول جمع الجوامع ذکر نمودہ کہ ایس کتب متفرد اند براور رضی احادیث شیعہ روایت کردہ است سیوطی وراول جمع الجوامع ذکر نمودہ کہ ایس کتب متفرد اند براور رضی احادیث شیعہ روایت کردہ است سیوطی وراول جمع الجوامع ذکر نمودہ کہ ایس کتب متفرد اند براوت شیاب اللہ میتوال گفت۔

فان كنت لاتدرى فتلك مصيبة وان كنت تدرى فالمصيبة اعظم

ووری احادیث چیز باست که بالقفی معلوم البطان است استی (فرة العینین مطبوصه مطبع مجتبائی المه و مسلع مجتبائی میلی می ۲۸۳ پس این مردویه کی بید روایت بھی باطل ہے که آیت تبلیغ بیں جملہ ان علیا مولی المعومین تھا جے صحابہ کرام نے قرآن ہے نکال دیا۔ اللہ تعالی نے قرآن کریم کی حفاظت کا وعدہ کیا ہوا ہے۔ پھر کمی فحض کی کیا مجال ہے کہ اس میں کی بیشی کردے یمال بیہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ اگر بیہ روایت موضوع ہے تو بتائیے کہ اے کس نے وضع کیا ہے۔ اس کے جواب میں گزارش ہے کہ اس کا وضع کرنے والا وہی فرقہ ہے جو قرآن ہے حضرت کرم علی اللہ تعالی وجہ کی والیت و ظافت بلا فصل کو ثابت کرتا چاہتا ہے۔ چو کہ قرآن مجید کی کی آیت سے الی خلافت ثابت نہیں۔ للذا شیعہ بیہ کتے ہیں۔ کہ یہ قرآن محرف ہے چنانچہ آبہ ذیر بحث کی نسبت کہتے ہیں۔ کہ اصل میں یوں نازل ہوئی تھی۔ یاایہا الرسول بلغ ماانزل الیک من ربک فی علی فان نم تفعل فیما بلغت رسالتہ (تغیر صافی سال تین مردویہ روایت زیر بحث کو کس کاب میں لائے ہیں مگرشیعہ تغیر وایت زیر بحث کو کس کاب میں لائے ہیں مگرشیعہ مردویہ در کاب مناقب آوروہ است از عبد اللہ بن صحود کہ اور زمان حضرت رسالت ایں آبہ وائن کم مفعل مردویہ در کاب مناقب آوروہ است از عبد اللہ بن صحود کہ اور زمان حضرت رسالت ایں آبہ راچنیں مودیہ میں مودیہ میں مولی المومنین فان لم تفعل میں علیا مولی المومنین فان لم تفعل میں در کان علیا مولی المومنین فان لم تفعل میں کیا علیا مولی المومنین فان لم تفعل میں در کان علیا مولی المومنین فان لم تفعل

فمابلغت رسالته مرکشف النفون وغیرو کسی کتاب میں ایس مردویہ کی کتاب مناقب کا ذکر میری نظرے نہیں کرراہ ایسی عقاصفت کتابوں کے حواسے کھڑنا شیعہ ہی کا کام ہے۔ علامہ سیوطی نے جو یہ حوالہ نقل کیا ہے۔ اس کی وجہ ابھی آکور ہو چکی ہے۔ جبتد لاہوری کا یہ کمنا کہ۔ مسلمات اہلسنت سے یہ ثابت ہو کہ ہے کہ آیت ججت الوداع کے موقع پر بمقام غدیر خم نازل ہوئی بالکل فلط ہے۔ اس آیت سے ثابت ہو ہا ہے کہ یہ بمقام غدیر خم نازل ہوئی بالکل فلط ہے۔ اس آیت کا جزو الله یعصمک من الناس قاتل خور ہے۔ اس بم الناس سے مراو کفار ہیں جیسا کہ جز لاحق ان الله لا یہدی القوم الکافرین جواس کی علت واقع ہوا ہے فاہر کر رہا ہے گرواقع غدیر خم میں جو ۱۸ ڈی الحجہ اس کا ہے تمام حاضرین مسلمان سے ۔ کوئی کافرنہ تھا۔ پس قرآن بی سے ثابت ہے کہ یہ آیت بمقام غدیر خم نازل نہیں ہوئی۔

قال الحائري

نبر س آیت رجم حطرات اہلی روایات سے یہ بھی ٹابت ہوتا ہے کہ سورۃ اجزاب کے اس نقصان عظیم میں جو تین جھے تلف کیے گئے ۔ اس میں ایک مشہور آیت رجم بھی موجود تھی۔ جو تحریف کی گئی ہے۔ اور موجودہ قرآن میں نہیں ہے۔

تفیرورمتور مطبوعہ مصر جلد پنجم ۱۸۰ سطر ۸ بیں امام سیوطی نے لکھا ہے کہ ابن ضربی نے زید بن اسلم سے روایت کی ہے۔

ان عمر بن الخطاب خطب الناس فقال لا تشكوا في الرجم فانه حق قدرجم رسول الله صلى الله عليه وسلم ابوبكر ورجمت ولقد هممت ان اكتب في المصحف فسال ابي ابن كعب عن اية الرجم فقال ابي الست اتيتني وانا استقراء رسول الله فد فعت في صدرى وقلت اتستقرئه اية الرجم وهم يتسا مدون تسافد الحمر (انتي يائد)

لین حضرت عمر بن خطاب نے لوگوں سے خطبہ میں کما کہ تم لوگ رہم کی بابت شکرنہ کرد۔
کیونکہ وہ حق ہے رسول اللہ مالی کی ابو بر نے رہم کیا۔ اور میں نے رحم کیا۔ اور میں نے ارادہ کیا
کہ آیت رہم کو قرآن میں لکھ دول پس میں نے اس کی بابت ابی بن کعب سے پوچھا تو کئے گے۔ کہ کیا تم
میرے باس اس وقت نہیں آئے تھے۔ جب کہ میں رسول اللہ مالی کی پڑھوانا چاہتا تھا۔ اور تم نے
میرے سیند پر ہاتھ مار کر نہیں کما تھا کہ تو رسول خدا سے آیت رہم پڑھوانا چاہتا ہے۔ حالا نکہ لوگ اس
میرے سیند پر ہاتھ مار کر نہیں کما تھا کہ تو رسول خدا سے آیت رہم پڑھوانا چاہتا ہے۔ حالا نکہ لوگ اس
میرے سیند پر ہاتھ مار کر نہیں کما تھا کہ تو رسول خدا سے آیت رہم پڑھوانا چاہتا ہے۔ حالا نکہ لوگ اس
میرے سیند پر ہاتھ مار کر نہیں کما تھا کہ تو رسول خدا سے آیت رہم پڑھوانا چاہتا ہے۔ حالا تکہ لوگ اس

ایناً جلد پنجم ۱۸۰ سطر (۱) میں علامہ سیوطی لکھتا ہے کہ مالک بخاری مسلم اور ابن ضریس نے ابن

عباس سے رویات کی ہے۔

ان عمر قام فحمد الله واثنى عليه ثم قال امابعد ايها الناس الله بعث محمدا بالحق و انزل عليه الكتاب فكان فيما انزل عليه آية الرجم فقرانا ها الشيخ والشيخة اذا زنيا فار جموهما البتة ورجم رسول الله ورجمنا بعده فاشى ان يطول الناس زمان فيقول قائل لانجد آيته الرجم في كتاب الله فيضلو بترك فريضة انزل لها الله انتهى بلفظه

لین کہ عمر خطاب ایک روز خطبہ کے لیے کھڑے ہوئے پس جمہ و شاالنی کے بعد یہ کہا کہ اے لوگو۔ خدا نے محمد رسول اللہ کو حق کے ساتھ بھیجا۔ اور اپنی کتاب ان پر نازل کی پس جو پچھ ان پر نازل کیا اس میں سے آیت رجم بھی تھی جس کو ہم نے خود پڑھا۔ اور سنا تھا اور وہ آیت یہ تھی الشیخ والشیختہ اذا زئیا فار جموحا البتہ اور رسول خدا نے رحم کیا تھا اور ان کے بعد ہم کرتے رہے۔ لیکن اب ڈر تا ہوں کہ لوگوں پر زمانہ دراز گزر جائے اور کئے والے کئے لگیں۔ کہ ہم تو آیت رجم قرآن میں پاتے ہی نہیں پس اس سبب سے ایک فریضہ کو چھوڑ کر صلالت میں پڑ جائیں۔

تفیرانقان مطبوعہ احمدی نوع ۳۷ ص ۳۱۲ سطر ۱۵ میں بھی بنمن نقصان سورۃ احزاب بروایت ابی بن کعب قرآن سے آیت رجم کا تحریف کیا جانا تشکیم کیا گیا ہے۔ زربن جیش کتا ہے کہ مجھے ابی بن کعب نے کہا

كنا نقراء فيها ايه الرجم قلت وما اية الرجم قال اذا زنيا الشيخ ولشيخة فار جموهما البتة نكالا من الله والله عزيز حكيم

کیوں صاحبان؟ من لیا آپ نے۔۔۔۔۔۔ کہ آیات رہم کا فدا کی طرف سے نازل ہونا اور اس کا رسول اللہ سے سننا اور اس کی قرات کرنا اور گدھوں کی طرح جماع کرنے کی وجہ سے اس آیت رہم کا قرآن ہید میں واخل کرنے کا ارادہ کرنا اور آیت رہم کا قرآن سے نکال دیا جانا۔ اور اس آیت کا روبارہ قرآن مجید میں واخل کرنے کا ارادہ کرنا اور آیت رہم تحریف ہونے سے تارک فریضہ ہو کر ضلالت میں پڑ جانا فلیف المسلمین حضرت عمر خود ہی تو اقرار اعتراف کر رہے ہیں۔ اور سینوں کے امام الائمہ علامہ سیوطی ناقل میں تو فرمائے اس میں میرا کونسا قصور ہوا آیت رہم کو بوجہ کرت جماع صحابہ کی وجہ تحریف انہوں نے ذکر کیا یہ واقعہ تحریف بیان ہی خود انہوں نے کیا۔ ناقل اس کے بھی خود وہی بذات شریف اور قصور وار یہ فاکسار واہ صاحب واہ؟ انصاف ان کانام ہے آپ کی دیانت کاکیا کرنا موحد تحریف قرآن کے ۱۳۵۳)

اقول

سورہ اجزاب کی آیات کی کی کے متعلق ہم پہلے بیان کر چکے جیں کہ وہ منسوخ اتلاوۃ والحکم ہوگئی تھیں۔ جیسا کہ اسعاف المامول بشرح ذبدۃ الاصول میں فدکور ہے۔ ان آبات میں ہے آیت رجم منسوخ اتلاوۃ دون الحکم ہے جیسا کہ بحوالہ تہذیب الاصول اسعاف المامول عدۃ الاصول اور تغیر مجمع البیان پہلے آچکا ہے المستنت کی کتابوں میں بھی ایسا ہی تکھا ہے چنانچہ تغیرانقان مطبوعہ مصر جزء ٹانی می البیان پہلے آچکا ہے المستنت کی کتابوں میں بھی ایسا ہی تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ٹام می ملاسم می مالوں میں تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ظام می مثالوں میں تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ظام می مثالوں میں تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ظام می مثالوں میں تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ظام می مثالوں میں تکھا ہے۔ تغیرورمشور مطبوعہ مصر جزء ظام می مثالوں میں تکھا ہے۔

واخرج احمد والنسائى عن عبدالرحمن بن عوف ان عمر بن البخطاب خطب الناس فسمعته يقول الاوانا ناسايقولون مابال الرجم وفى كتاب الله الجلد وقد رجم النبى صلى الله عليه وسلم ورجمنا بعد ٥ ولولا ان يقول قائلون ويتكلم المتكلمون ان عمر زاد فى كتاب الله ماليس منه لا ثبتها ماكمانزلت

ترجمہ: اور اخراج کیا ہے احمد اور نسائی نے عبدالر ممن بن عوف ہے کہ عمر بن خطاب نے لوگوں سے خطاب کیا پس میں نے ان کو سنا کہ فرما رہے تھے۔ ویکھو بحض لوگ کیے چیں کہ رجم کی کیا وجہ کتاب اللہ میں تو جلد یعنی درے لگانا ہے۔ حالا تکہ پنجبر خدا التی پیلے نے رجم کیا۔ اور آپ کے لیع ہم نے رجم کیا اللہ میں تو جلد یعنی درے لگانا ہے۔ اور کلام کرنے والے کلام کریں گے کہ عمر نے کتاب اللہ میں وہ زیادہ کردیا جو اس سے نہیں ہے تو میں اسے کتاب اللہ میں لکھ ویتا جیسا کہ نازل ہوئی تھی۔ انتھی میں وہ زیادہ کردیا جو اس سے نہیں ہے تو میں اسے کتاب اللہ میں لکھ ویتا جیسا کہ نازل ہوئی تھی۔ انتھی پس خالم ہو گیا کہ آیت رجم بے شک قرآن میں تھی۔ گر آخضرت کے زمانہ مبارک ہی میں منسوخ اتثادہ ہوئی کی مثانوں میں شائل کر رہے ہیں واللہ مولوی حائزی جیں۔ کہ منسوخ اتثادہ تا اس کا چین الدفتین لکھنا ذیادت الکتاب تھا مگر مولوی حائزی جیں۔ کہ منسوخ اتثادہ تا اور قرات شاذہ کو تحریف کی مثانوں میں شائل کر رہے ہیں والہ مولوی حائزی جیں۔ کہ منسوخ اتثادہ کی دور مشور جیسی کتاب میں منقول ہے کیا اعتباد ہو وہم مدیث میں اللہ کی دور ہو میں نہیں ملا بال تھارج المحصو مجمع الجمار مصنفہ شیخ عجم طاہر حنق میں تہ کور ہے۔ اور اس کے متن صدیف میں نہیں ملا بال تھارج المحصو مجمع الجمار مصنفہ شیخ عجم طاہر حنق میں تہ کور ہے۔ اور اس کے متن موروں سے لوگوں کے سامنہ المحصور بجمع البحار مصنفہ شیخ عجم طاہر حنق میں تہ کور ہے۔ اور اس کے متن موروں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحسورة النباس لینی مودوں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحمورة النباس لین موروں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحمورة النباس لین موروں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحمورة النباس لین موروں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحمور کی گور ہے۔ اور اس کے معرف کے ایس کوروں سے لوگوں کے سامنہ جماع کریں گے۔ اِنتھی اور تمارج المحمور کھیں۔

چانچہ حیوة االحیوان للد میری (مطبوعه مصرجز اول ص ٢١٩) میں ہے-

وقالتُ العرب هم يتهار جون تهارج الحمراى يتسافدون والهرج كثرة النكاح يقال بات يهر جها ليلة جميعا وروى الحافظ ابو النعيم عن ابى الزاهرية عن كعب الاحبار قال يمكث الناس بعد يا جوج وما جوج فى الرخاء والخصب والدعة عشر سنين جتى ان الرجلين ليحملان الرمانة الواحدة بينهما ويحملان العنقود الواحد من العنب فيمكثون على ذلك عشر سنين ثم يبعث الله عزوجل ريحا طيبة فلا تدع مومنا ولا مومنة الا قبضت روحه ثم يبقى الناس بعد ذلك يتها رجون تهارج الحمر فى المروج حتى يا تى امر الله عزوجل والساعة وهم على ذلك

ترجمہ: عرب کما کرتے ہیں (ہم یقار جون تھار جا المحمود وہ گدھوں کی طرح تمارے کرتے ہیں ایسی وہ تسافد کرتے ہیں۔ ہرج کے معنی کثرت جماع ہیں۔ چناچہ محاورہ ہے بات یھو جھا لبلة جمیعا اور حافظ الو قیم نے بروایت الو الزاہر ہو تقل کیا ہے کہ کعب احبار نے فرمایا کہ لوگ یا جوج ماجوج کے بعد دس سال فراخی و فراخ سالی وتن آسائی ہیں رہیں گے۔ یماں تک کہ ایک انار کو دو محض اٹھا کمیں کے اور اظور کے خوشہ کو دو محض اٹھا کمیں گے اس اس حالت ہیں وس سال رہیں گے۔ پھراللہ تعالی ایک عمدہ ہوا بھی کے اور دہ کی مومن و مومنہ کو نہ چھوڑے گی کہ جس کی روح قبض نہ کرلے پھراس کے بعد لوگ بھرا کی کیا کریں گے۔ جیسا کہ گدھے چاگاہوں میں کیا کرتے ہیں یماں تک کہ ای حالت میں اللہ تعالی کا امر بھرا کیا کریں گے۔ جیسا کہ گدھے چاگاہوں میں کیا کرتے ہیں یمان تک کہ ای حالت میں اللہ تعالی کا امر کوئی مسلمان نہ رہے گی انسمی اس روایت کعب سے ظاہر ہے کہ قرب قیامت ہیں جب کہ روئے ذمین پر کوئی مسلمان نہ رہے گا۔ اس وقت لوگوں میں گدھوں کی طر تسافد المحمو کا مصداق صحابہ کرام ہرگز نہیں ہو کتے۔ اور نہ ہیا کی دوایت میجھ میں وارد ہے۔ فلون تسافد المحمو کا مصداق صحابہ کرام ہرگز نہیں ہو کتے۔ اور نہ ہیا کی دوایت میجھ میں وارد ہے۔ فلون تسافد المحمو کا مصداق صحابہ کرام ہرگز نہیں ہو کتے۔ اور نہ ہیا کی دوایت میجھ میں وارد ہے۔ فلون تسافد المحمو کا مصداق صحابہ کرام ہرگز نہیں ہو کتے۔ اور نہ ہیا کی دوایت میجھ میں وارد ہے۔ فافھم و تدبو۔

قال الحائري

نیمر البت صلوا علیہ حضرت المستنت کی روایات معتبرہ سے یہ بھی البت ہوتا ہے کہ صلوا علیہ و سلموا تسلیماً میں بھی تحریف واقع ہوئی ہے۔ اور حضرت عثمان کے قرآن جمع کرنے سے پہلے علیه و سلموا تسلیماً میں بھی تحریف واقع نہیں ہوئی تھی۔ تفییراتقان مطبوعہ احمدی لوع ہم ص ۱۳۱۹ سطر ۲۰ اس آیت میں کسی قتم کی تبدیلی واقع نہیں ہوئی تھی۔ تفییراتقان مطبوعہ احمدی لوع ہم صالاً کہ مصف میں ہے کہ جمیدہ بنت ابی بولس نے کما کہ ابی نے ۸۰ برس کی عمریس جھے آیت پڑھ کر سائی کہ مصف



عائشہ میں یوں ہے۔

إن الله وملا تكته يصلون على النبى يا ايها الذين امنو اصلوا عليه وسلموا تسليما وعلى الذين يصلون الصفوف الأول قبل ان يغير عثمان المصاحف انتهى بلفظ يعنى اس آيت صلوات على التي مين وسلموا تسليما وعلى الذين يصلون الصفول الأول كى عبارت قرآن مين حضرت عثمان كے تغيرو تبدل كرئے سے پہلے موجود تمى۔

تغیر درمشور مطبوعہ مصر جلد پیجم ص ۲۲۰ سطر ۳ بیں الم سیوطی لکھتا ہے کہ ابد داؤر نے المصاحف میں جمیدہ سے روایت کی ہے کہ ام المومنین عائشہ کے صحیفہ میں بول مرقوم ہے ان الله وملائکته یصلون علی النبی واللدین یصفون الصفوف الاول انتھی بلاد

یہ آیت مجیدہ پ ۲۳ ع میں موجود ہے۔ گریہ آخری آیت یصفون الصفون الاول موجودہ قرآن میں نمیں ہے۔ انقان والی روایت میں صاف بتایا گیا ہے۔ کہ قرآن میں حضرت عثان کے تغیر کرنے سے بہارت کرنے سے پہلے یہ جملہ آیت میں موجود تھا تو ثابت ہوا کہ حضرت عثان کے تغیر کرنے سے یہ عہارت قرآن سے تحریف کردی گئی ہے۔ اس پر بھی تحریف قرآن میں اگر تم پاکدامنی کے مدفی رہو۔ تو نیر (عاقلاں فیمیدند) موجد تحریف قرآن ۲۹)

اقول

آحاد ہے قرآنیت ابت نہیں ہوتی قطع نظرازیں ہم کہتے ہیں کہ قرآن جمع علیہ کے مقابل کوئی اور مصحف پیش نہیں ہوسکا للذا برتقدیر تسلیم صحت روایت والذین یصفون الصفوف الاول منسوخ الثلادة ہے چنانچہ علامہ سیوطی نے اتقان (مطبوعہ مصرجز ٹائی ۲۵) میں اور نواب صدیق حسن خان نے افادة الشیوخ (مطبوعہ محدی لاہوری ۸۲) میں اس منسوخ الثلادة دون الحکم کی امثلہ میں ذکر کیا ہے علامہ الوک روح المعافی (مطبوعہ مصرجز اول ۲۱) میں کھتے ہیں۔

نعم اسقط زمن الصديق مالم يتواتر و مانسخت تلاوته وكان يقرأه من لم يبلغه النسخ مالم يكن في العرضة الا خيرة ولم يال جهدا رضى الله تعالى عنه في تحقيق ذلك الا انه لم ينتشر نوره في الا فاق الازمن ذي النورين فلهذانسب اليه كمارو بي عن حميدة بنت يونس ان في مصحف عائشة رضى الله عنها ان الله وملتكته يصلون عن النبي ويايها اللين سلموا تسليما و على اللين يصلون الصفوف الاول وان ذلك قبل ان يغير عثمان المصاحف.

ترجمہ: بال حضرت صدیق کے زمانہ میں ساقط کیاگیا وہ جو متوائز نہ تھا اور جس کی تلاوت منسوخ ہو گئی تھی۔ وہ اسے پڑھتے تھے۔ اور وہ جو عرصہ اخیرہ میں ہوی تھی مرجن کو اس کے منسوخ ہونے کی خبرنہ پہنی تھی۔ وہ اسے پڑھتے تھے۔ اور وہ جو عرصہ اخیرہ میں نہ تھا۔ اور اس کی تحقیقات میں حضرت صدیق رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنی کوشش میں کسی طرح کو جائی نہ کی۔ محراسکا نور صرف زمانہ ذوالنورین میں پھیلا اس واسطے یہ ذوالنورین کی طرف منسوب ہوا۔ چنانچہ حمیدہ بنت یونس سے مروی ہے کہ مصحف عائشہ میں یہ آیت یوں تھی۔

ان الله وملئكة يصلون على النبي يايها الذين امنو اصلوا عليه وسلموا تسليما وعلى الذين يصلون الصفوف الاول-

اور یہ حضرت عثمان کے مصاحف کو بدلنے سے بھٹر تھا۔ انتھی اس سے فلاہر ہے کہ مصاحف کے بدلنے سے مراد تحریف نہیں۔ بلکہ قرات شاذہ اور منسوخ الثلادة آیات کو قرآن سے خارج کروستا ہے۔

قال الحائري

نمبرہ آیت مال سینوں کی معتبر روایات سے بیہ بھی ثابت ہے کہ سینوں کے قرآن میں مال کے متعلق بھی ایک آیت نازل ہوئی تھی۔ جس کو سینوں کے خلیفہ نے تحریف کرکے قرآن سے نکال ڈالا اور اب مصرت عثمان کے جمع کیے ہوئے قرآن میں وہ آیت مال موجود نہیں۔

تفیر انقان مطبوعہ مطبع احمدی نوع عسم سا ۳۱۲ سطر آخری میں مرقوم ہے کہ عبد بن صالح نے اشام بن سعید سے اور اس نے زید بن اسلم اور اس نے عطابن یبار سے اور اس نے ابی بن واقد لیش سے روایت کی ہے۔

قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اوحى اليه اتيناه فعلمنا مما اوحى اليه قال كان رسول الله صلى الله يقول انا انزلنا المال لاقام الصلوة وايتاء الزكوة والوان لا بن ادم واديا من ذهب لا حب ان يكون اليه الثاني لا حب ان يكون اليه ما الثالث ولا يملا جوف ابن ادم الا التراب ويتوب الله علي من تاب انتهى بلفظه

ظلاصہ سے کہ افی واقد لیتی نے کہا کہ جب رسول خدا پر وتی نازل ہوتی تو ہم ان کی بعج خدمت فلاصہ سے کہ افی واقد لیتی نے کہا کہ جب رسول خدا پر واقد لیتی نے کہا کہ حسب معمول ایک میں حضور اقدیں وہ وجی ہمیں تعلیم دیا کرتے ابو واقد لیتی نے کہا کہ حسب معمول ایک معدا روز جب میں پیٹیمبر خدا کی خدمت میں گیا تو یہ خط کشیدہ آیت پیٹیمبر خدا نے پڑھ کر سنائی اور فرمایا کہ خدا

تعالی الیا فرماتا ہے۔ صاحبان؟ فرمائیے کیا تم اس آیت مال کو اب موجودہ قرآن مجید میں کسی پاتے ہوا نہیں ہر گزر شیں) تو پھر ظاہر ہے۔ کہ سینوں کی اس دواءت کے مطابق یہ آءت مال بھی سینوں کے قرآن سے تولید کردی گئی کیونکہ اس کے منسوخ ہونے کا ذکر ناخ و منسوخ ہیں کہیں موجود نہیں ہے۔ اب کیے تولید قرآن کا کون قائل ہوا۔ ٹی یا شیعہ دوستو بہت اچھا ہوا کہ آپ نے پخلف نمبر ۵ مطبوعہ ۱۹۲۳ ہی بنوان کیا رافضیوں کا ایمان قرآن پر ہے۔ یا ہو سکتا ہے شائع کرنے ہم ہے آئندہ کے لیے اس مسئلہ تحریف کے ذریعہ صاف کرادیا۔ خدا آپ کو اس کی جزاء خیرعنات فرمائے اب عقلند سعید الفطرت منصف مزان تعلیم یافتہ خود فیصلہ کراے گا کہ مسئلہ تحریف ہیں بمصدات آپ کے مطبوعہ پخفلٹ کے آیا شعیوں کا ایمان قرآن پر نہیں ہے۔ یا سینوں کا اور تحریف قرآن سینوں کے غرجب اور روایات بیل ثابت ہے یا شیوں کے استقدر مواد تحریف تمہارے غرجب موجود ہوتے ہوئے تمہارا ذبائی یہ کمہ دینا کہ ہمارا فرقہ تحریف قرآن کی قابل قبول نہیں ہو سکتا یاد رکھو کہ آن کے بعد تمہاری جمیت اور غراف کی زبان پر مصریہ جاری ہوگا۔ بخدا کہ جمیت اور غراز کردن

نمبر لا آیت جاهدو سینوں کی معتندہ روایتوں سے یہ بھی ثابت ہو تاہے کہ آیت جاہدہ بھی سینوں کے فلیفہ عثان نے قرآن سے تحریف کردی ہے۔ تغییر انقان مطبوعہ احمد کی نوع سے مساسطر سینوں کے فلیفہ عثان نے قرآن سے تحریف کردی ہے۔ تغییر انقان مطبوعہ احمد کی نوع سے مساسطر سینوں کے فلیفہ سے اس نے ابن الی ملیکہ سے اس نے ابن عمر جمی سے اس نے ابن الی ملیکہ سے اس نے ابن عمر جمی سے اس نے ابن الی ملیکہ سے اس نے مسور بن مخرمہ سے روایت کی ہے۔ کہ وہ کہتا تھا۔

قال عمر بعبد الرحمن ابن عوف الم تجد فيما انزل علينا ان جاهد و اكما جاهد تم اول مرة فانا لا نجدها قال اسقطت فيما اسقط من القرآن انتهى بلفظه

لینی حضرت عمر نے عبدالر عمن بن عوف سے کہا کہ آیت ان جاهد و اکھا جاهد تم اول مو قاکو کہا جاهد تم اول موقا کو کیا تو بھی نہیں ہا تا ہے۔ کہا کہ موقا کو کیا تو بھی نہیں ہا تا ہیں ہم نے تو بہت تلاش کی۔ کہیں اس آیت کا پہند نہ ملا۔ عبدالر حمان نے کہا کہ حضور سے آیت بھی نکال دی گئی ہے انہیں آیتوں کے ساتھ جو قرآن سے ساقط کی گئیں ہیں۔

نمبر ۸ ' کے دو آینتی اور س لیں جو معتبرہ روایات اہل سنت کی بنا پر سینوں کے قرآن سے تحریف کردی میں -

تفیراتقان مطبوعہ احمدی نوع سرے اہیں مرقوم ہے کہ ابن ابی مریم نے ابی لمیع سے اس نے بزید بن عمر مغافری سے اس نے ابی سفیان کلا ہی سے روایت کی ہے کہ

ان مسلمة بن مخلد الا نصاري قال لهم ذات يوم اخبروني بآيتين من القرآن لم يكتبنا في المصحف فلم يخبرو وه وعند هم ابو الكنود سعد بن مالك فقال

ایک روز مسلمہ بن مخلد انصاری نے ان سے کما کہ ججھے قرآن مجید کی وہ دو آیتیں بتاؤ جو معمضہ اس کو نہ بتلا کی ان کے پاس ابو الکنود سعد بن مالک بیشا ہوا تھا۔ پس ملمہ انصاری نے خط کشید دونوں آئتیں پڑھ کر سنادیں۔

دوستو سے خط کشیدہ دولوں آئیس موجودہ قرآن میں موجود نہیں ہیں پی نہ کورہ روایات سے بہت ہوتا ہے۔ کہ سے روآئیس مجی سینوں کے نزدیک قرآن میں تھیں جو تحریف کردی گئیں۔ منسوخ اس لیے ان کو نہیں کما جا سکتا کہ ناتخ اور منسوخ میں ان کی تمنیخ کا کوئی ذکر نہیں کیا گیا ہے۔ پس جب منسوخ ہونا ناب ان کو مانا پڑا جن کے فرکورہ راویوں اور آئمہ محد ثمین نے ان کا بونا ثابت نہ ہوا تو لازما تحریف ہونا ہی ان کو مانا پڑا جن کے فرکورہ راویوں اور آئمہ محد ثمین نے ان کا خزل من اللہ اور آبات قرآنی ہونا شامی کر لیا ہے۔ جو فرہب کہ ای طرح بے شحا آفیتوں لفظوں اور رفن کا قرآن سے نکل جانے کا بے شار ذخیرہ رکھتا ہو۔ کیونگر ممکن ہے کہ تحریف قرآن سے انکار کر کے بون کا قرآن سے انکار کر کے بون کا قرآن سے انکار کر کے بون کا ایسا چھوٹا دعوے اب اس موجعہ تحریف کے بعد کمی اپنی پاکدامنی کا دعوے کر سکے۔ اور بالفرض ان کا ایسا چھوٹا دعوے اب اس موجعہ تحریف کے بعد کمی گفتی ناقہ بصیر کے نزدیک کب دقیع اور صبح شنایم کیا جا سکتا ہے۔ اس موجعہ تحریف کے بعد اب تم کو بقین کرلینا چاہیے گا آن قدح مشکست آن ساتی نمائد موجعہ تحریف قرآن ۱۳۳۰

اقول

آیات نبرہ ۵ مرو تقرراتقان سے نقل کی گئی ہے۔ وہ سب منسوخ اتلاوۃ بیں علامہ سیوطی نے بی ان کو شخ کی تیسری فتم بعنی منسوخ اتلاوۃ دون الحکم کی مثالوں میں ذکر کیا ہے۔ بائیمہ مجتمد لاہوری کا الزام اہل سنت کی گرون پر رکھنا انصاف کا خون کرنا ہے حضرت عبدالر جمن بن عوف نے جو منسوخ اتلاوۃ آیت (ان جاحد و کما جاحد) تم اول مروکی نبیت فرمایا کہ وہ ساقط کردی گئی منجملہ ان آیتوں کے جو ساقط کی آیت (ان جاحد و کما جاحد) تم اول مروکی نبیت فرمایا کہ وہ ساقط کردی گئی منجملہ ان آیتوں کے جو ساقط کی گئی۔ اس سے ان کی مراویہ ہے کہ حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ کے عمد میں جمع قرآن کے دفت بین الدفتین نہ بی کیونکہ وہ آخضرت مان بیلے کے عمد مبارک بی میں منسوخ اتلاوۃ ہو چکی تھی۔ مولوی فائن صاحب جو منسوخ ہونے کا ذکر منبی صاحب جو منسوخ اتلاوت آیات کی نبیت بارہا کی جاتا ہے۔ کہ چو نکہ ان کے منسوخ ہونے کا ذکر منسوخ میں کہیں موجود نہیں اس لیے لا بد تحریف کا قرار کرنا پڑے گا۔ اگر اس سے اس کی مراویہ منسوخ میں کئی کئی۔ ناتخ و منسوخ میں ان کا ذکر نہیں تو سے صرتح البطلان ہے کیونکہ ناتخ و منسوخ میں ان کا ذکر نہیں تو سے صرتح البطلان ہے کیونکہ ناتخ و منسوخ میں ان کا ذکر نہیں تو سے صرتح البطلان ہے کیونکہ ناتخ و منسوخ میں ان کا ذکر نہیں تو سے صرتح البطلان ہے کیونکہ ناتخ و منسوخ





قرآن میں ابن منادی ابوالقاسم ببته الله بغدادی علامه سیوطی قاسم بن سلام ابو واؤر محستانی ور ابو جعفر نیاس وغیرہ تقنیفات کی ہیں۔ اور ان میں اقسام الله شخ کا ذکر کیا ہے اور اگر سے مراد ہے کہ قرآن موجود میں الی آئتیں خواہ منسوخ ہی ہوں موجود ہونی جاہیں۔ تو سے اس کی نادانی ہے کیونکہ قرآن موجود میں شخ کے اقسام مثلاثہ میں سے صرف ایک قشم لینی منسوخ الحکم دون اللاوۃ پائی جاتی ہے باقی دو قشمیں لینی منسوخ التلاوة دون الحكم اور منسوخ التلاوة والحكم معانهيس بإنى جاتيس- اورنه بإنى جاسكتي بير- جس كي دجه اظهر من الشمس ہے اس طرح مولوی عائری صاحب کا کسی قرات شاذہ کی نبیت یوں کمنا جو نکہ اس صورت میں فلال قلال آجول کی سمنیخ کا ذکر ہے جن میں یہ قرات شامل نمیں للذا تحریف کا قائل ہونا یوے گاہمی ناوانی ہے کیونکہ جب ہمارے نزدیک قرات شاذہ کی قرآنیت ثابت شیں تو ان پر منسوخ یا غیر منسوخ ہونے کا اطلاق کیے جائز ہو سکتا ہے۔ پس ایس قرات شاذہ کے قرآن میں بین الدفتین موجود ند مونے سے کیو نکر لازم آسکتی ہے۔ تحریف تو تب لازم آتی ہے کہ الیل قراتیں حضور اقدس ملی الم کا ا شریف میں متواتر وغیرہ منسوخ اللاوة رہتیں پھر آپ کے بعد ان کو قرآن متلومیں سے نکال دیا جاتا اور م بین الدفتین نه رہتیں- مزید بریں آنکه اگر بروئے روایت کی نے کسی قرات شاذہ کو آنخضرت کی زبان مبارک سے سنا تو وہ میہ نہیں کہنا کہ میمی قرآت صحیح ہے۔ اور قرات متوازہ غیر صحیح اور محرف ہے خلاصہ كلام يدكه تيره سوسال سے ذائد عرصه كزر چكا ب قرآن مجمع عليه سے ان امور كا قطعي اور صحح طور ير فیصلہ ہو چکاہے۔ اور اس وقت حاضرین میں ہے ایک تنفس بھی تحریف کالفظ زبان تک نہ لایا بعد ازال ہر قرن میں اس قرآن مجمع علیہ کو کامل وغیر محرف جانتے رہے ای واسطے اہل سنت و جماعت کاعقیدہ ہے کہ قرآن بین الدفتن جو محابہ کرام سے ہم تک پنچاہے کامل اور ہر فقم کی تحریف سے محقوظ ہے ہال شیعہ ے آئمہ معصومین کھلے الفاظ میں بھراجی تمام بکار رہے ہیں۔ کہ آنخضرت صلی اللہ کے وصال شریف ے بعد صحابہ کرام نے قرآن میں تحریف گردی للڈا شیعہ کاعقیدہ ہے کہ قرآن موجودہ محرف ہے اس امر کو ہم اوراق سابقہ میں ثابت کر آئے ہیں۔ اور مجتند لاہوری کی خاطراوراق آیت میں بھی انشاء اللہ تعالی اے ایس متانت سے چیش کریں گے۔ کہ اس کے بعد ہرایک سلیم الطبع منصف مزاح مخص کی زبان بر بے ساختہ معرہ جاری ہوگا- بخدا کہ واجب آمد زتو احراز کردن-

قال الحائري

سینوں کے قرآن میں بعض غلط آینیں ہوں صاحبان؟ حضرت ظفاء و اکابر آئمہ اہل سنت نے تو سینوں کے قرآن میں بعض الفاظ قواعد عربی کے لحاظ سے غلط ہیں۔ نئے اور اس میں غور

عبي أكه مفيد نتيجه بريخي مي آساني مو-

تغیر در متور مطبوعہ مصر جلد دوم ص ۲۳۲ سطر ۱۵ میں امام سیوطی لکھتا ہے کہ ابو عبیدہ کتاب نفائل القرآن میں لکھتے ہیں کہ مجھ سے ابو معاویہ نے بیان کیا ہے کہ اس سے ہشام بن عروہ نے اور اس۔۔ ے اس کے باپ نے۔

قال سالت عائشة عن لحن القرآن ان الذين امنوا الذين هادوا والصابئون والمقيمين الصلوة والموتون الزكوة وان هذان لسا حران فقالت يابن اختى هذا عمل الكتاب اخطئو افى الكتاب انتهے بلفظه

لین وہ کمتا ہے کہ میں نے ان آیات ان الذین امنو والذین ھادوا وابصابنون اور آیت و المقیمین الصلوة المولون لزکوة اور آیت وان ھذا ن اما ھون کی غلطی کی بابت ام الموشین عفرت عائشہ سے سوال کیا تو انہوں نے کما کہ اے فرزند سے کاتبول کی خطا ہے اور انہوں قرآن میں غلط کے دیا ہے۔

المناجلد دوم ص ٢٣٦ سطر ٣٣ ش علام سيوطى لكت بين كه الى داوُد في قاده عد دوايت كى به المناجلة دوم ص ٢٣٦ سطر ٣٣ ش علام سيوطى لكت بين كه الى داوُد في قاده عنه التهى التهى المناج الله المصحف قال ان فيه لحنا وستقيمه العرب بالسنتا انتهى بلفظه

ایعنی جب جامع القران حضرت عثان کی سامنے قرآن پیش کیا گیا تو کئے گئے کہ اس میں غلطیاں بیں (لیکن کچمے مضالقتہ نہیں) عرب خود اپنی زبان کے مطابق ورست کرلیں گے۔

تغیر کیر مطبوعہ معر جلد ششم ص ٦٩ سطرا میں امام افخرلدین رازی تکھتے ہیں کہ ہشام بن عروہ سے اس نے حضرت عائشہ سے روایت کی ہے۔

انها سئلت عن قوله ان هذان لساحران وعن قوله ان الذين امنو والذين هادوا والصابئون والنصارى في المائدة وعن قوله لكن الراسخون في العلم فهم الى قوله والمقيمين الصلوق والموتون الزكوة فقالت يا ابن رضى هذا خطاء من الكاتب وروى عن عثمان انه نظر في المصحف فقال ارى فيه لحناو ستقيمه العرب بالسنتها انتهى بلفظه

تقریبا عبارت اور ترجمہ وہی ہے جو سیوطی کی دونوں رواینوں کا فدکور موا- تغیرمعالم التربل مطبوعہ بمبئی ص 24 سطر ۲۰ میں امام بغوی نے بھی یہ ہشام بن عردہ والی روایت نقل کر کے کاتب کی مطبوعہ بمبئی ص 240 سطر ۲۰ میں امام بغوی نے بھی یہ ہشام بن عردہ والی روایت نقل کر کے کاتب کی مطبوعہ بمبئی ص 24 میں ان فدکورہ آنتوں کا قوائد عربیہ کے روسے غلط موناتشلیم کرلیا ہے۔



درمتور جلد دوم مطبوعہ مصر ص ۲۳۷ سطرے ایس الم سیوطی نے یہ روایت مجی نقل کی ہے جس کو انی وادد نے سعید بن جبیرے نقل کیاہے۔

قال في القرآن اربعة احرف الصابئون والمقيمين فاصدق واكن من الصالحين وان هذان لساحران انتهى بلفظه-

يعنى قرآن من جار الفاظ غلط بين والصابئون والمقيمين فاصدق واكن من الصالحين (اكون بونا چاہيے) اور ان هذا ان لساحر ان

صاحبان فرمائے امام سیوطی امام فخرالدین رازی امام بغوی سی تھے یا شیعہ خاص کر حفرت عثان اسینوں کے خلیفہ ہیں یا شیعوں کے حضرت عائشہ کے قد بہب کا بھی کم از کم ان کے ساتھ بی اعلان ہو جاناچا ہیے کیونکہ قرآن ہیں ان قد کورہ غلطیوں وائی روایتوں کا ان سب بزرگوں سے تعلق ہے ہشام بن عودہ وائی روایت تو حضرت عائشہ سے منقول ہے جس میں انہوں نے صاف اقرار کیا ہے کہ یابن اختی هذا خطاء هن الکاتب کہ آیتوں میں جو غلطیاں رہ گئی ہیں یہ کاتب کی خطا ہے۔ اور خود حضرت عثان کی شمادت یہ ہے کہ انہوں نے ان غلطیوں کو طاحتکہ اور کمہ دیا کہ اری فید لمحنا و ستقیمه کی شمادت یہ ہے کہ انہوں نے ان غلطیوں کو طاحتی رہا ہوں۔ لیکن عرب خود اپنی ذبان کے مطابق العرب بالسنتھا کہ میں اس قرآن میں غلطیاں دکھے رہا ہوں۔ لیکن عرب خود اپنی ذبان کے مطابق ، ورست کرلیں گے۔

کیوں جناب فرہائے اس قرآن میں غلطیاں رہ جانی بھی میرائی قبور ہے کہاں ہیں وہ قرآن پر ایمان رکھنے کا دعوے کرنے والے اب آکر بتائیں کہ مجزہ صاب لولاک صلی اللہ علیہ وسلم اور فدا کے کلام پاک کی میں شان ہوئی چاہیے کہ جامع قرآن اس میں صریح غلطیاں وکھ کر بھی یہ کہدے کہ اس میں غلطیاں ہیں اور عرب فوو اپنی زبان کے مطابق ورست کرلیں گے۔ للہ کوئی صاحب انصاف بتائے قو سی خلطیاں ہیں اور اپنے ایمان کے مقابلہ سی کیا قرآن پر ایمان ہونا ای کا نام ہے جس کا یہ لوگ دعوی کر رہے ہیں اور اپنے ایسے ایمان کے مقابلہ میں کال الایمان گروہ (شیعوں) کو سلسلہ الشاعت نمبر ۵ ایک ۸ صفحہ مطبوعہ پمفلٹ کے عنوان ہیں کیا مان الایمان گروہ (شیعوں) کو سلسلہ الشاعت نمبر ۵ ایک ۸ صفحہ مطبوعہ پمفلٹ کے عنوان ہیں کیا درافضیوں کا قرآن پر ایمان ہے یا ہو سکتا ہے لکھ دیتے ہیں کیا اب آئندہ کے لیے مناسب نہیں کہ فط کشیدہ عبارت میں صرف سینوں کالفظ رافضیوں کی بجائے پرل دیاجائے اور باتی عبارت ای طرح رہنے دی کامقام نہیں کہ جن کے خواب می بنیاد ہی ایسے غلط عقیدہ و عمل پر رکھی علی ہو وہ کس منہ سے خرہب تی کامقام نہیں کہ جن کے خرہب کی بنیاد ہی ایسے غلط عقیدہ و عمل پر رکھی علی ہو وہ کس منہ سے خرہب تی کی طعن اور حملہ کرنے کا حوصلہ کرسکا ہے۔ (شرم)

عزيرو! اب قرآن من ان جار غلطول كي معترت عمان اور معترت عائشه اور اكابر علائة السنت

کے بان لینے اور ان کی معتبرہ کتابوں میں موجود ہونا دکھا دینے کے بعد تمام دنیا کے سی علماء ہے بوچھتا چاہتا ہوں۔ کہ آیت انا نحن نزلنا اللہ کو و انالہ لحافظون کا ان کے پاس کیا جواب ہے۔ اس آیت میں خدا تعالی کا تو بید دعوے ہے کہ ہم نے قرآن کو نازل کیا ہے۔ اور ہم اس کی حفاظت کرنے والے ہیں۔ اور سی مسلمانوں کے خلیفہ عثان ام المومنین عائشہ اور ہشام بن عودہ 'ابوواؤد' قادہ 'معید بن جبیر' ابوعبیدہ 'ابو معادیہ 'جیسے سی دیانت اور امام بغوی امام سیوطی امام فخرالدین رازی جیسے سینوں کے محد ثین اور مفرین کا دوری حفاظت قرآن کے مقابلہ میں بیہ ہے کہ قرآن محفوظ نہیں اس میں چار غلطیاں کا تبول کی خطاسے رہ کئی جیس عوب خود اپنی ذبان کے مطابق ورست کرلیں گے اب ان ووٹوں دعوول میں کون سا دعوے سیا ہو سکتی ہی عبیت العلماء اس طرف توجہ ہو سکتا ہے۔ منزل قرآن (خدا) کا یا جامع القرآن عثمان کا براہ کرم سینوں کی جمعیت العلماء اس طرف توجہ مبذول فرمائیں اور خلافت کے جھڑوں ہی کے اعتراف سے سینوں کے غلط قرآن ہونے کا تیجہ معلوم کیا اس ایم جدکھ کرفٹ قرآن ہونے کا تیجہ معلوم کیا اس ایم معرکمۃ الادا اعتراض کے جواب دیے کی

اقول

مجتند لاہوری نے جود اثر تغییر درمشور سے نقل کیے ہیں۔ وہ ہم پر جبت نہیں ہو سکتے کیونکہ علامہ سیوطی نے اس تغییر ہیں صحت روایات کا التزام نہیں کیا۔ بلکہ صحیح و مسقیم سب کچھ اس میں ہے اگر علامہ موصوف کاخیال ان دونوں اثروں کی نسبت و یکھنا ہو۔ تو تغییر انقان (مطبوعہ مصر جز اول ۱۸۳۵۱۸۳) میں ان کی مفصل بحث ملاحظہ ہو۔ چنانچہ ان آثار کو نقل کرکے آپ یوں فرماتے ہیں۔

وهذه الاثار مشكلة جد اوكيف يظن بالصحابة اولا انهم يلحتون في الكلام فضلا عن القران وهم الفصحاء الله ثم كيف يظن بهم ثانيا في القرآن الذي تلقوه من النبي صلى الله عليه وسلم كما انزل و حفظوه وضبطوه واثقنوه ثم كيف يظن بهم ثالثا اجتماعهم على الخطاء وكتا بته ثم كيف يظن بهم رابعا عدم تبنيهم ورجوعهم عنه ثم كيف يظن بعثمان ان ينتهى عن تغيره ثم كيف يظن ان القراء قاستمرت على مقتضى ذلك الخطاء وهو مروى بالتواتر خلفاء سلف هذا مما يستحيل عقلا وشرعا وعادة

ترجمہ: بیہ آثار نمایت مشکل ہیں اولا محابہ کرام کی نسبت یہ کیو کر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ قرآن تودر کنار کلام میں غلطی کریں۔ حالا تکہ وہ بڑے فصیح ہیں۔ پھر فائیا ان کی نسبت سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ اس قرآن میں فلطی کریں جے انہوں نے پیفیر فدا ساڑی ہے سیکھا جیساکہ نازل کیا گیا۔ اور اے حفظ اور منبط کیا۔ اور خوب یاد کیا پھر فائٹا ان کی نسبت سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ سب کے سب خطا پر اور اس کے لکھے جانے پر متفق ہو گئے پھر رابعا ان کی نسبت سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے۔ کہ وہ خطا سے آگاہ نہ ہوئے اور اس کے لکھے ہوئے پر متفق ہو گئے پھر دابعا ان کی نسبت سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ خطاء کی اصلاح سے باز رہے۔ سے رجوع نہ کیا پھر حضرت عثمان کی نسبت سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ خطاء کی اصلاح سے باز رہے۔ پھر سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ خطاء کی اصلاح سے باز رہے۔ پھر سے کیو گر گمان ہو سکتا ہے کہ وہ خطاء کی احلاح فلفاعن سکف موری ہے سے ازروے عقل و شرح و عادت نا ممکن ہے انتھی اس کے بعد علامہ سیوطی اثر عثمان کا جواب وسیح بھوتے لکھتے ہیں۔

ان ذلك لا يصح عن عثمان فان اسناده ضعيف مضطرب منقطع ولان عثمان جعل اللناس اما مايقتدون به فكيف يرى فيه لحناويتركة لتقيمه العرب بالسنتها فاذا كان الذين تولوا جمعه وكتابته لم يقيموا ذلك وهم الخيار فكيف يقيمه غير

4

ترجمہ: یہ روایت حضرت عثمان سے صحیح نہیں اس لیے کہ اس کا استاد و ضعیف مضطرب منقطع ہے اور اس لیے کہ حضرت عثمان لوگوں کے امام بنائے گئے آگہ وہ ان کی پیروی کریں ہیں یہ کیو نکر ہو سکتا ہے کہ حضرت عثمان قرآن میں غلطی دیکھیں اور اسے رہنے دیں۔ اس خیال سے کہ عرب اپنی ذبانوں کے مطابق اسے درست کرلیں گے۔ جب قرآن جمع کرنے والوں اور لکھنے والوں نے اس غلطی کی اصلاح نہ کی حالات نہ کی اصلاح نہ کی اصلاح نہ کی اصلاح نہ کی اصلاح نہ کی مالات کہ وہ بہت نیک تھے تو ان کے سوا اور اسے کیو نکر درست کرتے انتھی۔ اس طرح علامہ سیوطی نے اس عالانکہ وہ بہت نیک تھے تو ان کے سوا اور اسے کیونکر درست کرتے انتھی۔ اس طرح علامہ سیوطی نے انتھی۔ اس طرح علامہ سیوطی نے اس عادی نہیں ہے۔

فقد اجاب عنه ابن اشتة و تبعه ابن جبارة في شرح الرائية بان معنى قولها اخطئوا اى فى اختيار الا و لي من الاحرف السبعة لجمع الناس عليه لا ان الذى كتبوا من ذلك خطأ لا يجوز قال والدليل عليه ذلك ان مالا يجوز مردو دوان طالت مدة وقوعه قال واما قول سعيد ابن جبير لحن من الكاتب فيعنى بالحن القراءة واللغة يعنى انها لغة الذى كتبها وقراته و فيها قرات اخرى.

ترجمہ: این اشتہ نے اس کا یوں جواب دیا ہے کہ ابن جبارہ نے شرح رائیہ میں اس کا انباع کیا ہے کہ حضرت صدیقہ کے قول اخطئوا کے معنی ہیہ ہیں کہ کاتبول نے احرف سبعہ میں سے حف ادلی منفق علیہ کے اختیار کرنے میں خطاکی اور یہ معنی نہیں کہ جو لغت انہوں نے لکھا وہ غلط اور ناچائز ہے اور اس

کی دلیل ہے کہ جو جائز نمیں وہ مردود ہے اگر چہ اس کے وقوع کی مت طویل ہو رہا سعید بن جبیر کا ہے قول لیحن من الکاتب سولحن سے مراد قرات و افت ہے بینی وہ کاتب کی افت قرات ہے اور اس میں دومری قرات بھی ہے انتہی اس کے بعد علامہ سیوطی نے ان حروف کی توجیہ بوجوہ مختف میان کی ہے در مرک قرات بھی ہیاں گئے ہیں امام افخر رازی نے آثار زیر بحث کی تائید نمیں کی بلکہ تردید کی ہے جن نے اہراو کی ہیاں گئجائش نمیں امام افخر رازی نے آثار زیر بحث کی تائید نمیں کی بلکہ تردید کی ہے چنانچہ امام موصوف قرات ان ھذان لساحوان کی نسبت یوں تحریر فرماتے ہیں۔

واما لطعن في القراة المشهورة فهو مما تقدم من وجوه احدها انه لما كان نقل هذه القراة من الشهرة كنقل جميع القرآن فلو حكمنا ببطلانها جازمتله في جميع القرآن وذلك يفضى الى القدح في التواتر والى القدح في كل القرآن وانه باطل واذا ثبت ذلك امتنع صير ورته معارضا بخبر الواحد المنقول عن بعض الصحابة (وثانيها) ان المسلمين اجمعوا عليه ان مابين الدفتين كلام الله تعالى وكلام الله تعالى لايحوز ان يكون لحنا و غلطا مثبت فساد مانقل عن عثمان وعن عائشة رضى الله تعالى عنما ان فيه لحنا وغلطا (ثالثها) قال ابن الانبارى ان الصحابة هم الائمة والقدوة فلو وجدوا في المصحف لحنا لما فوضوا اصلاحه الى غيرهم من بعد هم ولا تبتدعوا فقد كفيتم فثبت انه لا بد من تصحيح القراة المشهورة واختلف النحويون فيه وذكروا وجوها (الوجه الاول) وهوالا قوك ان المشهورة واختلف النحويون فيه وذكروا وجوها (الوجه الاول) وهوالا قول ان بن هذه لغة لبعض العرب وقال بعضهم هي لغة بني الحارث بن كعب و مرادوخثهم وبعض بني دبيعة ايضاً وانشدالفراء على هذه اللغة بني عذرة ونسبها الى كنانة وقطرب نسبها الى بني الحارث ابن كعب و مرادوخثهم وبعض بني عذرة ونسبها ابن جني المهورة وانشدالفراء على هذه اللغة

فاطرق اطراق الشجاع ولوبرى مساغالنا باه الشجاع لصمما والشد غيره نزود منابين اذ ناه ضربة دعته الى هابى التراب عقيم

قال الفراء وحكى بعض بنى اسدانه قال هذا خط يداخى اعرفه وقال قطرب هؤلاء يقولون رايت رجلان واشتريت ثوبان قال رجل من بنى منبة جاهلى اعرف منه الجيد والعينانا

ومنخوين اشبها ظبيانا

| قوله ومنخوين عيلم اللغة الفاشية وماوراء ذلك عليم لغة هنولاء وقال اخر | وا |
|--|----|
|--|----|

| فطرعلاها | ن | طار | |
|----------|-------|--------|------|
| حقواها | حقب | دېمثني | واشد |
| اذاما | ناباه | صريف | کان |
| الاخطبان | صويو | امما | امر |

قال بعضهم الا خطبان ذكر الصروان فصير هما واحدا فبقى الاستدلال بقوله صريف ناباه قال وانشدني يونس لبعض بني الحرث

| ومصيفه | سحبل | يمينا | کان |
|-------------|-------|----------|-------|
| الدهر ثاويا | يرج | دم ان | مسراق |
| وابا اباها | آباها | وايضا ان | وانشد |
| غايتاها | المجد | بلغاقي | قد |
| عن قطرب | روينا | ابن جنی | وقال |
| بشعشعان | تبكي | ان | هناک |
| اليدان | طائل | الفواد | رجب |

ثم قال الفراء وذلك وان كان قليلا اقيس لان ماقبل حرف التشية مفتوح فينبغي ان يكون مابعده الفاولوكان مابعده ياء ينبغي ان تنقلب الفا لا نفتاح ماقبلها وقطرب ذكر انهم يفعلون ذلك فرار الى الالف التي هي اخف حروف المدهذا اقول الوجوه في هذه الاية ويمكن ان يقال ايضا الالف في هذا من جوهر الكلمة والحرف الذي يكون من جوهر الكمة لا يجوز تغييره بسبب التثنية والجمع لان ما بالذات لا يزول بالعرض هذا الدليل لا يقتضي ان لا يجوز ان يقل أن هذين فلما جوزناه فلا اقل من ان يجوز معه ان يقال ان هذان (الوجه الثاني) في الجواب ان يقال ان هنا بمعنى لعم قال الشاعر-

ويقلن شيب قد علا ك وقد كبرت فقلت انه انه اي فقلت نعم فالها ء في انه هاء السكت كمافي قوله تعالى هلك عنى سلطانيه وقال ابو ذؤيب

شاب المفارق ان ان من البلى سيب القذال مع العذار الواصل الى نعم ان من البلى فصار كانه قال نعم هذان لساحوان- اتنير كير مويد معرير عادى مو ١٠٠٠٠)

ترجمہ: رہا قرات مشہورہ (ان ھذان لساحوان) میں طعن سورہ ذکور بالا یعی قرات شاؤہ کی تھے۔

ہی بدتر ہے بوجوہ ذیل اولا چو نکہ اس قرات مشہورہ کی نقل عام قران کی نقل کی ماند ہے اس لیے اگر ہم اس کے بطلان کا تھم لگائیں تو تمام قرآن میں ایسانی تھم جائز ہوگا۔ اور یہ قواتر میں قدح اور تمام قران میں قدر کا باعث ہوگا۔ (جو باطل ہے اور یہ جابت ہوگیا) تو خرواصد کے ساتھ جو بعض صحابہ قران میں قدر کا باعث ہوگا۔ (جو باطل ہے اور یہ جابت ہوگیا) تو خرواصد کے ساتھ جو بعض صحابہ ورمیان جو بچھ ہے وہ اللہ تعالی کا کلام غلط ہو۔ پس وہ جو حضرت ورمیان جو بچھ ہے وہ اللہ تعالی کا کلام غلط ہو۔ پس وہ جو حضرت عان وہ عائمہ رضی اللہ تعالی کا کلام ہونا ممنئے ہوا۔ خانیا تمام مسلمانوں نے اس امر رانقاق کیا ہے۔ کہ وقتین کے درمیان جو بچھ ہے وہ اللہ تعالی کا کلام علط ہو۔ پس وہ جو حضرت عان وہ عائمہ رضی اللہ تعالی عنما ہے۔ متحول ہے کہ قرآن میں غلطی ہے اس کا باطل ہونا خاب ہوگیا۔ خالتا این انباری کا قول ہے کہ صحابہ آئمہ اور بچھواہ ہیں پس وہ اگر قرآن میں کوئی خطاباتے تو اس کی اصلاح اپنے بعد غیروں پر نہ چھوڑتے باوجود یکہ انہوں نے ابتداع ہے ڈرایا ہے اور انباع کی ترغیب وی ہے۔ اس لیت کہ ان میں ہے کہ یہ قرات بعض عرب کی ترغیب وادر کوئی نئی چرپیدا نہ کو۔ پس بیہ حمیں کائی ہے۔ اور اس میں نحویوں نے اختمان کیا ہے اور کئی جس بیان کی جیں (وجہ اول) جو سب سے قوی وجہ ہے یہ ہے کہ یہ قرات بعض عرب کی لغت ہے۔ اور جسمی بیان کی جیں (وجہ اول) جو سب سے قوی وجہ ہے یہ ہے کہ یہ قرات بعض عرب کی لغت ہے۔ اور بعض کاقول ہے کہ یہ نبی عارف اور فراء نے اس لغت بر یہ شعربرہ ھا ہے۔ کہ اس جو کہ اس خواب کیا ہو اور فراء نے اس لغت بر یہ شعربرہ ھا ہے۔ کہ اس جو کرت کی اس خواب کیا ہو اور فراء نے اس لغت بر یہ شعربرہ ھا ہے۔

فاطرق؛طراق الشجاع ولو يرى مساغا لناباه الشجاع لصمما اور قرار کے سوا اورول نے بی شعریش کیا ہے۔

تزود منابین اذناه ضربة دعته الی هابی التراب عقیم

قرار نے کما کہ بعض بنی اسد سے رویات ہے کہ اس نے کما ہذا خط بداخی اعرفہ اور فرب نے کما ہذا خط بداخی اعرفہ اور فرب نے کما کہ یہ کو لوگ یوں بولتے ہیں رایت رجلان اشتریت ٹوبان بونب سے ایک شاعرب، ر

فعرب-

اعرف منه الجيد والعينانا فخرين اشبها ظبيانا

اس شعر میں فغزین لغت مشہورہ کے مطابق اور باتی ان لوگوں کی لفت کے مطابق ب اید او

شاعر كاشعرب-

واشد بشنے حقب حقراها حار وعلاهن فطر علاها ایک اور شاعر کاشعر ہے۔

كان صريف ناباه اذاما

بعض نے کہا کہ اخطبان سے مردان مراد ہے۔ پس ان دولوں کو ایک بنا دیا ہے الذا مریف ناہد سے استدلال باقی رو کیا اور یونس نے نبی الحارث میں سے کسی اس شعرے استدلال کیا ہے۔

کان یمینا سحبل ومصیفه مواق دم لن یبوح الدهو ثاویا اور بی شعر بھی استدلال میں پیش کیا گیا ہے۔

ان اباها وابا اباها قد بلغافی المجد غایتاها

اور ابن جی نے کماکہ ہم سے قطرب کابید شعر روایت کیا گیا ہے۔

هناک ان تبکی بشعشعان رحب الفؤاد طائل اليدان

پر فرار نے کہا کہ اگرچہ یہ قلیل الاستعال ہے گر قیاس کے زیادہ مطابق ہے کہ کو کر وف شنیہ مفتوح ہوتا ہے پس چاہیے کہ اس کا مابعد الف ہو۔ اور اگر اس کا مابعد یا ہو تو چاہیے کہ الف بدل جائے کہ اس کا مابعد اس کا مابعد منتوح ہے اور قطرب نے ذکر کیا ہے کہ وہ الف جو حروف مد میں سب سے خفیف ہے کہ اس کا ما قبل مفتوح ہے اور قطرب نے ذکر کیا ہے کہ وہ الف جو حروف مد میں سب سے خفیف ہے) کی طرف قرار کے لیے ایسا کرتے ہیں۔ اس آیت میں یہ سب سے قوی وجہ ہے۔ اور مکن ہے کہ یوں مجمی کہا جائے کہ اس میں الف جو ہر کلمہ میں ہے اور جو حرف ہر کلمہ سے ہو شنیہ اور جمع کے بب یوں مجمی کہا جائے کہ اس میں الف جو ہر کلمہ میں ہے اور جو حرف ہر کلمہ سے ہو شنیہ اور جمع کے بب اس کا بدلنا جائز نہیں کیونکہ جو امر ذاتی ہو۔ وہ عارضی سے ذاکل نہیں ہوتا اس دلیل کا مقتصابیہ کے ان

ھذا ين كمنا جائز نہ ہو- لى جب ہم نے اسے جائز ركھا ہے تو كم سے كم اس كے ساتھ ان حذان كمنا بھى جائز ہونا چاہيے- (وجہ فانی) كے جواب ميں يہ ہے كہ ان يمال تعم كے معنى بيں ہے چنانچہ شاعر كا قول ہے-

ويقلن شيب قد علا

لینی فقلت نعم ہانہ میں ہائے سکتہ ہے جیسا کہ اللہ تعالیکا قول (هلک عنی سلطانیہ میں مے - اور جو ذویب کا قول ہے۔

شاب المفارق ان ان من اليله شيب القذال مع الذار الوصل

لعنی نعم ان من البلے پی آیت کے معنی کویا یہ ہوئے نعم هذان لساحوان انتھی - یہ تو قرات متواترہ ان هذان مساحوان کی تقیم کی توجیہ ہوئی - باتی تین آینوں کی توجیہات کتب تقامیر میں ذکور ہیں بخوف طوالت ہم انہیں یہاں بیان نہیں کرتے ہیں امام بغوی کی نبیت جو مجتد لاہوری نے لکھا ہے ۔ کہ انہوں نے آیت مندرجہ روایات عاکشہ صدیقہ کے غلط ہونے کو تشلیم کر کیا ہے ۔ وہ سمراسر افتراء ہے - معالم التریل مطبوعہ مطبع فتح الکریم بمبئ جلد ثالث سورہ طہ ص حاکی عبارت ہے ۔۔

وقرأ ابن كثير وحفص ان بتخفيف النون هذان اى ماهذان الا ساحران كقوله ان نظنك لمن الكاذبين اى مانظنك الا من الكاذبين وشد داابن كثير النون ان هذان وقراء ابو عمرو ان بتشديد النون هذين بالياء عليے الاصل وقراء الا خرون ان بتشديد النون هذان بالالف واختلفوا فيه فروى هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة ام المومنين قالت انه خطاء من الكاتب وقال قوم هولغة بنى الحارث بن كعب وخثعم وكنانة فانهم يجعلون الاثنين في موضع الرفع والنصب والخفض بالالف يقولون اتانى الزيدان و رايت الزيدان ومروت بالزيدان فلا يتركون الف التشتية في شئى منها وكذلك يجعلون كل ياء ساكنة الفتح ماقبلها الفاكما في التثنية يقولون كسرت يداه وركبت علاه يعنى يديه وعليه وقال الشاعر-

تزود منى بين اذناه ضربة

دعته الى هابى التراب عقيم يريدبين اذنيه وقال الاخر ان اباها و ابا اباها قد بلغامي المجر غايتاها وقيل تقدير الا ية انه هذان فحذف الهاء وذهب جماعة الى ان حرف ان ههنا بمعنے نعم أى نعم هذان روى ان اعرابيا سال ابن الزبير شيئا فحرمه فقال لعن الله ناقة حملتني اليك فقال ابن الزبير ان وصاحبا اى نعم وقال الشاعر

| · عواذلي | | علے | بكرت |
|----------|----|------|--------|
| منهنه | | والو | يلمنني |
| علا | 72 | شيب | ويقلن |

ک وقد کبرت فقلت انه (ای نعم انتهی)

ترجمہ: این کیر اور صفی نے آیت کو یوں پڑھا ہے۔ ان (خون مخففه) هذان یعنی ماهذان الاساحران (نہیں یہ دونوں گر دو جادوگر) جیاں کہ دو مری آیت ان نظنک لمن الکاذبین یعنی ہم نہیں گمان کرتے کئے گر جھوٹوں سے اور این کیر نے پڑھا ہے۔ ان هذان اور الاعجرونے پڑھا ہے (نون مشدوده) ان هذین یاء کے ماتھ بتا براصل اور دو مروں نے پڑھا ہے ان (نون مشدوده) هذان الله کے ماتھ اور اس میں اختلاف کیا ہے لیں ہشام بن عروہ نے اپنے باپ سے اور اس نے حضرت الله کے ماتھ اور اس میں اختلاف کیا ہے لیں ہشام بن عروہ نے اپنے باپ سے اور اس نے حضرت عائشہ ام المومنین رضی الله تعالی عنها سے روایت کی کہ یہ کاتب کی خطا ہے اور ایک جماعت نے کہا کہ یہ کائٹہ ام المومنین رضی الله تعالی عنها سے روایت کی کہ یہ کاتب کی خطا ہے اور ایک جماعت نے کہا کہ یہ کائٹہ ام المومنین رضی الله تعالی عنها سے روایت کی کہ یہ کاتب کی خطا ہے اور ایک جماعت نے کہا کہ یہ الف رکھتے ہیں چنانچہ یوں کتے ہیں۔ اتانی الزیدان رایت الزیدان مورت بالزیدان لی وہ کی عالت الف رکھتے ہیں چھوڑتے اور ای طرح یائے ساکن ما قبل مفتوح کو الف کر ویتے ہیں مثلاً تثنیہ ہیں کسرت یداہ رکبت علاہ یعنی یدیه ان کاشاء کہتا ہے۔

تزود منی بین اذناه ضوبة دعته الی هابی التراب عقیم

يعنى بين اذنيه

ایک اور شاعر کا قول ہے-

ان اباهاوایا اباها قد بلغا فی المجد غایتا ها

اور کما گیا ہے کہ کہ تقدیر یوں ہے انہ ھذان لسا(حوا) پس ہرف کی گئی ایک اور جماعت کا مسلک یہ ہے کہ حرف ان یماں تعم ہاں کے معنی میں ہے۔ یعنی نعم ھذان لساحوان (ہاں یہ دونوں البتہ دو جادو کر ہیں۔) روایت ہے۔ کہ ایک اعرائی نے این زبیرے کچھ مانگا انہوں نے نہ دیا۔ اس پر اعرائی نے کما اللہ لعن کر کہا ان و صاحبها یعنی ہاں کما اللہ لعن کرے او نثنی پر جو مجھے تیری طرف اٹھالائی این زبیر نے یہ س کر کما ان و صاحبها یعنی ہاں

وراس کے موار پر اور ایک شاعر کاقول ہے۔

بکرت علے عواذلی المنتی والومهنه والومهنه ویقلن شیب قد علا

ك وقد كبرت فقلت انه لين بال انتمى -

اب ناظرین نے و کھے لیا کہ امام بغوی نے جمال ہشام بن عروہ والی روایت کو نقل کیا ہے جس میں یہ ذکور ہے کہ قرات ان ھذان لساحران کاتب کی خطا ہے وہاں ساتھ ہی اس قرات متواترہ کی فعلے کی ترجیمات بھی نقل کی ہیں۔ للذا مجتد صاحب کا یہ قول امام بغوی نے ان ذکورہ آجوں کا قواعد عربیہ کی روے غلط ہوتا تسلیم کرلیا ہے۔ بالکل غلط ہے۔ اولا ہشام بن عروہ والی روایت صحیح نمیں جیسا کہ امام فخررازی نے مدلل طور پر بیان کیا ہے۔ ٹانیا اگر باالفرض اس رویات کو صحیح بھی تسلیم کرلیا جائے تو کاتب کی فطا سے مرادیہ ہے کہ احرف سبعہ میں سے حرف اولی متفق علیہ کے اختیار کرنے میں کاتب نے خطاکی اور بیم مراد نہیں کہ یہ قرات بو کاتب نے لکھی سراسر غلط و مردود ہے جیسا کہ بحوالہ انقان اوپر بیان ہوا۔ اگر عب کے نزدیک یہ لغت غلط ہو تا تو قرآن کی خارق عادت فصاحت و بلاغت کا کون قاکل ہو تا اور انا لله لحفظون پر کون ایمان لاتا۔ خلاصہ کلام یہ کہ حضرت عثان اور حضرت عائشہ صدیقہ ہشام بن عروہ این الحقوں نی برکون ایمان لاتا۔ خلاصہ کلام یہ کہ حضرت عثان اور حضرت عائشہ صدیقہ ہشام بن عروہ این ابی داؤد قادہ سید بن جیر' ابو عبیدہ' ابو معاویہ' امام بغوی' امام فخر رازی' اور دیگر علماء و کدشین المستنت میں سے کوئی بھی قائل نہیں کہ قرآن میں غلطی ہے اور نہ کی صحیح روایت سے ثابت کو آب کی حاصرت کی صحیح روایت سے ثابت کو آب کی حاصرت کی حاصرت کی صحیح روایت سے ثابت کو آب کی حاصرت کی حاصرت کی خاصہ فرسائی ہرزہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی مردہ سرائی ہردہ س

قال الحائري

تفاظت قرآن کے مطابق قائلین تحریف کا جواج صاحبان! امید نمیں کہ یہ لوگ اس انم اعتراض کا کوئی جواب دے علیں۔ اچھا نئے جو لوگ کہ قرآن کی تحریف اور اغلاط کے قائل ہیں۔ اور جہوں نے یہ مان لیا ہے۔ کہ سینوں کے خلیفہ عثمان نے قرآن کے جمع ہو جانے کے بعد اغلاط قرآن کو اہل جہوں نے یہ مان لیا ہے۔ کہ سینوں کے خلیفہ عثمان نے قرآن کے جمع ہو جانے کے بعد اغلاط قرآن کو اہل نبان عرب کے خود ورست کر لینے پر قرآن میں رہنے دیا ہے ان کے نزدیک خدا کے حافظ قرآن ہونے کا جواب یہ ہو ہے کہ آیت انا لله لحفظون میں لفظ قرآن یا کتاب تو کمیں ندکور ہی نمیں پھرتم اس آیت میں کو گر قرآن کی حفاظت مراد لے سکتے ہو۔ رہا لفظ ذکر جو آیت ندکورہ میں موجود ہے۔ جو لوگ تحریف کیوگر قرآن کی حفاظت مراد لے سکتے ہو۔ رہا لفظ ذکر جو آیت ندکورہ میں موجود ہے۔ جو لوگ تحریف

واغلاط قرآن کے قائل ہیں۔ ان کے نزدیک ذکرے رسول خدا یمال مراد ہیں۔ اور انہیں کی تفاقت کا اس آیت میں خدا نے وعدہ کیا ہے۔ وہ یہ بھی کتے ہیں کہ آیت فسئلوا اہل اللہ کوان گنتم لا تعلمون (پ کاع ا) میں بھی اہل الذکران گنتم لا تعلمون (پ کاع ا) میں بھی اہل الذکرے آل محم صلی اللہ علیہ وسلم ہیں جن سے سوال کرنے کامت کو تھم دیا گیا ہے یمال بھی آیت میں ذکر سے تیغیر خدا مراد ہیں۔ کیونکہ قرآن میں رسول اللہ کانام ذکر مول اللہ کانام ذکر مسولا یتلوا علیکم آیات اللہ مبینت (پ ۲۸ع ۸) مرت پر آیت قد انزل اللہ الیکم ذکر رسولا یتلوا علیکم آیات اللہ مبینت (پ ۲۸ع ۸) شابد اور گواہ ہے۔

یعنی (تم کو) آگاہ کرنے کے لیے پیغیبر(مجم) کو تمہاری طرف بھیج دیا گیا ہے جو تم کو خدا کی کھلی کھلی آئٹس پڑھ پڑھ کرسناتے ہیں۔(ترجمہ نذیر احمہ)

اب اس سے صاف ثابت ہے کہ قرآن میں ذکر بیغیر کا نام ہے۔ جو خدا کی کھلی آئیں پڑھ کر سات ہا ہے اگر ذکر قرآن کا نام مان لیا جائے تو یتلوا علیکم ایات الله مینت کی صنعت اس پر صادق نہیں آئی اس لیے قائلین تحریف و اغلاط قرآن کا بیہ وعوے ہے کہ ذکر بیغیر اسلام کا مخصوص نام ہے۔ قرآن کانام داتے کا وعدہ کیا گیا تھا۔ اس لیے اس قرن میں تحریف زیادتی کی اور اغلاط واقع ہوئیں

قائلین تحریف و اغلاط قرآن میہ بھی کہتے ہیں۔ کہ فرمنا اگر میہ تسلیم بھی کر لیا جائے کہ آبت انا نحن نزلنا الذکو میں ذکر سے قرآن مراد ہے اور وعدہ بھی قرآن ہی کی حفاظت کا اس آبت میں کیا گیا ہے تو چرمیہ کیو کر ابت ہوگا کہ اس سے حضرت عثان کا جمع کیا ہوا قرآن مراد ہے۔ حضرت حفصہ یا حضرت عثان کا جمع کیا ہوا قرآن مراد ہے۔ حضرت حفصہ یا حضرت عثان کا تو آبت میں ذکر ہی شیں عائشہ یا ابی اور ابن مسعود وغیرہ کا قرآن کیوں نہ مراد لیا جائے خاص صحیفہ عثان کا تو آبت میں ذکر ہی شیں پھراس کی تخصیص بلا مخصوص شیں تو کیا ہے۔

اگر ان غیر معصوم لوگوں کے جمع کئے قرآن ہی کی حفاظت انالہ لحفظون میں مراد ہوتی تو پھر بھین سمجھو کہ ابی اور ابن مسعود کے قرآنوں کے وعدہ حفاظت خدا کے باوجود حضرت عثان پھاڑنے اور جلانے پر قادر نہ ہو سکتے ۔ اور خود حضرت عثان اس موجودہ قرآن میں چار غلطیوں کا اعتراف کرتے ہوئے اس کو ویسا ہی غلط طط رہنے نہ ویتے۔ اور بناپر روایات اہل سنت کے اس کے حروف کلمات آیات اور سورتوں میں تحریف واقع نہ ہونے پاتی مگر جب کہ محد ثین و مضرین اہلنت نے موجودہ قرآن میں ان سب باتوں کا ہونا تشکیم کیا ہے تو پھراس قرآن کے محفوظ ہونے کے کیا معنی اس لیے قائلین تحریف د افلاط قرآن کے متعلق ہے۔ جو انسانی دست برد سے قطعا محفوظ ہے۔ اور قرآن کے متعلق ہے۔ جو انسانی دست برد سے قطعا محفوظ ہونے اور

مرف وہی ایسا محقوظ قرآن رہ سکتا ہے۔ جو کی محفوظ جگہ جس رکھ دیا جائے اور ایسے قرآن کی حفاظت بلا ہر فدہب اعتماد کرسکتا ہے۔ لیس موجودہ قرآن کی تحریف و اغلاط کے قائلین کے نزدیک خدا کے وعدہ حافات کے مطابق محفوظ قرآن صرف وہی ایک قرآن ہے۔ جس کی خود قرآن نے شمادت دی ہے بیل ہو فران میں جدل فی لوح محفوظ ہے وہ وہ ایک قرآن ہوئے۔ یعنی بلکہ بیہ قرآن بڑے رہب کا قرآن اور مارے بال لوح محفوظ ہیں کھا جو اموجود ہے۔ اس میں ایک حرف یا نقطہ تک غلط و مبدل و محرف نہیں ہو کہا آپ ہی بتائیں کیا آپ لوح محفوظ والے قرآن کے محفوظ ہونے ہے انکار کر سکتے ہیں۔ اگر نہیں تو آپ ہی بتائیں کیا آپ لوح محفوظ والے قرآن کے محفوظ ہونے ہے انکار کر سکتے ہیں۔ اگر نہیں تو آپ انکا کہ حفوظ والے قرآن کے مطاب بیہ ہے کہ جس قرآن کی حفاظت کا این مام ہے لین کسی خاص بات کی حفاظت کی اس میں قید نہیں لگائی گئی ہے مطلب بیہ ہے کہ جس قرآن کی حفاظت کا اس آپ آپ میں نہ تقدیم و تا خیرہو سکتی ہے۔ نہ این اور کسی قرآن کی حفاظت کا این ویک مواظت کی حفوظ والے قرآن کے سوا اور کسی قرآن کو حاصل نہیں ہو سکتی۔ روایت حضرت عائشہ و خلیفہ عثان جس قرآن میں حرفول لفظول اور کسی قرآن کو حاصل نہیں ہو سکتی۔ روایت حضرت عائشہ و خلیفہ عثان جس قرآن کے محفوظ ہونے کا قرآن کے محفوظ ہونے کا کہوں اور سور توں کے کم و زیادہ ہو جانے کے علاوہ چار غلطیاں رہ گئی ہوں۔ اس قرآن کے محفوظ ہونے کا کہو کی عقریف قرآن کے محفوظ ہونے کا کہو کہوں کو کئی عقرید کیو کر دعوے کر سکن فاعتب و ایا اولی الابصار (مرحد تریف قرآن کے محفوظ ہونے کا

اقول

بجتد صاحب کے بیان سے ظاہر ہے کہ شیعہ قرآن میں تحریف کے قائل ہیں۔ کونکہ ذکر سے مراد رسول اور اہل الذکر سے مراد آل محمد ساتی کا بتانا ای فرقہ کا کام ہے۔ چنانچہ شیعہ کے مستند اردو ترجمہ قرآن میں ہے= فلسٹلو اہل اللہ کوان گنتم لا تعلمون (انبیاء:۱) بس اگر تم نہیں جانے تو یاد والوں سے (یعنی آل رسول سے) ہوتچہ لو (ترجمہ شیعہ) کافی میں ہے کہ کی نے جناب امام محمد باقرے عرض کی کہ مارے بال پچھ ایسے آدی بھی ہیں جو یہ گمان کرتے ہیں کہ خدا کے اس قول فسئلو اہل الذکو میں اہلات ہال الذکو میں اللہ کو سے مراد یہود نصاری ہیں۔ فرمایا یمی دجہ ہے کہ یہود و نصاری ان کو اپنے دین کی وعوت دیتے رہتے ہیں پھر اپنے دست اقد س سے اپنے سیٹ اقد س کی طرف اشارہ کرکے فرمایا کہ اہل ذکر ہم ایس اور ہر چیز ہم سے دریافت کی جائی ہے جاشیہ (ترجمہ شیعہ) فسئلوا العل الذکر ان کشم اور معمون کی جائی اور تفییر پرائی ہیں۔ کہ الذکو سے مراد ہیں اس بارے ہیں وارد ہوئی ہیں۔ کہ الذکو سے مراد ہیں عربی سے درول خدا اور اہل الذکو سے مراد ہیں آل رسول خدا اور امت اس پر معمور کی گئی ہے۔ کہ جو جناب رسول خدا اور امت اس پر معمور کی گئی ہے۔ کہ جو

مرکھ وہ نہ جانے ہوں- آل رسول فدا سے وریافت کرلیں(عاشیہ ترجمہ شیعہ) مجتمد صاحب نے جوزاریہ رسول خدا مراد ہونے پر سورہ طلاق کی آیت سے استدلال کیا ہے۔ اس میں کلام ہے۔ شیعہ لی تغریر منبج الصارقين (مطبوعه امران جلد خامس ٢٩٠) ميس ب قد انزل الله تحقيق كه فرستاده است كه خدا البكم بسوئے شاء ذکرا پندے رایا کتابے راکہ قرابی نست و نشمیہ قرآن بال بجست آنست کہ متفنمن موعد است و شرف دنیا و کرامت عقبی وابسته آست بخواندن آن و عمل کردن با وا مرنوایی آن و گویند مراد جرئیل است و تسمیه اویذ کر بجمت کثرت ذکر اوست میان امم انبیاء بجمت نزول او بقرآن که متضمن ذکراستها بجست آنک ندکور و مشهور است در طبقات آسان یا صاحب ذکر و شرف است و از حفرت ابو عبدالله صلوة الله واز حسن بقرى منقول است كه مراد بذكر حفرت رسالت است و تسميه اوباي اسم بجهت مواظيت اواست بتلاوت قرآن بايه تبليغ آل يندگال ديا باعث برآنكه مسبب است از انزال وحي باديا آنكه زكور است اسم سامي آن السنه خلقان ونيا بريس تعبيرارسال بانزال برسبيل ترفيخ است وبقوله رسوله بيان ذكر است و گاہے کہ مراد ازال جرئیل یا پینمبرباشد وبنابرا آتکہ مراد قرآن باشد رسولامنصوب خوارد بود مفل مقدر و تقذير اينكد ارسل رسولا لعني فرو فرستاده است رسول راوميتواند بودكه معمول ذكر باشد ماند ا كمال مصاور ور مقاعيل خووو تقدير آنك انول الله اليكم ان ذكر رسولا يعني اترال فرموده است شما آتکه یاد کرده است رسول زادر کتب یایاد کرون او رسول رایا آنکه بدل ذکر باشد جمعنی رسالت لین انول الله اليكم الوسالة وينابرين قوله تعالى يتلوا عليكم طال باشد ازاسم الله وبنا برتقارير ويكريا طال است ازاسم الله مائند رسول لعني خدا فرو فرستاد رسالت رابا بنائے جنس شادر حالت كه ميخواند برشاايت الله آیت بائے قرآن را یا ارسال رسولے ہونے کردہ کہ تلاوت کند برشا آیات خدا را کہ قرآن است انتھی اس عبارت سے ظاہرہے کہ آب سورہ طلاق میں ذکر کے معنی ہیں۔علاوہ رسول کے دواور اخمال بھی ہیں۔ پس مجتند لاہوری کا استدلال باطل ہو گیا اگر ہم تشکیم بھی کرلیں۔ کہ سورہ طلاق کی آیت میں ذکر ہے فقظ رسول بیں تو اس سے ب لازم نہیں آتا کہ آیت انا نحن نزلنا الذکو میں بھی ذکرے رسول مراد ہوں۔ ہم اوراق سابقہ میں بحوالہ تراجم و تفاسیر شعیہ ثابت کر آئے ہیں کہ آب انا نحن میں ذکرے مراد قرآن مجید بی ہے۔ اور صیغہ نزلنا بھی اس بروال ہے کیونکہ تنزیل کے معنی یارہ پارہ اتارنے کے ہیں علاقہ ازیں متعدد آیات میں قرآن کانام ذکر آیا ہے مثال کے طور پر آیات زمل معہ ترجمہ کافی ہیں-(١) وَقَالُوْ يُايُّهَا الَّذِي نَزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ (جرع)

ریال اس الموں نے بیا کہ دیا کہ اے وہ فخص جس پر قرآن مجید نازل کیا گیا ہے تو ضرور

دیوانہ ہے۔ (ترجمہ شیعہ)

(r) وانزلنا اليك الذكر للتبين للناس مانزل اليهم ولعلهم يتفكرون (محل ع٢)

ر است کے لیے کھول کر بیان کرو۔ کہ وہ غور و فکر کریں-(رجہ شید)

الذين كفرو اليز ليزلقونك بابصار هم لما سمعوا الذكر ويقولون انه لمجنون الدين كفرو اليز ليزلقونك بابصار هم لما سمعوا الذكر ويقولون انه لمجنون المرادة ا

ترجمہ: قریب ہے کہ کافرجس وقت قرآن مجید کو سنیں تو اپنی نظروں کے ذریعہ سے تمہیں پھسلا ریں اور وہ کہتے ہیں کہ بیا تو ویوانہ ہے - (شیعہ ترجمہ)

(٣) ان الذين كفروا بالذكر لما جاء هم وانه لكتب عزيز (تم جره ع ٥)

ترجمہ : بیشک وہی لوگ ہیں جنہوں نے قرآن مجید کاجس وقت بھی ان کے پاس آیا انکار کر دیا مالانکہ وہ الیا زہر وست نوشتہ ہے۔(ترجمہ شیغہ)

(۵) اؤنزل عليه الذكر من بيننا (انباءع ٣)

ترجمه: (ما فرو فرستاده شد برمحمه قرآن ازمیان جماعت (خلاصه المنهج)

(٢) وهذا ذكر مبرك انزلناه (البياءع ٣)

ایں قرآن عنست ماخیر و بسیار منفعت ورد نیا و آخرت که فرد فرستادیم بر حضرت خاتمیت (خلاصه المنج)

(4) وانه لذكر لك ولقو رمك (ز ترف ع ٣)

ترجمہ: نیست قرآن تمریندے از خدا امرعالمیان را کہ جواند و بدائند و بدال پند گیرحد(خلاصہ المنج)

(٨) أن هو الاذكر للعلمين (سوره ص ع ٥)

آل وحی لینی قرآن ہر آیند شرفے است وعرتے مرترا ومر کروہ تراکہ قرایش اندیاسائر است (فلاصه المنج)

(٩) ان هوالا ذكر للعلمين (سوره ص ع ٥)

ترجمه: نيست قرآن مربندے از جانب اوسجانه مرجمع عالميان رازجن وانس (خلاصه المنج)

(ا) ان هوالا ذكر وقرآن مبين اليين ٤٥)

ترجمہ: نمیست آنچہ فرستا دیم ماباد گریاد کردن موعدہ وارشاد وکتابے روش کہ بروجہ سمولت اند معنی ازال توال کرد-(خلاصہ المنج)

مزید بریں آگلہ آیہ انانحن نزلنا میں ذکر کے معنی قرآن ہونے کی تائید قرآن ہی کی ایک اور روایت لا یاتیه الباطل من بین یدیه و لا من خلفه سے بھی ہوتی ہے جیسا کہ مجمع البیان میں ذکور ہے اندا جہتد صاحب کا یہ کمنا ذکر بیفیر کا مخصوص نام ہے اور آیہ افا نحن میں ذکرے رسول مراد ہں۔ بالكل غلط تهمرا مصحف عثان بانفاق صحابه كرام دامت خيرالانام بلحاظ نظم و رسم و ترتيب وبي قرآن يج جو حضور اقدس ما الرائيل اس ونياسے تشريف لے جانے پر چھوڑ گئے تھے۔ اگر اس قرآن مجمع عليہ كے سواكسي ۔ اور کا جمع کیا ہوا یا لکھا ہوا۔ قرآن وعدہ خفاظت مصداق ہونا تو آج وہ بلا کم کاست ضرور ہمارے ہاتھوں میں ہوتا۔ لوح محفوظ کے قرآن کو وعدہ حفاظت کامصداق کمال نادانی ہے کیونکہ آیت انانحن نزلنا الذکر واناله لحفظون سے صاف ظاہر ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن منزل کی حفاظت کا وعدہ قرمایا ہے۔جو قرآن لوح محفوظ میں ہے۔ وعدہ حفاظت کامصداق نہیں بن سکتا کیونکہ اس میں تحریف کا احتمال ہی نہیں۔ ہاں قرآن منزل میں تحریف کا اخمال تھا چنانچہ تورات و انجیل اس سے پہلے انسانی ہاتھ سے محرف ہو چک تھیں۔ پس اللہ تعالی نے دنیا میں قرآن کی حفاظت کا وعدہ فرمایا اور بیہ وعدہ بطریق خرق عادت یورا ہو تا چلا آیا ہے۔ مثال کے طور پر شیعہ ہی کو بیجے جو وشمنان قرآن کے زمرہ میں ایک خاص امتیاز رکھتے ہیں وہ بھی تو کہتے ہیں کہ اس قرآن کی ترتیب غلط ہے - اور مجھی کہتے ہیں کہ اس میں نحوی غلطیاں ہیں- اور مجھی بردھا بکتے ہیں۔ کہ فلال مورت اس میں سے نکال وی گئی ہے۔ مگر ما انہمہ ان کو مجھی سے جرات نہیں ہوئی کہ اس قرآن موجود کو ائی خواہش کے مطابق کم و بیش کر کے اور ترتیب بدل کر چھاپ دیں یہ ہے حفاظت اللي مجمتد صاحب كي باتى خامه فرسائي كاجواب يهلي مو چكا ہے-

قال الحائري

سینوں کے قرآن سے نکل جانے کا جُوت ملک ہے۔ صاحبان اس طرح تواہل سنت کی روایات سے کی ممل مورتوں کا قرآن سے نکل جانے کا جُوت ملک ہے۔ جیسا کہ تغیر انقان میں امام سیوطی نے اور کتاب الناخ والمنسوخ میں حسین بن منادی نے لکھا ہے۔ و هما دفع دسمه من المقوان و لم یوفع من المقلوب حفظه سورتا الغنوت فی الو تر و تسمی سورتی الخلع والحفد انتھی بلفظه لینی منجلہ ان سورتوں اور آیتوں کے جن کے نفوش قرآن سے اٹھا لیے گئے جیں۔ لیکن ان کی یاد دلوں سے نہیں گئ وہ دو سورے ہیں جو قنوت و تر میں پڑے جائے تھے۔ اور سورہ الحلح وسورہ الحفد کے نام سے یاد کیے جائے تھے۔ گراس وقت حضرت عثمان کے جمع کے ہوئے قرآن میں ان کا الحفد کے نام سے یاد کیے جائے تھے۔ گراس وقت حضرت عثمان کے جمع کے ہوئے قرآن میں ان کا نشان تک نہیں پایا جائا۔ (موحد تحریف قرآن میں میں)

اقول

مجتد صاحب شاید اس عبارت کا مطلب نہیں سمجھے ورنہ اے امثلہ تحریف کی مثالوں میں پیش فیرے کے عمد نہرے علامہ سیوطی اور حسین بن منادی کا مطلب یہ ہے کہ یہ دونوں سور تیں آنخضرت مٹی ہے عمد مبارک میں قرآن میں درج تھیں۔ گر حضور کی حیات شریف ہی میں ان کی تلاوت منسوخ ہو گئی۔ اور تھم بارک میں قرآن میں درج تھیں۔ گر حضور کی حیات شریف ہی میں ان کی تلاوت منسوخ ہو گئی۔ اور تھم باق رہ گیا نے اللاق دون الکم بھی ننخ کی ایک قتم ہے جس کا شیعہ کو بھی اعتراف ہے جیسا کہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں۔

قال الحائري

وبستان المذاہب مصنفہ ملا مرزا محس سمیری ذاتی مطبوعہ بمبئی ص ۲۲۰ سطرے سے آیک سمل مورہ آپ کھمل مورہ آپ کھمل مورہ آپ کو سناتا ہوں۔ جو سورہ تورین کے نام سے مشہور تھا۔ غالبا محمد مصطفی اور علی علیہ السلام تورین (دو نور) سے مراد ہوں کیوں کہ ان ٹورین نیرین کا نام لے کر اس میں ان کا ذکر موجود ہے بسرحال غور سے ساعت فراکمیں سورۃ یہ ہے۔

يا يها الذين امنوا امنوا بالنورين انزلنا هما عليكم اياتي ويجدّر انكم عدّاب يوم عظيم نور ان بعضما من بعض وانا السميع العليم ان الذين يوفون بعد الله ورسوله في ايات لهم جنت النعيم والذين كفرو امن بعدما امنوا بنقضهم ميتاقهم وما عاهدهم الرسول عليه يقدّفون الجحيم ظلموا انفسهم وعصوا لوصى الرسول اولتك يسقون من حميم الخ

عزیزہ؟ سن لیا آپ نے یہ ہے سورۃ النورین جو کمل قرآن سے نکال دی گئی ہے۔ اس میں کا نام اور اس کی وصایت رسول خدا اور ذریت معصومہ کا ذکر موجود ہے۔ بادی النظر میں ہر عقلند اس سورت مجیدہ میں ایک غائر نظر ڈالنے کے بعد میں فیصلہ کرے گا۔ کہ اگر یہ مان لیا جائے کہ یہ سورۃ من اللہ نازل ہوئی تھی۔ اور قرآن سے نکال دی گئی تو پھر ہر سلیم العقل کئے پر مجبور ہوگا۔ کہ لازما اس سورہ کی تحریف محض اس غرض سے ہوئی کہ جناب امیر علیہ السلام کو امت اس میں مصوص الولایت سمجھ کر خلافت اور نیابت رسول خدا کا حق وارنہ سمجھ لے اور یہ سورہ مبارکہ کہ خلافت اجماعیہ میں مخل و قادح نہ ہوسکے ۔ غرض جمال کمیں بھی کمی سورت آیت لفظ یا حق فرآن میں صواحت یا کنا۔ یہ حقیت یا فضیات آئمہ اہل بیت معصومین علیم السلام کاذکر آیا تھا۔ وہ حرف لفظ فرآن میں صواحت یا کنا۔ یہ حقیت یا فضیات آئمہ اہل بیت معصومین علیم السلام کاذکر آیا تھا۔ وہ حرف لفظ

نکال دیا گیایا کم از کم بدل دیا گیا بے شار آئتیں اور بعض سور تیں تحریف کردی گئیں موحد تحریف قرآن ۵۲۲۳۸

اقول

نظرین کو معلوم ہے کہ جمتد صاحب بمال اہل سنت کی روایات سے کئی کمل موروں کے قرآن سے نکل جانا فرآن سے نکل جانا کے کا جوت چیش کر رہا ہے۔ کہ بنا پر قول اہل سنت مورہ فورین بھی جو واقل بحوالہ انقان چیش کیا ہے۔ اب یمال یہ ظاہر کر رہا ہے۔ کہ بنا پر قول اہل سنت مورہ لورین بھی جو واقل قرآن سخی قرآن سے نکانی کئی گرداستان المذاہب کے اس حوالہ چیس اس نے بروہ ہوکا دیا۔ ہے مصنف درستان نے مخوان قائم کیا ہے۔ ور ذکر فرقوں کے انتاع شریہ ۔ اس کے تحت جیس مصنف درستان اثنا عشریہ کے عقائد انٹی کی عنوان قائم کیا ہے۔ ور ذکر فرجب انتاع شریہ ۔ اس کے تحت جیس مصنف درستان اثنا عشریہ کے عقائد انٹی ک ترجملہ انبیاء واولیاء است و باتی آئمہ معصوبین علیم السلام کہ فرزندان اویند چینس اول ایشاں بہو آخرو انجا جی اس کے قرندان اویند چینس اول ایشاں بہو آخرو انجا جی مائی دار وقائم است یا زدہ جن سمستہ و دواردھم ابشاں پائے دار وقائم است انجام و ظہور کندو جمان را پر گرواند از وار چنا نکہ پرشدہ باشد ازجور و ظلم و گویند ابو بر کرمو وقائم است انجام و ظہور کندو جمان را پر گرواند از وار چنا نکہ پرشدہ باشد ازجور و ظلم و گویند ابو برکرمو عثمان و نمی امید و عباسیہ بایاوراں خود عاصب حق آئمہ معصوبین بودندو ایشاں را نفرین کند ازیشاں گویند کہ عثمان مصاحف راسوختہ بعض از سورہا کہ درشان وفضل آلش بود برانداخت و کے از سورہا انبست بسم عثمان مصاحف راسوختہ بعض اللہ المرحمن الوحید باید و برانداخت و کے از سورہا انبست بسم عثمان مصاحف راسوختہ بینے الم درشان وفضل آلش بود برانداخت و کے از سورہا انبست بسم اللہ الم حصن الوحید باید جربا الم الم درشان وفضل آلش بود برانداخت و کے از سورہا انبست بسم اللہ الم حصن الوحید باید جا الم الم درشان وفضل آلش ہود برانداخت و کے از سورہا انبست بسم اللہ الم حصن الوحید باید جربا الم دورات الم دورات اللہ الم دورات الم دورات الم دورات الم دورات الم دورات اللہ الم دورات الم

ترجمہ: حضرت محمہ سالی ایک کو انتخاب کیا اور اپنا وصی و خلیفہ بنایا۔ اور حضرت محمد سالی کے فرند ہیں بعد علی تمام انبیاء و اولیاء سے بمتر و دانا تر ہیں۔ اور باتی آئمہ معصوبین علیم السلام جو اس کے فرند ہیں اسطرح ہیں ان کے پہلے مائند پچھلوں کے اور پچھلے مائند پہلوں کے اور آئمہ کی تعداد بنابر اخبار پنجبروارہ سے۔ ان ہیں سے سب گیارہ گزر کے ہیں۔ بارہویں پاکدار و قائم ہیں۔ آثر کار وہ بارہویں ظاہر ہوں گے۔ اور دنیا کو انصاف سے بھردیں سیمی جیسا کہ جو رو ظلم سے پر ہوگئی اور اٹنا عشریہ کتے ہیں۔ کہ ابو بکرو عمر عثمان اور نی امیہ و عباسیہ اور ان کے مدد گاروں نے آئمہ معصوبین کا حق چھین لیا ہے اور وہ ان پر جہا کرنے ہیں اور اثنا عشریہ ہیں ہے اور وہ ان پر جہا کرنے ہیں اور اثنا عشریہ ہیں ہے بعض کہتے ہیں۔

کہ عثمان نے مصاحف کو جلا کر بعضی سور تیں جو علی کی شان اور آل علی کی فضیلت میں تھیں۔ قرآن سے تکال دیں۔ اور ان سورتوں میں سے ایک سورۃ یہ ہے۔ بسم الله الرحمن الرحیم یابھا

الذين امنو الخ- انتهى اس عبارت سے صاف ظاہر ہے کہ بعض اثنا عشريہ يہ ظاہر کر رہے ہيں۔ که حضرت عثان بعض سور تيس قرآن سے نكال دى ہيں جن ميں سے ایک سورة نورين ہے گر مجتد لاہورى صاحب به ظاہر کر رہا ہے کہ اہل سنت ايسا کتے ہيں اس سے ناظرين لاہورى کى ديانتدارى کا اندازہ لگا كتے ہيں۔ اخراج کا کيا ذکر اہل سنت توسورہ نورين کو منزل من اللہ ہى نہيں جانتے بلکہ اسے شيعہ کی گھڑت ہيں۔ اور گھڑت ہى الى مضحکہ انگيز کہ ایک طفل دبستان ہى اس ميں ہر طرح کی بيسوں غلطياں بتا سے اور گھڑت ہيں۔ اور گھڑت ہيں الى مصحکہ انگيز کہ ایک طفل دبستان ہى اس ميں ہر طرح کی بيسوں غلطياں بتا سے اللہ عن ہو جو يمال ذائد خامہ فرمائى کی ہے۔ وہ اس نے اپنے اصلی عقيدہ کی تشرق کی ہے جو کمل انا ء يتو شعے بعمافيه

قال الحائري

سینوں کے قرآن کی کمی سورتوں میں مدنی آیتیں اور بالعکس ہیں

صاحبان المسنّت كى معتبره كتب سے يہ مجى البت ہوتا ہے كہ ان كے قرآن ميں بعض وہ آئتيں جو كمہ ميں نازل ہوئى ہيں۔ ان كو مدنى سورتوں ميں داخل كيا كيا ہے ۔اور بعض مدنى آيتوں كو كى سورتوں ميں داخل كيا كيا ہے ۔اور بعض مدنى آيتوں كو كى سورتوں ميں داخل كيا ہيا ہوں۔ فور سے ساعت قرمائيں۔ (سورہ رعد) داخل كيا ہے نمونہ كے طور ير بحوالہ صفحہ سطر چند مقام سناتا ہوں۔ فور سے ساعت قرمائيں۔ (سورہ رعد) تقيير ورمشور جلد چهارم مطبوعہ مصرص ٢٣ سطرہ ميں امام سيوطى لكھتے ہيں۔ كہ ابن المنذر الع الشيخ نے قادہ سے روايت كى ہے۔

قال سورة الرعه مدنية الااية مكية ولا تزال الذين كفرو تصيبهم بماضنعوا قارعة

یعنی سورة رعد کمل میند میں نازل ہوئی گراس سورة میں صرف ایک آیت ولا یزال الذین کفروا مدنی آیت ہے۔ کفروا مدنی آیت ہے۔

جسکو جامع القرآن نے خلاف ترتیب نے میں ٹھونس ویا ہے۔ تفسیر کبیر مطبوعہ مصرجلد پنجم سطراخیر میں امام رازی لکھتے ہیں

سورة الرعد اربعون وثلاث ايات مكية سوى قوله تعالى ولايزال الذين كفروا تصيم بما صنعواقا رعة وقوله ومن عنده علم الكتاب قال الاصم هى مدنية بالا جماع انتهى بلفظه

آیت و من عندہ علم الکتاب کے کہ اصم نے کما ہے سے مرنی آئتیں اس پر اجماع محابہ فا ہے۔

صاحبان غرض نمونہ کے طور پر ان چار پائی سور توں کا تغیر نقدیم و تاخیر آیات کیہ اور مرنبے میں میں نے پیش کردیا ہے۔ کہ کی سور توں میں بعض آئتیں مدنی وافل کردی کئی ہیں۔ اور مدنی سور توں میں بعض آئتیں مدنی وافل کردی گئی ہیں۔ حال آئکہ جس طرح تر تیب وار آئتیں نازل ہوتی رہی ہیں ای طرح ان کو جمع کیا جانا چاہیے تھا۔ مگر قربان جائے فلیفہ المسلمین حضرت عثان کی اس جدت کے کہ وہ فلاف تنزیل آبت کو تر تیب وے کر قرآن جمع کر گئے ہیں سے ہا المسنت کے قرآن کی وہ شان جس پروے ذور سے ایمان رکھنے کا دعوے کر قرآن جو کے شیعوں کو تحریف و تبدیل قرآن الزام دے کر قرآن بوے نامیان ہونے کا فتوئی وے رہے ہیں۔ پیفلٹ مطبوعہ اعلان کررہے ہیں۔ کیا سے شرم کا مقام نمیں کہ جس فدہب کی مروایات قرآن میں جید کی ہے گت بنا رہی ہوں اس فدہب کے مشمکین کس منہ سے دوسروں کو تحریف قرآن کے الزام میں بے ایمان ہونے کا فتوئی وے کرفہ فود واسے ایمان بونے کا فتوئی وے کرفہ قرآن کے الزام میں بے ایمان ہونے کا فتوئی وے کوئلہ فود ور اعلاج نیست موحد تحریف قرآن کا لول کھولا گیا ہے۔ جس پر وہ اب ہاتھ ملتے رہ گئے ہیں۔ کیونکہ فود کروہ راعلاج نیست موحد تحریف قرآن کا ایول کھولا گیا ہے۔ جس پر وہ اب ہاتھ ملتے رہ گئے ہیں۔ کیونکہ فود

اقول

ہم ای کتاب دیکھو جو اٹی ۱۸۳٬۱۸۲) میں بحوالہ اصادیث صححہ بنا چکے ہیں۔ کہ جب حضرت جبریل علیہ السلام کوئی آیت لاتے تھے۔ تو آنخضرت ہے عرض کر دیا کرتے تھے کہ استہ فلال سورت میں فلال جگہ رکھنا چاہیے پھر حضور بھی کاتب وتی ہے دیا ہی فرا دیا کرتے تھے۔ باد جود ایسے صرح ارشاد کے حضرت عثان رضی اللہ تعالیٰ عنہ تر تیب آیات کو کس طرح بدل سکتے ہیں۔ ایک روز حضرت ابن ذہیر نے حضرت عثان ہے کہا کہ آیت و اللہ بن بہتو فون منکم ویلدون ازواجا کو دوسمی آیات نے منسون کویا ہے۔ آپ اسے کیوں کصح ہیں یا اسے کسی ہوئی کیوں رہنے دیتے ہیں۔ اس پر حضرت عثان نے جواب دیا اے بھائی کے بیٹے ہیں قرآن میں کوئی شے اس کی جگہ ہے نہیں بدلنے کا ارادہ رکھتا ہوں غرض سورتوں آیات کی تر تیب تو قیفی ہے جس طرح شارع غلبہ اسلام نے فرمایا اس طرح کیا گیا مجمتہ لاہوری نے جو سورہ رعد اور معرہ اور تقیر کیر کی سورتوں ہیں مدتی آیوں اور مدتی سورتوں ہیں کی آیات کا ہونا نقل کیا ہے وہ کسی طرح قابل اعتراض نہیں سورتوں ہیں مدتی آئیوں اربلہ والی ای طرح والی ای طرح قابل اعتراض نہیں شیعہ کی معتبر تغیر مجمع البیان میں بھی ایسا ہی کہا گیا ہے ہم مثال کے طور پر سورہ رعد کو ہی لیتے ہیں۔ اس کی بابت جمع البیان (جلد فائی می) میں ہے۔

سورة الرعد مكية كلها عن ابن عباس وعطاء وقال الكلبى ومقاتل مكية الا اخراية منها نزلت في عبدالله ابن سلام وقال سعيد بن جبير كيف تكون هذه الاية نزلت في عبدالله بن سلام و سورة كلها مكية قال الحسن وعكرمة وقتاده امها مدنية الاايتين تزلتا بمكة ولو ان قرانا سيرت به الجبال ومابعدها انتهى-

ترجہ: ابن عباس اور عطاکا قول ہے کہ سورہ رعد تمام کی ہے اور کابی اور مقاتل کا قول ہے کہ اس کی اخیر آیت کے سواجو عبداللہ بن سلام کے بارے میں نازل ہوئی سب کی ہے دور سب سعید بن جبیر نے کہا اس آیت کا نزول عبداللہ بن سلام کے بارے میں کیے سمجھا جا سکتا ہے طالا تکہ یہ سورۃ تمام کی ہور حسن و عکرمہ و اثادہ کا قول ہے کہ یہ سورت بدنی ہے سوائے دو آیتوں کے جو کمہ میں نازل ہوئیں یعنی ولوان قوانا بسیوت به الجبال اور اس کے مابعد انتھی علامہ طبری نے اپی تفسیر میں جا بجا ایسا اختلاف نقل کیا ہے گر تر تیب آیات قرآن پر کہیں اعتراض نہیں کیا۔ خود مولوی حائری نے اپی تفسیر لوامع الترائل میں کی و مدنی ہونے کا اختلاف ہر جگہ بتایا ہے گر اس تر تیب آیات پر کہیں اعتراض نہیں کیا۔ جبتد لاہوری کا اس رسالہ میں موجودہ تر تیب آیات پر معترض ہونا بتا رہا ہے۔ کہ قرآن موجودہ کی سبت مجتد صاحب کا اصل عقیدہ کیا ہے ہماری اس کتاب کے مطالعہ سے نا ظرین کو معلوم ہوجائے گا۔ کہ نسبت مجتد صاحب کا اصل عقیدہ کیا ہے ہماری اس کتاب کے مطالعہ سے نا ظرین کو معلوم ہوجائے گا۔ کہ

قال الحائري

شیعہ مسلمان قطعا تحریف قرآن کے قاکم نہیں ہیں صاحبان میں اس وقت تک تو صاحبان اللہ سنت کے مسلمات متعمدہ سینوں کے خلفاء راشدین امهات المسلمین - روایات مو هین اور اکار محد هین اور آئمہ مفرین کے اقوال و مسایند سے سینوں کا عقیدہ تحریف حروف الفاظ آیات اور سور ہائے قرآن کی زیادتی قرآن میں اغلاط کارہ جانا - اور تقدیم و تاخیر آیات مدنی کی پورے حوالوں کے ساتھ بیان کرتا چلا آیا ہوں - اب میں بیانگ دال تم پر بید واضع کرنا چاہتا ہوں کہ شیعہ موجودہ قرآن کو منزل من اللہ غیر محرف مانتے ہیں جو محف قرآن میں کی زیادتی کا ہونا ہاری طرف نسبت کرتا ہوہ وہ کاذب اور مفتری ہے تمام اصولی شیعوں کا بی اعتقاد ہے میں اسپنے اس اعتقاد کے ثبوت میں تجے اسلام اور اکابر محتدین عظام کی تقدیقین پیش کرتا ہوں - غور سے ساعت فرمائیں اور وہی شیوں کا قیامت تک نا قابل محتدین عظام کی تقدیقین پیش کرتا ہوں - غور سے ساعت فرمائیں اور وہی شیوں کا قیامت تک نا قابل تغیر صحح عقیدہ اور عمل ہے۔

تغیر سمح عقیدہ اور عمل ہے۔

تغیر سمح عقیدہ اور عمل ہے۔

اعتقادات میجه مشهور بین) مطبوعه ایران ص ۲۸ سطر۳ مین شیعون کا عقیده قرآن مجید کے متعلق یون مرقوم ہے۔

اعتقاد ناان القران الذى انزله الله تعالى على نبيه محمد صلى الله عليه و آله وسلم هو مابين الدفتين وهو مافى ايدى الناس ليس باكثر من ذلك ومبلغ سوره عندالناس مائة واربع عشره سورة وعندنا ان اولضحى والم نشرح سورة واحدة ولا يلاف والم تركيف سورة واحدة ومن نسب الينا انانقول انه اكثر من ذلك فهو كاذب انتهى بلفظ

لینی ہم شیعوں کا اعتقادیہ ہے کہ قرآن جس کو خدانے اپنے پینیبر محمہ سی بی برنازل کیا ہے جواس وقت دو دف جلد کے اندر اور لوگوں کے ہاتھوں میں موجود ہے۔ یہ اس سے زیادہ نہیں تھا۔ اور اس کے سورے لوگوں کے نزدیک سورہ المنی اور سورہ الم نشرح سورے لوگوں کے نزدیک سورہ المنی اور سورہ الم نشرح ایک سورۃ ہے اور سورہ لایلاف اور سورۃ الم ترکیف ایک سورت ہے۔ اور جو مخص کہ ہم شعبوں کی طرف یہ نبیت وے کہ ہم شیعہ کہتے ہیں کہ قرآن موجودہ مقدار سے زیادہ تھا وہ مخص جھوٹا کذاب اور مفتری ہے۔

کوں جناب س لیا آپ نے یہ ہے شیعوں کا اعتقاد صحیح قرآن کے متعلق فرمائے اب تحریف قرآن کے قائل شیعہ ہوئے یا سن آخر بتائے قوسسی کیا شیعوں پر اس جھوٹ اور صریح افتراء کرنے سے تہماری مصنوعی خلافت ثابت ہوگئی یا کہ قرآن پر تہمارے ایمان ہونے کا ثبوت مل گیا۔ کیا تہمارا قرآن پر ایمان ہونے کا ثبوت مل گیا۔ کیا تہمارا قرآن پر ایمان ہونے کا ثبوت مل گیا۔ کیا تہمارا قرآن پر ایمان ہونے کا فاور تبدید آیت قرآن لعنة الله وا علی الحدید آیت جھوٹے پر دعوے تو کرنا قرآن پر ایمان رکھنے کا اور تبدید آیت قرآن لعنة الله علی الکاذبین کی پرواہ تک نہ کرنا انصاف سے کموکیا ایمان ای رویہ کا نام ہے اور سینوں کا اسلام انہیں قابل نفرت اخلاق فاسدہ کی ان کو تعلیم دیتا ہے۔ ھیھات ھیھات قد ضلت العقول و کلت ارباب الفحول

تمبر (٢) تغير مجمع البيان مطبوع ايران جلد اول ص ٥٥ سطر ١٢ يل علامه طبرى لكهة بين اماالزيادة فيه فجمع على بطلانه واما النقصان فيه فقد روى جماعة من اصحابناو قوم من حشوية لعامة ان في القرآن ان تغيير اونقصانا والصحيح من مذهب اصحابنا خلافه وهو الذي نصره المرتضى قدس الله روحه

محقد المنا (سطرام بين) لكهاكه-

وذكر ايضاً ان القران كان على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم مجموعا مؤلفا على ماعليه الان و استل على ذلك بان القران كان يدرس ويحفظ جميعه فى ذلك الزمان حتى عين على جماعة من الصحابة فى حفظهم له وانه كان يعرض على النبى ويتلى اعليه وان جماعة من الصحابة مثل عبدالله بن مسعود و ابى بن كعب وغيره هما ختموا لقران على النبى صلى الله عليه وسلم ختمات ابى بن كعب وغيره هما ختموا لقران على النبى صلى الله عليه وسلم ختمات وكل ذلك يدل بادنى تامل على انه كان مجموعامرتبا غير مبتور ولا مثبوت وذكر ان من خالف فى ذلك من الامام والحشوية لا يعتد بخلافهم فان الخلاف فى ذلك الى قوم من اصحاب الحديث نقلوا اخبار ضعيفة ظنوا صحتها لا يرجع بمثلها عن المعلوم المقطوع على صحته .

اس عبارت کا خلاصہ مطلب ہے ہے۔ کہ قرآن میں زیادتی کا واقع ہونا تو بالاجماع باطل اور غلط ہے لیے لئین کی واقع ہونے میں صرف چند شیعہ اور فرقہ حشوبہ نے روایت کیا ہے کہ قرآن میں تغیراور نقصان واقع ہوا ہے۔ لیکن ہمارے ندہب (شیعوں) کا صحیح عقیدہ اس کے خلاف ہے لین کی بھی قرآن میں واقع نہیں ہوئی۔ علم المدے سید مرتفے علیہ الرحمتہ نے بھی اس عقیدہ کی تائید کی ہے۔ اور فرایا ہے کہ رسول اللہ ملٹی ہے کہ دول اللہ ملٹی ہی قرآن جمع کر لیا گیا تھا۔ اس موجودہ صورت میں جیسا کہ وہ اب ہے۔ اور اس لا لئم ملٹی ہی تعاور سارا قرآن اس پر دلیل ہے ہے کہ پنجبر ضدا کے زمانہ میں قرآن کا باقاعدہ ورس ہوتا تھا اور پڑھایا جاتا تھا اور سارا قرآن حفظ کیا جاتا تھا اور سارا قرآن میں جو تھے کا میں ہوتا تھا اور چھی اور یہ کاروائی اس پر دلیل ہے ہے کہ پنجبر ضدا کو تمان حفظ کرانے کے کام پر متعین کی گئی تھی اور یہ کاروائی کی جاتا تھا اور وہ حفاظ پر ابر پنجبر ضدا کو قرآن ساتے رہے۔ عبداللہ بن مسعود اور ابی بن کیب وغیرہ صحابی تو گئی مرتب ہوتا کی مرتب ہوتا کہ کہ سرت ہوتا کہ سب باتیں دلالت کرتی ہیں کہ یہ قرآن ای زمانہ پنجبر میں مرتب اور جمع کر لیا گیا تھا۔ جس محمد میں مرتب اور جمع کر لیا گیا تھا۔ جس محمد میں مرتب اور جمع کر لیا گیا تھا۔ جس معمد اور ضعیف حدیثوں کی بنیاد پر کس صحیح اور بھی حقیقت بات یہ ہے کہ جو لوگ بھی تحریف کے قائل ہوئے ہیں۔ وہ اصحاب حدیث اخباری غدہب ہیں۔ اور ضعیف حدیثوں کی بنیاد پر کس صحیح اور بھیتی اور ضعیف حدیثوں کی بنیاد پر کس صحیح اور بھیتی اور ضعیف حدیثوں کی بنیاد پر کس صحیح اور بھیتی الوت امر کو یدلا نہیں جاساتا۔

(٣) قوانين الاصول مطبوعه ايران جلد اول باب ٢ بحث كتاب ص ١٥٥ سطر اعلامه مرزا ابو القاسم عليه الرحمة للصح بين-

اختلفوا في وقوع التحريف والنقصان في القرآن وعدمه فعن اكثر الاخباريين انه



وفح فيه التحريف والزياده والنقصان وهوالظاهر من الكليني وشيخه على بن ابرهيم القمى والشيخ احمد بن ابي طالب الطبرسي صاحب الاحتجاج وعن السيد الصدوق و المحقق الطبرسي وجمهور المجتهدين عدمه انتهى بلفظه

یعنی ای میں اختلاف ہے کہ قرآن مجید میں تحریف اور نقصان ہوا ہے۔ یا نمیں اکثر اخباریوں المجدیث غیر مقلدین) کے نزدیک تحریف زیادتی اور کمی قرآن میں واقع ہوئی ہے اور میں علامہ کلینی اور المجدیث غیر مقلدین) کے نزدیک تحریف زیادتی اور کمی قرآن میں واقع ہوئی ہے اور میں علامہ کلینی اور عاصاب احتجاج آلائمہ شیخ احمد بن ابی طالب طبری سے بھی ظاہر ہوا ہے لیکن علامہ صدوق محمد بن بابویہ محقق طبری بن الفضل اور تمام جمہور بن شیعہ عدم علم المدے سید مرتنی علامہ صدوق محمد بن بابویہ محقق طبری بن الفضل اور تمام جمہور بن شیعہ عدم تحریف قرآن کے قائل ہیں۔

(۳) تفسیر منهج الصاو قبین مطبوعه ایران جلد اول مقدمه کتاب ص ۵ سطر ۱۵ مین علامه فتح الله کاشانی خطاب شراه للصح بین - قرآن مصنون است و محفوظ از زیادت و نقصان امام عدم زیارت مجمع علیه علائے امت است و اماعدم نقصان بیست و سمج از اصحاب ما وحثوبیه عامه برآن ند که در قرآن تغیر باو نقصان بیست و سمج در ذرج ب ما خلاف این است و علم علم الحدی در مسائل طراب لسیات استیفائ این مبحت کرده و تشقی آن نمود و از آن جمله آورده معجت نقل قرآن بیچو طلمست بلدان و حوادث کبار دو قائع عظام و کتب مشهوره و اشعار مسطوره لیخی به پانکه شبه نیست در وجود جلدان و حوادت و قائع عظیمه و کتب اشعار مشهوره معروفه اشعار مسطوره لیخی به پانکه شبه نیست در وجود جلدان و حوادت و قائع عظیمه و کتب اشعار مشهوره معروفه اشعار مسطوره لیخی به پانکه شبه نیست در آن که قرآن بهمان طریقت که نزد خدا مسید انبیاء نازل گذشته بدون شوب زیارت و نقص عنایات و دوای متواتر است بر نقل و حراست آن چه قرآن میجزه نبوی است و ماخذ علوم شریعت و

احكام دينيه انتقى (۵) كما البيان علامه في الطائفه محد بن الحن طوى عليه الرحمة لكفة بين (۵) كما البيان علامه في زيادته و نقصانه فصما لا يليق به لان لزيادة فيه مجمع على بطلانه و

النقصان منه فالظاهر ايضامن مذهب المسلمين خلافه - انتهى بلفظه-

لینی قرآن کی زیادتی اور نقصان میں کلام کرنا مناسب ہی نہیں کیونکہ قرآن کی زیادتی کے بطلان پر تو اجماع قائم ہے۔ رہا کی کا واقع ہونا ہیں اس میں بھی ظاہر سے ہے کہ مسلمانوں (شیعوں) کا زہب قلط اس کے خلاف ہے۔

(۲) تفیر لوامع التریل مطبوعه لابور جلد چهار وجم ص ۲۳ سطر ۲ (مصنفه خاکسار مقرر) ۱۲۳اه میں طبع بوئی ہے جب ذیل الفاظ میں میں نے قرآن کے متعلق اپنا اعتقاد ظاہر کیا ہے۔ و اعتقاد آل است کہ قرآن و عزت بعد از رسول بجائے رسول ہادی و رہبر برائے امت آنجناب رسالت است کہ قرآن و عزت بعد از رسول بجائے رسول ہادی و رہبر برائے امت آنجناب رسالت

است چه بالصرورت واضع است كه جرگاه قرآن محرف و متغیرالمعانی متبدل الالفاظ بانند مداردین و اسلام برآل كردن چگونه صحح تواند شد و بركتاب كه سورد آیات آنرا اغیار تحریف و تبدیل و احكام واو امرآنرا نعوذ بالله تزئيد و تتفیض نموده باشد چه اعتبار تو اندبود"

صاحبان یہ چند معزز حوالے اکابر محج سلام کے کافی سے زیادہ ہیں ان سے شیعوں کا اعتقاد و مسئلہ تحریف قرآن کے متعلق بالکل صاف اور عیان ہے اور مزید بیان کا اب محتاج نہیں رہا۔ خاکسار کا اعتقاد مجمی ای کے متعلق آج سے بندرہ سال بیشتر کا مطبوعہ آپ سن چکے کہ تمام مجتمدین شیعہ اس موجودہ قرآن مجید کو جو اس وقت ہم سب کے ہاتھول میں بین الدقین موجود ہے۔ رسول اللہ پر منزل من اللہ ہر حیثیت ہے کامل و مکمل واجب النعظيم اور مفترض العل سجھتے ہیں۔ اور قوانین الاصول و مجمع البیان اور منہج وغیرہ ے آپ کو معلوم ہوچکا ہے کہ بعض اخباریوں نے روایات ضعیفہ کی بنا بر تحریف کا حمال کیا ہے۔ وہیں جس کی نسبت میہ بھی مرقوم ہے کہ ایسی ضعیف روائتیں اصولی شیعوں کے نزدیک قابل اعتاد نہیں سمجی سنس مرف دو تین اخباریوں (غیرمقلدین) کے مخصوص خیال اور ناقابل عمل ضعیف روایات سے آپ تمام طبقه مقلدین و جمهور مجتندین شیعه پر جست قائم نهیس کرسکتے۔ خاص کرایی حالت میں جب که سینکاروں برس سے شیعہ مجتمدین اپنی مصنفات میں عقیدہ تحریف کو باطل لکھتے چلے آرہے ہیں-ان کی نسبت تحریف کالزام دینااور پمفلٹ تمبر۵ کے ہیڈنگ میں جھوٹ اور خلاف واقعہ خارجی انجمن کا یہ لکھ ویٹا کہ کیا رانضيوں كا قرآن بر ايمان ہے يا ہو سكتا ہے بجائے خود خلاف ديانت بے ايماني اور ايك المحدان فعل ہے۔ مصحف فاطمه وعلى عليهما السلام صاحبان بعض نادان استنزاء كے طور شيعول بريه طعن بھي كيا كرتے ہیں۔ كه مصحف فاطمه مصحف على جعفر جامع اور جفر ابیض جیسے برائے نام كماييں بھى شعبول میں ہیں۔ اگر بہ سے ہے تو یہ کتابیں کیوں اس میں نہیں دکھائی جاتیں خاص کر قرآن علی جو اس قرآن سے کئی گونا ہے۔ سواس کاجواب صاف ہے کہ بیہ لوگ کتب مذکورہ کو برائے نام کتابوں کے لفظ ہے یاد کرتے ہیں كيون- اس ليے كہ آج آپ كے باتھوں ميں ان كا وجود شيں ہے- اور ايني آئكھوں سے ان كا معائد و مطالعہ نہیں کرسکتے ۔ (بہت خوب) اگر ایسا ہی ہے تو آپ کو مصحف آدم و ابراہیم و موی علیهم السلام و دیگر انبیاء عظام کو بھی اس طرح برائے نام کنے کا مطلب بیہ ہے کہ فی الواقع کتب ندکورہ کاوجود نہ تھا۔ محض فرضی نام ہیں جو آئمہ شیعہ اوران کے رواۃ کے تراثے ہوئے ہیں تو آپ کو پہلے اپنے ہاں اہل سنت کے ان تمام کبار علماء کی تکذیب کرنی چاہیے ۔ جنہوں نے اپنی کتابوں میں مصحف ذکورہ کا ذکر کمال وثوق کے ماتھ کیا ہے۔ اور اصول و قوائد ہر وہ کہایں ان کے خیال میں منی تھیں۔ ضیق وقت کا خیال مانع ہے۔ ورن میں ان کے اصل عبار تیں بھی آپ کو سنا دیتا۔ بنائیج المودة میں شیخ سلیمان حنفی نے ان کی عبارتوں کو لقل کیا ہے۔ در ق المعارف مصنفہ شیخ عبد الرحمان بن محمر علی بن احمد البسطائ کتاب الحدر المنعم معنفہ الم محمل کیا ہے۔ در ق المعیفات الجفریہ یا لقواعد کمال الدین محمد بن طلحہ شافعی۔ (۳) کتاب الدرا المکنون و الجواجر المصوء نحل المعیفات الجفریہ یا لقواعد الجعفریہ شیخ کی الدین العربی وغیرہ ملاحظہ فرما کیں۔ افسوس تم کو اپنی فمجی الی مشہور کتابوں پر مجمی عبور حاصل نہیں ہے۔ اس جمالت اور کم مائکی پر شیعوں کو طعن کرکے تم شیعوں کا کچھ نہیں بھا اُت گرتممارے طعن کے جواب میں تمہاری فدہ بہتی ہستی منتی چلی جارہی ہے۔ اب عنقریب آب و کچھ لیس کے کہ سارا زمانہ طعن کے جواب میں تمہاری فدہ اور عشرت رسول مصطفے (قرآن ناطق) پر جمع ہو جائے گا۔ اور مشماس کی چائ پر جمیس ہوئی کھیاں اب علمی بادلوں کی تیز اور تند ہوا سے سب اڑ جائیں گی انشاء اللہ تعالی۔

بیں ہوئی تھیاں اب سی باد توں کی یر اور عد برا سے اللہ اللہ اللہ اللہ تعاد صحیح اس کے متعلق حسب ذیل قرآن علی علیہ السلام کے متعلق بھی من لیس کہ شیعوں کا عقاد صحیح اس کے متعلق حسب ذیل ہے قوانین الاصول مطبوعہ ایران جلد اول ص ۱۳۵ سطر ۱۳ میں لکھا ہے۔

وكلام الصدوق في اعتقاداته ان المراد بماور دفي الا خبارالد الة على ان في القرآن الذي جمعه اميرالمومنين عليه الصلوة والسلام مكان زيادة لم تكن في غيره انهاكانت من احاديث القدسية لا القران انتهى بلفظه-

لینی حضرت علامہ صدوق علیہ الرحمۃ کا کلام قرآن علی کے متعلق یہ ہے کہ حدیثوں سے ثابت ہوتا ہے کہ علی علیہ السلام نے جو قرآن جمع کیاتھا اس میں جو زیادتی ہے وہ اس کے سواکسی اور قرآن میں نہیں ہے وہ زیادتی نفس قرآن میں نہیں تھی بلکہ اس میں احادیث قدسیہ بھی جمع کی گئی تھیں۔

تواب اس سے صاف ثابت ہوا کہ صحیفہ علی میں بھی نفس قرآن اسی قدر تھاجو اس وقت موجود ہے زیادتی احادیث قدسیہ کی تھی۔ مگر ان نادانوں نے خواہ مخواہ کخواہ کچھ مشہور کردیا تھا۔ فافھم قلا ضلوا واصلوا اور ان کی مگراہی کاسب سے کہ قرآن ناطق (عترت رسول) کی پیروی اور قرآن صامت ضلوا واصلوا اور ان کی مگراہی کاسب سے کہ قرآن ناطق (عترت رسول) کی پیروی اور قرآن صامت (کتاب اللہ) پر عمل کرنا انہوں نے مطلق چھوڑا اور صراط متنقیم سے منہ موڑا موعد تحریف قرآن ص ٥٦)

أقول

اس وقت مجتمد لاہوری نے البسنت پر عقیدہ تحریف قرآن کا الزام ثابت کرنے کے لیے بوجوہ ذیل اپنی نادانی کا ثبوت ویا ہے-

(۱) قراآت متواترہ کو چیش کیا ہے۔ مگریہ اس کی ناوانی ہے کیونکہ اہل سنت کے نزدیک قراآت سبعہ سب قرآن متواترہ ومنزل من اللہ جیں ان میں سے ایک کو چیش کر کے دو سری کو تحریف قرار

نہیں دے سکتے

- (۲) قراآت شاذہ کو پیش کیا ہے گریہ بھی اس کی نادانی ہے کیونکہ قرآات شاذہ کی قرآنیت ہمارے نزدیک ثابت نہیں اس لیے کہ بین الدفتین ہونے کے لیے شرط ہے۔ پس کسی قرآء ت شاذہ کو پیش کرکے یہ کمنا کہ یہ تو قرآن کی اصلی آیت ہے اور قرات متواترہ تحریف ہے مرامر غلط ہے کوئی راوی جو کسی قرات شاذہ کو آنخضرت صلی اللہ سے شنے کادعوے کرتا ہے وہ بھی برتقد میں صحت روایت یہ نہیں کہتا کہ قرات متواترہ تحریف ہے۔
- (۳) منسوخ الثلاوة آیات کو پیش کیا ہے اور جابجا کہا ہے کہ چوں فلاں سورت میں کوئی ناتخ یا منسوخ نہیں یا اگر ہے تو آیت زیر بحث اس میں شامل نہیں لہذا لا محالہ قرآن میں تحریف ثابت ہوگئ گریہ بھی اس کی ناداتی ہے کیونکہ ایسی آیات بیشک آنخضرت مان پیلم پر نازل ہو ہیں۔ گر آپ کی حیات شریف ہی بان کی ناداتی ہے کیونکہ ایسی آیات بیشک آنخضرت مان پیلم بر نازل ہو تیں۔ گر آپ کی حیات شریف ہی میں بھکم النی ان کی تلاوت منسوخ ہرگئی تھی۔ اور وہ قرآن متلویس نہ رہی تعمیں۔ پس ایسی آیات کو قرآن موجودہ میں تلاش کرنا جمالت کی علامت ہے اور یہ سجھنا کہ صحابہ کرام نے باوجود کیے ان کی تعداد حد تواتر کو بینی ہوئی تھی ان آیات کو حضور اقدس مان کیا ہے وصال شریف کے بعد انقال کر کے قرآن سے نکال دیا جمل مرکب ہے۔
- (۴) تغییر در متثور ہے بعض ضعیف و موضوع روایتی چین کی ہیں۔ بدیں خیال کہ جو پچھ اس تغییر میں ہیں ہوں کہ اس تغییر میں ہے وہ سب صحیح ہے گریہ بھی اس کی نادانی ہے۔ کیونکہ علامہ سیوطی نے اس تغییر میں یہ الزام نہیں کیا کہ فقط صحیح روایات کو لائے ای واسطے آیت تبلیغ میں ابن مردویہ کی روایت اور روایات حضرت عثمان و عائشہ جو ضعیف و ساقط عن الاعتبار ہیں اس تغییر میں لائی گئی ہیں۔
- (۵) شیعہ کے اقوال کو اہل سنت کی طرف منسوب کیا ہے چنانچہ سورہ نورین کی نسبت ظاہر کیا ہے کہ اہل سنت کی روایات ہے اس کا قرآن سے نکالا جانا ثابت ہے۔ یہ نادانی سے بھی پچھ بردھ کر
- (۱) بعض مدنی سورتوں میں بھی کی آیات اور کی سورتوں میں مدنی آیات کے وجود سے اس امریر استدلال کیا ہے کہ حضرت عثان رضی اللہ تعالی عنہ نے آیات قرآن کی ترتیب بدل دی مگریہ بھی اس کی نادانی ہے۔ کیونکہ ترتیب آیات تو قیفی ہے۔

مولوی حائری صاحب کی تمام خامہ فرسائی کا دو حرفی جواب ہمارے پاس موجود ہے اور وہ سے کہ قرآن خدا کا کلام ہے۔ اور وہی اس کا تکہبان ہے۔ پھر کسی بشرکی کیا مجال ہے کہ اس میں تحریف کردے اللہ تعالی بیشت میں مراتب عالیہ عطا فرمائے حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی

عنہ کو جنہوں نے قرآن کو یک جاجم کردیا۔ اس وقت بین الدقین وہی رہا جس کے متواتر ہولے پر صحابہ کرام کا اجماع ہوگیا۔ قرآت شادہ اور منہوخ الثلاق آیات بالاتفاق اس بیں نہ کی گئی۔ اور تر تیب سور و آیات وہی رکھی گئی۔ جو عرصہ اخیرہ بیں تھی۔ اور رسم الخط بھی وہی قرار رکھا گیا تھا۔ اسی طرح اللہ تعالیٰ بہشت بیں مراتب عالیہ عطا فرمائے سید نا عثمان غنی کو جنہوں نے است محمد سے علی صاببہاالعلوة والسلام کو اختلاف عظیم سے بچلیا۔ اور عشورہ صحابہ کرام اسی قرآن جمع کردہ صدیق آکبر کو وہی نظم و رسم بر قرار رکھ کر فقط لفت قراش بیں جبوا دیں۔ للذا ہم المستت اعتقاد مواقعا۔ لکھوا دیا۔ اور اس کی چند نقلیس کروا کر آفاق عالم بیں بجوا دیں۔ للذا ہم المستت اعتقاد رکھتے ہیں کہ یہ قرآن جو اس وقت ہمارے ہاتھوں بیں موجود ہے۔ بلحاظ نظم و رسم و تر تیب وہی قرآن کائل ہے۔ جو حضور اقدس سائی ایم مارے واسطے چھوڑ گئے تھے۔ ہمارے ہاں کے علاء و قرآن کائل ہے۔ جو حضور اقدس سائی ایم مارے واسطے چھوڑ گئے تھے۔ ہمارے ہاں کے علاء و قدماء جہتدین و مقسرین و صوئیہ کرام کا بھی منققہ عقیدہ ہے۔

جہند لاہوری کو اپنے گھر کا حال تو معلوم ہے۔ اور یہ بھی معلوم ہے کہ عقیدہ تحریف قرآن کے سبب شیعہ ہر جگہ مناظرات میں سینوں کے آگے مغلوب و ذلیل ہورہے ہیں۔ اور ان کا تو تعلیم یافتہ طبقہ خصوصیت ہے اس ذلت کو محلوس کر رہا ہے اس لیے بار ذلت کو ہلکا کرنے کے لیے اس نے یہ کوشش کی ہے کہ کسی طرح کھے کھیا کر اہلتت کو الزام تحریف سے مطعون کرے گر اس نے یہ کوشش کی ہے کہ کسی طرح کھے کھیا کر اہلتت کو الزام تحریف سے مطعون کرے گر اس سعی بے سود سے مجتد صاحب کے ناوانی کے سوا اور پچھ ثابت نہیں ہوتا اگر مولوی حائری اس الزام کو اہل سنت ہی کی معتبر کیابوں سے امور ذیل ثابت کرنا چاہتا ہے۔ تو اسے چاہیے کہ اہل سنت ہی کی معتبر کیابوں سے امور ذیل ثابت کر۔

اول میہ کہ اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ محابہ نے آنخضرت ملی کیا کے وصال شریف کے بعد قرآن کریم میں جیسا کہ وہ عرصہ اخیرہ میں تھا اپ اغراض فاسدہ کے لیے کمی بیشی کردی اور باوجود یکہ ان کی تعداد حد تواتر کو پہنچی ہوئی تھی۔ وہ اس کذب پر متفق ہوگئے۔

دوم بیا کہ وہ روایات نقصان و زیادت جن پر اس عقیدے کا مدار ہے ہمارے علاء کے نزدیک متواتر ہیں-

یں۔ موم بیر کہ دہ روایات ہمارے علماء کے نزدیک صراحتہ تحریف قرآن پر دلالت کرتی ہیں۔ ہم نقارہ کی چوٹ پر کہتے ہیں کہ دنیا میں کوئی شیعی ان امور ثلاثہ کو ہماری کمابوں سے ثابت نمیں کر سکنا گراوراق سابقہ میں ہم نے شیعہ کے عقیدہ تحریف قرآن کو ان بی کی معتر کمابوں سے بشرائط ذکورہ بالا ثابت کر دکھایا ہے اور یمال بھی مجتمد لاہوری کی ضیافت طبع کے لیے

ماسبق كا خلاصه مع روامات پیش كرتے ہں۔

دوراول میلی تین صدیوں میں تمام شیعہ کا میں عقیدہ تھا کہ قرآن محرف ہے آخضرت صلی اللہ علیہ واللہ وسلم کے وصال شریف کے بعد صحابہ کرام نے اس میں کمیں زیادتی کردی ہے۔ کمیں کی کمیں الفاظ بدل دیے ہیں۔ کمیں حروف اور ترتیب مجھی وہ رکھی ہے۔ جو پندیدہ خدا اور رسول نہیں دیکھو احادیث و اقوال ذیل۔

(۱) شیعہ کے ثقہ جلیل محدث نبیل شیخ القمیہ سند المحدثین ابو جعفر محمد بن حسن بن فروخ صفار ، متوفی ۱۹۰ ه جنهوں نے امام ابو محمد حسن عسکری کا زمانہ پایا ہے۔ اپنی کتاب بسائر الدر جات (مطبوعہ ابران جز قامن باب سابع عشر) میں باسار متصل نقل کرتے ہیں کہ امام محمیا قرنے فرمایا احماکت اب الله فحر فوا واحا اللعبة فهدمواواحا اللعترة فقتلوا کتاب خداکو تو انہوں نے تحریف کردیا اور کعبہ کوگرا دیا اور عترت کوقتل کر ڈالا۔ (تخد شید م ۱۲)

غور سیجیے کہ شیعہ کے امام معصوم محمد باقر بھراحت تمام فرما رہے ہیں۔ کہ محابہ کرام نے آخضرت صلی اللہ علیہ والہ وسلم کے وصال شریف کے بعد کتاب خدا کو تحریف کردیا۔

(۲) شیخ علی بن ابراہیم لمتی جو امام حسن عسکری کے شاگر دجیں اپنی تقییر میں لکھتے ہیں کہ قرآن میں جو آئتیں خلاف ماانزل اللہ جیں ان میں سے ایک بد آیت ہے کنتم خیرامة خواجت للناس (آل عموان ع ۱۱)

تم ان امتول میں سے سب سے اچھی امت ہو جو لوگوں میں پیدائی گئی ہیں۔ یہ آبت امام جعفر صادق کے سامنے پڑھی گئی۔ امام نے سن کر فرمایا کیا یہ امت سب امتوں سے اچھی ہے جس نے حضرت امیر المومنین اور حسین بن علی کو قتل کردیا پھرامام سے دریافت کیا کہ اے فرز ند رسول یہ آبت کس طرح نازل ہوئی تھی۔ امام نے فرمایا یوں نازل ہوئی تھی۔ انتم خیر آئمة اخورجت للناس تم ان اماموں میں سب سے اجھے ہو جو لوگوں کے لیے پیدا کیے گئے کیا تو منیں دیکھا کہ اللہ تعالی نے اس آبت کے آخر میں ان کی یوں مدل کی ہے تاموون باللہ تم نیکی کرنے کا تھم دیے ہو اور بدی سے بالمعروف و تنہون عن المنکرو تو منون باللہ تم نیکی کرنے کا تھم دیے ہو اور بدی سے منع کرتے ہو اور اللہ پر ایمان لاتے ہو اور بدی سے منع کرتے ہو اور اللہ پر ایمان لاتے ہو اور بیہ اماموں کے اوصاف ہیں) ای طرح امام جعفر صادق منع کرتے ہو اور اللہ پر ایمان لاتے ہو اور بیہ اماموں کے اوصاف ہیں) ای طرح امام جعفر صادق کے سامنے یہ آبیت بڑھی گئی۔

والذين يقولون ربناهب لنامن ازواجنا وذريتنا قرة اعين واجعلنا للمتقين اماما. (قرقان ١٤)

اور وہ یہ عرض کرتے ہیں۔ اے ہمارے پروروگار ہم کو ہماری اذواج کی طرف ہے اور ہماری ادواج کی طرف ہے اور ہماری اولاد کی طرف ہے آنکھوں کی فعنڈک عنایت کر اور ہم کو پر ہیز گاروں کا پیشوا بنا دے۔ (ترجمہ شیعہ) الم لے یہ من کر فرمایا کہ بیٹک انہوں نے اللہ تعالی ہے بڑی چز کا سوال کیا ہے کہ ان کو پر ہیز گاروں کا الم بنا دے دے پس آپ ہے دریافت کیا گیا کہ اے فرزند رسول یہ آیت کس طرح نازل ہوئی تھی۔ الم نے فرلیا یوں نازل ہوئی تھی۔ واجعل لناهن المعتقین اهاها اور ہمارے واسطے پر ہیز گاروں شی سے الم بنا دے۔ اس طرح الم مجتفر صادق کے سامنے یہ آیت پڑھی گئی لکہ مُعَقِبّات مِنْ بَیْنِ یدیه و من خلفه یحفظونه هن امو الله (رید ۲ م) ان میں ہے ہرایک کے لیے پر یوالے (مقرر) ہیں جو فدا کے تھم ہے یحفظونه هن امو الله (رید ۲ م) ان میں ہے ہرایک کے لیے پر یوالے (مقرر) ہیں جو فدا کے تھم ہو قضا ہے کی طرف سے اور چیچے کی طرف ہے دفاقت کرتے ہیں۔ (ترجمہ شیعہ) الم نے فرمایا کہ فدا کے امرو قضا ہے کوئی چز کیو تکر بچائی جا سمتی ہے۔ اور معقبات (چیچے کی طرف ہے آئے والے) کیو تکر هن بین یدیه (اس کے آگے کی طرف ہے ہوگئے پس الم ہے دریافت کیا گیا کہ اے فرزند رسول یہ آیت کی طرح ہے الم نے فرمایا کہ یوں نازل ہوئی تھی۔

له معقبات من خلفه و رقيب من بين يديه يحفظونه بامر الله

اس کے لیے پریدار پیچے کی طرف سے مقرر ہیں اور نگہبان آگے کی طرف سے جو تھم خدا کے بوجب حفاظت کرتے رہتے ہیں۔ اس طرح کی اور مثالیں بہت ہیں۔ (ویکھو تغییر صافی ۱۳ تخد شید) مجتدین لاہوری کی غلط بیانی کے سبب بیچارے ناواقف سامعین اٹنا بھی نہ سمجھے ہوں گے۔ کہ تحریف قرآن سے کیا مطلب ہے شیعہ کے امام معصوم جعفرصادت کی زبانی اس کی توضیح من لیجے تین آبیتی جو اس دقت قرآن میں موجود ہیں۔ ان کی نسبت امام موصوف کھلے الفاظ فرما رہے ہیں۔ کہ یہ آبیت ورست نہیں یہ آئیتیں یوں نازل ہوئی تھی۔ گرآخضرت کی وفات شریف کے بعد وشمنان اہل بیت نے ان کو تبدیل آئیس یوں نازل ہوئی تھی۔ گرآ تخضرت کی وفات شریف کے بعد وشمنان اہل بیت نے ان کو تبدیل کریا۔ ان تین مثالوں کو نقل کر کے مقسر لتی فرما رہے ہیں۔ و مثله کشیر لیجن اس طرح کی تحریف کی مشالیں بہت ہیں۔

شیعہ کے رکیس المحدثین ابو جعفر محدین یعقوب کلینی (منوفی ۲۲۹ھ) اپنی کتاب اصول کافی المحدثین ابو جعفر محدین یعقوب کلینی (منوفی ۲۲۹ھ) اپنی کتاب اصول کافی ص ۱۹۹۱) (مطبوعہ لو کشور ص ۱۹۷) میں جے امام غائب علیہ السلام نے بنظر استحسان دیکھا ہے (اصول کافی ص ۱۹۹۱) امام جعفر صادق کا قول بالا سناد نقل فرا رہے ہیں۔

ان القران الذي جاء به جبريل عليه السلام الى محمد صلى الله عليه وسلم سبعة عشر الف (الايته)

قرآن جو جريل عليه السلام حضرت محد النظام كي ياس لائد وه ستر بزار آيتي تنيس- الخفه شيعه)

شیعہ کے اہام معصوم جعفر صادق کے اس قول سے پایا جاتا ہے کہ قرآن علی میں جو بقول شیعہ آئمہ معصومین میں سے ہرائیک کے پاس موجود رہا ہے۔ ستر ہزار آیتیں تھیں۔ شیعوں کی معتبر تغییر مجمع البیان میں سورہ وہرکی تغییر میں قرآن موجود کی کل آیوں کے تعداد چھ ہزار دو سو چھتیں دی ہوئی ہیں۔ اس داب سے بقول اہام معصوما قریبا دو تمائی قرآن صحابہ کرام نے آخضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے دصائل شریف کے بعد ساقط کردیا۔

(۳) احمد بن محمد بن ابی نفر کا بیان ہے کہ امام رضاعلیہ السلام نے جھے ایک قرآن دیا اور قرابا کہ اس میں ہے نقل کرنا ہیں نے جو اسے کھولا اور سورہ لم یکن اللہ ین کفروا پڑھی تو اس میں قریش کے ستر آدمیوں کے نام بقید ولدیت پائے (اصول کافی ص ۱۷۰) صافی شرح کافی میں ہے کہ اس سے مراد وہ لوگ جیں جنوں نے حق امامت کو غصب کرنے کی کوشش کی - (تخفہ شیعہ میں کا) یمان یہ سوال پیدا ہوتا ہے۔ کہ امام رضاعلیہ السلام کے پاس وہ کون سا قرآن تھا جس میں سورہ بینہ میں قرایش کے ستر آدمیوں کے نام معہ ولدیت قدکور تھے۔ اس کا جواب اور کیا ہوگا ۔

میں سورہ بینہ میں قرائن لیمی قرآن علی تھا۔

کہ وہ اصلی قرآن لیمی قرآن علی تھا۔

(۵) شیعہ کے امام معصوم محمر با قرعلیہ السلام فرماتے ہیں کہ آیت یوں نازل ہوئی تھی۔
واذ اخذریک من بنی ادم من ظهور هم ذریتهم هم واشهدهم علی انفسهم الست
بریکم وان محمد ارسولی وان علیا امیر المومنین علیه السلام اصول کافی ص
ا۲۲) اب قرآن موجود (اعراف ع ۲۲) میں ان محمد ارسولی وان علیا امیر المومنین
علیه السلام شیں ہے۔ (تخذ شیعہ س ۱۱)

(۲) شیعه کے امام معصوم جعفر صادق علیه السلام فرمات ہیں۔ که آیت یون نازل ہوئی تھی۔ و من یطع الله و رسول فی و لایة علی و الائمة من بعده فقد فاز فوزا عظیماً مراب قرآن موجود میں فی و لایة علی و الائمة من بعده نہیں ہے۔ (تخفہ شیعہ)

(2) شیعہ کے امام معصوم جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں کہ اللہ کی شم جھزت محمد سائی ایم آیت یوں نازل ہوئی تھی-

ولقد عهدنا الى ادم من قبل كلمات فى محمد وعلى و فاطمة والحسن والحسن والائمة من ذريتهم فنسى (اصول كافى ص ٢٦٣) اب قرآن موجود بس كلمات فى محمد وعلى و فاطمة والحسن و الحسين والائمة من ذريتهم نمي ، (تخف شيعه ص ١٩) محمد وعلى و فاطمة والحسن و الحسين والائمة من ذريتهم نمي ، (تخف شيعه ص ١٩) شيعه ك امام معموم محم باقر فرماتے بين - كه حضرت جرئيل عليه السلام يه آيت لے كر حضرت (٨)

محد الله المائية

بِنْسَ مااشتر وابه انفسهم ان يكفرو بماانزل الله في على بغيا (اصول كافي م ١٣٠) اب قرآن موجوده (بقره ع) من في على نهي ب- (تخف شيعه ٢٩)

(۹) شعبہ کے اہام محصوم محمد باقر علیہ السلام فرائے ہیں کہ حضرت جرکیل علیہ السلام یہ آیت کر حضرت محمد طرف کی بازل ہوئے تھے۔ وان کنتم فی ریب ممانزلنا علی عبدنا فی علی فاتو ابسورة من مثله (اصول کافی ص ۲۲۳)

اب قرآن موجود مين في على نهين (تخفه شيعه ص ١٩)

(۱۰) شیعه کے امام معصوم جعفر صادق علیه السلام فرماتے ہیں که حضرت جر کیل السلام یہ آیت لے کر حضرت محمد مالی کیا ہوئے کے اللہ ہوئے کا دور میں اللہ کیا ہوئے کا دور کے میں کہ حضرت محمد مالی کیا ہوئے کا دور کے دور کا دور کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کیا ہوئے کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کیا ہوئے کیا ہوئے کیا ہوئے کیا ہوئے کا دور کیا ہوئے کی

یاایها الذین او تو الکتاب امنو ا بما نزلنا فی علی نور ا مبینا (اصول کائی ص ۲۲۳) اب قرآن موجوده می فی علی نور ا مبینا نمین ہے - (تخفہ شیعہ ص ۱۹)

(۱۱) شیعہ کے امام معصوم جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں کہ اللہ کی حضرت جرئیل علیہ السلام یہ آیت لے اس طرح لے کر جعفرت محمد سال ہوئے تھے۔ سال سابل بعداب واقع للکفرین بولا یته علی لیس له دافع (اسول کان ص ۱۲۲۱) اب قرآن موجود (معارج۔ شروع) پس لایته علی نہیں ہے (تخفہ شیعہ ۲۰)۔

(۱۲) شیعہ کے امام معصوم محد باقر علیہ السلام فرماتے ہیں کہ حضرت جرئیل علیہ السلام یہ آئتیں لے کر حضرت محد صلی اللہ بر نازل ہوئے تھے -

ان الذين كفروا و ظلموا ال محمد حقهم لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهد يهم طريقا ١٥ الا طريق جمنم خالدين فيها ابداوكان ذلك على الله يسيرا ٥ ياايها الناس قد جاء كم الرسول بالحق عن ربكم في ولاية على فامنوا خيرالكم فان تكفرو ابو لاية على فان للله مافي السموات والارض - (اصول كاني ٤٢٧)

اب قرآن موجود (ناءع ٢٣) من ان آيون من ال محمد حقهم في ولاية على بولاية على بولاية على من ال محمد حقهم في ولاية على بولاية على من الم

(۱۳) ایک مخص نے شیعہ کے امام معصوم جعفر صادق علیہ السلام کے سامنے یہ آیت پڑھی قل اعملو افسیری الله عملکم ورسوله والمومنون (توب ع ۱۳) امام نے فرمایا یوں نہیں بکہ اس طرح ہے والمعامونون اور مامونون ہم ہیں۔ (اصول کانی ۱۳۹۸) خذ شید ۲۱)

- (۱۲۳) مطے نے اس حدیث کو رفع کیا ہے (کس امام تک تبوسط راویاں) کہ آیت ہوں نازل ہوئی تھی۔ فبای الاء ریکما تکذبن ابالنبی ام بالوصی (اصول کافی ص ۱۳۲) اب قرآن موجود (سورہ رحمن) میں ابالنبی ام بالوصی نہیں ہے۔ اخذ شید ۲۲)
- (10) ایک روز شیعہ کے امام معقوم علی بن الحسین نے تھم بن عتیب سے پوچھا کہ کیا تہیں وہ آیت معلوم ہے جس کی رو سے حضرت علی بن ابی طالب اپ قاتل کو پچائے تھے۔ تھم نے عرض کی شیں۔ پھر تھم کے وریافت کرنے پر فرمایا کہ وہ آیت یہ ہے و ماار سلنا قبلک من رسول ولانہی ولامحدث

اور علی محدث شے (اصول کافی ص ۱۲۲) اب قرآن موجود (ج ع ۲۰) میں ولا محدث شیں

- (۱۲) شیعہ کے امام معصوم جعفر صادق علیہ السلام فراتے ہیں۔ لقد قال یوسف ایھا العیرانکم لسارقون اور شخقیق بوسف نے کما تھا۔ اے قائلہ والو تم بیٹک چور ہو(اصول کافی ص ۲۸۳) اب قرآن موجود من ایھا العیر انکم لسارقون کا قائل کس منادی کو بتایا گیا ہے۔ (خند شید ۲۳)
- (۱۵) ابو بصیرے روایت ہے کہ میں نے امام جعفر صادق سے کما کہ اللہ عزوجل کا یہ قول ہے ھذاکتا بنا ینطق علیکم بالحق یہ امارا نوشتہ تہمارے برظاف ٹھیک ٹھیک گوائی دیا ہے (جافیہ ع مر) امام نے فرمایا کہ نوشتہ تو بولائی نہیں اور نہ کبھی بونے گاہاں رسول اللہ ملٹی کیا توشتہ کے ماتھ گویا ہیں اللہ تعالی نے تو یوں فرمایا ہے ھلداکتنا بُنظئ عَلَیْکُم بِالْحَقِ اس امارے نوشتہ سے تہمارے برظاف ٹھیک ٹھیک کملوایا جائے گا۔

ابوبصیر کا بیان ہے کہ میں نے عرض کی میں آپ پر قربان جاؤں ہم تو اس آیت کو بوں نمیں پڑھتے۔
اس پر امام نے فرایا کہ اللہ کی فتم اس آیت کو حضرت جرئیل علیہ السلام اس طرح لے کر حضرت محمد ملٹی ہے۔
مٹٹی کے بازل ہوئے نتے محر یہ کتاب اللہ کے ان مقامات سے ہے جن میں تحریف کردی من ہے۔
(کتاب الرومت للکینی لیکن می 10 تھیک تخفہ شیعہ می ۲۲)

(۱۸) شید کے امام معصوم ابو الحن موی علیہ السلام قید کی حالت میں علی بن سوید کو هیوت کرتے ہوئے لکھتے ہیں و تدری ماخانوا امانتھم اثنمنو علی کتاب الله فحوفوه بولوه کاب الروضہ) می الا اور کیا تھے معلوم ہے کہ انہوں نے کس طرح امانتوں میں خیانت کی ہو وہ کتاب اللہ ہر امین بنائے محتے تھے۔ پس انہوں نے اس کو تخریف کردیا اور اسے بدل و الا- (تحند

شيعه ص ۲۴)

(۱۹) شیعہ کے بیخ صدوق ابن بابوریہ کئی کتاب الخصال (مطبوعہ امیران ۱۳۰۳ء ص ۸۳) میں یوں نقل فرماتے ہیں-

حدثنا محمد بن عمر الحافظ البغدادى المعروف بالجعالى قال حدثنا عبدالله بن بشر قال حدثنا الوبكرين عياش عن الا بشر قال حدثنا الوبكرين عياش عن الاجلح عن ابى الزبير عن جابر قال سمعت رسول الله يقول يجيى يوم القيامة ثلاثة يشكون المصحف والمسجد والعترة يقول المصحف يارب حرفونى ومرقونى الحديث.

ترجمہ: (محذف اساد) جابر کا بیان ہے کہ میں نے رسول اللہ طنی کے سنا کہ فرما رہے تھے قیامت کے دن تین لیعنی قرآن مسجد اور عترت شکایت کرتے ہوئے (بارگاہ اللی میں) آئیں گے۔ قرآن عرض کرے کا اے میرے پروردگار انہوں نے مجھے تحریف کردیا اور مجھے پھاڑ دیا۔ الحدیث)

کتاب الاحتجائ شیعہ کے ہاں بڑی کتاب ہے اس کے مصنف شیخ احمد بن ابی طالب طبری نے ویباچہ کتاب میں لکھا ہے کہ جو اخبار ہم نقل کریں گے۔ ان میں ہے اکثر کا اساد بیان نہ کریں گے۔ کیونکہ وہ اخبار ایسے ہویں کہ جن پر اجماع ہے یا موافق معقول ہیں یا موافق یا مخالف ک ورمیان سیرو کتب میں مشہور ہیں۔ اس کتاب میں ایک طویل روایت ص ۱۹ تا ۱۳۲ ہرین مضمون منقول ہے کہ ایک ذادیق حضرت امیر علیہ السلام کی خدمت آیا اس نے کئی اعتراض کیے اور آیات قرآنی سے استدلال کیا چنانچہ اس کا ایک یہ سوال تھا۔ کہ کیا وجہ ہے کہ اللہ تعالی نے قرآن مجید میں انجیائے کرام کے ہفوات کو تیمری نام ذکر کیا ہے اور گراہوں اور گراہ کندگان کے نام بطریق تو رہیہ و کنایہ بیان کیے ہیں۔ حضرت امیر علیہ السلام نے اس کا جو جواب دیا ہے نام بطریق تو رہیہ و کنایہ بیان کیے ہیں۔ حضرت امیر علیہ السلام نے اس کا جو جواب دیا ہے تقریر کے لیے نبیوں کے نام سے کنایہ نمیں کیا بلک اہل بصیرت کو یہ بتانے کے لیے کہ قرآن تعمیر کے لیے نبیوں کے نام سے کنایہ اللہ تصریح کی مقر دنیا کو لیا۔ اور اللہ تعالی نے کا فعل نمیں بلکہ تغیرو تبدل کرنے والوں کی طافت ای کا فعل نمیں بلکہ تغیرو تبدل کرنے والوں کی طافت این آغول میں بیان فرمائے ہیں۔

الذين يكتبون الكتاب بايدهم ثم يقولون هذامن عندالله ليشترو ابه ثمنا قليلا (بقره ع ٩) وان منهم لفريقا يلون السنتهم بالكتاب (ال عمران ع ٨) اذ يبتيون مالا

يرضى من القول - (ناءع ٨)

لعنی بعد وفات رسول الله ملی الله علی الله علی بات کا معورہ کریں کے جس سے وہ این باطل کی یجی کو قائم کریں کے جیسا کہ یمود و نصارے نے بعد دفات موی اور عینی کے تورات اور انجیل میں تغرات کے اور کلمات کو ان کی جگہ سے تحریف کرڈالا یویدون ان یطفنوا نور الله بافواههم ویابی الله الا أن يتم نوره (توب - ع ٥) لعني أنهول في قرآن ميل وه باتيل ورج كرديل جو الله في نه فرمائي تھیں۔ تاکہ خلقت کو وطوکہ میں ڈالیں پس اللہ نے ان کے دل ایسے کر دسیاے کہ انہوں نے قرآن میں وہ بانمی رہے دیں جو دلالت کرتی ہیں ان باتوں پر جو انہوں نے اس میں نئی پیدا کیں۔ اور تحریف کردیں۔ اور ان کے بہتان اور دھوکے کو اور جے وہ قرآن میں سے جانتے تھے۔ اس کے چھپانے کو بیان کردیا۔ اس واسط ان سے یوں قرما دیا۔ لم تلبسون الحق بالباطل اور ان کی مثال اس آیت میں بیان قرمائی فاماالزبد فيذهب جفاء واما ماينفع الناس فيمكث في الارض (رعرع) اس آيت بي جماك ے مراد محدول کا وہ کلام ہے جے انہوں نے قرآن میں درج کر دیا۔ یہ کلام تحصیل و شحقیق کے وقت مغمل و باطل ولائتے ہو جاتا ہے جو کلام لوگوں کو نفع دیتا ہے۔ وہ تنزیل حقیقی ہے جس میں باطل کو نہ آگے ے اور ند چھے سے دخل ہے۔ اور جس کو دل قبول کر لیتے ہیں۔ اور اس مقام پرزمین سے مراد محل علم اور قرار گاہ علم ہے اور عموم تقیہ کے سبب ان لوگوں کے ناموں کی تصریح جائز نہیں جنہول نے قرآن کو برل ڈالا اور نہ آیات قرآن میں اس زیادتی کی تصریح جائز ہے جو انسول نے اپنی طرف سے قرآن میں درج کردی- کیونک تصریح میں فرقہ معطلہ و کفار کی حجتوں اور ایسے اہل مذاہب کی تقویت ہوتی ہے جو المارے قبلہ ہے مخرف ہیں۔انتھی۔

وسواطع الناويل مطبوعه مطبع رفاعه عامه سليم جلد سيرد جم ص ٢٦٥ روايت تليير صافي بين مهى معقول بند احتجاج طری میں روایت قد کورہ بالا میں ای زندیق کا یک سوال سے بھی ہے کہ میں و کھتا ہوا۔ ك الله تعالى قرامًا ٢- فإن خفتم الاتقسطوافي اليتامي فالكحوا ماطاب لكم م. النساء (ناءع) مالاتك تيمول كے حق من انعاف كرفے اور مورتول سے نكاح كرتے م کوئی ربط نہیں اور نہ تمام عورتیں بیٹم ہوتی ہیں۔ پس اس آیت کے کیا معنی ہیں۔ اس کے جواب میں جو امیرعلیہ السلام نے فرمایا اس کا اردو ترجمہ اصل کے لیے دیکھو تحفہ شیعہ ملا پر ہے۔ رہا تیرا واقف ہو جانا فان خفتم الایة کے بے ربط ہونے پر طالاتک تیموں کے حل میں انصاف کرنے اور عورتوں سے نکاح کرنے میں باہمی کوئی ربط نہیں اور نہ سب حورتیں میتم ہوتی ہیں۔ سواس کی وجہ وہی ہے۔ جو میں پہلے بیان کر چکا ہوں۔ کہ منافقوں نے قرآن میں سے بمت کھ تکال ڈالا ہے اور الفاظ فی البتامی اور فانکحوا کے درمیان ایک تمائی قرآن مجید ے زیادہ خطاب اور تھے ہیں اور یہ اور جو اس کے مشابہ ہیں ایسے مقام ہیں جن میں فور اور اگر كرف والول كو من فقول كى بدعتيس ظاهر موجاتى إن- اور فرقه معطله اور تخالف اسلام ندمب وال قرآن میں قدح کرنے کا موقع پاتے ہیں۔ اور اگر میں تجھ سے بیان کروں اس منم کی تمام الی چروں كوجو تكال دالى كنيس- بين اور تحريف و تبديل كردى كنيس- تو كلام طويل بوجائے گا- اور دوستان الل بیت کی خوبیاں۔ اور وشمنان اہل بیت کی برائیاں جن کے ظاہر کرنے سے تقیہ منع کرہ ہے وہ سب ظاہر ہو جائیں گی۔انتھی

(۲۱) شیعد کے عالم عامل اویب کال ناشراخبار آئمہ ابرار محی مناقب حیدر کرار آلہ اطمار علی بن عیدی کی اربلی اپنی مشہور معروف کتاب کشف الغمہ (مطبوعہ ایران ۱۲۹۳ء ص ۲۰) میں جو ۱۸۵۵ء تصنیف ہوئی ہے یوں نقل فرمانے ہیں۔

روى عن ابى جعفر عن ابيه عليهما السلام قال انقطع شسع نعل رسول الله فلا فعها الى على يصلحها ثم مشى فى نعل واحدة غلوة اونحو ها واقبل على اصحابه فقال ان منكم من يقاتل على التاويل كما يقاتل معى على التنزيل فقال ابوبكر انا يارسول الله فقال لا فقال عم فانا فقال لا فامسكوا ونظر بعضهم الى بعض فقال رسول الله لكنه خاصف النعل واومى الى على عليه السلام فانه يقاتل على التاويل اذاتركت سنتى ونبذت وحرف كتاب الله وتكلم فى الدين من ليس له ذلك فيقا تلهم على احياء دين الله

ترجہ: امام محر ہاتر روایت کرتے ہیں کہ میرے والد امام زین العابدین) نے فرمایا کہ رول اللہ المجابے تعلی سے المحل مہارک کا تعمد ثوث کیا۔ پس آپ نے ورست کرنے کے لیے دھرت ملی کو وے ویا۔ پھر آپ ایک تیری آب یا پہلے کم و پیش ایک ہی تعل مہارک میں جا اور اپ اسحاب کی طرف متوجہ ہو کر فرمایا کہ تم میں ایک الیا محض ہے جو کا ویل پر جنگ کرے گا۔ جیسا کہ وہ میری تنزیل پر جنگ لرتا ہے۔ یہ من کر دھنرت الویکر نے عرض کی یا رسول اللہ کیا میں وہ محض ہوں۔ آپ نے فرمایا نہیں۔ پس دھرت مر نے عرض کیا تو کیا میں ہوں؟ آپ نے فرمایا نہیں ہوں؟ آپ نے فرمایا نہیں ہوگئے اور ایک دوسرے کی طرف دو کیے مرض کیا تو کیا میں ہوں؟ آپ نے فرمایا نہیں پس حاضرین چپ ہو گئے اور ایک دوسرے کی طرف دو کیے گئے۔ رسول اللہ نے دھنرت علی کی طرف اشارہ کر کے فرمایا بلکہ وہ نعل کا گانشنے والا ہے۔ کیونکہ وہ تو کیا یا بہ جنگ کرے گا۔ جب کہ میری سنت ترک کردی جائے گئی اور پھینک دی جائے گی اور کتاب اللہ تحق کی دور کیا اللہ نہیں پس دہ دین اللی کے زندہ تحریف کردی جائے گئی اور پھینک دی جائے گی دور کیا اللہ نہیں پس دہ دین اللی کے زندہ تحریف کردی جائے گی۔ اور دہ شخص دین میں کلام کرے گا جو اس کا اہل نہیں پس دہ دین اللی کے زندہ کرنے کے لیے جنگ کرے گا۔ استھی۔

(۲۳) تغییر عیاشی میں ہے کہ امام محمد باقر نے فرمایا کہ اگر قرآن میں ذیادتی ادر کی نہ کی ہوتی تو ہمارا حق حق کی سے کہ امام محمد باقر نے فرمایا کہ اگر قرآن میں ذیار ہو کربولیں تو قرآن آپ کی حق کی مقد بی مقتل میں ہے کہ امام جعفر صادق نے فرمایا کہ اگر قرآن پڑھا جائے مقد بی کہ امام جعفر صادق نے فرمایا کہ اگر قرآن پڑھا جائے ۔ جیسا کہ نازل ہوا تو یقینا تو ہم کو اس میں نہ یائے گا۔ انفیر سانی میں انفید میں میں ۔

(۲۴) شیعہ کے علامہ کائی لکھتے ہیں۔ ان تمام حدیثوں سے اور ان کے علاوہ اور جس قدر روائتیں اللہ بیت علیم السلام سے مروی ہیں ان سے یہ پایا جاتا ہے کہ جو قرآن ہمارے درمیان ہے وہ پورا جیسا کہ حضرت محمہ النہ کا پر نازل ہوا تھا نہیں ہے بلکہ اس میں سے کچھ ظاف ماانزل اللہ ہوا تھا نہیں ہے بلکہ اس میں سے کچھ ظاف ماانزل اللہ ہوا ور اس میں سے بہت سی چیزیں نکال ڈائی می ہیں۔ (تغییر سے اور اس میں سے بہت سی چیزیں نکال ڈائی می ہیں۔ (تغییر صافی ص ماانخ می میں انتخفہ شیعہ ص ۲۹)

(۲۵) شیعہ کے علامہ محسن کاشی اپنی تفییر (صافی ۱۱۳) میں رقم طراز ہیں رہا ہارے مشائخ رخمیم اللہ کا اعتقاد اس بارے میں سو ثقہ الاسلام محمن یعقوب کلینی طاب ثراہ کی نسبت ظاہر یہ ہے کہ وہ قرآن میں تحریف و نقصان کے معقد ہے ۔ کیونکہ انہوں نے اپنی کتاب صافی میں اس مضمون کی روائیل نقل کی گئی ہیں۔ اور ان پر کوئی اعتراض وارد شمیں کیا اور معمدا اپنی کتاب کے شروع میں لکھتے ہیں کہ جو حدیثیں ہم اس کتاب میں نقل کریں گے۔ ہمیں ان وثوق ہے ای طرح ان کے استاد علی بن ابراهیم لمی مجی تحریف کہ معقد سے کیونکہ ان کی تفیر روایتوں سے پر ہے۔ اور ان کو اس عقید سے میں غلو ہے ای طرح شخ احمد بن ابی طالب طبری قدس سرہ مجی تحریف کے ان کو اس عقید سے میں غلو ہے ای طرح شخ احمد بن ابی طالب طبری قدس سرہ مجی تحریف کے ان کو اس عقید سے میں غلو ہے ای طرح شخ احمد بن ابی طالب طبری قدس سرہ مجی تحریف کے

معقد تنے ۔ کیونکہ وہ مجمی کتاب الاحتجاج میں ان دونوں کے طریق بر چلے ہیں- (تحف شیعہ م

(۲۷) ابن شر آشوب مازند رائی متوفی (۵۸۸ هـ) نے کتاب الشالب میں ذکر کیا ہے کہ سورہ ولایت تمام (۔ قرآن ہے) نکال دی گئی ای طرح سورہ احزاب کا اکثر حصد نکال دیا گیا ہے۔ کیونکہ وہ سورۃ انعام کی مثل لمبی تھی۔ پس اس میں سے اہل بیت کے فضائل نکال دیا گئے ای طرح لا تخون ان الله معنا ہے پہلے و ملک حذف کردیا گیا ہے۔ اور وقفو هم انهم مسئولون کے بعد عنی و کفی الله المومنین القتال کے بعد بعلی بن ابی طالب وسیعلم الذین ظلموا کے بعد آل محمد ماقط کردیا گیا ہے۔

(۲۷) ان الله اصطفے ادمر ونو حاوال ابراهیم وال عمران علی العالمین(آل عمران ع)

اس آیت کے تحت میں تغیرصافی میں ہے۔ کہ تغیرعیاشی میں امام جعفرصادق سے منقول ہے کہ لفظ ال محمد اس آیت میں موجود تھا۔ لوگوں نے منا دیا۔ اور ایک اور روایت میں ہے کہ امام جعفر صادق نے فرمایا کہ اصل آیت یوں تھی ابواھیم وال محمد علی المعالمین لوگوں نے لفظ محمد کی جگہ عمران بنا دیا تحفہ شیعہ ص ۲۱)

(۲۸) امر نا متر فیھانی اسرائیل ۲۶) تغیرصافی میں ہے کہ تغیرعیاشی میں جناب الم محمد باقرے متقول ہے کہ تغیرعیاشی میں جناب الم محمد باقرے متقول ہے کہ لفظ اصل میں ہے امر نا (جمیم مشدد) جس کے معنی ہیں کہ ہم نے زیادہ کردیا احونا المیس جیسا کہ اس زمانہ کے لوگ پڑھتے ہیں۔ (تحفہ شیعہ ص ۲۷)

(۲۹) قال لقد علمت ماانزل ہؤلا الارب السموات ولارض بصائر (بی اسرائیل علمت کے ۱۳) تغیر صافی میں ہے کہ تغیر مجمع البیان میں مروی ہے کہ جناب امیر المومنین نے اس ملمت کے یارے میں فرمایا کہ وہ دشمن فدا یعنی فرعون کھے بھی نہیں جانتا تھا۔ البتہ جناب موی جانے والے تھے۔ پی انہوں نے لقد علمت فرمایا تھا جس کے معنی ہیں کہ میں نے یقینا جان لیا (تحفہ شعید ص ۲۷)

(۳۹) شیعہ کے علامہ حیین بن محمہ تقی نوری طبری نے اپنی کتاب فضل الخطاب فی الاثبات تحریف کتاب رب الارباب (مطبوعہ ایران ۱۹۸اھ ص ۳۰) میں لکھا ہے کہ سید محدث جزائری نے کتاب انوار نعمانیہ میں فرمایا ہے کہ وہ روائتیں صحیح بلکہ مستفیض بلکہ متواتر ہیں۔ جو صراحتہ تحریف قرآن پر دلالت کر رہی ہیں کتاب فصل الخطاب ہی کے ص کے ۲ پر ہے کہ روایت تحریف قرآن یقینا بہت ہیں تی دلالت کر رہی ہیں کتاب فصل الخطاب ہی کے ص کے ۲ پر ہے کہ روایت تحریف قرآن یقینا بہت ہیں تی کہ سید نعمت اللہ جزائری نے آئی بعض تھنیفات میں لکھا ہے۔ جیسا کہ ان سے نقل کیا گیا ہے کہ جو

روائتیں تحریف قرآن پر ولالت کرتی ہیں۔ وہ دو جزار سے زاید ہیں اور ایک جماعت نے ان روایوں کے مستغیض ہونے کا وعوے کیا ہے جیسا کہ شیخ منید اور محقق واماد اور علامہ مجلی وغیرہ ہم بلکہ شیخ نے ہمی جمیان ہیں بان روایات کے بہت ہونے کی تصریح کی ہے۔ بلکہ ایک جماعت نے ان کے متواتر ہونے کا دعوے کیا ہے اس جماعت کا ذکر آئے آئے گا جانا چاہیے کہ بد روایتیں کتب معتبرہ سے متعقول ہیں جن پر ہمارے اصحاب کا اعتاد ہے۔ احکام شرعیہ اور آثار نبویہ کے ثابت کرنے ہیں انتھی پھر صاحب فصل الخطاب نے آثر کتاب میں اپنے اس وعدہ کو پورا کیا ہے اور ان محد شین کے ہام کھے ہیں جنوں نے روایات تحریف قرآن کو متواتر کما ہے ان ناموں میں علامہ مجلی کا نام بھی ہے۔ اور ان کی عبارت کا ایک جملہ قائل دید ہے وہ سے میرے نزدیک تحریف قرآن کی روائتیں معنی متواتر ہیں۔ اور ان سب روایتوں کو ترک کردیے ہیں ہمارے تمام فن صدیث کا اعتبار جاتا رہے گا۔ بلکہ میرا علم بی ہے کہ تحریف قرآن کی روائتیں مسئلہ امامت کی روائتوں سے کم نہیں ہیں۔ للما اگر تحریف قرآن کی روائتیں مسئلہ امامت میں روایات سے خابت ہو نہ سکے گا۔ (طالا تکہ اس کا مدار روایات ہی پر ہے۔ انتھی جائے تو) مسئلہ امامت ہی روایات سے خابت ہو نہ سکے گا۔ (طالا تکہ اس کا مدار روایات ہی پر ہے۔ انتھی جائے تو) مسئلہ امامت ہی روایات سے خابت ہو نہ سکے گا۔ (طالا تکہ اس کا مدار روایات ہی پر ہے۔ انتھی

خلاصہ کلام یہ ہے کہ تمام منقد مین شیعہ قرآن میں تحریف باقسامہ کے قائل ہے وہ روایات جن سے دہ روایات جن سے ترآن ثابت ہوتی ہے۔ ان معتبر کتابوں میں جن جن بر قدمپ شیعہ کا مدار ہے اور وہ روایات حسب اقرار علائے شیعہ معتبرہ وکثیرہ دو ہزار سے زائد مستفیض بلکہ متواتر ہیں اور صراحتہ تحریف قرآن پر ولالت کرتی ہیں اخذ شیعہ منو دو ہزار سے زائد مستفیض بلکہ متواتر ہیں اور صراحتہ تحریف قرآن پر ولالت کرتی ہیں اخذ شیعہ منو دو ہزار سے دائد مستفیض بلکہ متواتر ہیں اور صراحتہ تحریف

دور شانی نظرین کویہ معلوم ہو چکا ہے۔ کہ پہلی تین صدیو میں تمام شیعہ قرآن میں تحریف باقسامہ کے قاتل تھے۔ اس کے بعد چھٹی صدی تک بھی ہی عقیدہ تھا۔ بال اس عرصہ میں شیعہ کے چار مجتد کے بعد ویکرے اس عقیدے کے خلاف بائے جاتے ہیں۔ لیعنی شخ صدوق (متوفی ۱۳۲۹ھ) سید مرتفے علم الدے (متوفی ۱۳۳۹ھ شخ الطاکفہ طوی (متوفی ۱۳۲۹ھ) اور ابو علی طبری (متوفی ۱۳۳۹ھ) بقول صاحب فضل الحطاب ابو علی طبری کے ذمانہ تک ان چار کے سوا اور کوئی مجتمد معلوم نہیں جس نے صراحت عقیدہ تحریف قرآن کی مخالفت کی ہو۔ ہم نے ان چاروں کے اقوال بورے نقل کیے ہیں (دیکھو تحفہ شیعہ ص ۱۲-۱۳) مولوی عائری نے ان چاروں کے ساتھ دو اور حوالے زیادہ کر دیے ہیں۔ جو متاخرین میں سے ہیں۔ اور مولوی عائری نے مالادری نے بھی اپنی تغیر محف علم الدے کے مقلد ہیں شعبہ کے اکابر نے میں شامل ہونے کے لیے ججتمد لاہوری نے بھی اپنی تغیر کابھی حوالہ نقل کردیا ہے۔

رور شالت ندکور بالا مجتزین اربعہ کے بعد شیعہ کے مجتدوں نے مسئلہ تحریف قرآن پر نظر دانی کی اور

ان چاروں نے عدم تحریف پر جو ولا کل پیش کے بیں ان پر دوبارہ غور کیا اور وہ اس بیجہ پر پہنچ کہ تحریف قرآن کی روایات متواترہ کورد کردیئے سے ند بہب شیعہ کا قیام محال ہے۔ کیونکہ ای طرح تو مسئلہ امامت بھی ٹابت نہ ہو سکے گا۔ اور حضرت علی کا قرآن کو جمع کرنا اور قرآن صحابہ کو دیکھ کرناراض ہونا۔ لغو ٹابت ہوگا۔ اور صحابہ کرام کے فضائل کا اعتراف کرنا پڑے گا۔ اور حضرت عثمان پر احراق قرآن کا الزام ہے سود محمدے گا۔ اس لیے ان کو ان مجتدین اربعہ کے قول کی تروید یا تاویل کرنی پڑی ہم ذیل میں بطریق اختصار اس بحث کے متعلق امور ذیل چیش کرتے ہیں۔ جن کے ضمن میں وہ تردید یا تاویل بھی ذرکور ہوگی۔ اس بحث کے متعلق امور ذیل چیش کرتے ہیں۔ جن کے ضمن میں وہ تردید یا تاویل بھی ذرکور ہوگی۔

سید نعت اللہ جزائری نے انوار نعمانیہ میں لکھا ہے کہ تسلیم کرلینا کہ یہ قرائیں وی اٹنی ہے متواترہ ہیں اور سب کو حضرت جرئیل لائے ہیں ان حدیثوں کے رو کرنے کا موجب ہے جو مستفیض بلکہ متواترہ ہیں اور صراحتہ ولالت کرتی ہیں کہ قرآن میں بلحاظ کلام و مضمون و اعراب تحریف واقع ہوئی ہے۔ معدا اہمارے اصحاب ان حدیثوں کی صحت و تقدیق پر متنق ہیں۔ ہاں مرشنی اور صدوق اور شخ طبری ن ان میں مخالفت کی ہے۔ اور حکم لگایا ہے کہ اس مصف کے وقین کے ورمیان جو ہے وہی قرآن منزل ہے۔ اور اس کے سوا اور شہیں اوراس میں تحریف اور تبدیل واقع نہیں ہوئی۔ اور ای واسطے شخ طبری نے قرآن کی آئیوں اور اجزا کو ضبط کیا ہے چنانچہ بالا سناد نبی سے کے اس مصاف کے دوایت کیا ہے۔ کہ قرآن کی تمام حوف تین کے صور تیں ایک سوچودہ ہیں۔ اور اس کی تمام آئیس چھ جزار دوسو چھتیں ہیں اور اس کے تمام حوف تین لاکھ اکس جزار دوسو چھتیں ہیں اور اس کے تمام حوف تین لاکھ اکس جزار دوسو چھتیں ہیں اور اس کے تمام حوف تین کا کہ ایکس جزار دوسو چھتیں ہیں اور اس کے تمام حوف تین کرف ہونے کا کہ جب قرآن میں تحریف جائز ہوتی قواودود محرف ہونے کے اس کے قواعد و احکام پر عمل کرنا کیو کر جائز ہوا۔ (تحف شیعہ عن ۱۲۲ میں)

ے واعد واس اللہ انگار تحریف مدوق و فیرو سے اللہ مسلمت تو اس جموث اولیے مدوق و فیرو سے ماخرین کرام آپ نے ویکھا گھر کے بھیدی نے صاف بتا دیا کہ انگار تحریف صدوق و فیرو سے بہت ہی مسلمت تو اس جموث بولنے بیں یہ تھی۔ کہ بہت ہی مسلمت تو اس جموث بولنے بیں یہ تھی۔ کہ المستت طعن نہ کریں۔ کہ جب قرآن مجید محرف ہوا۔ تو اس کے قواعد و احکام پر عمل کیو تکر جائز ہوا۔ المستت طعن نہ کریں۔ کہ جب قرآن مجید میں جموث بولنے کا نام تقیہ ہے جسے وہ اعلے درجہ کی عبادت سمجھتے ہیں۔ ناظرین اشیعہ کی لفت میں جموث بولنے کا نام تقیہ ہے جسے وہ اعلے درجہ کی عبادت سمجھتے ہیں۔

چنانچه شیخ صدوق کے رسالہ اعتقادات مطبوعہ ایران ۱۲۷س) میں لکھا ہے-

قال الشيخ في التقية انها واجبة من تركها كان بمنزلة من ترك الصلوة (الى ان قال) والتقيه واجبة لا يجوز رفعها الى ان يخرج القائم فمن تركها قبل خروجه فقد خرج عن دين الله تعالى وعن دين الا مامية و خالف الله ورسوله والائمة وسئل الصادق عليه السلام عن قول الله عزوجل ان اكر مكم عند الله اتقكم قال

أعملكم بالتقية

ترجمہ: فیخ نے تقید کی نبعت فرمایا کہ وہ واجب ہے جس فض نے تقید چھوڑ دیا اس کی مائند
ہوڑ نا جائز جمیوڑ دی) (یمال تک کہ بیخ نے فرمایا) اور تقیہ واجب ہام قائم کے ظہور تک اس کا
چھوڑنا جائز جمیں جس فخص نے امام قائم کے خردی سے پہلے تقیہ چھوڑ دیا وہ اللہ تعافی کے دین سے اور
امامیہ کے دین سے فارج ہوگیا اور اس نے اللہ اور اماموں کی مخالفت کی اور امام صادق سے
آیت ان اکو حکم عند اللہ اتفکم کے معنی دریافت کیے گئے امام نے فرمایا کہ اس آیت کے معنی یہ
ہیں۔ کہ اللہ تعافی کے زویک تم میں سب سے بزرگ وہ ہے جو سب سے زیادہ تقیہ برعائل ہوا بہتی
ہیں۔ کہ اللہ تعالی کے زویک تم میں سب سے بزرگ وہ ہے جو سب سے زیادہ تقیہ برعائل ہوا بہتی
ہیں۔ کہ اللہ تعالی کے زویک تم میں سب سے بزرگ وہ ہے جو سب سے زیادہ تقیہ برعائل ہوا بہتی
ہیں۔ کہ اللہ تعالی کورنے کم میں سب سے براگ وہ ہے تھے۔ سز بزار آئٹی تھیں) لکھتے ہیں۔
حضرت جبرائیل لے کر حضرت مجہد التھ میں صحاح کی حدیثیں جو قرآن میں سے حصہ کیڑکے ضائع
ہونے بر ولالت کرتی ہیں گڑت میں اس ورج کو پہنچ گئی ہیں کہ ان سب کا جھٹانا مرائت ہو اور یہ داللہ بن سعود
ہونے بر ولالت کرتی ہیں گڑت میں اس ورج کو پہنچ گئی ہیں کہ ان سب کا جھٹانا مرائت ہو اور یہ داللہ بن معنود
ہونے کو جلا دیا۔ باوجوہ ان یاتوں کے اور اختلاف قرات کے یہ وعوے کہ قرآن اثنا ہی ہو وہ صحاحف کو جلا دیا۔ باوجوہ ان یاتوں کے اور اختلاف قرات کے یہ وعوے کہ قرآن اثنا ہی ہو وہ ساحف مضمورہ ہیں ہے اور کیا اس سے واقف
جو مصاحف مضمورہ ہیں ہے افکال سے فالی نہیں جو پھے ابو بکرو عمرو عثان نے کیا اس سے واقف
ہوجوائے کے بعد قرآن کی غیر محرف ہوئے بر یہ دلیل لانا کہ صحاحہ کرام اور ایک اسلام نے ضبط وہ کھوں کو کھور کی دور کو کئی کا بڑا ایتمام رکھا ہے نمایت ضعیف ہے۔ انتھی (صافی شرح اصول کافی مطبوعہ کو کھور

كتاب نصل القرآن جز مشتم ص 20 تخفد شيعه ص ٥٠)

383

ملا صاحب ہویہ فرماتے ہیں کہ شیعہ کی طرح سینوں کی اعادیث صحاح کیرہ بھی قرآن میں سے حصہ کیرے ضائع ہونے ہر ولالت کرتی ہیں۔ سویہ نادانوں کے لیے ایک مغالط ہے اور لاکت اہل سنت کی جن رویتوں سے مخالفین کو کی نظر آتی ہے وہ آحادی ہیں جو مدام عقیدہ نہیں بن سکتیں۔ ٹانیا تقدیر صحت ان اعاد سے صرف یہ ثابت ہوتا ہے کہ اثنائے نزول قرآن میں بعض آیتیں نازل ہو کیں اور بحکم خدائے عروجل حضور اقدس سٹرین کی حیات شریف ہی میں سنوخ آیتیں نازل ہو کیں اور بحکم خدائے عروجل حضور اقدس سٹرین کی حیات شریف ہی میں سنوخ التلاوۃ ہوگئیں۔ اور قرآن مملومیں نہ رہیں۔ ٹالٹا اہل سنت کا عقیدہ ہے۔ کہ جو قرآن اس وقت محارے پاس ہے وہ بلحاظ نظام و رسم و تر تیب وہی ہے۔ جو آخضرت سٹرین ہمارے واسطے چھوڑ محارے پاس ہوئی۔ گرشیعہ قرآن محکم شیعہ قرآن محکم شیعہ قرآن کی بیشی واقع نہیں ہوئی۔ گرشیعہ قرآن محل اللہ سٹرین کی بیشی واقع نہیں ہوئی۔ گرشیعہ قرآن محل کے تقے۔ اس میں آپ کے وصال شریف کے بعد کوئی کی بیشی واقع نہیں ہوئی۔ گرشیعہ قرآن میں جس کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرینے کی اللہ مٹرینے کی بیشی دو تو کہ کی بیشی دو تعدم سلی اللہ سٹرینے کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرینے کی کی بیشی کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرینے کی بیشی کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرینے کی کی تو تا کی کی بیٹری کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرینے کی کی بیت کی کی کی بیٹری کی کے قائل ہیں وہ اور ہے کیونکہ ان کا عقیدہ ہے کہ آخضرت صلی اللہ سٹرین





وفات شریف کے بعد محابہ کرام نے پورا قرآن جمع نہیں کیا ملکہ اس میں بہت کچھ ضائع کریا ہے اور کئی اور طرح سے محرف کردیا ہے جن روایات کی روسے شیعہ کا بیہ عقیدہ ہے وہ ان کے نزدیک منتفیض ملکہ متواتر ہیں اور صراحتہ تحریف پر دلالت کرتی ہیں۔

(۳) منکرین تحریف نے عدم تحریف کے ثبوت میں معقدین تحریف کی طرح کوئی سند آئمہ معمومین کے قول سے پیش نہیں کی جو صراحتہ عدم تحریف پر دلالت کرتی ہو۔

(۳) شیخ صدوق رسالہ اعتقادات میں تو کہ رہا ہے کہ جو مخص ہماری طرف عقیدہ تحریف کو منوب کرتا ہے وہ کاذب ہے۔ مگرانی دوسری کتابوں میں روایات تحریف کو نقل کر رہا ہے۔ بچ ہے دروغ گورا حافظ نباشد

(۵) ﷺ الطاكف كا اور پر ابو على طبرى كايد كمناك قرآن بين ذيادتى كے بطلان بر اجماع ہے - محض بناوٹی بات ہے - بلك حق الامراس كے برعش ہے - جيساً كدكت معتبرہ شيعه كى روايات متواترہ سے ثابت ہے ثابت ہے ثابت ہے۔

(۲) علم الهدى اور ابو على طبرى كاعقيده تحريف باالنقعان كو شيعه متقدين كى صرف ايك جماعت كى طرف منسوب كرنا غلط ہے۔ كيونكه تمام قدمائے شيعه تحريف باقسامہ كے قائل تھے۔

(2) عقیدہ تحریف باالنقعان کو حثوبہ اہلتت کی ایک جماعت سے منسوب کرتا بھی غلط ہے۔ کیونکہ ان میں سے کوئی بھی تحریف کا قائل نہیں۔

(A) بین الطائفہ کا تحریف بالنقصان کے خلاف کو صحیح ند بب شیعہ کمنا اور ظاہرتی الروایات بتانا بالکل غلط ہے کیونکہ معالمہ اس کے برعکس ہے۔

(٩) علم الهدے كاشيعه كى روايات تحريف كو ضعيف كمنا اور شخ الطاكفه كا ان كو احاد بتانا بالكل غلط ب كيونكه وه روايات مستفيض بلكه متواتر بين- اور صراحته تحريف قرآن بر دلالت كرتى بين-

(۱۰) شخ الطاكف نے بھی روایات تحریف کے کثیر ہونے كا اعتراف كيا ہے مگراس كايہ كمناكہ شیعه كی طرح المستنت کے بال بھی كثیر روایات ہیں جو تحریف بالنقصان پر ولالت كرتی ہیں- بالكل جمالت ما تجانل ہے جس كی وجہ اوپر آچكی ہے۔

(۱۱) چاروں منکرین تحریف میں سے کسی نے شیعہ کے آئمہ معصوبین کا زمانہ نہیں پایا ہے۔ گر قدمائے شیعہ جو تحریف باتسامہ کے قائل تھے۔ وہ آئمہ کی صحبت سے مستفیض تھے۔ للذاشیعہ کا اصلی عقیدہ میں تھا اور ہے کہ قرآن موجودہ محرف و نا قابل اعتبار ہے۔

(۱۲) جن کتابوں میں تحریف قرآن کی روائیس ورج ہیں۔ ان میں سے بعض شیعہ کے آئمہ معصومین

کی نظرے گزر چکی ہیں مثلا کتاب کافی جے امام غائب علیہ السلام نے بفول شیعہ بنظر استحسان دیکھا ہے۔ لندا الیمی روایات کے جھوٹے ہونے کا احمال شیعہ کے اصول موضوعہ پر کسی طرح جاری نہیں ہو سکتا۔

(۱۳) علامہ محسن کاشی علم المدے کی تردید کرتے ہوئے لکھتا ہے۔ کہ قرآن جو قرآن جانے والوں آئمہ اہلیت کے پاس ہے وہ محرف نہیں محرف تو وہ ہے کہ جومنافقوں نے اپ تابعین کو وکھایا (تحفہ شیعہ ص ۳۲)

(۱۴) صاحب تغیر صافی شیخ الطاکف کی تردید میں لکھتا ہیں۔ کہ تم جو کتے ہو کہ قرآن ہر ذانے میں موجود موجود موجود ہونا چاہیے تاکہ تمک ہوسکے اس کے جواب میں ہم کتے ہیں۔ کہ قرآن کے موجود ہونے کے اتا ہی کافی ہے کہ تمام قرآن جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے نازل کیا۔ اہل قرآن (آئمہ) کے پاس محفوظ ہو۔ اور ہمارے پاس بفذر حاجت ہو۔ اگرچہ ہم قادر نہ ہوں۔ جیسا کہ امام کا حال ہے (تفیر صافی ص ۱۵ تحفہ شیعہ ص ۲۱)

(۱۵) سید ولدار علی جمتد لکھنوی نے عماد الاسلام میں لکھا ہے کہ سید مرتف علم المدے جو کہتے ہیں کہ سید ولدار علی جمتد لکھنوی نے عماد الاسلام میں لکھا ہے کہ سید مرتف علم المدے جو کہتے ہیں کہ قرآن میں تغیراور تحریف بالکل شیس ہوئی ان کے اس قول کا مال یہ ہے کہ بقدر ایک آیت یا دویا زیادہ کے تحریف شیس ہوئی نہ یہ ک بقدر مفرد الفاظ کے بھی شیس ہوئی (ضربت حیدریہ جلد دوم ص ۵۸ بخفہ شیعہ ص ۳۹)

(۱۲) کتاب ضربت حیدریہ جو اصل میں سید محمد مجتند لکھنٹوی کی تصنیف ہے اس کی جلد دوم ص ۸۱ میں لکھا ہے۔

ولم يكن السيد علم الهدى معصوما حتى يجب ان يطاع فلوثبت انه يقول بعدم النقيصه مطلقالم يلزمنا اتباعه ولا ضير فيه

ترجمہ: اور سید علم المدے معصوم نہ تھے کہ ان کی اطاعت کی جائے پی اگر ثابت ہوجائے کہ وہ قرآن میں مطلق عیب و نقصان نہ ہونے کے قائل ہیں تو ہم پر ان کا اتباع لازم بنیں اور اس میں کوئی ہرج نہیں انتھی (تخفہ شیعہ ص ۱۳۸۸) مجتمد لاہوری کو جاہیے کہ مجتمد لکھنٹوی کے ان الفاظ پر غور کرے۔ دور ثالث یعنی آخری دور کے شیعہ تحریف بالزیادۃ کے سوا باتی اقسام کے بالعموم قائل ہیں۔ اگر کوئی مجتمد سید علم المدے کی اتباع سے بظاہر مکر تحریف پایا جائے تو سیحے کہ وہ خاص مصلحت کے لیے ایسا طاہر کرتا ہے۔ ورنہ حقیقت میں وہ بھی ویگر مجتمدین کی طرح قرآن موجودہ کو تحرف جانا ہے۔ للذا یہ کمنا کہ جمہور مجتمدین عدم تحریف کے قائل ہیں محض ایک بڑے شیعہ کے عقیدہ تحریف قرآن کا مدار

شیعه کی مشہور کتاب کائل بمائی میں ہے چوں کا ر ظافت عثان محکم شد منادی کرو و محالف قرآن کہ دردست مردم ہوہ بخواست اگر سے اباکرد . قمرو جرے ستاند کا عبداللہ بن مسعود منحفے بودا ذوے طلب کروند- اوبر خاست و بنش خویش بدر خانہ او رفت ورا برنجائید چنانکہ ہردو پہلو سے او بشکت واو در آل رنج مقاماتے تمام بکشید و آخر بدال رنج بمرو و مصحف اذاو ، سید صحائف کہ از مسلمانان گرفتہ بود در فرقا نمائے نماد و ، شت و مصحف عبداللہ بن مسعود راچنا کہ خواست مروان بن حکم و ذیا بن سمرہ راکہ کاتب اوبود ند فرمود کہ آنجا لمخہ کردندل ویرکتابت ایس فاس اعتماد کرد و باخر محظ خویش از خط ایشال دو مصحف بخوشت و ذید بن فابت رافر مود کہ قراء تے ، شدو مردم پیش ذید آید و دا و کے قرات بشوند و عبداللہ بن مسعود حکم اوراو حکم قراء تے ، شدو مردم پیش ذید آید و دا دو کے قرات بشوند و عبداللہ بن مسعود حکم اوراو حکم وردست مردم است از بقیہ مصحف عبداللہ بن مسعود است و آنچہ بسوز اید و شت از وردست مردم است از بقیہ مصحف عبداللہ بن مسعود است و آنچہ بسوز اید و شت از مصحف اوبر سال کے کہ قرآن بسوز اند چگوئہ باشد ذلک معصف کر ہو مانزل الله فاحبط اعمالهم (سورة محمد ع) انتھی و تگمداشت کہ سے بامنہ محردم اطلاع افتدا انتھی یا لفظ

ترجمہ: جب حضرت عثمان کی خلافت کا معاملہ محکم ہوگیا۔ تو اس نے منادی کرادی اور قرآن کے صحیفے جو لوگوں کے پاس سے طلب کیے اگر کوئی شخص انکار کرتا تو خلیفہ قرو جرے لے لیتا یمال تک کہ عبداللہ بن مسعود کے پاس جو قرآن تھا۔ اس سے طلب کیا گیا غلیفہ اٹھ کر خود اس کے گر گیا اور اس عبداللہ بن مسعود کے پاس جو قرآن تھا۔ اس سے طلب کیا گیا غلیفہ اٹھ کر خود اس کے گر گیا اور استی مار پیٹ کی بیچارے کے دولوں پہلو ٹوٹ گئے اور اس نے اس درد سے بہت تکلیف اٹھائی۔ آثر کار اس کی مرکبا۔ اور قرآن اس سے لیا اور اس نے جمہدالیوں سے لیے تھے۔ ان کا فرقانوں (؟) میں رکھ کر دھوڈالا اور عبداللہ بن المسعود کے قرآن کی نبست جس طرح چاہا اپنے دو کاتبوں لیتی مردان بن عبد کھم اور زیاد بن سمرہ کہ حکم دیا کہ انقل کریں۔ اور ان دونوں فاسقوں کی کتابت پر اعتاد کیا۔ اور آخر ان کی نسخہ سے بی قرات مقرر کرے اور لوگ ذید نسخہ سے بیس آگر وہ قرات سنیں۔ عبداللہ بن مسعود نے اس کا اور اس کے اسحاب کا حکم نہ ماتا۔ اور حضرت علی سا آگر وہ قرات سنیں۔ عبداللہ بن مسعود نے اس کا اور اس کے اصحاب کا حکم نہ ماتا۔ اور حضرت علی نے اس کے بیس آگر وہ قرات سنیں۔ عبداللہ بن مسعود نے اس کا اور اس کے اصحاب کا حکم نہ ماتا۔ اور حضرت علی نے اس کے بیس آگر وہ قرات سنیں۔ عبداللہ بن مسعود نے اس کا اور اس کے اصحاب کا حکم نہ ماتا۔ اور حضرت علی نے اس کے معرف میں جو تغیرو تبدل ضروری تھا کیا اور آئی جو قرآن کہ لوگوں کے ہاتھوں جس ب

وہ عبداللہ بن مسعود کے قرآن کا مقی ہے اور دو مرول کے مصحف جلا دیے اور دمو ڈالے اس کے سب
وہ خطاکار گنگار ہوگیا۔ پس جو محض قرآن کو جلا دے اس کا کیا عال ذلک ہانہم کر ہوا ماانزل الله
فاحبط اعمال لہم یہ اس لیے کہ اللہ نے جو پچھ اٹارا اس سے انہوں نے نفرت کی پس اس نے بھی
ان کے اعمال اکارت کردیے۔ (ترجمہ شیعہ) اور فلیفہ نے کی لوگوں کے ان قرانوں پر خبرنہ ہونے دی۔
انہیں۔

انتباہ ہم نے یہ عبارت کامل بمائی کے قلمی نسخہ سے نقل کی ہے جس میں صفوں کانمبر نہیں

-4

(r)

شیعہ کے جناب مقدس اردبیلی اپنی کتاب حد مقته الشیعه (مطبوعه ایران ص۱۱۸ ص۱۹ میں یول لکھتے ہیں۔ چہارم از مطاعن عثان آنکہ عبداللہ بن مسعود قاری قرآن راکہ از اکابر صحابہ بود بكشت وآل حكايت چنال بود كه چول كار خلافت برعثان متحكم شدارا ده كرد كه قرآت قرآن رابروش زید بن ثابت قرار دہد و منادی ندا کرد کہ صحائف قرآن نزد ہر کہ باشد بیاور دو اگر کے ا با كند جبرا و قهرا بكير ند و عبدالله بن مسعود معصف داشت مكروه مبداشت به طریق خود را تغیرد بد تفرف در آل کند و ازال ترتیب بینداز چول مے دانست که مدعائے عمان تبدیل و ترتیب قرآنست چنانکہ ور قرآن او مفعل ہے آید چوں عثمان کس فرستار مصحف اور العلب نمووا و مصحف خود را نداد پس عثمان خود بخانه او رفت و عبدالله عذر گفت عثمان مصحف اور ایجزاز خانیه او بیرول آورد و بقول دیگر آیات از آنجاا خراج و نسخه ازان برداشت آن مصحف رانیز چون دیگر مصحف سوخت وخبرمانه دادند كه ابن مسعود اين افعال رابدعت وطلالت ميداند ودرميجد نشسة احادیث نقل میکند ولبست بنو کنایه میگوید این سخن رابهانه ساخته فرمود که این مسعود را چندال نمو تكد بعدازال سهم روز اين جمال رايد رودكرد چول خربعائشه محفقد گفت اقتلوا محوق المصاحف يعنى بكثيد اس سوزنده مصحف بارا كويند قرآن كه ورميان است ازاقيه عبدالله است تكرداشت كه ديكرے اطلاع از مصحف او بيم رساندو بعضے كويند مروال بن عم و زياد بن سمره راکه کاتب وے بودند محم کرد که از جمع مصاحف نسخه برداشت وہر تصرفے که خواستد كروند ياتى رادر وسيك نماده وشت بعدازال آتش نماده بسوخت ا احدے رابرال مصاحف اطلاع يعتد ذلك بانهم كرهو امانزل الله فاحبط اعمالهم (انتي بلند) ترجمہ: حعرت عثمان کے مطاعن ہے چوتھا یہ ہے کہ اس نے عبداللہ بن مسعود قاری قرآن کا

جوا كابر صحاب من سے تفا مار ڈالا- اور وہ حكايت يول ہے- كه جب خلافت كامعالمه حضرت عثان بر معتكم مو

گیا تو اس نے ارادہ کیا کہ قرآن کی قرآت کو زید بن ثابت کے طریق پر مقرر کردے اور منادی کراوی کہ جس كى كے ياس قرآن كے صحفے ہوں لے آئے - اور اگر كوئى فخص انكاركرے تو جرو قرے لے جائیں۔ عبداللہ بن مسعود کے پاس ایک قرآن تھا۔ اوروہ پیند نہ کرتا تھا۔ کہ اپنے طریق کوبدل دے جو نکمہ اے معلوم تھا کہ عثان کا مقصد قرآن کی ترتیب کو بدل دینا ہے جیسا کہ اس قرآن میں ہو رہا ہے- اس لیے جب عثمان نے کسی مخص کو بھیج کر اس کا قرآن طلب کیا تو اس نے اپنا قرآن نہ دیا۔ پس عثمان خود اس کے گھرگئے عبداللہ نے عذر کیا عثمان جراً اس کا قرآن اس کے گھرسے نکال لائے۔ اور بفول دیگر اس میں ہے آئتیں اخراج کرکے اس کی ایک نقل کی- اور اس قرآن کو بھی دو سرے قرآنوں کی طرح جلادیا۔ اور عثان کو خبر مپنجی که این مسعود ان افعال کو بدعت و گمرای جانیا ہے۔ اور مسجد میں بیٹھ کرحدیثیں نقل كرتا ہے- اور جھے سے كناب كرتا ہے عثان نے اس بات كو بماند بنا كر تھم دے ديا پس ابن مسعود كو انتامارا کہ تین ون کے بعد اس نے اس جمان سے انقال کیا جب یہ خبر حضرت عائشہ کو پینی تو فرمایا اقتلوا محرق المصاحف يعني اس اس مصاحف ك جلان والى كو مار والو اور كت بي كه قرآن جواس وقت موجود ہے۔ وہ مصحف عیداللہ کا بقیہ ہے۔ اور عثمان نے کی دومرے کو اس کے مصحف کی خرنہ ہونے دی۔ بعض کتے ہیں کہ اس نے مروان بن علم اور زیاد بن سمرہ کوجو اس کے کاتب سے نقل کرنے کا تھم دیا۔ لیس انہوں نے تمام قرآنوں ہے نقل کی اور اس میں جو تغیرو تبدل وہ چاہتے تھے کیا۔ اور یاتی کو ایک و یک میں ڈال کر وجو دیا۔ اور پھر آگ میں رکھ کر جلا دیا تا کہ کسی کو ان قرآنوں کی اطلاع نہ ہو۔ ذلك بانهم كرهوا ماانزل الله فاحبط اعمالهم

فصل الخطاب يهل بيان موچكا ب-(تخف شيعه ص اس)

میده کے شیخ الاسلام محمہ باقر مجلس نے حیات القلوب (مطبوعہ نو کشور جلد دوم باب چہل و تنم درمیان مجتہ الووداع ص ۱۸۱ میں یوں لکھا ہے۔ایں سبب شد کہ منافقین دیگر غصب ظافت کردند پس یک خلیفہ رسول خدا اکردند خلیفہ دیگر اکہ کتاب خدا بود تحریف کرد ندو تغیرداند و بسروجہ کہ خواستد گردایند ند استھی بلفلہ انتھی

یہ سب ہوا کہ دو مرے منافقوں نے خلافت کو چھین لیا پس رسول خدا کے ایک خلیفہ کا تو سے مال کیا اور دو مرے کو جو کتاب خدا تھی تحریف کردیا۔ اور بدل ڈالا اور جس طرح چاہا کردیا۔ انتھی ۔

(۵) شیعہ کے عمدة الجہدین محمد باقر مجلس اٹی کتاب تذکرة الائمہ (قلمی نوخه ورق ۱۹۰۸) میں ہوں لکھتے ہیں واز ایس قرآن کہ درمیانست مشہور آنست کہ سہ چز آزاکہ در فضیلت امیر المومنین وائل بیت رسالت صلوة الله علیم و در فرمت قریش و نصائح ابیاں و بعض درفرمت الله بود آزاعثان برول کردہ است و قلیلے از علماء قرآن را زیادہ ازیں میدائد و میگوید آیات قرآن مثال ایس بیشتر بود از آنچہ الحال درمیانست ودر اکثر آیات اسم حضرت امیرالمومنین وادلاد صلوة الله علیم الحمین صریحا بودہ است کہ آزاعثان بیرول کردہ دچند آیہ صریحاً درفرمت خلفائے مثال ایس بیشتر بودہ است مثل آیت یا الله علیہ الحدال فلا نا خلیلا است و مشہور آنست کہ دریں آیت اسم ابو بحر بودہ است و بعد ازاں کہ عثمان از جمہ ولایت مصاحف جمع کردہ و عالمان او برین آیت اسم ابو بحر بودہ است و بعد ازاں کہ عثمان از جمہ ولایت مصاحف جمع کردہ و عالمان او برین قرستاد نہ قریب بعید لل بزار بودجمہ راگفت سوختد و بخت قران نوشت بنتو تیسے کہ اسحال جست و شیال آزا امام میگویند پس مردمان از ردے آن

قرآنما نوشتد واز تنبيركا زرو لمافح الله رحمه الله مليما بعض از آيات وزويده عثان و دوسوره از

ہم اے دوبارہ نقل نہیں کرتے۔ سورہ نورین کے بعد ایک سورت اور بعض آیات ہوں درج ہیں۔ بسم الله الرحمن الرحيم يا ايها امنواامنو ابالنبي والو لي الذين بعثنا هما ويهديانكم الى صراط مستقيم ٥ نبي وولى بعضما من بعض وانا الخبير العليم. ان الذين يوفون بعهد الله لهم جنت النعيم ٥ فالذين اذاتليت عليهم اياتنا باباتنا مكذبين ٥ ان لهم في جمنم مقام عظيم ٥ اذانودي لهم يوم القيمة اين الضالون المكذبون للمرسلين ٥ اخلقهم المرسلون ٥ بالحق وماكان الله ليظهر هم الى اجل قریب ٥ وسج بحمد ربک وعلى من انشاهدين ٥ سورة ماكره ش ہے- ياايها الرسول بلغ ماانزل اليك من ربك في شان على وان لم تفعل فمابلغت رسالته والا يعصمك من الناس سورة رعدميس انما انت منذر للعباد ٥ وعلى لكل قوم هاد٥ سورة شعرا ميس وسيعلم الذين ظلمواال محمداي منقلب ينقلبون ٥ سورة نساء مين امر يحسدون الناس على ما اتاهم الله من فضله فقد اتيناال ابراهيم وال محمد الكتاب والحكمة واتيناهم ملكا عظيما اسورة مافات ميل وقفوهم انهم مسئولون في ولاية على ابن ابي طالب مالكم لاتناصرون ٥ سوره زخرف ميس فاما تدهبن بك فانا منهم منتقون بعلى بن ابي طالب ٥ ولقد عهدنا الى ادم من قبل كلمات في محمد وعلى و فاطمة والحسن والحسين فنسى فلم نجدله عزما فاوحى الى عيده في على ليلة المعراج مااوحي ٥ آية الكرسي الله لا اله الا هو الحيى القيوم لا تاخذه سنة ولانوم له مافي السموات ومافي الارض ومابينهما وما تحت الثرى عالم الغيب والشهادة هو الرحمن الرحيم من ذاالذي يشفع عنده تنا آخر آیت ٥ سره الااب می ہے۔ و كفي الله المومنين القتال بعلى بن ابي طالب وكان الله قويا عزيزا ١٥ ابوبكركي مذمت ميں ياليتني لم اتخذا بابكر خليلا

اس کے بعد منصف بول لکھتا ہے۔ چول آل فاجران حرف آیات قرآن (اند اختد) مغیرین علمہ و علیائے ابیال و ونامیسال واکثر فرق اسلام ایں قرآنے کہ ورمیانست آزا ازبرائے خود تغیرے کردندو معینها قرار دادند۔ وہریک بطریق خواندند و الفاظ و اعراب آزا تغیر دادند بسیاد برعالم ممتدین برعالم ممتدین طاہر است کہ چد یا قرآن کردند و معلوم نشود و کہ نزول قرآن بقرآت کدام قاری نازل شدہ بچہ طریق آیات آزادر ابتدا خواندہ اند و سورہ حمد ازال جملہ شہنوذی و مطوی وحس بصری کہ ازعلائے عامہ والم الل تصوف است چنین خواندہ اند

جن کے رکیس امیر المومنین شے- اوروہ کاتب اکثر وہی لکھتے تھے جس کا تعلق احکام سے ہو؟ تھا۔ اور جو محافل و مجالس میں اترا کرتا تھا۔ مگر جو آئتیں حضرت کی خلوتوں اور دونت خانوں میں نازل ہو تی منس - انہیں بجزا امیر المومنین اور کوئی نہ لکھتا تھا۔ کیوں کہ آپ مفرت کے ساتھ رہا کرتے تھے جمال ہوتے۔ اس کیے امیر المومنین کا قرآن دیگر قرآنوں سے جامع تھا۔ پس جب رسول اللہ لے وصال فرمایا اور آپ کے بعد مخلف نفسانی خواہشیں پیدا ہو گئیں۔ تو امیر المومنین نے قرآن کو جیسا کہ نازل کیا گیا تھا۔ جمع کیا اور اسے اٹی چادر میں باندھ کرمسجد میں لائے اوران سے کماکہ یہ تہمارے پروردگار کی کتاب ہے۔ جیبا کہ نازل کی محمٰی تھی۔ بیہ سن کر عمرنے کہا کہ ہمیں اس کی ضرورت نہیں بیہ ہمارے پاس مصحف عثان ہے اس بر امیر المومنین نے کہا کہ تم اس- برگزنہ دیکھوئے۔ اور نہ کوئی اسے دیکھے گایماں تک کہ امام قائم ظاہر ہوں گے۔ (یمال تک کہ مصنف نے کما) اور بیہ قرآن آئمہ کے پاس تھا۔ وہ اپنی خلوتوں میں ای کی تلاوت کیا کرتے تھے اور بعض وفعہ اپنے خواص میں سے کسی کو دکھا بھی دیتے تھے۔ چنانچہ تقیتہ الاسلام کلینی عطر اللہ مرقدہ نے بالا سناد روایت کی ہے کہ سالم بن سلمہ نے کما ایک مخص نے امام جعفر صادق کے سلمنے قرآن کے پچھ حروف پڑھے اور میں من رہا تھا۔ پس امام نے فرمایا کہ اس قرات کو چھوڑ اور یڑھ جیسا کہ لوگ پڑھتے ہیں۔ یمال تک کہ امام قائم ظاہر ہوں گے۔ جب وہ ظاہر ہوں کے لو کتاب اللہ کو ٹھیک طور سے بڑھین گے۔ اور امام صادق نے وہ مصحف نکالا جے علی نے لکھا تھا۔ اس طرح کی روایات بہت ہیں۔ بنظر اختصار ہم یہال ان کا ذکر شیں کرتے رہے منکرین تحریف و نقصان کے ولائل سو ان کی وليلول من سے ايك يه آيت ہے- نحن نولنا الذكرو اناله لحافظون مريه آيت اس بات ير ولالت نہیں کرتی کہ یہ قرآن جو ہمارے ہاتھوں میں ہے - اس میں تغیرواقع نہیں ہوا- محفوظ تو وہ قرآن ہے جو آئمہ ك پاس ہے- اور اس آيت ميں يہ بھى اخمال ہے كه لحافظون كے معنى لعالمون مول- اور يہ جو كماكيا ہے کہ جو قرآن جمارے ہاتھوں میں ہے وہ کمی بیشی ہے محفوظ ہے۔ سو قرآن موجود اس آیت کا مصداق نهیں۔ کہالا یخفی اور منکرین تحریف کا یہ کمنا کہ اگر قرآن میں تغیرو تبدل کو جائز رکھاجائے تو اعجاز اور اس ے استباط احکام کی بحث چھر جائے گی سواس کا جواب ہے کہ تغیرو تبدل سے قرآن حد اعجازے خارج نہیں ہو یا کیونکہ اس کا اسلوب اور بلاغت جو مدار اعجاز ہیں دونوں بحال خود باتی رہیں کے ملکہ باتی وجود بھی برقرار رہیں۔ کے اور طبری نے مجمع البیان میں عدم زیادت پر اجماع کادعوے کیا ہے اور حد اعجازے خارج کرنے میں جس چیز کودخل ہے۔ وہ غالبا زیادتی ہے اور اس طرح آیات احکام میں تحریف واقع نہیں ہوئی۔ تاکہ اشتباط احکام یں مشکل پیش آئے۔ بلکہ بعض اصحاب کی طرف سے اس پر اجماع کا دعوے طاہر ہوتا ہے۔ منکرین تحریف کی ایک دلیل وہ حدیثیں ہیں جو ولالت کرتی ہیں۔ کہ کتاب اللہ کے ساتھ تمک واجب ہے۔ اور علم ہے کہ کتاب اللہ کا اتباع کیا جائے۔ اور اخبار کو کتاب اللہ پر پیش کیاجائے۔ محربہ حدیثیں کتاب اللہ میں وقوع تحریف کی منافی خمیں جیسا کہ رسول خدا متابیخ اللہ بیت کے ساتھ تمسک کا تھم دیا ہے۔ حالا تکہ وہ تبلغ کما تھ سے ممنوع ہیں اس جواب ہیں تامل ہے ممنوع ہیں اہل بیت کے ساتھ تمسک کا تھم دیا ہے۔ حالا تکہ وہ تبلغ کما تھ سے ممنوع ہیں اس جواب ہیں تامل ہے ممنوع ہیں تحریف تر آن کا تھم ہے۔ محر جائز ہے کہ آئمہ کا قرآن موجود پر عمل کو جائز رکھنا از قبیل تقیہ وہ تھم فاہری ہو۔ جیسا کہ قرآت سبعہ متواترہ کے بارے ہیں کما جاتا ہے تھے پر پوشیدہ نہ رہے کہ جواز عمل کو تمام حالات میں خواہ حیسا کہ قرآت سبعہ متواترہ کے بارے ہیں کما جاتا ہے تھے پر پوشیدہ نہ رہے کہ جواز عمل کو تمام حالات میں خواہ میں تقیہ ہو یا نہ ہو۔ از قبیل تقیہ بٹنا نمایت بعید ہے۔ اس طرح قرآن میں معلقا تحریف و تقصان کا قائل ہوتا بھی بست سے معاسد کا موجب ہے۔ اور ایل بوتا ہی میں اگر یہ کما جائے کہ چو تکہ مخالفین و منافقین کے ابوار کے بچھانے اور ان کے فضائل و منا قب کے پوشدہ کرنے میں کو طول پر بخت نہ بوجا کیں۔ اور ناکہ خوال بیت کو لوگوں پر غلبہ و سلطنت حاصل نہ بوجا کیں۔ اور ناکہ خوال پر مخت نہ بوجا کی ان منافقین نے ان آئیس کی خوالت والی بیت کو لوگوں پر غلبہ و سلطنت حاصل نہ بوجا کیں۔ اور ناکہ خوال و مناقب اور ان کی ریاست و خلافت خابت ہوتی تھی۔ اور روایات بھیں کو اس کی نوزہ تبدل کے ای طرح رہیں جیسا کہ تھیں۔ تو یہ قول کے سے ابل بیت کے فضائل و مناقب اور ان کی ریاست و خلافت خابت ہوتی تھی۔ جس میسا کہ تھیں۔ تو یہ قول کیس میں تو اس مقام میں تائل کر کیونکہ یہ ان مقامات میں سے ہوتی انہوں کیا گوئی بھیں۔ اس میں تائل کر کیونکہ یہ ان مقامات میں سے ہوتی انہوں کیا ان سے مقام طویل بحث عاہمات ہیں۔ سے میں متاب کر وقت ہم کو اس کے پورا کرنے کی اجازت نہیں دیا۔ انہیں۔

اللہ شیعہ جو شیعہ کے خیالات و عقائد کی نیابت کرتا ہے اس کے ایک نمبر ۲ جلد کے بابت ماہ فروری ۱۹۱۰ء مطبوعہ مطبع انیس بند بھوہ ضلع سارن) بیں ایک شیعی یوں لکھتا ہے۔ کتاب اللہ کا بہت سا حصہ ایسا تھا۔ جس سے یادوں کی قلعی کھلتی تھی۔ اور ان کے ہر مقاصد کی کامیابی بی روڑا ا نکتا تھا لئذا بجر اس صورت کے دوسرا راستہ ہی نہ تھا۔ کہ کتاب اللہ کو اپنے قبضہ بی لے کر حسب مطلب ترتیب دیں چنانچہ ہر ظیفہ صاحب نے اپنے آپنہ بی جمال اور کام کے وہاں کتاب کی ترتیب میں بھی خوب کتر سونت سے کام لیا۔ یمال کی آیات وہال اور وہال کی بیمال شھونسی گئیں۔ (تخفہ شیعہ عی ۱۳)

(۱۸) مولوی حائری صاحب مجتمد لاہوری کا ایک شاگر و مولوی احمد علی اپنے رسالہ الانصاف فی اسختاف (۱۸) مطبوعہ رفاہ عام سٹیم پریس ص ۱۹۵۵) میں یوں لکھتا ہے۔ حضرت عثمان کا قرآن کی نعلوں کو پھیلانا مسلم لیکن کبی ترتیب قرآن ان کی عظمت از اسلام کو طشت از بام کرتی ہے۔ اگروہ حضرت علی کے جمع شدہ قرآن کو دائج کرتے تو ان پر کوئی الزام عائد نہ ہوتا۔ ہم نمونہ کے طور پر اس

ترتیب کی چند غلطیوں کے طور پر ظاہر کرتے ہیں۔ با اتفاق اہل اسلام سورہ اقرا سب سے اول نازل ہوئی ہے۔ لکیوم اکتملت لکم نازل ہوئی ہے۔ للیوم اکتملت لکم دینکم

اخیریں نازل ہوئی۔ لیکن اس کو رچ میں جگہ ملی ہے دیکھیے اس آیت کو چھٹے پارہ سورہ ماکدہ میں بول درج کیا ہے۔ یوں درج کیا ہے۔

حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير ومااهل لغير الله به والمنخنقة والموقية في والمتردية والنطيحة ومااكل السبع الاماذكيتم وماذبح علي النصب وان تستقسموا بالا زلام ذلكم فسق اليوم يئس الذين كفر وامن دينكم فلا تخشو هم والخشون اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتى ورضيت لكم الاسلام دينا فمن ضطرفي مخمصة غير متجانف لا ثم فان الله غفور رحيم

ترجمہ: حرام کیے گئے ہیں تم پر مردار خون گوشت سور اور جو بانگ دیا جائے واسطے غیر خدا کے ساتھ اس کے اور گلا گھونٹ کر مرا ہوا اور ضرب شاخ سے مرا ہوا۔ اور جس کو کھایا ہو ور تدوں نے گر جس کو تم نے ذریح کیا ہو۔ اور جو ذری کیا جائے اوپہ بڑوں کے اور یہ کہ طلب قسمت کو ساتھ تیروں کے یہ فت ہے آج کے ون کافر تمہارے دین سے نا امید ہوگئے ہی ان سے نہ ڈرو اور جھے ہی سے ڈرو آج کے ون میں نے تمہارے دین کو کامل کردیا اور تمام کردی تم پر نفت اپنی اور راضی ہوا تمہارے لیے اسلام دین میں جو مضطرب ہو جائے بھوک میں لیکن اس گناہ اکل حرام کی طرف ماکل نہ ہو۔ تو اللہ یخشے والا دین سے ایس جو مضطرب ہو جائے بھوک میں لیکن اس گناہ اکل حرام کی طرف ماکل نہ ہو۔ تو اللہ یخشے والا سے مریان ہراکی عاقل بھیر پر اوئی تدبر سے واضع ہوگا۔ کہ ان دونوں المیو ہو اصلی آیت سے کوئی تعلق نمیں کیونکہ یہ ظاہر ہے کہ محریات کے حرام ہوجائے سے کافرنا امید نمیں ہوجائے۔ اور نہ اس سے کمال دین ہو تا ہے اور اگر اس سے اتمام نعمت ہوا۔ تو چاہیے تھا کہ اس کے بعد کوئی اور عظم نازل نہ ہو۔ پھر یہ دین ہو تا ہے اور اگر اس سے اتمام نعمت ہوا۔ تو چاہیے تھا کہ اس کے بعد کوئی اور عظم نازل نہ ہو۔ پھر یہ دین ہو تا ہے اور اگر اس سے اور و کیصیے ہو ساتمام عیں ہے۔

وان خفتم الا تقسطوافي اليتا مي فانلحوا ماطاب لكم من النساء مثلے وثلاث ورباع فان خفتم الا تعدلو افواحدة

لین اگرتم ڈرو کہ بتاہے میں انصاف نہ کرو گے۔ تو نکاح کرو جو پاک ہو تممارے لیے عورتوں سے دو تین اور چار پس اگر ڈرو کہ عدل نہ کرو گے تو ایک ہی فرمایے کہ خوف عدم انصاف بتای کو تعداو انواج سے دو تین اور چار پس اگر ڈرو کہ عدل نہ کرو گے تو ایک ہی فرمایے کہ خوف عدم انصاف بتای کو تعداو انواج سے کیا تعلق اگر قبط بتاہے تین چار عورات کو نکاح میں لانے سے ہی قائم ہو تاہے تو الا تعدلوا فواحدہ بے فائدہ بہ تو مشتے از خردار تر تیب کی فردگذاشتیں ہیں۔

اب اعراب کی ہمی من لیجے ان ھذا صواط علی مستقیم یعنی ہو تحیق ہو داستہ ہوئی استہ ہوئی ہو استہ ہوئی اور کون میں داہ سرم ہوئی کرے اس عکنی کو ذرا سمجا دیتھے خدا کے اور کون می داہ سرمی ہے ہو عکنی اور اور کی سے معنی دکھتا ہے لیکن خدا سے فائق کوئی ہے نہیں اور یا تقسان کے معنی بھیے علیکم ماحملعم لیکن خدا کے لوگ تقسان نہیں پھر ہے کیا چیز اور لیجے ان ھذان لساحوان موجودہ صرف ونو کے لواظ سے فلا ہے کوئی تقسان نہیں پھر ہے کیا چیز اور لیجے ان ھذان لساحوان موجودہ صرف ونو کے لواظ سے فلا ہے آپ کے مسیح نے حقیقت الوی صفی ۲۰۱۲ میں لکھا ہے کہ خدا کی محاورہ کا پابئد نہیں۔ یہ پرانا محروک محاورہ کی خوروں کو استعمال کرتا ہی مجزہ ہے تو بس خیر پھر تو میں بھی ایک الیک کتاب لکھ سکتا ہوں جو تمام پرانے محاورات پر شام ہو اور وہ مجزہ ہو گا۔ بس حضور میں آپ کے حضرت عثان کی کاروائی انا نہ میں نو لنا الذکو میں ذکر سے مراد رسول اللہ میں کہ دیکھو کا تغیر سورہ جمدہ نو دالدین انتھی بلغد۔

عبارت نہ کورہ بالا کے مطالعہ کے بعد کمی انسان پیند محض کو شیعہ کے عقیدہ تحریف قرآن موجود میں ایک لحہ کے لیے بھی شک کرنے کی کنجائش نہیں ہو سکتی شیعہ کتی ہی تاولین کریں مگر قرآن موجود میں تحریف کے وقوع سے انکار نہیں کرسکتے ان میں سے چند مجتھ جو اس مسئلہ میں ایک حد تک اہل سنت کے ساتھ معلوم ہوتے ہیں۔ وہ محض عامل ہاتقیہ میں ورنہ حقیقت میں تمام شیعہ امامیہ بلا کمی اعتمام کی عقیدہ رکھتے ہیں کہ قرآن موجود تحریف سے محفوظ نہیں محفوظ اگر ہے تو وہ قرآن ہے جسے حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہ نے جمع کیا تھا۔

اہل سنت میں سے کوئی قائل نہیں کہ حضرت علی کرم اللہ تعالی وجہہ نے اس طرح قرآن کو جمع کیا تھا۔ جیسا کہ شیعہ کہتے ہیں۔ بلکہ وہ تو سب بھی کہتے ہیں کہ حضور اقدس ماڑ ہیں وصال شریف کے بعد حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ نے با جماع صحابہ کرام قرآن کو جمع کیا بعدازاں حضرت عثان دوالنورین رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے عمد خلافت ہیں عشورہ صحابہ کرام اسی کو بے کم وکاست لغت قریش میں اللہ جس میں وہ اصل میں نازل ہواتھا۔ کھوایا اور آفاق عالم میں اس کی روشنی پھیلا دی۔ علامہ آلوسی بغدادی تغییرروح المعافی مطبوعہ مصرج اول علی 19 میں کھتے ہیں۔

وما شاع ان عليا كرم الله وجهه لما توفى رسول اله صلے الله تعالى عليه وسلم تخلف لجمعه فبعض طوقه ضعيف وبعضا موضوع وما صح ممحمول كما قبل على الجمع في الصدر وقبل كان جمعا بصورة اخرى لغرض الحرو ينويده الهقد كتب فيه الناسخ والمنسوخ فهو ككتاب علم وقد اخوج ابن ابى دائود بسنه حسن عن عبد خير قال سمعت عليا يقول اعظم الناس في المصاحف اجرا

ابوبكر رضى الله تعالى عنه رحمة الله على ابى بكر هو اول من جمع كتاب الله انتهے بلفظه-

ترجمہ : اور یہ جو مشہور ہے کہ جب رسول الله فے وفات یائی تو آپ کے بعد حضرت علی کرم الله وجه قرآن جمع كرتے كے ليے رہے سواس خرك بعض طريقے ضعيف ہيں- اور بعض موضوع ہيں-اورجو طراق صحح ہے وہ جیسا کہ کما گیا ہے محمول ہے۔ اس معنی برکہ حضرت علی کرم اللہ وجہ نے قرآن کو ایے سینہ میں جمع کیا اور کما گیا ہے کہ انہوں نے قرآن کو کسی اور غرض کے لیے دوسری صورت میں جمع کیا اور اس کی تائیر اس سے ہوتی ہے۔ کہ حضرت مولے مرتفے نے اس میں ناسخ و منسوخ لکھا۔ پس اخیر صورت میں وہ کسی علم کی کتاب کی طرح ہوا۔ انتھی ۔ مجتد لاہوری نے جو بنائی المودة کے حوالہ سے تمن اور کتابوں کے نام لکھے ہیں جنمیں مصحف علی کاذکر کمال وثوق کے ساتھ بیان ہوا ہے سواس کے جواب میں مخدارش ہے کہ بنائج المورة السنت کی کوئی مشہور کتاب نہیں بظاہر کسی رافضی نے لکھ کر شیخ سلیمان حنى كى طرف منسوب كردى ب ينابيع المودة مين جن تين كتابول كے حوالے بتائے محتے جي- ان مين سے مهلي كتاب ورة المعارف مصنف يشخ عبدالرحمن اسطامي ب- كشف الطنون مين ورة المعارف الالهيد في امرار الحرفيد ذكور ہے۔ مراس كے مصنف كانام ندارد بال عبدالر من اسفاى كى كتاب درة النامع في كشف علوم الجغر والجامعه ذكورہے- دوسرى كتاب المدر المنظم مصنفه ابن طلحه شافعى ہے اس نام كى كوئى كتاب نسيس ہاں الدار المنظم اکسیر الاعظم منف ابن طلحہ شافعی ندکور ہے۔ جے جعفرابن طلحہ بھی کہتے ہیں اس کتاب کا سبب تالیف ایک خواب ہے جس کا قصہ مع جرح کشف الفنون میں مذکور ہے۔ تیسری کتاب کا کشف الغنون میں کوئی ذکر نہیں بسرحال لاہوری کا ان تین رسالوں کو جو علم جفرو جامعہ میں کھھے گئے ہیں اہلسنت کی مشہور کتابیں بنانا اور سامعین پر جمالت و کم مانگی کا الزام لگانا خود اپنی نادانی کو ثابت کرنا ہے۔ ناظرین خود فیصلہ کرسکتے ہیں۔ کہ ایسے رسالے امرزیر بحث میں کماں تک ہمارے برخلاف پیش ہو سکتے ہیں۔ اب ہم شیعہ کی معتبر کمابوں سے دکھاتے ہیں۔ کہ قرآن علی کی نسبت شیعہ کیا عقیدہ رکھتے ہیں مین علی بن ابراہیم کمی جو امام حسن عسکری کے شاگرو ہیں اپنی تغییر میں بالا سناد نقل کرتے ہیں کہ رسول الله نے فرمایا اے علی قرآن میرے بستر کے پیچھے صحیفوں اور رہم اور کاغذول میں ہے-اس کو لو اور جمع کرو اور ضائع نہ کرو- جیسا کہ بہود نے تورات کو ضائع کر دیا۔ پس حضرت علی کئے اور قرآن کو ایک زرد کپڑے میں جع کیا۔ پھراپنے گھر میں اس پر مرنگا دی اور فرمایا کہ میں چادر نہ او روں گا۔ یمال تک کہ اسے جمع کراول راوی کا بیان ہے کہ لوگ حضرت علی کے پاس آئے تھے۔ اور آپ چادر اوڑھے بغیران کی طرف نکلتے یمال تک کہ آپ نے قرآن کو جمع

كرليا- انتقى (تفيرصافي (تحفه شيعه ص ٤)

(۲) حدیث سلمہ بن مسلمہ میں ڈکور ہے کہ اہام جعفرصادق علیہ السلام نے ایک مخص سے فرایا کہ متم قرآن ای طرح پڑھو جیسا کہ لوگ پڑھتے ہیں - جب اہام قائم علیہ السلام ظاہر ہوں۔ کے آ قرآن کو تھیک طور پر پڑھیں گے۔ اور اس قرآن کو ظاہر کریں گے۔ جے حضرت علی علیہ السلام نے لکھا تھا۔ پوری حدیث کے لیے ویکھو اصول کافی ص اعلا اور تخفہ شیعہ ص م شیعہ کے عالم فاضل محدث کامل ملا محن کاشی نے بھی اس حدیث کو علم الیقین (مطبوعہ ایران ص ۱۲۹ شی اور میں نقل میں اور سید نجمت اللہ جزائری نے انوار نعمانیہ (دیکھو تخفہ شیعہ ص ۵) میں نقل کیا ہے۔

سید کے فخر المحققین و سند الد تقین علامہ عمرہ فریدہ وجرہ محد بن علی بن شر آشوب الماذندرانی اپنی مشہور کماب مناقب آل ابی طالب (مطبوعہ بمبئی ۱۳۳۳ میل علی میں الا بیل ایول کھتے ہیں وفی خبر طویل عن الصادق علیه السلام انه حمله وولی راجعا نحو حجرته وهو یقول فنبذ وه وراء ظهور هم واشتر وابه ثمنا قلیلا فبنس مایشترون ولهذا قراء ابن

مسعود ان علیا جمعه وقرء ہ فاذا اقراہ فاتبعو اقراء ته اور ایک طویل حدیث میں امام صادق علیہ السلام سے مروی ہے کہ حضرت علی نے اس کو (لینی ایٹ طویل حدیث میں امام صادق علیہ السلام سے مروی ہے کہ حضرت علی نے اس کو الین لے ایٹ جمع کردہ قرآن کو جے لوگوں نے قبول نہ کیا) اٹھالیا اور اپنے حجرے کی طرف واپس لے

گئے۔ اور یہ کہ رہے تھے ہیں انہوں نے اس کوہی پشت ڈال دیا اور اس کو تھوڑی می قیت پر بہ دار ہیں کیا ہی بری وہ قیمت ہے دو وہ لیتے ہیں اس واسطے ابن مسعود نے آیت، (سورہ قیام ا) کو بوں پر حا ہے ان علیا جمعہ و قراء ہ فاذا قراء ہ اتبعوا قرائته بیشک علی نے قرآن کو جمع

کیا اور اے پڑھا پس جب علی اے پڑھے تو تم اس کی قرات کا اتباع کرو- انتھی اس کے بعد

ابن شہر آشوب نے قرآن علی کے بارے میں شاعروں کے شعر نقل کیے ہیں، جن میں سے

خطیب منیح کاید شعرب-

علے جامع القران جمعا یقصر عنه جمع الجامعینا

لینی حضرت علی ایسے قرآن کے جمع کرنے والے ہیں کی جس سے اور جمع کرنے والوں کے قرآن چھوٹے ہیں-

(۳) سید نعمت الله جزائری جن کی جلالت شان سے کسی شیعی کو انکار نمیں اپنی مشہور کتاب انوار نعمانیہ میں لکھتے ہیں کہ روایات میں یہ امر مستغیض ہے کہ قرآن کو جیسا کہ نازل کیا گیاہے کسی

نے جمع نہیں کیا مکر امیر المومنین نے می صلی اللہ کی وصیت سے پس نی کی وفات کے بعد حضرت امير چه مينے قرآن كے جمع كرنے ميں مشغول رہے جب اے جمع كر ميكے جيسا كے نازل كيا كيا تھا- تواسے رسول اللہ كے بعد خليف بنے والوں كے ياس لائے اور ان سے كماك بير اللہ کی کتاب ہے جیا کہ نازل کی گئی ہے عمر بن خطاب نے آپ سے کما کہ ہمیں تیری کوئی ضرورت نہیں۔ اور نہ تیری قرات کی ضرورت ہے ہمارے یاس قرآن ہے جے عثان نے جمع کیا ہے اور لکھا ہے حضرت امیرنے کما کہ آج کے بعد تم اے ہر گزنہ دیکھو گے۔ اور نہ کوئی اے وكي كايسال تك كه ميرابيامدي ظاهر موكا- اور اس قرآن على ميس بهت كهد زياده ب- اور وه تحریف سے پاک ہے۔ اس کی وجہ ہے کہ حضرت عثمان ایک مصلحت کے لیے جو آنخضرت نے خیال کی وحی کے کاتبول میں سے تھے اور وہ مصلحت یہ تھی کہ لوگ قرآن کے بارے میں آیکی محکذیب نہ کریں۔ بایں طور کہ کمہ دیں کہ یہ گھڑ لیا گیا ہے۔ یا حضرت جبریل اس کو نہیں لائے جیسا کہ ان کے اسلاف نے بلکہ خود انہوں نے بھی کماای طرح آنخضرت نے معاویہ کو الیم ہی معملت کے لیے اپنی وفات سے جھ ماہ پہلے وہی کے کاتبول میں مقرر کیا اور حضرت عثمان او ان کی مثال اور اشخاص بجرمسید کے لوگوں کی جماعت کے ساتھ اور کہیں حاضرنہ ہوتے تنے ۔ اس لیے وہ وہی آئٹس لکھتے تھے۔ جن کو جریل لوگوں کے درمیان لاتے مرجو آیتی حضرت جریل حضوراقدس کے دولت خانہ کے اندر لاتے ان کو بجز حضرت امیرالمومنین کوئی نہ لکھتا کیونکہ حضرت امير بوجه محرميت دولت خانه مين آمدو رفت ركمت تھے- اس ليے اليي آئتي وي لكھا كرتے تھے۔ اور يہ قرآن جو اب لوگول كے باتھول ميں موجود ہے۔ حضرت عثان كا لكھا ہوا ہے۔ انتھی (دیکھو تخفہ شعبہ ص ۱۳۴ - ۳۵) محدث جزائری نے اسے رسالہ منع الحیوة میں ہمی دیکر قرآنوں کی نبیت قرآن علی کے زیادہ جامع ہونے کی میں وجہ بیان کی ہے۔ جیسا کہ ہم بحواله اسعاف المامول بشرح زبدة الاصول يمل بيان كرآئ - اس سے ظاہر ہے كه قرآن على میں آیات کی تعداد بہت زیادہ تھی جو بقول امام معصوم جعفر صادق علیہ السلام سترہ ہزار تھی۔ (تخذ نثعیه ص ۱۱)

یمال ایک اور امر قابل غور ہے اور وہ یہ ہے کہ حضرت امیر نے کتی مدت میں قرآن جمع کیا۔ ملاحت کا گئی مدت میں قرآن جمع کیا۔ ملاحت کا گئی نے کدٹ جزائری کے بیان نے طاہر ہے کہ حضرت امیر نے چھ مینے میں کل قرآن جمع کیا۔ ملا محسن کاشی نے بھی رسم الفین میں ہو ہے ہی مینے لکھے ہیں گر شیعہ کے امام معصوم محمیا قرکے قول سے ظاہر ہے کہ معضوت امیر نے سات دن میں قرآن جمع کر لیا تھا۔ (کتاب الروضہ من الکافی خطبہ وسیلہ میں قرآن جمع کر لیا تھا۔ (کتاب الروضہ من الکافی خطبہ وسیلہ میں جمعنہ شیعہ

ص ۱۹ الیکن بین مدوق کی کتاب امالی (معلبوعه ایران ۱۹۰۰ اده ص ۱۹۱۱ میں امام محد باقربی کا قول ب که بغیبر خدا ملائظ کی وفات شریف سے لودن میں حضرت امیر جمع قرآن سے فارغ ہو سے - ان اقوال میں تعلیق دینا جمارا کام نہیں وہ شیعہ جانیں-

كتاب احتاج طبرى كى ايك طويل عديث ص ١٩ تا ١٣١٢ كا كيم حصد بم پيلے نقل كر يك بس جس میں ایک زندیق حضرت امیریر قرآن کی نسبت اعتراض کر رہا ہے۔ اور حضرت امیر ہر دفعہ یمی کے ماح یں کہ قرآن موجود میں تحریف بازیادۃ والنقصان ہوگئی ہے۔ چنانچہ اس زندیق کا ایک سوال یہ ہے کہ _{اللہ} تعالی نے قرآن مجید میں اسے رسول کو باتی سب نبوں پر نضیلت دی ہے۔ مربادجود اس کے بہت جگہ آب ے تنقیص امیر الفاظ میں خطاب کیا ہے۔ کہ کسی اور نی سے نہیں کیا۔ حضرت امیراس کا جواب دیتے ہوئے فرماتے ہیں۔ اس و مثمن رسول نے اپنی تمام بد خواہی میں کوئی چیزاس سے بڑھ کرنہ دیکھی کہ لوگوں کو اس نبی کے وصی کی دوستی سے نفرت دلائے اور اس سے وحشت بیدا کرے اور لوگوں کو اس سے روکے اور ان کو اس کی عداوت پر برانگیخیۃ کرے اور اس بات پر آمادہ کر دے کہ وہ اس کتاب کو بدل دیں جو وہ وصی لایا اور اس میں ہے وہ حصہ نکال ڈالیس جس میں اہل فضیلت کی فضیلت اور اہل کفر (یعنی اس رسمن اور ظلم و بغاوت اور شرک میں اس کے معاون) کا کفرورج ہے بیشک اللہ کو ان کی بیر روش معلوم ے اس واسطے سے فرمایا- ان الذین بلحدون فی ایتنا لایخفون علینا (حم سجدہ ع ۵) یریدون ان يبدلوا كلام الله (فتح ع ٢) حالاتك أن كو ايساكال قرآن ديكها ديا كياجو تاويل و تنزيل اور محكم و منشابه اور ناسخ و منسوخ پر مشتل تھا اور جس میں سے ایک الف یا لام تک ساقیط نہ تھا پس جب وہ اہل حق و اہل باطل کے ناموں سے جو اللہ تعالی سے اس میں بیان فرمائے تھے۔ واقف اور سمجھ مھے کہ اگریہ ظاہر ہو گیاتو ہمارا منصوبہ خاک میں مل جائے گا۔ تب کنے لگے کہ ہمیں اس کی کچھ ضرورت تمیں۔ یاس جو ہے اس کی موجودگی میں ہمیں اس کی برواہ نہیں چنانچہ اللہ تعالی نے فرمایا دیا فنبذہ وراء ظهور هم واشترو ابه ثمنا قلیلا فبنس مایشترون (آل عمران ع ۱۹) دیکھو تخفہ شیعہ ص ۱۲س روایت سے بھی ظاہر ہے کہ قرآن علی میں اہل بیت کے فضائل اور نعوذ باللہ صحابہ کرام کے روا کل درج تھے۔

ب) شیعہ کی بڑی معتبر کاب احتجاج الائم للفری (مطبوعہ ایران ۱۳۰۳ اھ ۲۵٬ ص ۵۷ یی ۲۰ وفی روایة ابی ذرا لغفاری انه لماتو فی رسول الله صلی الله علیه واله وسلم جمع علیے علیه السلام القران وجاء به الی المهاجرین والا نصار وعرضه علیم لماقد اوصاه بذلک رسول الله صلے الله علیه واله وسلم فلما فتحه ابو بکر خرج فی اول صفحة فتحها فضائح القوم فو ثب عمرو قال یاعلی اردوه فلاحاجة لنافیه فاخذ

على عليه السلام انصرف ثم احضر زيد بن ثابت وكان قارنا للقرآن فقال له عمران عليا جائنا بالقرآن وفيه فضائح الماجرين والانصار وقد راينا ان ننولف القرآن و نسقط منه ماكان فيه من فضيحة وهتك المهاجرين والانصار فاجأ به زيد الى ذلك ثم قال فان انا فرغت من القرآن عليه ماسائتم واظر عليه القرآن الذى الفة اليس قد بطل كلما علمتم قال عمر فما الحيلة قال زيد انتم اعلم بالحيلة فقال عمر ماحيلته دون ان نقتله و نستريح منه فد برفى قتله على يد خالد بن الوليد فلم يقدر على ذلك وقد مضي شرح ذلك فما استخلف عمر سال عليا عليه السلام ان يدفع اليهم القرآن فيحرفوه فيما بينهم فقال عمر ياابالحسن ان جئت بالقران الذي كنت جئت به الى ابى بكر حتى نجتمع عليه فقال عليه السلام هيهات ليس الى ذلك سبيل انما جئت به الى ابى بكر لتقوم الحجة عليكم ولا تقولوا ايوم القيامة انا كناعن هذا غافلين او تقولو ماجئتنا به ان القرآن الذي عندي لا يمسه الا المطهرون والا وصياء من ولدى يظهره و يحمل الناس عليه انتهى فقال عليه السلام نعم اذا قام القائم من ولدى يظهره و يحمل الناس عليه انتهى بلفظه

ترجمہ: اور ابو ڈر غفاری کی روایت میں ہے کہ جب رسول اللہ طرفی ہے وفات پائی تو حضرت علی نے قرآن کو جمع کیا اور اسے لے کر مهاجرین و انصار کے پاس آئے اور ان پر پیش کیا۔ کیونکہ رسول اللہ طرفی نظم نے آپ کو اس بارے میں وصیت کی تھی۔ پس جب حضرت ابو بکر نے اس قرآن کو کھولا تو پہلا صفحہ جو کھولا اس میں مهاجرین وانصار کی تضبح بی تھیں۔ یہ وکھے کر حضرت عمر کو دیڑے اور کہا اے علی اسے والیس لے جاؤکیونکہ جمیں اس کی ضرورت نہیں پس حضرت امیر نے اس لیا اور واپس آئے گھر زید بن شاہت جو قرآن کے گارید بن شاہت جو قرآن کے گاری تھے بلائے گئے۔ حضرت عمر نے اس سے کہا کہ علی قرآن لے کر مارے پاس آیا گا۔ تھا۔

جس میں مہاجرین و انصاری کی تضیین تمیں۔ ہاری رائے ہے کہ ہم قرآن جع کریں۔ اور اس میں جو مہاجرین و انصار کی ہتک و نصیحت ہے اسے ساقط کردیں۔ زید نے اسے قبول کرلیا پھر کہنے لگا آگر میں تمہاری خواہش کے مطابق قرآن کو جمع کر دول۔ اور حضرت علی وہ قرآن طاہر کردیں۔ جوانہوں نے جمع کیا ہے۔ تو کیا تمہارا سب کیا کرایا اکارت نہ جائے۔ گا حضرت عمرنے کہا پھر کیا حیلہ کرنا چاہیے زید نے جواب ویا کہ تم میری نبست حیلہ کے زیادہ جانے والے ہو۔ حضرت عمرنے کہا اس کا حیلہ بجزاس کے نہیں کہ ہم اسے قبل کردیں۔ اور اسکی طرف سے آرام پائیں پس خالد بن ولید کے ہاتھ سے اسے قبل کرانے کی تدیم کی مگروہ اس پر قاور نہ ہوا۔ اس قصد کی تفصیل پہلے آچکی ہے۔ جب حضرت عمر ظیفہ ہوئے تو حضرت علی طلبہ السلام سے ان کا قرآن مانگا۔ تاکہ ہم مل کر اسے تحریف کردیں۔ پس حضرت عمر نے یوں کما۔ اس ابولیس کیا اچھا ہو اگر آپ وہ قرآن ہمیں لادیں۔ جو آپ حضرت ابو بکر کے پاس لائے تھے تاکہ ہم اس پر انفاق کرلیں۔ امیر علیہ السلام نے جو اب ویا کہ ایسا نہیں ہو سکتا ہیں اسے ابو بکر کے پاس لے گیا تھا۔ تاکہ تم اس پر جبت قائم ہوجائے اور قیامت کے دن تم یوں نہ کہو کہ ہم اس سے بے خبر تھے۔ یا کہو کہ تو اسے ہمارے پاس نہیں لایا بخفیق وہ قرآن جو میرے پاس ہے۔ اسے نہیں چھوتے مگرپاک لوگ اور میر اولاد ہیں سے پاس نہیں لایا بخفیق وہ قرآن جو میرے پاس ہے۔ اسے نہیں چھوتے مگرپاک لوگ اور میر اولاد ہیں سے اوصیاء حضرت عمر نے کما کیا اس قرآن کو ظاہر کرنے کے لیے کوئی وقت معلوم ہے۔ حضرت امیر علیہ اسلام لوگوں کو اس پر چلائے گا۔ استھی اس روایت سے بھی ظاہر ہوگا۔ وہ اس قرآن کو ظاہر کرے گا۔ اور لوگوں کو اس پر چلائے گا۔ استھی اس روایت سے بھی ظاہر ہوگا۔ وہ اس قرآن کو ظاہر کرے گا۔ اس میں مہاجرین و انصار کی فضیحتیں ہیں اور قرآن موجود محرف ہے۔

(2) شیعہ کے جیتہ الاسلام کلیٹی اصول کائی (مطبوعہ نو کشور ص ۲۲۳ میں یوں نقل کرتے ہیں۔ عدة من اصحابنا عن سهل بن زیاد عن محمد بن سلیمان عن بعض اصحابه عن ابی الحسن علیه السلام قال قلت له جعلت فداک انا نسمع الایات فی القرآن لیس هی عند نا کما نسمعهاولا نحسن ان نقرأها کما بلغنا عنکم فهل ناٹم فقال لا اقراء و اکما تعلمتم فیجیئکم من یعلمکم۔

ترجمہ: (مخذف اسناد) محر بن سلیمان کے ایک یار کابیان ہے کہ میں نے امام رضاعلیہ السلام سے عرض کیا کہ میں آپ پر قربان ہو جاؤں ہم قرآن کی آئتیں سنتے ہیں جو ہمارے نزدیک آئی نہیں جیسا کہ ہم ان کو آپ (اہلیت) ہم ان کو آپ (اہلیت) سے سنتے ہیں۔ اور نہ ہم ان کی قرات جانتے ہیں جیسا کہ ہم کو آپ (اہلیت) سے کپنی ہے تو کیا ہم اس سب سے گنگار ہوجاتے ہیں۔ امام رضانے فرمایا کہ نہیں تم پڑھے جاؤ جیسا کہ تم نے سیکھا ہے ہیں تہمارے یاں آئے گاجو تہیں سکھائے گا۔ انتھی

اس روایت سے طاہر ہے کہ قرآن موجود جس قرات میں ہے وہ غلط ہے۔ جب امام ممدی علیہ السلام طاہر ہوں گے۔ اور وہ صحیح قرات قرآن علی کی ہے۔ اور وہ صحیح قرات قرآن علی کی ہے۔ علامہ محن کافی لکھتے ہیں۔

ويحمل ماورد عنم عليهم السلام من اختلاف القراة في كلمة واحدة وما وردا ايضا من تصويبهم القرائتين جميعا كما ياتي في مواضعه عليه انهم عليم السلام لمالم يتمكنوا ان يحملواالناس على القراة الصحيحة جوزوا القرأة بغير هاكما اشير اليه بقولهم عليم السلام اقرأو كما تعلمتم فسجيئكم من يعلمكم وذلك كما جوز واقراة اصل القران بما هو عند الناس دون ماهو محفوظ عندهم (تفسير صافى)

ترجمہ: آئمہ علیہ السلام ہے جو ایک کلمہ میں اختلاف قرات مروی ہے اور نیز آئمہ کا دونوں قرانوں کو درست کمنا جو مروی ہے جیسا کہ اپنی جگہوں پر آئے گا۔ وہ اس معنی پر محمول ہے کہ چو نکہ آئمہ لوگوں کو صحیح قرات پڑھانے پر قادر نہ ہوئے۔ اس لیے انہوں نے غلط قرات کو جائز رکھا چنانچہ ان کے قول اقر ؤا کما تعملتم فیجیئکم من یعلمکم میں اس کی طرف اشارہ ہے اور یہ ولی ہی صورت ہے کہ انہوں نے اصل قرآن کو اس طرح پڑھنا جائز رکھا ہے جیسا کہ لوگوں کے قرآنوں میں ہے نہ کہ جو ان کے یاس محفوظ ہے انتھی۔

شیعہ کے خاتم الجہدین محمہ باقر مجلی کے رسالہ رجعت سے حدیث مففل بن عمر کا ایک حصہ بہلے نقل کیا جا چکا ہے۔ اس حدیث میں شیعہ کے امام معصوم جعفرصادق علیہ اسلام مففل سے امام ممدی علیہ السلام کے ظہور کے حالات بیان فرما رہے ہیں۔ چنانچہ فرماتے ہیں کہ جب امام مہدی اور آپ کے اصحاب کوفہ کے نزدیک پہنچیں گے۔ تو ایک خوبصورت جوان حینی مع اپنے چند سواروں کے امام کی زیارت کو آئے گا۔ اور امام سے کچھ سوالات کرے گا جن کی تفصیل حدیث ذکور (رسالہ رجعت مطبوعہ مطبع جعفری لکھنو علی سے) میں بول بیان ہوئی ہے۔ پس حدیث ذکور (رسالہ رجعت معلوعہ مطبع جعفری لکھنو علی کسا کوئی کہ توئی ممدی آل محمد پس کیاست عصائے جدت رسول خدا و انگشتری اووہرو زرہ راکہ فاضل سے نامید ند اعمامہ اش برا کہ سحاب سے سمنتد واسش کہ بربوع نام واشت و ناقہ اش کہ عفیا ہے سمنتد اشترش کہ کہ سحاب سے سمنتد واسش کہ بربوع نام واشت و ناقہ اش کہ عفیا ہے سمنتد اشترش کہ ول دل ہے سمنتد و مہارش کہ حفور سے نامید ند۔ ویرات و کو مصحف امیرالمومین کہ بے تغیر ول دل ہے سمنت و مہارش کہ حفور سے نامیدند۔ ویرات و کو مصحف امیرالمومین کہ بے تغیر و تبدل جمع کرد۔ پس بھہ را حضرت مہدی حاضرگر داند انتھی بلفد۔

ترجمہ: پس جو ان حینی حضرت مہدی کے برابر کھڑا ہو کر کے گا۔ اگر تو بچ کہتا ہے کہ آل محد کا مہدی تو بی ہے تو یہ چیزیں کمال ہیں تیرے نانا رسول خدا کا اعصا ان کی انگوشی ان کی زرہ جے فاضل کہتے ہتے۔ ان کا عالمہ ان کا گھوڑا جے برپوع کہتے تھے۔ ان کا ناقہ جے غفبا کہتے ہتے ان کا گھوڑا جے معفور کہتے ہتے۔ اور جے غفبا کہتے ہتے ان کا درازگوش جے معفور کہتے ہتے۔ اور بہت خضا کہتے ہتے ان کا درازگوش جے معفور کہتے ہتے۔ اور بہت کمال ہے امیر المومنین کا مصحف جو انہوں نے بغیر تغیر تبدل کے جمع کیا پس حضرت

مدى ان سب چزوں كو ماضر كروس كے - انتقى اس رواعت سے فلامر ہے كہ قرآن على تحريف سے پاك ہے اور دو سرے قرآن تحريف سے محفوظ نيس.

شید کے شخ الاسلام خاتم الجہتدین محمہ باقر مجلی اپنی کتاب جلاء العیون (مطبوعہ ایران می ۱۸)

یل یہ لکھتے ہیں چوں ازہدایت آن قوم باہو س کردید بامررسول خدا جمع قرآن اشتغال نمود چوں
عردید کہ جمیع مهاجر و انصار بغیرا زحفرت امیرالموشین و چیار نظراز خواص آخضرت دین و دنیا
فروختد و بان ملمون بیت کردند بہ ابو بحر گفت کہ چرا حضرت علی ابن الی طالب رابہ بیعت خود نی
فرائی و اللہ کہ گراوباتو بیعت تماید ظلافت پر تو قرار نیاید زیرا کہ او ظلیفہ برخق رسول خدا واعلم
واضح و افضل و تعفائے ایں امت است مروماں رارجوع بادبیا راست پس ابو بکر ببوے آل
واشح و افضل و تعفائے این امت است مروماں رارجوع بادبیا راست پس ابو بکر ببوے آل
وزائی وردائے مبارک بردوش نیند ازم تا آبات قرآن راجع زنما یم بعد از چند روز آل کلام
بیروں نیابم و ردائے مبارک بردوش نیند ازم تا آبات قرآن راجع کرد مجد آبد- در مجمع مهاجر و افسار
اللہ ناطق قرآن راجع کردہ در کین گذاشت و سرآزا مرکرد معبد آبد- در مجمع مهاجر و افسار
ندا فرمود کہ اے گردہ مردماں چوں از دفن سید کا نات فارغ گردیم بامر آخضرت جمع قرآن
مشخول شدم و جمیع آبات قرآئی وسورہ فرقائی راجع کردم و نیج آبیہ از آسان نازل نشدہ کہ
حضرت رسول برمن نخواندہ باشد و تاویل آزا بمن تعلیم نمودہ باشد چوں درآن قرآن چند آبیہ
بود کہ کفرو نفاق آن قوم و خلافت علی بن ابی طالب و فرزنداں او صرت کود عمر آزا قبول نہ کود
سید اوصیا خشاک کردید و لجرہ طاہرہ مراجعت نمودو فرمود کہ ایس قرآن را دیگر نخواہید دید

ترجمہ: جب حضرت امیراس قوم کی ہدایت ہے نا امید ہوگے تورسول فدا کی وصیت کے موافق قرآن کے جمع کرنے میں مشغول ہوئے جب عمر نے دیکھا کہ حضرت امیرالمومٹین اور ان کے چار فاص اصحاب کے سوا تمام مهاجرین و انسار نے دین کو دنیا کے بدلے بچ دیا اور اس ملعون کی بیعت کرلی ہے۔ تو ابو بکر ہے کہا کہ تم کس واسطے حضرت علی بن ابی طالب کو اپنی بیعت کو دعوت نہیں دیتے۔ اللہ کی تشم اگر وہ تیری بیعت نہیں کرتا تو تیری ظافت بر قرار نہ رہے گی۔ کیونکہ وہ رسول خدا کا غلیفہ حق اور است میں وہ تیری بیعت نہیں کرتا تو تیری ظافت بر قرار نہ رہے گی۔ کیونکہ وہ رسول خدا کا غلیفہ حق اور امت میں ہے اعلم و ایجی و افضل واقضا ہے۔ اور اس کی طرف لوگوں کا بہت میلان ہے لیں ابو بکر حضرت امیر کی طرف کے ۔ اور ان کو اپنی بیعت کی طرف بلایا حضرت سید اوصیا نے قرایا کہ میں نے سوگند کھائی ہے کہ گرت کو دیوں گا اور چادر کند سے بر نہ ڈالوں گا۔ جب تک کہ قرآن جمع نہ کرلوں۔ چند روز کے بعد اس گرے منہ بر مردگا قرآن ناطق (حضرت امیر) نے قرآن کو جمع کرکے ایک تھیلی میں ڈالا۔ اور بند کرکے اس کے منہ بر مردگا قرآن ناطق (حضرت امیر) نے قرآن کو جمع کرکے ایک تھیلی میں ڈالا۔ اور بند کرکے اس کے منہ بر مردگا قرآن ناطق (حضرت امیر) نے قرآن کو جمع کرکے ایک تھیلی میں ڈالا۔ اور بند کرکے اس کے منہ بر مردگا قرآن ناطق (حضرت امیر) نے قرآن کو جمع کرکے ایک تھیلی میں ڈالا۔ اور بند کرکے اس کے منہ بر مردگا

دی- اور اے لے کر مبحد میں آئے۔ اور مهاجرین و انصار میں پکار کر کہا کہ اے لوگوں کے گروہ جب میں جناب سرور کائنات کے دفن کرنے سے فارغ ہوا تو حسب وصیت آنخضرت قرآن کے جمع کرنے میں مشغول ہوگیا۔ اور میں نے تمام آیات و سورہ قرآنی کو جمع کیا آسان سے کوئی الی آیت نازل نہ ہوئی کہ حضرت رسول خدا نے جمحہ پر نہ پڑی ہو اور اس کی ناویل جمحے نہ بتائی ہو۔ چو نکہ اس قرآن میں چند الی قرشت تعمیل کہ جن سے مهاجرین و انصار کا کفرو نفاق اور علی بن ابی طالب اور ان کے بیوں کی خلافت صرت طور پر جابت تھی۔ اس لیے عمر نے اس قرآن کو جول نہ کیا۔ جناب سید اوصیا خفا ہو گئے۔ اور جمرہ طاہر کو واپس ہوئے اور قربایا کہ تم اس قرآن کو بھرنہ دیکھو گے۔ یہاں تک کہ حضرت قائم آل حجہ ظاہر کو واپس ہوئے اور قربایا کہ تم اس قرآن کو بھرنہ دیکھو گے۔ یہاں تک کہ حضرت قائم آل حجہ ظاہر ہوں۔ انسمی اس عبارت سے ظاہر ہے کہ قرآن علی میں چند آئیس ایس تھیں۔ جن میں مہاجرین و الصار کے کفرو نفاق کی صراحت تھی۔ اب قرآن موجود نے مہاجرین و انصار کے کفرو نفاق کی صراحت تھی۔ اب قرآن موجود نے مہاجرین و انصار کے فضائل و مناقب خابت ہوتے ہیں۔ اور اس میں کوئی الیسی آیت نہیں جو خلافت کی ایسی مرت ہو۔

شیعہ کے عارف کائل و حکیم سالک سید ججہ باقر موسوی اپنی کتاب ، کرالجوا ہر خاقائی (مطبوعہ ایران او میں ۱۳۹۲ھ ص ۲۲۱) میں یوں لکھتے ہیں چوں حضرت وانست کہ ایشاں در مقام غدر و کر ندر یاری او نمیکنند رفت وو خانہ نشست و مشغول جج قرآن شد و از خانہ بیروں نیامہ تا ہمہ راجح کرد۔ چہ قرآن متفرق بود ور خانہ نشست و مشغول جج تو آن شد و از خانہ بیروں نیامہ گراز برائے نمار تا قرآن راجح فرمود کہ من سوگند یاد کردہ ام کہ دوا تگیرم از خانہ بیروں نیام گراز برائے نمار تا قرآن راجح کم فرمود کہ من سوگند یاد کردہ تا حضرت مجموع قرآن راجح کرد و در میان جامہ گذاشت و مرش رامر کردو معجد آوردور و تحے کہ ابو بکر باصحابہ در معجد بودند و ندا کردیا آواز بلند کہ ایما الناس بامر کردو معجد آوردور و تحے کہ ابو بکر باصحابہ در معجد بودند و ندا کردیا آواز بلند کہ ایما الناس پول معضرت رسول از دنیا رفت مشغول غسل جمیزو تنفین اوگردیدم و چیج آیات قرآنی و سور فرقانی در اس خود مول برمن نخواندہ باشد و تافیل راجح کردہ ام و تی سورہ و آبیا از آبیان نازل نشدہ است کہ حضرت رسول برمن نخواندہ باشد و توانی راجح کردہ ام و تی سورہ و آبیا از آبیان نازل نشدہ است کہ حضرت رسول برمن نخواندہ باشد و تابیل آنرامن تعلیم نخود را بیاد شانیا وردم و شارا بمکاب خدا دعوت کردم چوں دران قرور ان او بود صربی ابیاری خود نظیم میں خود را بیاد شان آن تو موان آن آن و نازن دان او بود صربی بین خطاب آن قرآن را قبول نہ کردہ گفت آنچہ از قرآن بلاست مارابس است و احتیاج بیقرآن تو ندار بم سید اوصیا خشن کی گردید - فرمودایس قرآن را نواند کی ادور ترجمہ ضرورت تائی بلاخلہ اس عبارت کے اردو ترجمہ ضرورت

مبیں کیونکہ اس کا بھی خلاصہ مطلب وہی ہے جو عیارت جلا العیون کا ہے۔

کتاب ارشاد العوام جو عوام شیعد کے اعتقادات کی تقیج کے لیے لکھی گئی ہے۔ اس کی جلد اول مطبوعہ ایران ص ۱۳۵ میں مصنف نے پول لکھا ہے و آنچہ رسیدہ است در احادث کہ حضرت صاحب ہے آورد در شرح جدید کتاب جیددے جمیں شرع است کہ آنرا تازہ میکندو آنچہ در آن بواسط تقیہ و بجت عدم مصلحت مخفی شدہ آشکار خواد کرد و کتاب جمیں کتاب است کہ بطور کہ روزاول نازل دید تا شدہ بود و حضرت امیر علیہ السلام جمع فرمودہ بود منافقین قبول نہ کردند آخضرت فرمود کہ دیگر آل رانخوابیدہ ظبور صاحب الا مرعلیہ السلام آل بردرگواروں قرآن راخود طاہر ساخت و بدست مردم خواہدواد و آنست تفصیل احوال منافقین و اہل حق و اذیں جست برمردم شدید خواہد بود چراکہ خدمت بیشوایاں خود در آل خواہند یافت۔ (انتھی بلاخلہ)

ترجمہ: اور سے جو صدیقوں میں آیا ہے کہ حضرت اہام مہدی ایک نی شریعت اور ایک نی کتاب لائیں گے۔ سونی شریعت سے مراد ایسی شریعت ہے کہ جس کو کازہ کریں گے۔ اور جو پچھ اس میں تقیہ اور عدم مصلحت کی وجہ سے پوشیدہ رہا ہوگا۔ اسے ظاہر کردیں گے۔ اور نی کتاب سے مراد میں کتاب یعنی قرآن ہے جس طرح کہ روز اول نازل ہوا تھا اور حضرت امیر علیہ السلام نے جمع کیا تھا۔ اور منافقین نے قبول نہ کیا تھا اور حضرت امام مہدی کے ظہور تک تم پھراس کو نہ دیکھو گے۔ وہ برگوار امام مہدی ای قرآن کو ظاہر کریں گے۔ اور لوگوں کے ہاتھوں میں دیں گے۔ اور اس قرآن میں منافقین اور اہل حق کے طلاح کی تفصیل ہے۔ ای وجہ سے وہ قرآن لوگوں پر ناگوار ہوگا۔ کیونکہ اس میں منافقین اور اہل حق کے طلاح کی تفصیل ہے۔ ای وجہ سے وہ قرآن لوگوں پر ناگوار ہوگا۔ کیونکہ اس میں وہ سے چیشواؤں کی غدمت پائیں گے انتھی۔

اس عبارت سے قرآن علی کی نسبت شیعہ کا یہ عقیدہ ظاہر ہے۔ کہ اس ہیں صحابہ کرام کے مثالب اور اہلیت کے مناقب بالتفعیل فرکور ہوں گے۔ مصنف نے ای مضمون کو دو سری جگہ ارشاد العوام جلد سوم ص کا ایوں اوا کیا ہے والا قرآن جدیدے نیاورد چنا تکہ ملا حدہ ایس زمان خیال کردہ اند بلے ہمیں قرآنت نظم آزا بطور۔ مطمیکہ پینیبر قرار وادہ کنند و آئیہ آزاں و ذریدہ اندیا تحریف کردہ اند واض کنند وایس کتاب جدید نیاشد۔ بلکہ ہال کتاب قدیم است۔ انتھی بلفاد۔ ترجمہ ورنہ امام مہدی کوئی تی کتاب نہ لائمیں کے جیسا کہ اس زمانہ کے طحد لوگ خیال کر بیٹھے ہیں۔ بلکہ می قرآن ہے اس کی نظم کو اس طرح کر دیں گے جیسا کہ اس زمانہ کے طحد لوگ خیال کر بیٹھے ہیں۔ بلکہ می قرآن ہے اس کی نظم کو اس طرح کر دیں گے جیسا کہ محمدی کوئی تی کتاب نہ ویل کتاب نہ ویل کتاب نہ دیل کر دیں گے اور میہ نئی کتاب نہ ہوگی۔ انتھی۔ واض کر دیں گے اور میہ نئی کتاب نہ ہوگی۔ بلکہ وی کتاب قدیم ہوگی۔ انتھی۔ وحید العصروالزمائی قاضل ہمدانی محمد رضا ابن ایش اپنی مشہور کتاب ورائشیم خاقائی (۱۳) شیعہ کے وحید العصروالزمائی قاضل ہمدانی محمد رضا ابن ایش اپنی مشہور کتاب ورائشیم خاقائی

(مطبوعہ ایران- جلد اول ص ۱۹) بو فقعی شاہ قاجار شاہ ایران کے علم سے تصنیف کی جمی قرآن میں وقوع تخریف کی بخث میں مکرین و قائلین ہرود کے ولائل بیان کرکے یوں لکھتے ہیں۔ وحق آنست کہ آگرچہ مخن بسیار گفتہ اندافاما ور تخقیق نسفتہ اند و دلیل طرفین الاسا ٹائی مدخول و آیت لا یا تبدہ الباطل و انا لمه لمحافظون قابل توجیہ۔ وتو فرو وائل پر تغیر و تبدیل ہنگامہ غصب ظافت یا آن ہمہ جانات ارباب مثالات بر صد ضرورت وبداہت رسیدہ۔ مکر مکابر عقل صحیح و مخالف نقل صریح وایں کہ جناب اسد اللہ الغالب علی بن ابی طالب قرآن۔ راجح و در مجمح صحابہ حاضر نمود ند و مخالف نقل صریح وایں کہ جناب آزا مخفی بعد ہرچہ اصرار کردند بیروں نیا دروند۔ وآل قرآن نزد آئمہ طاہرین والمان نزد قائم است احدے از علائے المہ رضوان اللہ علیم راحمہ نے نہ وال قرآن آل جناب عین ایں قرآن بود۔ دیگر اختصاص آنبان آنخضرت و افتار آئمہ واختفاء اللہ یعن ایں قرآن بود۔ دیگر اختصاص آنبان آنخضرت و افتار آئمہ واختفاء آل چہ معنی واشت وایں کہ اخبار والہ بر تحریف ہمہ ضعیفتہ الستہ وعدیم المستد ثد قولیت ضعیف بل کذب محض و اغلب انما صحیحتہ المند واضع دلائل خواہد شد انشاء اللہ تعالی بعد ورطی تغیر آیات واضع دلائل خواہد شد انتھی مائنگ

ترجمہ: اور حق ہے ہے اگرچہ انہوں نے بحث بہت کی ہے گر حقیق کا موتی نہیں پرویا۔ اور طرفین بالخصوص محکرین تحریف کی دلیل کرور ہے۔ اور محکرین تحریف نے جو دو آئیس لینی لا یا تیا المباطل وانا لمہ لمحافظون پیش کی ہیں وہ قاتل توجہ ہیں اور باوجود گراہوں کی اس تمام جمالت و حمادت کے حضرت امیر کی خلافت غصب کرنے کے وقت قران کے بدل دینے کے اسباب کا کیر ہوتا ضرورت و بداہت کی صد کو پہنچا ہوا ہے اس امر کا محر عشل صحح کے ساتھ مکابرہ کرنے والا اور نقل صحرت کا خلاف ہے اور یہ بات کہ جناب اسد اللہ الغالب علی بن ابی طالب نے قرآن کو بھت کیا اور صحابہ حرت کا خلاف ہے اور یہ بات کہ جناب اسد اللہ الغالب علی بن ابی طالب نے قرآن کو بھت کیا اور صحابہ حرت کی حاصر کیا۔ اور ہم سحابہ نے جمع میں صاحر کیا اور خلافین نے قرآن علی کو قبول نہ کیا اور آنجناب نے اس کو چھپا لیا۔ اور اب امام مہدی کے جمع میں صاحر کیا۔ مگر آپ نے نہ و کھایا اور وہ قرآن آئمہ طاہرین کے پاس رہا۔ اور اب امام مہدی کے بہر چند اصرار کیا۔ مگر آن خانمہ رضوان اللہ علیم میں سے کی کو کلام نیس۔ آگر قرآن علی اس مہدی کے باس ہما۔ اس تمام ہیں علیا امام ہمدی ان اللہ علیم میں سے کی کو کلام نیس۔ آگر قرآن علی اس مہدی وقرآن کا عین قاتو پھر آنجناب کے ساتھ اس کے اختصاص اور اس پر آئمہ کے گو کرنے اور اسے پوشیدہ میں معیف شد والی اور بے سند ہیں۔ ایک ضعیف قول ہے بلکہ محض جمون جو سند قرآن سب ضعیف سند والی اور بے سند ہیں۔ ایک ضعیف قول ہے بلکہ محض جمون ہے اکثر روایات تحریف صحح سند والی اور کتب معتبرہ سے ماخوذ ہیں۔ حب اگر تھا ہم المدی کی دواب ہیں ایول فیمل المدی کی حواب ہیں ایول فیمل کی سے جی آگرچہ طاہر کلام سید سند علم المدی دالمت بریقائے ترغیب عمد نبوی وار ولا کن قول فیمل



ور فيمقام آنست كه بقائ ترتيب في الجمله مسلم است بس أكر ورحقيقت مراد جناب ايثان جميس است نعم الوفاق و در نیمورت عموم کلام شال ماوّل بالتخصیص خوابد بود و مصردف عن الظاهر واگر مراد ترتیب جمع سورو تمای آیات است فمو محل نظربل هو ظاهرا السفاد کیف و برای نقدیر مسکفل جناب ولایت ملب برائے جمع قرآن و اشتغال آل جناب به ترتیب آل بعد وفات جناب رسالت مآب که از روایات متیواتره متغل مليها بينالفريقين ثابت است عبث ولغو محض نيود و في الروايات المعصو 🕒 انه مخزون مودع عند صاحب العصر عليه السلام انتهى بلغد (ضربت حيدريه- جلد ثاني ص ٥٨) ترجمه: أكرچه سيد سندعكم الهدى كا ظاهر كام ولالت كرتا ہے كه جناب وغيبر خدا كے عمد ميں قرآن جس ترتيب سے تفاوى ترتيب اب تك باقى ہے مكر قول فیمل اس مقام میں یہ ہے کہ ترتیب عمد نبوی سے فی الجملہ باتی رہنامسلم ہے۔ پس آگر حقیقت میں سید علم الهدی کی مراد میں ہے تو میہ خوب موافقت ہے اور اس صورت میں ان کے کلام کا عموم تخصیص کے ساتھ ماؤل اور ظاہرے معروف ہوگا۔ اور اگر علم المدی کے مراد تمام سورتوں اور تمام آیتوں کی ترتیب ہے تو یہ محل تامل بلکہ ظاہر الفساد ہے۔ ظاہر الفساد کیوں نہ ہو کہ اس صورت میں جناب رسالت ماب کی وفات شریف کے بعد جناب مولی مرتضیٰ کا جمع قرآن کو اپنے ذمہ لیٹا اور آپ کا اس کی ترتیب میں قول ہونا جیسا کہ فریقین کی روایات متواترہ متنق ملیہا ہے ثابت ہے عیث اور محض لغو تھرے گا۔ اور آئمہ معصومین کی روانیتوں میں ہے کہ وہ قرآن علی امام مهدی علیه السلام کے ہاں خزانہ وذخیرہ میں ہے- انتقی اس عبارت میں مجتمد لکھنوی نے روایات جمع قرآن علی کے تواٹر کو جو اہل سنت کی طرف بھی منسوب کیا ہے وہ غلط ہے کیونکہ اہل سنت کو تو تواتر کا کیا ذکر ان روایات کی صحت میں بھی کلام ہے جس میں حضرت على كرم الله وجهد كا قرآن كا جمع كرنا فدكور ب- اكر ايس آحادكي صحت يابيه ثبوت كو پنج جائے تو الل سنت کے نزدیک جمع سے وہ مراد نہیں جو شیعہ لیتے ہیں جیسا کہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں۔

مولوی سید ناصر حسین نے رش لنبال علی اصحاب الفلال (مطبوعہ مطبع مجمع البحرین بودیاتہ ۱۸۲۱ء ملا اللہ ملا اللہ مل ۱۹ میں یوں لکھا ہے۔ حقیقت سے ہے کہ حضرت امیر نے قرآن کو چھپایا نہیں۔ بلکہ بمصداق حدیث نبوی لن یتفر قاحتی یو دا علے الحوض حکمت بالغہ حضرت حکیم علی الاطلاق کی مقتضی اس بات کی ہوئی کہ جیسا جہور امت نے اوصیا ہے تمک چھوڑا ویسائی اس قرآن کے فیوض ہے بھی محروم رہیں جس وقت امام ثانی عشر بھکم خالق وارد پردہ نفاے جلوہ گاہ ظہور میں رونق افروز ہوں گے۔ انہیں کے ساتھ وہ قرآن بھی ظاہر ہوگا۔ اور مدارست اس کی شائع ہوگی اس میں الزام کی کیا جگہ ہے۔ منافقین امت کی بدی اعمال سے تقلین کو غائب رکھنا خالق عالم اس میں الزام کی کیا جگہ ہے۔ منافقین امت کی بدی اعمال سے تقلین کو غائب رکھنا خالق عالم اس میں الزام کی کیا جگہ ہے۔ منافقین امت کی بدی اعمال سے تقلین کو غائب رکھنا خالق عالم اس میں الزام کی کیا جگہ ہے۔ منافقین امت کی بدی اعمال سے تقلین کو غائب رکھنا خالق عالم

(ID)

شیعہ کو صدیث تقلین پر عامل ہونے کا بڑا وعوے ہے مگر جب ان کا تقل اکبر بینی قرآن غائب ہو اور ان کا تفل اکبر بینی قرآن غائب ہو اور ان کا تفک الفر العلی العل العلل باطل ہے۔ اور ان کا تفک العلم العلم بالکل باطل ہے۔

شیعہ کے بیخ الاسلام خاتم الجتدين حيات القلوب (مطبوعه نو كشور جلد سوم مل ١١٨ يم لكية بین اور حدیث وارد شده که ممث قرآن ور فضائل ایشال است و ممنث ور مثالب وشمنال ایثال و بعضے از روایات رابع ورد شدہ است انتھی بلافد امبتع بن نباتہ کا بیان ہے کہ میں نے امير المومنين عليه السلام كو سناكه فرماري تق - كه قرآن تين حص اتراب ايك تهاكي المليت اور وشمنان ابل بیت کے بارے میں ہے اور ایک تنائی سنن و امثال اور ایک تمائی فرائض احكام بين- (اصول كافي ص ١٩٣٩) اور حيات القلوب جلد سوم ص ٨٥) و كليني روايات كرده است بند معترازا امام محمیا قرعلیه السلام که دعوے نه کرده است احدے از مروم که جم ہمہ قرآن راچنانکہ خدا نازل کروہ است ہے داند مگروو کوئے جمع نہ کردہ است و حفظ نہ کردہ است قرآن را فرستاده است مرعلى بن اني طالب عليه السلام و آئمه بعد او عليهم السلام انتهى بلغد-پیشراس کے کہ ہم عبارت ندکور بالا کے نتائج کی طرف ناظرین کی توجہ میذول کرائیں قرآن علی کے متعلق شیعہ کے علامہ مرزا ابو القاسم مصنف قوانین الاصول کی عبارت بر تنقیدی نظر ڈالنا ضروری معلوم ہوتا ہے۔ مرزا صاحب کے کلام سے متبادر ہوتا ہے کہ بیخ مصدق کے رسالہ اعتقادات میں درج ہے کہ جن روایات میں بیہ وارد ہے کہ قرآن علی میں بیہ زیادتی تھی جو اور قرآنوں میں نہ تھی- اس سے مرادیہ ہے کہ وہ زیادتی قرآن میں نہ تھی بلکہ از قبیل احادیث قدسیہ بھی تھی جو قرآن کے ساتھ بین الدلتین جمع کی گئی تھیں۔ اس وقت خوش فتمتی سے فیخ صدوق کارسالہ اعتقادات مطبوعہ ایران ہارے سامنے ہے اس کے اخیر میں سال طبع ۱۲۷۳ ھ اور کاتب کا نام حسن بن سمیع دیا ہوا ہے اس میں قرآن کے متعلق یہ عبارت ورج ہے -

قال الشيخ اعتقاد نا ان القرآن الذى انزله الله تعالى على نبيه محمد هو مابين الدفتين وهو مافى ايدى الناس ليس باكثر من ذلك و مبلغ سوره عند الناس مائة وار بعة عشر سورة وعندا ان الضحى والم نشرح سورة واحدة ولايلاف والم تركيف سورة واحدة ومن نسب الينا انا نقول انه اكثر من ذلك فهو كاذب وماروى من ثواب قراء ةكل سورة من القرآن و ثواب من ختم القرآن كله وجواز قراء ة سورتين في ركعة فريضة تصديق قراء ة سورتين في ركعة فريضة تصديق

لما قلناه في امر القرآن وان مبلغه مافي ايدي الناس وكذلك ماروي من النهي عن قراة القرآن ان كله في ليلة واحدة وانه لا يجوز ان يختم القرآن في اقل من ثلثة ايام تصديق لما قلنا ايضاً بل نقول انه قد نزل من الوحى الذي نيس بالقرآن مالوجمع المي القرآن لكان مبلغه مقدار سبع عشرة الف اية وذلك مثل قول جبرائيل للنبي ان الله يقول لك يامحمد دار خلقي مثل مااداري ومثل قوله اتق شحنا الناس وعداوتهم ومثل قوله عش ماشئت فانك ميت واحب ماشئت فانك مغارقه واعمل ماشئت فانك ملاقيه وشرف المومن صلوته بالليل وعزه كف الازي عن الناس ومثل قول النبي مازال جبرئيل يوصيني بالسواك حتى خفت ان اخفى وارد ومازال يوصيني بالجار حتى ظننت انه سيورثه ومازال يوصيني بالمواة حتى ظننت انه لاينبغي طلاقها وهازال يوصيني بالملوك حتى ظننت انه سيضرب له اجلا يعتق فيه ومثل قول جبرئيل حين فرغ من غروالخندق يامحمد ان الله تبارك و تعالى يامرك ان لا تصلے الصعر الا بيني قريظة و مثل قوله امرني ربى بمدارة الناس كما امرنى باداء الفرائض مثل قوله انامعاشر الانبياء امر تا ان لا تكلم الناس الا بمقدار عقولم ومثل قوله ان جبرائيل اتاني من قبل ربي بامرقرت به عيني وفرح به صدري وقلبي قال أن الله عزوجل يقول أن عليا أمير المومنين وقائد الغرالمحجلين ومثل قوله نزل علي جبرئيل فقال يامحمد ان الله تبارك و تعالٰي زوج فاطمة عليا من فوق عرشه واشهد علي ذلك خيار ملائكته فزوجها منه في الارض واشهد على ذلك خيار الناس ومثل هذا كثير كله وحي ليس بقرآن ولو كان قرآناً لكان مقرونا به وموصولا اليه غير مفصول عنه كما قال امير المؤمنين لما جمعه فلما جاء به فقال لهم هذاكتاب الله ربكم كما انزل علي نبيكم لم يزد فيه حرف فقالو الاحاجة لنافيه عند نا مثل الذي عندك فانصرف وهو يقول فنبذوه وزاء ظهورهم واشتر وابه ثمنا قليلا فبئس مايشترون انتهم بلفظه

ترجمہ: شخ نے کما کہ ہمارا اعتقادیہ ہے کہ قرآن جو اللہ تعالی نے اپنے ہی ہر نازل کیاوہ مالین الدفتین ہے اور وہ وہی ہے جو لوگوں کے ہاتھوں میں ہے اور اس سے زیادہ نمیں ہے اور اس کی سورتوں کی تعداد لوگوں کے نزدیک ایک سوچودہ ہے۔ گرہمارے نزدیک صنی اور الم نشرح ایک سورت ہے۔ اور

لایلاف اور الم ترکیف ایک سورۃ ہے جو مخص اس قول کو ہماری طرف منسوب کرتا ہے کہ قرآن اس

ے زیادہ ہے وہ جھوٹا ہے اور بیہ جو روایت ہے کہ قرآن کی ہر سورت پڑھنے کا اتنا تواب ہے اور جو
سارے قرآن کو ختم کرے اس کو اتنا تواب ملتا ہے اور ایک رکھت میں دو سورتوں کا پڑھنا جائز ہے۔ اور
قرض کی رکھت ہیں دو سورتوں کا ملانا منع ہے۔ اس تمام سے قرآن کے بارے میں ہمارے عقیدے کی
تقدیق ہوتی ہے بلکہ ہم کہتے ہیں کہ وی سے جو قرآن میں ہے اتنا نازل ہوا ہے کہ اگر اسے قرآن کے
ساتھ ملا دیا جائے تو اس کامجموعہ سرہ ہزار آیت کی مقدار ہوجائے۔ اور وہ مثل جر سیل کے ہواسطے نی

ان الله يقول لك يا محمد دار خلقى مثال ماادارى-اور مثل قول آخضرت ك

اتق شحناء الناس وعداوتهم اور مثل قول آنحضرت کے عش ماشئت فانک میت واحب ماشئت فانک مفارقه واعمل ماشئت فانک ملاقیه وشرف المومن صلوته باللیل وعزه کف الاذی عن الناس اور مثل قول نبی کے مازال جبرئیل یوصینی بالسواک حتی خفت ان احفی وارد ومازال یوصینی بالجار حتی ظننت انه سیور ثه ومازال یوصینی بالمراة حتی ظننت انه لا ینبغی طلاقها ومازال یوصینی بالمملوک حتی ظننت ان سیضرب له اجلا یعتق فیه

اور مثل قول جرئيل كے ب جب حضرت غزوہ خندي سے فارغ موت

یا محمد ان لله تبارک و تعالٰی یا مرک ان لا تصلے العصر الابینی قریظة اور مثل قول قول آنحضرت امرنی ربی بمداراة الناس کما امرنی باداء الفرائض اور مثل قول آنحضرت کے انا معاشر الانبیاء امرنا ان لانکلم الناس لا بمقدار عقولهم اور مثل قول آنحضرت کے ان جبرئیل اتانی من قبل ربی بامر قرت به عینی وفرح به صدری وقلبی قال ان الله عزوجل یقول ان علیا امیر المؤمنین وقائد الغر المحجلین علی اور مثل قول آنحضرت کے نزل علی جبرئیل فقال یا محمدان المحجلین علی اور مثل قول آنحضرت کے نزل علی جبرئیل فقال یا محمدان الله تبارک و تعالٰی زوج فاطمة علیا من فوق عرشه واشهد علے ذلک خیار ملئکته فزوجها منه فی الارض واشهد علی ذلک خیارالناس۔

اور مثل اس کے بہت ہیں یہ سب وی ہے جو قرآن نہیں ہے۔ اگر یہ قرآن ہو یا تو قرآن سے مقرون ہو یا ۔ اور قرآن سے مقرون ہو یا ۔ اور قرآن سے ہو یا اور اس سے جدا نہ ہو یا۔ چنانچہ جب امیر الموسنین قرآن جمع



کرکے لائے تو ان سے کہا۔ یہ اللہ تہمارے پروروگار کی کتاب ہے جیسا کہ تہمارے پنجبر ناذل کی گئی ہے۔
اس میں ایک حرف بھی زیادہ نہیں کیا گیا یہ س کر انہوں نے ہمیں اس کی ضرورت نہیں ہمارے حل اس
کے ہے جو تیرے پاس ہے پس امیر المومنین واپس ہوئے اور یہ فرما رہے تھے۔ فنبلوہ وزاء ظہور هم
واشتروابه ثمنا قلیلا فبنس ما یشترون (پس انہول نے اس کو پس پشت ڈال دیا ۔ اور اس کو تھوڑی می قیمت پر جی لیا۔ پس کیا ہی بری وہ قیمت ہے جو لیتے ہیں (عران آل ع ۱۱۰ نتی)

شیخ صدوق کی عبارت کا ظلاصہ سے ہے۔

(۱) قرآن جو الله عزوجل نے اپنے صبیب پاک پر نازل کیا وہ مابین الدفتین ہے اور بین الدفتین انتابی ہے جو آج لوگوں کے ہاتھوں بیں ہے اور اس سے زیادہ نہیں ہے جو شخص سے کہتا ہے کہ شیعہ کاقول ہے کہ قرآن اس سے زیادہ ہے وہ جھوٹا ہے۔

(۲) اگر قرآن (وی متلو) کے ساتھ احادیث (وی غیر متلو) ملائی جائیں تو وی متلو وغیر متلو کا مجموعہ ہزار آچوں کی مقدار ہوگا۔

(۲) اگر احادیث جو وحی غیر متلویں قرآن ہوتیں قوقرآن کے ساتھ بین الدفتین جمع ہوتیں۔ چونکہ
الی وحی قرآن نہیں للڈا حضرت امیر المومنین نے اسے بین الدفتین قرآن کے ساتھ جمع نہیں
کیا بلکہ محض قرآن کو جمع کرکے صاف فرما دیا۔ کہ یہ اللہ تعالیٰ کی کتاب ہے جیسا کہ پیغیر خدا پر
نازل ہوئی۔ اس بیں ایک حرف بھی زیادہ نہیں کیا گیا گر صحابہ نے یہ جواب دیا کہ ہمیں اس کی
ضرورت نہیں کیونکہ ہمارے پاس بھی تہمارے قرآن کی مثل موجود ہے یہ س کر حضرت امیر
خفا ہو کرواپس ہوئے اور ایوں فرمارہ جھے فنبذوہ ور آء ظهور ھم (الایت)
سال امور ذہل قابل غور ہیں۔

ی ضدوق کے کلام کا اول و آخر متناقض ہیں۔ شروع میں تو شخ صاحب نے کمہ دیا کہ قرآن ہو اللہ تعالی نے نازل کیا وہی ہے جو آج لوگوں کے ہاتھوں میں ہے گرافیر میں قرآن علی کی نبت ہے کمہ دیا کہ صحابہ نے اسے قبول نہ کیا۔ اس پر امیرالمومنین نے خفا ہو کرفرمایا فنبذوہ و داء ظہور ھم اس سے ظاہر ہے کہ قرآن علی وتی نہ تھا۔ جو آج ہمارے پاس موجود ہے اگر قرآن علی اور قرآن موجود ایک ہوتے تو صحابہ کرام قرآن علی کے قبول کرنے سے انکار نہ کرتے اور نہ حضرت امیر خفا ہو کریے فرماتے کہ انہوں نے اغراض دیوی کے لیے اصل قرآن پشت ڈال نہ حضرت امیر خفا ہو کریے فرماتے کہ انہوں نے اغراض دیوی کے لیے اصل قرآن پشت ڈال ویا۔ فنبذہ و راء ظہور ھم

جو اولي حطرت اميرن قرائي وه يهل آچكى ب- (ديمو عنه شيد)

(1)

(۲) قرآن علی میں صرف قرآن ہی تھا اس کے ساتھ احادیث جمع نہ تھیں۔ اس واسطے معزت امیر کے ساتھ احادیث جمع نہ تھیں۔ اس واسطے معزت امیر کے فرمایا کہ بیہ اللہ عزوجل کی کتاب ہے جیسا کہ نازل ہوئی ہے اور اس میں ایک حرف ہمی زیادہ نہیں کیا گیا۔

(۳) شیخ صدوق نے صرف یہ بیان کیا ہے کہ اگر وہی مثلو دغیر مثلو دونوں کو ملادیں تو ان کا مجموعہ سترہ ہزار آیت کی مقدار ہوگا' اور یہ ذکر نہیں کیا کہ احادیث میں جو وارد ہے۔ کہ قرآن علی میں زیادتی ہے تو اس سے مراو ہے کہ قرآن علی کے ساتھ بین الدفتین احادیث بھی تھیں۔ یہ شیعہ کیا دیاری ہوائقا ہم کا اختراع ہے اس کی کیفیت یہ ہے کہ اصول کافی (مطبوعہ) نو کشور میں المان مدیث فہ کور ہے۔

على بن الحكم عن هشام بن سالم عن ابى عبدالله عليه السلام قال ان القران الذى جاء-

(محذف اسناد) امام جعفر صادق نے فرمایا کہ قرآن جو جرئیل علیہ السلام حضرت محمد صلی اللہ کے باس لے کر آئے سترہ ہزار آئتیں ہیں۔ انتھی بلاء یمال شیعہ کوب مشکل پیش آرہی ہے۔ کہ قرآن موجود میں آیات کی تعداد جیم بزار دوسو چھتیں ہے الله ان کو قرآن موجود میں تحریف بالنقصان کااعتراف كرنايراً ب اور ميى ان كاعقيده ب مراس عقيده ك قبائح كا ان كو آئے دن خميازه بھكتنا يرا اب- اور سینوں کے ساتھ مناظرو میں ہر جگہ منہ کی کھانی پڑتی ہے۔ اس لیے وہ اس عقیدہ کے اعلان سے جھکتے ہیں یمی وجہ ہے کہ ان کے بعض مجتدین عامل بالتقیہ ہو کر اپنے اصلی عقیدہ کو چھیانے کے لیے دوراز کار آویلیس کرنے کلتے ہیں۔ جسیاکہ علامہ مرازا ابو القاسم نے کی ہے قوانین الاصول میں قرآن علی میں زیادتی کی جو تاویل بحوالہ رسالہ اعتقادات صدوق نقل کی گئی ہے رسالہ مذکورہ میں نہ وہ عبارت ہے او نہ اس کی تاویل کا کہیں ذکر ہے۔ گرعلامہ موصوف رسالہ ندکورہ سترہ ہزار کے عدد کو دیکھ کرخلق خدا کو مگمراہ كررے ہيں۔ يد يہ فيخ صدوق پر افترا ہے كيونكد شيخ صاحب تو قرآن على ميں احاديث كى زيادتى كے قائل مى منیں بسرحال یہ تطبیق جو مرزا صاحب نے میخ صاحب کی طرف منسوب کی ہے بالکل غلط ہے کیونکہ حدیث اصول کافی کی جو ہم نے اور نقل کی ہے۔ اس میں شیعہ کے امام معصرم یہ فرماتے ہیں۔ قرآن جو جرئیل علیہ السلام حضرت محمد صلی اللہ کے پاس لے کر آئے سترہ ہزار آئتیں میں۔ اس سے صاف ظاہر ہے کہ قرآن کامل میں سترہ ہزار آئٹیں ہیں اور وہ قرآن بجز قرآن علی اور نہیں ہو سکتا۔ جاری تقریرے بیٹنخ صدوق کی صداقت کی بھی قلعی کھل گئی۔ بھلاشیعہ کے تین سو سال سے ذا كد ك متفقه عقيده كو چميانا خاله جي كا كمرنس - آخر افجوائ از كوز اجال تزودكه دردست فيخ صاحب

کے قلم سے نکل ہی کمیا کہ جب محابہ نے قرآن علی کو قبول نہ کیا۔ تو معزت امیر فرمانے لکے ۔ کہ انہوں نے کتاب کامل وغیرہ محرف کو بغرض دیوی اس بہت ڈال دیا۔ شیخ صاحب بر کیامو قوف ہے۔ سید علم المدی اور شیخ الطاکف طوی اور ابو علی طبری مجی ای قتم کے لوگ ہیں جیساکہ ہم پہلے بتا چکے ہیں اس مختریان ے شیعہ کے علاوہ مرز ابو القاسم کی ویانتداری بھی طشت ازبام ہوگئ- بدوی علامہ ہے جس نے لکھ دیا کہ جمہور جہتدین شیعہ عدم تحریف قرآن کے قائل ہیں جو محض دورغ ہے ہے ہے اصولی شیعہ کا نمونہ اب ہم عبارت مذکورہ بالا کے خلاصہ کی طرف متوجہ ہوتے ہیں۔ ارروے عبارت مذکورہ بالا کے شیعہ کی كتب معتره كى روايات سے جو مستفيض بلكه متواتر بين بيد ثابت سے كه حضرت مولے مرتبے نے حسب وصیت حضور رسول اکرم ساتیم قرآن ہے ۔ کہ قرآن موجود کی نسبت قرآن علی میں از قبیل وی ملوبہت کچھ زیادہ ہے۔ چنانچہ قرآن علی اہل بیت کے مناقب اور صحابہ کے مثالب اور حضرت علی کی خلافت بلا فصل اور ویکر آئم کی امامت کی نصوص موجود ہیں- اور جو آیات آتخضرت ملی کیا کے منازل وظوات میں نازل ہو کیں۔ وہ صرف قرآن علی ہی میں ہیں۔ اور روایات معصومیہ سے بید بھی ثابت ہے کہ قرآن علی آئمہ کے پاس مخرون و محفوظ ہی رہا ہے اور تیسری صدی ہجری سے اب تک امام زمان کے پاس ہے-اور ہم پہلے بیان کرآئے ہیں۔ کہ شیعہ کی کتب معتبرہ کی روایات سے جو مستقیض بلکہ متواتر ہیں۔ حسب اعتراف علائے شیعہ صراحت معلوم ہو تا ہے۔ کہ قرآن موجود ناقص و محرف ہے - ردایات تحریف کو ضعیف یا آحاد بنانا بالکل جموث ہے۔ خلاصہ کالم یہ کہ ان روایات متواترہ کی بنایر شیعہ کا عقیدہ ہے کہ قر آن علی جو کامل اور تحریف سے محفوظ ہے۔ جس کی کوئی شے شیعہ پر جست نہیں ہو سکتی۔ یہ کمنا کہ جمہور مجتدین عدم تحریف قرآن کے قائل ہیں دروغ بے فروغ ہے۔ اگر سمی مجتد نے ایما کما ہے۔ تو سمی مصلحت کی بنا پر کما ہے۔ ای طرح یہ کمنا کہ اصولیوں کا یہ فرجب نہیں محض ملمع کاری ہے۔ کیا پہلی تین صدیوں میں اصولی نہ تھے۔ کیا کوئی اصولی شیعی اینے ائمہ معصوبین کی روایت متواترہ کو رد کرسکتا ہے عند الفريقين قرآنيت كے جوت كے ليے تواتر شرط مو مكر شيعه صحابہ كرام كوجن كى تعداد حد تواتر كو پنجي موكى تقی۔ نعوذ بالله منافق و مرتد اور كذب ير متفق ہو جانے والے جانتے ہيں۔ للذا قرآن موجود جے محلبہ كرام نے بقول شیعہ زید بن ثابت سے بنو و ممن علی تھا۔ اپی خواہش کے مطابق جمع کرایا کیونکر جمت ہو سکا ہے۔ بقول شیعہ وہ ظالم جابر غاصب مرتد منافق محابہ جنہوں نے حضرت علی کی خلافت بلا نصل کی نص کو جو آ تخضرت صلى الله في ستر بزار بلك. ايك لاكه عد ذاكد كم مجمع مين اعلان فرمائي تقى- بالائ طاق ركه ديا-انہوں نے قرآن کے جمع کرنے یا کرانے میں کیا کچھ نہ کیا ہوگا۔ باقی رہے حضرت امیراور ان کے تمن جار سائقی سو ان کی کون سنتا تھا۔ اور دوہ کیا کرسکتے تھے۔ اور طرفی میہ کہ وہ بھی جھوٹ بولنے کی عباوت بزرگ

منتجه والع يتف للغاب كمناكه فرقه شيعه قرآن موجود مابين الدفين كوكامل و سالم منزل من الله محفوظ عن التحریف نہیں مانتا اور نہ اس پر ایمان رکھتا ہے بالکل در ست ہے۔

الحمد للله كه آج بروز جعه ١٦ ماه رجب ١٣٣٢ه تخفه شيعه كا حصد اول حتم مو ٢ ہے۔ جس ميں ثقل اکبر معنی قرآن مجید کی نسبت شیعه کا اصلی عقیده ولائل ساطعه و براین قاطعه کے ساتھ ظاہر کردیا گیا ہے۔ چو نکہ مجتمد لاہوری موعد تحریف قرآن ہارے پاس اس وقت پنچا جب کہ اس کتاب کا بہت ساحصہ لکھا جا چکا تھا۔ اس لیے اخیر میں بعض مضامین کو دوبارہ لانا پڑا گراس تکرار کے ساتھ بطور مسک الحتام اور بست کچھ زیاوہ کردیا گیا ہے جس کے مطالعہ سے ناظرین کرام انشاء اللہ تعالی بست محفوظ و مصروف مول کے اگر دنیا میں کوئی شبعی اس تحفہ کے جواب میں قلم اٹھائے تو اسے چاہیے کہ وہ ہماری پوری عبار توں کو نقل کر کے جواب دے جیسا کہ ہم نے شیعہ کی پوری عبار توں کو نقل کرکے ان کا جواب دے دیا ہے - تاکہ انصاف پند طبیعتیں بالخصوص تعلیم یافتہ طبقہ کے لوگ سے دیکھ سکیں۔ کہ آیادا قعی جواب ہے یاجواب سے گریز ہے۔ اس تحفہ کے حصہ دوم میں انشاء اللہ تعالی شیعہ ہی کی کتب معترہ سے یہ دکھایا جائے گا۔ کہ شیعہ نے ثقل اصغر یعنی اہل بیت رسول الله طائے اے ساتھ کیا سلوک کیا ہے۔

اس میں شک نہیں کہ شیعہ کی دربیرہ وہنی سے ہماری کمال درجہ کی دل آزاری ہو رہی ہے مگر اليي حالت ميں جارا قرآن پاك جميں صبرى تعليم ويتا ہے- اور اس ير جارا عمل ہے-

وجعلنا بعضكم لبعض فتنة اتصبرون وكان ربك بصيرا (قرقان ٢٥)

تو کلی تو کمال اور سے تحقیق انیق کمال سے سب تقدق ہے تیرے آقائے نامدار حضور رسول اکرم مالی اور آپ سے اہل بیت عظام اور صحابہ کرام بناٹھ کاکیوں نہ ہو کہ تو نے ان بہتانات اور انتمالت کو جو فرقہ شیعہ ان بزرگوار بزرگوں پر نگاما رہاہے دنیا پر طاہر کرنے کی کوشش کی ہے۔

ٱللُّهُمَّ صَلِّي عَلْمَ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلْمَ الِسَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَاصْحَابِ سَيِّدِنَا وَمُؤلانَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلَّمْ عَلَيْهِ

رَبِّ اجْعَلْ هٰلَا التُّحْفَةَ وَسِينَلَةً لِّي إلى خُصُولِ رِضَاكَ وَنَيْلِ شَفَاعَتِهِ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَّبِعِيْنَ لِسُنَّتِهِ وَتَوَفَّنِيْ عَلْمِ مِلَّتِهِ وَامِثْنِيْ عَلْمِ حُتِّهِ وَحُبِّ الَّهِ وَاصْحَابِهِ وَذُرِّيلِتِهِ وَاحْشُرْنِيْ فِي زُمْرَةِ آتْبَاعِهِ وَاغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِشُيُوْخِيْ وَلِسَآثِرِ الْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابَ بِرَحْمَتِكَ يَارَحْمُنْ يَارَحِيْمُ يَاوَهَّابُ سُبْحُنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ-وَسَلْمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ - وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ لَعْلَمِيْنَ -

اعلی صفر مجدّد دین مِلّت مونا احد مضافان بربلوی مِلْنَفیه اور دیگر شعراء کا بارگاهِ رُسالت ماثب مین مذرانهٔ عقیدت

المحروعة لعن المحر

ۺڛ ڽ؞ڒڒٳڒۼڛؙؾڵۼؖڵٷڠٵڹ؋ڒؽ

€^{*}*3

نۇرى كىتىپ خانە ٥ لامۇ



نقابت خطابت كاليك نياأنداز

يبرزاده ستدمخرعتان نوري



لُوَيْرِي كُنْتِ خَانَمَ) . لَاهُوَ نَدَ بَلِي مُجِدُورِي النَّالِ لِيَهِ الْمِيْنِ 

مخدم المئنت بيخ طريقيت حضرت جابوات بيريد محكم معضوم شأه كيلاني دري ري دين مضرت جابوات بيريد محكم معضوم شأه كيلاني دري دين باني مجامع مجدزوري و نوري مستب فيانه - لاهور

びかじ

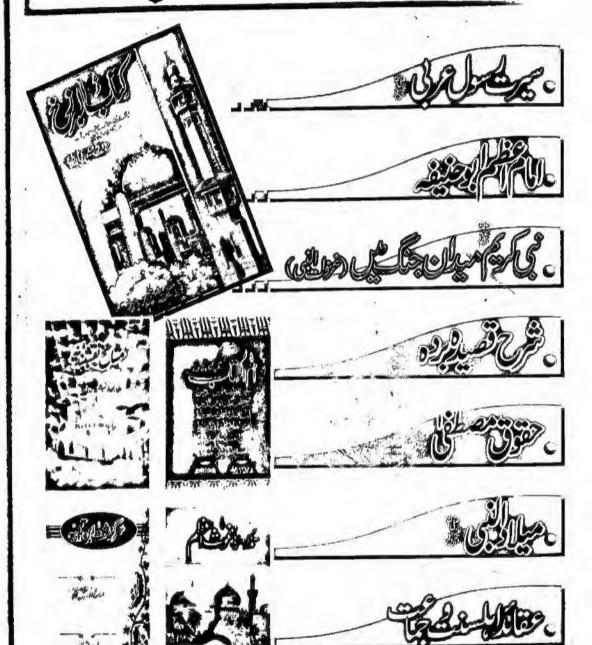
مبين اده سيد محمد عمان نورى چيرن وري فاونديش بايسان وري لانگ بالمار لوك شيش لابو

فوت : ۲۲۹۲۸۵ - ۲۳۰۵۹۴۱

الْوَرِي لِللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ مِنْ اللَّهِيْلِي اللَّهِ مِنْ اللّلَّمِي مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّالَّ لِمِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّل

علام رفير ويرافر والخريث الولق رميا عليه

Chowline Tolled



نوری بات طراح درباردارکیٹ مین بخش وڈ الاہمو Volce:042-7112917



نورى كىتىت غار ئە زۇمام مورۇرى بالغال بۇيەشىش لاہرۇ Voice:042-6366385